विज्ञापन

के हमारे कारखाने में जो पुस्तकें मूल संस्कृत टीका उर्दू में
से कुछ नीचे लिखते हैं जिन साहबों को ज़रूरत हो मँगा
ायत से मिलेगी-

याज्ञवल्क्य स्मृति.

स्वामीदयाल साहब के उर्दू तर्जुमा समेत है जिस में राजाओं
ा प्रजा पालन करने के धर्म और अधर्मियों को दराड देने और
चारों वर्णों और गृहस्थादि चारों आश्रमों के धर्म और बता
में इत्यादि अनेक विषय संयुक्त हैं-

मार्कराडेय पुराण.

का उल्था श्रीबाबू देवनन्दनसिंह रईस खान्दान मजशिफहर और
परगनात ज़िला तिरहुत व चम्पारन ने कराया श्लोक के नीचे श्लो
नुसार भाषा टीका है और उर्दूटीका भी संयुक्त कर दोनों टीकाओं
हवार अंक लगा दिये गये हैं छापा पत्थर है जिस में मार्कराडेय मुनि
जैमिनि का सत्संग और संवाद अप्सराओं पर दुर्वासा मुनि का शाप,
के मारे जाने पर विद्युतरूप राक्षस का मारा जाना और पक्षियों के ज
र चरित्र, देवी जी का माहात्म्य और दुर्गा पाठ भी संयुक्त है-

व्रतार्क.

का उल्था लाला स्वामीदयाल साहब ने किया है छापा पत्थर का
सुन्दर है इस में सम्पूर्ण व्रतों की कथा व उद्यापन इत्यादि वर्णित हैं

भगवद्गीता.

शी श्यामसुन्दरलाल कृत उल्था सहित है छापा पत्थर है इस में गद्य
में भावार्थ स्पष्ट किया है और फिर हरएक पद के अर्थ भी अलग अ
ाये हैं कि श्लोक लगाने की भी शक्ति हो-

वृहत्संहिता अर्थात् वाराहीसंहिता.

इस के मूल श्लोकों को वराह मिहराचार्य्य जी और टीका दे
। पण्डित दुर्गाप्रसाद शास्त्री ने किया था और उसी देवनागरी
नक़ल उर्दू ख़त में लिखा कर संस्कृत मूल व उर्दू टीका शामिल
दी गई है इस में नवग्रह अगस्त्य और सप्तऋषियों के चार
र्य्य चन्द्र ग्रहण, धूमकेतु के फल, ग्रहयुद्ध, ग्रह समागम, ग्रह
ल, पानी वर्षने के अनेक विचार इत्यादि १०८ विषय वर्णित
समान लौकिक व्यवहारों के निमित्त कोई संहिता नहीं है-

महिम्नस्तोत्र.

लाला स्वामीदयाल जी का तर्जुमा किया हुआ हर श्लोक का उर्
ार्थ है जिस में शिव जी की स्तुति वर्णित है-

विष्णुसहस्रनाम.

जिस में श्रीविष्णु जी के हज़ार नाम श्लोकों में वर्णित हैं इस की टीका
। भी लाला स्वामीदयाल जी ने उर्दू में उल्था किया है-

शिवसहस्रनाम.

के उर्दू तर्जुमे को मुंशी शंकर दयाल फ़रहत ने किया है इस में
शिव जी हज़ार नाम श्लोकों में वर्णित हैं-

अर्कप्रकाश.

यह वैद्यक की पुस्तक रावण ने अपनी परम प्यारी मन्दोदरी प्रति व
र्णन किया है इस में सम्पूर्ण औषधियों की अर्क निकालने की विधि
अर्क निकालने यंत्र बनाने की विधि लिखा है इस का भी तर्जुमा ल
स्वामीदयाल जी ने किया है-

मनोरंजन अर्थात् दिलबहलाव.

मुंशी जगन्नाथसहाय कृत, हज़ारीबाग़ निवासी- इस में ग़ज़लें व
ी व भजन, वग़ैरह अनेक प्रकार के हैं- देखने योग्य हैं-

वेदशास्त्रार्थतत्वज्ञोयत्रतत्राश्रमेवसन्॥ इहैवलोकेतिष्ठन्स
ब्रह्मभूयायकल्पते॥१०२॥ अज्ञेभ्योग्रन्थिनःश्रेष्ठाग्रन्थि
भ्योधारिणोवराः॥ धारिभ्योज्ञानिनःश्रेष्ठाज्ञानिभ्योव्यव
सायिनः॥१०३॥ तपोविद्याचविप्रस्यनिश्श्रेयसकरंपरम्॥
तपसाकिल्बिषंहन्तिविद्ययाऽमृतमश्नुते॥१०४॥ प्रत्यक्षंचा
नुमानंचशास्त्रंचविविधागमम्॥ त्रयंसुविदितंकार्यंधर्मशु
द्धिमभीप्सता॥१०५॥ आर्षंधर्मोपदेशंचवेदशास्त्राऽविरो
धिना॥ यस्तर्केणानुसन्धत्तेसधर्मंवेदनेतरः॥१०६॥

۱۰ - وید اور شاستر کے اصلی مطلب کو جاننے والا کسی آشرم میں قیام کرتا ہوا موکش کے
لائق ہوتا ہے -
۱۰ - جو کچھ نہیں جانتا اُس سے ایک گرنتھ پڑھنے والا بڑا ہے اس سے وہ بڑا ہے
جو پڑھے ہوئے کو نہیں بھولتا اُس سے پڑھے ہوئے کے مطلب کو جاننے والا بڑا ہے اُس سے
شاستر میں لکھے ہوئے کرم کو کرنے والا بڑا ہے -
۱۰ - تپ یعنی اپنا دھرم بدّیا یعنے برہم گیان یہ دونوں براہمن کی موکش کی افضل ہیں
کیونکہ تپ سے پاپ کو فانی کرتا ہے اور بدّیا سے موکش کو پاتا ہے -
۱۰ - دھرم کے مدِّ معانت کو جاننے کو خواہشمند آدمی پرتیکش انمان انواع اقسام کا شاستر
شاستر میں کہا ہوا ان تینوں پرمان کو اچھی طرح سے جانے -
۱۰ - وید اور اسمرت ان دونوں کو اچھی دلیل سے جو تلاش کرتا ہے یعنے انکے اصلی مطلب کو
جانتا ہے وہی دھرم کو جانتا ہے دوسرا نہیں -

उत्पद्यन्ते च्यवन्ते च यान्यतोऽन्यानि कानिचित्॥ तान्यर्वाक्का
लिकतया निष्फलान्यनृतानि च॥ ९६॥ चातुर्वर्ण्यं त्रयो लोका
श्चत्वारश्चाश्रमाः पृथक्॥ भूतं भव्यं भविष्यं च सर्वं वेदात्प्रसिध्य-
ति॥ ९७॥ शब्दः स्पर्शश्च रूपं च रसो गन्धश्च पंचमः॥ वेदादेव प्र-
सूयन्ते प्रसूतिगुणकर्मतः॥ ९८॥ विभर्त्ति सर्वभूतानि वेदशा-
स्त्रं सनातनं॥ तस्मादेतत्परं मन्ये यज्जन्तोरस्य साधनम्॥ ९९
सेनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च॥ सर्वलोकाधिपत्यं च वे-
दशास्त्रविदर्हति॥ १००॥ यथा जातबलो वह्निर्दहत्यार्द्रानपि
द्रुमान्॥ तथा दहति वेदज्ञः कर्मजं दोषमात्मनः॥ १०१॥

٩٦- ویدسے باہر جو کلام ہے وہ آدمی کا بنایا ہوا ہے اسواسطے با زوال ہے اور اسکا پرمان نہین
اور اسمرت وغیرہ جو کلام ہین وہ بے زوال ہین کیونکہ انکی جڑ وید ہی ہے اسواسطے انکو پرمان ہے۔
٩٧- چار ورن تینون لوک علیحدہ علیحدہ چارون آشرم ماضی و حال و استقبال جو کچھ کرم ہے
وہ سب ویدہی سے مشہور ہوتا ہے۔
٩٨- ست رج تم ان تینون گنون سے پیدا ہوئے جو شبد اسپرس روپ رس گندھ ہین وہ
سب ویدہی سے پیدا ہوتے ہین۔
٩٩- ہمیشہ سب جاندارون کو دھارن کرنیوالا جو شاستر ہے وہی آدمی کا افضل ثواب بخش
ہے اسبات کو مین مانتا ہون۔
١٠٠- سیناپت کا کرم راج ڈنڈ دینا سب لوک کی حکومت ان سبکو وید شاستر جاننے والا ہے۔
١٠١- جسطرح ترقی یافتہ آگ گیلی درخت کو جلا دیتی ہے اسیطرح وید جاننے والا اپنے کرم
سے پیدا ہوتے دوش کو جلاتا ہے۔

सर्वभूतेषुचात्मानंसर्वभूतानिचात्मनि॥ समंपश्यन्नात्मया-
जीस्वाराज्यमधिगच्छति॥ ९१॥ यथोक्तान्यपिकर्माणिपरि-
हायद्विजोत्तमः॥ आत्मज्ञानेशमेचस्याद्वेदाभ्यासेचयत्नवान्
॥ ९२॥ एतद्धिजन्मसाफल्यंब्राह्मणस्यविशेषतः॥ प्राप्यैत-
त्कृतकृत्योहिद्विजोभवतिनान्यथा॥ ९३॥ पितृदेवमनुष्या-
णांवेदश्चक्षुःसनातनम्॥ अशक्यंचाप्रमेयंचवेदशास्त्रमिति
स्थितिः॥ ९४॥ यावेदबाह्याःस्मृतयोयाश्चकाश्चकुदृष्टयः॥
सर्वास्तानिष्फलाःप्रेत्यतमोनिष्ठाहिताःस्मृताः॥ ९५॥

۹۱ - جب جانداروں میں اپنی آتما کو اور سب جانداروں کو اپنی آتما میں دیکھتا ہوا آتم یگیہ کرنیوالا آدمی برہم بہاو کو پاتا ہے -

۹۲ - براہمن یعنی برہم گیانی اگنی ہوتر وغیرہ کرموں کو ترک کر کے برہم وگیان اندریوں کو جیتنا پرنو اپنشد وغیرہ وید ابہیاس ان سب میں تدبیر کرے -

۹۳ - براہمن کشتری ویشیہ کے جنم کو با نتیجہ کرنیوالے آتم گیان اور وید ابہیاس وغیرہ کرم ہیں لیکن براہمن کو تو زیادہ سو واسطے اس کرم کو پا کر کرت کرت ہوتا ہے یعنی کرنے کے لائق کام کو کر چکتا ہے -

۹۴ - وید ہمیشہ پتر دیوتا اور آدمیوں کی آنکھ ہے وید وشاستر دونوں شک کے لائق نہیں ہیں اور دلیل کرنیکے لائق ہیں یہ شاستر کی مرجاد ہے -

۹۵ - جو وید سے باہر یعنی خلاف وید و شاستر اور جو کچھ ظاہری عقل سے بنایا ہوا مذہب ہیں وہ سب بے نتیجہ ہیں یعنی موکش نہیں دے سکتے ہیں اور تموگن سے بھرے ہوئے ہیں -

षण्णामेषान्तुसर्वेषांकर्मणांप्रेत्यचेहच ॥ श्रेयस्करतरंज्ञेयंसर्व-
दाकर्मवैदिकम् ॥ ८६ ॥ वैदिकेकर्मयोगेतुसर्वाण्येतान्यशेष-
तः ॥ अन्तर्भवन्तिक्रमशस्तस्मिंस्तस्मिन्क्रियाविधौ ॥ ८७ ॥ सु-
खाभ्युदयिकंचैवनैःश्रेयसिकमेवच ॥ प्रवृत्तंचनिवृत्तंचद्विवि-
धंकर्मवैदिकम् ॥ ८८ ॥ इहचामुत्रवाकाम्यंप्रवृत्तंकर्मकीर्त्यते
॥ निष्कामंज्ञानपूर्वन्तु निवृत्तमुपदिश्यते ॥ ८९ ॥ प्रवृत्तंकर्मसं-
सेव्यदेवानामेतिसाम्यताम् ॥ निवृत्तंसेवमानस्तुभूतान्यत्ये-
तिपंचवै ॥ ९० ॥

۸۶ — پہلے کہے ہوئے وید ابھیاس وغیرہ چھہ کرموں میں ویدمیں کہا ہوا کرم یعنی آتم گیان اِس لوک اور پرلوک میں موکش کیواسطے ہر وقت جاننے کے لائق ہے —

۸۷ — اِس کریا بدہی ویدک کرم جوگ یعنی برہم اُپاسنا میں یہ سب وید ابھیاس وغیرہ ختم ہوجاتے ہیں یعنے جب برہم اُپاسنا حاصل ہوئی تب کچھ سادھن باقی نہیں رہتا —

۸۸ — ویدمیں لکھا ہوا کرم دو قسم کا ہے ایک پرورت دوسرا نِورت عیش و دنیا کا دینے والا (یعنے جو اشوم یگیہ وغیرہ سے سکھہ دینے والا سورگ وغیرہ پھل ہوتا ہے لیکن سنسار میں پھر آتا ہے اسواسطے پرورت کہلاتا ہے) اور نِورت موکش دینے والا ہے (یعنے موکش کیواسطے جو کرم ہے وہ نِورت کہلاتا ہے وہ کلیان کرنیوالا ہے یعنے سنسار میں پھر نہیں لاتا —

۸۹ — اِس لوک اور پرلوک میں خواہش دل حاصل ہونے کیواسطے جو کرم ہے وہ پرورت کہلاتا ہے اور گیان پورک جو کرم ہے وہ نِورت کہلاتا ہے —

۹۰ — پرورت کرم کرنے سے دیوتاؤں کے برابر ہوتا ہے اور نِورت کرم کرنیسے پرتھی وغیرہ پانچ عناصر کو فتح کرتا ہے یعنے پانچ عناصر سے جنم ہوتا ہے انکے فتح کرنیسے پھر جنم نہیں ہوتا —

यादृशेनतुभावेनयद्यत्कर्मनिषेवते॥ तादृशेनशरीरेणतत्तत्फ-
लमुपाश्नुते॥ ८१॥ एषसर्वःसमुद्दिष्टःकर्मणांवःफलोदयः॥
नैःश्रेयसकरंकर्मविप्रस्येदंनिबोधत॥ ८२॥ वेदाभ्यासस्तपो-
ज्ञानमिंद्रियाणांचसंयमः॥ अहिंसागुरुसेवाचनिःश्रेयसक-
रंपरम्॥ सर्वेषामपिचैतेषांशुभानामिहकर्मणाम्॥ किंचिच्छ्रे-
यस्करतरंकर्मोक्तंपुरुषंप्रति॥ ८४॥ सर्वेषामपिचैतेषामात्म-
ज्ञानंपरंस्मृतम्॥ तद्ध्यग्र्यंसर्वविद्यानांप्राप्यतेह्यमृतंततः॥
८५॥

۸۱ — جس جس بھاؤ سے جس جس کرم کا سیون کرتا ہے اُسی بدن سے اُس اُس کرم کے پھل کو بھوگ کرتا ہے —

۸۲ — میں نے یہ سب تمام نتیجۂ اعمال کو بیان کیا اب اسکے بعد براہمن کے موکش دینے والے کرم کو بیان کرتا ہوں —

۸۳ — وید کا پڑھنا۔ تپ گیان اندریوں کا سنجم اہنسا یعنی کسی جاندار کو نہ مارنا گرو کی سیوا کرنا یہ سب کرم بڑے کلیان کرنیوالے ہیں —

۸۴ — ان سب شبھ کرموں میں سے ہر ایک کرم آدمیوں کی موکش کیواسطے نہایت کلیان کرنیوالا ہے —

۸۵ — سب کرموں میں آتما کا گیان افضل ہے کیونکہ اُسی سے موکش ہوتا ہے —

یعنی ساتک ورا جس وتامس بھاؤ کرکے اشنان ودان وجوگ وغیرہ کرے تو زیادہ ستوگن رکھنے والا یا زیادہ رجوگن رکھنے والا یا زیادہ تموگن رکھنے والا بدن پاکر اس جنم کے وسیلے اشنان ودان وجوگ وغیرہ کرم کے پھل کو بھوگ کرتا ہے —

विविधाश्चैवसंपीडाःकाकोलूकैश्चभक्षणम्॥ करम्भवालुकातापान्कुम्भीपाकांश्चदारुणान्॥७६॥सम्भवांश्चवियोनीषुदुःखप्रायासुनित्यशः॥ शीतातपाभिघातांश्चविविधानिभयानिच॥७७॥ असकृद्गर्भवासेषुवासंजन्मचदारुणम्॥ बंधनानिचकाष्ठानिपरप्रेष्यत्वमेवच॥७८॥ बन्धुप्रियवियोगांश्चसंवासंचैवदुर्जनैः॥ द्रव्यार्जनंचनाशंचमित्रामित्रस्यचार्जनम्॥७९॥जरांचैवाप्रतीकारांव्याधिभिश्चोपपीडनम्॥ क्लेशांश्चविविधांस्तांस्तान्मृत्युमेवचदुर्जयम्॥८०॥

۷۶- اور انواع اقسام کی تکلیف پاتے ہیں اور کوّا اور الّو پر غذا انکو کھاتے ہیں اور گرم بالو کی گرمی کو پاتے ہیں اور نہایت خوفناک کنبھی پاک نام نرک کے دکھ بھوگ کرتے ہیں
۷۷- ہمیشہ بہت دکھ والی ناقص جونوں میں پیدا ہیں اور سردی و گرمی سے تکلیف اور انواع اقسام کا خوف پاتے ہیں-
۷۸- بار بار شکم میں قیام و تکلیف ولادت و تکلیف گرفتاری و دوسرے کی خدمتگزاری ان سب کو پاتے ہیں-
۷۹- بھائیوں اور پیارے لوگوں سے جدائی اور برے آدمیوں کے ساتھ بود و باش اور دولت کا فراہم ہونا اور پھر اوسکا کالعدم ہو جانا اور دوست و دشمن کا ملانا ان سب کو پاتے ہیں
۸۰- قابل عدم معالجہ حالت پیری و بیماریوں سے دکھ و انواع اقسام کی تکلیف کے بعد موت ان سب کو پاتے ہیں-

मैत्राक्षज्योतिकः प्रेतोवैश्योभवतिपूयभुक्॥ चैलाशकश्चभ
वतिशूद्रोधर्मात्स्वकाच्च्युतः॥७२॥यथायथानिषेवन्तेविषया
न्विषयात्मकाः॥ तथातथाकुशलतातेषांतेषूपजायते॥तेऽ
भ्यासात्कर्मणांतेषांपापानामल्पबुद्धयः॥ संप्राप्नुवन्तिदुः
खानितासुतास्विहयोनिषु॥७४॥तामिस्रादिषुचोग्रेषुनर-
केषुविवर्त्तनम्॥ असिपत्रवनादीनिबन्धनच्छेदनानि च॥
७५॥

٧٢- جو ویش اپنے دھرم سے علیحدہ ہو وہ پیپ بھوجن کرنیوالا میتراکش نام پریت ہوتا ہی
اور جو شودر اپنے دھرم سے علیحدہ ہو وہ کیڑا بھوجن کرنیوالا پریت ہوتا ہے۔
٧٣- بشیون مین آتما کو لگانیوالا آدمی جس جس طرح بشیون کا سیون کرتا ہی اس طرح
بشیون مین ہوشیار ہوتا ہے۔
٧٤- وہ سب کم عقل والے آپ پاپ کرمون کی مہارت سے ان ان یون مین دکھ کو پاتے
٧٥- اور تامشر اسی پتر بن بندھن چھیدن جو نرک ہین انمین دکھ پاتے ہین۔

* دیکھو ادھیائے ۹ شلوک ۹۹ و ۹۰۔

वृको मृगेभं व्याघ्रोऽश्वं फलमूलन्तु मर्कटः ॥ स्त्रीमृक्षः स्तोक
कोवारियानान्युष्ट्रः पशूनजः ॥ ६७ ॥ यद्वा तद्वा परद्रव्यमपहृ-
त्य बलान्नरः ॥ अवश्यं याति तिर्यक्त्वं जग्ध्वा चैवाहुतं हविः ॥
६८ ॥ स्त्रियोऽप्येतेन कल्पेन हृत्वा दोषमवाप्नुयुः ॥ एतेषामेव
जन्तूनां भार्य[illegible]पयान्तिताः ॥ ६९ ॥ स्वेभ्यः स्वेभ्यस्तु कर्मभ्य
श्च्युता वर्णा ह्यनापदि ॥ पापान्संसृत्य संसारान्प्रेष्यतां यान्ति
शत्रुषु ॥ ७० ॥ वान्ताश्युल्कामुखः प्रेतो विप्रो धर्मात्स्वकाच्च्यु-
तः ॥ अमेध्यकुणपाशी च क्षत्रियः कटपूतनः ॥ ७१ ॥

۶۷- ہرن اور ہاتھی اِن دونوں میں سے کسی ایک کو چرانے سے بھیڑیا ہوتا ہے گھوڑا کے چرانے سے باگھ ہوتا ہے پھل و پھول اِن دونوں میں سے کسی ایک کے چرانے سے بندر ہوتا ہے عورت کے چرانے سے ریچھ ہوتا ہے پینے کے لائق پانی چرانے سے پپیہا نام پرند ہوتا ہے سواریوں کو چرا کر اونٹ ہوتا ہے چارپایوں کو چرا کر بکرا ہوتا ہے ـ

۶۸- دوسرے کی دربیہ چرانے سے اور بدون بھوگ لگائے دیوتاؤں کے ہیت کے بھوجن سے ضرور ٹیڑھے چلنے والے جانوروں کے جسم یعنی قالب کو پاتا ہے یعنی اُنکی صورت میں پیدا ہوتا ہے ـ

۶۹- اور عورت بھی اوپر لکھے ہوئے کرموں کے کرنے سے اوپر لکھے ہوئے جانوروں کی عورت ہوتی ہے ـ

۷۰- وقت مصیبت کے نہونیمیں چاروں ورن اپنے کرموں سے علیحدہ ہوکر پاپ یونیوں میں جاکر اپنے دشمنوں کے غلام ہوتے ہیں ـ

۷۱- اپنے دھرم سے علیحدہ برہمن قے کی ہوئی چیز کو بھوجن کرنیوالا اُلکامکھ نام پریت ہوتا ہے اور اپنے دھرم سے علیحدہ کشتری غلیظ پیشاب کھانیوالا کٹپوتن نام پریت ہوتا ہے ـ

धान्यंहृत्वाभवत्याखुःकास्यंहंसोजलंप्लवः ॥ मधुदंशःपयः
काकोरसंश्वानकुलोघृतम् ॥ ६२ ॥ मांसंगृध्रोवपांमद्गुस्तैलंतै
लपकःखगः ॥ चीरीवाकस्तुलवणंबलाकाशकुनिर्दधि ॥ ६३
॥ कौशेयंतित्तिरिर्हृत्वाक्षौमंहृत्वातुदर्दुरः ॥ कार्पासतान्तवंक्रौं-
चोगोधागांवाग्गुदोगुडम् ॥ ६४ ॥ छुच्छुन्दरिःशुभान्गन्धान्पत्र-
शाकंतुबर्हिणः ॥ श्वावित्कृतान्नंविविधमकृतान्नंतुश-
ल्यकः ॥ ६५ ॥ बकोभवतिहृत्वाग्निंगृहकारीह्युपस्करम् ॥ र-
क्तानिहृत्वावासांसिजायतेजीवजीवकः ॥ ६६ ॥

۶۲- غلہ کے چرانیسے چوہا اور کانسا کے چرانیسے ہنس اور پانی کے چرانیسے پلو نام جانور اور شہد کے چرانیسے جنگل کے ماچھی اور دودھ کے چرانیسے کوّا اور رس کے چرانیسے کتّا اور گھی کے چرانیسے نیولا ہوتا ہے۔

۶۳- گوشت و چربی و تیل و نمک و دہی انھوں کے چرانیسے حسب سلسلہ گدھ و پانی کے اوپر رہنے والا پرند و تیل نک پرند و جھینگر و بلا کا پرند ہوتا ہے۔

۶۴- کیڑوں کے پیٹ سے نکالے ہوئے سوت کا کپڑا اور پٹسن کی چھال سے بنا ہوا کپڑا اور کپاس کے سوت سے بنا ہوا کپڑا اور گئو اور گڑ انھوں کے چرانیسے بلحاظ سلسلہ تیتری پرند و مینڈک و کرونچ و گوہ و گودرا پرند ہوتا ہے۔

۶۵- شاک وغیرہ پھول وغیرہ بھات و ستو وغیرہ جو و گیہوں انھوں کے چرانیسے بلحاظ سلسلہ چھچھوندر و مور و سوا بیت ساہی ہوتا ہے۔

۶۶- اگن سوپ و موسل وغیرہ گھر کی فائدہ مند چیزیں لال کپڑا انھوں کے چرانے سے بلحاظ سلسلہ بگلا بلی چکور ہوتا ہے۔

तृणगुल्मलतानांचक्रव्यादांदंष्ट्रिणामपि॥ क्रूरकर्मकृतांचैव शतशोगुरुतल्पगः॥ ५८॥ हिंस्राभवंतिक्रव्यादाः कृमयोऽभ-स्यभक्षिणः॥ परस्परादिनःस्तेनाःप्रेतान्त्यस्त्रीनिषेविणः॥ ५९॥ संयोगंपतितैर्गत्वापरस्यैवचयोषितम्॥ अपहृत्यच-विप्रस्वंभवतिब्रह्मराक्षसः॥ ६०॥ मणिमुक्ताप्रवालानिहृत्वा लोभेनमानवः॥ विविधानिचरत्नानिजायतेहेमकर्तृषु॥६१॥

۵۸- ترن یعنی دوب وغیرہ (گلم لتا کچے گوشت کے کھانیوالے (گیدھ وغیرہ) ڈاڑھ والے (سنگھ وغیرہ) کرور کرم کرنیکا جنکا سبھاؤ ہے (بگھ وغیرہ) انکون کی یونین والد سے جماع کرنیوالا سیکڑون دفعہ جاتا ہے۔

۵۹- جیو کے مارنے کی خصلت رکھنے والے جو ہین وہ کچے گوشت کے کھانیوالے (یعنی بلا وغیرہ) ہوتے ہین اور جو نہ کھانے کے قابل چیز کو کھاتے ہین وہ چھوٹے کیڑے ہوتے ہین مساپاکی کے سواے جو چور ہین وہ باہم گوشت کے کھانیوالے ہوتے ہین (یعنی وہ اسکے گوشت کو کھاتا ہے اور وہ اسکے گوشت کو کھاتا ہے اور چانڈال کی عورت سے جماع کرنیوالا پریت ہوتا ہے۔

۶۰- پتیت لوگون کے ساتھ میل ملاپ کرنا دوسرے کی عورت سے صحبت کرنا برہمن کا سونا چرانا انھون مین سے کوئی ایک کرم کرنے سے برہم راکشس ہوتا ہے۔

۶۱- لوبھ سے من موتی و مونگا و انواع اقسام کے جواہرات کے چرانے سے سنار ہوتا ہے۔

इन्द्रियाणां प्रसङ्गेन धर्मस्यासेवनेन च ॥ पापान्संयान्ति संसारा-
नविद्वांसो नराधमाः ॥ ५२ ॥ यां यां योनिं तु जीवोऽयं येन येनेह क-
र्मणा ॥ क्रमशो याति लोकेऽस्मिंस्तत्तत्सर्वं निबोधत ॥ ५३ ॥ ब-
हून्वर्षगणान्घोरान्नरकान्प्राप्य तत्क्षयात् ॥ संसारान्प्रतिपद्य-
न्ते महापातकिनस्त्विमान् ॥ ५४ ॥ श्वसूकरखरोष्ट्राणां गोजा-
विमृगपक्षिणाम् ॥ चण्डालपुक्कसानां च ब्रह्महा योनिमृच्छ-
ति ॥ ५५ ॥ कृमिकीटपतङ्गानां विड्भुजां चैव पक्षिणाम् ॥ हिं-
स्राणां चैव सत्वानां सुरापो ब्राह्मणो व्रजेत् ॥ ५६ ॥ लूताहिसर-
टानां च तिरश्चां चाम्बुचारिणाम् ॥ हिंस्राणां च पिशाचानां स्ते-
नो विप्रः सहस्रशः ॥ ५७ ॥

۵۲- آدمیون مین نیچ مورکھ آدمی اطاعت نفس امّارہ سے اور دھرم کرکے ترک کر بیٹھے
خراب حالت کو پاتا ہے۔

۵۳- اس لوک مین سلسلے جیو جس جس کرم کرکے جس جس یون مین جاتا ہے اس سب کو
کہتے ہین۔

۵۴- بہت سال تک گھور نرک کے بھوگ کرنے سے پاپون کو دور کرکے باقیماندہ پاپ سے
مہاپاپی آدمی سنسار مین جنم پاتے ہین۔

۵۵- کتے سور گدھا اونٹ گئو بکرا بھیڑ ہرن پرند چانڈال پکس انھون کی یونی مین
برہمن کا مارنے والا جاتا ہے یعنی انھون کا جنم پاتا ہے۔

۵۶- چھوٹے بڑے کیڑے پتنگے غلیظ کھانیوالے پرند مارنیکی خصلت رکھنے والے شیر وغیرہ درندون
کی یون مین شراب پینے والا برہمن جاتا ہے۔

۵۷- مکڑی سانپ گرگٹ جل کے جیو جیسے مچھلی وغیرہ چلنے والے جیو پشاچ مارنے کی خصلت رکھنے والے
جیو انھون کی یون مین سونا چرانیوالا برہمن ہزارون دفعہ جاتا ہے۔

गन्धर्वागुह्यकायक्षाविबुधानुचराश्चये॥ तथैवाप्सरसःसर्वारा-
जसीषूत्तमागतिः॥४७॥ तापसायतयोविप्रायेचवैमानिकाग-
णाः॥नक्षत्राणिचदैत्याश्चप्रथमासात्त्विकीगतिः॥४८॥यज्वा
नऋषयोदेवावेदाज्योतींषिवत्सराः॥ पितरश्चैवसाध्याश्चद्विती
यासात्त्विकीगतिः॥४९॥ ब्रह्माविश्वसृजोधर्मोमहानव्यक्त-
मेवच॥उत्तमांसात्त्विकीमेतांगतिमाहुर्मनीषिणः॥५०॥एष
सर्वःसमुद्दिष्टस्त्रिप्रकारस्यकर्मणः॥ त्रिविधस्त्रिविधःकृत्स्नः
संसारःसार्वभौतिकः॥५१॥

۴۷ - گندھرب یکھ یکش دیوتوں کے پیچھے چلنے والے بدیادھر وغیرہ واپسرائیں سب گتوں کو رجوگن کی اُتم گت جاننا -

۴۸ - تپسوی یتی براہمن اور اپسرا کے علاوہ پشپک بمان پر چڑھکر چلنے والے نکشتر و دیتیہ ان سب گنوں کو ستوگن کی نیچ گت جاننا

۴۹ - یگیہ کرنیوالے رشی دیوتا وید وغیرہ جوت گن تبسر پتر گن سادھو گن ان سب گتوں کو ستوگن کی مدھیم گت جاننا -

۵۰ - برھما جی وسو سنسار کے پیدا کرنیوالے ست جاپت دھرم مہت تتو یا ان سب گتوں کو ستوگن کی اُتم گت جاننا -

۵۱ - دل گفتار و بدن تینوں کرم کی سادھن میں تینوں کے وسیلے سے عمل ہو تو تینوں کی تفریق سے تین قسم کے کرم ست رج تم نام والے ہوتے پھر تینوں ادھم مدھیم اُتم کی تفریق سے ایک ایک کی تین تین قسم ہوتی ہیں کہ سب ملا کر نو ہوتی ہیں تمام عالم پانچ عناصر کا پیدا ہے اسکو میں نے دکھانیکے واسطے کہا اسلیے جو نہیں کہا وہ گت بھی دوسری کتاب سے دیکھنے کے لائق ہے -

स्थावराः कृमिकीटाश्चमत्स्याःसर्पाःसकच्छपाः॥ पशवश्चमृ-
गाश्चैवजघन्यातामसीगतिः॥४२॥ हस्तिनश्चतुरंगाश्चशूद्राम्ले-
च्छाश्चगर्हिताः॥ सिंहाव्याघ्रावराहाश्चमध्यमातामसीगतिः॥४३
॥ चारणाश्चसुपर्णाश्चपुरुषाश्चैवदांभिकाः॥ रक्षांसिचपिशाचा-
श्चतामसीषूत्तमागतिः॥ ४४॥ झल्लामल्लानटाश्चैवपुरुषाःश-
स्त्रवृत्तयः॥द्यूतपानप्रसक्ताश्चजघन्याराजसीगतिः॥ ४५॥ रा-
जानःक्षत्रियाश्चैवराज्ञांचैवपुरोहिताः॥ वादयुद्धप्रधानाश्चम-
ध्यमाराजसीगतिः॥ ४६॥

۴۲- درخت و چھوٹے بڑے کیڑے و مچھلی و سانپ و چارپایہ و کچھوا و ہرن اِن سب
کنون کو تموگن کی نیچ گت جاننا-
۴۳- ہاتھی و گھوڑا شودر و ملیچھ سنگھ باگھ سور ان سب گنون کو تموگن کی مدھیم گت جاننا
۴۴- نٹ پرند کپٹ سے دھرم کرنیوالے آدمی راکشش پشاچ اِن گنون کو تموگن کی اتم
گت جاننا-
۴۵- برہمنہ کشتری سے شودر قوم عورت مین پیدا ہوئی اولاد جسکا بیان منو مین دیکھیا ہے
اور جھل یعنی لاٹھی سے پہار کرنیوالے اور مل یعنی پہلوان لوگ اور نٹ یعنی سبھا کا ہنسانیوالا
اور اسلحہ سے زندگی بسر کرنیوالا اور قمار بازی کرنیوالا اور شراب پینے والا اِن سب گنون کو
رجوگن کی نیچ گت جاننا-
۴۶- راجہ و کشتری و راجہ کا پروہت و بحث علمی کو افضل جاننے والا و تکلیف پہنچانیوالا
اِن سب گنون کو رجوگن کی مدھیم گت جاننا-

येनास्मिन्कर्मणालोकेख्यातिमिच्छतिपुष्कलाम् ॥ नचशो
चत्यसम्पत्तौतद्विज्ञेयंतुराजसं ॥ ३६ ॥ यत्सर्वेणेच्छतिज्ञातुंयन्न
लज्जतिचाचरन् ॥ येनतुष्यतिचात्मास्यतत्सत्वगुणलक्षणम्
॥ ३७ ॥ तमसोलक्षणंकामोरजसस्त्वर्थउच्यते ॥ सत्वस्यलक्ष-
णंधर्मःश्रैष्ठ्यमेषांयथोत्तरम् ॥ ३८ ॥ येनयांस्तुगुणेनैषांसंसा
रान्प्रतिपद्यते ॥ तान्समासेनवक्ष्यामिसर्वस्यास्ययथाक्रमम्
॥ ३९ ॥ देवत्वंसात्विकायान्तिमनुष्यत्वंचराजसाः ॥ तिर्यक्त्वं
तामसानित्यमित्येषात्रिविधागतिः ॥ ४० ॥ त्रिविधात्रिविधै
षातुविज्ञेयागौणिकीगतिः ॥ अधमामध्यमाग्र्याचकर्मवि
द्याविशेषतः ॥ ४१ ॥

۳۶۔ جس کرم کرکے اس لوک میں بڑی شہرت ہونیکی خواہش کرتا ہے اور بے دولتی میں رنج نہیں کرتا ہے اس کرم کو رجوگن لکشن جانیں۔

۳۷۔ جو کرم مہرب آتم کے وسیلہ سے دیدار ہنقہ کو جاننے کی خواہش کرتا ہے اور جس کرم کو کرتے ہوئے شرم نہیں ہوتی اور جس کرم کرکے پرش کی آتما خوش اور ترپت ہوتی ہے اس کرم کو ستوگن لکشن جانیں۔

۳۸۔ تموگن کا لکشن کام یعنے شہوت ہے رجوگن کا لکشن ارتھ ہے ستوگن کا لکشن دھرم ہے ان میں پچھلا پچھلا افضل ہے۔

۳۹۔ جس گن کے وسیلہ سے جو جس گت کو پاتا ہے اس تمام جگت کی گت کو میں مختصر بیان کرونگا۔

۴۰۔ ستوگن والے دیوبھاؤ کو اور رجوگن والے منشیہ بھاؤ کو اور تموگن والے چارپایہ و پرند وغیرہ کے بھاؤ کو پراپت ہوتے ہیں یہ تین طرح کی گت ہے۔

۴۱۔ ستوگن وغیرہ تین گن والے کے وسیلہ سے تین قسم کی گت جو بیان کی وہ دیش و کال وغیرہ کی تفریق سے اور سبب صورت عالم تفریق عمل سے ادھم مدھم و اتم اقسام کرکے پھر تین قسم کی گت جانا

त्रयाणामपिचैतेषांगुणानांयःफलोदयः॥ अग्र्योमध्योजघ-
न्यश्चतंप्रवक्ष्याम्यशेषतः॥ ३०॥ वेदाभ्यासस्तपोज्ञानंशौचमि-
न्द्रियनिग्रहः॥ धर्मक्रियात्मचिन्ताचसात्विकंगुणालक्षणाम्॥
३१॥ आरंभरुचिताधैर्य्यमसत्कार्यपरिग्रहः॥ विषयोपसेवा
चाजस्रंराजसंगुणालक्षणाम्॥ ३२॥ लोभःस्वप्नोऽधृतिःक्रौर्य्यं
नास्तिक्यंभिन्नवृत्तिता॥ याचिष्णुताप्रमादश्चतामसंगुणाल-
क्षणाम्॥ ३३॥ त्रयाणामपिचैतेषांगुणानांत्रिषुतिष्ठताम्॥
इदंसामासिकंज्ञेयंक्रमशोगुणालक्षणाम्॥ ३४॥ यत्कर्मकृत्वा
कुर्वंश्चकरिष्यंश्चैवलज्जति॥ तज्ज्ञेयंविदुषासर्वंतामसंगुणा-
लक्षणाम्॥ ३५॥

۳۰ - ان تینون گنون کا جو نتیجہ افضل و اوسط و ادنی ہے اُسکو ہم کہینگے ۔

۳۱ - وید کا پڑھنا تپ گیان پاکی اندریون کو کا جیتنا دھرم کریا یعنے وید کے موافق عمل آتم چنتا یہ سب ستوگن کے لکشن ہین ۔

۳۲ - شروع کام مین رغبت بے صبری بُرے کام کو قبول کرنا ہمیشہ وشیون کی سیوا یہ سب رجوگن کے لکشن ہین ۔

۳۳ - لوبھ خواب بے صبری کٹھورپن ناستک پن آچار بد عمل نکرنا مانگنا پرماد یہ تموگن کے لکشن ہین ۔

۳۴ - تینون زمانہ ماضی و مستقبل و حال مین رہنے والے تینون گنون کا خلاصہ سلسلہ وار یہ گن لکشن جاننے کے لائق ہے ۔

۳۵ - آدمی جو کرم کرکے اور کرتا ہوا اور کرنے کی خواہش کرتا ہوا شرم اگین یعنے اس کرم کو پنڈت لوگ تاموگن لکشن جانتین ۔

सत्वरजस्तमश्चैवत्रीन्विद्यादात्मनोगुणान्॥ यैर्व्याप्येमान्स्थि-
तोभावान्महान्सर्वानशेषतः॥ २४॥ योयदैषांगुणोदेहेसाकल्ये
नातिरिच्यते॥ सतदातद्गुणप्रायंतंकरोतिशरीरिणम्॥ २५॥ स-
त्वंज्ञानंतमोऽज्ञानंरागद्वेषौरजःस्मृतम्॥ एतद्व्याप्तिमदेतेषांस-
र्वभूताश्रितंवपुः॥ २६॥ तत्रयत्प्रीतिसंयुक्तंकिंचिदात्मनिलक्ष-
येत्॥ प्रशांतमिवशुद्धाभंसत्वंतदुपधारयेत्॥ २७॥ यत्तुदुःख-
समायुक्तमप्रीतिकरमात्मनः॥ तद्रजोप्रतिपंविद्यात्सततंहा-
रिदेहिनाम्॥ २८॥ यत्तुस्यान्मोहसंयुक्तमव्यक्तंविषयात्मकं
॥ अप्रतर्क्यमविज्ञेयंतमस्तदुपधारयेत्॥ २९॥

۲۴- ست رج تم یہ تینوں آتما مست تتوں کے گن ہیں ان گنوں سے محیط ہو کر سب چیزوں
میں مہان قائم ہے-

۲۵- تینوں گنوں میں سے جو گن جس بدن میں زیادہ ہو اُس بدن کو زیادہ اسی
گن والا وہ گن کرتا ہے-

۲۶- ست گیان ہے اور تم اگیان ہے راگ یعنی مرغوب چیز کی خواہش اور دویش یعنی چیز
نامرغوب میں غصہ یہ دونوں رج ہیں ان تینوں گنوں سے تمام عالم محیط ہے-

۲۷- جب آتما کو پریت سے مشمول سانت و شدھ روپ دیکھے تب ست گن کو جانے-

۲۸- جب آتما کو دکھ سے مشمول و ناخوش دیکھے تب رجو گن جانے وہ رجو گن سب
ارباب قالبوں کو مشکل سے دور کرنے کے لائق ہے-

۲۹- جب آتما کو موہ سے مشمول بیشے روپ و پوشیدہ دیکھے تب تمو گن جانے وہ تمو گن
دلیل کے لائق نہیں ہے اور جاننے کے لائق نہیں ہے-

सोऽनुभूयासुखोदर्कान्दोषान्विषयसंगजान् ॥ व्यपेतकल्म-
षोऽभ्येति तावेवोभौ महौजसौ ॥ १८ ॥ तौ धर्मं पश्यतस्तस्य पा-
पंचातन्द्रितौ सह ॥ याभ्यां प्राप्नोति संपृक्तः प्रेत्येह च सुखासु-
खम् ॥ १९ ॥ यद्याचरति धर्मं स प्रायशोऽधर्ममल्पशः ॥ तैरेव
चावृतो भूतैः स्वर्गे सुखमुपाश्नुते ॥ २० ॥ यदि तु प्रायशोऽधर्मं से-
वते धर्ममल्पशः ॥ तैर्भूतैः स परित्यक्तो यामीः प्राप्नोति यातनाः
॥ २१ ॥ यामीस्ता यातनाः प्राप्य स जीवो वीतकल्मषः ॥ तान्ये-
व पंचभूतानि पुनरप्येति भागशः ॥ २२ ॥ एता दृष्ट्वास्य जीवस्य
गतीः स्वेनैव चेतसा ॥ धर्मतोऽधर्मतश्चैव धर्मे दध्यात्सदा मनः
॥ २३ ॥

۱۸- لنگ نام بدن میں قائم جیو بیٹھے باسنا کی صحبت سے پیدا ہوئے پاپونکو بھوگ کر اور پاپون
سے علیحدہ ہو کر بڑے پراکرم والے مہان اور پرماتما دونوں کی پناہ لیتا ہے۔

۱۹- سستی سے علیحدہ مہان اور پرماتما یہ دونوں ساتھ ہو کر جس دھرم وادھرم سے مشغول
جیو اس لوک و پرلوک میں سکھ دکھ کو پاتا ہے اس دھرم کو اور بھوگ سے بچے ہوئے پاپون کو
پہچانتے ہیں۔

۲۰- جب جیو بہت دھرم کو کرتا ہے اور تھوڑے پاپون کو کرتا ہے تب پرلوک میں سکھ کو پاتا ہے

۲۱- اور جب بہت پاپ کرتا ہے اور تھوڑا دھرم کرتا ہے تب پرلوک میں دکھ پاتا ہے۔

۲۲- یم راج کی سزا کو بھگت کر پاپ سے علیحدہ ہو کر پھر جیو ان سے لنگ نام بدن پیدا ہوا ہے
انہی میں پھر حصہ وار داخل ہوتا ہے۔

۲۳- اپنے چت سے اس جیو کی برگت دیکھ کر ہر وقت دل کو قائم کرے۔

जीवसंज्ञोऽन्तरात्माऽन्यः सहजः सर्वदेहिनाम् ॥ येन वेदयते सर्वं सुखं दुःखं च जन्मसु ॥१३॥ तावुभौ भूतसंपृक्तौ महान्क्षेत्रज्ञ एव च ॥ उच्चावचेषु भूतेषु स्थितं तं व्याप्य तिष्ठतः ॥१४॥ असंख्या मूर्त्तयस्तस्य निष्पतन्ति शरीरतः ॥ उच्चावचानि भूतानि सततं चेष्टयन्ति याः ॥१५॥ पंचभ्य एव मात्राभ्यः प्रेत्य दुष्कृतिनां नृणां ॥ शरीरं यातनार्थीयमन्यदुत्पद्यते ध्रुवम् ॥१६॥ तेनानुभूय ता यामीः शरीरेणेह यातनाः ॥ तास्वेव भूतमात्रासु प्रलीयन्ते विभागशः ॥१७॥

۱۳- جو ارباب قالب کے ساتھ پیدا ہوا انتر آتما جیو نام والا جسکو مہت کہتے ہین وہ علیحدہ ہے جس سے جنم مین تمام سکھ دکھ کو کشیترگیہ ان بھوگ کرتا ہے یعنے سکھ دکھ کو بھوگ کرتا ہے

۱۴- مہت تتو و کشیترگیہ یہ دونون پرتھوی وغیرہ پانچ مہا بھوتون کرکے اونچ نیچ یونون مین پرماتما کو پکڑ کر رہتے ہین۔

۱۵- پرماتما کے بدن سے اونچ نیچ یونون مین قائم بدن کو ہمیشہ کرم متحرک کرنیوالے بے تعداد مورت یعنے جیو نکلتے ہین۔

۱۶- پرلوک مین پاپیون کے دکھ بھوگ کرنیکے لیئے پرتھوی وغیرہ پانچ عناصر کے حصون سے ایک دوسرا بدن لنگ نام جدا ہوتا ہے۔

۱۷- اس بدن سے یم راج کی سخت سزا کو ان بھوگ کرکے یعنے دکھ بھوگ کر وہ بدن انہی پہلا عناصر مین محو ہو جاتا ہے (یعنے پرتھوی وغیرہ پانچ عناصر سے جو حصہ نکلا وہ پانچو عناصر مین ملجاتا ہے۔

--

अदत्तानामुपादानंहिंसाचैवाविधानतः॥ परदारोपसेवाचशा-
रीरंत्रिविधंस्मृतम्॥ ७॥ मानसंमनसैवायमुपभुंक्तेशुभाशुभम्
॥ वाचावाचाकृतंकर्म्मकायेनैवचकायिकम्॥ ८॥ शरीरजैःक
र्म्मदोषैर्यातिस्थावरतांनरः॥ वाचिकैःपक्षिमृगतांमानसैरन्त्य-
जातिताम्॥ ९॥ वाग्दण्डोऽथमनोदण्डःकायदण्डस्तथैवच
॥ यस्यैतेनिहिताबुद्धौत्रिदण्डीतिसउच्यते॥ १०॥ त्रिदण्डमे-
तन्निक्षिप्यसर्वभूतेषुमानवः॥ कामक्रोधौतुसंयम्यततःसिद्धिं
नियच्छति॥ ११॥ योऽस्यात्मनःकारयितातंक्षेत्रज्ञंप्रचक्षते॥ यः
करोतितुकर्माणिसभूतात्मोच्यतेबुधैः॥ १२॥

۷- بدون دی ہوئی چیز کو لینا بدھ کے خلاف جیوونکا مارنا دوسرے کی عورت سے جماع کرنا یہ تین قسم کا کرم بدن کا ہے۔

۸- بدن سے پیدا ہوئے عمل نیک و بد کے نتیجہ کو صاحب بدن آدمی سلسلہ وار دل و گفتار و بدن سے بھوگ کرتا ہے۔

۹- بدن و گفتار و دل سے پیدا ہوئے کرم سے ساکن یعنی درخت وغیرہ و پرند و چارپایہ و چانڈال وغیرہ کا جنم پاتا ہے۔

۱۰- جسکے گفتار و دل و بدن سے سلسلہ وار نامرغوب گفتار و بدخیالی و ممنوع تجارت کو ترک کرنیوالے ہیں وہی تر دنڈی کہلاتا ہے۔

۱۱- تمام جانداروں میں ان تینوں ڈنڈ کو (یعنے دل و بدن و گفتار کے ڈنڈ کو) قائم کر کے کام اور کرودھ کو روک کے سدھ کو پاتا ہے۔

۱۲- بدن کو کرم میں مشغول کرانیوالا کشیتر گیہ کہلاتا ہے اور جو کرم کرتا ہے وہ بھوت آتما یعنے بدن کہلاتا ہے یہ بات پنڈت لوگ کہتے ہیں۔

चातुर्वर्ण्यस्य कृत्स्नोऽयमुक्तो धर्मस्त्वयानघ।। कर्मणां फलनिर्वृत्तिं शंस नस्तत्त्वतः पराम्।। १ ।। स तानुवाच धर्मात्मा महर्षीन्मानवो भृगुः।। अस्य सर्वस्य शृणुत कर्मयोगस्य निर्णयम्।। २ ।। शुभाशुभफलं कर्म मनोवाग्देहसंभवम्।। कर्मजा गतयो नृणामुत्तमाधममध्यमाः।। तस्येह त्रिविधस्यापि त्र्यधिष्ठानस्य देहिनः ।। दशलक्षणयुक्तस्य मनो विद्यात्प्रवर्त्तकम्।। ४ ।। परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्टचिंतनम्।। वितथाभिनिवेशश्च त्रिविधं कर्म मानसम्।। ५ ।। पारुष्यमनृतं चैव पैशून्यं चापि सर्वशः।। असंबद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम्।। ६ ।।

۱- سب رشی بھرگ جی سے کہتے ہیں کہ اے پاپ رہت بھرگ جی آپ نے برن کے موافق چاروں ورنوں کے دھرم کو کہا اب ہم سبھوں سے عمل نیک و بد کے نتیجے کو بدھ کے موافق کہیے۔

۲- دھرماتما منو جی کے بیٹے بھرگ جی اُن مہرشیوں سے بولے کہ اے رشی لوگو سب کرم یوگ کے نرنے کو ہم سے سنو۔

۳- دل و بدن و گفتار سے جو عمل نیک و بد پیدا ہوتا ہے اُس سے آدمیوں کی اتم مدھیم ادھم گت پیدا ہوتی ہے۔

۴- آگے جو دس لکشن کہینگے اُس سے مشغول آدمی ارباب قالب کا دل جو بدن و گفتار و دل سے اتم مدھیم ادھم کرم میں مصروف کرنیوالا ہے اُسکو جانو۔

۵- دوسرے کی دولت لینی و عیبان دل سے بد خیالی ناستک پن یہ تین قسم کے مانس کرم ہیں یعنے دل سے پیدا ہونیوالے ہیں۔

۶- نامعقول گفتار دروغ گوئی دوسرے کا عیب کہنا بے مطلب بولنا یہ چار قسم کا واچک کرم ہے یعنے گفتار سے پیدا ہوتا ہے۔

यथा महाह्रदं प्राप्य क्षिप्तं लोष्टं विनश्यति। तथा दुश्चरितं सर्वं वेदे त्रिवृति मज्जति॥ २६३॥ ऋचो यजूंषि चान्यानि सामानि विविधानि च। एष ज्ञेयस्त्रिवृद्वेदो यो वेदैनं स वेदवित्॥ २६४॥ आद्यं यत्त्र्यक्षरं ब्रह्म त्रयी यस्मिन्प्रतिष्ठिता। स गुह्योऽन्यस्त्रिवृद्वेदो यस्तं वेद स वेदवित्॥ २६५॥

इति मानवे धर्मशास्त्रे भृगुप्रोक्तायां संहितायामेकादशोऽध्यायः ११

٢٦٣- جسطرح اتھاہ جل مین مٹی کا ڈھیلا ڈالو تو جلد غائب ہو جاتاہے اسیطرح سب پاپ تینون ویدکے پڑھنے سے ڈوب جاتے ہین-

٢٦٤- رگ یجر سام ان تینون ویدون کے منتر مع برھمن ہی تین قسم کا وید جاننا چاہیے جو اسکو جانتاہے وہی وید کا جاننے والا ہے-

٢٦٥- سب ویدون کے آد تین اکشر والا سب وید کا سار اور سب ویدون کو اپنے درمیان مین قائم کرنیوالا جو پرنو ہے اُسکو جانے وہ وید کا جاننے والا ہے-

شری منو جی کا دھرم شاستر بھرگ جی کی سنگھتا کا گیارھوان ادھیا سماپت ہوا-

अरण्ये वा त्रिरभ्यस्य प्रयतो वेदसंहिताम् ॥ मुच्यते पातकैः स-
र्वैः पराकैः शोधितस्त्रिभिः ॥ २५८ ॥ त्र्यहन्तूपवसेद्युक्तस्त्रिर-
ह्नोऽभ्युपयन्नपः ॥ मुच्यते पातकैः सर्वैस्त्रिर्जपित्वाऽघमर्षणां
॥ २५९ ॥ यथाश्वमेधः क्रतुराट् सर्वपापापनोदनः ॥ तथाऽघम-
र्षणांसूक्तं सर्वपापापनोदनम् ॥ २६० ॥ हत्वा लोकानपीमांस्त्री
नश्नन्नपि यतस्ततः ॥ ऋग्वेदं धारयन्विप्रो नैनः प्राप्नोति किंच-
न ॥ २६१ ॥ ऋक्संहितां त्रिरभ्यस्य यजुषां वा समाहितः ॥ साम्नां
वा सरहस्यानां सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ २६२ ॥

۲۵۸- جنگل مین بفکر ہوکر وید سنگھتا کو تین دفعہ ابھیاس کرے اور تین دفعہ پراک برت کرے تو سب پاپ سے چھوٹتا ہے -

۲۵۹- اندریون پر غالب ہوکر ہر روز وقت صبح دوپہر وشام اسنان کرکے جل مین تین دفعہ تین سینم اس اگھ مرکھن سوکت کو جپ کرے تو سب پاپون سے چھوٹتا ہے -

۲۶۰- جسطرح سب یگیون کا راجا اسومیدھ یگیہ سب پاپون کو دور کرتا ہے اسیطرح اگھ مرکھن سوکت سب پاپون کو دور کرتا ہے -

۲۶۱- تینون لوک کو ہن کرکے اور جہان تہان بھوجن کرکے رگ وید کو دھارن کرے تو کسی پاپ کو نہین پاتا ہے -

۲۶۲- بفکر ہوکر رگ وید یجر وید سام وید کی سنگھتا مین سے ایک ایک سنگھتا کو تین دفعہ مزاولت کرے سب پاپون سے چھوٹتا ہے -

सौमारौद्रंतुबह्वेनामासमभ्यस्यशुद्ध्यति॥स्रवन्त्यामाचरन्स्नान
मर्यम्णामितिचतृचम्॥२५४॥अब्दार्धमिन्द्रमित्येतदेनस्वी-
सप्तकंजपेत्॥ अप्रशस्तंतुकृत्वाप्सुमासमासीतभैक्षभुक्॥
२५५॥मंत्रैःशाकलहोमीयैरब्दंहुत्वाघृतंद्विजः॥सुगुर्वप्यपह-
न्त्येनोजप्त्वावानमइत्यृचम्॥२५६॥महापातकसंयुक्तोऽनुग
च्छेद्गाःसमाहितः॥ अभ्यस्याब्दंपावमानीर्भैक्षाहारोविशुध्य-
ति॥२५७॥

۲۵۴- سوم رودرا وغیرہ چار رچا ارجمنم وغیرہ تین رچاؤن میں سے ایک ایک کو ایک دفعہ
ایک مہینہ تک ندی وغیرہ میں اسنان کرکے جپ کرے تو بہت پاپوں سے چھوٹتا ہے-
۲۵۵- اندر متر وغیرہ سات رچا کو چھ مہینہ تک جپ کرے تو سب پاپوں سے چھوٹتا ہے-
جل میں موتر اور بشٹا وغیرہ کرنیوالا ایک مہینہ تک بھیکھ مانگ کر بھوجن کرے-
۲۵۶- دیو کرتسیہ وغیرہ ساکل ہوم منتر سے ایک سال تک گھی کا ہوم کرے خواہ نمہ اندر یہ
اِس رچا کو ایک سال تک جپ کرے تو برہمن کشتری ویشیہ کے مہا پاتک دور ہوں-
۲۵۷- برہم ہتیا وغیرہ پاپ میں سے کسی ایک پاپ سے مشمول ہوتا بیفکر ہوکر گئو کے پیچھے
پیچھے چلے اور بھیکھ مانگ کر بھوجن کرے اور اندریوں پر غالب ہوکر ایک سال تک ہر روز
پاومانی رچا کو جپ کرے تو پاک ہوتا ہے-

कौत्संजप्त्वापइत्येतद्वासिष्ठंचप्रतीत्यृचम् ॥ माहित्रंशुद्धवत्य-
श्चसुरापोऽपिविशुध्यति ॥ २४९ ॥ सकृज्जप्त्वास्यवामीयंशि-
वसंकल्पमेवच ॥ अपहृत्यसुवर्णन्तुक्षणाद्भवतिनिर्मलः ॥
२५० ॥ हविष्पान्तीयमभ्यस्यनतमंहइतीतिच ॥ जपित्वापौ-
रुषंसूक्तंमुच्यतेगुरुतल्पगः ॥ २५१ ॥ एनसांस्थूलसूक्ष्माणां
चिकीर्षन्नपनोदनम् ॥ अवेत्यृचंजपेदब्दंयत्किंचेदमितीति-
वा ॥ २५२ ॥ प्रतिगृह्याप्रतिग्राह्यंभुक्त्वाचान्नंविगर्हितम् ॥
जपंस्तरत्समन्दीयंपूयतेमानवस्त्र्यहात् ॥ २५३ ॥

۲۴۹ - کوتس رشی نے جو سوکت دیکھا اپنہ نام اور بششٹ رشی نے جو سوکت دیکھا پرتیشٹ نام دیا ہے سوکت و تھتری سدھ وتی اپنا منترم ہے تین رچا انھون کو ہر روز ایک مہینہ تک سولہ دفعہ جپ کرے تو شراب پینے والا پاک ہوتا ہے۔

۲۵۰ - ایک مہینہ تک ہر روز ایک دفعہ اسیہ وامی کو اور شیو سنکلپ کو جو کہ اپنشد نام سے مشہور ہے جپ کرے تو برہمن کا سونا چرانیوالا پاک ہوتا ہے۔

۲۵۱ - ہوشیتم وغیرہ انیس رچا اور نتت منگ ہو اور تنگ آٹھ رچا اور سہسر شیرکھا جو پرش سوکت نام اپنشد سے مشہور ہے انھون کو سولہ دفعہ ہر روز ایک مہینہ تک جپ کرے تو والدہ کے ساتھ جماع کرنے کے پاپ سے چھوٹتا ہے۔

۲۵۲ - اوتت سیلو ہرن یہ رچا یتکنچدم پرن دیو دجل یہ رچا انھون کو یکسال تک ایک دفعہ جپ کرے تو چھوٹے بڑے پاپوں کو دور کرتا ہے۔

۲۵۳ - نہ لینے کے لائق چیز کو لیکر اور نندا کے لائق ان کو بھوجن کرکے ترت سمم وغیرہ چار رچا کو تین دن جپ کرے۔

इत्येतत्तपसोदेवामहाभाग्यंप्रचक्षते॥सर्वस्यास्यप्रपश्यन्त-
स्तपसःपुण्यमुत्तमम्॥२४४॥वेदाभ्यासोऽन्वहंशक्त्यामहा
यज्ञक्रियाक्षमा॥नाशयन्त्याशुपापानिमहापातकजान्यपि
॥२४५॥यथैधस्तेजसावह्निःप्राप्तंनिर्दहतिक्षणात्॥तथा-
ज्ञानाग्निनापापंसर्वंदहतिवेदवित्॥२४६॥इत्येतदेनसामुक्तं
प्रायश्चित्तंयथाविधि॥अतऊर्ध्वंरहस्यानांप्रायश्चित्तंनिबोध
त॥२४७॥सव्याहृतिप्रणवकाःप्राणायामास्तुषोडश॥अपि
भ्रूणहनंमासात्पुनन्त्यहरहःकृताः॥२४८॥

۲۴۴ - تمام جانداروں کو تپ ہی سے درلبھ جنم ہوتا ہے اسبات کو دیکھتے ہوئے دیوتا لوگ تپ کو سب کی جڑ جان کر تپ کا مہاتم کہتے ہیں —

۲۴۵ - مہایگیہ اور طاقت کے بموجب ہر روز وید کا پاٹھ کرنیوالے جلدی مہاپاپکو بھی فنا کرتے ہیں

۲۴۶ - جسطرح تیز آگ کاٹھ کو جھٹ پٹ جلاتی ہے اسیطرح وید کو جاننے والا گیان روپی آگ سے تمام پاپوں کو جلاتا ہے —

۲۴۷ - ظاہری پاپوں سے یہ پراشچت کو کہا اسکے بعد پوشیدہ پاپوں کا پراشچت کہتے ہیں۔

۲۴۸ - پرنو و سات بیاہرت سے مشتمل گایتری کے وسیلے سے ہر روز سولہ پرانایام ایک مہینہ تک کرے تو اسقاط حمل کے پاپوں کو دور کرتا ہے - ٹ

ٹ یہ پراشچت برہمن کشتری ویشیہ کا ہے استری و شودر کو منتر کا ادھکار نہیں ہے -

यद्दुस्तरं यद्दुरापं यद्दुर्गं यच्च दुष्करम्॥ सर्वं तु तपसा साध्यं तपो हि दुरतिक्रमम्॥२३८॥ महापातकिनश्चैव शेषाश्चाकार्यकारिणः॥ तपसैव सुतप्तेन मुच्यन्ते किल्विषात्ततः॥२३९॥ कीटाश्चाहिपतंगाश्च पशवश्च वयांसि च॥ स्थावराणि च भूतानि दिवं यान्ति तपोबलात्॥२४०॥ यत्किंचिदेनः कुर्वन्ति मनोवाङ्मूर्त्तिभिर्जनाः॥ तत्सर्वं निर्दहन्त्याशु तपसैव तपोधनाः॥२४१॥ तपसैव विशुद्धस्य ब्राह्मणस्य दिवौकसः॥ इज्याश्च प्रतिगृह्णन्ति कामान्संवर्धयन्ति च॥२४२॥ प्रजापतिरिदं शास्त्रं तपसैवासृजत्प्रभुः॥ तथैव वेदानृषयस्तपसा प्रतिपेदिरे॥२४३॥

۲۳۸- جو چیز دکھ سے ترنے کے لائق اور ملنے کے لائق اور جانے کے لائق ہو وہ تپ ہی سے ہو سکتی ہو جو کچھ ہو سکے تو اسکے ہونے میں تپ ہی حرف ہے تپ کا الکھن مٹ کیا ہے۔

۲۳۹- مہا پاپی وغیرہ سے لیکر جتنے پاپ کرنیوالے ہیں وہ ست تپ سے پاک ہوتے ہیں

۲۴۰- کیڑے بڑے سانپ و پلنگ چارپایہ و پرندو ساکن جاندار یہ سب تپ کے زور سے سورگ میں جاتے ہیں۔

۲۴۱- دل و گفتار و بدن سے جو کچھ پاپ ہوتا ہے وہ سب تپ ہی سے خالی ہوتا ہے۔

۲۴۲- یگیہ میں تپ سے پاک برہمن کی دی ہوئی بہشت کے دیوتا لیتے ہیں اور اُنکے دلخواہ چیزوں کو ترقی دیتے ہیں۔

۲۴۳- پرجاپت ہرنیہ گربھہ نے اس شاستر کو تپ ہی سے پیدا کیا اور اسکو رشی لوگوں نے تپ ہی سے پایا۔

—

अज्ञानाद्यदिवाज्ञानात्कृत्वाकर्मविगर्हितम्॥ तस्माद्विमुक्तिमन्विच्छन्द्वितीयंनसमाचरेत्॥२३२॥ यस्मिन्कर्मण्यस्यकृते मनसःस्यादलाघवम्॥ तस्मिंस्तावत्तपःकुर्य्याद्यावत्तुष्टिकरम्भवेत्॥२३३॥ तपोमूलमिदंसर्व्वंदैवमानुषिकंसुखम्॥ तपोमध्यंबुधैःप्रोक्तंतपोऽन्तंवेददर्शिभिः॥२३४॥ ब्राह्मणस्यतपोज्ञानंतपःक्षत्रस्यरक्षणम्॥ वैश्यस्यतुतपोवार्त्तातपश्शूद्रस्यसेवनम्॥२३५॥ ऋषयःसंयतात्मानःफलमूलानिलाशनाः॥ तपसैवप्रपश्यन्तित्रैलोक्यंसचराचरम्॥२३६॥ औषधान्यगदोविद्यादैवीचविविधास्थितिः॥ तपसैवप्रसिध्यन्तितपस्तेषांहिसाधनम्॥२३७॥

۲۳۲- دانستہ یا نادانستہ بُرا کام کرکے اُس کرم سے چھوٹنے کی خواہش کرتا ہوا دوسری دفعہ بُرا کرم نکرے اور اگر دوسری دفعہ بُرا کرم کرے تو دو چند پرایشچت کرے۔

۲۳۳- جس پرایشچت کے کرنے سے پاپ کرنیوالے کے دلکو سنتوش ہو تو اس پرایشچت کو پھر کرے جبتک چت کو سنتوش ہونے تک پرایشچت کرتا رہے۔

۲۳۴- دیوتا و آدمی ان دونوں کے سکھ کا مُول مد عقبہ اور نت میں تپ ہی ہے اس بات کو وید کے دیکھنے والوں نے کہا ہے۔

۲۳۵- براہمن کا تپ برہم گیان ہے کشتری کا تپ حفاظت عالم ہے ویشیہ کا تپ زراعت وغیرہ ہے شودر کا سیوا ہے۔

۲۳۶- رشی لوگ اندریوں پر غالب ہو کر پھل و مول و ہوا اُنھوں میں سے کسی ایک کو بھوجن کرتے ہوئے ساکن و متحرک تینوں لوک کو تپ ہی سے دیکھتے ہیں۔

۲۳۷- ادویات و تندرستی و بدیا یعنے براہمن کرم روپ وید ارتھ گیان وید کا پڑھنا اور انواع اقسام کا سورگ میں پاس یہ سب تپ ہی سے سدھ ہوتے ہیں۔

स्थापनेनानुतापेनतपसाऽध्यायनेनच। पापकृन्मुच्यतेपापात्त-
थादानेनचापदि॥ २२७॥यथायथानरोधर्मंस्वयंकृत्वानुभाष-
ते॥ तथातथात्वचेवाहिस्तेनाधर्मेणामुच्यते॥ २२८ ॥यथाय-
थामनस्तस्यदुष्कृतंकर्मगर्हति॥ तथातथाशरीरंतत्तेनाधर्मेणा
मुच्यते॥ २२९ ॥कृत्वापापंहिसन्तप्यतस्मात्पापात्प्रमुच्यते॥
नैवकुर्यांपुनरितिनिवृत्यापूयतेतुसः॥ २३०॥ एवंसंचिंत्यमन
साप्रेत्यकर्मफलोदयम्॥ मनोवाङ्मूर्त्तिभिर्नित्यंशुभंकर्मस
माचरेत्॥ २३१॥

۲۲۷- کہنا پچھتانا تپ کرنا وید پڑھنا انھوں کے وسیلہ سے پاپ کرنیوالا پاپ سے چھوٹتا ہے
اور وقت مصیبت میں دان کرکے پاپ سے چھوٹتا ہے-

۲۲۸- جیسے کینچل سے سانپ چھوٹتا ہے اسیطرح ظاہر پاپوں کو جیسے جیسے کہتا ہے
اسیطرح آدمی پاپ سے چھوٹتا ہے-

۲۲۹- پاپ کرنیوالے آدمی کا دل جیسے جیسے برے کام کی برائی کرتا ہے ویسے ویسے
اسکا بدن اس ادھرم سے چھوٹتا ہے-

۲۳۰- پاپ کرکے سنتاپ کرے تو اس پاپ سے چھوٹتا ہے میں پھر اب نکرونگا ایسی
شرط کرکے وہ پاپی پاک ہوتا ہے-

۲۳۱- اسیطرح دل سے پرلوک میں طلوع نتیجہ اعمال کو سوچکر دل و گفتار و بدن سے ہمیشہ ہی
عمل نیک کرے-

ف لیکن جو پاپ ظاہر ہوئے ہیں اسکو کہنا پوشیدہ پاپوں کو نہ کہنا ایک بڑا جاننا ہے کی جگہ پر ایک گٹو دان کرنا ایک مہینہ میں ڈھائی
گٹو ہوئی بارہ سال میں ۳۶۰ گٹو ہوتی ہیں-

त्रिरह्नस्त्रिर्निशायांच सवासाजलमाविशेत्॥ स्त्रीशूद्रपतितांश्चै-
वनाभिभाषेतकर्हिचित्॥ २२३॥ स्थानासनाभ्यांविहरेदशक्तो
ऽधः शयीतवा॥ ब्रह्मचारीव्रतीचस्याद्गुरुदेवद्विजार्चकः॥२२४
॥ सावित्रींचजपेन्नित्यंपवित्राणिचशक्तितः॥ सर्वेष्वेवव्रते
ष्वेवंप्रायश्चित्तार्थमादृतः॥ २२५॥ एतैर्द्विजातयः शोध्याव्र-
तैराविष्कृतैनसः॥ अनाविष्कृतपापांस्तुमंत्रैर्होमैश्चशोध-
येत्॥ २२६॥

۲۲۳- رات میں اور دن میں مع کپڑوں کے اسنان کرے یہ اسنان پہلے دو چاندراین
کو چھوڑ کر تیسرے چاندراین میں جاننا کیونکہ ان دونوں میں تو ترکال اسنان لکھا ہے اور
برت کرنیوالا عورت اور شودر سے ہمکلام نہووے۔
۲۲۴- رات میں اور دن میں کھڑا رہے یا بیٹھا رہے خواب نکرے طاقت نہو تو نیچے
میں خواب کرے برہم چاری رہے یعنے عورت سے جماع نکرے مونج کی میکھلا اور پلاس کا
ڈنڈ دھارن کرے گرو دیوتا و برہمن کی پوجا کرے۔
۲۲۵- گایتری و پاک منتر ان دونوں کا جپ طاقت کے موافق کرے یہ بات سب
برتوں میں جاننا چاہئے۔
۲۲۶- براہمن کشتری ویشیہ ان برتوں سے اپنے کئے ہوئے پاپوں کو دور کریں اور
جو پاپ پوشیدہ ہیں انکو منتر و ہون کر کے دور کریں۔ ؎

؎ اس مقام پر یہ شک ہوتا ہے کہ جب دھرم شاستروں سے اپنے پاپ کو بیان کرینگے تب تو منتر و ہون کا اپدیش کرینگے
تب پاپ ظاہر ہی ہوگا پھر پاپ پوشیدہ کسطرح ہوگا اسکا جواب یہ ہے کہ دوسرے کے بہانہ سے پوچھ تو اپنا پاپ پوشیدہ ہی رہیگا

एतमेव विधिं कृत्स्नमाचरेद्यवमध्यमे ॥ शुक्लपक्षादिनियतश्च-
रंश्चान्द्रायणं व्रतम् ॥ २१७ ॥ अष्टावष्टौ समश्नीयात्पिण्डान्म-
ध्यन्दिने स्थिते ॥ नियतात्मा हविष्याशी यतिचान्द्रायणं चरन् ॥
२१८ ॥ चतुरः प्रातरश्नीयात्पिण्डान्विप्रः समाहितः ॥ चतुरोऽ
स्तमिते सूर्ये शिशुचान्द्रायणं स्मृतम् ॥ २१९ ॥ यथाकथंचित्पि-
ण्डानां तिस्रोऽशीतिः समाहितः ॥ मासेनाश्नन्हविष्यस्य चन्द्र-
स्यैति सलोकताम् ॥ २२० ॥ एतद्रुद्रास्तथादित्या वसवश्चाचरन्व्रत-
म् ॥ सर्वाकुशलमोक्षाय मरुतश्च महर्षिभिः ॥ २२१ ॥ महाव्या-
हृतिभिर्होमः कर्त्तव्यः स्वयमन्वहम् ॥ अहिंसां सत्यमक्रोधमा-
र्जवं च समाचरेत् ॥ २२२ ॥

۲۱۷- اسی کو شکل پکش مین شروع کرے تو جو مدھیہ چاندراین کہلاتا ہے جو درمیان مین موٹا ہوتا ہے اور شروع و آخر مین پتلا ہوتا ہے۔

۲۱۸- یتی چاندراین کو کرتا ہوا اندریون کو قابو مین کئے ہوئے ہبشہ کے آٹھ لقمہ دوپہر وقت ایک مہینہ تک بھوجن کرے جس پکش سے چاہے اس پکش سے شروع کرے۔

۲۱۹- ششو چاندراین کرتا ہوا بیفکر ہوکر چار لقمہ صبح اور چار لقمہ رات کو بھوجن کرے۔

۲۲۰- کسی طرح سے بیفکر ہوکر ایک مہینہ مین ہبشیہ کے ۲۴۰ لقمہ بھوجن کرے تو چندرلوک مین جاوے۔

۲۲۱- سب پاپون کے دور ہونے کیواسطے رودر سورج بسو مرت اور بڑے بڑے رشیون نے اس برت کو کیا ہے۔

۲۲۲- آپ ہر روز مہا بیاہرت سے ہون کرے جانداروں کو قتل نکرنا سچ بولنا غصہ نکرنا نرم مزاج ہونا ان سب کو اختیار کرے۔

एकैकं ग्रासमश्नीयात्त्र्यहाणि त्रीणि पूर्ववत्। त्र्यहं चोपव-
सेदन्त्यमतिकृच्छ्रं चरन्द्विजः॥२१३॥तप्तकृच्छ्रं चरन्विप्रो जल
क्षीरघृतानिलान्॥ प्रतित्र्यहं पिबेदुष्णान्सकृत्स्नायी समाहि-
तः॥२१४॥यतात्मनोऽप्रमत्तस्य द्वादशाहमभोजनम्॥ परा-
को नाम कृच्छ्रोऽयं सर्वपापापनोदनः॥एकैकं ह्रासयेत्पिण्डं
कृष्णे शुक्ले च वर्द्धयेत॥ उपस्पृशंस्त्रिषवणमेतच्चान्द्रायणं
स्मृतम्॥२१६॥

۲۱۳ - ات کرچھ برت کرتا ہوا ایک دن وقت صبح ایک لقمہ اور ایک دن وقت شام ایک لقمہ اور ایک دن بدون مانگنے کے ملنے مین ایک لقمہ بھوجن کرے اور تین دن اپاس کرے -

۲۱۴ - پرت کرچھ برت کرتا ہوا بیفکر ہو کر اسنان کرکے گرم جل دودھ و گھی و ہوا ان چار مین سے ایک ایک کو ایک دفعہ تین تین دن پیوے (اب تعداد و مقدار کو بیان کرتے ہین کہ ۶ گنڈہ بھر جل ۳ گنڈہ بھر دودھ ایک گنڈہ بھر گھی -)

۲۱۵ - چت کو سادھان کرکے اندریون کو اپنے قابو مین کرکے ۱۲ دن تک اپاس کرے - یہ برت سب پاپ کو دور کرنیوالا ہے -

۲۱۶ - تینون وقت یعنی صبح و دوپہر شام اسنان کرتا ہوا ایک لقمہ کو کرشن پکش مین گھٹاوے اور شکل پکش مین بڑھاوے یعنے شکل پکش کی پورنماشی کو پندرہ ۱۵ لقمہ بھوجن کرے اور کرشن پکش کی پریوا کو چودہ ۱۴ لقمہ بھوجن کرے اسیطرح ایک ایک لقمہ کو کم کرتے ہوئے اماوسیا کو اپاس ہوگا پھر شکل پکش کی پریوا سے ایک ایک لقمہ بڑھاتے ہوئے پورنماشی کو پندرہ لقمہ ہونگے یہ پپیلکا مدہ چاندراین کہلاتا ہے -

अनुक्तनिष्कृतीनान्तुपापानामपनुत्तये ॥ शक्तिंचावेक्ष्यपापं चप्रायश्चित्तंप्रकल्पयेत् ॥ २०९ ॥ यैरभ्युपायैरेनांसिमानवोव्य-पकर्षति ॥ तान्वोऽभ्युपायान्वक्ष्यामिदेवर्षिपितृसेवितान् ॥ २१० ॥ त्र्यहंप्रातस्त्र्यहंसायंत्र्यहमद्यादयाचितम् ॥ त्र्यहंपरंच नाश्नीयात्प्राजापत्यंचरन्द्विजः ॥ २११ ॥ गोमूत्रंगोमयंक्षीरंद-धिसर्पिःकुशोदकम् ॥ एकरात्रोपवासश्चकृच्छ्रंसान्तपनंस्मृ-तम् ॥ २१२ ॥

۲۰۹- جس پاپ کا پرائشچت نہیں کہا ہے اُس پاپ کو دور کرنے کے واسطے اُسکی طاقت اور پاپ دونوں کو دیکھکر پرائشچت کو کلپنا کرے-

۲۱۰- آدمی جن تدبیروں سے پاپوں کو دور کرتے ہیں اور اُن تدبیروں کو دیورش پتروں نے کہا ہے اُن تدبیروں کو ہم کہینگے

۲۱۱- پراجاپتیہ برت کرتا ہوا تین دن وقت صبح و تین دن وقت شام کے بھوجن کرکے تین دن بدون مانگنے کے جو ملے اُسکو بھوجن کرے اخیر پر تین ۳ دن اپاس کرے (اب لقمونکی تعداد و مقدار کو کہتے ہیں کہ وقت صبح ۲۶ لقمہ وقت شام ۳۲ لقمہ اور بدون مانگے ہیں ۲۴ لقمہ بمقدار بیضہ مرغ یا جتنا منھہ میں جا سکے ہمیشہ کے اُن کو بھوجن کرتا اور چیز کو نہ بھوجن کرنا)-

۲۱۲- گئو کا موتر گوبر دودھ دہی گھی جل مع کشا اِن سب کو ملاکر ایک دن پیوے* اور دوسرے دن اپاس کرے یہ سانتپن کرچھ کہاتا ہے اور جب اوپر کہی ہوئی چیزوں کو ایک ایک دن میں ایک ایک چیز کو بھوجن کرے اور ساتویں دن اپاس کرے یہ مہاسانتپن کرچھ کہاتا ہے

* اُسکو پنچ گیہ کہتے ہیں-

वेदोदितानां नित्यानां कर्मणां समतिक्रमे ॥ स्नातकव्रतलोपे-
च प्रायश्चित्तमभोजनम् ॥ २०३ ॥ हुंकारं ब्राह्मणस्योक्त्वा त्वंका-
रं च गरीयसः ॥ स्नात्वाऽनश्नन्नहः शेषमभिवाद्य प्रसादयेत् २०४
ताडयित्वा तृणेनापि कण्ठे वाबध्य वाससा ॥ विवादे वा विनि-
र्जित्य प्रणिपत्य प्रसादयेत् ॥ २०५ ॥ अवगूर्य त्वब्दशतं सहस्रम-
भिहत्य च ॥ जिघांसया ब्राह्मणस्य नरकं प्रतिपद्यते ॥ २०६ ॥ शो-
णितं यावतः पांसून्संगृह्णाति महीतले ॥ तावन्त्यब्दसहस्रा-
णि तत्कर्ता नरके वसेत् ॥ २०७ ॥ अवगूर्य चरेत्कृच्छ्रमतिकृच्छ्रं
निपातने ॥ कृच्छ्रातिकृच्छ्रौ कुर्वीत विप्रस्योत्पाद्य शोणितम्
॥ २०८ ॥

۲۰۳ - ویدین کہے ہوئے عمل روزمرّہ کو نکرنے مین اور برہمچریہ برت کے چھوٹ جانے
مین ایک دن اُپاس کرنا چاہیے -
۲۰۴ - براہمن کو ہون ایسا کہکر اور بڑے لوگونکو تم ایسا کہکر اسنان کرکے اور انھون کو خوش کرکے
اور پرانایام کرکے ایک دن اُپاس کرے -
۲۰۵ - براہمن کو ترن سے بھی تاڑنا کرکے اور بحث مین جیت کر کپڑے سے گلے کو باندھکر پرنام
کرکے خوش کرے -
۲۰۶ - براہمن کے مارنے کو ہتھیار اوٹھاوے اور مارے نہین تو بھی سو برس تک نرک مین رہتا ہے
۲۰۷ - مارنیسے براہمن کے جسم کا خون گرکر زمین کے جتنے ذرہ کو پکڑتا ہے اتنے ہزار برس
تک مارنیوالا نرک مین رہتا ہے -
۲۰۸ - براہمن کے مارنے کے واسطے ہتھیار اوٹھاکر کرچھ برت کو کرے اور مارنے مین اتی کرچھ
برت کو کرے اور خون نکالنے مین کرچھ اور اتی کرچھ دونون برتون کو کرے -

शरणागतंपरित्यज्यवेदंविप्लाव्यचद्विजः॥ संवत्सरंयवाहारस्त
त्पापमपसेधति॥ १९८॥ श्वशृगालखरैर्दष्टोग्राम्यैःक्रव्याद्भि-
रेवच॥ नराश्वोष्ट्रवराहैश्चप्राणायामेनशुध्यति॥ १९९॥ षष्ठान्न
कालतामासंसंहिताजपएववा॥ होमाश्चसकलानित्यमपं-
क्त्यानांविशोधनम्॥ २००॥ उष्ट्रयानंसमारुह्यखरयानंतुकाम
तः॥ स्नात्वातुविप्रोदिग्वासाःप्राणायामेनशुध्यति॥ २०१॥ वि
नाद्भिरप्सुवाप्यार्तःशारीरंसन्निवेश्यच॥ सचैलोबहिराप्लुत्यगा
मालभ्यविशुध्यति॥ २०२॥

۱۹۸ - اپنی پناہ مین آئے ہوئے کو ترک کرکے جو وید پڑھانے کے لائق نہین ہے اُسکو وید پڑھا کر ایک سال تک جو کا بھوجن کرکے رہے۔

۱۹۹ - کتہ سیار آدمی گدھا گھوڑا سور گانون کا رہنے والا ابلار وغیرہ انھون مین سے کسی ایک کا کاٹا ہوا آدمی پرانایام سے پاک ہوتا ہے۔

۲۰۰ - کچے گوشت کا کھانیوالا - پنگت مین رہنے کے لائق جو برہمن نہین ہین وہ دونون ایک مہینہ تک دو دن اپواس کرکے تیسرے دن وقت شام بھوجن کرین اور سنگھتا کا جپ کرین اور وید کرنت وغیرہ آٹھ منتر کرکے ہمیشہ آٹھ دفعہ ہون کرین تب پاک ہوتے ہین۔

۲۰۱ - جو گاڑی اونٹ یا گدھا سے مشمول ہے اُسپر خواہش سے چڑھا اور ننگا ہوکر اشنان کرکے پرانایام کرے۔

۲۰۲ - دکھی آدمی بدون پانی کے ٹٹا دھوتر کرے یا پانی ہی مین ٹٹا دھوتر کرے تو گانون سے باہر جاکر ندی وغیرہ مین مع کپڑون کے غسل کرکے گئو کو چھوکر پاک ہوتا ہے۔

यद्गर्हितेनार्जयन्तिकर्मणाब्राह्मणाधनम्॥ तस्योत्सर्गेणशुध्य-
न्तिजप्येनतपसैवच॥ १९३॥ जपित्वात्रीणिसावित्र्याःसहस्रा-
णिसमाहितः॥ मासंगोष्ठेपयःपीत्वामुच्यतेऽसत्प्रतिग्रहात्॥
१९४॥ उपवासकृशंतंतुगोव्रजात्पुनरागतम्॥ प्रणतंप्रतिपृच्छेयुः
साम्यंसौम्येच्छसीतिकिम्॥ १९५॥ सत्यमुक्त्वातुविप्रेषुविकिरे-
द्यवसंगवाम्॥ गोभिःप्रवर्त्तितेतीर्थेकुर्युस्तस्यपरिग्रहम्॥ १९६
॥ व्रात्यानांयाजनंकृत्वापरेषामन्त्यकर्मच॥ अभिचारमहीनंच
त्रिभिःकृच्छ्रैर्व्यपोहति॥ १९७॥

۱۹۳- برہمن قابل نفرین کام کو کرکے جو دولت کو فراہم کرتے ہیں اس دولت کو ترک اور جپ تپ کرکے پاک ہوتے ہیں۔

۱۹۴- برہمن بے فکر ہو کر ایک مہینہ تک ہمیشہ تین ہزار گایتری کا جپ کرتا ہوا گئو کے مقام میں مقیم ہو کر صرف دودھ پیتا ہوا برے دان لینے کے پاپ سے چھوٹتا ہے۔

۱۹۵- برت کرکے گئو کے مقام سے آئے ہوئے کمزور حلیم برہمن کو بھلے لوگ پوچھیں کہ اے برہمن کیا ہم سب کے برابر ہونیکی خواہش کرتے ہو۔

۱۹۶- تب وہ برہمن کہے کہ آیندہ نہ لینے کے لائق دان کو نہ لینگے یہ سچ کہتے ہیں ایسا کہکر گئو کے بھوجن کیواسطے گھاس ویوے اُسکی دی ہوئی گھاس کو گئو بھوجن کرے تب بھلے لوگ اُسکو قبول کریں۔

۱۹۷- برات لوگوں کو یگیہ کراکے پتا وگرو وغیرہ کے سوا ممنوع داہ وغیرہ مرن شرادھ کرکے اور مارن پریوگ کرکے اہین نام والی یگیہ کرکے تین کرچھر برت کرے۔

सल्लसुतंघटंप्रास्यप्रविश्यभवनंस्वकम्॥सर्व्वाणिज्ञातिकार्या-
णियथापूर्व्वंसमाचरेत्॥१८७॥एतदेवविधिंकुर्याद्योषित्सुपति-
तास्वपि॥वस्त्रान्नपानंदेयन्तुवसेयुश्चगृहान्तिके॥१८८॥एन-
स्विभिरनिर्णिक्तैर्नार्थंकिंचित्सहाचरेत्॥ कृतनिर्णेजनांश्चैव
नजुगुप्सेतकर्हिचित्॥ १८९॥बालघ्नांश्चकृतघ्नांश्चविशुद्धान-
पिधर्मतः॥ शरणागतहन्तॄंश्चस्त्रीहन्तॄंश्चनसंवसेत्॥१९०॥येषां
द्विजानांसावित्रीनानूच्येतयथाविधि॥ तांश्चारयित्वात्रीन्कृच्छ्रा-
न्यथाविध्युपनाययेत्॥ १९१॥प्रायश्चित्तंचिकीर्षन्तिविकर्म्म-
स्थास्तुयेद्विजाः॥ ब्रह्मणाचपरित्यक्तास्तेषामप्येतदादिशेत्॥
१९२॥

۱۸۷ - اور گرم پانی مین گھڑے کو ڈالکر اپنے گھر مین داخل ہو کر ذات کے سب کامون کو پہلے کے مانند کرے -

۱۸۸ - پتت استری مین بھی یہی بدھی اور پتت استری کو گھر کے سامنے جا قیام اور کھانا پانی اور کپڑا دینا چاہئے -

۱۸۹ - بدون پرایشچت کے پاپون کے ساتھ ارتھ کو نکرے اور جب پرایشچت کر چکین تو انکی برائی بھی کبھی نکرے -

۱۹۰ - بالک و اپکار و ہنا گت و عورت انھون مین سے کسی ایک کے مارنیوالے نے شاستر مین لکھا ہوا پرایشچت بھی کیا ہو تو بھی اسکے ساتھ نرہے -

۱۹۱ - جس براہمن کشتری ویشیہ کا گایتری بدھ سے اپدیش نہوا ہو اُسکو تین کرچھ برت کرا کے بدھ کے موافق پھر جنیو کرانا چاہئے -

۱۹۲ - خلاف کام یعنے شودر کی سیوا کرنیوالا اور وید کو نہ پڑھنے والا براہمن کشتری ویشیہ پرایشچت کرنا چاہین تو انکو بھی تین کرچھ برت کا اپدیش کرنا چاہئے -

पतितस्योदकंकार्यंसपिण्डैर्बान्धवैर्बहिः॥ निन्दितेऽहनिसा-
याह्नेज्ञात्यृत्विग्गुरुसन्निधौ॥ १८२॥ दासीघटमपांपूर्णंपर्यस्ये
त्प्रेतवत्पदा॥ अहोरात्रमुपासीरन्नशौचंबान्धवैःसह॥ १८३॥
निवर्तेरंश्चतस्मात्तुसंभाषणसहासने॥ दायाद्यस्यप्रदानंचया
त्राचैवहिलौकिकी॥ १८४॥ ज्येष्ठताचनिवर्तेतज्येष्ठावाप्यंच
यद्धनम्॥ ज्येष्ठांशंप्राप्नुयाच्चास्ययवीयान्गुणतोऽधिकः॥ १८५
॥ प्रायश्चित्तेतुचरितेपूर्णकुंभमपांनवम्॥ तेनैवसार्द्धंप्रास्येयुः
स्नात्वापुण्येजलाशये॥ १८६॥

۱۸۲ - سپنڈ یا باندھو باہر جاکر ذات و رتوج و گروؤں کے سامنے نامبارک دن مین وقت شام کے پتت* کو جل دیوے۔

۱۸۳ - داسی جل سے بھرے ہوئے گھڑے کو دکھن رُخ کھڑے ہوکر پانون سے دھکا دے اور سپنڈ لوگ مع باندھون کے ایک دن اُپاس کرین۔

۱۸۴ - پتت کے ساتھ بیٹھنا بولنا اُسکو حصہ دینا اُسکے ساتھ لوک کا بیوہار وغیرہ کرنا ان سب باتونکو ترک کرے۔

۱۸۵ - چھوٹا بھائی بڑے بھائی سے زیادہ صفت والا ہو تو بڑے بھائی کے حصہ کو پاوے اور بڑے بھائی کی بزرگی اور اُسکی بزرگی کا حصہ یہ دونون نسبت (یعنی) ختم ہو جاتے ہین۔

۱۸۶ - جب پتت نے پراشچت کیا تب سپنڈ لوگ اُسکے ساتھ پاک ندی مین اشنان کرکے پانی سے بھرے ہوئے گھڑے کو دھکا دیوین۔

* پتت اُسکو کہتے ہین جو اپنے ورن و آشرم کے درجہ سے گرجاے یعنے بے ذات ہوجاے۔

साचेत्पुनःप्रदुष्येत्तुसदृशेनोपयंत्रिता॥ कृच्छ्रंचान्द्रायणंचैवत-
दस्याःपावनंस्मृतम्॥१७७॥यत्करोत्येकरात्रेणवृषलीसेवना-
द्द्विजः॥ तद्भैक्ष्यभुग्जपन्नित्यंत्रिभिर्वर्षैर्व्यपोहति॥१७८॥एषा-
पापकृतामुक्ताचतुर्णामपिनिष्कृतिः॥ पतितैःसंप्रयुक्तानामि-
माःशृणुतनिष्कृतीः॥१७९॥संवत्सरेणपततिपतितेनसहाच-
रन्॥ याजनाध्यापनाद्यौनान्नतुयानासनाशनात्॥१८०॥यो-
येनपतितेनैषांसंसर्गंयातिमानवः॥ सतस्यैवव्रतंकुर्यात्तत्सं-
सर्गविशुद्धये॥१८१॥

۱۷۷ – جو عورت اپنی ذات کے مرد کے ساتھ ایک دفعہ جماع کرکے مجرم ہوئی ہو اور اوسکا پرائشچت کرکے پھر اپنے ذات والے مرد کے ساتھ جماع کرے تو وہ عورت پراجاپتیہ و چاندراین برت کرے۔

۱۷۸ – براہمن و کشتری و شودر ورن کی عورت کے ساتھ ایک رات جماع کرکے جو پاپ کرتے ہیں اسکے دور کرنیکے واسطے تین سال تک بھیکھ مانگ کر بھوجن کرتے ہوئے جپ کرتے ہیں۔

۱۷۹ – چاروں ورن کے پاپ کا یہ پرائشچت کہا اب پتتون کے ساتھ میل و بیوہار کرنے کے پرائشچت کو سنو۔

۱۸۰ – پتت لوگون کے ساتھ جو کوئی ایک سال تک ایک سواری یا ایک آسن پر بیٹھے یا ایک پنگت میں بھوجن کرے تو اوسکے برابر ہوتا ہے اور پتت لوگون کو یگیہ کرا دی یا جنیو کرا کے گایتری سنا دے یا وواہ وغیرہ رشتہ داری کرے تو جلد اسکے برابر ہوتا ہے۔

۱۸۱ – جس پتت کے ساتھ جو بیوپار کرے وہ اسکے پاکی کے واسطے اسی کا برت کرے۔

एतास्तिस्रस्तु भार्यार्थे नोपयच्छेत्तु बुद्धिमान् ॥ ज्ञातित्वेनानुपेया
स्ताः पतति ह्युपयन्नधः ॥ १७२ ॥ अमानुषीषु पुरुष उदक्यायाम्‌-
मयोनिषु ॥ रेतः सिक्त्वा जले चैव कृच्छ्रं सान्तपनं चरेत् ॥ १७३ ॥
मैथुनन्तु समासेव्य पुंसि योषिति वा द्विजः ॥ गोयानेऽप्सु दिवा-
चैव सवासाः स्नानमाचरेत् ॥ १७४ ॥ चण्डालान्त्यस्त्रियो ग-
त्वा भुक्त्वा च प्रतिगृह्य च ॥ पतत्यज्ञानतो विप्रो ज्ञानात्साम्यन्तु ग-
च्छति ॥ १७५ ॥ विप्रदुष्टां स्त्रियं भर्ता निरुन्ध्यादेकवेश्मनि ॥ य-
त्पुंसः परदारेषु तच्चैनां चारयेद्व्रतम् ॥ १७६ ॥

۱۷۲- عقلمند آدمی ان تینوں کے ساتھ جماع نہ کرے کیونکہ وہ رشتہ میں ہونے سے جماع کے لائق نہیں ہیں انکے ساتھ جماع کرنے سے نرک میں جاتا ہے-

۱۷۳- گئو کو چھوڑ کر گھوڑے وغیرہ چارپایہ وا حیض عورت وکسی ایک لنگ سے علیحدہ عورت و پانی انھوں میں نطفہ گرانے سے سانت پن کرچھ برت کو کرے-

۱۷۴- گاڑی پانی دن انھوں میں براہمن کشتری ویشیہ مرد یا عورت سے جماع کرکے مع کپڑوں کے اشنان کرے-

۱۷۵- براہمن اگیان سے چانڈالی اور ملیچھ کی عورت کے غلہ کو بھوجن کرکے اور انھوں سے دان لیکر پتت ہوتا ہے اور جانکر ہووے تو انکے برابر ہوتا ہے-

۱۷۶- جس عورت نے دوسرے مرد میں دل لگایا اسکو شوہر ایک گھر میں روک کر رکھے اور جو برت مرد کو دوسری عورت کے ساتھ جماع کرنے میں کہا ہے وہ برت عورت کو کراوے-

मणिमुक्ताप्रवालानांताम्रस्यरजतस्यच॥ अयःकांस्योपला
नांचद्वादशाहंकणान्नता॥१६७॥ कार्पासकीटजोर्णानांद्विश-
फैकशफस्यच॥ पक्षिगन्धौषधीनांचरज्ज्वाश्चैवत्र्यहंपयः॥१६८
॥एतैर्व्रतैरपोहेतपापंस्तेयकृतंद्विजः॥ अगम्यागमनीयन्तुव्र
तैरेभिरपानुदेत्॥१६९॥ गुरुतल्पव्रतंकुर्याद्रेतःसिक्त्वास्वयो-
निषु॥ सख्युःपुत्रस्यचस्त्रीषुकुमारीष्वन्त्यजासुच॥१७०॥पै
तृष्वसेयींभगिनींस्वस्त्रीयांमातुरेवच॥ मातुश्चभ्रातुस्तनयांग-
त्वाचान्द्रायणंचरेत्॥१७१॥

۱۶۷- جواہر موتی مونگا تانبا و یا روپا کانسی پتھر انھون مین سے کسی ایک کے چرانیمین بارہ دن تک چاول کے کن بھوجن کرے

۱۶۸- کپاس کیڑا اون انھون سے طیار ہوئے کپڑے ایکھر والے چار پایہ پرند خوشبو بات اودیہ رسّی انھون مین سے کسی ایک کے چرانیمین تین دن تک دودھ پیوے (یہان سب جگہ چرانیمین ایک روپ پرایشچت کہا اسیطرح چوری مین جہان پر ایک روپ پرایشچت ہی وہان پر جاننا چاہیے)

۱۶۹- ان برتون کے وسیلہ سے چوری کے پاپ کو دور کرے اور جو عورت جماع کے لائق نہین ہے اُسکے ساتھ جماع کرنیمین جو پاپ ہی اُسکو برت مرقومہ ذیل سے دور کرے-

۱۷۰- خواہر حقیقی اور دوست اور بیٹے کی زوجہ اور کماری اور چانڈالی انھونمین سے کسی ایک کے ساتھ اگیان سے جماع کرکے اس پرایشچت کو کرے جو ماتا کے ساتھ جماع کرنیمین ہوتا ہی

۱۷۱- موسی کی بیٹی اور پھوپھو کی اور ماموں کی بیٹی جو اپنی خواہر ہین انمین سے کسی ایک کے ساتھ جماع کرنیمین چاندراین برت کرے لیکن یہ سب اگیان سے ایک دفعہ دوسرے مرد کے ساتھ جماع کرین تب جاننا کیونکہ پرایشچت تھوڑا ہے اسلئے کہتے ہین-

धान्यान्नधनचौर्याणि कृत्वा कामाद्द्विजोत्तमः॥ स्वजातीय-
गृहादेव कृच्छ्राब्देन विशुध्यति॥ १६२॥ मनुष्याणां तु हरणे स्त्री-
णां क्षेत्रगृहस्य च॥ कूपवापीजलानां च शुद्धिश्चान्द्रायणं स्मृतं
॥ १६३॥ द्रव्याणामल्पसाराणां स्तेयं कृत्वाऽन्यवेश्मतः॥ च-
रेत्सांतपनं कृच्छ्रं तन्निर्यात्यात्मशुद्धये॥ १६४॥ भक्ष्यभोज्या-
पहरणे यानशय्यासनस्य च॥ पुष्पमूलफलानां च पंचगव्यं
विशोधनम्॥ १६५॥ तृणकाष्ठद्रुमाणां च शुष्कान्नस्य गुड-
स्य च॥ चैलचर्मामिषाणां च त्रिरात्रं स्यादभोजनम्॥ १६६॥

۱۶۲ — برہمن براہمن کے گھر سے بالارادہ دھانیہ کو چرا کر پاکی کیواسطے ایک سال تک کرچھ برت کو کرے لیکن دیش لکال ورتہ پران دسواہی کا گن وغیرہ دیکھکر زیادہ بھی جاننا اسیطرح سے جو آگے کہینگے اُس مین بھی جاننا—

۱۶۳ — آدمی عورت کھیت گھر باولی کنوان کا جل انھون کے چرانیمین پاکی کیواسطے چاندراین برت کہا ہے—

۱۶۴ — تھوڑی قیمت والی چیز اور تھوڑے مطلب والی چیز کے چرانیمین سانتپن کرچھ برت کرے اور مال مسروقہ مالک کو دیوے یہ بات سب چوری کے پرایشچت مین جاننا—

۱۶۵ — چبینا وغیرہ بھات وغیرہ سواریان و پلنگ و آسن و پھول و مول و پھل انھون مین کسی ایک کو چرانیمین پنچ گبیہ* کو پیوے—

۱۶۶ — ترن کاٹھ سوکھا درخت غلہ گڑ کپڑا چمڑا گوشت انھون مین کسی ایک کے چرانیمین تین دن برت کرنا چاہیے—

* پنچ گبیہ یعنے گئو کا دودھ گئو کا گھی گئو کا دہی گئو کا موتر گئو کا گوبر—

मासिकान्नं तु योऽश्नीयादसमावर्त्तको द्विजः॥ स त्रीण्यहा-
न्युपवसेदेकाहं चोदके वसेत्॥१५७॥ ब्रह्मचारी तु योऽश्नीयान्म
धु मांसं कथंचन॥ स कृत्वा प्राकृतं कृच्छ्रं व्रतशेषं समापयेत्॥१५८
॥ बिडालकाकाखूच्छिष्टं जग्ध्वा श्वनकुलस्य च॥ केशकीटाव
पन्नं च पिबेद्ब्रह्मसुवर्चलाम्॥१५९॥ अभोज्यमन्नं नात्तव्यमा-
त्मनः शुद्धिमिच्छता॥ अज्ञानभुक्तं तूत्तार्यं शोध्यं वाऽप्याशु शो
धनैः॥१६०॥ एषोऽनाद्यादनस्योक्तो व्रतानां विविधो विधिः॥
स्तेयदोषापहर्तॄणां व्रतानां श्रूयतां विधिः॥१६१॥

۱۵۷ — برہم چاری مہینہ کی شرادھ کے غلہ کو بھوجن کرکے تین دن اُپاس کرے اور ایکدن پانی میں رہے

۱۵۸ — برہم چاری اگیان سے شراب یا گوشت کو بھوجن کرکے پراجاپتیہ کرچھ برت کو کرکے باقی برت کو تمام کرے۔

۱۶۸ — بلار کوا موسا کتہ نیولا ان میں سے کسی ایک کی جوٹھی چیز کو بھوجن کرکے اور بال اور کیڑے ان دونوں میں سے کسی ایک سے ملی ہوئی چیز کو بھوجن کرکے برہم سوچلا نام اودھی کے بھگوئے جل کو پیوے۔

۱۶۰ — آپ کو پاک کرنیکی خواہش رکھنے والا آدمی اس چیز کو جو بھوجن کے لائق نہیں ہے بھوجن نکرے اور اگیان سے بھوجن کیا ہو تو قے کرے یہ بھی نہو سکے تو جلد پرایشچت کرکے اپنی آتما کو پاک کرے۔

۱۶۱ — بھوجن کے لائق جو چیز نہیں ہے اسکے بھوجن میں یہ پرایشچت کہا اب چوری پاپ کے پرایشچت کو کہتے ہیں۔

अभोज्यानांतुभुक्त्वान्नंस्त्रीशूद्रोच्छिष्टमेवच ॥ जग्ध्वामांसम-
भक्ष्यंचसप्तरात्रंयवान्पिबेत् ॥ १५२ ॥ शुक्तानिचकषायांश्च-
पीत्वामेध्यान्यपिद्विजः ॥ तावद्भवत्यप्रयतोयावत्तन्नव्रजत्य-
धः ॥ १५३ ॥ विड्वराहखरोष्ट्राणांगोमायोःकपिकाकयोः ॥
प्राश्यमूत्रपुरीषाणिद्विजश्चान्द्रायणंचरेत् ॥ १५४ ॥ शुष्का-
णिभुक्त्वामांसानिभौमानिकवकानिच ॥ अज्ञातंचैवसूना-
स्थमेतदेवव्रतंचरेत् ॥ १५५ ॥ क्रव्यादसूकरोष्ट्राणांकुक्कुटानां
चभक्षणे ॥ नरकाकखराणांचतप्तकृच्छ्रंविशोधनम् ॥ १५६ ॥

۱۵۲ - کھانیکے لائق جسکا غلہ نہیں ہے اوسکا غلہ اور شودر اور عورت کا جوٹھا غلہ اور جو گوشت کھانیکے لائق نہیں ہے انمیں سے کسی کو بھوجن کرکے جو کے ستو سات دن تک پیوے -

۱۵۳ - شکت† اور کھٹی چیز (مثل کھیڑا وغیرہ) یہ پاک بھی ہوں تو بھی انکو پیکر تب تک پاک نہیں ہوتا جب تک کہ وہ ہضم نہیں ہوتے -

۱۵۴ - گانوں کے سوئر گدھا اونٹ کوا سیار انکا موتر اور بشٹا بھوجن کرکے برہمن کشتری ویشیہ چاندراین برت کریں -

۱۵۵ - سوکھا گوشت اور زمین میں پیدا ہوا الگر منتا اور جس گوشت کو جانا نہیں کہ وہ کھانے کے لائق ہے یا نہیں اور وہ مقام قتل جانداروں میں رکھا ہو انمیں سے کسی ایک کو کھاکر اوپر کہے ہوئے برت کو کرے -

۱۵۶ - کچے گوشت کے کھانیوالے شیر وغیرہ گانوں کا سوئر اونٹ مرغا آدمی کوا گدھا ان میں سے کسی ایک کے گوشت کے کھانے میں تپت کرچھ برت کو کرے -

† شکت اسکو کہتے ہیں کہ جو دراصل میٹھا ہے اور بسبب گذرنے وقت کے یا پانی میں رہنے سے کھٹا ہوگیا -

अज्ञानाद्वारुणीं पीत्वा संस्कारेणैव शुध्यति ॥ मतिपूर्वमनि-
र्देश्यं प्राणान्तिकमिति स्थितिः ॥ १४६ ॥ अपः सुराभाजनस्था
मद्यभाण्डस्थितास्तथा ॥ पंचरात्रं पिबेत्पीत्वा शंखपुष्पीशृ-
तं पयः ॥ १४७ ॥ स्पृष्ट्वा दत्त्वा च मदिरां विधिवत्प्रतिगृह्य च ॥ शू-
द्रोच्छिष्टाश्च पीत्वापः कुशवारि पिबेत्त्र्यहम् ॥ १४८ ॥ ब्राह्म-
णस्तु सुरापस्य गन्धमाघ्राय सोमपः ॥ प्राणानप्सु त्रिरायम्य
घृतं प्राश्य विशुध्यति ॥ १४९ ॥ अज्ञानात्प्राश्य विण्मूत्रं सु-
रासंसृष्टमेव च ॥ पुनः संस्कारमर्हन्ति त्रयो वर्णा द्विजातयः
॥ १५० ॥ वपनं मेखला दण्डो भैक्षचर्या व्रतानि च ॥ निवर्त्तन्ते
द्विजातीनां पुनः संस्कारकर्मणि ॥ १५१ ॥

۱۴۶ - بغیر جانے ہوئے گوڑی وما دھوی نام شراب کو پیوے تو دوسرے سنسکار سے پاک ہوتا ہے اور جانکر پیوے تو ترک قالب سے پاک ہوتا ہے یہ شاستر کا حکم ہے۔

۱۴۷ - پیشٹی اور مدیہ نام شراب کے برتن میں رکھا ہوا پانی پینے میں سنکھ پشپی نام اودیہ کو گرم دودھ کے ساتھ پانچ رات تک پیوے۔

۱۴۸ - شراب کو چھو کر دیکر لیکر اور شودر کے جوٹھے جل کو پیکر کش سے پکے ہوئے جل کو تین دن تک پیوے۔

۱۴۹ - سوم نام یگیہ کو کرنیوالا براہمن شراب پینے والے کی بو سونگھ کر جل میں تین دفعہ پرانایام کرکے گھی کو بھوجن کرنے سے پاک ہوتا ہے۔

۱۵۰ - جو چیز موتر اور بشٹا اور شراب سے چھو گئی انمیں سے کسی ایک کو اگیان سے بھوجن کرکے براہمن کشتری ویشیہ پھر سنسکار کے لائق ہوتے ہیں۔

۱۵۱ - دوسرے سنسکار میں منڈن میکھلا ڈنڈ و بھکشا نہیں ہوتے۔

किंचिदेवतु विप्राय दद्यादस्थिमतां वधे ॥ अनस्थ्नां चैव हिंसा-
यां प्राणायामेन शुध्यति । १४१ ॥ फलदानान्तु वृक्षाणां छेद-
नेजप्यमृक्शतम् ॥ गुल्मवल्लीलतानां च पुष्पितानां च वी-
रुधाम् ॥ १४२ ॥ अन्नाद्यजानां सत्त्वानां रसजानां च सर्वशः ॥
फलपुष्पोद्भवानां च घृतप्राशो विशोधनम् ॥ १४३ ॥ कृष्ट-
जानामोषधीनां जातानां च स्वयं वने ॥ वृथालम्भेऽनुगच्छेद्गां
दिनमेकं पयोव्रतः ॥ १४४ ॥ एतैर्व्रतैरपोह्यं स्यादेनो हिंसास-
मुद्भवम् ॥ ज्ञानाज्ञानकृतं कृत्स्नं शृणुतानाद्यभक्षणे ॥ १४५

۱۴۱ — استخوان دار جاندار کی مارنے مین برہمن کو کچھ دیکو اور بے استخوان جاندار کے مارنے مین پرانایام کرے۔

۱۴۲ — پھل دینے والے درخت یعنی آنب وغیرہ گلم و بلی یعنی گرچ لتا اور پھولا ہوا کٹھا انھون مین سے ایک ایک کے توڑنے اور اکھاڑنے مین گایتری وغیرہ رچا کو سوبار جپ کرے۔

۱۴۳ — اَن وغیرہ گوڑ وغیرہ رس و پھل و پھول ان سب مین سے پیدا ہوئے جاندارون کے مارنے مین گھی کو بھوجن کرے

۱۴۴ — ساٹھی وغیرہ جو ان جوتنے سے پیدا ہوتا اور تنی وغیرہ جو جنگل مین آپ سے آپ پیدا ہوتی انھون کا بے مطلب اکھاڑنے مین ایک دن دودھ پیکر رہے اور گئو کے پیچھے چلے۔

۱۴۵ — دانستہ یا نادانستہ جاندارونکو مارا اس پاپ کو برتون کے وسیلہ سے دور کرنا چاہیے اور جو چیز کھانے کے لائق نہین ہے اسکے کھانے مین پرایشچت سنو۔

हत्वाहंसंबलाकांचबकंबर्हिणमेवच॥वानरंश्येनभासौचस्प-
र्शयेद्ब्राह्मणायगाम्॥१३५॥वासोदद्याद्धयंहत्वापंचनीला
न्वृषान्गजम्॥ अजमेषावनड्वाहंखरंहत्वैकहायनम्॥१३६॥
क्रव्यादांस्तुमृगान्हत्वाधेनुंदद्यात्पयस्विनीम्॥ अक्रव्यादा-
न्वत्सतरीमुष्ट्रंहत्वातुकृष्णलम्॥१३७॥जीनकार्मुकबस्तावी
न्पृथग्दद्याद्विशुद्धये॥ चतुर्णामपिवर्णानांनारीर्हत्वाऽनव
स्थिताः॥१३८॥दानेनवधनिर्णेकंसर्पादीनामशक्नुवन्॥ए
कैकशश्चरेत्कृच्छ्रंद्विजःपापापनुत्तये॥१३९॥ अस्थिमतांतु
सत्वानांसहस्रस्यप्रमापणे॥पूर्णेचानस्यनस्थ्नांतुशूद्रहत्याव्र
तंचरेत॥१४०॥

۱۳۵ - ہنس بلاکا بگلا مور بندر باز بھاس ان سب میں سے کسی ایک کو مار کر براہمن کو گئو دیوے

۱۳۶ - گھوڑا کو مار کر کپڑا دیوے اور ہاتھی کو مار کر پانچ بیل براہمن کو دیوے بکرا اور بھیڑا ان میں سے کسی ایک کو مار کر ایک بیل دیوے گدھے کو مار کر ایک سال کا بچھڑا دیوے۔

۱۳۷ - شیر وغیرہ کچے گوشت کے کھانیوالے جانور کو مار کر دودھ دیتی ہوئی گئو دیوے اور ہرن وغیرہ کچے گوشت کو نہ کھانیوالے جانور کو مار کر بچھیہ دیوے اور اونٹ کو مار کر ایک رتی سونا دیوے۔

۱۳۸ - براہمن وغیرہ چاروں ورن کی چھنال عورت کو مار کر براہمن کشتری ویشیہ سلسلے سے چرم پٹ دھنش بھیڑ بکرا کو دیوے۔

۱۳۹ - ان سب پاپوں کو دور کرنے میں بے طاقت ہو تو ایک ایک کے قتل میں ایک ایک کرچھ برت کرے۔

۱۴۰ - ہزار جاندار استخوان دار کے قتل میں اور بغیر استخوان دار جاندار گاڑی بھر کے قتل میں شودر ہتیا کے برت کو کرے۔

एतदेवव्रतंकृत्स्नंषण्मासाञ्छूद्रहाचरेत्॥वृषभैकादशावापि
दद्याद्विप्रायगाःसिताः॥१३०॥मार्जारनकुलौहत्वाचाषंमण्डू-
कमेवच।श्वगोधोलूककाकांश्चशूद्रहत्याव्रतंचरेत्॥१३१॥
पयःपिबेत्त्रिरात्रंवायोजनंवाऽध्वनोव्रजेत्॥उपस्पृशेत्स्रव-
न्त्यांवासूक्तंवाब्दैवतंजपेत्॥१३२॥अभ्रिंकार्ष्णायसींदद्या-
त्सर्पंहत्वाद्विजोत्तमः॥पलालभारकंषण्ढेसैसकंचैकमाषक-
म्॥१३३॥घृतकुंभंवराहेतुतिलद्रोणन्तुतित्तिरौ॥शुकेद्वि-
हायनंवत्संक्रौंचंहत्वात्रिहायनम्॥१३४॥

۱۳۰- براہمن شودر کو قتل کرنیں چھ مہینہ تک برہم ہتیا کی برت کو کرے اور ایک بیل سفید رنگ اور دس گئو براہمن کو دیوے یہ بھی بلا خواہش قتل کرنے میں جاننا ان سب برتوں کے کرنیمیں کپال دودھ جا کو چھوڑ دینا چاہئے۔

۱۳۱- بلی نیولا نیل کنٹھ مینڈک کتہ گوہ الو کوا ان میں سے کسی ایک کو شودر قتل کرکے ہتیا کے برت کو کرے۔

۱۳۲- یا تین رات دودھ پیوے اور اگر بے مقدور ہو تو تین رات تک چار کوس چلے یہ بھی نہو سکے تو تین رات ندی میں اشنان کری یہ بھی نہو سکے تو آپو ہشٹھا اتام سوکت کا جپ کرو یہ سب بلا خواہش کے قتل میں جاننا۔

۱۳۳- سانپ کو مارے تو لوہے کا ڈنڈ جسکا حصہ پیشین اچھا ہو براہمن کو دیو اور مخنث کو مارے تو ایک بوجھ پورا اور ایک ماشہ سیسا ان دونوں کو دیوے

۱۳۴- سور کے مارنے میں گھی کا گھڑا اور تیتر کے مارنیمیں ایک درون تل اور طوطا کے مارنیمیں دو سال کا بچھڑا اور کرونچ نام جانور کے مارنیمیں تین سال کا بچھڑا براہمن کو دیوے۔

त्सकरापात्रकृत्यासु मासंशोधनमैन्दवम्॥ मलीनीकरणीये-
षु तप्तः स्याद्यावकैस्त्र्यहम्॥१२५॥तुरीयोब्रह्महत्यायाः क्ष-
त्रियस्य वधे स्मृतः॥ वैश्येऽष्टमांशोवृत्तस्थे शूद्रेज्ञेयस्तुषोडशः
॥१२६॥ अकामतस्तुराजन्यं विनिपात्यद्विजोत्तमः॥ वृषभै-
कसहस्रागादद्यात्सुचरितव्रतः॥१२७॥ त्र्यब्दंचरेद्वानियतो
जटीब्रह्महणोव्रतम्॥ वसन्दूरतरेग्रामाद्वृक्षमूलनिकेतनः॥
१२८॥ एतदेवचरेदब्दंप्रायश्चित्तंद्विजोत्तमः॥ प्रमाप्यवैश्यंवृ-
त्तस्थंदद्याच्चैकशतंगवाम्॥१२९॥

۱۲۵- سنکری کرن کرموں مین اور اپاتری کرن کرموں مین کسی ایک کرم کو خواہش سے
کرنے مین ایک مہینہ چاندراین برت کرے اور ملنی کرن کرموں مین کسی ایک کرم کو
خواہش سے کر نہین تین دن جو کی لپسی بھوجن کرے-

۱۲۶- اپنے کرم مین قائم کشتری ویشیہ شودر کو قتل کرنیمین سلسلہ سے چوتھی آٹھوین
سولھوین حصہ برت کو جاننا مگر یہ سب برت خواہش سے کرم کرنے مین جاننا-

۱۲۷- براہمن بدون خواہش کے کشتری کو قتل کرے تو ہزار گئو اور ایک بیل براہمن کو دیکے-

۱۲۸- خواہ جٹا دھاری ہو کر نیم سے گانون کے باہر درخت کی جڑ مین مقیم ہو کر تین سال تک
برہم ہتیا کا برت کرے اسکو بلا خواہش قتل کرنیمین جاننا-

۱۲۹- براہمن اپنے کرم مین قائم ویشیہ کو قتل کرکے ایک سال تک برہم ہتیا کا برت کرے
یا ایک سئو ایک گئو دان کرے بلا خواہش قتل کرنے مین اس برت کو جاننا-

कामतोरेतसःसेकंव्रतस्थस्यद्विजन्मनः॥ अतिक्रमंव्रतस्याहुर्ध
र्मज्ञाब्रह्मवादिनः॥१२०॥ मारुतंपुरुहूतंचगुरुंपावकमेवच॥
चतुरोव्रतिनोऽभ्येतिब्राह्मंतेजोऽवकीर्णिनः॥१२१॥एतस्मि-
न्नेनसिप्राप्तेवसित्वागर्दभाजिनम्॥ सप्तागारांश्चरेद्भैक्षंस्वकर्म
परिकीर्तयन्॥१२२॥ तेभ्योलब्धेनभैक्षेणवर्तयन्नेककालि-
कम्॥उपस्पृशंस्त्रिषवणंत्वब्देनसविशुध्यति॥१२३॥जाति
भ्रंशकरंकर्मकृत्वान्यतममिच्छया॥ चरेत्सान्तपनंकृच्छ्रंप्रा-
जापत्यमनिच्छया॥१२४॥

۱۲۰ - براہمن کشتری ویشیہ تینوں ورن برت مین قائم ہون اور خواہش سے نطفہ کو گرادین تو برت کا النگھن ہوا ایسا تُو دھرم جاننے والے برہم بادیون نے کہا ہے -

۱۲۱ - اوکیرنی کا برہم تیج بایو اندر اگنی گرو ان چارو کے پاس جاتا ہے -

۱۲۲ - اس پاپ کو چھوڑانے کیواسطے گدھے کا چمڑا اوڑھکر اپنے کرم کو کرتا ہوا سات گھر سے بھیکھ مانگے -

۱۲۳ - اس بھیکھ کو ایک وقت بھوجن کرتا ہوا وقت صبح دوپہر وشام کے اشنان کرتا ہوا اوقات گذاری کرے تو ایک سال مین پاک ہو -

۱۲۴ - ذات سے خارج کرنیوالے کرمون مین سے کسی ایک کرم کو خواہش سے کرے تو سانتپن کرچھ برت کرے اور بدون خواہش کے کیا ہو تو پراجاپتیہ برت کرے برتون کا لکشن آگے کہینگے -

+ اوکیرنی یعنے برہم چرج کی حالت مین نطفہ کو گرانیوالا -

आत्मनो यदि वान्येषां गृहे क्षेत्रेऽथवा खले॥ भक्षयन्तीं न कथ-
येत्पिबन्तं चैव वत्सकम्॥ ११४॥ अनेन विधिना यस्तु गोघ्नो गा-
मनुगच्छति॥ स गोहत्याकृतं पापं त्रिभिर्मासैर्व्यपोहति॥
११५॥ वृषभैकादशा गाश्च दद्यात्सुचरितव्रतः॥ अविद्यमा-
ने सर्वस्वं वेदविद्भ्यो निवेदयेत्॥ ११६॥ एतदेव व्रतं कुर्युरुप-
पातकिनो द्विजाः॥ अवकीर्णिवर्ज्यं शुद्ध्यर्थं चान्द्रायणम-
थापि वा॥ ११७॥ अवकीर्णी तु काणेन गर्दभेन चतुष्पथे॥ पा-
कयज्ञविधानेन यजेत निर्ऋतिं निशि॥ ११८॥ हुत्वाग्नौ विधि-
वद्धोमानन्ततश्च समेत्यृचा॥ वातेन्द्रगुरुवह्नीनां जुहुयात्स-
र्पिषाहुतीः॥ ११९॥

۱۱۴- اپنے خواہ دوسرے کے گھر مین یا کھلیان یا کھیت مین چرتی ہوئی گئو کو نہ کہے اور بچھڑے کو پلاتی ہو تو بھی نہ کہے۔

۱۱۵- گئو کا مارنیوالا آدمی اس طریق سے گئو کے پیچھے پہلے تو تین مہینہ مین گئو کی ہتیا سے چھوٹ جاے۔

۱۱۶- اچھی ریتی سے برت رکھے ایک بیل اور دش گئو دیوے اگر اتنا نہو سکے تو وید پڑھے ہوے براہمن کو سب دھن دیوے۔

۱۱۷- اوکیرنی برت جو آگے کہینگے اسکو چھوڑکر براہمن دکشتری ویشیہ اُپ پاتک کرین تو پاک ہونے کیواسطے اسی برت کو کرین یا چاندراین برت کرین۔

۱۱۸- اوکیرنی چوراہہ مین پاک یگیہ بدھان کرکے رات مین نررت دیوتا کیواسطے کانا گدھا سے یگیہ کرے۔

۱۱۹- اگن مین بدہوم کے موافق سمان پیچھو تا رنہ اس منتر سے یا پوا اندر اگن ان سب کو گھی سے ہون دیوے۔

उपपातकसंयुक्तोगोघ्नोमासंयवान्पिबेत् ॥ कृतवापोवसेद्गो-
ष्ठेचर्मणातेनसंवृतः ॥ १०८ ॥ चतुर्थकालमश्नीयादक्षारलवणं
मितम् ॥ गोमूत्रेणाचरेत्स्नानंद्वौमासौनियतेन्द्रियः ॥ १०९ ॥
दिवानुगच्छेद्गास्तास्तुतिष्ठन्नूर्ध्वंरजःपिबेत् ॥ शुश्रूषित्वानम
स्कृत्यरात्रौवीरासनंवसेत् ॥ ११० ॥ तिष्ठन्तीष्वनुतिष्ठेत्तुव्रजन्
तीष्वप्यनुव्रजेत् ॥ आसीनासुतथासीनोनियतोवीतमत्सरः
॥ १११ ॥ आतुरामभिशस्तांवाचौरव्याघ्रादिभिर्भयैः ॥ पति-
तांपंकलग्नांवासर्वोपायैर्विमोचयेत् ॥ ११२ ॥ उष्णेवर्षति-
शीतेवामारुतेवातिवाभृशम् ॥ नकुर्वीतात्मनस्त्राणंगोरकृ
त्वातुशक्तितः ॥ ११३ ॥

۱۰۸- آپ پاتکی گئو کا مارنیوالا ایک مہینہ تک جو کے ستو پیوے ناخن و مو بدن و مو کیسر وغیرہ کو نہرنی و چھورا سے کٹواکر گئو کا چمڑا اوڑھکر گئو کے مقام میں قیام کرے۔

۱۰۹- ایک دن برت کرکے دوسرے دن پہلی دفعہ تھوڑا بھوجن کرے جو اس پر غالب ہو کر دو مہینہ تک گئو موتر سے اشنان کرے۔

۱۱۰- دن میں گئو کے پیچھے چلے کھڑا ہو کر گئو کے کھر سے اڑتی ہوئی دھول کو پیوے سیوا کرتا ہوا نمسکار کرکے رات میں بیراآسن سے رہے۔

۱۱۱- گئو کھڑی ہو تو آپ بھی حسد و بغض سے علیحدہ ہو کر اندریوں کو جیت کر کھڑا رہے گئو چلے تو آپ بھی اسکے پیچھے چلے گئو بیٹھے تو آپ بھی بیٹھے۔

۱۱۲- جو گئو بیمار ہو اور چور اور شیر وغیرہ کے خوف سے خوفناک ہو یا گر پڑے ہو یا کیچ میں پھنس گئی ہو اسکو سب تدبیروں سے حتی المقدور چھوڑا دے۔

۱۱۳- گرمی و برسات و جاڑا و آندھی میں اپنے مقدور کے موافق جبتک حفاظت نکرلے گئو کے اپنی حفاظت نکرے۔

गुरुतल्प्यभिभाष्यैनस्तप्तेस्वप्यादयोमये।। सूर्मींज्वलन्तींस्वा-
श्लिष्येन्मृत्युनासविशुध्यति।।१३०।।स्वयंवाशिश्नवृषणावुत्कृ-
त्याधायचांजलौ।।नैर्ऋतींदिशमातिष्ठेदानिपातादजिह्मगः।।
१०४।।खट्वांगीचीरवासावाश्मश्रुलोविजनेवने।। प्राजापत्यंचरे-
त्कृच्छ्रमब्दमेकंसमाहितः।।१०५।। चान्द्रायणंवात्रीन्मासान-
भ्यसेन्नियतेन्द्रियः।। हविष्येणयवाग्वावागुरुतल्पापनुत्तये।।
१०६।।एतैर्व्रतैरपोहेयुर्महापातकिनोमलम्।।उपपातकिनस्त्वे-
वमेभिर्नानाविधैर्व्रतैः।।१०७।।

۱۰۳- والدہ سے جماع کرنیوالا اپنے پاپ کو کہکر گرم لوہے کے پلنگ پر سووے یا لوہے کی عورت بناکر آگ مین گرم کرکے اُس سے بغلگیری کرے -

۱۰۴- یا آلت و فوطہ کو کاٹ کر اپنی انجلی مین رکھکر گوشہ جنوب و غرب مین دکھنی نیرت کونہ مین سیدھا چلا جاے جب تک وفات نہ پاوے -

۱۰۵- یا پلنگ کا ایک جزو ہاتھ مین لئے ہوے کپڑے کا ٹکڑا پہنے ہوے ناخن و موے بدن و داڑھی و موچھ کو دھارن کئے ہوے بیفکر ہوکر ویران جنگل مین ایک سال تک پراجاپتیہ برت کرے یہ پرایشچت اگیان سے اپنی عورت جانکر والدہ کے جماع مین جاننا چاہیے

۱۰۶- یا اندریون کو جیت کر ہتیہ یا جوگی لپسی کھاکر والدہ سے جماع کرنیکے پاپ کو دور کرنیکے واسطے تین مہینہ تک چاندراین برت کرے یہ پرایشچت غیر سپنڈ برتا استری یا دوسرے ورن کی گرو بھاریا سے جماع کرنیمین جاننا چاہیے

۱۰۷- مہاپاتکی لوگ ان برتون سے اپنے پاپ کو دور کرین اور اُپ پاتکی لوگ برت مرقومہ ذیل سے اپنے پاپ کو دور کرین -

एषा विचित्राभिहिता सुरापानस्य निष्कृतिः ॥ अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्या-
मि सुवर्णस्तेयनिष्कृतिम् ॥ ९८ ॥ सुवर्णस्तेयकृद्विप्रो राजानम-
भिगम्य तु ॥ स्वकर्म ख्यापयन्ब्रूयान्मां भवाननुशास्त्विति ॥ ९९
॥ गृहीत्वा मुसलं राजा सकृद्धन्यात्तु तं स्वयम् ॥ वधेन शुध्यति स्ते-
नो ब्राह्मणस्तपसैव तु ॥ १०० ॥ तपसाऽपनुनुत्सुस्तु सुवर्णस्तेयजं
मलम् ॥ चीरवासा द्विजोऽरण्ये चरेद्ब्रह्महणो व्रतम् ॥ १०१ ॥ ए-
तैर्व्रतैरपोहेत पापं स्तेयकृतं द्विजः ॥ गुरुस्त्रीगमनीयं तु व्रतैरे-
भिरपानुदेत् ॥ १०२ ॥

۹۸- یہ تجھیر پراشچت شراب نوشی کا کہا اسکے بعد سونا چورانے کا پراشچت کہتے ہیں-

۹۹- براہمن سونا چوراکر راجہ کے پاس جاکر کہے کہ میں سونا چورانیوالا ہوں آپ مجھکو سزا دیں

۱۰۰- راجہ آپ موسل لیکر ایک دفعہ اسکو مارے چوری کرنیوالا قتل خواہ قتل کے برابر پیٹ سے پاک ہوتا ہے چونکہ براہمن کو سزائے جسمانی نہیں ہے اسواسطے بھرگ جی کہتے ہیں کہ براہمن تپ ہی سے پاک ہوتا ہے-

۱۰۱- تپ سے سونا چورانے کے پاپ کو دور کرنے کی خواہش کرنیوالا کپڑے کا لنگوٹا پہنکر بن میں جاکر اس برت کو کرے جیسے کرنے سے برہم ہتیا دور ہوتی ہے یعنے سونا چورانا برہم ہتیا کے برابر ہے

۱۰۲- براہمن ان برتوں کو کرے چوری کے پاپوں کو دور کرے اور والدہ سے جماع کرنے کے پاپ کو برت مرقومہ ذیل کرکے دور کرے-

सुरावैमलमन्नानांपाप्माचमलमुच्यते ॥ तस्माद्ब्राह्मणराज-
न्यौवैश्यश्चनसुरांपिबेत् ॥ ९३ ॥ गौडीपैष्टीचमाध्वीचविज्ञेया
त्रिविधासुरा ॥ यथैवैकातथासर्वानपातव्याद्विजोत्तमैः ॥ ९४ ॥
यक्षरक्षःपिशाचान्नंमद्यंमांसंसुरासवम् ॥ तद्ब्राह्मणेननात्तव्यं
देवानामश्नताहविः ॥ ९५ ॥ अमेध्येवापतेन्मत्तोवैदिकंवाप्यु-
दाहरेत् ॥ अकार्यमन्यत्कुर्य्याद्वाब्राह्मणोमदमोहितः ॥ ९६ ॥
यस्यकायगतंब्रह्ममद्येनाप्लाव्यतेसकृत् ॥ तस्यव्यपैतिब्राह्म-
ण्यंशूद्रत्वंचसगच्छति ॥ ९७ ॥

۹۳- اَن کے مل کو سُرا کہتے ہین اسلئے براہمن و کشتری و ویشیہ سُرا کو نہ پیوین۔

۹۴- گوڑی۔ مادھوی پیشٹی تین قسم کی شراب ہے (یعنے گڑ اور مدھو اور پیسان سے بنائی جاتی ہین) جیسی ایک ویسی تینون ہین اسلئے تینون کو براہمن نہ پیوے۔

۹۵- مدیہ اور مانس اور سُرا اور اساو ان سب کو یکش اور راکشش و پشاچ کا اَن کہتے ہین اسواسطے دیوتاؤن کے ہیبہ کو بھوجن کرنیوالا براہمن ان سب کو نہ پیوے۔

۹۶- براہمن بباعث شراب نوشی کے غفلت مین اگر ناپاکی مین گریگا وید کے منترونکو کہیگا نہ کرنیکے لائق کام کو کریگا اسواسطے شراب نہ پیوے۔

۹۷- جس براہمن کے سینہ مین قائم وید ایک دفعہ بھی شراب نوشی سے ڈوبے گا اُس براہمن کو برہم تیج جاتا رہیگا اور وہ براہمن شودر بھاؤ کو پراپت ہوگا۔

* یہ یعنے تینون قسم کی شراب چھوڑکر پولستیہ رشی نے گیارہ قسم کی شراب کہی ہے وہ سب گناتے ہین۔ کہجور ۱ ماکھیہ ۲ مھوا ۳ کھجور ۴ تاڑ ۵ اوکھ ۶ دکھ ۷ میش ۸ شنک ۹ مردوی ۱۰ سرا ۱۱ اسایش۔ ان چیزون سے بنائی ہوئی شراب کو بھی براہمن نہ پیوے۔

उक्त्वाचैवानृतंसाक्ष्येप्रतिरुध्यगुरुंतथा॥ अपहृत्यचनिःक्षे-
पंकृत्वाचस्त्रीसुहृद्वधम्॥८८॥इयंविशुद्धिरुदिताप्रमाप्याका
मतोद्विजम्॥ कामतोब्राह्मणवधेनिष्कृतिर्नविधीयते॥८९॥
सुरांपीत्वाद्विजोमोहादग्निवर्णांसुरांपिबेत्॥ तयासकायेनिर्द
ग्धेमुच्यतेकिल्बिषात्ततः॥९०॥गोमूत्रमग्निवर्णंवापिबेदुद-
कमेववा॥ पयोघृतंवामरणाद्गोशकृद्रसमेववा॥९१॥कणा-
न्वाभक्षयेदब्दंपिण्याकंवासकृन्निशि॥ सुरापानापनुत्त्यर्थं-
वालवासाजटीध्वजी॥९२॥

۸۸- گواہ ہوکر جھوٹھ بولنے میں گرو کو جھوٹھا دوش لگانے میں براہمن کا سونا چھوڑ کر چاندی وغیرہ زر امانت اور کشتری وغیرہ کا سونا وغیرہ زر امانت کے لینے میں اگن ہوتری براہمن کی استری کی مارنے میں دوست کے مارنے میں برہم ہتیا کا برت کرنا چاہیئے ۔

۸۹- یہ جو بارہ سال کا پرائشچت کہا ہے وہ بدون خواہش کے براہمن کے مارنے میں جاننا اور خواہش سے براہمن کے مارنے میں یہ پرائشچت نہیں ہے بلکہ اسکا ودھ ہے

۹۰- براہمن کشتری ویشیہ موہ سے تینوں پیشٹی مدا کو پی کر اگن برن شراب کو پیویں اسکے+ جسم فانی ہونے سے اس پاپ سے چھوٹتے ہیں ۔

۹۱- گئو موتر یا پانی یا گئو کا دودھ یا گئو کا گھی یا گئو کے گوبر کا رس ان میں سے کسی ایک کو اگن برن (آتش رنگ) کرکے پیوے اور اس سے مر جاوے تو پاک ہوتا ہے ۔

۹۲- گئو وغیرہ کے بالوں سے کپڑے بنا کر پہنے اور جٹا دھارن کرکے شراب کے برتن کا نشان لگا کر چاول کا کن یا تل کی کھلی ان میں سے کسی ایک کو رات میں ایک دفعہ ایک سال تک بھوجن کرے تو شراب نوشی کے پاپ سے چھوٹے یہ پرائشچت بدون جانے ہوئے شراب نوشی میں جاننا ۔

+ دیکھو اشلوک ۹۳ ۔

धर्मस्य ब्राह्मणो मूलमग्रं राजन्य उच्यते। तस्मात्समागमे तेषामे-
नो विख्याप्य शुध्यति॥ ८३॥ ब्राह्मणः सम्भवेनैव देवानामपि
दैवतम्। प्रमाणं चैव लोकस्य ब्रह्मात्रैव हि कारणम्॥ ८४॥ ते-
षां वेदविदो ब्रूयुस्त्रयोऽप्येनःसुनिष्कृतिम्। सा तेषां पावनाय स्या
त्पवित्रा विदुषां हि वाक्॥ ८५॥ अतोऽन्यतममास्थाय विधिं-
विप्रः समाहितः॥ ब्रह्महत्याकृतं पापं व्यपोहत्यात्मवत्तया॥
८६॥ हत्वा गर्भमविज्ञातमेतदेव व्रतं चरेत्। राजन्यवैश्यौ चेजा
नावात्रेयीमेव च स्त्रियम्॥ ८७॥

۸۳- کیونکہ براہمن دھرم کا مول ہے اور کشتری دھرم کا حصہ بیشین ہے اسلیئے دونوں سے اپنے پاپ کو کہکر پاک ہوتا ہے۔

۸۴- براہمن اپنی پیدایش ہی سے دیوتاؤں کا دیوتا ہے اور اوسکا اپدیش سب کے ماننے کے لائق ہے ان باتون مین وید ہی کارن ہے اور اپدیش کا مول وید ہی ہے۔

۸۵- وید پڑھے ہوئے تین براہمن جو پرایشچت کہین وہی پاک ہے کیونکہ وید پاٹھی براہمن کی بانی ہی پاک ہے۔

۸۶- کہے ہوئے پرایشچتون مین ایک بھی کرے اور برہم کو جانے تو برہم ہتیا سے چھوٹتا ہے۔

۸۷- برہمنی مین براہمن سے پیدا ہوئے حمل کی اسقاط مین بھی یہی برت ہے بلکہ یگیہ کرتے ہوئے کشتری اور ویشیہ اور براہمن کی یا حیض عورت انھون مین سے کسی ایک کے مارنے مین بھی بیٹھے ہوئے برتون مین سے کسی ایک برت کو کرے۔

त्रिवारंप्रतिरोद्धावासर्वस्वमवजित्यवा॥ विप्रस्यतन्निमित्तेवा प्राणालाभेविमुच्यते॥ ८०॥ एवंदृढव्रतोनित्यंब्रह्मचारीसमाहितः॥ समाप्तेद्वादशेवर्षेब्रह्महत्यांव्यपोहति॥ ८१॥ शिष्ट्वा-वाभूमिदेवानांनरदेवसमागमे॥ स्वमेनोऽवभृथस्नातोहयमेधेविमुच्यते॥ ८२॥

۸۰ - کوئی شخص براہمن کا سب دھن چورا کر لیے جاتا ہی اُسکے لانے کیواسطے طاقت کے موافق بہانہ چھوڑکر تدبیر کرے اور تین دفعہ جنگ کرے اور براہمن کے چوری گئے ہوئے دھن کو لا بھی نہ سکے تو برہم ہتیا سے چھوٹتا ہے خواہ دھن جانیسے دکھی براہمن چور کے ساتھ جنگ کرنے سے جان دینے پر مستعد ہو تو جو دھن چوری گیا اُسکے برابر دھن دیکر اسکی جان کی حفاظت کرے تو بھی برہم ہتیا سے چھوٹتا ہے - ف

۸۱ - اس ریت سے ہمیشہ برت کرنیوالا بے اندیشہ ہوکر برہمچرج کرنے والا بارہ برس کے تمام ہونے پر برہم ہتیا سے چھوٹتا ہے

۸۲ - خواہ برہم ہتیا کرنیوالا براہمن اشومید ہوگیہ کے انت اسنان کرنیکے وقت راجہ کے پاس جاکر برہم ہتیا کو ظاہر کرکے اُسکے ساتھ اسنان کرے تو برہم ہتیا سے چھوٹتا ہے یہ پرایشچت سومنتر ہے کسی کا انگ ہے -

ف اس مقام پر یہ شک ہوتا ہے کہ یہ بات اشلوک ۷۹ میں لکھ آئے ہیں پھر دوبارہ کیوں کہا اسکا جواب یہی ہے کہ اسطرح کا مرنا چھوڑکر دوسری طرح سے گئو و براہمن کی حفاظت کیواسطے زندگی غالب کرے وہاں اشلوک ۷۹ کا مطلب جاننا اسلیے دوبارہ کہنے کا دوش نہیں ہوا -

सर्वस्वंवेदविदुषेब्राह्मणायोपपादयेत्॥ धनंवाजीवनायालं
गृहंवासपरिच्छदम्॥७६॥हविष्यभुग्वाऽनुसरेत्प्रतिस्रोतः
सरस्वतीम्॥ जपेद्वानियताहारस्त्रिर्वैवेदस्यसंहिताम्॥७७
कृतवापनोनिवसेद्ग्रामान्तेगोव्रजेऽपिवा॥ आश्रमेवृक्षमूले
वागोब्राह्मणहितेरतः॥७८॥ब्राह्मणार्थेगवार्थेवासद्यःप्रा-
णान्परित्यजेत्॥ मुच्यतेब्रह्महत्यायागोप्तागोर्ब्राह्मणस्य-
च॥७९॥

۷۶ - خواہ وید پڑھے ہوئے براہمن کو تمام دن دھن دیوے خواہ تمام عمر تک بھوجن کیواسطے
براہمن کو دھن دیوے یا گھر مع سامان کے براہمن کو دیوے یہ بھی اگیان ہے براہمن ذات
کے مارنے مین براہمن کو جاننا—

۷۷ - خواہ ویشیہ بھوجن کرتا ہوا پچھم باہنی سرسوتی مین اشنان کرے یا تھوڑا بھوجن کرتا ہوا
تین دفعہ وید کی سنگھتا کو پڑھے یہ گیان سے براہمن ذات کو مارنے مین براہمن کو جاننا-

۷۸ - گئو اور براہمن کا بھلا کرتا ہوا ڈاڑھی و مونچھ و سر منڈائے و ناخن کٹائے ہوئے گاؤن
کے روبرو یا گئو کے مقام یا درخت کی جڑ مین قیام کرے جنگل مین کٹی بنا کر رہے اسی پاپ کیواسطے یہاں

۷۹ - خواہ بارہ سال کے برت کا آغاز کیا ہے اور درمیان مین براہمن اور گئو
کی بپت چھوڑانے کیواسطے پران کا تیاگ کرے تو اسوقت برہم ہتیا سے چھوٹتا ہے-

ब्रह्महा द्वादश समाः कुटीं कृत्वा वने वसेत्। भैक्षाश्यात्मविशु-
द्ध्यर्थं कृत्वा शवशिरो ध्वजम्॥७२॥ लक्ष्यं शस्त्रभृतां वा स्याद्वि-
दुषामिच्छयात्मनः। प्रास्येदात्मानमग्नौ वा समिद्धे त्रिरवा-
क्शिराः॥७३॥ यजेत वाश्वमेधेन स्वर्जिता गोसवेन वा॥
अभिजिद्विश्वजिद्भ्यां वा त्रिवृताग्निष्टुतापि वा॥७४॥ जपन्
वान्यतमं वेदं योजनानां शतं व्रजेत्॥ ब्रह्महत्यापनोदाय मि-
तभुङ् नियतेन्द्रियः॥७५॥

۷۲ - براہمن کو مارنیوالا اپنے پاک ہونے کیواسطے جنگلوں کٹی بناکر بارہ برس تک اُسمیں رہے جس براہمن کو مارا ہو اُسکا سَر دھوجا میں رکھکر بھیکھ مانگے یہ پرائشچت نرگن براہمن کے مارنیمیں گنوان براہمن کو بدون اِچھا کے جاننا۔

۷۳ - خواہ اپنی خواہش سے علم اسلحی کو جاننے والے آدمیوں کے اسلحہ کا نشانہ ہووے یا نیچے شر کرکے تین دفعہ اپنی آتما کو اگن میں ڈالے یہ پرائشچت ہے اور آگے کے شلوک میں جو اسومیدھ یگیہ کہینگے وہ بھی نرگن براہمنوں کو گنوان کشتری اچھا سے مارے وہاں جاننا۔

۷۴ - خواہ اسومیدھ سورجت گوسو ابھجت وشوجت ترورت اگنشٹت انمیں سے کوئی ایک یگیہ کرے یہ پرائشچت اگیان سے براہمن کو مارے وہاں براہمن وغیرہ تینوں ورن کو جاننا۔

۷۵ - برہم ہتیا چھڑانے کیواسطے تھوڑا بھوجن کرتا ہوا اندریوں پر غالب ہوکر کسی ایک وید کو پڑھتا ہوا سو جوجن گمن کرے یہ بھی اگیان سے براہمن ذات کے مارنے میں براہمن کشتری ویشیہ کو پرائشچت جاننا۔

ब्राह्मणस्यरुजः कृत्याघ्रातिरघ्रेयमद्ययोः॥ जैह्म्यंचमैथुनंपुं-
सिजातिभ्रंशकरंस्मृतम्॥ खराश्वोष्ट्रमृगेभानामजाविकवध-
स्तथा॥ संकरीकरणंज्ञेयंमीनाहिमहिषस्यच॥ ६८॥ निन्दि-
तेभ्योधनादानंवाणिज्यंशूद्रसेवनम्॥ अपात्रीकरणंज्ञेय-
मसत्यस्यचभाषणम्॥ ६९॥ कृमिकीटवयोहत्यामद्यानुग-
तभोजनम्॥ फलैधःकुसुमस्तेयमधैर्यंचमलावहम्॥ ७०॥
एतान्येनांसिसर्वाणियथोक्तानिपृथक्पृथक्॥ यैर्यैर्व्रतैरपो-
ह्यन्तेतानिसम्यङ्निबोधत॥ ७१॥

۶۷۔ براہمن کو ڈنڈ دینا یعنے ہاتھ پاؤن وغیرہ کی ایذا دینا لہسن و پیشاب و شراب کا سونگھنا کٹل پنا منھ وغیرہ مین جماع کرنا یہ سب ذات کو بھرشٹ کرنیوالے ہین۔

۶۸۔ گدھا۔ گھوڑا۔ اونٹ۔ ہاتھی۔ بکرا۔ بھیڑ۔ مچھلی۔ سانپ۔ بھینسا۔ انھون کا مارنا سنکری کرن کہلاتا ہے۔

۶۹۔ نندت آدمی سے دھن لینا بنیا کا کام کرنا شودر کا سیون کرنا جھوٹھ بولنا یہ سب اپاتری کرن کہلاتے ہین۔

۷۰۔ چھوٹے کیڑے بڑے کیڑے و پرند انھون کا مارنا کھانے کے لائق چیز شرابادی مین رکھی ہوئی شراب کے ساتھ آئی ہوئی ہو۔ اس چیز کا کھانا پھل و لکڑی و پھول کا چرانا دھیرج نکرنا یہ سب ملاوہ کہلاتے ہین۔

۷۱۔ یہ سب پاپ علیحدہ علیحدہ کہے یہ سب جس جس برت کرنیسے دور ہوتے ہین ان برتون کو کہتے ہین۔

सर्वाकरेष्वधीकारोमहायंत्रप्रवर्त्तनम्॥ हिंसौषधीनांस्त्र्या
जीवोऽभिचारोमूलकर्मच॥ इन्धनार्थमशुष्काणांद्रुमाणा
मवपातनम्॥ आत्मार्थंचक्रियारम्भोनिन्दितान्नादनंतथा॥
६४॥ अनाहिताग्नितास्तेयमृणानामनपक्रिया॥ असच्छा
स्त्राधिगमनंकौशीलव्यस्यचक्रिया॥ ६५॥धान्यकुप्यपशु-
स्तेयंमद्यपस्त्रीनिषेवणम्॥ स्त्रीशूद्रविट्क्षत्रवधोनास्तिक्यं
चोपपातकम्॥ ६६॥

۶۳- سونا وغیرہ کی پیدائش کا جو مقام ہے اسپر بحکم حاکم وقت اختیار ہونا پل وغیرہ کا باندھنا دوا ادن کا مارنا یعنی کشتہ بنانا اپنی عورت کو کسبی بنا کر دوسرے مرد کے جماع سے جو دولت ملی اُس سے اوقات بسر کرنا شاستر میں لکھے ہوئے مارن پرلوک کو کرنا منتر یا اوید وغیرہ کے ذریعہ سے بسی کرن کرنا۔

۶۴- ایندھن کیواسطے گیلے درخت کو گرانا بدون دیوتا و پتروں کے صرف اپنے ہی واسطے کھانا بنانا بدون خواہش کے ایک دفعہ لسن وغیرہ جو کھانے کے لائق نہیں ہے اُسکو کھانا۔

۶۵- ادھکار ہوتے ہوئے اگنی ہوتر کو ترک کرنا سونا چھوڑ کر چاندی وغیرہ چرانا تینوں رن (یعنی رشی رن دیورن پتر رن) کو نہ ادا کرنا وید و دھرم شاستر کے خلاف جو شاستر ہے اُسکو سیکھنا ناچنا گانا بجانا۔

۶۶- دھانیہ تانبا و لوہا وغیرہ و چارپایہ کا چرانا براہمن کشتری ویشیہ کی شرابی عورت سے جماع کرنا استری و شودر و ویشیہ و کشتری انھوں کا مارنا پریوگ نہیں ہے ایسا سمجھنا یہ سب ایک ایک اپ پاتک کہلاتے ہیں۔

रेतःसेकःस्वयोनीषुकुमारीष्वन्त्यजासु च ॥ सख्युःपुत्रस्य च
स्त्रीषुगुरुतल्पसमंविदुः ॥ ५८ ॥ गोवधोऽयाज्यसंयाज्यपार
दार्यात्मविक्रयाः ॥ गुरुमातृपितृत्यागःस्वाध्यायाग्न्योःसु-
तस्य च ॥ ५९ ॥ परिवित्तितानुजेऽनूढेपरिवेदनमेव च ॥ तयो-
र्दानं च कन्यायास्तयोरेव च याजनम् ॥ ६० ॥ कन्याया दूषणं चै-
व वार्द्धुष्यं व्रतलोपनम् ॥ तडागारामदाराणामपत्यस्य च वि-
क्रयः ॥ ६१ ॥ व्रात्यता बान्धवत्यागो भृत्याध्यापनमेव च ॥
भृताच्चाध्ययनादानमपण्यानां च विक्रयः ॥ ६२ ॥

۵۸۔ سگی بہن اور کماری اور چانڈالی اور دوست کی زوجہ اور بیٹے کی زوجہ انھون کے ساتھ جماع کرنا والدہ کے ساتھ جماع کرنیکے برابر ہے۔

۵۹۔ گئو کو مارنا جو یگیہ کرنیکے لائق نہین ہے اُسکو یگیہ کرانا دوسرے کی زوجہ سے جماع کرنا اپنی آتما کو فروخت کرنا گرو اور ماتا اور پتا کو ترک کرنا وید خوانی اور اگنی کی سیوا اور بیٹا کو ترک کرنا

۶۰۔ بے شادی بڑے بھائی کے ہونے پر چھوٹے بھائی کی شادی ہوجانا اور ان دونون بھائیون کو کنیا دینا اور انکو یگیہ کرانا۔

۶۱۔ کنیا کی فرج بین انگلی ڈالکر باعیب کرنا سود لیکر زندگی بسر کرنا برہم چاری ہوکر جماع کرنا تالاب و باغیچہ و عورت و بیٹے کو فروخت کرنا۔

۶۲۔ وقت پر جنیو کا نہونا چا چا وغیرہ کی سیوا نہ کرنا دولت لیکر پڑھانا دولت دیکر پڑھنا نل وغیرہ جو فروخت کرنیکے لائق نہین ہین انکو فروخت کرنا۔

एवंकर्मविशेषेणजायन्तेसद्विगर्हिताः ।। जडमूकान्धबधिरा-विकृताकृतयस्तथा।। ५२।। चरितव्यमतोनित्यंप्रायश्चित्तंवि-शुद्धये।। निन्द्यैर्हिलक्षणैर्युक्ताजायन्तेऽनिष्कृतैनसः।।५३।।
ब्रह्महत्यासुरापानंस्तेयंगुर्वङ्गनागमः।। महान्तिपातकान्या-हुःसंसर्गश्चापितैःसह।।५४।। अनृतंचसमुत्कर्षेराजगामिच पैशुनम्।। गुरोश्चालीकनिर्बन्धःसमानिब्रह्महत्यया।।५५।।
ब्रह्मोज्झतावेदनिन्दाकौटसाक्ष्यंसुहृद्वधः।। गर्हितानाद्ययोर्जग्धिःसुरापानसमानिषट्।।५६।।निक्षेपस्यापहरणंनरा-श्वरजतस्यच।। भूमिवज्रमणीनांचरुक्मस्तेयसमंस्मृतम्।। ५७।।

۵۲ - آدمی اس راہ سے کھوٹا کام کرکے بھلے لوگوں میں نندت ہوتا ہے اور جاہل و گونگے و اندھے و بہرے وغیرہ عیوب کو پاتا ہے۔

۵۳ - اسلئے پاک ہونیکے واسطے ہمیشہ پرائسچت کریں جنھوں نے پرائسچت نہیں کیا وے نندت لکشن والے ہوتے ہیں

۵۴ - برہم ہتیا شراب خواری برہمن کا دس ماشہ یا زیادہ سونا چرانا والدہ سے جماع یہ چار مہاپاپ ہیں انھوں کے ساتھ میل و ملاپ کرنے سے پانچواں مہاپاتک ہے۔

۵۵ - نیچ ذات ہو کر کہو کہ ہم بڑی ذات والے ہیں اسطرح جھوٹھ بولنا اور کسی کا اسقسم کا دوش کہ جسکے کہنے سے اسکی موت ہو راجہ کے روبرو کہنا گرو سے جھوٹھ بولنا یہ سب برہم ہتیا کے برابر ہیں

۵۶ - پڑھے ہوئے وید کو بھولنا وید کی برائی کرنا گواہ ہو کر جھوٹھ بولنا دوست کو مارنا لہسن وغیرہ کا کھانا تا لشا وغیرہ کا کھانا یہ سب شراب نوشی کے برابر ہیں۔

۵۷ - زر امانت و آدمی و گھوڑا و چاندی و زمین و ہیرا و منی انھوں کا چرانا سونا چرانے کے برابر ہے

अकामतः कृतं पापं वेदाभ्यासेन शुध्यति ॥ कामतस्तु कृतं मोहा-
त्प्रायश्चित्तैः पृथग्विधैः ॥ ४६ ॥ प्रायश्चित्तीयतां प्राप्य दैवात्पू-
र्वकृतेन वा ॥ न संसर्गं व्रजेत्सद्भिः प्रायश्चित्तेऽकृते द्विजः ॥ ४७ ॥
इह दुश्चरितैः केचित्केचित्पूर्वकृतैस्तथा ॥ प्राप्नुवन्ति दुरात्मानो
नरा रूपविपर्ययम् ॥ ४८ ॥ सुवर्णचौरः कौनख्यं सुरापः श्याव
दन्तताम् ॥ ब्रह्महा क्षयरोगित्वं दौश्चर्म्यं गुरुतल्पगः ॥ ४९ ॥
पिशुनः पौतिनासिक्यं सूचकः पूतिवक्त्रताम् ॥ धान्यचौरोऽ
ङ्गहीनत्वमातिरैक्यं तु मिश्रकः ॥ ५० ॥ अन्नहर्तामयावित्वं-
मौक्यं वागपहारकः ॥ वस्त्रापहारकः श्वैत्र्यं पङ्गुतामश्वहा-
रकः ॥ ५१ ॥

۴۶- بدون خواہش کے کیا ہوا پاپ وید کی مہارت سے چھوٹتا ہے اور شوق سے جو پاپ کیئے وہ انواع اقسام کے پرایشچت کرنیسے چھوٹتے ہیں۔

۴۷- بر تقاضائے مقسوم پہلے جنم میں کئے ہوئے پاپ سے پرایشچت کے لائق ہوکر سجنوں کے ساتھ بھوجن و قیام و بغلگیری وغیرہ ملاپ نکرے۔

۴۸- کوئی آدمی اس لوک میں کھوٹے کام کرنیسے اور کوئی آدمی پہلے جنم میں کھوٹے کام کرنے سے بدصورتی کو پاتے ہیں۔

۴۹- سونا چورانیوالا شراب پینیوالا برہمن کو مارنیوالا گورو کی عورت سے جماع کرنیوالا سلسلہ سے ناخن ناکارہ پیدائش سے سیاہ دندان کشٹی روگ ناقص جلد پاتا ہے۔

۵۰- چغل خور اشارہ سے کام کو جاننے والا و غلہ چرانیوالا ملاوٹ کرنیوالا یہ سب سلسلے سے بدبوئے بینی و بدبوئے دہن کسی عضو کا نہونا اور کسی عضو کا زیادہ ہونا ان عیبوں کو پاتے ہیں۔

۵۱- غلہ چرانیوالا جانگر چپ رہنے والا کپڑا چرانیوالا گھوڑا چرانیوالا سلسلہ سے عام روگ گونگاپن سفید کوڑھ لنگڑاپن کو پاتا ہے

इन्द्रियाणियशःस्वर्गमायुःकीर्त्तिंप्रजाःपशून्।।हन्त्यल्पद-
क्षिणोयज्ञस्तस्मान्नाल्पधनोयजेत्।।४०।।अग्निहोत्र्यपवि-
ध्याग्नीन्ब्राह्मणः कामकारतः।। चान्द्रायणंचरेन्मासंवीर
हत्यासमंहितत्।।४१।।येशूद्रादधिगम्यार्थमग्निहोत्रमुपा-
सते।।ऋत्विजस्तेहिशूद्राणांब्रह्मवादिषुगर्हिताः।।४२।।ते-
षांसततमज्ञानांवृषलाग्न्युपसेविनाम्।।पदामस्तकमाक्र-
म्यदातादुर्गाणिसन्तरेत्।।४३।।अकुर्वन्विहितंकर्मनिन्दितं-
चसमाचरन्।।प्रसक्तश्चेन्द्रियार्थेषुप्रायश्चित्तीयतेनरः।।४४
अकामतःकृतेपापेप्रायश्चित्तंविदुर्बुधाः।।कामकारकृतेऽ
प्याहुरेकेश्रुतिनिदर्शनात्।।४५।।

۴۰ - تھوڑی دکشنا والی یگیہ اندری یش سورگ عمر نیکنامی اولاد چارپایہ ان سب کو نیست نابود کرتی ہے اسلئے تھوڑا دھن والا یگیہ نکرے -

۴۱ - اگن ہوتری برہمن خواہش سے صبح و شام ہون نکرے تو بیٹا مارنے کا پاپ ہوتا ہے اُس پاپ دور ہونیکے واسطے ایک مہینہ چاندراین برت کرے -

۴۲ - جو براہمن شودر سے دھن لیکر اگن ہوتر کرتا ہے وہ شودروں کا رتوج ہوتا ہی اُسکو کچھ پھل نہیں ہوتا اور وید پڑھنے والے براہمنوں میں نندت کہلاتا ہی -

۴۳ - وہ شودر دانیہ دینے سے اپنے رتوجون کے ماتھے پر پانون دھرکر نرک کو ترتا ہے اور رتوجون کو کچھ پھل نہیں ہوتا -

۴۴ - شاستر میں لکھے ہوئے کرم کو نکرنے سے اور اَنندت کرم کرنے سے اور اندریون کے مطالب میں بدل مشغول ہونے سے آدمی پراشچت کرنیکے لائق ہوتا ہے -

۴۵ - پنڈتون نے بدون خواہش کے پاپ کرنے میں پراشچت کو کہا اور خواہش سے پاپ کرنے میں بھی وید کے حکم سے پراشچت ہی -

क्षत्रियोबाहुवीर्येणतरेदापदमात्मनः॥ धनेनवैश्यशूद्रौतुजप
होमैर्द्विजोत्तमः॥३४॥ विधाताशासितावक्तामैत्रोब्राह्मणउ-
च्यते॥ तस्मैनाकुशलंब्रूयान्नशुष्कांगिरमीरयेत्॥३५॥नवै-
कन्यानयुवतिर्नाल्पविद्योनबालिशः॥ होतास्यादग्निहोत्रस्य
नार्तोनासंस्कृतस्तथा॥ ३६॥नरकेहिपतन्त्येतेजुह्वन्तःसच-
यस्यतत्॥ तस्माद्वैतानकुशलोहोतास्याद्वेदपारगः॥ ३७॥प्रा
जापत्यमदत्त्वाश्वमग्न्याधेयस्यदक्षिणाम्॥ अनाहिताग्नि
र्भवतिब्राह्मणोविभवेसति॥ ३८॥पुण्यान्यन्यानिकुर्वीत-
श्रद्दधानोजितेन्द्रियः॥ नत्वल्पदक्षिणैर्यज्ञैर्यजेतेहकथंचन
॥३९॥

۳۴- کشتری اپنی قوت بازو سے اور ویشیہ اور شودر دونوں دولت سے اور براہمن جپ اور ہون سے وقت مصیبت کو طے کریں۔

۳۵- جو براہمن شاستر میں لکھے ہوئے کرم کا کرنیوالا اور بیٹے اور شاگرد وغیرہ کو پڑھانیوالا دنڈ پرایشچت وغیرہ کو کہنے والا اور سب جانداروں سے دوستی رکھنے والا ہے اسکو نامرغوب بات وسخت کلمہ نہ کہنا چاہئے۔

۳۶- کنیان اور جوان اور تھوڑے علم والا اور مورکھ یعنی بیوقوف اور بیمار اور جنیو نہ رکھنے والا یہ سب وقت صبح وشام اگن ہوتر نہ کریں۔

۳۷- اگر ان سب کو کریں تو نرک میں جاتے ہیں اور جسکی اگن ہو یعنی جو یجمان ہے وہ بھی نرک میں جاتا ہے اسلئے جو وید کے پار گیا ہوا اور اگن ہوتر کرم کو جاننے والا ہو وہی یجمان کا ہون کرے۔

۳۸- براہمن کیواسطے اگن ہوتر کی دکشنا جو گھوڑا ہے اسکو جب دولت ہو کر بھی نہ دیوے تو اگن ہوتر کا پھل اس براہمن کو نہیں ہوتا۔

۳۹- جو آدمی اندریوں کو جیت کر شردھا سے دوسرا پنیہ کرے لیکن تھوڑی دکشنا سے یگیہ کبھی نہ کرے

आपत्कल्पेन योधर्मंकुरुतेऽनापदिद्विजः॥ सनाप्नोतिफलं
तस्यपरत्रेतिविचारितम्॥ २८॥ विश्वैश्चदेवैःसाध्यैश्चब्राह्म-
णैश्चमहर्षिभिः॥ आपत्सुमरणाद्भीतैर्विधेःप्रतिनिधिःकृतः
॥२९॥ प्रभुःप्रथमकल्पस्ययोऽनुकल्पेनवर्त्तते॥ नसांपराथि-
कंतस्यदुर्मतेर्विद्यतेफलम्॥ ३०॥ नब्राह्मणोऽवेदयतकिंचि-
द्राजनिधर्मवित्॥ स्ववीर्येणैवतान्शिष्यान्मानवानपका-
रिणः॥ ३१॥ स्ववीर्याद्राजवीर्याच्चस्ववीर्यंबलवत्तरम्॥ तस्मा-
त्स्वेनैववीर्येणनिगृह्णीयादरीन्द्विजः॥ ३२॥ श्रुतीरथर्वाङ्गि-
रसीःकुर्यादित्यविचारयन्॥ वाक्शस्त्रंवैब्राह्मणस्यतेनह-
न्यादरीन्द्विजः॥ ३३॥

۲۸- وقت مصیبت نہین ہو اور جو براہمن وقت مصیبت کے دھرم کرتا ہے وہ پرلوک مین
اسکے پھل کو نہین پاتا۔
۲۹- موت سے خوفناک وشوے دیو وسادھگن و براہمن و بڑے رشی لوگ ان سبھون نے
وقت مصیبت مین اچھے دھرم کے خلاف عمل کیا ہے۔
۳۰- مقدم دھرم کے کرنے مین صاحب طاقت ہوکر خلاف دھرم کرنیوالا پرلوک مین
اس خلاف دھرم کا پھل نہین پاتا۔
۳۱- دھرم کو جاننے والا براہمن راجہ سے کچھ نہ کہے بلکہ اپنی قوت سے اپکاری آدمیونکو سزا
دیوے۔
۳۲- راجہ کے پراکرم سے اپنا پراکرم بڑا ہے اسلئے براہمن اپنے پراکرم سے دشمنون کو مغلوب
کرے۔
۳۳- اتھرب وانگرارش نے جو مارن پرلوگ کہا اسکو کرے اسمین کچھ بچار نکرے براہمن کی
بانی ہی ہتھیار ہے اس سے دشمنونکو مارے۔

तस्यभृत्यजनंज्ञात्वास्वकुटुम्बान्महीपतिः॥ श्रुतशीले च
विज्ञायवृत्तिंधर्म्यांप्रकल्पयेत्॥ २२॥ कल्पयित्वाऽस्यवृ-
त्तिंचरक्षेदेनंसमन्ततः॥ राजाहिधर्मषड्भागंतस्मात्प्राप्नोति
रक्षितात्॥ २३॥ नयज्ञार्थंधनंशूद्राद्विप्रोभिक्षेतकर्हिचित्॥
यजमानोहिभिक्षित्वाचाण्डालःप्रेत्यजायते॥ २४॥ यज्ञार्थ-
मर्थंभिक्षित्वायोनसर्वंप्रयच्छति॥ सयातिभासतांविप्रःका-
कतांवाशतंसमाः॥ २५॥ देवस्वंब्राह्मणस्वंवालोभेनोपहि-
नस्तियः॥ सपापात्मापरेलोकेगृध्रोच्छिष्टेनजीवति॥ २६॥
इष्टिंवैश्वानरींनित्यंनिर्वपेदब्दपर्यये॥ क्लृप्तानांपशुसोमा-
नांनिष्कृत्यर्थमसम्भवे॥ २७॥

۲۲- راجہ براہمن کے نوکر و عیال و اطفال و وید خوانی کی عادت اِن سبکو جان کر دھرم سے
مشمول وجہ معاش کو مقرر کرے -

۲۳- براہمن کی وجہ معاش کر کے اُسکی حفاظت چاروطرف سے کرے اُس حفاظت سے
براہمن جو دھرم کریگا اُسکا چھٹھوان حصہ راجہ پاویگا -

۲۴- براہمن یگیہ کے لئے شودر سے کبھی دھن نہ مانگے اگر مانگ کر اُس دھن سے یگیہ
کرے تو دوسرے جنم مین چانڈال ہوتا ہے -

۲۵- یگیہ کیواسطے بھیکھ مانگ کر دولت فراہم کر کے تمام دولت کو یگیہ مین نہ لگادے تو سو
جنم تک بھاس نام پرند اور کوّا ہوتا ہے

۲۶- جو آدمی طمع سے براہمن کی دریہ اور دیوتا کی دریہ برباد کرتا ہے وہ پاپی پرلوک مین گدّھ
پرند کے پس خوردہ سے زندگی بسر کرتا ہے -

۲۷- پس یگیہ و سوم یگیہ تمام سال مین ایکمرتبہ کرنا چاہئے اگر یہ نہو سکے تو اُسکی پراشچت
کے لئے اخیر سال پر اگن دیوتا کی یگیہ کرے -

तथैव सप्तमे भक्ते भक्तानि षडनश्नता ॥ अश्वस्तनविधाने
न हर्तव्यं हीनकर्मणः ॥ १६ ॥ खलात्क्षेत्रादगाराद्वा यतो वा-
प्युपलभ्यते ॥ आख्यातव्यं तु तत्तस्मै पृच्छते यदि पृच्छति १७
॥ ब्राह्मणस्वं न हर्तव्यं क्षत्रियेण कदाचन ॥ दस्युनिष्क्रिय-
योस्तु स्वमजीवन्हर्तुमर्हति ॥ १८ ॥ योऽसाधुभ्योऽर्थमादाय
साधुभ्यः संप्रयच्छति ॥ स कृत्वा प्लवमात्मानं संतारयति ता-
वुभौ ॥ १९ ॥ यद्धनं यज्ञशीलानां देवस्वं तद्विदुर्बुधाः ॥ अय-
ज्वनां तु यद्वित्तमासुरस्वं तदुच्यते ॥ २० ॥ न तस्मिन्धारयेद्दण्डं
धार्मिकः पृथिवीपतिः ॥ क्षत्रियस्य हि बालिश्याद्ब्राह्मणः
सीदति क्षुधा ॥ २१ ॥

۱۶- دن میں دو دفعہ بھوجن کرنا شاستر کا حکم ہے جو کسی براہمن نے چھ دفعہ بھوجن نہیں کیا
یعنے تین دن فاقہ ہوا اور چوتھے دن ایک دفعہ کیواسطے بھی بھوجن نہو تو برا کام کرنیوالے
سے چوری کرکے لینا چاہئے

۱۷- کھلیان سے یا کھیت سے یا گھر سے یا جہان سے ملے وہانسے غلہ چرا دے اور جو
غلہ کا مالک پوچھے کہ تم نے کہان سے غلہ چرایا تب کہدیوے -

۱۸- کشتری براہمن کا دھن کبھی نہ لیوے اور نہایت وقت مصیبت ہو تب کھوٹا کام کرنیوالا
اور شاستر میں کہے ہوئے دھرم کو چھوڑنیوالا جو براہمن و کشتری ہی اسکے گھر سے چوری کرے -

۱۹- جو آدمی اسادھو لوگون سے روپیہ لیکر سادھو لوگون کو دیتا ہے وہ اپنے کو ناؤ کشتی بنا کر دونو کو تار دیتا ہے

۲۰- یگیہ کرنیوالون کا دھن دیوتاون کا دھن اور یگیہ نکرنیوالون کا دھن اسرون کا دھن
کہلاتا ہے اسیطرح پنڈتون نے کہا ہے -

۲۱- ایسے کرم میں جسکا بیان اوپر ہوا راجہ ڈنڈ نہ لیوے کیونکہ راجہ کی کمی سے براہمن بھوک
سے دکھی ہوتا ہے -

योवैश्यःस्याद्बहुपशुर्हीनक्रतुरसोमपः॥ कुटुम्बात्तस्यतद्द्र-
व्यमाहरेद्यज्ञसिद्धये॥ १२॥ आहरेत्त्रीणिवाद्वेवाकामंशू-
द्रस्यवेश्मनः॥ नहिशूद्रस्ययज्ञेषुकश्चिदस्तिपरिग्रहः॥ १३
॥ योऽनाहिताग्निःशतगुरयज्वाचसहस्रगुः॥ तयोरपिकु-
टुम्बाभ्यामाहरेदविचारयन्॥ १४॥ आदाननित्याच्चादातु-
राहरेदप्रयच्छतः॥ तथायशोऽस्यप्रथतेधर्मश्चैवप्रवर्द्धते॥
॥ १५॥

۱۲ - تو جو ویشیہ پاک یگیہ اور سوم یگیہ نکرتا ہو اور بہت چارپایہ (یعنے گئو وغیرہ) رکھتا ہو اُسکے گھر سے اس انگ یعنی سامان کے لائق دولت کو زور سے یا چوری سے یگیہ کرنیوالا لیوے -

۱۳ - جب یگیہ کے دو انگ (یعنے سامان) خواہ تین انگ بدون دریہ کے پورے نہیں ہوتے اور ویشیہ سے بھی دھن نہیں ملتا تو شودر کے گھر سے زور سے یا چوری سے دھن لینا منع نہیں ہے -

۱۴ - جو شخص اگنی ہوتری نہیں ہے اور سو گئو پاس رکھتا ہے یا یگیہ نہیں کرتا اور ہزار گئو رکھتا ہے ان دونوں کے گھر سے یگیہ کا انگ پورا ہونیکے واسطے دھن لیوے اسمیں کچھ بچار نہ کرے -

۱۵ - جو براہمن ہر روز دان لیتا ہے اور باولی کنواں و تالاب نہیں کھدواتا ہے اور یگیہ نہیں کرتا اور دان نہیں دیتا ہے اس سے یگیہ کا جوگ پورا ہونے کے واسطے دھن مانگا اور وہ نہیں دیتا ہے تو زور سے یا چوری سے اسکے گھر سے دھن لیوے اس سے لینے والے کی شہرت ہوتی ہے اور دھرم بڑھتا ہے -

धनानि तु यथाशक्ति विप्रेषु प्रतिपादयेत् ॥ वेदवित्सु विविक्ते-
षु प्रेत्य स्वर्गं समश्नुते ॥ ६ ॥ यस्य त्रैवार्षिकं भक्तं पर्याप्तं भृत्यवृ-
त्तये ॥ अधिकं वापि विद्येत स सोमं पातुमर्हति ॥ ७ ॥ अतः
स्वल्पीयसि द्रव्ये यः सोमं पिबति द्विजः ॥ स पीतसोमपूर्व्वोऽ
पि न तस्याप्नोति तत्फलम् ॥ ८ ॥ शक्तः परजने दाता स्वजने-
दुःखजीविनि ॥ मध्वापातो विषास्वादः स धर्मप्रतिरूपकः ॥
९ ॥ भृत्यानामुपरोधेन यत्करोत्यौर्ध्वदैहिकम् ॥ तद्भवत्यसु-
खोदर्कं जीवतस्य मृतस्य च ॥ १० ॥ यज्ञश्चेत्प्रतिरुद्धः स्यादे-
केनाङ्गेन यज्वनः ॥ ब्राह्मणस्य विशेषेण धार्मिके सति रा-
जनि ॥ ११ ॥

۶ - جو براہمن زن و فرزند کی پرورش مین ہو اور وید پڑھتا ہو راجہ ایسی براہمن کو اپنی طاقت کے موافق دولت دیوے وہ راجہ اس لوک اور پرلوک کو حاصل کرتا ہے۔

۷ - جس آدمی کے پاس نوکر و زن و فرزند وغیرہ زیر سایہ رہنے والے کے خرچ کے لائق تین سال تک کھانے کے واسطے غلہ موجود ہے وہ سوم یگیہ کرنے کے لائق ہے۔

۸ - اس سے کم دولت رکھنے والا سوم یگیہ کرے تو اوسکا پھل نہین پاتا۔

۹ - غیر آدمیون کو غلہ دینے مین صاحب مقدور ہی اور اپنی عیال و اطفال کو کھانا نہین دیتا اور وے عیال و اطفال تکلیف سے بسر کرتے ہین ایسا آدمی دھرم کرنیوالا نہین ہے پہلے نیکنامی ملتی ہے پیچھے نرک ملتا ہے۔

۱۰ - جو شخص نوکر و چاکر و زن و فرزند وغیرہ کو دکھ دیکر پرلوک کے واسطے دان وغیرہ کرتا ہے وہ دان اسکی زندگی تک ہی بعد مرنے کے دکھ دینے والا ہے۔

۱۱ - دھرماتما راجہ کے موجود ہونے پر جس براہمن یا کشتری سے یگیہ کی سامگری کا کوئی ایک سامان طیار نہو

सान्तानिकंयक्ष्यमाणमध्वगंसर्ववेदसम्॥ गुर्वर्थंपितृमात्रर्थं
स्वाध्यायार्थ्युपतापिनः॥१॥ नवैतान्स्नातकान्विद्याद्ब्राह्मणा
न्धर्मभिक्षुकान्॥ निःस्वेभ्योदेयमेतेभ्योदानंविद्याविशेषतः
॥२॥ एतेभ्योहिद्विजाग्र्येभ्योदेयमन्नंसदक्षिणम्॥ इतरेभ्योब
हिर्वेदिकृतान्नंदेयमुच्यते॥ ३॥ सर्व्वरत्नानिराजातुयथार्हंप्र
तिपादयेत्॥ ब्राह्मणान्वेदविदुषोयज्ञार्थंचैवदक्षिणाम्॥ ४
॥ कृतदारोऽपरान्दारान्भिक्षित्वायोऽधिगच्छति॥ रतिमात्रं
फलंतस्यद्रव्यदातुस्तुसन्ततिः॥५॥

۱ - شادی کی خواہش کرنیوالا جو سنتوم وغیرہ یگیہ کی خواہش کرنیوالا مسافر سب دھن دکشنا دیکر بسوجت نام یگیہ کو کرنیوالا وڈیا گرو ماتا پتا ان تینوں کو کھانا و کپڑا دینے والا وقت پڑھنے وید کے کھانے اور کپڑے کی خواہش کرنیوالا بیمار

۲ - یہ نو براہمن سناتک کہلاتے ہیں یعنے برہم چاری کہلاتے ہیں اور دھرم بھکشا کا سوال رکھتے ہیں یہ سب بے زر ہوں تو انکی وڈیا کے لائق سونا وغیرہ دینا چاہیے -

۳ - یہ نو براہمن افضل ہیں انکو بیدی کے اندر غلہ مع دکشنا دینا چاہیے اور جو براہمن انکے سوا ہیں انکو بیدی کے باہر طیار کھانا دینا کہتے ہیں -

۴ - راجہ وید پڑھنے والے براہمن کو اوسکی وڈیا کے لائق سب رتن دیوے اور یگیہ کے واسطے بھی دکشنا دیوے -

۵ - پہلی عورت موجود ہو اور بھکشا سے دولت فراہم کرکے اس روپیہ سے دوسری شادی کرے تو اسکو صرف جماع کا لطف ملتا ہے اور اولاد اسی کی ہے جسنے دولت دی -

* چونکہ اس ادھیاے میں پرائشچتوں کو بیان کیا جائیگا اسواسطے پہلے ان براہمنوں کو بیان کیا جو کہ دان دینے کے لائق ہیں -

एते चतुर्णां वर्णानामापद्धर्माः प्रकीर्त्तिताः॥ यान्सम्यगनुति-
ष्ठन्तो व्रजन्ति परमां गतिम्॥१३०॥ एष धर्मविधिः कृत्स्नश्चातु-
र्वर्ण्यस्य कीर्त्तितः॥ अतः परं प्रवक्ष्यामि प्रायश्चित्तविधिं शुभम्
॥१३१॥

इति मानवे धर्मशास्त्रे भृगुप्रोक्तायां संहितायां
दशमोऽध्यायः १०

۱۳۰ - وقت مصیبت میں چاروں ورن کیواسطے اس دھرم کو کہا جس دھرم کے کرنے سے پرم گت کو پاتا ہے -
۱۳۱ - چاروں ورنوں کا یہ طریق دھرم کہا اسکے بعد پرایشچت (یعنے کفارہ) کے نیک طریق کہتے ہیں -

منُ جی کا دھرم شاستر بھرگو جی کی سنگتا کا
دسواں ادھیا سماپت ہوا -

न शूद्रे पातकं किंचिन्न च संस्कारमर्हति ।। नास्याधिकारो धर्मे
ऽस्ति न धर्मात्प्रतिषेधनम् ।। १२६ ।। धर्मेप्सवस्तु धर्मज्ञाः सतां वृत्त
मनुष्ठिताः ।। मंत्रवर्ज्यं न दुष्यंति प्रशंसां प्राप्नुवन्ति च ।। १२७ ।। य-
थायथा हि सद्वृत्तमातिष्ठत्यनसूयकः ।। तथातथेमं चामुं च लो-
कं प्राप्नोत्यनिंदितः ।। १२८ ।। शक्तेनापि हि शूद्रेण न कार्यो धनसं-
चयः ।। शूद्रो हि धनमासाद्य ब्राह्मणानेव बाधते ।। १२९ ।।

۱۲۶ - شودر کو لہسن وغیرہ کھانے سے پاپ نہیں ہوتا اور شودر کو جنیو وغیرہ سنسکار بھی نہیں ہے اور اگنی ہوتر وغیرہ دھرم کا ادھکار بھی نہیں ہے پاک یگیہ وغیرہ دھرم کی ممانعت نہیں ہے (یہ بات تو کہہ آئے ہیں مگر شلوک آئندہ کیواسطے اصل بات کا ظاہر کرنیوالا ہے -

۱۲۷ - اپنے دھرم کو جاننے والا دھرم کی خواہش کرنیوالا دوجوں کی نافرض آچار کرنیوالا جو شودر ہے وہ نمسکار منتر سے پنچ یگیہ کو کرے اور انکو ترک نہ کرے تو اس لوک میں نیکنامی حاصل کرتا ہے -

۱۲۸ - دوسرے کے گن کی نندا نکرنیوالا شودر جس جس طرح بھلے لوگوں کے آچرن کو کرتا ہے اسی طرح اس لوک میں بڑا کہاتا ہے اور پرلوک میں سورگ پاتا ہے -

۱۲۹ - شودر سمرتھ بھی ہو مگر دولت جمع نہ کرے کیونکہ شودر دولت پاکر براہمن ہی کو تکلیف دیتا ہے -

शूद्रस्तु वृत्तिमाकांक्षन्क्षत्रमाराधयेद्यदि। धनिनं वाप्युपारा-
ध्य वैश्यं शूद्रो जिजीविषेत्॥१२१॥स्वर्गार्थमुभयार्थं वा विप्रा
नाराधयेत्तु सः॥ जातब्राह्मणशब्दस्य सा ह्यस्य कृतकृत्यता॥
१२२॥ विप्रसेवैव शूद्रस्य विशिष्टं कर्म कीर्त्यते॥ यदतोऽन्यद्धि
कुरुते तद्भवत्यस्य निष्फलम्॥१२३॥प्रकल्प्या तस्य तैर्वृत्तिः
स्वकुटुम्बाद्यथार्हतः॥ शक्तिं चावेक्ष्य दाक्ष्यं च भृत्यानां च परि
ग्रहम्॥१२४॥उच्छिष्टमन्नं दातव्यं जीर्णानि वसनानि च॥पु-
लाकाश्चैव धान्यानां जीर्णाश्चैव परिच्छदाः॥१२५॥

۱۲۱ – شودر براہمن کی سیوا سے اوقات گذاری نکر سکے اور دوسری جیوکا کی خواہش کرے تو کشتری کی سیوا یا دولتمند ویش کی سیوا کرکے اوقات بسر کرے۔

۱۲۲ – شودر سورگ یا جیوکا دونوں کیواسطے براہمن کی سیوا کرے یہ شودر براہمن کی سیوا کرتا ہے اسطرح عالم میں شودر رہونا ایسا ہے کہ گویا شودر کرنیکے لائق سب کاموں کو کرچکا۔

۱۲۳ – براہمن کی سیوا شودر کا بڑا کرم ہے اسکو چھوڑکر اور جو کچھ کرتا ہے وہ نشپھل ہے۔

۱۲۴ – براہمن اپنے خدمتگذار شودر کی سیوا میں طاقت اور کام کرنے میں خوشی اور زن و فرزند وغیرہ کی تعداد اور اونکا خرچ ان سب باتوں کو دیکھکر اپنے گھر سے اسکے لائق جیوکا کو تجویز کرے۔

۱۲۵ – جو شودر اپنا خدمتگذار اور اپنی پناہ میں ہے اسکو جوٹھا غلہ اور پرانا کپڑا ولیٹر سا ز کا دھان وا پرانی چارپائی وگھر کا پرانا اسباب دینا چاہیے۔

विद्या शिल्पं भृतिः सेवा गोरक्ष्यं विपणिः कृषिः ॥ धृतिर्भैक्ष्यं-
कुसीदं च दश जीवनहेतवः ॥ ११६ ॥ ब्राह्मणः क्षत्रियो वापि
वृद्धिं नैव प्रयोजयेत् ॥ कामन्तु खलु धर्मार्थं दद्यात्पापीयसेऽ
ल्पिकाम् ॥ ११७ ॥ चतुर्थमाददानोऽपि क्षत्रियो भागमापदि ॥
प्रजा रक्षन्परं शक्त्या किल्बिषात्प्रतिमुच्यते ॥ ११८ ॥ स्वधर्मो
विजयस्तस्य नाहवे स्यात्पराङ्मुखः ॥ शस्त्रेण वैश्यान्रक्षि-
त्वा धर्म्यमाहारयेद्बलिम् ॥ ११९ ॥ धान्येऽष्टमं विशां शुल्कं विंशं
कार्षापणावरम् ॥ कर्मोपकरणाः शूद्राः कारवः शिल्पिनस्त-
था ॥ १२० ॥

۱۱۶ - ودیا یعنے وید کے سواے دیگر علوم اور لکھنا وغیرہ و مزدوری و سیوا و پرورش گئو و خرید و فروخت و کھیتی کرنا و دھرج و بھیکھ و بیاج لینا یہ دس اسباب اوقات گذاری ہین لیکن وقت مصیبت ہین جو وجہ معاش جسکو منع ہے وہ آدمے وقت مصیبت ہین اس معاش کو اختیار کرے

۱۱۷ - برہمن و کشتری بیاج نہ لیوین یا برا کام کرنیوالے کو دھرم کے واسطے تھوڑا سا بیاج لیکر زر مطلوبہ دیوین -

۱۱۸ - کشتری اپنی طاقت کے موافق پرورش رعایا کرتا ہوا وقت مصیبت ہین رعایا سے چوتھا حصہ لیکر پاپ سے چھوٹتا ہے -

۱۱۹ - اسلحون سے فتح کا حاصل کرنا لڑائی ہین نہ بھاگنا یہ دونون کام راجہ کا دھرم ہے اور اسلحون سے ویشیون کی حفاظت کرکے اپنے دھرم کے موافق محصول لیوے -

۱۲۰ - بحالت وقت مصیبت دھانیہ ہین ویشیون سے بیس روپیہ بڑھنے ہین آٹھوان حصہ لیوے اور نہایت وقت مصیبت ہین تو چوتھا حصہ کہہ آئے ہین وقت مصیبت نہو تو بارہوان حصہ لیوے سونا و چارپایہ انکا پچاسوان حصہ لیوے اور وقت مصیبت نہو تو بیسوان حصہ لیوے شودر و دستکار بنا اللہ و بڑھئی وغیرہ سے وقت مصیبت ہین محصول نہ لیوے بعوض اسکے کام کرا لیوے -

शिलोञ्छमप्याददीत विप्रोजीवन्यतस्ततः ॥ प्रतिग्रहाच्छिलः श्रेयांस्ततोप्युञ्छः प्रशस्यते ॥ ११२ ॥ सीदद्भिः कुप्यमिच्छद्भिर्धनं वा पृथिवीपतिः ॥ याच्यः स्यात्स्नातकैर्विप्रैरदित्संस्त्यागमर्हति ॥ ११३ ॥ अकृतं च कृतात्क्षेत्राद्गौरजाविकमेव च ॥ हिरण्यं धान्यमन्नं च पूर्वं पूर्वमदोषवत् ॥ ११४ ॥ सप्त वित्तागमा धर्म्या दायो लाभः क्रयो जयः ॥ प्रयोगः कर्मयोगश्च सत्प्रतिग्रह एव च ॥ ११५ ॥

۱۱۲- براہمن اپنی جیوکا سے اوقات گذاری نکر سکے تو شل اور انچھ سے اوقات گذاری کرے دان سے شل اور شل سے انچھ بڑا ہے۔

۱۱۳- بے زر برہمن دھرم و عیال و اطفال ان دو باتوں کیواسطے تکلیف پاکر سوا سونا و چاندی کے غلہ و کپڑا اور بگیہ کیواسطے سونا و چاندی کو بھی اُس کشتری سے مانگے جو کرت شاستر کے موافق عمل نکرتا ہو اور جو بخل سے دینے کے خواہش نکرے اسکو ترک کرے۔

۱۱۴- زراعت رکھنے والے کھیت سے بدون زراعت رکھنے والے کھیت کا دان لینا بے دوش ہے اور گئو و بکرا و بھیڑ و سونا و غلہ و دان انھوں میں پہلا پہلا دوسرے دوسرے سے بے دوش ہے اسواسطے اوّل اوّل کے نہونے میں دوسرے دوسرے کو لینا چاہئے۔

۱۱۵- سات قسم ملا ہیں یعنی دفینہ ملا جو خرید کیا گیا جو فتح سے ملا جو بیوپار کرنے سے ملا جو کام کرکے ملا جو اچھے آدمیوں سے دان لینے سے ملا ان سات قسم کی دولت کا ملنا دھرم سے شامل ہے

भरद्वाजःक्षुधार्त्तस्तुसपुत्रोविजनेवने॥ बह्वीर्गाःप्रतिजग्राहवृ-
धोस्तक्ष्णोमहातपाः॥१०७॥ क्षुधार्त्तश्चात्तुमभ्यागाद्विश्वामि-
त्रः श्वजाघनीम्॥ चण्डालहस्तादादायधर्माधर्मविचक्षणः
॥१०८॥ प्रतिग्रहाद्याजनाद्वातथैवाध्यापनादपि॥ प्रतिग्रहः
प्रत्यवरः प्रेत्यविप्रस्यगर्हितः॥१०९॥ याजनेध्यापनेनित्यंक्रि-
येतेसंस्कृतात्मनाम्॥ प्रतिग्रहस्तुक्रियतेशूद्रादप्यन्त्यजन्मनः
॥११०॥ जपहोमैरपैत्येनोयाजनाध्यापनैःकृतम्॥ प्रतिग्रहनि-
मित्तन्तुत्यागेनतपसैवच॥१११॥

۱۰۷- بھردواج رشی بڑے تپشوی نے بھوکھ سے دکھی ہوکر مع اپنے بیٹے کے بن مین برِدھو نام بڑھئی سے بہت گئون کا دان لیا-

۱۰۸- وشوامتر رشی دھرم ادھرم کے جاننے والے نے بھوکھ سے دکھی ہوکر چانڈال کے ہاتھ سے کتّہ کی ران کو لیکر کھانے کیواسطے تجویز کیا-

۱۰۹- براہمن کو وقت مصیبت ہونے مین یگیہ کرانا اور پڑھانا ان دونون کامونکے وسیلہ سے دان لینا پرلوک مین نندا کے قابل ہے-

۱۱۰- اوپر کہی ہوئی بات مین یہ سبب ہے کہ مصیبت یا غیر مصیبت مین براہمن وکشتری و ویشیہ سنسکاریون کو پڑھانا اور یگیہ کرانا ہوتا ہے اور دان لینا تو نیچ ذات شودر سے بھی ہوتا ہے اسلیے ان دونون سے زیادہ نندا کے قابل دان لینا ہے-

۱۱۱- یگیہ کرانے اور پڑھانے سے جو پاپ ہوتا ہے وہ جپ اور ہوم سے جاتا ہے اور دان لینے سے جو پاپ ہوتا ہے وہ تپ و دان کی چیز کے ترک سے جاتا ہے-

सर्वतः प्रतिगृह्णीयाद्ब्राह्मणस्त्वनयंगतः॥ पवित्रंदुष्यतीत्ये-
तद्धर्मतोनोपपद्यते॥१०२॥नाध्यापनाद्याजनाद्वागर्हिता-
द्वाप्रतिग्रहात्॥ दोषोभवतिविप्राणांज्वलनाम्बुसमाहिते॥
१०३॥जीवितात्ययमापन्नोयोऽन्नमत्तियतस्ततः॥ आका-
शमिवपंकेननसपापेनलिप्यते॥१०४॥ अजीगर्तःसुतंहन्तु-
मुपासर्पद्बुभुक्षितः॥ नचालिप्यतपापेनक्षुत्प्रतीकारमाच-
रन्॥१०५॥ श्वमांसमिच्छन्नार्तोऽत्तुंधर्माधर्मविचक्षणः॥
प्राणानांपरिरक्षार्थंवामदेवोनलिप्तवान्॥१०६॥

۱۰۲ - برہمن وقت مصیبت مین چارو طرف سے دان لیوے جسطرح یہ بات دھرم سے پیدا نہین ہوئی کہ گنگا وغیرہ ندی کو دوش لگتا ہے -

۱۰۳ - اسی طرح پڑھانا یگیہ کرانا نندا کے لائق آدمیون سے دھن لینا انھون سے براہمن کو دوش نہین ہوتا کیونکہ براہمن جل و اگن کے برابر ہے -

۱۰۴ - جو براہمن وقت مصیبت مین اودھر اودھر سے بھوجن کرتا ہے وہ پاپ سے آلودہ نہین ہونا جیسے آکاش کیچ مین بھی ہے لیکن اس سے آلودہ نہین ہوتا -

۱۰۵ - اجی گرت رشی نے بھوکھ سے دکھی ہو کر اپنے بیٹے شنو نہ سیپ کو بیچا اور یگیہ مین شو گئو لیا اور بھوکھ دور کرنے کے واسطے بیٹے کو یگیہ کے ستون مین باندھکر مارنے لگے لیکن پاپ سے آلودہ نہین ہوئے یہ بات رگ وید کے براہمن مین شنو نہ سیپ کی کتھا مین ظاہر ہے -

۱۰۶ - بامدیو رشی دھرم اور ادھرم کے جاننے والے بھوکھ سے دکھی ہو کر حفاظت جان کیواسطے کتے کا گوشت کھانے کی خواہش کرنے پر بھی پاپ سے آلودہ نہین ہوئے -

योलोभादधमोजात्याजीवेदुत्कृष्टकर्म्मभिः ॥ तंराजानिर्धनंकृ-
त्वाक्षिप्रमेवप्रवासयेत् ॥ ९६ ॥ वरंस्वधर्मोविगुणोनपारक्यः
स्वनुष्ठितः ॥ परधर्म्मेणजीवन्हिसद्यःपततिजातितः ॥ ९७ ॥
वैश्योऽजीवन्स्वधर्म्मेणशूद्रवृत्त्यापिवर्त्तयेत् ॥ अनाचरन्नका-
र्याणिनिवर्त्तेतचशक्तिमान् ॥ ९८ ॥ अशक्नुवंस्तुशुश्रूषांशू-
द्रःकर्त्तुंद्विजन्मनाम् ॥ पुत्रदारात्ययंप्राप्तोजीवेत्कारुककर्म-
भिः ॥ ९९ ॥ यैःकर्म्मभिःप्रचरितैःशुश्रूष्यन्तेद्विजातयः ॥ ता-
निकारुककर्म्माणिशिल्पानिविविधानिच ॥ १०० ॥ वैश्य
वृत्तिमनातिष्ठन्ब्राह्मणःस्वेपथिस्थितः ॥ अवृत्तिकर्शितः
सीदन्निमंधर्म्मसमाचरेत् ॥ १०१ ॥

۹۶ - نیچ ذات والا طمع سے بڑون کے کرم سے اوقات گذاری کرے تو راجہ اسکو بے زر کرکے جلد اپنے ملک سے نکال دے۔

۹۷ - اپنا دھرم گن سے علیحدہ بھی ہو تو اسکو کرنا چاہیے دوسرے کا دھرم بہت اچھا ہو تو بھی اسکو نکرنا چاہیے دوسرا دھرم کرنے سے جلد ذات سے پتت ہوتا ہے۔

۹۸ - ویش اپنے کرم سے اوقات گذاری نکر سکے تو شودر کے کرم سے اوقات گذاری کرے اور جو چیز کرنیکے لائق نہیں ہے اسکو نکرے۔

۹۹ - شودر دوجماؤن کی سیوا نکر سکے اور اسکے زن و فرزند بھوکھ سے دکھی ہون تو سیون کرنیوالون کے کام سے اوقات بسر کرے۔

۱۰۰ - جن کامون سے دوجماون کی سیوا ہو سکے وہ کام (یعنے درودگری و مصوری وغیرہ انواع اقسام کے کام) کرے۔

۱۰۱ - جو براہمن ویشیہ کے کام کو نکرے اور جیوکا سے تکلیف پاوے اپنے مارگ مین قائم ہووے اُس دھرم کو کرے جو آگے کہینگے۔

भोजनाभ्यंजनाद्दानाद्यदन्यत्कुरुते तिलैः ।। कृमिभूतः श्वविष्ठा-
यां पितृभिः सह मज्जति ।। ९१ ।। सद्यः पतति मांसेन लाक्षया ल-
वणेन च ।। त्र्यहेण शूद्रीभवति ब्राह्मणः क्षीरविक्रयात् ।। ९२
।। इतरेषान्तु पण्यानां विक्रयादिह कामतः ।। ब्राह्मणः सप्त-
रात्रेण वैश्यभावं नियच्छति ।। ९३ ।। रसा रसैर्निमातव्या न त्वेव
लवणं रसैः ।। कृतान्नं चाकृतान्नेन तिला धान्येन तत्समाः ९४
जीवेदेतेन राजन्यः सर्वेणाप्यनयं गतः ।। न त्वेव ज्यायसीं वृत्ति-
मभिमन्येत कर्हिचित् ।। ९५ ।।

۹۱- جو شخص بھوجن وابٹن ودان ان تین کام چھوڑ کر دوسرا کام تل سے کرے وہ کیڑا ہو کر مع اپنے بزرگوں کے کتّے کے غلیظ میں غرق ہوتا ہے -

۹۲- گوشت اور نمک اور لاکھ کے بیچنے سے جلد پتت ہوتا ہے (یعنی اپنے ورن کے درجہ سے گر جاتا ہے) اور دودھ بیچنے سے تین دن میں شودر بھاو کو پراپت ہوتا ہے -

۹۳- برہمن بخواہش دل دوسری چیزوں کے فروخت کرنے سے سات رات میں ویشیہ بھاو کو پراپت ہوتا ہے -

۹۴- رس یعنی گڑ وغیرہ کو گھی وغیرہ سے تبادلہ کرنا واجب ہے اور نمک کو دوسرے رس کے ساتھ تبدیل نکرنا چاہئے اور بدون بنائے ہوئے غلہ کو بنائے ہوئے غلہ سے اور تل کو دھان سے تبدیل کرنا چاہئے مگر وہ تبادلہ وزن میں برابر ہو -

۹۵- کشتری وقت مصیبت آنے پر جیو کام قوم بالا سے اوقات گذاری کرے لیکن بڑوں کی جیو کا سے اوقات گذاری کا غرور کبھی نکرے -

सर्वान्रसानपोहेतकृतान्नंचतिलैःसह ॥ अश्मनोलवणंचै-
वपशवोयेचमानुषाः॥ ८६॥ सर्वंचतान्तवंरक्तंशाणक्षौमावि-
कानिच॥ अपिचेत्स्युररक्तानिफलमूलेतथौषधीः॥ ८७॥ अ-
पःशस्त्रंविषंमांसंसोमंगन्धांश्चसर्वशः॥ क्षीरंक्षौद्रंदधिघृतंतै-
लंमधुगुडंकुशान्॥ ८८॥ आरण्यांश्चपशून्सर्वान्दंष्ट्रिणश्च
वयांसिच॥ मद्यंनीलींचलाक्षांचसर्वांश्चैकशफांस्तथा॥ ८९॥
काममुत्पाद्यकृष्यांतुस्वयमेवकृषीवलः॥ विक्रीणीततिलान्शुद्धान्धर्मार्थमचिरस्थितान्॥ ९०॥

٨٦- سب رس اور پکے ہوئے چاول مع تل و پتھر و نمک و چارپایہ و آدمی ان سب کو نہ بیچیں رس کی ممانعت سے نمک کی ممانعت ثابت ہے پتھر جو نمک کی ممانعت کی ترغیب کی عظمت ظاہر کرنیکے واسطے کہا وہ بھی پیراشچت کی بڑائی کے واسطے ہے اسیطرح اُن کی ممانعت علیحدہ کو بھی جتا لینا چاہئے۔

٨٧- پارچہ سرخ و سن ریشمی پشمی اور ان تینوں سے جو پارچہ طیار ہوتا ہے وہ سفید ہو خواہ سرخ ہو و پھل مول و ادویہ۔

٨٨- پانی ہتھیار زہر گوشت سوم لتا خوشبویات دودھ دہی شہد گھی تیل موم گڑ کشا

٨٩- جنگلی چوپایہ ڈاڑھ والے جانور جیسے شیر وغیرہ پرند شراب نیل لاکھ ایک کھر والا حیوان ان سب کو نہ بیچیں۔

٩٠- کھیتی کرنیوالا کھیتی میں تل کو پیدا کرے اور وہ تل شدھ ہو بہت دن گھر میں رہا ہو تو اسکو دھرم کے واسطے بیچے۔

अजीवंस्तु यथोक्तेन ब्राह्मणः स्वेन कर्मणा ॥ जीवेत्क्षत्रियधर्मे-
णा स ह्यस्य प्रत्यनन्तरः ॥ ८१ ॥ उभाभ्यामप्यजीवंस्तु कथं स्यादि-
ति चेद्भवेत् ॥ कृषिगोरक्षमास्थाय जीवेद्वैश्यस्य जीविकाम् ॥ ८२
वैश्यवृत्त्यापि जीवंस्तु ब्राह्मणः क्षत्रियोऽपि वा ॥ हिंसाप्रायां
पराधीनां कृषिं यत्नेन वर्जयेत् ॥ ८३ ॥ कृषिं साध्विति मन्यन्ते
सा वृत्तिः सद्विगर्हिता ॥ भूमिं भूमिशयांश्चैव हन्ति काष्ठमयो-
मुखम् ॥ ८४ ॥ इदन्तु वृत्तिवैकल्यात्त्यजतो धर्म्मनैपुणम् ॥ वि-
ट्पण्यमुद्धृतोद्धारं विक्रेयं वित्तवर्द्धनम् ॥ ८५ ॥

۸۱ — اگر براہمن اپنے خاص کام سے اوقات گذاری نہ کر سکے تو کشتری کے کام سے اوقات گذاری کرے کیونکہ کشتری ورن براہمن ورن کے قریب ہے —

۸۲ — دونوں کے کرم سے اوقات گذاری نہ کر سکے تو ویشیہ کے کرم سے اوقات گذاری کرے —

۸۳ — براہمن و کشتری بھی ویشیہ کی برت سے گذارہ کرتے ہوئے بہ تدبیر تمام کھیتی کو نہ کریں جو کہ دوسرے کے اختیار میں ہے (یعنے بدون بیل وغیرہ کے اس سے مطلب حاصل نہیں ہوتا اور جسکے کرنے سے زمین میں رہنے والے بہت سے جانداروں کی جان جاتی ہے) —

۸۴ — کھیتی کو کوئی اچھا کہتا ہے سو درست نہیں ہے کیونکہ زمین کو اور زمین میں رہنے والے جانداروں کو کاٹھ اور لوہے کا منہ رکھنے والا (یعنے ہل) ناش کرتا ہے اسواسطے سادھو لوگوں نے اس جیوکا کی نندا کی ہے —

۸۵ — براہمن و کشتری اپنی جیوکا سے اوقات گذاری نہ کر سکیں اور ویشیہ کی جیوکا سے اوقات گذاری کریں وے گے جو فروخت کرنا منع کرینگے اسکو چھوڑ کر دولت کو ترقی دینے والی چیزوں کو فروخت کریں —

षण्णान्तु कर्मणामस्य त्रीणि कर्माणि जीविका ॥ याजनाध्यापने चैव विशुद्धाच्च प्रतिग्रहः ॥७६॥ त्रयो धर्मा निवर्तन्ते ब्राह्मणात्क्षत्रियं प्रति ॥ अध्यापनं याजनं च तृतीयश्च प्रतिग्रहः ॥७७॥ वैश्यं प्रति तथैवैते निवर्तेरन्निति स्थितिः ॥ न तौ प्रति हि तान्धर्मान्मनुराह प्रजापतिः ॥७८॥ शस्त्रास्त्रभृत्त्वं क्षत्रस्य वणिक्पशुकृषिर्विशः ॥ आजीवनार्थं धर्मस्तु दानमध्ययनं यजिः ॥७९॥ वेदाभ्यासो ब्राह्मणस्य क्षत्रियस्य च रक्षणम् ॥ वार्त्ताकर्मैव वैश्यस्य विशिष्टानि स्वकर्मसु ॥८०॥

۷۶ - ان چھ کرموں میں تین کرم (یعنے پڑھانا اور یگیہ کرانا اور پاک آدمیوں سے دان لینا) حصول معاش کے لئے ہیں —

۷۷ - براہمن سے آگے یعنے کشتری پڑھانا و یگیہ کرانا و دان لینا ان تینوں دھرموں کے کرنیکا ادھکاری نہیں ہے —

۷۸ - اسیطرح ویشیہ میں بھی وہ تینوں کرم موقوف ہو جاتے ہیں یعنے وہ بھی ان کرموں کے کرنیکا ادھکاری نہیں ہے یہ مرجاد ہے کشتری اور ویشیہ دونوں کے واسطے ان دھرموں کو پرجاپت منو جی نے نہیں کہا ہے —

۷۹ - شستر یعنے ہتھیار و استر یعنے جو منتر پڑھکر چلایا جا ان دونوں کا دھارن کرنا کشتریوں کا کرم ہے اور بیوپار کرنا اور گئو وغیرہ کو پرورش کرنا اور کھیتی کرنا ویشیہ کا کرم ہے اور پڑھنا اور یگیہ کرنا اور دان دینا یہ دھرم کشتری اور ویشیہ دونوں کا ہے —

۸۰ - اپنے اپنے کاموں میں ایک ایک افضل کرم تینوں کا ہے یعنے براہمن کو پڑھنا و کشتری کو حفاظت عالم کرنا و ویشیہ کو بیوپار کرنا —

यस्माद्बीजप्रभावेण तिर्य्यग्जा ऋषयोऽभवन्॥ पूजिताश्च प्रश
स्ताश्च तस्माद्बीजं प्रशस्यते॥७२॥ अनार्य्यमार्य्यकर्म्माणमा
र्य्यं चानार्य्यकर्म्मिणम्॥ सम्प्रधार्य्याब्रवीद्धाता न समौ नास
माविति॥७३॥ ब्राह्मणा ब्रह्मयोनिस्था ये स्वकर्म्मण्यवस्थि
ताः॥ ते सम्यगुपजीवेयुः षट्कर्म्माणि यथाक्रमम्॥७४॥
अध्यापनमध्ययनं यजनं याजनं तथा॥ दानं प्रतिग्रहश्चैव षट्
कर्म्माण्यग्रजन्मनः॥७५॥

٧٢ - تخم کی فضیلت سے ہرنی سے پیدا شرنگی رشی وغیرہ برھم رشی پوجنے کے لائق ہوئے اسوجہ سے تخم بڑا ہی (یعنے درمیان تخم و ظرف کے) اور تخم والی ذات افضل ہی اس بات کو جاننا چاہیئے —

٧٣ - نیچ سے اونچ کا کام کرنا ہے اور اونچ سے نیچ کا کام کرتا ہی ان دونوں کا بچار کرکے برہما جی نے کہا کہ وے نہ برابر ہین نہ مختلف ہین - ٹ

٧٤ - جو براہمن برھم دھیان مین مشغول ہو اور اپنے کرمون مین مصروف ہو وہ سلسلہ سے چھہ کرمون سے اوقات بسر کرے —

٧٥ - پڑھنا پڑھانا یگیہ کرنا یگیہ کرانا دان دینا دان لینا یہ چھہ کرم براہمن کے ہین —

ٹ کیونکہ جو شودر دوجما کا کام کرنیوالا ہے وہ دوجما نہین ہونا چاہیئے جو شخص دوجما کے کام کا ادھکاری نہین ہی وہ دوجما کا کام کرنیوالا بھی ہو تو دوجما کے برابر نہین ہونا ایسے طریق سے شودر کا کام کرنیوالا دوجما شودر کے برابر نہین ہوتا کا ممنوع کرنے سے ذات کی بڑائی نہین گئی ہی اور مختلف بھی نہین ہی کار ممنوع کرنے سے دونوں کو برابری ہے اسلیئے سب کو جو کام منع کئے لائق ہے اس کام کو نکرے یہ اپدیش ورن سنکر تک ہی -

जातोनार्यामनार्यायामार्यादार्योभवेद्गुणैः ।।जातोऽप्यनार्यादार्यायामनार्यइतिनिश्चयः।। ६७ ।।तावुभावप्यसंस्कार्याविति धर्मो व्यवस्थितः ।। वैगुण्याज्जन्मनःपूर्व्वउत्तरःप्रतिलोमतः।।६८ ।।सुबीजंचैवसुक्षेत्रेजातंसम्पद्यतेयथा ।। तथाऽर्य्याज्जातआ-र्य्यायांसर्वंसंस्कारमर्हति ।। ६९ ।।बीजमेकेप्रशंसन्तिक्षेत्रमन्येमनीषिणः ।। बीजक्षेत्रेतथैवान्येतत्रेयन्तुव्यवस्थितिः ।।७०।। अक्षेत्रेबीजमुत्सृष्टमन्तरैवविनश्यति ।। अबीजकमपिक्षेत्रंकेवलंस्थण्डिलंभवेत् ।। ७१ ।।

۶۷- اونچ بیج سے نیچ یون مین (یعنے براہمن سے شودرا مین) پیدا ہوا پاک یگیہ وغیرہ اوصاف سے مشمول ہو وہ بڑا ہے اور نیچ بیج سے اونچ یون مین (یعنے شودر سے براہمنی مین) پیدا ہوا بڑا نہین ہین یہ یقین ہے۔

۶۸- یہ سدھانت ہی کہ دونون سنسکار کے لائق نہین ہین کیونکہ پہلا نیچ ذات مین پیدا ہوا ہے اور دوسرا پرتلوم ہے۔

۶۹- جس طریق پر اچھا بیج اچھے کھیت مین پڑنے سے اچھا غلہ پیدا ہوتا ہے اسی طرق سے افضل مرد سے افضل عورت مین پیدا ہوا سب سنسکار کے لائق ہوتا ہے۔

۷۰- کوئی پنڈت تخم کو افضل کہتے ہین کوئی ظرف کو اور کوئی دونون کو افضل کہتے ہین اس بات مین آگے جو کیفیت بیان کرینگے اسکو جاننا۔

۷۱- اوسر زمین مین جو بیج پڑتا ہے وہ برباد جاتا ہے یعنی اگتا نہین ہے اور کھیت اچھا ہے مگر اسمین بیج نہین ہے تو صرف چبوترہ ہی ہے اسمین غلہ پیدا نہین ہوتا ہے اسلیئے دونون کی بڑائی ہے اچھا بیج اچھے کھیت مین پڑے تو اچھا غلہ پیدا ہو یہ پہلے کہا گئے ہین وہی قرین مصلحت ہی کہ دونون کو فضیلت ہے۔

शूद्रायांब्राह्मणाज्जातः श्रेयसाचेत्प्रजायते ॥ अश्रेयान्श्रेयसीं जातिंगच्छत्यासप्तमाद्युगात ॥ ६४ ॥ शूद्रोब्राह्मणतामेति-ब्राह्मणश्चैतिशूद्रताम् ॥ क्षत्रियाज्जातमेवन्तु विद्याद्वैश्यात्तथै-वच ॥ ६५ ॥ अनार्यायांसमुत्पन्नोब्राह्मणात्तुयदृच्छया ॥ ब्राह्मणयामप्यनार्यात्तु श्रेयस्त्वंक्वेतिचेद्भवेत् ॥ ६६ ॥

۶۴ - شودرا مین براہمن سے کنیا پیدا ہو وہ پارشوی کہاتی ہے اُس سے براہمن وواہ کرے اور کنیا پیدا ہو پھر اُس سے براہمن وواہ کرے اور کنیا پیدا ہو اسی طریق سے کنیا پیدا ہوتی جاوے اور اُس کنیا کا وواہ براہمن کرتا جاوے تو چھٹوین کنیا فضیلت تخم سے براہمن ذات کو پیدا کرتی ہے -

۶۵ - شودر براہمن بھاو کو حاصل کرتا ہے اور براہمن شودر بھاو کو حاصل کرتا ہے اسی طریق سے کشتری و ویشیہ سے پیدا شدہ اولاد کو جاننا -

۶۶ - شودرا مین براہمن سے پیدا ہوا اور براہمنی مین شودر سے پیدا ہوا ان دونون مین کون بڑا ہے اسکا جواب اشلوک آئندہ مین دیتے ہین -

ف یعنے جسطرح شودرا مین براہمن سے پیدا ہوا پارشو ہوتا ہے وہ شودرا کا وواہ کرے اُس سے پیدا ہو وہ بھی شودرا کا وواہ کرے اُس سے بھی بیٹا پیدا ہو اسی طریق پر بیٹا پیدا ہوتا جاوے اور شودرا کا وواہ کرتا جاوے تو چھٹوان بیٹا عورت کے نیچ ہونے سے شودر ذات کو پیدا کرتا ہے اسی طرح شودرا مین کشتری سے پیدا کنیا چوتھی پشت مین فضیلت تخم سے کشتری کو پیدا کرتی ہے اور بیٹا تیسری پشت مین عورت کے نیچ ہونے سے شودر کو پیدا کرتا ہے اور ویشیہ سے شودرا مین پیدا کنیان دوسری پشت مین فضیلت تخم سے ویشیہ کو پیدا کرتی ہے اور بیٹا دوسری پشت مین عورت کے نیچ ہونے سے شودر کو پیدا کرتا ہے اسی طریق پر براہمن سے ویشیہ مین پیدا ہوا پانچوین پشت مین بزرگی و خوردی کو پاتا ہے اور براہمن سے کشتریا مین پیدا ہوا تیسری پشت مین بزرگی و خوردی کو پاتا ہے کشتری سے ویشیہ مین پیدا ہوا تیسری پشت مین بزرگی و خوردی کو پاتا ہے

अनार्यता निष्ठुरता क्रूरता निष्क्रियात्मता॥ पुरुषं व्यञ्जयन्ती-
हलोके कलुषयोनिजम्॥ ५८ ॥ पित्र्यं वा भजते शीलं मातुर्वोभ-
यमेव वा॥ न कथंचन दुर्योनिः प्रकृतिं स्वां नियच्छति॥ ५९ ॥ कु-
ले मुख्येऽपि जातस्य यस्य स्याद्योनिसंकरः॥ संश्रयत्येव तच्छी-
लं नरोऽल्पमपि वा बहु॥ ६० ॥ यत्र त्वेते परिध्वंसाज्जायन्ते वर्ण-
दूषकाः॥ राष्ट्रिकैः सह तद्राष्ट्रं क्षिप्रमेव विनश्यति॥ ६१ ॥ ब्रा-
ह्मणार्थे गवार्थे वा देहत्यागोऽनुपस्कृतः॥ स्त्रीबालाभ्युपप-
त्तौ च बाह्यानां सिद्धिकारणम्॥ ६२ ॥ अहिंसा सत्यमस्तेयं -
शौचमिंद्रियनिग्रहः॥ एतन्सामासिकं धर्मं चातुर्वर्ण्येऽब्रवी-
न्मनुः॥ ६३ ॥

۵۸- افضل نہونا بےسیرتی سخت مزاجی وید وشاستر کے موافق عمل نکرنا انھیں سے لوک مین جانا جاتا ہے کہ یہ آدمی نیچ ذات سے پیدا ہوتا ہے -

۵۹- آدمی والد یا والدہ کی یا دونون کی خاصیت حاصل کرتا ہے مگر نیچ ذات والا کسیطرح اپنی خاصیت کو نہین چھوڑتا ہے -

۶۰- جو شخص اچھے خاندان مین پیدا ہوا مگر والدہ اوسکی نیچ ذات ہو تاہم وہ شخص والد کی خاصیت کو حاصل کرتا ہے -

۶۱- جس سلطنت مین ورنون کو باعیب کرنیوالے ورن سنکر پیدا ہوتے ہین وہ سلطنت مع رعایا جلد فانی ہو جاتی ہے -

۶۲- جو مطلب دیکھنے مین آوے اسکو چھوڑکر براہمن اور گئو اور عورت اور بالک کیواسطے ترک قالب کرنا ان لوگون کو سورگ دینے والا ہے جو کہ وہان سے علیحدہ ہین -

۶۳- کسی جاندار کو قتل نکرنا سچ بولنا چوری نکرنا پاکیزگی حواس کو روکنا ان سب دھرمونکو منجی نے چارو ورن کیواسطے کہا ہے -

वासांसिमृतचेलानि भिन्नभाण्डेषु भोजनम्॥ कार्ष्णायसमलं-
कारः परिव्रज्या च नित्यशः॥ ५२॥ न तैः समयमन्विच्छेत्पुरुषो
धर्ममाचरन्॥ व्यवहारो मिथस्तेषां विवाहः सदृशैः सह॥ ५३॥
अन्नमेषां पराधीनं देयं स्याद्भिन्नभाजने॥ रात्रौ न विचरेयुस्ते ग्रा-
मेषु नगरेषु च॥ ५४॥ दिवा चरेयुः कार्यार्थं चिह्निता राजशासनैः
॥ अबान्धवं शवं चैव निर्हरेयुरिति स्थितिः॥ ५५॥ वध्यांश्च हन्युः
सततं यथाशास्त्रं नृपाज्ञया॥ वध्यवासांसि गृह्णीयुः शय्याश्चा-
भरणानि च॥ ५६॥ वर्णापेतमविज्ञातं नरं कलुषयोनिजम्॥
आर्यरूपमिवानार्यं कर्मभिः स्वैर्विभावयेत्॥ ५७॥

۵۲- مُردے کے کپڑے پہنین اور پھوٹے ہوئے برتن مین بھوجن کرین زیور آہنی زیب بدن کرین ہمیشہ گشت کرتے رہین-

۵۳- دھرماتما آدمی ان لوگون کے ساتھ درشن وغیرہ بیوہار نکرے انھونکا ودواہ آپس مین ہوتا ہے اور بیوہار بھی آپس مین ہی کرین-

۵۴- انھون کی خوراک دوسرے کے اختیار مین ہے پھوٹے برتن مین انّ دینا چاہیئے اور یہ لوگ وقت شب گانون وشہر وغیرہ مین پھرنے نپاوین-

۵۵- یہ لوگ نشان ذات سے مشمول ہوکر بحکم راجہ ملک کے کام کرنیکے واسطے دن مین پھرین اور جس مردہ کا کوئی رشتہ دار نہو اُسکو لیجاوین شاستر کی مرجاد ہے-

۵۶- یہ لوگ بحکم راجہ موافق طریق شاستر کے قتل لائق آدمیون کو قتل کرین اور اُنھیں مقتولون کا کپڑا و پلنگ و پارچہ و زیور لیوین-

۵۷- جو شخص نیچ ذات سے پیدا ہوا ہو ورن سے علیحدہ ہو مگر جاننے مین نہ آتا ہو شریف کی صورت مگر شریف نہو تو اُسکے اعمال سے اسکی ذات کو جانے-

सूतानामश्वसारथ्यमम्बष्ठानां चिकित्सनम्॥ वैदेहकानां स्त्री
कार्यं मागधानां वणिक्पथः॥ ४७॥ मत्स्यघातो निषादानां त्व-
ष्टिस्त्वायोगवस्य च॥ मेदान्ध्रचुंचुमद्गूनामारण्यपशुहिंसनम्॥
४८॥ क्षत्त्रुग्रपुक्कसानां तु बिलौकोवधबन्धनम्॥ धिग्वणानां
चर्मकार्यं वेणानां भाण्डवादनम्॥ ४९॥ चैत्यद्रुमश्मशानेषु शै-
लेषूपवनेषु च॥ वसेयुरेते विज्ञाता वर्त्तयन्तः स्वकर्मभिः॥ ५०॥
चण्डालश्वपचानां तु बहिर्ग्रामात्प्रतिश्रयः॥ अपपात्राश्च
कर्त्तव्या धनमेषां श्वगर्दभम्॥ ५१॥

۴۷- سوت کا کام رتھ بانی اور امبشٹ کا کام طبابت بیدیہک کا کام ناچنا ماگدھ کا کام بقالی ہے-

۴۸- نشاد کی وجہ معاش مچھلیوں کا مارنا ہے- ایوگو کی وجہ معاش لکڑی کو کاٹنا ہے- مید اندھر چنچ* مدگو
انھون کی وجہ معاش چارپایہ کو مارنا ہے-

۴۹- کشتا و اگر و پکس کی وجہ معاش سوراخ مین رہنے والی گوہ وغیرہ کا قتل و گرفتاری دھگبن
کی وجہ معاش چمڑے کا کام وبین ذات کی وجہ معاش مردنگ وغیرہ کا بجانا ہے-

۵۰- یہ سب لوگ مشہور درختون کی جڑ واقع متصل دیہہ و شمسان و پہاڑ و جنگل مین اپنے اپنے
کاموں سے اوقات گذاری کرتے رہین-

۵۱- چانڈال و سوپچ یہ دونون گانون کے باہر قیام کرین برتن وغیرہ سے محروم رہین انھون
کی دولت سگ و خر ہے-

* بیدیہک کی عورت مین براہمن سے پیدا ہوا چنچ کہلاتا ہے اور اسی سے بندی کی عورت مین پیدا ہوا مدگو کہلاتا ہے

मुखबाहूरुपज्जानांयालोकेजातयोबहिः॥ म्लेच्छवाचश्चार्य वाचःसर्व्वेतेदस्यवःस्मृताः॥४५॥ येद्विजानामपसदायेचाप- ध्वंसजाःस्मृताः॥ तेनिन्दितैर्वर्तयेयुर्द्विजानामेवकर्मभिः॥ ४६॥

۴۵ - براہمن اور کشتری اور ویشیہ اور شودر ان چاروں ورنوں کی کریاؤں کے لوپ ہو جانے سے جتنی ذاتیں ہوتی ہیں اونکا نام ملیچھ بھاشا میں ہو خواہ آری نام بھاشا میں ہو یہ سب ذات دسیو کہاتی ہیں۔ +

۴۶ - دِجوں سے جو آپ سدر وغیرہ بطریق الٹ لوم پیدا ہوتے ہیں اور جنکا بیان دسویں اشلوک میں ہوا اور بھی جو پرت لوم سے پیدا ہوتے ہیں یہ سب دِجوں کے مذمت کرم سے اوقات بسر کریں ‡

+ یعنے براہمن و کشتری و ویشیہ و شودر کو جو کہ وید و شاستر کے موافق عمل کرتے ہیں انکو آری کہتے ہیں اور وقت پیدائش عالم کے ان لوگوں کو جو ملک پاک مرغوب خاطر ہوا اوسکو آریاورت کہتے ہیں اور علم سنسکرت کو جو کہ سب زبانوں کی ماں یعنی زاد [illegible] آری بدیا کہتے ہیں چنانچہ دیگر ولایتوں میں لفظ آری کو ایرین کہتے ہیں اور کہتے ہیں کہ تمام دنیا کی دو یا تین ایرین زبان سے نکلی ہیں اگر کوئی کہے کہ وہ لوگ نئے ملک ہائے زمین میں صرف آریاورت کو پاک دولت دہندہ سمجھکر انہیں قیام کیا اور دیگر ملک ہائے زمین پر کس طرح آبادی ہوئی اسکا جواب یہ ہے کہ شروع میں براہمنوں نے اپنا قیام بلحاظ تپ و عبادت کے آریاورت ہی میں مناسب جانا اور کشتری لوگوں کو اجازت دی کہ تم دیگر ولایتوں میں جا کر سلطنت کرو اسوجہ سے صحیح تمام مردمان عالم و زبان ہائے عالم صرف آریاورت سے ہے کہ جسکی گواہی اشلوک ۲۰ ادھیائے دوم اسی شاستر کا دیتا ہے۔

‡ خدمتگاری وغیرہ۔

तपोबीजप्रभावैस्तुतेगच्छन्तियुगेयुगे ॥ उत्कर्षंचापकर्षंचम-
नुष्येष्विहजन्मजः ॥ ४२ ॥ शनकैस्तुक्रियालोपादिमाः क्षत्रि-
यजातयः ॥ वृषलत्वंगतालोकेब्राह्मणादर्शनेनच ॥ ४३ ॥ पौण्ड्र
काश्चौड्रद्रविडाः काम्बोजायवनाःशकाः ॥ पारदाः पाह्लवा-
श्चीनाः किरातादरदाःखसाः ॥ ४४ ॥

۴۲۔ تپ اور بیج کے پربھاؤ سے یکسان وغیرہ یکسان ذات سے پیدا ہوئے ہیں سنساری
جگ جگ میں جنم سے اونچ اور نیچ ہوتے ہیں ۔ +

۴۳۔ رفتہ رفتہ عدم تعمیل فرائض سے اور براہمن کے نہ دیکھنے سے مفصلہ ذیل کشتری دنیا میں
شودر ہو گئے ۔ لا

۴۴۔ پونڈرک اور اوڈر دراوڑ کامبوج یون شک پارد پہلو چین کرات درد کھش ان ملکون کے
رہنے والے کشتری لوگ جنیو وغیرہ سنسکار و وید خوانی وغیرہ اعمال کے نکرنے سے شودر ہو گئے ۔ ق

+ تپ کے پربھاؤ سے مانند لسبو امتر کے اور بیج کے پربھاؤ سے مانند سرنگی رشی کے جاننا چاہیئے ۔

ق اشلوک ۴۳ و ۴۴ سے ثابت کرتے ہیں کہ شروع میں تمام زمین پر صرف ایک مذہب مانند وید کے وچ لوگونکا تھا جب بہت کھنڈ کے
سوائے دیگر کھنڈ یعنے ایران و توران وغیرہ کے باشندگان کشتری لوگون نے وج کرم کو چھوڑ دیا تب وہ شودر ذات ہو گئے ان کا نام
اگلے اشلوک میں کہتے ہیں ۔

لا یعنے جنیو وغیرہ دیگیہ کرانا و پڑھانا اور پرایشچت کرنا ان سب باتون کے ترک کرنے سے شودر ہو گئے ۔

चाण्डालात्पाण्डुसोपाकस्त्वक्सारव्यवहारवान् ॥ आहिण्डिको निषादेन वैदेह्यामेव जायते ॥ ३७ ॥ चाण्डालेन तु सोपाको मूलव्यसनवृत्तिमान् ॥ पुक्कस्यां जायते पापः सदा सज्जनगर्हितः ॥ ३८ ॥ निषादस्त्री तु चाण्डालात्पुत्रमन्त्यावसायिनम् ॥ श्मशानगोचरं सूते बाह्यानामपि गर्हितम् ॥ ३९ ॥ संकरे जातयस्त्वेताः पितृमातृप्रदर्शिताः ॥ प्रच्छन्ना वा प्रकाशा वा वेदितव्याः स्वकर्मभिः ॥ ४० ॥ सजातिजानन्तरजाः षट्सुता द्विजधर्मिणः ॥ शूद्राणां तु सधर्माणः सर्वेऽपध्वंसजाः स्मृताः ॥ ४१ ॥

۳۷- چانڈال سے بیدیہک کی عورت مین بانس کے روزگار سے اوقات بسر کرنیوالا پانڈو سوپاک ذات والا بیٹا ہوتا ہے اور اسی عورت مین سے نشاد سے آہنڈک ذات والا بیٹا پیدا ہوتا ہے۔

۳۸- چانڈال سے پکس کی عورت مین سوپاک ذات والا بیٹا پیدا ہوتا ہے جو کہ بحکم حاکم وقت مردمان قابل قتل کو قتل کرنیوالا اور اسی سے اوقات بسر کرنیوالا اور پاپی ہمیشہ ساوھو لوگون سے لعنت ملامت پانیوالا ہوتا ہے۔

۳۹- چانڈال سے نشاد کی عورت مین مسان کی زمین پر رہنے والا سب سے لعنت ملامت پانیوالا انتیاوسائی ذات والا بیٹا پیدا ہوتا ہے۔

۴۰- ورن سنکر ذات مین ماں باپ سے اتنی ذاتون کو بیان کیا وہ ذات ظاہر ہون یا پوشیدہ ہون مگر اپنے اپنے کامون سے جاننے کے لائق ہوتی ہین۔

۴۱- براہمن کشتری ویشیون سے اپنی اپنی ذات کی عورت مین جو لڑکے پیدا ہوتے ہین اور براہمن سے کشتری اور کشتری سے ویشیہ مین اور ویشیا سے شودرا مین جو لڑکے پیدا ہوتے ہین وہ چھو دوج کے دھرم والے ہوتے ہین (یعنے جنیو وغیرہ سنسکار کی لائق ہوتے ہین) اسکے سوائے جو پرتلوم سے پیدا ہین وہ سب شودر کے دھرم والے کہلاتے ہین۔

प्रसाधनोपचारज्ञमदासन्दासजीवनम् ॥ सैरिन्ध्रंवागुराव्रत्तिं-
सूतेदस्युरयोगवे ॥ ३२ ॥ मैत्रेयकंतुवैदेहोमाधूकंसंप्रसूयते ॥
नृन्प्रशंसत्यजस्रंयोघंटाताडोऽरुणोदये ॥ ३३ ॥ निषादोमा-
र्गवंसूतेदासंनौकर्मजीविनम् ॥ कैवर्त्तमितियंप्राहुरार्यावर्त्त-
निवासिनः ॥ ३४ ॥ मृतवस्त्रभृत्सुनारीषुगर्हितान्नाशनासु च
॥ भवन्त्यायोगवीष्वेतेजातिहीनाःपृथक्त्रयः ॥ ३५ ॥ कारा-
वरोनिषादात्तुचर्मकारःप्रसूयते ॥ वैदेहिकादन्ध्रमेदौबहिर्ग्रा-
मप्रतिश्रयौ ॥ ३६ ॥

۳۲ - درستی و صفائی موسے کا کرنیوالا جوٹھا کھانا کھانے کے سوا نہلانا دھلانا وغیرہ کا غلامی کو جاننے والا جال وغیرہ کے وسیلہ سے ہرن وغیرہ کے قتل سے اوقات بسر کرنیوالا سیرندھر نام بیٹے کو آیوگو کی استری مین دسیو نام ذات والا آدمی (جسکا لکشن اشلوک ۴۵ مین کہینگے) پیدا کرتا ہے۔

۳۳ - آیوگو کی عورت مین بیدیہک سے میتریہ نام بیٹا شیرین کلام کرنیوالا پیدا ہوتا ہے جو وقت شام و صبح بجا کر گھنٹہ کا کیواسطے راجہ وغیرہ کی تعریف کرتا ہے۔

۳۴ - آیوگو کی عورت مین نشاد سے پیشہ ملاحی سے اوقات بسر کرنیوالا داش نام و مارگو نام بیٹا پیدا ہوتا ہے جسکو آریا ورت کے رہنے والے کیورت کہتے ہین۔

۳۵ - سیرندھر و میتری و مارگو تینوں پنچ ذات آیوگو کی اُس عورت مین والد کی تفریق سے علیحدہ علیحدہ پیدا ہوتے ہین جو کہ پارچہ مُردہ کے پہننے والے دہاوی جیدوین خوردہ کھانیوالے ہین

۳۶ - نشاد سے بیدیہک کی عورت مین چمڑے کو چھیدنیوالا کارا ور نام بیٹا پیدا ہوتا ہے۔ اور بیدیہک سے کارا ور کی عورت مین اندھر ذات والا بیٹا اور نشاد کی عورت مین میدذات والا بیٹا پیدا ہوتا ہے یہ دونون گانون کے باہر رہنے والے ہوتے ہین۔

प्रतिकूलंवर्तमानाबाह्याबाह्यतरान्पुनः॥ हीनाहीनान्प्रसू-
यन्तेवर्णान्पंचदशैवतु॥३१॥

۳۱ - شودر سے پیدا ہوا براہمن کشتری ویشیہ کی عورت میں آیوگو کشتا چانڈال تینون ہر دو ورن کی عورت اور اپنی ہمقوم عورت میں آپ سے پنچ تین پنچ پندرہ بیٹے پیدا کرتے ہین اور ان لوگ سے ہین ویشیہ وکشتری سے پیدا ماگدھ بیدیہک سوت یہ تینون چارون ورن کی عورت اور اپنی ذات کی عورت مین آپ سے پنچ پندرہ بیٹے پیدا کرتے ہین اس طرق سے تین بیٹے ہوتے خواہ چانڈال کشتا آیوگو بیدیہک ماگدھ سوت یہ چھہ اول اول سے پچھلے پچھلے اچھے ہین۔ یہی چھٹھوان پرت لوم کرکے بیٹے پیدا کرین تو پندرہ بیٹے ہوتے ہین جیسے چانڈال سے پانچون ورن کی عورت مین پانچ لڑکے پیدا ہوئے کشتا سے چارون ورن کی عورت مین چار لڑکے پیدا ہوئے آیوگو سے تینون ورن کی عورت مین تین لڑکے پیدا ہوئے بیدیہک سے دونون ورن کی عورت مین دو لڑکے پیدا ہوئے ماگدھ سے ایک ورن کی عورت مین ایک لڑکا پیدا ہوا سوت سے آگے کوئی نہین ہے اسلیئے سوت سے کوئی پرت لوم پیدا نہین ہوتا اس طرق سے پندرہ بیٹے ہوئے اسثلوک مین بھرگ جی نے لفظ ہو کا بیان کیا اسکا مطلب یہ ہے کہ سوت ماگدھ بیدیہک آیوگو کشتا چانڈال یہ چھہ پچھلے پچھلے سے اول اول اچھے ہین یہ چھون پرت لوم کے طرق پر بیٹے کو پیدا کرین تو پندرہ بیٹے پیدا ہوئے ہین جیسے سوت سے پانچون کی عورت مین پانچ بیٹے پیدا ہوئے لئے ماگدھ سے چارون کی عورت مین چار ہوئے بیدیہک سے تینون کی عورت مین تین بیٹے ہوتے آیوگو سے دونون کی عورت مین دو بیٹے ہوئے کشتا سے ایک کی عورت مین ایک بیٹا ہوا چانڈال سے کوئی اونچ نہین ہے اس لیئے اس سے ان لوم نہین ہوتا اس طرق سے ملکر پندرہ ہوتے دونون ملکر تیس ہوئے۔

ते षट्सदृशान्वर्णाञ्जनयन्ति स्वयोनिषु ॥ मातृजात्यां प्रसूयन्ते प्रवरासु च योनिषु ॥ २७ ॥ यथा त्रयाणां वर्णानां द्वयोरात्मास्य जायते ॥ आनन्तर्यात्स्वयोन्यां तु तथा बाह्येष्वपि क्रमात् ॥ २८ ॥ ते चापि बाह्यान्सुबहूंस्ततोऽप्यधिकदूषितान् ॥ परस्परस्य दारेषु जनयन्ति विगर्हितान् ॥ २९ ॥ यथैव शूद्रो ब्राह्मण्यां बाह्यं जन्तुं प्रसूयते ॥ तथा बाह्यतरं बाह्यश्चातुर्वर्ण्ये प्रसूयते ॥ ३० ॥

۲۷- یہ سب اپنی ذات کی استری میں اپنے ورن کو پیدا کرتے ہیں یہاں والدہ کی ہم ذات کے ہونے سے والد کے برابر پیدا ہیں اولاد کو جاننا چاہئے کیونکہ چاروں ورن کی استری میں والد سے نیچ ذات والے پیدا ہوتے ہیں یہ بات آگے کہینگے والد اپنی ذات کی عورت میں کبھی نیچ پیدا کرتے ہیں اسقدر باقی رہا اسکا بیان اس اشلوک میں کیا جیسے شودر سے ویشیہ کی استری میں پیدا ہوا لڑکا آیوگو کہلاتا ہے اس سے شودر جو آیوگوی ویشیہ برہمنی کشتریا شودرا میں پیدا ہوگا وہ آیوگو کہلاتا ہے لیکن شودر آیوگو سے پست آیوگو ذات میں اتنی مثل دیکھی ہیں کہ جیسے سخلا مرد و عورت کے ایک نے برہم ہتیا کیا اس سے بیٹا پیدا ہوا اسکی نسبت سے مرد و عورت دونوں گنہگار ہیں اس لئے جو پیدا ہوگا وہ بڑا دشٹ ہوگا۔

۲۸- جیسے تینوں ورن میں سے دو میں اپنی طرح پیدا ہوتا ہے (یعنے عورت قریب یا لوبین اپنی قوم میں) اسیطرح خارج القوم میں بھی ترتیب سے ہوتا ہے۔

۲۹- آیوگو وغیرہ چھ ہمقوم عورت میں ان قوم کے بھی زیادہ دشٹ بیٹے کو پیدا کرتے ہیں جیسے آیوگو کشتا کی عورت میں اپنے سے نیچ بیٹے کو پیدا کرتا ہے اور کشتا بھی آیوگو کی عورت میں اپنے سے نیچ بیٹے کو پیدا کرتا ہے اسی طرح دیگر پرتیلوموں میں بھی جاننا چاہیئے۔

۳۰- جسطرح شودر براہمنی میں چانڈال کو پیدا کرتا ہے اسی طرح چاروں ورن کی عورت میں اپنے سے بھی نیچ بیٹے کو پیدا کرتا ہے۔

झल्लोमल्लश्चराजन्याद्व्रात्यान्निच्छिविरेवच॥ नटश्चकरणश्चै
वखसोद्रविडएवच॥२२॥वैश्यात्तुजायतेव्रात्यात्सुधन्वाचा
र्यएवच॥ कारूषश्चविजन्माचमैत्रःसात्वतएवच॥२३॥व्य-
भिचारेणवर्णानामवेद्यावेदनेनच॥ स्वकर्मणांचत्यागेनजा-
यन्तेवर्णसंकराः॥२४॥संकीर्णयोनयोयेतुप्रतिलोमानुलो-
मजाः॥ अन्योन्यव्यतिषक्ताश्चतान्प्रवक्ष्याम्यशेषतः॥२५॥
सूतोवैदेहकश्चैवचण्डालश्चनराधमः॥ मागधःक्षत्तृजातिश्च
तथाऽयोगवएवच॥२६॥

۲۲- پر اتیہ کشتری سے کشتری ذات کی عورت مین جھل ذات والے ہوتے ہین اُسکا نام جھل
ملّ نچھب نٹ کرن کھس درڈر ہے-

۲۳ پر اتیہ ویشیہ سے ویشیہ ذات کی عورت مین سدھنوا چارج ذات والے ہوتے ہین اُنکو
کارش بجنما میتر ساتوت ذات والے کہتے ہین-

۲۴- دوسرے ذات کے مرد سے دوسری ذات کی عورت مین جماع - دواہ کرنیکے لائق
جو نہین ہے اُسکے ساتھہ دواہ اپنے کرمون کا تیاگ- ان سب باتون سے ورن سنکر پیدا ہوتے ہین
۲۵- اُن لوم اور پرت لوم کرکے باہم نسبت سے جو ورن سنکر ہوں ہے اُسکو مین کہونگا-
۲۶- سوت اور بیدیہک اور چانڈال اور ماگدھ اور کشتا اور آیوگو-

* دیکھو اشلوک نمبر ۲۰-

आयोगवश्च क्षत्ता च चराडालश्चाधमो नृणाम्॥ प्रातिलो-
म्येन जायन्ते शूद्रादपसदास्त्रयः॥१६॥ वैश्यान्मागधवैदेहौ क्ष-
त्रियात्सूत एव तु॥ प्रतीपमेते जायन्ते परेऽप्यपसदास्त्रयः॥१७
॥जातो निषादाच्छूद्रायां जात्या भवति पुक्कशः॥ शूद्राज्जातो नि-
षाद्यां तु स वै कुक्कुटकः स्मृतः॥१८॥ क्षत्तुर्जातस्तथोग्रायां श्व-
पाक इति कीर्त्यते॥ वैदेहकेन त्वम्बष्ठ्यामुत्पन्नो वेण उच्यते॥
१९॥ द्विजातयः सवर्णासु जनयन्त्यव्रतांस्तु यान्॥ तान्सावि-
त्रीपरिभ्रष्टान्व्रात्यानिति विनिर्दिशेत्॥२०॥ व्रात्यात्तु जायते
विप्रात्पापात्मा भूर्जकण्टकः॥ आवन्त्यवाटधानौ च पुष्प-
धः शैख एव च॥२१॥

١٦- آیوگو کشتا چانڈال یہ تینوں بیٹے کام میں سمرتھ یعنے صاحب قدرت نہیں ہوتے-
١٧- ماگدھ بیدیہ سوت یہ تینوں بیٹے بھی کام میں سمرتھ نہیں ہوتے-
١٨- نشاد سے شودر کنیا میں پکس ذات والے ہوتے ہیں نشاد میں ککٹ ذات والے ہوتے ہیں
١٩- کشتا سے اگر کنیا میں سوپاک ذات والے ہوتے ہیں بیدیہک سے امبشٹ ذات کی کنیا
میں بین ذات والے ہوتے ہیں-
٢٠- دوجماؤں سے ہم ذات عورت میں جو پیدا ہوئے مگر اون کا جنیو وغیرہ سنسکار
نہیں ہوا ہے وہ براتیہ کہلاتے ہیں-
٢١- براتیہ براہمن سے براہمنی میں جو پیدا ہوا وہ پاپاتما بھوج کنٹک ذات والا کہاتا ہے اسکو
دیش بھید سے آونتیہ باٹ دھان پشپدھ شیکھ کہتے ہیں-

विप्रस्य त्रिषु वर्णेषु नृपतेर्वर्णयोर्द्वयोः ।। वैश्यस्य वर्णे चैकस्मि न्षडेतेऽपसदाः स्मृताः ।। १० ।। क्षत्रियाद्विप्रकन्यायां सूतो भवति जातितः ।। वैश्यान्मागधवैदेहौ राजविप्राङ्गनासुतौ ।। ११ ।। शू- द्रादायोगवः क्षत्ता चण्डालश्चाधमो नृणाम् ।। वैश्यराजन्यवि- प्रासु जायन्ते वर्णसंकराः ।। १२ ।। एकान्तरे त्वानुलोम्यादम्बष्ठो ग्रौ यथा स्मृतौ ।। क्षत्तृवैदेहकौ तद्वत्प्रातिलोम्येऽपि जन्मनि ।। पुत्रा येऽनन्तरस्त्रीजाः क्रमेणोक्ता द्विजन्मनाम् ।। ताननन्तरना- म्नस्तु मातृदोषात्प्रचक्षते ।। १४ ।। ब्राह्मणादुग्रकन्यायामावृ- तो नाम जायते ।। आभीरोऽम्बष्ठकन्यायामायोगव्यां तु धि- ग्वणाः ।। १५ ।।

١٠- براہمن سے کشتری وغیرہ تین ورن کی استری مین اور کشتری سے ویشیہ وغیرہ دو ورن کی استری مین اور ویشیہ سے شودر ورن کی استری مین جو پیدا ہوتے ہین وہ چھ اپسد یعنی ناقص کہلاتے ہین

١١- ان قوم کو بیان کرکے اب پرت لوم کو کہتے ہین) کشتری سے براہمنی کنیا مین سوت ذات والا ہوتا ہے اور ویشیہ سے کشتریا کنیا مین ماگدھ اور براہمنی کنیا مین بیدیہ ذات والا ہوتا ہے۔

١٢- شودر سے ویشیہ اور کشتری اور براہمن کی کنیا سے حسب سلسلہ آیوگو کشتا آدمیون مین پنچ چانڈال ذات والے ہوتے ہین۔

١٣- جس طرح ایک ذات کے تفاوت مین ان قوم مین امبشٹ اور اگر ہے اسی طرح پرت لوم مین کشتا اور بیدیہک ہین

١٤- دو جنماؤن مین ایک ذات کی تفاوت والی عورت مین سلسلہ سے جو لڑکے پیدا ہونے کہے ہین وہ سب ماں کے عیب سے ماں کی ذات والے کہلاتے ہین۔

١٥- براہمن سے اگر امبشٹ ایوگو ان تینون کی کنیا مین سلسلہ سے آبرت، ابھیر، دھگن ذات والے ہوتے ہین

स्त्रीष्वनन्तरजातासु द्विजैरुत्पादितान्सुतान्॥ सदृशानेव तानाहु-
र्मातृदोषविगर्हितान्॥ ६॥ अनन्तरासु जातानां विधिरेष सनात-
नः॥ द्व्येकान्तरासु जातानां धर्म्यं विद्यादिमं विधिम्॥ ७॥ ब्राह्म-
णाद्वैश्यकन्यायामम्बष्ठो नाम जायते॥ निषादः शूद्रकन्यायां
सः पारशव उच्यते॥ ८॥ क्षत्रियाच्छूद्रकन्यायां क्रूराचारविहा-
रवान्॥ क्षत्रशूद्रवपुर्जन्तुरुग्रो नाम प्रजायते॥ ९॥

٦- دِوِج اور ایک ذات کی تفاوت والی عورت سے جو اولاد پیدا ہو وہ موافق کہلاتی ہے مگر
انہیں ماں کے عیب کا نقص ہے۔
٧- ایک ذات کی تفاوت میں پیدا ہوئی اولاد کے قدیم طریق کو کہا اب دو ایک ذات کے
تفاوت میں پیدا ہوئی اولاد کے طریق کو کہتے ہیں کہ
٨- براہمن سے بیاہتا ویشیا میں امبشٹ والا پیدا ہوتا ہے اور براہمن سے بیاہتا شودر کی کنیا
میں نشاد ذات والا پیدا ہوتا ہے اسکو پارشو کہتے ہیں
٩- کشتری سے بیاہتا شودر کنیا میں بدچلن کشتری شودر انگ والا اگر نام ذات والا ہوتا ہے۔

جو مہابھارت انساسن پرب ادھیائے ۴۸ شلوک ۴ و ۵ و ۶ و ۷ کے بموجب براہمن سے براہمنی و کشترانی میں براہمن
ویشیا میں ویشیہ و کشتری سے کشترانی و ویشیانی میں کشتری و ویشیا سے ویشیہ و شودرانی میں ویشیہ ورن شامل ہوتا ہے۔
امبشٹ و پارشو و اگر وغیرہ کسی قوم کا نام جداگانہ نہیں قائم ہوا کیونکہ ہر ایک قسم کی اولاد چار ہی ورن میں سے کسی ورن میں داخل
ہوتی گئی۔ امبشٹ بعض راجاؤں کا نام بھی تھا مہابھارت کرن پرب (ادھیائے ستم) کشتریوں میں ایک قوم امبشٹ ہے چتر لیت
کے کسی لڑکا کا لقب امبشٹ ہوا تھا اور چتر گپت بھی بموجب قول بھوشیہ پوران مندرجہ دھرم صفحہ ۳۳۳ کے کشتری ورن میں
چتر گپت کو پراسر سمرت و متسیہ پران میں چودہ جم میں ایک جم قرار دیا ہے اور جم کا ورن ست پتھ براہمن ...
۴-۲-۳۳ میں کشتری لکھا ہے۔

अधीयीरंस्त्रयो वर्णाः स्वकर्मस्था द्विजातयः॥ प्रब्रूयाद्ब्राह्मणस्त्वे-
षां नेतराविति निश्चयः॥१॥ सर्वेषां ब्राह्मणो विद्याद्वृत्त्युपाया-
न्यथाविधि॥ प्रब्रूयादितरेभ्यश्च स्वयं चैव तथा भवेत्॥२॥ वैशे
ष्यात्प्रकृतिश्रैष्ठ्यान्नियमस्य च धारणात्॥ संस्कारस्य विशेषा
च्च वर्णानां ब्राह्मणः प्रभुः॥३॥ ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो व-
र्णा द्विजातयः॥ चतुर्थ एकजातिस्तु शूद्रो नास्ति तु पंचमः॥४॥
सर्ववर्णेषु तुल्यासु पत्नीष्वक्षतयोनिषु॥ आनुलोम्येन संभूता
जात्या ज्ञेयास्त एव ते॥५॥

۱- براہمن کشتری ویشیہ تینوں ورن اپنے کرم میں قائم ہو کر وید کے جاننے ہووے سے پنچ دھرم کو کرنے والے ہوتے وید کو پڑھیں برہمن تو دوسروں کو پڑھاوے مگر کشتری و ویشیہ پڑھاویں اگر پڑھاویں تو اپنے کرم سے گریں

۲- برہمن سب لوگوں کی تدبیر معاش کو موافق طریق کے جانے اور دوسروں کو سمجھاوے اور آپ بھی اسی کے موافق کرے-

۳- بڑی ذات اور اتم جگہ سے پیدایش اور نیم کا دھارن اور بڑا سنسکار ان وجہوں سے برہمن سب سے بڑا ہے اور سب ورنوں کا گرو اور پربھو ہے-

۴- براہمن کشتری ویشیہ یہ تینوں ورن دوجنما کہلاتے ہیں اور چوتھا ورن شودر ایک جنما کہلاتا ہے اور کوئی ورن پانچواں نہیں ہے-

۵- سب ورنوں میں ان عورتوں سے جو ہمقوم و منکوحہ وقت شادی کے باکرہ ہوں جو اولاد پیدا ہوتی ہو وہ مساوی (یعنے ماں باپ کی ذات والی) کہلاتی ہے-

+ یعنے ایک جنم ماں باپ سے ہوتا ہے اور دوسرا جنم سنسکار سے ہوتا ہے-

تو مہابھارت انساس پربا دھیاے ۳ شلوک ۲۹ و ۳۰ میں بھی صاف لکھا ہے کہ پانچواں ورن نہیں اور چاروں ورن کے فرائض بیان ہیں-

धर्मेणाचद्रव्यवृद्धावातिष्ठेद्यत्नमुत्तमम्॥ दद्याच्चसर्वभूताना
मन्नमेवप्रयत्नतः॥३३३॥ विप्राणांवेदविदुषांगृहस्थानांय-
शस्विनाम्॥ शुश्रूषैवतुशूद्रस्यधर्मोनैश्रेयसःपरः॥३३४॥
शुचिरुत्कृष्टशुश्रूषुर्मृदुवागनहंकृतः॥ ब्राह्मणाद्याश्रयो-
नित्यमुत्कृष्टांजातिमश्नुते॥३३५॥ एषोऽनापदिवर्णानामु-
क्तः कर्मविधिः शुभः॥ आपद्यपिहियस्तेषांक्रमशः तन्निबो-
धत॥३३६॥

इतिमानवेधर्मशास्त्रेभृगुप्रोक्तायांसंहितायां
नवमोऽध्यायः ९

۳۳۳- دھرم سے ترقی دولت مین اچھی تدبیر کرے سب جانداروں کے کھانے پینے کی نیک طریق سے خبرگیری کرے۔

۳۳۴- وید پڑھنے والے نیکنام گرہستھ براہمنون کی سیوا شودرون کی موکش دینے مین افضل ہے۔

۳۳۵- پاکیزگی و خدمت بزرگان و نرم زبانی و خودی نکرنا و ہمیشہ براہمنون کی پناہ مین رہنا یہ سب کام شودرون کو اُتم ذات دینے والے ہین۔

۳۳۶- بحالت ہونے وقت مصیبت کے یہ طریق اعمال حسنہ ہر چہار ورن کیواسطے کہا اب وقت مصیبت مین انکون کے طریق عمل کو سلسلہ وار کہتے ہین۔

منوجی کا دھرم گرنتھ جی کی سنگھتا کا
نوان ادھیا سماپت ہوا۔

प्रजापतिर्हिवैश्यायसृष्ट्वापरिददेपशून्॥ ब्राह्मणायचराज्ञेच
सर्वाःपरिददेप्रजाः॥३२७॥नचवैश्यस्यकामःस्यान्नरक्षेयंप-
शूनिति॥वैश्येचेच्छतिनाऽन्येनरक्षितव्याःकथंचन॥३२८॥
मणिमुक्ताप्रवालानांलोहानांतान्तवस्यच॥ गन्धानांचरसा
नांचविद्यादर्घबलाबलम्॥३२९॥बीजानामुप्तिविच्चस्यात्क्षे
त्रदोषगुणस्यच॥मानयोगंचजानीयात्तुलायोगांश्चसर्वशः॥
३३०॥सारासारंचभाण्डानांदेशानांचगुणागुणान्॥ लाभा-
लाभंचपण्यानांपशूनांपरिवर्द्धनम्॥ ३३१॥ भृत्यानांचभृ-
तिंविद्याद्भाषाश्चविविधान्नृणाम्॥ द्रव्याणांस्थानयोगांश्च-
क्रयविक्रयमेवच॥ ३३२॥

۳۲۷ - برہما جی نے ویشیہ کو پیدا کرکے اسکو پشُ (یعنے چارپایہ) دیا اور براہمن و کشتری کو تمام
رعیت دی۔
۳۲۸ - ویشیہ یہ خواہش نہ کرے کہ چارپایہ کی حفاظت نکرینگے کاشتکاری وغیرہ کرتا ہوا بھی چارپایہ
کی حفاظت ضرور کرے اور جبتک ویشیہ چارپایہ کی حفاظت کرے تب تک دوسرا اور نکرے۔
۳۲۹ - جواہرات مونگا موتی و لوہا و سوت و خوشبویات و رس ان سبھون کی قیمت ملک
و وقت سمجھکر کم و زیادہ مقرر کرے۔
۳۳۰ - کھیت کا عیب و ہنر تخم ریزی پرستھ دروں وغیرہ تعداد تول و باٹ وغیرہ تعداد وزن
ان سبھونکا جاننے والا ویشیہ ہووے۔
۳۳۱ - برتنون کا سارا سار ملکونکا عیب و ہنر اشیاء فروختنی کا نفع و نقصان ترقی چارپایہ ان
سب کو جانے۔
۳۳۲ - مزدورون کی مزدوری آدمیون کی انواع اقسام کی زبان روپیہ اشرفی وغیرہ چیزون
کے قیام کی تدبیر اور خرید و فروخت ان سب کو جانے۔

अद्भ्योऽग्निर्ब्रह्मतः क्षत्रमश्मनो लोहमुत्थितम्॥ तेषां सर्वत्रगं ते-
जः स्वासु योनिषु शाम्यति॥ ३२१॥ नाब्रह्म क्षत्रमृध्नोति नाक्षत्रं
ब्रह्म वर्द्धते॥ ब्रह्म क्षत्रं च संपृक्तमिह चामुत्र वर्द्धते॥ ३२२॥ द-
त्त्वा धनं तु विप्रेभ्यः सर्वदण्डसमुत्थितम्॥ पुत्रे राज्यं समासृज्य
कुर्वीत प्रायणं रणे॥ ३२३॥ एवं चरन्सदा युक्तो राजधर्मेषु पा-
र्थिवः॥ हितेषु चैव लोकस्य सर्वान्भृत्यान्नियोजयेत्॥ ३२४॥
एषोऽखिलः कर्मविधिरुक्तो राज्ञः सनातनः॥ इमं कर्मविधिं
विद्यात्क्रमशो वैश्यशूद्रयोः॥ ३२५॥ वैश्यस्तु कृतसंस्कारः कृ-
त्वा दारपरिग्रहम्॥ वार्त्तायां नित्ययुक्तः स्यात्पशूनां चैव रक्ष-
णे॥ ३२६॥

۳۲۱- پانی سے آگ کی پیدائش ہے برہمن سے کشتری کی پیدائش ہے پتھر سے لوہے کی پیدائش ہے اور انکا تیج سب جگہ جاتا ہے و تعلق بگڑتا و ارتا ہے لیکن اپنی اصل کو پاکر شانت ہو جاتا ہے۔

۳۲۲- برہمن بے کشتری اور کشتری بے برہمن علیحدہ ہو کر ترقی نہیں پاتا دونوں شامل رہنے سے اس لوک میں ترقی پاتے ہیں۔

۳۲۳- سزا سے حاصل ہوئی تمام دولت کو برہمن کو دیکر اور ملک بیٹے کو دیکر جنگ میں ترک قالب کرے۔

۳۲۴- اس طریق سے راجہ ہر ایک وقت پر راج دھرموں کو کرتا ہوا بہبودی عالم میں سب ملازمان کو مصروف کرے۔

۳۲۵- یہ تمام طریق راجہ کے عمل روزمرہ کا کہا گیا اب آگے سلسلہ وار ویشیہ اور شودر کے دھرموں کو کہیں گے۔

۳۲۶- ویشیہ سنسکار کو پاکر بیواہ کرکے حفاظت چارپایہ و کاشتکاری وغیرہ میں ہمیشہ مصروف

लोकानन्यान्सृजेयुर्येलोकपालांश्चकोपिताः॥ देवान्कुर्युरदे-
वांश्चकः क्षिण्वंस्तान्समृध्नुयात्॥ ३१५॥ यानुपाश्रित्यतिष्ठंति
लोकादेवाश्चसर्वदा॥ ब्रह्मचैवधनंयेषांकोहिंस्यात्तान्जिजी
विषुः॥ ३१६॥ अविद्वांश्चैवविद्वांश्चब्राह्मणोदैवतंमहत्॥ प्रणी
तश्चाप्रणीतश्चयथाग्निर्दैवतंमहत्॥ ३१७॥ श्मशानेष्वपिते-
जस्वीपावकोनैवदुष्यति॥ हूयमानश्चयज्ञेषुभूयएवाभिवर्द्धते
॥ ३१८॥ एवंयद्यप्यनिष्टेषुवर्त्तन्तेसर्वकर्मसु॥ सर्वथाब्राह्म-
णाः पूज्याः परमंदैवतंहितत्॥ ३१९॥ क्षत्रस्यातिप्रवृद्धस्य-
ब्राह्मणान्प्रतिसर्वशः॥ ब्रह्मैवसन्नियन्तृस्यात्क्षत्रंहिब्रह्मसं-
भवम्॥ ३२०॥

۳۱۵ - جو براہمن خشمگین ہو کر دوسرا لوک و لوکپال بناوے اور دیوتا کو غیر دیوتا کرے اس براہمن کو تکلیف دیکر کون شخص دولت و حکومت حاصل کر سکتا ہے -

۳۱۶ - جن براہمنوں کی دولت وید ہی ہے انھوں کی پناہ مین لوک اور دیوتا رہتے ہین اُن براہمنوں کو زندگی کی خواہش رکھنے والا کون شخص مار لیگا -

۳۱۷ - جسطرح اگن سنسکار کو حاصل کرے یا نکرے تاہم وہ بڑا دیوتا ہے اسیطرح براہمن پنڈت ہو یا مورکھ ہو تاہم بڑا دیوتا ہے -

۳۱۸ - تیج والی اگن شمسان مین بھی دوش کو نہین پراپت ہوتی پھر بھی یگیہ مین ہون کو پراپت ہوتی ہے بہرحال ترقی ہی پاتی ہے -

۳۱۹ - اسیطرح اگرچہ براہمن تمام اعمال ناشائستہ کرتے ہین تاہم پوجنے کے لائق ہین اور بڑے دیوتا ہین -

۳۲۰ - کشتری تمام چیزون سے بڑا ہوتا ہم براہمن کو اپنے اختیار مین نہین کر سکتا کیونکہ وہ براہمن سے ہوا ہے اس سبب سے براہمن کشتریون کو اپنے اختیار مین کر سکتا ہے -

परिपूर्णं यथा चन्द्रं दृष्ट्वा हृष्यन्ति मानवाः॥ तथा प्रकृतयो यस्मिन्स चान्द्रव्रतिको नृपः॥ ३०९॥ प्रतापयुक्तस्तेजस्वी नित्यं स्यात्पापकर्मसु॥ दुष्टसामन्तहिंस्रश्च तदाग्नेयं व्रतं स्मृतम्॥ ३१०॥ यथा सर्वाणि भूतानि धरा धारयते समम्॥ तथा सर्वाणि भूतानि बिभ्रतः पार्थिवं व्रतम्॥ ३११॥ एतैरुपायैरन्यैश्च युक्तो नित्यमतन्द्रितः॥ स्तेनान्राजा निगृह्णीयात्स्वराष्ट्रे पर एव च॥ ३१२॥ परामप्यापदं प्राप्तो ब्राह्मणान्न प्रकोपयेत्॥ ते ह्येनं कुपिता हन्युः सद्यः सबलवाहनम्॥ ३१३॥ यैः कृतः सर्वभक्ष्योऽग्निरपेयश्च महोदधिः॥ क्षयी चाप्यायितः सोमः को न नश्येत्प्रकोप्य तान्॥ ३१४॥

۳۰۹- جسطرح پورن چندرمان کو دیکھکر آدمیونکو آنند ہوتا ہے اسی طرح سب جاندار راجہ کو دیکھکر خوش رہیں اس طریق سے راجہ رہا کرے۔

۳۱۰- پاپ کرمون میں ہمیشہ صاحب اقبال و پر جلال ہے یعنے مجرمونکو ضرور سزا دیوے اور اگن کا برت کرتا ہوا دُشٹ منتریون کو سزا دینے والا رہے۔

۳۱۱- جسطرح زمین تمام جاندارون کو اپنے اوپر یکسان قائم رکھتی ہے اسی طرح راجہ زمین کا برت دھارن کرتا ہوا سب جاندارون کو دھارن کرے۔

۳۱۲- ان تدبیرون اور دیگر تدبیرون سے مشغول رہکر ہمیشہ سُستی سے دور رہے اپنے اور دوسرون کی راج سے چورون کو نیست و نابود کرے۔

۳۱۳- راجہ وقت مصیبت میں بھی برہمنون کو خشمگین نکرے کیونکہ اونکے غصہ کرنے سے راجہ مع فوج و سواریون کے نیست و نابود ہو جاتا ہے۔

۳۱۴- جن برہمنون نے اگن کو سب بھکشی (سب چیزونکا کہانیوالا) اور مہا سمدر کو کھاری اور چندرمان کو گھٹنے والا کر دیا اُن برہمنون کو خشمگین کرا کے کون فانی نہوگا۔

इन्द्रस्यार्कस्य वायोश्च यमस्य वरुणस्य च ॥ चन्द्रस्याग्नेः पृथि-
व्याश्च तेजोवृत्तिं नृपश्चरेत् ॥ ३०३ ॥ वार्षिकांश्चतुरो मासान्यथे-
न्द्रोऽभिप्रवर्षति ॥ तथाभिवर्षेत्स्वं राष्ट्रं कामैरिन्द्रव्रतं चरन् ॥ ३०४
॥ अष्टौ मासान्यथादित्यस्तोयं हरति रश्मिभिः ॥ तथा हरेत्करं रा-
ष्ट्रान्नित्यमर्कव्रतं हि तत् ॥ ३० ॥ प्रविश्य सर्व्वभूतानि यथा चर-
ति मारुतः ॥ तथा चारैः प्रवेष्टव्यं व्रतमेतद्धि मारुतम् ॥ ३०६ ॥
यथा यमः प्रियद्वेष्यौ प्राप्ते काले नियच्छति ॥ तथा राज्ञा निय-
न्तव्याः प्रजास्तद्धि यमव्रतम् ॥ ३०७ ॥ वरुणेन यथा पाशैर्बद्ध
एवाभिदृश्यते ॥ तथा पापान्निगृह्णीयाद्व्रतमेतद्धि वारुणम्
॥ ३०८ ॥

۳۰۳- اندر سورج ہوا یم راج برن چندرمان اگن زمین انھون کے پراکرم کو راجہ دھارن کرے اور دشمنوں کو خالی کر کے اقبال و محبت سے شامل رہے۔

۳۰۴- جسطرح چار مہینہ برسات مین راجہ اندر پانی برساتے ہین اسیطرح راجہ اندر کا کام کرتا ہوا تمام راج مین رعایا کی تمناء دلی پوری کرے۔

۳۰۵- جسطرح سورج اپنی شعاع سے آٹھ مہینے تک پانی زمین سے کھینچتے ہین اسیطرح راجہ سورج کا کام کرتا ہوا راج سے محصول لیوے۔

۳۰۶- جسطرح ہوا تمام راج مین داخل ہو کر گشت کرتی ہے اسیطرح راجہ ہوا کا کام کرتا ہوا بوسیلہ جاسوسان تمام جانداروں مین داخل ہو کر گشت کرے۔

۳۰۷- جسطرح یم راج دوست دشمن دونون کو قریب المرگ ہونے پر مارتا ہے اسیطرح راجہ سب رعایا کو جرم کے موافق یم راج کا کام کرتا ہوا سزا دیوے۔

۳۰۸- جسطرح برن دشمنون کو باندھتے ہین اسیطرح راجہ برن کا کام کرتا ہوا مجرمونکو گرفتار کرے۔

चारेणोत्साहयोगेन क्रिययैव च कर्मणाम्॥ स्वशक्तिं परशक्तिं
च नित्यं विद्यान्महीपतिः॥ २९८॥ पीडनानि च सर्वाणि व्यसना-
नि तथैव च॥ आरभेत ततः कार्यं संचिन्त्य गुरुलाघवम्॥ २९९॥
आरभेतैव कर्माणि श्रान्तः श्रान्तः पुनः पुनः॥ कर्माण्यारभमा-
णं हि पुरुषं श्रीर्निषेवते॥ ३००॥ कृतं त्रेतायुगं चैव द्वापरं कलिरे-
व च॥ राज्ञो वृत्तानि सर्वाणि राजा हि युगमुच्यते॥ ३०१॥ कलिः
प्रसुप्तो भवति स जाग्रद्द्वापरं युगम्॥ कर्मस्वभ्युद्यतस्त्रेता विचरं-
स्तु कृतं युगम्॥ ३०२॥

۲۹۸- جاسوس و اتساہ (یعنی تقویت دل) و عمل انکے وسیلہ سے راجہ دوسروں کی طاقت
کو ہمیشہ جانلے-

۲۹۹- تمام تکلیفات و رنج کو خیال کرکے چھوٹے بڑے کام کو آغاز کرے-

۳۰۰- اگر کاموں کو کرتے کرتے تھک جاوے تو پھر پھر کاموں ہی کا آغاز کرتا رہے کیونکہ
لکشمی کام کرنیوالوں کی سیوا کرتی ہے-

۳۰۱- ست جگ ترتیا دواپر کلجگ یہ چار جگ ہیں مگر کچھ نہیں بلکہ راجہ جیسا رواج جاری
کرے وہی جگ ہوتا ہے یعنے راجہ ہی جگ ہے-

۳۰۲- جب راجہ بیوقوفی و سستی وغیرہ سے انجام کار نکرے تب کلجگ ہوتا ہے اور جب جانکر
کام نہیں کرتا تب دواپر ہوتا ہے اور جب کام کرتا ہے تب ترتیا ہوتا ہے اور جب شاستر کے
موافق کام کرتا ہے تب ست جگ ہوتا ہے اسلیے راجہ ہر وقت کام کرتا رہے یہ سدھانت
ہے چاروں جگ کا ہونا سدھانت نہیں ہے-

स्वाम्यमात्यौपुरंराष्ट्रंकोशदण्डौसुहृत्तथा॥सप्तप्रकृतयोह्ये-
ताःसप्तांगंराज्यमुच्यते॥ २९४ ॥सप्तानांप्रकृतीनांतुराज्यस्या
सांयथाक्रमं॥पूर्वंपूर्वंगुरुतरंजानीयाद्व्यसनंमहत्॥२९५॥सप्तां
गस्येहराज्यस्यविष्टब्धस्यत्रिदण्डवत्॥ अन्योन्यगुणवैशेष्या
न्नकिंचिदतिरिच्यते॥ २९६॥तेषुतेषुतुकृत्येषुतत्तदंगंविशिष्य-
ते॥येनयत्साध्यतेकार्य्यंतत्तस्मिन्श्रेष्ठमुच्यते॥ २९७ ॥

۲۹۴- راجہ و وزیر و دار السلطنت و ملک و خزانہ و سزا دہندہ و دوست وغیرہ ان سب ساتوں کو پرکرت کہتے ہیں اور یہ ساتوں عضو سلطنت ہیں اسواسطے سلطنت ہفت اعضا والی کہلاتی ہے۔

۲۹۵- ان ساتوں میں سلسلے سے اول اول کو سب بڑا دکھ ہوتا ہے یعنے آخر آخر کے ہونے میں اول اول کو دکھ ہوتا ہے۔

۲۹۶- اس لوک میں باہم ملے ہوئے ہفت اعضاء سلطنت میں باہم عجیب مددگاری سے ترِدنڈ کی طرح کوئی عضو زائد نہیں ہے اگرچہ اول اول عضو کو زیادہ کہا تو بھی ان ساتوں عضا کے درمیان میں ایک عضو کے کام کو دوسرا عضو بذات خود نہیں کر سکتا اس سے اگلے اگلے عضو کی بھی ضرورت ہوتی ہے اسیوجہ سے زیادتی کی ممانعت ہے اسمیں تِری کے ترِدنڈ کی تمثیل دی ہے جیسے تینوں ڈنڈ ملاکر اوپر چار انگل گئو کے بال سے بندش کرنے سے باہم پیوست ہوتی ہے اور ترِدنڈ دھارن سے شاستر ارتھ میں کوئی ڈنڈ زیادہ نہیں ہے ویسے ہی ہفت اعضاء سلطنت مرقومہ بالا کو جاننا چاہیئے۔

۲۹۷- جس عضو سے جو کام ہووے اسمیں افضل ہے۔

प्राकारस्य च भेत्तारं परिखाणां च पूरकम्॥ द्वाराणां चैव भंक्ता-
रं क्षिप्रमेव प्रवासयेत्॥ २८९॥ अभिचारेषु सर्वेषु कर्त्तव्यो द्वि-
शतो दमः॥ मूलकर्म्मणि चानाप्तेः कृत्यासु विविधासु च २९०
॥ अबीजविक्रयी चैव बीजोत्कृष्टं तथैव च॥ मर्यादाभेदकश्चै-
व विकृतं प्राप्नुयाद्वधम्॥ २९१॥ सर्वकण्टकपापिष्ठं हेमकारं
तु पार्थिवः॥ प्रवर्त्तमानमन्याये छेदयेल्लवशः क्षुरैः॥ २९२॥
सीताद्रव्यापहरणे शस्त्राणामौषधस्य च॥ कालमासाद्य का-
र्यं च राजा दण्डं प्रकल्पयेत्॥ २९३॥

۲۸۹- قلعہ کو توڑنیوالا اور اوسکی خندق کو پاٹنے والا اور اوسکے دروازہ کو توڑنیوالا جلد ملک سے باہر نکالدیا جاوے۔

۲۹۰- تنا سترین کے ہلیے مارن کا پر لوگ اور پالون کی دھول لیکر مارن پر لوگ ان کرمون کے کرنیوالون کو دوسو پن ڈنڈ دینا چاہیئے اگر اس پر یوگ سے آدمی مرجاوے تو سزا سے قتل دینا اور اسی طریق سے مان باپ اور وجہ کو چھوڑکر اگر منتری وغیرہ موہ کرکے دولت لینے کیواسطے بسی کرن وا چاٹن وانواع اقسام کا پر یوگ کرین تو اونکے کرنیمین بھی دوسو پن ڈنڈ لینا چاہیئے

۲۹۱- جو بیج کہ جمنے کے لائق نہین ہے اوسکو جمنے کے لائق کہکر فروخت کرنیوالا یا ناقص تخم مین تھوڑا اچھا تخم ڈالکر بیچنے والا مرجادا کا کھونیوالا یہ سب انواع اقسام کی سزا سے قطع اعضا پاوین

۲۹۲- سب دشٹون مین بڑا دشٹ سنار ہے وہ جب قصور کرے تو جرم کے موافق تھوڑے تھوڑے عضو کو چھوری سے کاٹے۔

۲۹۳- ہل و پھاوڑا وغیرہ جو آلات کاشتکاری ہین اور اسلحہ اور ادویہ انھون کے چورانے مین وقت اور محل کو دیکھکر راجہ سزا کا تعین کرے۔

चिकित्सकानां सर्वेषां मिथ्या प्रचरतां दमः ॥ अमानुषेषु प्रथमो मानुषेषु तु मध्यमः ॥ २८४ ॥ संक्रमध्वजयष्टीनां प्रतिमानां च भेदकः ॥ प्रतिकुर्याच्च तत्सर्वं पंच दद्याच्छतानि च ॥ २८५ ॥ अदूषितानां द्रव्याणां दूषणे भेदने तथा ॥ मणीनामपवेधे च दण्डः प्रथमसाहसः ॥ २८६ ॥ समैर्हि विषमं यस्तु चरेद्वै मूल्यतोऽपि वा ॥ समाप्नुयाद्दमं पूर्वं नरो मध्यममेव वा ॥ २८७ ॥ बन्धनानि च सर्वाणि राजा मार्गे निवेशयेत् ॥ दुःखिता यत्र दृश्येरन्विकृताः पापकारिणः ॥ २८८ ॥

۲۸۴- جو شخص بدون علم شاستر کے چارپایہ وغیرہ مین جھوٹھی طبابت کرتا ہی اُس سے پورب ساہس تاوان اور آدمیون مین جھوٹھی طبابت کرنیوالے سے مدھیم ساہس تاوان لینا چاہئے۔

۲۸۵- پانی کے اوپر آنے جانے کے واسطے قائم جو لکڑی یا پتھر ہے اور محل یا دشاہی مین جو بیرق جھنڈا ہے اور تالاب وغیرہ مین جو لٹھہ ہے اور دیوتا کی مورت ان چیزون مین سے کسی چیز کا علیحدہ کرنیوالا پانسوپن ڈنڈ دیوے اور جو لگاڑا ہے اُسکو بنا دے۔

۲۸۶- بے عیب چیزونکو باعیب کرنے اور توڑنے مین اور جواہرات وغیرہ مین ناکارہ سوراخ کرنےمین پرتھم ساہس ڈنڈ دیوے۔

۲۸۷- برابر قیمت دینے والون مین ایک کو اچھی چیز اور دوسرے کو ناقص چیز یا کسیکو بیش قیمت وہ چیز اور کسیکو کم قیمت والی چیز دینے والا پورب ساہس یا مدھم ساہس ڈنڈ دیوے حسب حیثیت جرم یعنی سزا کرنا چاہئے۔

۲۸۸- تمام قیدخانون کو سڑک پر بنانا چاہئے تاکہ اُسکے دیکھنے سے پاپ کرنیوالون کو دُکھ ہو دیعنی پابجولان وبھوکے وپیاسے اور ناخن و موے سر و داڑھی کے بال بڑھے ہوئے ولاغر بدن ایسے قیدیون کے دیکھنے سے سب آدمی کاربا ناکردنی کرنے سے خوف کھاینگے کہ جب ہم برا کام کرینگے تو ایسی حالت ہوجیگی۔

तडागभेदकंहन्यादप्सुशुद्धवधेनवा॥ यद्वापिप्रतिसंस्कुर्याद्दा
प्यस्तूत्तमसाहसम्॥ २७९॥ कोष्ठागारायुधागारदेवतागारभेद
कान्॥ हस्त्यश्वरथहर्तॄंश्चहन्यादेवाविचारयन्॥ २८०॥ यस्तु-
पूर्वनिविष्टस्यतडागस्योदकंहरेत्॥ आगमंवाप्यपांभिन्द्या-
त्सदाप्यःपूर्वसाहसम्॥ २८१॥ समुत्सृजेद्राजमार्गेयस्त्वमेध्य
मनापदि॥ सद्वौकार्षापणौदद्यादमेध्यंचाशुशोधयेत्॥ २८२
॥ आपद्गतोऽथवावृद्धोगर्भिणीबालएववा॥ परिभाषणमर्ह
न्तितच्चशोध्यमितिस्थितिः॥ २८३॥

۲۷۹ - جو تالاب کہ اشنان اور دان وغیرہ سے لوگوں کا اپکار کرنیوالا ہے اُسکو پل وغیرہ شکست
کرنے سے جو لگاڑتا ہے اُس آدمی کو پانی میں غرق کرکے یا اور طرح سے نابود کرے اگر وہ آدمی
تالاب مذکور کو بدستور سابق بنا دیوے تو اُسکو خالی نکرنا چاہیئے بلکہ اُتم ساہس تاوان لینا چاہیئے

۲۸۰ - راجہ کا غلہ وغیرہ دولت کا خزانہ و اسلحہ خانہ و دیوتا کا مندر انھوں کا توڑنے و بگاڑنیوالا و
ہاتھی و گھوڑا اور رتھ کو چرانیوالا ان سب کو مارنا ہیں کچھ بچار نکرنا چاہیئے -

۲۸۱ - کسی شخص نے رعیت کیواسطے تالاب بنایا اور دوسرا آدمی اُسکا پانی لیوے اور پانی کے
آنیکی راہ کو بند لگا کر بند کردے تو وہ شخص پرتھم ساہس ڈنڈ کے لائق ہے -

۲۸۲ - بغیر وقت مصیبت کے شاہراہ میں ناپاک چیز کو ڈالے تو وہ کارشاپن ڈنڈ دیوے اور
جس ناپاک چیز کو ڈالا ہے اُسکو جلد شاہراہ سے باہر لیجاوے -

۲۸۳ - اگر کوئی مصیبت زدہ یا بوڑھا یا حاملہ عورت یا نابالغ لڑکا حرکت مرقومہ بالا کرے تو
صرف اس بات کے کہنے کے لائق ہوتا ہے کہ یہ کیا کیا سزا کے لائق نہیں ہوتا لیکن اس ناپاک
چیز کو تو ضرور راستہ سے اٹھا لیجاویں -

यश्चापिधर्मसमयात्प्रच्युतोधर्मजीवनः ॥ दण्डेनैवतमप्योषे
त्स्वकाद्धर्माद्धिविच्युतम् ॥ २७३ ॥ ग्रामघातेहिताभङ्गेपथिमो-
षाभिदर्शने ॥ शक्तितोनाभिधावन्तोनिर्वास्याःसपरिच्छदाः ॥
२७४ ॥ राज्ञः कोशापहर्तॄंश्च प्रतिकूलेषु च स्थितान् ॥ घातये
द्विविधैर्दण्डैररीणांचोपजापकान् ॥ २७५ ॥ सन्धिंछित्त्वातु-
येचौर्यंरात्रौकुर्वन्तितस्कराः ॥ तेषांछित्त्वानृपोहस्तौतीक्ष्णेशू-
लेनिवेशयेत् ॥ २७६ ॥ अङ्गुलीर्ग्रन्थिभेदस्यछेदयेत्प्रथमेग्रहे ॥
द्वितीयेहस्तचरणौतृतीयेवधमर्हति ॥ २७७ ॥ अग्निदान्भक्त
दांश्चैवतथाशस्त्रावकाशदान् ॥ सन्निधातॄंश्चमोषस्यहन्या
च्चोरमिवेश्वरः ॥ २७८ ॥

۲۷۳- جو براہمن یگیہ دوان وغیرہ کرکے یگیہ دوان وغیرہ دھرم کو دوسرے کے واسطے پیدا کرکے اوقات گذاری کرے اور اپنے دھرم سے علیحدہ ہو راجہ اُس برہمن کو بھی ڈنڈ دیوے

۲۷۴- جو شخص چوروں سے گانوں کے غارت ہونے و شکستگی پل و راستہ میں چور کے نظر آنے میں بحالت صاحب طاقت ہونیکے دوڑ نا سہیں وہ مع اشیاء خانگی کا نوں سے نکالدینے کے لائق ہے —

۲۷۵- راجہ کے خزانہ میں چورانیوالا اور خلاف حکم راجہ کے عمل کرنیوالا اور راجہ کے دشمنوں سے دوستی کرنیوالا انکو انواع اقسام کے ڈنڈ سے قتل کرنا چاہیئے —

۲۷۶- جو چور نقب زنی کرکے رات میں چوری کرتے ہیں انکے دونوں ہاتھ کاٹکر پھر انکو سولی پر بٹھلا دے

۲۷۷- جو چور اول دفعہ گرہ کاٹ کا انگوٹھا اور انگوٹھا کی پاس کی انگلی کاٹنا چاہیے دوسری دفعہ میں ہاتھ پاؤں کاٹنا تیسری دفعہ قتل کرنا مناسب ہے

۲۷۸- جو شخص چور کو آگ بھات و اسلحہ و مہلت دیتا ہے اور جو چور کی چیزوں کا رکھنے والا ہے انکو راجہ مانند چور کے نابود کر دے —

भक्ष्यभोज्योपदेशैश्च ब्राह्मणानां च दर्शनैः ॥ शौर्यकर्मापदेशैश्च कुर्युस्तेषां समागमम् ॥ २६८ ॥ ये तत्र नोपसर्पेयुर्मूलप्रणिहिताश्च ये ॥ तान्प्रसह्य नृपो हन्यात्समित्रज्ञातिबान्धवान् ॥ २६९ ॥ न होढेन विना चौरं घातयेद्धार्मिको नृपः ॥ सहोढं सोपकरणं घातयेदविचारयन् ॥ २७० ॥ ग्रामेष्वपि च ये केचिच्चौराणां भक्तदायकाः ॥ भाण्डावकाशदाश्चैव सर्वांस्तानपि घातयेत् ॥ २७१ ॥ राष्ट्रेषु रक्षाधिकृतान्सामन्तांश्चैव चोदितान् ॥ अभ्याघातेषु मध्यस्थाञ्छिष्याच्चौरानिव द्रुतम् ॥ २७२ ॥

۲۶۸- پہلے سے جو چار جاسوس صورت ہین وہ ان سب چورون سے ایسا کہین کہ آپ اپنے
ہمارے گھر چلیے لڈو وغیرہ کھائیے ہمارے ملک مین ایک برہمن ایسا ہے کہ بتدبیر حصول جملہ
مطالب کی جانتا ہے اسکا درشن کیجیے ایک آدمی بہت آدمیون سے جنگ کریگا یا اسکو دیکھیے
اس بہانہ سے راجہ کے ڈنڈ کو دھارن کرنیوالے آدمی ان چورون کو فراہم کرے
۲۶۹- جو چور مقام خود دوش بین بچنا اور بخود [illegible] یا وزدان و جاسوس صورت
ا فوقہ بالا کے مل سے [illegible]
[illegible] پاس نجاوین تو راجہ انکو اپنی انکار سے بہچانکر جبراً انکو بلاکر مع انکے ہم جنس شناور
کے نیست و نابود کرے-
۲۷۰- دھرم کا جاننے والا اور تمیز عمل کرنیوالا راجہ چورون کو بدون دریافت و ثبوت کامل
چوری کے قتل نکرے اگر چور مع نشان چوری کے ہو تو اسکو مع اسکے اشیاء کے نیست و نابود کرے
یہ خیال کرے کہ اسکو دکھہ ہوگا-
۲۷۱- گانون مین جو کوئی چورون کو غلہ و آذوقہ و مکان دیوے تو راجہ انکو بھی نابود کرے-
۲۷۲- راج مین جو آدمی حفاظت کا اختیار رکھنے والے ہین اور جو آدمی گانون کے
چارون طرف رہنے والے ہین یہ دونون قسم کے آدمی چورون کو چوری کرنے مین مدد کرین
تو راجہ انکو بھی چورون کی طرح سزا دیوے-

तेषां दोषानभिख्याप्य स्वे स्वे कर्मणि तत्त्वतः ॥ कुर्वीत शासनं रा-
जा सम्यक्सारापराधतः ॥ २६२ ॥ न हि दण्डादृते शक्यः कर्तुं पा-
पविनिग्रहः ॥ स्तेनानां पापबुद्धीनां निभृतं चरतां क्षितौ ॥ २६३
॥ सभाप्रपापूपशालावेशमद्यान्नविक्रयाः ॥ चतुष्पथाश्चै-
त्यवृक्षाः समाजाः प्रेक्षणानि च ॥ २६४ ॥ जीर्णोद्यानान्यरण्या-
नि कारुकावेशनानि च ॥ शून्यानि चाप्यगाराणि वनान्युपव
नानि च ॥ २६५ ॥ एवंविधान्नृपो देशान्गुल्मैः स्थावरजंगमैः
॥ तस्करप्रतिषेधार्थं चारैश्चाप्यनुचारयेत् ॥ तत्सहायैरनुगतै-
र्नानाकर्मप्रवेदिभिः ॥ विद्यादुत्सादयेच्चैव निपुणैः पूर्वतस्करैः
॥ २६७ ॥

۲۶۲- راجہ انکے علیحدہ علیحدہ کام مین کما حقہٗ عیب کو کہکر اچھی طرح سے جرم کے موافق سزا دیوے -

۲۶۳- چور اور پاپی جو مؤدب و متواضع صورت بناکر عالم مین گشت کرتے ہین انکے جرم کا انسداد بدون سزا دینے کے ممکن نہین ہے اسواسطے سزا دینا چاہئے -

۲۶۴- سبھا (یعنے مقام فراہمی صلاح اندیشان) چاہ چاہ پخت پکوان مقام شراب فروشی مقام غلہ فروشی چوراہہ خانہ طوائف مشہور درخت مقام مجمع خلائق

۲۶۵- باغات جنگل ہائے کہنہ خانہ کاریگران خانہ خالی درخت وغیرہ کا جنگل جنگل لو طیار کردہ

۲۶۶- ایسے ملکون کی فوج وغیرہ سے راجہ گرفتاری چور وغیرہ کی کرے کیونکہ چور وغیرہ ایسے مقامات مین سامان خورد و نوش و لوازمہ عیاشی کے تلاش کرنے کے واسطے اکثر رہا کرتے ہین -

۲۶۷- انھون کے مدد کرنیوالے اور مددگار اور بدکار کے جاننے والے چورون کے فریب مین ہوشیار پہلے چور جاسوس کی صورت مین انھون کے وسیلہ سے چورون کو جاننا اور نیست و نابود کرنا چاہئے -

उत्कोचकाश्चोपधिकावंचकाःकितवास्तथा।।मंगलादेशवृ-
त्ताश्चभद्राश्चेक्षणिकैःसह।।२५८।।असम्यक्कारिणाश्चैवमहा
मात्राश्चिकित्सकाः।।शिल्पोपचारयुक्ताश्चनिपुणाःपण्य
योषितः।।२५९।।एवमादीन्विजानीयात्प्रकाशाँल्लोककण्ट-
कान्।।निगूढचारिणश्चान्याननार्यानार्यलिंगिनः।।२६०।।
तान्विदित्वासुचरितैर्गूढैस्तत्कर्मकारिभिः।।चारैश्चानेकसं-
स्थानैःप्रोत्साद्यवशमानयेत्।।२६१।।

۲۵۸- کام والے آدمی سے دھن لیکر نامناسب کام کرنیوالا اور خوف دکھلا کر دھن لینے والا اور سونا وغیرہ مین ناقص چیز ملاکر وغا بازی کرکے دوسرکا دھن لینے والا اور دیوت اور سماجیو قسم کی قمار بازی کرنیوالا اور دولت و فرزند و نفع وغیرہ حالات خوشی کو بیان کرکے اوقات بسر کرنیوالا اور بدعملی کو چھپاکر اچھے فعل کو ظاہر کرکے دوسرکی دولت لینے والا اور ہاتھ کی ریکھا کو دیکھکر اچھے اور برے پھل کو کہکر دوسرے کی دولت لینے والا۔

۲۵۹- ہاتھی کو سکھانے سے اوقات بسر کرنیوالا اور پیشہ طبابت سے اوقات بسر کرنیوالا یہ دونون اُس حالت مین جبکہ اپنے کام کو اچھی طرح نکرین اور دھن لیوین اور پیشہ مصوری وغیرہ سے گزارہ کرنیوالا اور بغیر کئے ہوئے تصویر کھینچو انکی تحریک و ترغیب دیکر دوسرکی دولت لینیوالا اور دوسرکی عورت یہ سب دوسرکو اپنے قابو مین کرلینے کو ہوشیار ہین۔

۲۶۰- اِن سبکو اور اُنکے برابر دوسرون کو ظاہر مین خار عالم جاننا چاہئیے اور پوشیدہ خار لگ دوسرے ہین جوکہ بھلے آدمی نہین ہین مگر بھلے آدمیون کے نشان سے رہتے ہین

۲۶۱- اِن سب کو بوسیلہ کاپٹک وغیرہ جاسوس کے (جوکہ بہت سے مقامات پر مقیم ہین اور جنکا بیان ساتوین ادھیای مین ہوا) اور نیز بوسیلہ اُن آدمیون کے جوکہ پوشیدہ خار لگ کی کرنیوالے ہین جانکر اور اُنکو دکھہ دیکر اپنے اختیار مین کرے۔

सम्यङ्निविष्टदेशस्तु कृतदुर्गश्च शास्त्रतः ॥ कण्टकोद्धरणे-
नित्यमातिष्ठेद्यत्नमुत्तमम् ॥२५२॥ रक्षणादार्यवृत्तानां कण्ट-
कानां च शोधनात् ॥ नरेन्द्रास्त्रिदिवं यान्ति प्रजापालनतत्पराः
॥२५३॥ अशासंस्तस्करान्यस्तु बलिं गृह्णाति पार्थिवः ॥ तस्य
प्रक्षुभ्यते राष्ट्रं स्वर्गाच्च परिहीयते ॥२५४॥ निर्भयन्तु भवेद्यस्य-
राष्ट्रं बाहुबलाश्रितम् ॥ तस्य तद्वर्द्धते नित्यं सिच्यमान इव द्रुमः
॥२५५॥ द्विविधांस्तस्करान्विद्यात्परद्रव्यापहारकान् ॥ प्रका-
शांश्चाप्रकाशांश्च चारचक्षुर्महीपतिः ॥२५६॥ प्रकाशवंचका-
स्तेषां नानापण्योपजीविनः ॥ प्रच्छन्नवंचकास्त्वेते ये स्तेनाट-
विकादयः ॥२५७॥

۲۵۲- شاستر مین کہے ہوئے ملک مین موافق ہدایت شاستر کے قلعہ بنا کر اور اسمین مقیم ہو کر کانٹا نکالنے مین تدبیر شایستہ کرے۔ (دیکھو شلوک ۵۸ و ۱۰۲)

۲۵۳- راجہ پرورش رعایا مین کما حقہ مشغول ہو کر اچھے لوگون کی حفاظت کرے اور کانٹے کے نکالنے سے سورگ مین جاتا ہے۔

۲۵۴- جو راجہ چورون کو سزا نہین دیتا۔ اور محصول اپنا لیتا ہی ایسے راجہ کی راج مین رعایا بددعا کرتی ہے۔ اور اوس پاپ سے بہشت چھین ہو کر سورگ مین حاصل نہین ہوتا۔

۲۵۵- جس راجہ کی قوت بازو پاکر رعایا بیخوف رہتی ہے اسکا راج ہر روز ترقی پاتا ہے جیسے سینچا ہوا درخت۔

۲۵۶- راجہ دونون کی آنکھ سے دیکھکر دوسرے کی دولت کو چورانے والے چور کو ظاہر و باطن دو قسم کرکے دو طرح کا جانے۔

۲۵۷- انواع اقسام کی چیزون کو فروخت کرنیوالے ظاہری چور ہین اور آدمیون سے خالی مقام مین اور بحالت سو جانے آدمیونکے دوسرے کی دولت چورانیوالے پوشیدہ چور ہین۔

यत्रवर्जयतेराजापापकृद्भ्योधनागमम्॥ तत्रकालेनजायन्ते
मानवादीर्घजीविनः॥ २४६॥ निष्पद्यन्तेचसस्यानियथोप्ता-
नि विशांपृथक्॥ बालाश्चनप्रमीयन्ते विकृतंनचजायते॥२४७
॥ब्राह्मणान्बाधमानन्तुकामादवरवर्णजम्॥ हन्याच्चित्रैर्व-
धोपायैरुद्वेजनकरैर्नृपः॥ २४८॥ यावानवध्यस्यवधेतावान्
वध्यस्यमोक्षणे॥ अधर्मोनृपतेर्दृष्टोधर्मस्तुविनियच्छतः॥
२४९॥उदितोऽयंविस्तरशोमिथोविवदमानयोः॥ अष्टादश
सुमार्गेषुव्यवहारस्यनिर्णयः॥ २५०॥एवंधर्म्याणिकार्य्या
णिसम्यक्कुर्वन्महीपतिः॥ देशानलब्धांलिप्सेतलब्धांश्चप-
रिपालयेत्॥२५१॥

۲۴۶- جس مقام پر راجہ پاپیون کی فراہم کی ہوئی دولت کو نہین لیتا ہے وہان آدمی بڑی عمر والے پیدا ہوتے ہین یعنے بہت دن تک زندہ رہتے ہین-

۲۴۷- جسطرح ویشیہ لوگ جو غلہ بوتے ہین وہ غلہ علیحدہ علیحدہ پیدا ہوتا ہے اسیطرح اس راجہ کی راج مین لڑکے بھی نہین مرتے اور نہ کوئی لڑکا کسی عضو سے محروم پیدا ہوتا ہے-

۲۴۸- جو چھوٹا ورن خواہش سے براہمنون کا قتل کرے تو الا اُسکو انواع اقسام کی تدبیرون سے قتل کرے جو بیقراری و رنج و خوف کی دینے والی ہین-

۲۴۹- جو قتل کے لائق نہین ہے اُسکے قتل مین جتنا پاپ ہوتا ہے اُتنا ہی پاپ قتل کے لائق آدمی کو چھوڑ دینے سے ہوتا ہے-

۲۵۰- اب بھرگ جی کہتے ہین کہ اسے رشی لوگو اٹھارہ قسم کے مقدمات مین باہم کرنیوالون کی تنقیح مقدمہ کو مفصل کہا-

۲۵۱- راجہ اس طریق سے کاربار متعلقہ دھرم کو اچھی طرح سے کرتا ہوا ان ملکون کی فتح کی خواہش کرے جو کہ فتح نہین ہوئے اور پھر ممالک مفتوحہ کی پرورش کرنیکی خواہش کرے-

प्रायश्चित्तन्तुकुर्वाणाःसर्ववर्णायथोदितम्।। नांक्याराज्ञा
ललाटेस्युर्दाप्यास्तूत्तमसाहसम्।।२४०।। आगस्सुब्राह्मणा
स्यैवकार्योमध्यमसाहसम्।।विवास्योवाभवेद्राष्ट्रात्सद्रव्यःस
परिच्छदः।।२४१।। इतरेकृतवन्तस्तुपापान्येतान्यकामतः ।।
सर्वस्वहारमर्हन्तिकामतस्तुप्रवासनम्।।२४२।।नाददीतनृपः
साधुर्महापातकिनोधनम्।। आददानस्तुतल्लोभात्तेनदोषेण
लिप्यते।।२४३।। अप्सुप्रवेश्यतंदण्डंवरुणायोपपादयेत् ।।
श्रुतवृत्तोपपन्नेवाब्राह्मणेप्रतिपादयेत्।। २४४।।ईशोदण्डस्य
वरुणोराज्ञांदण्डधरोहिसः।।ईशःसर्वस्यजगतोब्राह्मणोवे-
दपारगः।।२४५।।

۲۴۰- جو چارو ورن پرائشچت کے کرنیوالے ہین راجہ انکی پیشانی پرنشان نکرے بلکہ ہزار پن ڈنڈ لیوے-

۲۴۱- مجرم برہمن سے مدھیم ساہس ڈنڈ لیوے خواہ مجرم براہمن کو مع اسباب خانگی و دولت کے اپنی راج سے باہر نکالدیوے-

۲۴۲- کشتری وغیرہ تینون ورن بلا خواہش ان پاپون کو کرین تو انھون کی تمام دولت کو لے لیوے اور خواہش سے کیا ہو تو قطع اعضا خواہ قتل کی سزا دینا چاہیے-

۲۴۳- جو راجہ سادھو ہے وہ مہا پاپیونکا دھن نہ لیوے اگر طمع سے لیوے تو انھون کے پاپ مین شامل ہوتا ہے-

۲۴۴- ڈنڈ کے دھن کو (یعنی زر جرمانہ وغیرہ والی چیز) پانی مین ڈالکر ورن دیوتا کی اختیار مین کرے یا اس براہمن کو دیوے جو وید شاستر کا جاننے والا اور اسپر عمل کرنیوالا ہو-

۲۴۵- کیونکہ مہاپاپی کو ڈنڈ دینے سے جو دھن ملا ہے اس دھن کا مالک ورن دیوتا ہے وید کے تمام مطلب کو جاننے والا براہمن تمام جگت کا سوامی ہے-

ब्रह्महाचसुरापश्चस्तेयीचगुरुतल्पगः॥ एतेसर्वेपृथक्ज्ञेया
महापातकिनोनराः॥२३५॥ चतुर्णामपिचैतेषांप्रायश्चित्तम
कुर्वताम्॥ शारीरंधनसंयुक्तंदण्डंधर्म्यंप्रकल्पयेत्॥२३६॥गु-
रुतल्पेभगःकार्यःसुरापानेसुराध्वजः॥ स्तेयेचश्वपदंकार्यंब्र-
ह्महण्यशिराःपुमान्॥२३७॥ असंभोज्याह्यसंयाज्या असं-
पाठ्याविवाहिनः॥ चरेयुःपृथिवींदीनाःसर्वधर्मबहिष्कृताः॥
॥२३८॥ ज्ञातिसंबन्धिभिस्त्वेतेत्यक्तव्याःकृतलक्षणाः॥ नि-
र्दया निर्नमस्कारास्तन्मनोरनुशासनम्॥२३९॥

۲۳۵ - براہمن کو مارنیوالا شراب پینے والا براہمن کا سونا بقدر ۱۶ ماشہ چرانیوالا اپنی والدہ سے جماع کرنیوالا یہ چارو علیحدہ علیحدہ بڑے پاپی کہلاتے ہین

۲۳۶ - یہ چارو پرایشچت نکرین تو مع دولت سزاے بدنی مرقومہ ذیل انکو دینا چاہیے -

۲۳۷ - والدہ سے جماع کرنیوالا شراب پینے والا براہمن کا ۱۶ ماشہ سونا چرانیوالا براہمن کو مارنیوالا ان چارون کی پیشانی پر حسب سلسلہ نشانات مرقومہ ذیل کرنا چاہیے یعنی فرج کی صورت دبگ وبھبکا کی صورت کتے کے پانون کی صورت بے سر کے آدمی کی صورت -

۲۳۸ - جو یہ سب لوگ نشانات مرقومہ بالا کے رکھنے والے ہین انکے بھوجن اور یگیہ اور پاٹھ اور شادی وغیرہ کرم نہ کرانا چاہیے یہ سب تمام دھرمون سے باہر ہوکر مفلس ومتفکر وخوفناک ہوکر زمین پر گھومین -

۲۳۹ - ذات والے اور رشتہ دار اور بھائی وغیرہ سب انکو ترک کرین اسپر رحم نکرین اور نہ انکو نمسکار کرین یہ منو مہاراج کا حکم ہے -

क्षत्रविट्शूद्रयोनिस्तु दण्डं दातुमशक्नुवन् ॥ आनृण्यं कर्मणा
गच्छेद्विप्रो दद्याच्छनैः शनैः ॥ २२९ ॥ स्त्रीबालोन्मत्तवृद्धानां द
रिद्राणां च रोगिणाम् ॥ शिफाविदलरज्ज्वाद्यैर्विदध्यान्नृप-
तिर्दमम् ॥ २३० ॥ ये नियुक्तास्तु कार्येषु हन्युः कार्याणि कार्यि
णाम् ॥ धनोष्मणा पच्यमानास्तान्निःस्वान्कारयेन्नृपः २३१
कूटशासनकर्तॄंश्च प्रकृतीनां च दूषकान् ॥ स्त्रीबालब्राह्मण
घ्नांश्च हन्याद्द्विट्सेविनस्तथा ॥ २३२ ॥ तीरितं चानुशिष्टं यत्र
क्वचन यद्भवेत् ॥ कृतं तद्धर्मतो विद्यान्न तद्भूयो निवर्तयेत् २३३
॥ अमात्याः प्राड्विवाको वा यत्कुर्युः कार्यमन्यथा ॥ तत्स्वयं
नृपतिः कुर्यात्तान्सहस्रं च दण्डयेत् ॥ २३४ ॥

۲۲۹-کشتری ویشیہ شودر بسبب تاوان دینے کی طاقت نہ رکھتے ہوں تو کام کر کے تاوان بشکل قرضہ سے خلاصی پاویں اور برہمن ہوں تو آہستہ آہستہ دیوے کام نہ کرے۔

۲۳۰-استری-بالک-بوڑھا-مست-مفلس-بیمار-انکو بانس وغیرہ کی چھڑی سے مارنا اور رسی سے باندھنا ان سزاؤں کو راجہ دیوے۔

۲۳۱-کام کرانے کے واسطے مقرر آدمی کام والے کے کام کا نقصان کریں تو سب دھن انکا راجہ لیوے

۲۳۲-جو آدمی راجہ کے حکم کے خلاف کام کرنیوالے و محصول سرکاری کو نقصان و عیب پہنچانیوالے و استری و بالک و برہمن کو مارنیوالے و دشمن کی خدمتگذاری کرنیوالے ہیں راجہ ان سبھوں کو [illegible]

۲۳۳-جس مقام پر کسی مقدمہ میں از روے انصاف جو حکم اخیر ظاہر کنندہ سزا نافذ ہو گیا اسکو منظور کرے اور پھر اسکو دوسری طرح نہ کرے۔

۲۳۴-لیکن وزیر و منصف جس مقدمہ کو خلاف فیصلہ کریں اسکو راجہ آپ دیکھے اور اگر راجہ کو وقت ملاحظہ کے انکا فیصلہ خلاف معلوم ہو تو راجہ انکو ہزار پن ڈنڈ لیوے۔

अप्राणिभिर्यत्क्रियते तल्लोके द्यूतमुच्यते॥ प्राणिभिः क्रि-
यते यस्तु स विज्ञेयः समाह्वयः॥२२३॥ द्यूतं समाह्वयं चैव यः कु-
र्यात्कारयेत वा॥ तान्सर्वान्घातयेद्राजा शूद्रांश्च द्विजलिङ्गिनः
॥२२४॥ कितवान्कुशीलवान्क्रूरान्पाखण्डस्थांश्च मानवा-
न्॥ विकर्मस्थाञ्छौण्डिकांश्च क्षिप्रं निर्वासयेत्पुरात्॥२२५॥
एते राष्ट्रे वर्त्तमाना राज्ञः प्रच्छन्नतस्कराः॥ विकर्मक्रियया नि-
त्यं बाधन्ते भद्रिकाः प्रजाः॥२२६॥ द्यूतमेतत्पुराकल्पे दृष्टं वैर-
करं महत्॥ तस्माद्द्यूतं न सेवेत हास्यार्थमपि बुद्धिमान्॥२२७
॥ प्रच्छन्नं वा प्रकाशं वा तन्निषेवेत यो नरः॥ तस्य दण्डविक-
ल्पः स्याद्यथेष्टं नृपतेस्तथा॥२२८॥

۲۲۳ - بیجان چیز یا سنہ وغیرہ سے داؤ لگا کر بازی کرنا دیوت کہلاتا ہے اور جاندار چیز مثل
بھیڑ و بھینس و گھوڑا سے داؤ لگا کر بازی کرنا سماہوے کہلاتا ہی۔

۲۲۴ - ان دونون کو جو کرے اور کرادے اسکو اور جو شودر کہ براہمن و کشتری کے نشان کو
دھارن کرنیوالا ہی - اسکو راجہ نابود کرے۔

۲۲۵ - قمار باز رقاص کانیوالا سبے دشمنی کرنیوالا - پاکھنڈی ناکارہ کام کرنیوالا شراب
بنانیوالا ان سب کو راجہ جلد شہر کے باہر نکال دیوے۔

۲۲۶ - یہ سب چھپے ہوئے چور ہین کھوٹے کامون سے اچھی رعایا کو تکلیف و رنج پہونچاتے ہین۔

۲۲۷ - بڑی دشمنی کرنیوالا قمار ہی ہے یہ زمانہ سابق مین تجربہ کیا گیا اسواسطے عقلمند آدمی ہنسی کے
طور پر بھی اسکا استعمال نکرے۔

۲۲۸ - پوشیدہ یا بظاہر قمار بازی کرنیوالے آدمیون کو راجہ جس سزا کے دینے کی خواہش
کرے وہی سزا دیوے۔

अनपत्यस्यपुत्रस्यमातादायमवाप्नुयात् ॥ मातर्यपिचवृत्ता
यांपितुर्माताहरेद्धनम् ॥ २१७ ॥ ऋणेधनेचसर्वस्मिन्प्रवि-
भक्तेयथाविधि ॥ पश्चाद्दृश्येतयत्किंचित्तत्सर्वंसमतांनयेत्
॥ २१८ ॥ वस्त्रंपत्रमलंकारंकृतान्नमुदकंस्त्रियः ॥ योगक्षेमं
प्रचारंचनविभाज्यंप्रचक्षते ॥ २१९ ॥ अयमुक्तोविभागोवः
पुत्राणांचक्रियाविधिः ॥ क्रमशःक्षेत्रजादीनांद्यूतधर्मंनि-
बोधत ॥ २२० ॥ द्यूतंसमाह्वयंचैवराजाराष्ट्रान्निवारयेत् ॥ राजा-
न्तकरणावेतौद्वौदोषौपृथिवीक्षिताम् ॥ २२१ ॥ प्रकाशमेतत्
तास्कर्यंयद्देवनसमाह्वयौ ॥ तयोर्नित्यंप्रतीघातेनृपतिर्य-
त्नवान्भवेत् ॥ २२२ ॥

۲۱۷- اگر بیٹا لاولد ہو تو اُسکا دھن اُسکی والدہ لیوے والدہ بھی نہو تو اُسکی دادی لیوے-

۲۱۸- تو بعد تقسیم دولت و قرضہ کے موافق طریقہ شاستر کے جو کچھ دھن پیچھے مین آوے اُسکا حصہ برابر کرین-

۲۱۹- پارچہ- سواری- زیور- لڈو- ستو- کنوان وغیرہ غلام و کنیزک مشیر پروہت وغیرہ گئو وغیرہ چارپایون کے آنے جانے کی راہ ان سبھون کا حصہ نکرنا چاہیے اپنے کام کے موافق سب کوئی لیوین-

۲۲۰- بھرگ جی کہتے ہین کہ اے رشی لوگو کشیترج وغیرہ بیٹون کی تقسیم حصص کو آپ لوگون سے کہا اسکے بعد قمار بازی کو بیان کرتے ہین-

۲۲۱- دیوت اور سماہوے نام قمار بازیون کو راجا اپنی راج مین نہونے دیوے کیونکہ یہ دونون راج کو نیست و نابود کرتے ہین-

۲۲۲- یہ دونون ظاہر چوری ہین اسواسطے ان دونون کے مٹانے کی تدبیر مین رہے-

* دیکھو اشلوک ۲۲۳-

येषांज्येष्ठःकनिष्ठोवाहीयेतांशप्रदानतः॥ म्रियेतान्यतरोवापि
तस्यभागोनलुप्यते॥२११॥ सोदर्याविभजेरंस्तंसमेत्यसहिताः
समम्॥ भ्रातरोयेचसंसृष्टाभगिन्यश्चसनाभयः॥२१२॥ यो
ज्येष्ठोविनिकुर्वीतलोभाद्भ्रातॄन्यवीयसः॥ सोऽज्येष्ठःस्याद
भागश्चनियन्तव्यश्चराजभिः॥२१३॥ सर्वएवविकर्मस्थाना
र्हन्तिभ्रातरोधनम्॥ नचादत्वाकनिष्ठेभ्योज्येष्ठःकुर्वीतयौ
तुकम्॥२१४॥ भ्रातॄणामविभक्तानांयद्युत्थानंभवेत्सह॥
नपुत्रभागंविषमंपितादद्यात्कथंचन॥२१५॥ ऊर्ध्वंविभागा
ज्जातस्तुपित्र्यमेवहरेद्धनम्॥ संसृष्टास्तेनवायेस्युर्विभजेतस
तैःसह॥२१६॥

۲۱۱- بھائیوں میں بڑا بھائی یا چھوٹا بھائی تقسیم حصہ کے وقت بوجہ سنیاس وغیرہ دھارن کرنے کے اپنے حصہ سے محروم ہو یا فوت ہوگیا ہو تو اسکے حصہ کو غائب نکرنا چاہیے بلکہ اوسکا حصہ بھی علیحدہ کرنا مناسب ہے۔

۲۱۲- اس حصہ کو سب بھائی اور بہن ملکر بانٹ لیویں۔

۲۱۳- جو بڑا بھائی طمع سے چھوٹے بھائی کو حصہ نہ دیوے وہ بڑا بھائی نہیں کہلاتا ہے اور راجہ سے ڈنڈ پاتا ہے۔

۲۱۴- اگر سب بھائی بیفائدہ کاموں میں مشغول رہیں تو دولت کو نہیں پاتے بڑا بھائی سب دولت کو چھوٹے بھائی کو بغیر دیتے ہوے صرف اپنے قبضہ میں نکرے۔

۲۱۵- سب بھائی ملکر دولت کو جمع کریں تو والد کو مناسب ہے کہ وقت تقسیم کے طاق حصہ نکرے یعنی سب کو حصہ برابر دیوے۔

۲۱۶- باپ نے بیٹوں سے علیحدہ ہوکر پھر بیٹا پیدا کیا ہو تو وہ لڑکا صرف باپ ہی کا دھن پاتا ہے اور اسکے ساتھ پہلا علیحدہ ہوئے بھائی شامل ہوگئے ہوں تو اونکی ساتھ بعد تقسیم حصص جو لڑکا پیدا ہوا ہے وہ تقسیم حصص کرے۔

विद्याधनन्तुयद्यस्यतत्तस्यैवधनंभवेत्॥मैत्र्यमौद्वाहिकंचैव-
माधुपर्किकमेवच॥२०६॥भ्रातॄणांयस्तुनेहेतधनंशक्तःस्व-
कर्मणा॥सनिर्भाज्यःस्वकादंशात्किंचिद्दत्वोपजीवनम्॥२०७
॥अनुपघ्नन्पितृद्रव्यंश्रमेणयदुपार्जितम्॥स्वयमीहितलब्धं
तन्नाकामोदातुमर्हति॥२०८॥पैतृकन्तुपिताद्रव्यमनवाप्तंय
दाप्नुयात्॥नतत्पुत्रैर्भजेत्सार्द्धमकामःस्वयमर्जितम्॥२०९॥
विभक्ताःसहजीवन्तोविभजेरन्पुनर्यदि॥समस्तत्रविभागःस्या
ज्ज्यैष्ठ्यंतत्रनविद्यते॥२१०॥

۲۰۶۔ علم دوستی و دواہ و مدھوپرک انھون کے وسیلے سے جو دولت ملے اُسمین کسیکا حصّہ نہین ہے جو جمع کرے وہی لیوے۔

۲۰۷۔ سب بھائیون مین جو بھائی اپنے کام مین ہوشیار رہے اور والد کی دولت لینے کی خواہش نہین کرتا ہو اوسکو اپنے حصّے سے کچھ دولت دیکر الگ کرنا چاہیے کیونکہ اوسکے لڑکے پیچھے سے تکرار نکرین کہ ہمارے والد نے حصّہ نہین لیا ہے ہمکو حصّہ دو۔

۲۰۸۔ والد کا روپیہ ضائع نہو یعنے خرچ نہو اور اپنی محنت سے جو دولت فراہم کرے اُسکو اگر اپنی مرضی نہو تو بھائیون کو نہ دیوے یعنے اس دولت مین سے بھائیونکو حصّہ نہ دیوے۔

۲۰۹۔ والد کی دولت کو کسی نے چھین لیا اور والد نے اُسکو واپس نہ پایا ہو اور بیٹا اُس دولت کو اپنی محنت سے وصول کرے تو اُسکا حصہ اپنے بیٹون کو نہ دیوے اور خوشی ہو تو دیوے کیونکہ وہ دولت اپنی کوشش و پیروی سے آئی ہے باپ کی نہین ہے۔

۲۱۰۔ ایک دفعہ تقسیم حصص ہوگئی پھر اپنی خواہش سے شامل ہو کر رہین اور پھر تقسیم حصص کرین تو برادر کلان کو وہ حصّہ نہ دیوین جو اُسکی بزرگی کی وجہ سے تقسیم اول مین دیا جاتا ہے۔

पत्यौजीवतियःस्त्रीभिरलंकारोधृतोभवेत्।। नतंभजेरन्दायादा
भजमानाःपतन्तिते।।२००।। अनंशौक्लीवपतितौजात्यंधव-
धिरौतथा।।उन्मत्तजडमूकाश्चयेचकेचिन्निरिन्द्रियाः।।२०१।।
सर्वेषामपितुन्याय्यंदातुंशक्त्यामनीषिणा।। ग्रासाच्छादन-
मत्यन्तंपतितोह्यददद्भवेत्।।२०२।।यद्यर्थितातुदारैःस्यात्क्ली-
वादीनांकथंचन।।तेषामुत्पन्नतन्तूनामपत्यंदायमर्हति २०३
।।यत्किंचित्पितरिप्रेतेधनंज्येष्ठोऽधिगच्छति।। भागोयवी-
यसांतत्रयदिविद्यानुपालिनः।।२०४।।अविद्यानांतुसर्वेषा
मीहातश्चेद्धनंभवेत्।।समस्तत्रविभागस्यादपित्र्यइतिधार-
णा।।२०५।।

۲۰۰- عورت نے بحالت زندگی شوہر کے جو زیور زیب بدن کیا ہے اُسکو حصہ لینے والے تقسیم کریں تو پتت ہوتے ہیں۔

۲۰۱- مخنث پتت پیدائش سے اندھا بہرا بیاوہ وغیرہ سے پیدا ہوا بیقرار دل گونگا کوئی عضو نہ رکھنے والا ایسے جو شخص ہیں وہ حصہ نہیں پاتے۔

۲۰۲- حصہ لینے والا شاستر جاننے والا آدمی ان سب کو حسب مقدور کھانا کپڑا تا زیست انکو دیوے اور اگر نہ دیوے تو پتت ہوتا ہے۔

۲۰۳- مخنث وغیرہ کو شادی کرنے کی خواہش ہو تو شادی کرکے حسب لیاقت اس عورت میں بیٹا کرا کے اُس بیٹے کو حصہ دیوے

۲۰۴- بعد وفات والد کے بڑا بھائی قبل تقسیم شراکت کے کچھ دولت جمع کرے تو اسمیں سے حسب چھوٹے بھائی پاویں بشرطیکہ صاحب علم ہوں۔

۲۰۵- جملہ برادران بے علم کی محنت سے دولت جمع ہو تو انمیں برابر حصہ کرنا چاہئے وہ دولت والد کی نہیں ہے یہ شاستر کا نشچے ہے۔

अन्वाधेयंचयद्दत्तंपत्याप्रीतेनचैवयत्॥पत्यौजीवतिवृत्तायाः
प्रजायास्तद्धनंभवेत्॥१९५॥ब्राह्मदैवार्षगान्धर्वप्राजापत्ये-
षुयद्वसु॥अप्रजायामतीतायांभर्तुरेवतदीष्यते॥१९६॥य-
त्त्वस्याःस्याद्धनंदत्तंविवाहेष्वासुरादिषु॥अप्रजायामतीता-
यांमातापित्रोस्तदीष्यते॥१९७॥स्त्रियाःतुयद्भवेद्वित्तंपित्रा
दत्तंकथंचन॥ब्राह्मणीतद्धरेत्कन्यातदपत्यस्यवाभवेत्॥१९८
॥ननिर्हारंस्त्रियःकुर्युःकुटुम्बाद्बहुमध्यगात्॥स्वकादपिच-
वित्ताद्धिस्वस्यभर्तुरनाज्ञया॥१९९॥

۱۹۵- خوش ہوکر جو شوہر نے دیا۔ بعد شادی کے خاندان شوہر سے جو حاصل ہوا ان دونوں
دھن کو بعد وفات اس عورت کے اسکے بیٹے لیویں -

۱۹۶- براہم دیو آرش گاندھرب پراجاپتیہ ان پانچوں بیواہ میں جو کچھ استری کو ملا اسکو
بعد وفات اس لاولد استری کے اسکا شوہر پاتا ہے -

۱۹۷- آسر پیشاچ راکشس ان تین قسم کی شادیوں میں جو دھن استری کو ملا اسکو بعد
وفات اس لاولد استری کے اسکے ماں باپ پاتے ہیں شوہر نہیں پاتا -

۱۹۸- براہمن کے گھر میں چار ورن کی عورت شادی کی ہوئی ہوں انمیں براہمنی کی کنیا رہتی
ہو اور اور ورنوں کی استریاں لاولد بیوہ ہوں اور انکو کسیطرح باپنے دھن دیا ہو تو اس دھن کو بعد
وفات ان استریوں کے براہمنی کی کنیا پاوے اگر کنیا نہو تو اسکا بیٹا پاوے -

۱۹۹- برادری وغیرہ بہت لوگوں کا جو سادھارن دھن ہے اسکو استری بغیر واسطے زیور بنانے
کے نہ لیویں اور بدون اجازت شوہر کے شوہر کا دیا ہوا دھن بھی نہ لیویں اس سے یہ بات
ثابت ہوئی کہ یہ استریوں کے دھن نہیں ہیں -

अहार्यं ब्राह्मणद्रव्यं राज्ञा नित्यमिति स्थितिः ॥ इतरेषां तु व-
र्णानां सर्वाभावे हरेन्नृपः ॥ १८९ ॥ संस्थितस्यानपत्यस्य सगो-
त्रात्पुत्रमाहरेत् ॥ तत्र यद्रिक्थजातं स्यात्तत्तस्मिन्प्रतिपादये-
त् ॥ १९० ॥ द्वौ तु यौ विवदेयातां द्वाभ्यां जातौ स्त्रिया धने ॥ तयो-
र्यद्यस्य पित्र्यं स्यात्तत्स गृह्णीत नेतरः ॥ १९१ ॥ जनन्यां संस्थिता-
यां तु समं सर्वे सहोदराः ॥ भजेरन्मातृकं रिक्थं भगिन्यश्च सनाभ-
यः ॥ १९२ ॥ यास्तासां स्युर्दुहितरस्तासामपि यथार्हतः ॥ माता-
मह्या धनात्किंचित्प्रदेयं प्रीतिपूर्वकम् ॥ १९३ ॥ अध्यग्न्यध्या-
वाहनिकं दत्तं च प्रीतिकर्मणि ॥ भ्रातृमातृपितृप्राप्तं षड्विधं
स्त्रीधनं स्मृतम् ॥ १९४ ॥

۱۸۹- راجہ براہمن کی دولت کو نہ لیوے مگر دیگر درنوں کی دولت کو بحالت عدم موجودگی
اُنکے فرزند وغیرہ مرقومہ بالا کے لے لیوے -
۱۹۰- بعد وفات لاولد آدمی کے اُسکی زوجہ مطابق حکم شاستر وغیرہ کے اپنے گوتر کے آدمی سے
بیٹا پیدا کرے تو اُس بیٹے کو سب دولت دیوے -
۱۹۱- ایک عورت کے دو مردوں سے دو لڑکے پیدا ہوں اور والد کی دولت کیواسطے تکرار کرتے
ہوں تو جسکے والد نے جو دولت اُس عورت کو دی ہو وہ دولت وہی پاوے دوسرا نپاوے -
۱۹۲- بعد وفات والدہ کے سب برادر حقیقی وکنواری ہمشیرہ برابر حصہ کرکے والدہ کی دولت لیویں -
۱۹۳- والدہ کی دولت کو دختر پاوے اور دختر کی دختر کو بھی نانی کی دولت میں سے کچھ الفت و
محبت سے دینا چاہئے -
۱۹۴- وقت شادی کے اگن کے نزدیک والد وغیرہ نے جو دھن دیا ہو اور رخصت کے وقت جو
دھن دیا جاتا ہے اور خوشی دل سے جو شوہر دیتا ہے بھائی نے جو دھن دیا ہو اور رخصت کے وقت
والدہ نے جو دیا ہو یہ چھ قسم کے دھن استری کے ہیں یہ رشیوں نے کہا ہے -

सर्वासामेकपत्नीनामेका चेत्पुत्रिणी भवेत्॥ सर्वास्तास्तेन-
पुत्रेण प्राह पुत्रवतीर्मनुः॥१८३॥ श्रेयसः श्रेयसोऽलाभे पापी
यान् रिक्थमर्हति॥ बहवश्चेत्तु सदृशाः सर्वे रिक्थस्य भागिनः
॥१८४॥ न भ्रातरो न पितरः पुत्रा रिक्थहराः पितुः॥ पिता हरेत
पुत्रस्य रिक्थं भ्रातर एव च॥१८५॥ त्रयाणामुदकं कार्यं त्रिषु
पिण्डः प्रवर्त्तते॥ चतुर्थः संप्रदातैषां पंचमो नोपपद्यते॥१८६
॥ अनन्तरः सपिण्डाद्यस्तस्य तस्य धनं भवेत्॥ अत ऊर्ध्वं सकु
ल्यः स्यादाचार्यः शिष्य एव वा॥१८७॥ सर्वेषामप्यभावे तु
ब्राह्मणा रिक्थभागिनः॥ त्रैविद्याः शुचयो दान्तास्तथा ध-
र्मो न हीयते॥१८८॥

۱۸۳- ایک آدمی کے چار پانچ زوجہ ہون ان سب مین ایک پتروان ہو تو اسکے ہونیسے
سب زوجہ پتروان کہلاتی ہین اسبات کو منجی نے کہا ہے-
۱۸۴- بارہ طرحکے بیٹون مین بحالت نہونے اوّل اوّل کے دوسرے دوسرے دولت کو پاتے
ہین اگر بہت بیٹے جفت ہون تو دولت کو بھی جفت پاتے ہین-
۱۸۵- باپ اور بھائی دولت کو نہین پاتے بیٹا ہی دولت کو پاتا ہے بیٹا نہو تو باپ اور
بھائی دولت کو پاتے ہین-
۱۸۶- باپ اور دادا اور پردادا ان تینون کو پنڈ اور جل دینا چاہیے چوتھا دینے والا ہے پانچوان
کوئی نہین-
۱۸۷- سپنڈ یعنی سات پشت مین جو مردہ آدمی کا قریب ہو وہ دولت کو پاتا ہے اگر سپنڈ نہو
تو سات پشت کے اوپر والا دولت کو پاتا ہے اگر وہ بھی نہو تو آچارج دولت کو پاتا ہے آچارج بھی نہو تو چیلا دولت کو پاتا ہے
۱۸۸- یہ سب نہون تو تینون وید پڑھنے والے اور اندریون کے جیتنے والے صاحب اولاد برہمن
لوگ دولت کو پاتے ہین اس ریت سے دھرم کا ناش نہین ہوتا-

मातापितृविहीनोयस्त्यक्तोवास्यादकारणात्॥ आत्मानं-
स्पर्शयेद्यस्मैस्वयंदत्तस्तुसंस्मृतः॥१७७॥यंब्राह्मणस्तुशूद्रा
यांकामादुत्पादयेत्सुतम्॥सपारयन्नेवशवस्तस्मात्पारशवः
स्मृतः॥१७८॥दास्यांवादासदास्यांवायःशूद्रस्यसुतोभवेत्॥
सोऽनुज्ञातोहरेदंशमितिधर्मोव्यवस्थितः॥१७९॥क्षेत्रजा-
दीन्सुतानेतानेकादशयथोदितान्॥पुत्रप्रतिनिधीनाहुःक्रि-
यालोपान्मनीषिणः॥१८०॥यएतेऽभिहिताःपुत्रःप्रसंगा-
दन्यबीजजाः॥ यस्यतेबीजतोजातास्तस्यतेनेतरस्यतु॥१८१
भ्रातॄणामेकजातानामेकश्चेत्पुत्रवान्भवेत्॥सर्वांस्तांस्तेन
पुत्रेणपुत्रिणोमनुरब्रवीत्॥१८२॥

۱۷۷- جس لڑکے کے ماں باپ مرگئے ہوں یا بلا سبب ماں باپ نے اسکو ترک کردیا ہو وہ لڑکا اپنے کو آپ جسکو دیوے وہ اُسکا سویم دت نام بیٹا کہلاتا ہے۔

۱۷۸- شہوت و محبت کے غلبہ سے شادی کی ہوئی شودر ذات کی عورت میں جو لڑکا پیدا ہو وہ زندہ ہی مردہ ہے اسلیئے وہ لڑکا برہمن کا شودر خواہ پارشو نام بیٹا کہلاتا ہے۔

۱۷۹- داسی خواہ داسی کی داسی میں شودر سے لڑکا پیدا ہوا وہ والد کے حکم سے حصہ پاسکتا ہے یہ دھرم میں داخل ہے۔

۱۸۰- کشیترج وغیرہ جو گیارہ بیٹے ہیں انکو پنڈتوں نے بدین لحاظ کہ پنڈ دان وغیرہ کریا معدوم نہ ہوجاوین بجاے فرزند قائم کیا ہے۔

۱۸۱- دوسرے کے نطفے سے جو لڑکے پیدا ہوئے کہے ہیں وہ سب بحالت موجودگی اورس بیٹے کے ہیں ورنہ جو جسکے نطفہ سے پیدا ہوتا ہے اسیکا بیٹا کہلاتا ہے دوسرے کا نہیں۔

۱۸۲- ایک باپ سے پیدا ہوئے چار پانچ بھائیوں میں ایک بھائی بھی پتر والا ہو تو اسکے ہونے سے سب بھائی پتر والے کہلاتے ہیں اسبات کو منو جی نے کہا ہے۔

यागर्भिणीसंस्क्रियतेज्ञाताज्ञातापिवासती॥ वोढुःसगर्भो भवतिसहोढइतिचोच्यते॥१७३॥क्रीणीयाद्यस्त्वपत्यार्थं मातापित्रोर्यमन्तिकात्॥ सक्रीतकःसुतस्तस्यसदृशोसदृशो पिवा॥१७४॥यापत्यावापरित्यक्ताविधवावास्वयेच्छया॥ उत्पादयेत्पुनर्भूत्वासपौनर्भवउच्यते॥१७५॥साचेदक्षतयो निःस्याद्गतप्रत्यागतापिवा॥ पौनर्भवेनभर्त्रासापुनःसंस्का रमर्हति॥१७६॥

۱۷۳- دختر حاملہ ہے اور سب کوئی جانتا ہے یا نہیں جانتا ہو اور اس دختر کی شادی ہو اور بعد شادی کے اسی حمل سے لڑکا پیدا ہوا تو وہ لڑکا شادی کرنیوالے کا سہوڑھ نام بیٹا کہلاتا ہے -

۱۷۴- جس لڑکے کے ماں باپ واسطے بنانے فرزند اپنے کے خرید کریں اور وہ لڑکا اپنے برابر صفت رکھتا ہو یا اپنی صفت کے خلاف ہو مگر ذات میں اپنے برابر ہو وہ لڑکا خریدنے والے کا کریت نام بیٹا کہلاتا ہے -

۱۷۵- جس عورت کو شوہر نے ترک کیا ہو وہ یا زن بیوہ اپنی خواہش سے پھر دوسرے کی زوجہ ہو کر اس آدمی سے بیٹا پیدا کرے تو وہ بیٹا پیدا کرنیوالے کا پونربھو نام بیٹا کہلاتا ہے -

۱۷۶- جس عورت کی شادی ہو گئی ہے مگر اس سے جماع نہیں ہوا ہے وہ دوسرے شوہر کی پناہ میں جاوے تو اوس آدمی کے ساتھ پھر شادی کے لائق ہوتی ہے خواہ کمار شوہر کو چھوڑ کر دوسرے شوہر کی پناہ لیکر بشرطیکہ جماع سے محفوظ رہی ہو پھر کمار شوہر کی پناہ لیوے تو پھر اوسکے ساتھ شادی کے لائق ہوتی ہے -

* دیکھو یاگیہ ولک سمرت اچار ادھیائے شلوک نمبر ۶۷ - ویم سمرت مندرجہ ذیل صفحہ کا وید [illegible] دکھاتا ہے [illegible]
سمرت و دیگر [illegible] سنگھتا اور [illegible] سوکھا [illegible] چاہیے -

यस्तल्पजः प्रमीतस्य क्लीबस्य व्याधितस्य वा ॥ स्वधर्मेण नियु-
क्तायां स पुत्रः क्षेत्रजः स्मृतः ॥ १६७ ॥ माता पिता वा दद्यातां
यमद्भिः पुत्रमापदि ॥ सदृशं प्रीतिसंयुक्तं स ज्ञेयो दत्त्रिमः सु-
तः ॥ १६८ ॥ सदृशं तु प्रकुर्य्याद्यं गुणदोषविचक्षणम् ॥ पुत्रं
पुत्रगुणैर्युक्तं स विज्ञेयश्च कृत्रिमः ॥ १६९ ॥ उत्पद्यते गृहे यस्य
न च ज्ञायेत कस्य सः ॥ स गृहे गूढ उत्पन्नस्तस्य स्याद्यस्य तल्पजः
॥ १७० ॥ मातापितृभ्यामुत्सृष्टं तयोरन्यतरेण वा ॥ यं पुत्रं परि-
गृह्णीयादपविद्धः स उच्यते ॥ १७१ ॥ पितृवेश्मनि कन्या तु यं पु-
त्रं जनयेद्रहः ॥ तं कानीनं वदेन्नाम्ना वोढुः कन्यासमुद्भवम् ॥
१७२ ॥

۱۶۷۔ مخنث اور بیمار و وفات یافتہ اس قسم کے آدمیون کی زوجہ مین ارزوئے دھرم والد وغیرہ کے حکم سے دیور وغیرہ نے جو بیٹا پیدا کیا وہ کشیتیرج کہلاتا ہے۔

۱۶۸۔ ماں باپ وقت مصیبت مین آپ اپنے ہمقوم بیٹے کو پانی سے سنکلپ کرکے براہ محبت دیوین وہ بیٹا دتک یعنے متبنی کہلاتا ہے۔

۱۶۹۔ جو لڑکا ہمقوم اور عیب و ہنر کو جاننے والا اور بیٹون کی صفتون سے بھرا ہوا ہے اسکو اپنا بیٹا بناوے وہ بیٹا کرترم کہلاتا ہے۔

۱۷۰۔ گھر مین پیدا ہوا اور نہین معلوم کہ کسکے تخم سے پیدا ہوا تو جسکی عورت سے پیدا ہوا اسکا گوڑھ اپتن نام بیٹا کہلاتا ہے۔

۱۷۱۔ ماں باپ دونون نے خواہ ایک نے جس لڑکے کو ترک کیا اس بیٹے کو دوسرے نے اپنا بیٹا کیا تو وہ بیٹا لینے والے کا بیٹا اپ بدھ نام کہلاتا ہے۔

۱۷۲۔ بدون شادی ہوئے دختر نے بخانہ والد خلوت مین جس لڑکے کو پیدا کیا وہ لڑکا اس دختر سے شادی کرنیوالے کا کانین نام بیٹا کہلاتا ہے۔

यद्येकरिक्थिनौ स्यातामौरसक्षेत्रजौ सुतौ ॥ यस्य यत्पैतृकं
रिक्थं स तद्गृह्णीत नेतरः ॥ १६२ ॥ एक एवौरसः पुत्रः पित्र्यस्य
वसुनः प्रभुः ॥ शेषाणामानृशंस्यार्थं प्रदद्यात्तु प्रजीवनम् ॥
१६३ ॥ षष्ठं तु क्षेत्रजस्यांशं प्रदद्यात्पैतृकाद्धनात् ॥ औरसो
विभजन्दायं पित्र्यं पंचममेव वा ॥ १६४ ॥ औरसक्षेत्रजौ पुत्रौ
पितृरिक्थस्य भागिनौ ॥ दशापरे तु क्रमशो गोत्ररिक्थांश-
भागिनः ॥ १६५ ॥ स्वक्षेत्रे संस्कृतायां तु स्वयमुत्पादयेद्धि यम् ॥
तमौरसं विजानीयात्पुत्रं प्रथमकल्पितम् ॥ १६६ ॥

۱۶۲- جس آدمی کا تخم بیماری وغیرہ سے فانی ہوگیا ہو اُسکی عورت میں لاولد ہونیپر والد وغیرہ کے حکم سے بیٹا پیدا کیا اور پھر معالجہ وغیرہ سے نطفہ کی ترقی پاکر اس آدمی نے اپنی عورت سے بیٹا پیدا کیا تب اُسکی دولت کے مالک کشیترج واورس نام دو بیٹے ہوئے اسپر منّو جی کہتے ہیں کہ جسکے تخم سے جو پیدا ہوا ہو وہ اُسکی دولت کو پاوے۔

۱۶۳- ایک ہی بیٹا اورس نام والا اپنے باپ کی تمام دولت کا مالک ہے وہ اور بھائیوں کو رحم سے کھانا اور کپڑا دیوے۔

۱۶۴- والد وغیرہ کے حکم سے لڑکا پیدا کرنیوالا صاحب اولاد ہو تو کشیترج اور اورس دونوں بیٹے اپنے والد کی دولت کے چھہ حصہ یا پانچ حصہ کریں ایک حصہ کو کشیترج لیوے باقیماندہ دولت کو اورس لیوے اگر کشیترج صاحب صفت ہو تو دولت کے پانچ حصہ کرنا چاہیے اور اگر وہ بے صفت ہو تو چھہ حصہ کرنا چاہیے۔

۱۶۵- کشیترج واورس یہ دونوں والد کی دولت کو لے سکتے ہیں باقیماندہ جو دس بیٹے ہیں وہ گوتر اور دولت دونوں کو سلسلہ سے لینے والے ہیں۔

۱۶۶- جو اپنی بیواہتا استری سے بیٹا پیدا ہو وہ اورس نام بیٹا کہا ہے وہ سب بیٹوں سے افضل ہے

समवर्णासुयेजाताःसर्वेपुत्राद्विजन्मनाम्॥उद्धारंज्यायसेद-
त्त्वाभजेरन्नितरेसमम्॥१५६॥शूद्रस्यतुसवर्णैवनान्याभा-
र्याविधीयते॥तस्यांजाताःसमांशाःस्युर्यदिपुत्रशतंभवेत्॥
१५७॥पुत्रान्द्वादशयानाहनृणांस्वायंभुवोमनुः॥तेषांष-
ड्बन्धुदायादाःषडदायादबान्धवाः॥१५८॥औरसःक्षेत्र-
जश्चैवदत्तःकृत्रिमएवच॥गूढोत्पन्नोऽपविद्धश्चदायादा-
बान्धवाश्चषट्॥१५९॥कानीनश्चसहोढश्चक्रीतःपौनर्भ-
वस्तथा॥स्वयंदत्तश्चशौद्रश्चषडदायादबान्धवाः॥१६०॥
यादृशंफलमाप्नोतिकुप्लवैःसंतरञ्जलम्॥तादृशंफलमा-
प्नोतिकुपुत्रैःसन्तरंस्तमः॥१६१॥

۱۵۶ ۔ براہمن و کشتری و ویشیہ کی ہم قوم عورت میں جو لڑکا پیدا ہو وہ بڑے کو ادھار نام حصہ دیکر باقیماندہ دولت کو برابر حصہ کرے ۔

۱۵۷ ۔ شودر کیواسطے خاص اپنی ہی ذات کی زوجہ ہے دوسری ذات کی نہیں ہے اسلیے اگرچہ سو لڑکے ہوں تو بھی برابر حصہ پاتے ہیں ۔

۱۵۸ ۔ برہما جی کے بیٹے منّ جی نے جو آدمیوں کے بارہ طرح کے بیٹے کہے ہیں ان میں اول کے چھ بندھو اور دایا دکھلاتے ہیں اور پچھلے چھ خلاف اسکے ہیں یعنی بھائی ہیں اور شریک ترکہ نہیں

۱۵۹ ۔ وہ بارہ یہ ہیں ۔ اورس ۔ کشیتر ج ۔ دتک ۔ کرترم ۔ گوڈھوتپن ۔ اپ ودھ یہ چھ دایا و بندھو کہلاتے ہیں ۔ بندھو بھائی کو کہتے ہیں اور دایا و شریک ترکہ پدری کو کہتے ہیں ۔

۱۶۰ ۔ کانین ۔ سہوڑھ ۔ کریت ۔ پونربھو ۔ سویم دت ۔ شودر یہ چھ ادایا و بندھو کہلاتے ہیں ان بارہو قسم کے بیٹوں کی شرح و صفت اشلوک ۱۶۶ لغایت ۱۷۹ امین لکھی ہے ۔

۱۶۱ ۔ خراب ناؤ پر چڑھکر دریا سے پار ہونیوالا جیسا نتیجہ پاتا ہے ویسا ہی نتیجہ نالائق بیٹے سے نرک پار اترتے وقت پاتا ہے ۔

कीनाशोगोवृषोयानमलंकारश्चवेश्मच॥विप्रस्यौद्धारिकंदे-
यमेकांशश्चप्रधानतः॥१५०॥त्र्यंशंदायाद्धरेद्विप्रोद्वावंशौक्ष-
त्रियासुतः॥वैश्याजःसार्द्धमेवांशमंशंशूद्रासुतोहरेत॥१५१॥
सर्वंवारिक्थजातंतद्दशधापरिकल्प्यच॥धर्म्यंविभागंकु-
र्वीतविधिनाऽनेनधर्मवित॥१५२॥चतुरोंऽशान्हरेद्विप्रस्त्री
नंशान्क्षत्रियासुतः॥वैश्यापुत्रोहरेद्व्यंशमंशंशूद्रासुतोहरे-
त्॥१५३॥यद्यपिस्यात्तुसत्पुत्रोऽप्यसत्पुत्रोऽपिवाभवेत्॥
नाधिकंदशमाद्दद्याच्छूद्रापुत्रायधर्मतः॥१५४॥ब्राह्मणक्ष
त्रियविशांशूद्रापुत्रोनरिक्थभाक्॥यदेवास्यपितादद्यात्तदे-
वास्यधनंभवेत्॥१५५॥

۱۵۰- ہر واہہ وسانڈ وگھوڑا وغیرہ سواری وزیور وغیرہ ومکان کُل اجزا مین سے ایک ایک افضل جزو ان سب کو براہمنی کے بیٹے کو ادھار نام حصہ دیکر باقیماندہ کی تقسیم اس طریق کے موافق کرے جو آگے کہینگے

۱۵۱- برہمن سے براہمنی مین جو لڑکا پیدا ہو وہ تیسرا حصہ لیوے اور کشتریا کا بیٹا دوسرا حصہ لیوے- اور ویشیا کا بیٹا ڈیڑھ حصہ لیوے اور شودر کا بیٹا ایک حصہ لیوے-

۱۵۲- خواہ جو طریق آگے کہینگے اُسکے موافق دھرم کے جاننے والے تمام دولت کے دس حصہ کرکے ازروے دھرم کے تقسیم حصہ کی کرین-

۱۵۳- براہمنی کا بیٹا چار حصہ اور کشتریا کا بیٹا تین حصہ اور ویشیا کا بیٹا دو حصہ اور شودر کا بیٹا ایک حصہ لیوے-

۱۵۴- براہمن وکشتری وویشیہ ان تینون ورن کی عورت مین براہمن سے بیٹا پیدا ہوا ہو یا نہوا ہو لیکن ازروے دھرم کے شودر کے بیٹے کو دسوین حصہ سے زیادہ نہ دیوے-

۱۵۵- براہمن وکشتری وویشیہ ان تینون ورن کی دولت کو شودر کا بیٹا نہین لیسکتا ہے اسکا باپ جو کچھ دیوے وہی اسکی دولت ہے

हरेत्तत्रनियुक्तायांजातःपुत्रोयथौरसः॥क्षेत्रिकस्यतुतद्बीजं
धर्मतःप्रसवश्चसः॥१४५॥धनंयोबिभृयाद्भ्रातुर्मृतस्यस्त्रिय
मेवच॥सोऽपत्यंभ्रातुरुत्पाद्यदद्यात्तस्यैवतद्धनम्॥१४६॥
यानियुक्तान्यतःपुत्रंदेवराद्वाप्यवाप्नुयात्॥तंकामजमरि-
क्थीयंवृथोत्पन्नंप्रचक्षते॥१४७॥एतद्विधानंविज्ञेयंविभा-
गस्यैकयोनिषु॥बह्वीषुचैककजातानांनानास्त्रीषुनिबोध-
त॥१४८॥ब्राह्मणस्यानुपूर्व्येणचतस्रस्तुयदिस्त्रियः॥ता-
सांपुत्रेषुजातेषुविभागेऽयंविधिःस्मृतः॥१४९॥

۱۴۵ - جسطرح اورس بیٹا دولت کو لیتا ہے اُسی طرح جو لڑکا سسر وغیرہ کے حکم سے عورت نے پیدا کیا وہ بھی دولت کو لیوے کیونکہ وہ کشیتر والے کا بیج ہے اور اُسکی پیدائش دھرم سے ہے

۱۴۶ - برادر وفات یافتہ کی دولت اور جورو کو جو لیوے وہ اُس عورت میں بیٹا کرے اُسی بیٹے کو دولت دیوے -

۱۴۷ - عورت سسر وغیرہ کے حکم سے دیور خواہ سپنڈ یعنی رشتہ دار سے بیٹا پیدا کرے اور ایسا سمجھا جاوے کہ وہ بیٹا کام سے پیدا ہوا ہے تو دولت نہیں پاتا اور وہ بیفائدہ پیدا ہوا ہے یہ رشی لوگوں نے کہا ہے -

۱۴۸ - بہت سے ہمقوم عورتوں میں تقسیم حصص مطابق بیان مرقومہ بالا جانو اور مختلف اقوام کی بہت سی عورتوں میں ایک سے پیدا ہوئے سب بیٹوں کی تقسیم حصص آگے کہینگے -

۱۴۹ - سلسلہ سے چاروں ورن کی عورتیں جب برہمن کے گھر ہوں اور اُن عورتوں سے جو بیٹے پیدا ہوں اُنکی حصص کے تقسیم کو آگے کہیں گے -

* نارد رشی نے بغیر کام سے پیدا ہوئے بیٹا کی علامت یہ لکھی ہے کہ وقت جماع عورت کے منھ سے منھ نہ لگاوے اور نہ عضو سے عضو لگاوے صرف مقام مخصوص میں عضو مخصوص داخل کرنے سے جو بیٹا پیدا ہو وہ بیٹا پیدا ہونے کے لائق ہے اور کام سے پیدا نہیں ہے برخلاف اس طریق کے پیدا ہو وہ کام سے پیدا ہوا کہاتا ہے

मातुः प्रथमतः पिण्डं निर्वपेत्पुत्रिकासुतः ॥ द्वितीयन्तु पितु-
स्तस्यास्तृतीयं तत्पितुः पितुः ॥ १४० ॥ उपपन्नो गुणैः सर्वैः पुत्रो-
यस्य तु दत्त्रिमः ॥ स हरेतैव तद्रिक्थं संप्राप्तोऽप्यन्यगोत्रतः ॥
१४१ ॥ गोत्ररिक्थे जनयितुर्न हरेद्दत्त्रिमः क्वचित् ॥ गोत्ररिक्था-
नुगः पिण्डो व्यपैति ददतः स्वधा ॥ १४२ ॥ अनियुक्तासुतश्चैव
पुत्रिण्याप्तश्च देवरात् ॥ उभौ तौ नार्हतो भागं जारजातककाम-
जौ ॥ १४३ ॥ नियुक्तायामपि पुमान्नार्यां जातो विधानतः ॥
नैवार्हः पैतृकं रिक्थं पतितोत्पादितो हि सः ॥ १४४ ॥

۱۴۰- پُتر کا پہلا بیٹا پنڈ والدہ کو دیوے دوسرا پنڈ نانا کو تیسرا پنڈ باپ کو دیوے -
۱۴۱- دوسرے گوتر سے بھی لڑکا آیا ہوا اور ہمہ صفت موصوف ہو تو جسکا وہ متبنی ہوا ہے اسکی تمام دولت کو پاتا ہے -
۱۴۲- پیدا کرنیوالے کے گوتر اور دولت کو فرزند متبنی نہیں پاتا بلکہ جسکا متبنی ہوا ہے اُسکے گوتر اور دولت کو پاتا ہے اور اُسیکو پنڈ دیتا ہے جس سے پیدا ہوا ہے اسکو پنڈ نہیں دیتا -
۱۴۳- بیوہ عورت نے بدون حکم والدہ وغیرہ کے جو لڑکا دیور وغیرہ سے پیدا کیا اور کسی عورت نے بحالت عدم موجودگی فرزند باجازت سسر وغیرہ دیور وغیرہ سے لڑکا پیدا کیا یہ دونوں قسم کے لڑکے حصہ نہیں پاتے کیونکہ پہلا لڑکا دوسرے شوہر سے پیدا ہوا ہے
۱۴۴- درحالیکہ عورت سسر وغیرہ کے حکم کو پاکر خلاف طریق سے بیٹا پیدا کرے تو وہ بیٹا باپ کی دولت کو نہیں پاتا کیونکہ وہ پتت† سے پیدا ہوا ہے

† پتت اسکو کہتے ہیں کہ جو اپنی بدفعلی سے دھرم کے وجہ سے گر گیا ہے۔

पुत्रिकायांकृतायांतुयदिपुत्रोऽनुजायते ॥ समस्तत्र विभा-
गःस्याज्ज्येष्ठतानास्तिहिस्त्रियाः ॥ १३४ ॥ अपुत्रायांमृता-
यांतुपुत्रिकायांकथंचन ॥ धनंतत्पुत्रिकाभर्ताहरेतैवाविचा-
रयन् ॥ १३५ ॥ अकृतावाकृतावापियंविन्देत्सदृशात्सुतम् ॥
पौत्रीमातामहस्तेनदद्यात्पिण्डंहरेद्धनम् ॥ १३६ ॥ पुत्रेणलो-
कान्जयतिपौत्रेणानन्त्यमश्नुते ॥ अथपुत्रस्यपौत्रेणब्रध्न-
स्याप्नोतिविष्टपम् ॥ १३७ ॥ पुन्नाम्नोनरकाद्यस्मात्त्रायतेपित
रंसुतः ॥ तस्मात्पुत्रइतिप्रोक्तःस्वयमेवस्वयंभुवः ॥ १३८ ॥ पौ
त्रदौहित्रयोर्लोकेविशेषोनोपपद्यते ॥ दौहित्रोऽपिह्यमुत्रैनं
सन्तारयतिपौत्रवत् ॥ १३९ ॥

۱۳۴- لاولد آدمی کے اگر پترکا کرنے کے بعد یعنی لڑکی کو بجا فرزند قرار دینے کے بعد لڑکا پیدا ہو تو اس مقام پر اس لڑکے کے ساتھ بیٹی کا حصہ برابر ہونا ہی کیونکہ عورتوں کو بزرگی نہیں ہے اس سبب سے بزرگی کا حصہ نہ پاوے گی۔

۱۳۵- اگر پترکا سے لڑکا پیدا نہ ہوا اور پترکا مر جاوے تو اسکے مرنے کے بعد اسکی دولت کو اسکا شوہر لیوے اس میں کچھ بچار نہ کرے۔

۱۳۶- بیٹی کو بیٹا کرکے مانا ہو یا بیٹا نہ مانا ہو لیکن وہ بیٹی اپنے ہم قوم شوہر سے بیٹا پیدا کرے تو وہ بیٹا اپنے نانا لاولد کی دولت لیوے اور نانا کو پنڈ دیوے اسکی وجہ نواسا والا کہاتا ہے

۱۳۷- بیٹا کے وسیلہ سے اندرلوک وغیرہ کو فتح کرتا ہے اور پوتا کے وسیلے سے بے انتہا پھل کو پاتا ہے اور پوتا کے بیٹے کے وسیلے سے سورج لوک کو پاتا ہے

۱۳۸- پت نام دوزخ کا ہے اس سبب سے محافظ کے ہیں چونکہ بیٹا باپ کو دوزخ سے بچاتا ہے اس سبب سے پتر کہاتا ہے اس بات کو شری برھما جی نے کہا ہے۔

۱۳۹- دنیا میں پوتا اور ناتی دونوں برابر ہیں ناتی بھی نانا کو پرلوک میں مثل پوتا کی نجات دلاتا ہے

अनेनतुविधानेनपुराचक्रेऽथपुत्रिकाः॥ विवृद्ध्यर्थंस्ववंश-
स्यस्वयंदक्षःप्रजापतिः॥१२८॥ददौसदशधर्मायकश्यपायत्र
योदश॥ सोमायराज्ञेसत्कृत्यप्रीतात्मासप्तविंशतिम्॥१२९॥
यथैवात्मातथापुत्रःपुत्रेणदुहितासमा॥ तस्यामात्मनितिष्ठ
न्त्यांकथमन्योधनंहरेत्॥१३०॥ मातुस्तुयौतुकंयत्स्यात्कुमारी
भागएवसः॥ दौहित्रएवचहरेदपुत्रस्याखिलंधनम्॥१३१॥
दौहित्रोह्यखिलंरिक्थमपुत्रस्यपितुर्हरेत्॥सएवदद्याद्द्वौ-
पिण्डौपित्रेमातामहायच॥१३२॥पौत्रदौहित्रयोर्लोकेन-
विशेषोऽस्तिधर्मतः॥ तयोर्हिमातापितरौसंभूतौतस्यदेहतः
॥१३३॥

۱۲۸- اگلے زمانہ مین ترقی نسل کیواسطے دکش پرجاپت نے اسیطرح دختر کو بجاے فرزند کے مانا ہے-

۱۲۹- خوشی سے بہ تواضع تمام دکش پرجاپت نے دھرم کو دش کنیا اور کسیپ رشی کو تیرہ کنیا اور چندرمان کو ستائیس کنیا دین-

۱۳۰- جیسے اپنی آتما ہے ویسے بیٹا ہے اور بیٹا کے برابر کنیا ہے اسلئے آتما کے برابر کنیا ہونے پر کسطرح دوسرا آدمی دولت کو لیوے-

۱۳۱- بعد وفات والدہ کے اسکی یوتک نام دولت جسکا آگے بیان ہوگا اسکی کماری کنیا پاتی ہے اور جسکے بیٹا نہو اسکا سب دھن ناتی یعنے لڑکی کا لڑکا پاتا ہے-

۱۳۲- جو شخص بیٹا نرکھتا ہو اسکی تمام دولت ناتی پاوے اور وہ دو پنڈ دیوے ایک باپ کو اور ایک اپنے نانا کو-

۱۳۳- دنیا مین پوتا اور ناتی مین خصوصیت نہین ہے، دونون برابر ہین کیونکہ ایک کے والد کی اور ایک کے والدہ کی پیدایش ایک ہی سے ہے-

एकंवृषभमुद्धारंसंहरेतसपूर्वजः॥ ततोऽपरेज्येष्ठवृषास्तदू-
नानांस्वमातृतः॥१२३॥ज्येष्ठस्तुजातोज्येष्ठायांहरेद्वृषभषोड-
शा॥ ततःस्वमातृतःशेषाभजेरन्निति धारणा॥१२४॥सदृश-
स्त्रीषुजातानांपुत्राणामविशेषतः॥नमातृतोज्येष्ठमस्तिजन्म
तोज्येष्ठ्यमुच्यते॥१२५॥जन्मज्येष्ठेनचाह्वानंसुब्रह्मण्या-
स्वपिस्मृतम्॥ यमयोश्चैवगर्भेषुजन्मतोज्येष्ठतास्मृता॥१२६
॥ अपुत्रोऽनेनविधिनासुतांकुर्वीतपुत्रिकाम्॥ यदपत्यंभ-
वेदस्यांतन्ममस्यात्स्वधाकरम्॥१२७॥

۱۲۳- پہلی شادی سے جو لڑکا پیچھے پیدا ہوا ہو وہ ایک اچھا بیل اور دھار لیوے اور بھائی اس سے پیچھے بیل سے چھوٹا بیل اور دھار لیویں والدہ کی شادی کے سلسلہ سے بزرگی لڑکے کی جاننا چاہیے

۱۲۴- بڑی عورت میں پہلے لڑکا پیدا ہوا ہو تو پندرہ گئو اور ایک بیل لیوے اسکے بعد چھوٹی عورت میں جو لڑکے پیدا ہوئے ہیں وہ اپنی والدہ کی شادی کے سلسلہ سے بزرگی کو پا کر یقیناً باقی ماندہ گئوؤں کا حصہ لیویں۔

۱۲۵- اپنی ذات کی عورت سے جتنے لڑکے پیدا ہوئے ہیں انھوں میں والدہ کی شادی کے حساب سے بزرگی نہیں ہے بلکہ پیدائش کے حساب سے بزرگی ہے۔

۱۲۶- ایسا نہیں کہ صرف تقسیم حصص میں پیدائش سے بزرگی ہو بلکہ جو تشوم یگیہ میں اندر کے بلانے کیواسطے سوبرہمنی نام منتر پہلے پیدا ہوئے لڑکے کے نام سے کہا جاتا ہے کہ فلانی لڑکے کا باپ یگیہ کرتا ہے ایسا شبوں میں کہا اور جو دو لڑکے ساتھ ہی پیدا ہوئے ہیں اس مقام پر اگرچہ پیدائش حمل میں پہلے نطفہ سے پیچھے پیدا ہوگا اور پچھلے نطفہ سے پہلے پیدا ہوگا تاہم جو پہلے پیدا ہوگا وہی بڑا کہاویگا۔

۱۲۷- کنیا دان کے وقت داماد سے ایسی صلاح کرے کہ ہمارے گھر میں بیٹا نہیں ہے، اس بیٹی سے جو پہلے پیدا ہوگا وہ ہمارا شرادھ کرم کرنیوالا ہو اسطرح دختر کو بجائے فرزند قرار دے۔

एकाधिकंहरेज्ज्येष्ठः पुत्रोऽध्यर्द्धंततोऽनुजः ॥ अंशमंशंयवी
यांसइतिधर्मोव्यवस्थितः ॥ ११७ ॥ स्वेभ्योंऽशेभ्यस्तुकन्याभ्यः
प्रदद्युर्भ्रातरः पृथक् ॥ स्वात्स्वादंशाच्चतुर्भागंपतिताःस्युरदि-
त्सवः ॥ ११८ ॥ अजाविकंसैकशफंनजातुविषमंभजेत् ॥ अ-
जाविकन्तु विषमंज्येष्ठस्यैव विधीयते ॥ ११९ ॥ यवीयान्ज्ये-
ष्ठभार्यायांपुत्रमुत्पादयेद्यदि ॥ समस्तत्र विभागःस्यादिति ध-
र्मोव्यवस्थितः ॥ १२० ॥ उपसर्जनंप्रधानस्य धर्मतोनोपपद्यते
॥ पिताप्रधानंप्रजनेतस्माद्धर्मेणतंभजेत् ॥ १२१ ॥ पुत्रःकनि-
ष्ठोज्येष्ठायांकनिष्ठायांचपूर्वजः ॥ कथंतत्रविभागःस्यादिति
चेत्संशयोभवेत् ॥ १२२ ॥

۱۱۷- بڑا بھائی دو حصّہ لیوے اُس سے چھوٹا ڈیڑھ حصّہ لیوے سب سے چھوٹا ایک حصہ لیوے۔ یہ دھرم کی بیوستھا ہے۔

۱۱۸- سب بھائی علیحدہ علیحدہ اپنے اپنے حصّہ میں چوتھا حصہ ہمشیرہ کو دیویں نہ دیں تو پتت ہوتے ہیں

۱۱۹- بکری و بھیڑ و ایک کھر والے (یعنی گھوڑا وغیرہ) یہ سب طاق ہوں (یعنی چار بھائی اور پانچ گھوڑے ہوں) تو طاق کا حصہ نکرنا چاہئے جو باقی ہے وہ بڑا لیوے۔

۱۲۰- چھوٹا بھائی بڑے بھائی کی زوجہ میں بیٹا پیدا کرے تو اُس بیٹا کے ساتھ چاچا لوگ برابر تقسیم حصّہ کریں اُس بیٹے کو بڑے بھائی کے برابر حصّہ نہ دیویں دھرم بیوستھا ہے۔

۱۲۱- افضل کو غیر افضل کرنا دھرم کے خلاف ہے پیدایش میں والد افضل ہے اسلیئے دھرم سے والد کی خدمتگذاری کرے

۱۲۲- ایک کے دو زوجہ ہیں اور چھوٹی زوجہ سے لڑکا پہلے پیدا ہوا اور بڑی زوجہ کے پیچھے ہوا اُس مقام پر تقسیم حصہ کسطرح کرنا چاہئے ایسی حالت میں مشتبہ ہیں تصفیہ کرنے کو اشلوک آیندہ میں کہینگے

ज्येष्ठस्यविंशउद्धारःसर्वद्रव्याच्चयद्वरम्॥ ततोर्द्धंमध्यमस्या-
स्यात्तुरीयंतुयवीयसः॥ ११२॥ ज्येष्ठश्चैवकनिष्ठश्चसंहरेतांय-
थोदितम्॥ येऽन्येज्येष्ठकनिष्ठाभ्यांतेषांस्यान्मध्यमंधनम्॥
११३॥ सर्वेषांधनजातानामाददीताग्र्यमग्रजः॥ यच्चसातिश-
यंकिंचिद्दशतश्चाप्नुयाद्वरम्॥ ११४॥ उद्धारोनदशस्वस्तिसं-
पन्नानांस्वकर्मसु॥ यत्किंचिदेवदेयन्तुज्यायसेमानवर्द्धनम्॥
११५॥ एवंसमुद्धृतोद्धारेसमानंशान्प्रकल्पयेत्॥ उद्धारेऽनुद्धृ-
तेत्वेषामियंस्यादंशकल्पना॥ ११६॥

۱۱۲- تمام چیزون مین افضل چیزین اور بیسوان حصہ بڑے بیٹے کو دیا جاے اور منجھلے کو چالیسوان حصہ اور چھوٹے کو اسّی وان حصہ دیگر جو باقی رہے اسکو برابر حصہ کرکے اور سب لیوین

۱۱۳- بڑے اور چھوٹے کو جیسا کہا ہے ویسا ہی دینا اور منجھلے بھائی کو دولت بھی اوسط قسم کی دینا چاہیئے

۱۱۴- تمام دولت مین جو دولت افضل ہے اور ہر قسم دولت مین جو دولت افضل ہو اور گئو وغیرہ جو چارپایہ مین انمین سے منجملہ دس چارپایہ کے ایک چارپایہ یہ ان تینون چیزونکو بڑا بھائی لیوے لیکن اس قسم کی تقسیم کو اسوقت جاننا جبکہ بڑا بھائی صاحب صفت ہو اور سب بھائی بے صفت ہون-

۱۱۵- سب بھائی اپنے کرم مین مصروف ہون تو جو تقسیم اوپر کہہ آئے ہون وہ کرنا بلکہ بڑے کی تعظیم قایم رکھنے کیواسطے کچھ ایک چھوٹی چیز دینا-

۱۱۶- اسطرح بڑے بیٹے کو اودھار تمام حصہ دیگر باقی ماندہ اشیاء کو برابر حصہ کرنا اور حصہ نکود نہ ہووے تو آگے جو حصہ مقرر کرینگے وہ کرے-

* شرح ۲۰ و ۴۰ و ۵۰ - ان سب عددون مین سے صفر دور کیا جا تب تقسیم حصص ہوگی-

ज्येष्ठेन जातमात्रेण पुत्री भवति मानवः॥ पितॄणामनृणश्चैव
स तस्मात्सर्वमर्हति॥१०६॥ यस्मिन्नृणं संनयति येन चानन्त्य
मश्नुते॥ स एव धर्म्मजः पुत्रः कामजानितरान्विदुः॥ १०७॥ पि-
तेव पालयेत्पुत्रान्ज्येष्ठो भ्रातॄन्यवीयसः॥ पुत्रवच्चापि वर्त्तेर-
न्ज्येष्ठे भ्रातरि धर्म्मतः॥ १०८॥ ज्येष्ठः कुलं वर्द्धयति विनाश
यति वा पुनः॥ ज्येष्ठः पूज्यतमो लोके ज्येष्ठः सद्भिरगर्हितः १०९
॥ यो ज्येष्ठो ज्येष्ठवृत्तिः स्यान्मातेव स पितेव सः॥ अज्येष्ठवृत्ति
र्यस्तु स्यात्स संपूज्यस्तु बन्धुवत्॥ ११०॥ एवं सह वसेयुर्वा पृथ-
ग्वा धर्म्मकाम्यया॥ पृथग्विवर्द्धते धर्मस्तस्माद्धर्म्या पृथक्क्रि-
या॥ १११॥

۱۰۶- بڑے بیٹے کے پیدا ہونیسے آدمی صاحب اولاد کہلاتا ہے اور پتر ونکے قرضہ سے
چھوٹ جاتا ہے اسلیئے بڑا بیٹا سب دولت لینے کے لائق ہوتا ہے-

۱۰۷- جسکے پیدا ہونے سے باپ قرضہ سے ادا ہو جاتا ہے اور مکت پاتا ہے وہی بیٹا دھرم سے
پیدا ہوا ہے- اور سب کام سے پیدا ہوئے ہین رشیون نے کہا ہے-

۱۰۸- باپ کی طرح بڑا بیٹا سب بھائیون کی حفاظت کرے اور بڑے بھائی کے پاس چھوٹے
بھائی بیٹے کی طرح رہین-

۱۰۹- بڑا بیٹا ہی خاندان کو ترقی دیتا ہے اور نیست نابود بھی کرتا ہے اور دنیا مین بڑی تعظیم
کے لائق ہے اچھے لوگون نے اسکی برائی نہین کی ہے -

۱۱۰- جو بزرگی اختیار کرتا ہے وہ مان باپ کے برابر ہے اور جو بزرگی نہین اختیار کرتا ہے وہ مثل
بھائی کے قابل تعظیم ہے-

۱۱۱- اس طریق سے سب شامل ہو کر رہین یا دھرم کرنیکی خواہش سے علیحدہ رہین چونکہ علیحدہ
رہنے سے دھرم ترقی پاتا ہے اسلیئے علیحدہ رہنا دھرم سے شامل ہے-

नानुशुश्रुमजात्वेतत्पूर्वेष्वपिहिजन्मसु॥ शुल्कसंज्ञेनमूल्ये-
नछन्नंदुहितृविक्रयम्॥ १००॥ अन्योन्यस्याव्यभिचारोभवे-
दामरणान्तिकः॥ एषधर्मःसमासेनज्ञेयःस्त्रीपुंसयोःपरः॥
१०१॥ तथानित्यंयतेयातांस्त्रीपुंसौतुकृतक्रियौ॥ यथाना-
भिचरेतान्तौवियुक्तावितरेतरम्॥ १०२॥ एषस्त्रीपुंसयोरुक्तो
धर्म्मोवोरतिसंहितः॥ आपद्यपत्यप्राप्तिश्चदायभागंनिबोध
त॥ १०३॥ ऊर्ध्वंपितुश्चमातुश्चसमेत्यभ्रातरःसमम्॥ भजेर-
न्पैतृकंरिक्थमनीशास्तेहिजीवतोः॥ १०४॥ ज्येष्ठएवतुगृह्णी-
यात्पित्र्यंधनमशेषतः॥ शेषास्तमुपजीवेयुर्यथैवपितरन्त-
था॥ १०५॥

۱۰۰- معاوضہ لیکر پوشیدہ کنیا کا بیچنا پہلے جنم مین بھی نہین سُنا-
۱۰۱- مرتے دم تک دونون کی جدائی نہو یہ مجملاً پرم دھرم استری پرش کا جاننا-
۱۰۲- استری پرش ایسی تدبیرون سے زندگی بسر کرین کہ جس سے باہم جدائی نہو-
۱۰۳- استری پرش کا دھرم مع محبّت باہمی کے بیان کیا اور وقت مصیبت مین اولاد کے حاصل کرنے کو بھی بیان کیا اب اسکے بعد تقسیم حصص کو بھی بیان کرتے ہین-
۱۰۴- مان باپ کے مرنے کے بعد سب ملکر مان باپ کی دولت کے برابر حصّہ کرین بحالت زندگانی والدین سب لڑکے بمنزلہ نابالغ کے ہین-
۱۰۵- مان باپ کی تمام دولت کو بڑا بیٹا ہی لیوے اور چھوٹا اور منجھلا بھائی سب بڑے بھائی سے اوقات گذاری کرین جس طرح والد سے پرورش پاتے تھے-

त्रिंशद्वर्षोद्वहेत्कन्यांहृद्यांद्वादशवार्षिकीम् ॥ त्र्यष्टवर्षोऽष्ट-
वर्षांवाधर्मेसीदतिसत्वरः ॥ ९४ ॥ देवदत्तांपतिर्भार्य्यांविन्दते
नेच्छयात्मनः ॥ तांसाध्वींबिभृयान्नित्यंदेवानांप्रियमाचरन् ॥
९५ ॥ प्रजनार्थंस्त्रियःसृष्टाःसन्तानार्थंचमानवाः ॥ तस्मात्साधा-
रणोधर्म्मःश्रुतौपत्न्यासहोदितः ॥ ९६ ॥ कन्यायांदत्तशुल्का-
यांम्रियेतयदिशुल्कदः ॥ देवरायप्रदातव्यायदिकन्यानुमन्य-
ते ॥ ९७ ॥ आददीतनशूद्रोऽपिशुल्कंदुहितरंददन् ॥ शुल्कं-
हिगृह्णन्कुरुतेछन्नंदुहितृविक्रयम् ॥ ९८ ॥ एतत्तुनपरेचक्रु-
र्नापरेजातुमानवाः ॥ यदन्यस्यप्रतिज्ञायपुनरन्यस्यदीयते
॥ ९९ ॥

۹۴ - تیس برس کی عمر کا لڑکا اور بارہ برس کی دختر لخت جگر کا وواہ کرے یا چوبیس برس کا لڑکا اور آٹھ برس کی لڑکی کا وواہ کرے یہ مناسب وقت دکھایا ہے نیم نہیں ہے، اتنی مدت میں وید پڑھ سکتا ہے اسکے بعد گرہستھ آشرم میں آنہیں دیر نکرے۔

۹۵ - دیوتاؤں کی دی ہوئی کنیا کو شوہر پاتا ہے اپنی خواہش سے نہیں اسلئے دیوتاؤں کی پوجن کرتا ہوا اُس نیک چلن عورت کی ہر روز پرورش کرے۔

۹۶ - حمل رہنے کیواسطے عورت کو اور حمل قائم کرنے کیواسطے مرد کو پیدا کیا اسلئے وید میں استری پرش کا سادھارن دھرم ہے یعنے زوجہ کے ساتھ ہی شوہر اگنی ہوتر وغیرہ کرم کرے

۹۷ - کنیا کا معاوضہ دیکر معاوضہ دینے والا مرجاے تو اسکے بھائی کے ساتھ اُس کنیا کا وواہ کرے بشرطیکہ وہ کنیا منظور کرے۔

۹۸ - شودر بھی کنیا کو دیکر معاوضہ نہ لیوے اسکے لینے سے کنیا کا پوشیدہ بیچنے والا کہاتا ہے

۹۹ - ایک کو کہکر دوسرے کو دینا اس بات کو کسی چھوٹے بڑے نے کبھی نہیں کیا۔

काममामरणात्तिष्ठेद्गृहेकन्यर्तुमत्यपि॥ नचैवैनांप्रयच्छेत्तुगु-
णहीनायकर्हिचित्॥ ८९॥ त्रीणिवर्षाण्युदीक्षेतकुमा-
र्यृतुमतीसती॥ ऊर्ध्वंतुकालादेतस्माद्विन्देतसदृशंपतिम्॥
९०॥ अदीयमानाभर्त्तारमधिगच्छेद्यदिस्वयम्॥ नैनःकिं-
चिदवाप्नोतिनचयंसाधिगच्छति॥ ९१॥ अलंकारंनाददीत
पित्र्यंकन्यास्वयंवरा॥ मातृकंभ्रातृदत्तंवास्तेनास्याद्यदितं
हरेत्॥ ९२॥ पित्रेनदद्याच्छुल्कंतुकन्यामृतुमतींहरन्॥ सहि
स्वाम्यादतिक्रामेदृतूनांप्रतिरोधनात्॥ ९३॥

۸۹ - کنیا باحیض ہوکر بھی تا زیست گھر میں رہے مگر اس کنیا کو کبھی بے ہُنر آدمی کو نہ دیوے۔

۹۰ - تین برس تک باحیض کنیا اچھے شوہر کی امید میں رہے اسکے بعد اپنے ہی موافق شوہر حاصل کرے۔

۹۱ - والد وغیرہ شادی نہیں کرتے اور کنیا آپ سے بر قبول کرے تو اُس کنیا کو اور بر کو عیب نہیں ہے۔

۹۲ - اپنی طرف سے شوہر کو قبول کرنیوالی دختر کے ماں باپ بھائی وغیرہ کے دیئے ہوئے زیور وغیرہ کو نہ لیوے اگر لیوے تو چور کہاتی ہے۔

۹۳ - باحیض دختر سے شادی کرنیوالا شوہر دختر کے باپ کو کچھ شلک (یعنی معاوضہ) نہ دیوے۔ کیونکہ اولاد بدیر پیدا ہونیکی وجہ سے باپ کی ملکیت قایم نہیں رہتی۔

+ یعنے اگر پہلے ہی سے شادی ہوتی تو بعد فراغت حیض کے حمل قایم ہو جاتا پس بسبب دیری شادی کے حمل نہ رہیگا اسوجہ سے باپ کی ملکیت جاتی رہی۔

अधिविन्ना तु या नारी निर्गच्छेद्रुषिता गृहात्॥ सा सद्यः सन्नि-
रोद्धव्या त्याज्या वा कुलसन्निधौ॥ ८३॥ प्रतिषिद्धापि चेद्या तु
मद्यमभ्युदयेष्वपि॥ प्रेक्षासमाजं गच्छेद्वा सा दण्ड्या कृष्ण-
लानि षट्॥ ८४॥ यदि स्वाश्चापराश्चैव विन्देरन्योषितो द्विजाः
॥ तासां वर्णक्रमेण स्याज्ज्यैष्ठ्यं पूजा च वेश्म च॥ ८५॥ भर्तुः
शरीरशुश्रूषां धर्मकार्यं च नैत्यकम्॥ स्वा चैव कुर्यात्सर्वेषां ना-
स्वजातिः कथंचन॥ ८६॥ यस्तु तत्कारयेन्मोहात्सजात्या स्थि-
तयान्यया॥ यथा ब्राह्मणचाण्डालः पूर्वदृष्टस्तथैव सः॥ ८७
॥ उत्कृष्टायाभिरूपाय वराय सदृशाय च॥ अप्राप्तामपि तां
तस्मै कन्यां दद्याद्यथाविधि॥ ८८॥

۸۳- جس عورت کے اوپر دوسرا ویواہ شوہر نے کیا اور وہ عورت غصہ ہو کر گھر سے نکلی جاتی ہو
تو اسکو روک کر گھر میں رکھنا خواہ خاندان کے روبرو ترک کرنا چاہیے۔
۸۴- کشتری وغیرہ کی زوجہ شوہر وغیرہ سے محفوظ ہو اور شادی وغیرہ کاموں میں بھی ممنوع
شراب کو پیوے یا ناچ رنگ کے جلسہ عام میں چلی جاے تو چھ رتی سونا ڈنڈ دیوے۔
۸۵- برہمن کشتری ویشیہ یہ سب اپنے ورن کی اور دوسرے ورن کی عورتوں سے شادی کریں
تو ان عورتوں کے درجہ کی بڑائی اور پوجا اور گھر یہ سب بلحاظ سلسلہ ورن کے مقدم سمجھے ہیں
۸۶- سب ورنوں میں جو اپنے ورن کی استری ہیں وہی شوہر کے ذاتی و جسمی کام و قدیم دھرم
کا کام کریں دوسرے ورن کی استری نکریں۔
۸۷- جو شخص بحالت ہوتے اپنی ذات کی عورت کے ان دونوں کاموں کو موہ سے دوسری ذات کی عورت
سے کراتا ہے تو جیسا برہمنی میں شودر سے چانڈال پیدا ہوا ویسا ہی وہ ہے یہ رشیوں نے کہا ہے۔
۸۸- اپنے کل میں بہت اچھا اچار اور خوبصورت اور ہمقوم لڑکا ملے تب لڑکی چھوٹی بھی ہو
(یعنے ویواہ کے لائق نہو) تو بھی اسکا ویواہ شاستر کے موافق کر دینا چاہیے۔

अतिक्रामेत्प्रमत्तंयामत्तंरोगार्तमेववा ॥ सात्रीन्मासान्परि-
त्याज्याविभूषणपरिच्छदा ॥७८॥ उन्मत्तंपतितंक्लीबमबीजं
पापरोगिणम्॥ नत्यागोऽस्तिद्विषंत्याश्चनचदायापवर्त्तनम्
॥७९॥ मद्यपासाधुवृत्ताचप्रतिकूलाचयाभवेत्॥ व्याधिता
वाधिवेत्तव्याहिंस्राऽर्थघ्नीचसर्वदा ॥८०॥ वन्ध्याष्टमेऽधिवे
द्याब्देदशमेतुमृतप्रजा ॥ एकादशेस्त्रीजननीसद्यस्त्वप्रिय-
वादिनी ॥८१॥ यारोगिणीस्यात्तुहितासम्पन्नाचैवशीलतः
॥सानुज्ञाप्याधिवेत्तव्यानावमन्याचकर्हिचित्॥ ८२॥

۷۸- قمارباز و نشہ باز و مریض شوہر کی بے تعظیمی جو عورت کرتی ہے اُسکو تین مہینہ تک زیور اور کپڑا نہ دینا چاہیئے۔

۷۹- اُنمت اور اپنے ورن کے دھرم کو ترک کرنیوالا و مخنث و کسی بیماری کی وجہ سے نطفہ نہ رکھنے والا و پاپ روگی ایسے شوہر سے فساد کرنیوالی عورت کو ترک کرنا مگر اُسکی دولت نہ لینا۔

۸۰- شراب پینے والی اور سادھون کی سیوا نکرنیوالی اور دشمنی کرنیوالی اور بیماریوں سے بھری ہوئی اور گھات کرنیوالی اور ہر روز دولت کو بینسٹ و نابود کرنیوالی عورت ہو تو دوسرا وواہ کرنا چاہیئے

۸۱- بانجھ عورت اور جسکی اولاد نہ جیتی ہو اور جو صرف دختر ہی پیدا کرتی ہو ایسی عورت ہونے پر حسب سلسلہ آٹھویں دسویں گیارھویں سال سے دوسرا وواہ کرنا چاہیئے اور بد زبان عورت کے اوپر تو فوراً دوسرا وواہ کرنا چاہیئے۔

۸۲- جو عورت مریض ہو لیکن خیر خواہ اور بامروت ہو تو اُسکی اجازت سے دوسرا وواہ کرنا چاہیئے مگر اوسکی بے قدری ہرگز نہ کرنا چاہیئے۔

विधायवृत्तिंभार्यायाः प्रवसेत्कार्यवान्नरः॥ अवृत्तिकार्षि-
ताहिस्त्रीप्रदुष्येत्स्थितिमत्यपि॥७४॥ विधायप्रोषितेवृत्तिं
जीवेन्नियममास्थिता॥ प्रोषितेत्वविधायैवजीवेच्छिल्पैर-
गर्हितैः॥७५॥ प्रोषितोधर्मकार्यार्थंप्रतीक्ष्योऽष्टौनरस्समाः
॥ विद्यार्थंषड्यशोर्थंवाकामार्थंत्रींस्तुवत्सरान्॥७६॥ संव-
त्सरंप्रतीक्षेतद्विषंतींयोषितंपतिः॥ ऊर्ध्वंसंवत्सरात्त्वेनांदा-
यंहृत्वानसंवसेत्॥७७॥

۷۴- اہل مطلب سفر کرنے سے پہلے عورت کے کھانے پینے کا بندوبست کر دے تب پردیش کو جاوے کیونکہ بھوکھ کی شدت سے حیادار عورت بھی دوسرے مرد کی خواہش کریگی۔

۷۵- کھانے پینے کا انتظام کرکے پردیش جانے کے بعد اوسکی زوجہ نیم سے رہکر زندگی بسر کرے۔ اور بدون انتظام خورد و نوش کے شوہر کے سفر کرنے مین سوت کاتنے سے یا اور لائق تعریف دستکاریوں سے اوقات گذاری کرے۔

۷۶- دھرم کاج کرنے کے واسطے عورت پردیش گئے ہوئے شوہر کے حکم کی تعمیل آٹھ برس تک کرے اور اودیا پڑھنے کیواسطے پردیس گئے ہوئے شوہر کے حکم کی تعمیل چھہ برس تک کرے اور روزگار ادیش کیواسطے پردیش گئے ہوئے شوہر کے حکم کی تعمیل تین برس تک کرے۔

۷۷- مرد ایک سال تک لڑائی جھگڑا فساد کرنے والی عورت کا انتظار کرے اوسکے بعد بھی اگر لڑائی جھگڑا فساد کرتی رہے تو زیور وغیرہ جو دھن دیا ہے اسکو واپس لیکر اسکے ساتھ جماع ترک کرے مگر کھانا کپڑا دیئے جاوے۔

* اسکے بعد کیا کرنا چاہیئے اسکا بیان نارد سمرت مین ہے جو اقوال منجی کے مشرح اور اس موقع پر بھی ہے اسکے اشلوک کو ملاکر اوسکو پڑھنا چاہیئے۔

यस्या म्रियेत कन्याया वाचा सत्ये कृते पतिः ॥ तामनेन वि-
धानेन निजो विन्देत देवरः ॥ ६९ ॥ यथा विध्यधिगम्यैनां शु-
क्लवस्त्रां शुचिव्रताम् ॥ मिथो भजेताप्रसवात्सकृत्सकृदृता-
वृतौ ॥ ७० ॥ न दत्त्वा कस्यचित्कन्यां पुनर्दद्याद्विचक्षणः ॥ दत्त्वा
पुनः प्रयच्छन्हि प्राप्नोति पुरुषानृतम् ॥ ७१ ॥ विधिवत्प्रतिगृ-
ह्यापि त्यजेत्कन्यां विगर्हिताम् ॥ व्याधितां विप्रदुष्टां वा छद्म-
ना चोपपादिताम् ॥ ७२ ॥ यस्तु दोषवतीं कन्यामनाख्यायो-
पपादयेत् ॥ तस्य तद्वितथं कुर्यात्कन्यादातुर्दुरात्मनः ॥ ७३

۶۹- بیوہ عورت مین بیٹے کی پیدایش وعدم پیدایش کو بیان کیا اب اُسکی دوسری کیفیت بیان کرتے ہین کہ جب دختر کو کسی کو زبان سے دینے کو کہہ چکے اور وہ شخص جسکو دینے کو کہا قبل شادی ہونیکے مرگیا تو اسکا برادر حقیقی اُس دختر کی شادی مطابق طریقہ مندرجہ ذیل کے کرے۔

۷۰- پاکی سے برت کرنیوالی سفید کپڑے پہنے ہوئے کنیا کا وِواہ شاستر کی ریت سے کرکے بعد فراغت حیض حمل رہنے والی راتون مین ایک ایک بار حمل رہنے تک اُس سے جماع کرے اُس سے جو اولاد ہوگی وہ اُسکی ہوگی جسکو وہ دختر زبانی اقرار پر پہلے دیگئی تھی۔

۷۱- عقلمند آدمی ایک شخص کو کنیا دیکر پھر اُس کنیا کو دوسرے کو نہ دیوے اگر دیوے تو ہزار آدمی کے قتل کے برابر عذاب ہوتا ہے سات قدم پھرنے سے پہلے عورت کے دھرم کی پیدایش نہین ہوتی تب دوسرے کو دینے کی سنسکار ہوئی اسلیے اُس بچن کو کہا۔

۷۲- نفرین کے لایق اور آفت آمیز اور مکار اور سخت عورت کو شاستر کے طریق سے وواہ کرکے ترک کرنا چاہیئے۔

۷۳- عیب دار کنیا کا عیب نہ کہکر اسکے دینے والے دُراتما کا کنیادان بے فایدہ ہے۔

नान्यस्मिन्विधवानारीनियोक्तव्याद्विजातिभिः॥ अन्यस्मिन्हि नियुंजानांधर्मंहन्युःसनातनम्॥ ६४॥ नोद्वाहिकेषुमंत्रेषुनियोगःकीर्त्यतेक्वचित्॥ नविवाहविधावुक्तंविधवावेदनंपुनः॥ ६५॥ अयंद्विजैर्हिविद्वद्भिःपशुधर्मोविगर्हितः॥ मनुष्याणामपिप्रोक्तोवेनेराज्यंप्रशासति॥ ६६॥ समहीमखिलांभुंजन्राजर्षिप्रवरःपुरा॥ वर्णानांसंकरंचक्रेकामोपहतचेतनः॥ ६७॥ ततःप्रभृतियोमोहात्प्रमीतपतिकांस्त्रियम्॥ नियोजयत्यपत्यार्थंतंविगर्हन्तिसाधवः॥ ६८॥

۶۴ - اب بیٹا پیدا کرنے کیواسطے والد وغیرہ کے حکم کی ممانعت لکھتے ہین کہ براہمن وکشتری و ویش تینون - ورن بیوہ عورت مین بیٹا پیدا کرنیکے واسطے حکم نہ دیوین کیونکہ حکم دینے سے قدیم دھرم ناش ہوتا ہے -

۶۵ - وِواہ کے منتر مین ایسا حکم کہین نہین لکھا ہے اور بیوہ عورت کے ساتھ جماع نہین لکھا ہے -

۶۶ - راجہ بین کی راج مین اِس پشو دھرم کو آدمیونکے واسطے راجہ بین نے کہا اُسکو پنڈت براہمنون نے بُرا کہا -

۶۷ - زمانہ قدیم مین راج رشیون سے افضل راجہ بین نے (جسکی عقل غلبہ کام دیو سے خراب ہو گئی تھی) تمام زمین کا مالک ہوکر ورنون کا سنکر (یعنے ملانا) کیا -

۶۸ - اُس دن سے مُوہ کرکے اولاد کی خواہش سے بیوہ عورت سے جماع کو جو حکم دیتا ہے اُسکی بُرائی ساد ھو لوگ کرتے ہین -

देवराद्वासपिण्डाद्वास्त्रियासम्यङ्नियुक्तया॥प्रजेप्सिताधि
गन्तव्यासन्तानस्यपरिक्षये॥५९॥विधवायांनियुक्तस्तुघृता
क्तोवाग्यतोनिशि॥एकमुत्पादयेत्पुत्रंनद्वितीयंकथंचन॥
६०॥द्वितीयमेकेप्रजनंमन्यन्तेस्त्रीषुतद्विदः॥अनिर्वृत्तंनियो-
गार्थंपश्यन्तोधर्मतस्तयोः॥६१॥विधवायांनियोगार्थेनिर्वृ-
त्तेतुयथाविधि॥गुरुवच्चस्नुषावच्चवर्तेयातांपरस्परम्॥६२
॥नियुक्तौयौविधिंहित्वावर्तेयातांतुकामतः॥तावुभौप-
तितौस्यातांस्नुषागगुरुतल्पगौ॥६३॥

۵۹ - اولاد کے نہ ہونے میں سسر وغیرہ کے حکم کو پاکر عورت رشتہ دار سے پنڈ یا دیور سے اولاد دلخواہ حاصل کرے -

۶۰ - والد کا حکم پاکر بدن میں گھی لگاکر خاموش ہوکر بیوہ عورت میں لڑکا پیدا کرے سوائے ایک لڑکے کے دوسرا لڑکا کبھی نہ پیدا کرے -

۶۱ - ایک بیٹا ہونا اور بے اولاد ہونا دونوں برابر ہیں بڑے لوگوں کی ایسی بحث سے اور والد وغیرہ کے حکم سے جو بیٹا پیدا ہو اس سے مطلب حاصل نہ ہوا ایسا ماننے والے اور والد وغیرہ کے حکم سے بیٹا پیدا ہونے کے طریق کو جاننے والے جو دوسرا چاہتے ہیں وہ بیوہ عورت میں دوسرے بیٹے کی پیدائش کو بھی دھرم سے مانتے ہیں -

۶۲ - جب حمل پیدا ہوچکا تب بڑا بھائی مانند گرو کے اور چھوٹے بھائی کی زوجہ مانند بہو کے دونوں باہم رہیں مگر یہ بات کو اس وقت جاننا جب چھوٹے بھائی کی زوجہ میں والد وغیرہ کا حکم ہوا ہو -

۶۳ - والد وغیرہ کے حکم کو پاکر اور طریق کو چھوڑکر خواہش سے بڑا بھائی چھوٹے بھائی کی زوجہ سے یا چھوٹا بھائی بڑے بھائی کی زوجہ سے جماع کریں تو دونوں اپنے ورن و آشرم کے درجے سے گر جاتے ہیں بڑا بھائی بہو سے جماع کرنے والا کہلاتا ہے اور چھوٹا بھائی گرو پتنی سے جماع کرنے والا کہلاتا ہے -

क्रियाभ्युपगमात्त्वेतद्बीजार्थंयत्प्रदीयते ॥ तस्येहभागिनौदृष्टौ
बीजीक्षेत्रिकएवच ॥ ५३ ॥ ओघवाताहृतंबीजंयस्यक्षेत्रेप्ररो
हति ॥ क्षेत्रिकस्यैवतद्बीजंनवप्तालभतेफलम् ॥ ५४ ॥ एष
धर्मोगवाश्वस्यदास्युष्ट्राजाविकस्यच ॥ विहंगमहिषीणांच
विज्ञेयःप्रसवंप्रति ॥ ५५ ॥ एतद्वःसारफल्गुत्वंबीजयोन्योःप्र-
कीर्त्तितम् ॥ अतःपरंप्रवक्ष्यामियोषितांधर्ममापदि ॥ ५६
॥ भ्रातुर्ज्येष्ठस्यभार्यायागुरुपत्न्यनुजस्यसा ॥ यवीयसस्तुया
भार्यास्नुषाज्येष्ठस्यसास्मृता ॥ ५७ ॥ ज्येष्ठोयवीयसोभार्यां
यवीयान्वाग्रजस्त्रियम् ॥ पतितौभवतोगत्वानियुक्ताव
प्यनापदि ॥ ५८ ॥

۵۳ - اِس عورت مین جو پیدا ہو وہ ہمارا اور تمھارا دونون کا ہووے ایسا دلمین رکھکر جو پیدا کیا اوسکا حصہ دار تخم والا اور کھیت والا دونون ہوتے ہین۔

۵۴ - تخم ہوا سے اوڑکر جسکے کھیت مین پڑا اسکا پھل کھیت والاہی پاتا ہے صاحب تخم نہین پاتا۔

۵۵ - گئو۔ گھوڑا۔ اونٹ بکری بھیڑ پرند بھینس واسی انھون کی پیدائش مین اسی دھرم کو جاننا

۵۶ - بھرگ جی کہتے ہین کہ آپ لوگون سے تخم و ظرف کی فضیلت وغیرہ فضیلت کو کہا اسکے بعد وقت مصیبت مین عورتون کا دھرم کہتے ہین۔

۵۷ - بڑے بھائی کی زوجہ چھوٹے بھائی کی گرو پتنی کہاتی ہے اور چھوٹے بھائی کی زوجہ بڑے بھائی کی پتوہو کہلاتی ہے۔

۵۸ - وقت مصیبت نہو اور اولاد وغیرہ کا حکم بھی ہو لیکن بڑے بھائی کی زوجہ سے چھوٹا بھائی اور چھوٹے بھائی کی زوجہ سے بڑا بھائی جماع کرے تو دونون پتت ہوتے ہین یعنی ورن و آشرم کے درجے سے گرجاتے ہین

सकृदंशोनिपततिसकृत्कन्याप्रदीयते॥सकृदाहददानीति
त्रीण्येतानिसतांसकृत्॥४७॥यथागोऽश्वोष्ट्रदासीषुमहि-
ष्यजाविकासुच॥नोत्पादकःप्रजाभागीतथैवान्यांगनास्व-
पि॥४८॥येऽक्षेत्रिणोबीजवन्तःपरक्षेत्रप्रवापिणः॥तेवैस-
स्यस्यजातस्यनलभन्तेफलंक्वचित्॥४९॥यदन्यगोषुवृषभो
वत्सानांजनयेच्छतम्॥गोमिनामेवतेवत्सामोघंस्कन्दितमा
र्षभम्॥५०॥तथैवाक्षेत्रिणोबीजंपरक्षेत्रप्रवापिणः॥कु-
र्वन्तिक्षेत्रिणामर्थंनबीजीलभतेफलम्॥फलंत्वनभिसन्धा-
यक्षेत्रिणांबीजिनांतथा॥प्रत्यक्षंक्षेत्रिणामर्थोबीजाद्यो-
निर्गरीयसी॥५२॥

۴۷ - تقسیم حصّے کنیا دان دینگے یہ تینوں باتیں بھلے لوگوں کی ایک ہی دفعہ ہوتی ہے -
۴۸ - جسطرح گئو گھوڑا اونٹ لونڈی بھینس بکری بھیڑ انھوں میں بچہ پیدا کرنیوالے کا مالک
بچہ کو نہیں پاتا اسیطرح دوسرے کی عورت میں تخم ڈالنے والا اولاد کو نہیں پاتا -
۴۹ - دوسرے کے کھیت میں تخم ڈالنے والا اس تخم کے ثمر کو کبھی نہیں پاتا -
۵۰ - دوسرے کی گئوئیں دوسرے کا بیل بچھڑا پیدا کرے تو گئو کا مالک ان بچھڑوں کو پاتا ہے اور
بیل کا نطفہ بے فائدہ جاتا ہے -
۵۱ - اسیطرح دوسرے کے کھیت میں بیج بونے والا کھیت والے کا مطلب کرتا ہے آپ پھل کو
نہیں پاتا -
۵۲ - اس عورت میں جو پیدا ہو وہ ہمارا اور تمھارا دونوں کا ہو ایسے خیال کو دل میں
نہ رکھکر جو پیدا کیا وہ لڑکا ظرف والی کا ہوتا ہے تخم سے ظرف افضل ہے -

अत्र गाथा वायुगीताः कीर्त्तयन्ति पुराविदः ।। यथा बीजं न व-
प्तव्यं पुंसा परपरिग्रहे ।। ४२ ।। नश्यतीषुर्यथा विद्धः खे विद्धम-
नुविध्यतः ।। तथा नश्यति वै क्षिप्रं बीजं परपरिग्रहे ।। ४३ ।। पृ-
थोरपीमां पृथिवीं भार्यां पूर्वविदो विदुः ।। स्थाणुच्छेदस्य केदा-
रमाहुः शल्यवतो मृगम् ।। ४४ ।। एतावानेव पुरुषो यज्जाया-
त्मा प्रजेति ह ।। विप्राः प्राहुस्तथा चैतद्यो भर्त्ता सा स्मृताङ्गना
।। ४५ ।। न निष्क्रयविसर्गाभ्यां भर्त्तुर्भार्या विमुच्यते ।। एवं धर्मं
विजानीमः प्रजापतिविनिर्मितम् ।। ४६ ।।

۴۲ - دوسرے کی عورت مین تخم نہ ڈالنا چاہیے اسباب مین اگلے زمانہ کے جاننے والے رشی لوگون نے ہوا کا کہا ہوا سخن جو خاص چھند سے شامل ہے بیان کیا ہے بلکہ اسپر عمل کیا ہو۔

۴۳ - کسی نے آسمان پر پرند کو تیر مارا پھر دوسرے آدمی نے اسی پرند پر تیر مارا تو دوسرے آدمی کا تیر ضائع ہوا کیونکہ شکار تو پہلے تیر انداز کو ملتا ہے اسی طرح دوسرے کی عورت مین تخم ضائع جاتا ہے یعنے جسکی عورت ہو اُسی کو بچہ کا افادہ ہوتا ہے ۔

۴۴ - اول راجہ پرتھو نے اس پرتھوی کو لیا پھر بہت سے راجاؤن نے لیا تا ہم یہ پرتھوی راجہ پرتھو ہی کی استری ہے اور جسنے اونچی نیچی زمین کو برابر کیا اُسیکا کھیت ہو اور جسنے اول تیر سے مارا اُسی کا شکار ہو یہ اگلے زمانہ کے جاننے والون نے کہا ہے ۔

۴۵ - ایک ہی پرش نہین ہوتا بلکہ اپنا جسم و عورت و اولاد یہ سب ملکر پرش کہاتا ہے یہ برہمنون نے کہا ہے ۔ جو شوہر ہے وہی عورت ہو یہ رشی لوگون نے کہا ہو۔

۴۶ - استری فروخت کرنے اور ترک کرنے سے استری کے دھرم سے علیحدہ نہین ہوتی اول ہی ستری برھما جی نے یہ تحقیق دھرم کی ہے سب ہم جانتے ہین ایسا منو جی نے کہا ہو۔

यादृशं तूप्यते बीजं क्षेत्रे कालोपपादिते ॥ तादृग्रोहति तत्त-
स्मिन्बीजं स्वैर्व्यञ्जितं गुरौः ॥ ३६ ॥ इयं भूमिर्हि भूतानां शाश्व
तीयोनिरुच्यते ॥ नचयोनिगुणान्कांश्चिद्बीजं पुष्यति पुष्टिषु
॥ ३७ ॥ भूमावप्येककेदारे कालोप्तानि कृषीवलैः ॥ नानारू
पाणिजायन्ते बीजानीह स्वभावतः ॥ ३८ ॥ व्रीहयः शालयो
मुद्गास्तिला माषास्तथा यवाः ॥ यथाबीजं प्ररोहन्ति लशुना
नीक्षवस्तथा ॥ ३९ ॥ अन्यदुप्तं जातन मन्यदित्येतन्नोपपद्य-
ते ॥ उप्यते यद्धि यद्बीजं तत्तदेव प्ररोहति ॥ ४० ॥ तत्प्राज्ञेन-
विनीतेन ज्ञानविज्ञानवेदिना ॥ आयुष्कामेन वप्तव्यं न जा-
तु परयोषिति ॥ ४१ ॥

۳۶- تخم ریزی کے وقت جیسا تخم کھیت میں بویا جاتا ویسا ہی مع اپنی صفات کے پیدا ہوتا ہے
۳۷- پانچ عناصر سے پیدا ہوئے جتنے جاندار ہیں اونکی پیدایش کا سبب ظرف ہے اور
کوئی چیز بونے اور اُگنے کی صفت کو سوا تخم کے مضبوطی نہیں بخشتی ہے اسلیئے تخم ہی مقدم و افضل ہے
۳۸- ایک ہی کھیت میں کاشتکار نے تخم ریزی کے وقت جو و گندم وغیرہ تخم کو بویا اور وہ
تخم اپنی عادت سے انواع و اقسام کا ہوتا ہے زمین تو ایک ہی صورت کی ہے اور تخم
ایک صورت کا نہیں پس تخم ہی افضل ہے۔
۳۹- جیسے ساٹھی و دھان و مونگ و تل و ماش و جو و لسن و اوکھ بیج بونے کے بعد مختلف
صورت سے پیدا ہوتے ہیں۔
۴۰- ایک چیز کو بویا اور دوسری چیز پیدا ہوئی ایسا نہیں ہوتا بلکہ جو بوتے ہیں وہی اُگتا ہے۔
۴۱- متحمل و متواضع و دانشمند و کامل و گیان بگیان یعنی وید و شاستر کے جاننے والے و عمر کی
خواہش کرنیوالے جو آدمی ہیں وہ دوسرے کی عورت میں تخم کو نہ ڈالیں۔

व्यभिचारात्तु भर्तुः स्त्री लोके प्राप्नोति निन्द्यताम्॥ सृगालयो-
निं चाप्नोति पापरोगैश्च पीड्यते॥ ३०॥ पुत्रं प्रत्युदितं सद्भिः पू-
र्वजैश्च महर्षिभिः॥ विश्वजन्यमिमं पुण्यमुपन्यासं निबोधत
॥ ३१॥ भर्तुः पुत्रं विजानन्ति श्रुतिद्वैधं तु भर्तरि॥ आहुरुत्पाद-
कं केचिदपरे क्षेत्रिणं विदुः॥ ३२॥ क्षेत्रभूता स्मृता नारी बीज-
भूतः स्मृतः पुमान्॥ क्षेत्रबीजसमायोगात्संभवः सर्वदेहिना-
म्॥ ३३॥ विशिष्टं कुत्रचिद्बीजं स्त्रीयोनिस्त्वेव कुत्रचित्॥ उ-
भयं तु समं यत्र सा प्रसूतिः प्रशस्यते॥ ३४॥ बीजस्य चैव योन्या-
श्च बीजमुत्कृष्टमुच्यते॥ सर्वभूतप्रसूतिर्हि बीजलक्षणलक्ष-
िता॥ ३५॥

۳۰ - دوسرے مرد کے ساتھ جماع کرنے سے عورت دنیا میں مذمت کے قابل ہوتی ہے اور گیدڑ کا جنم پاتی ہے اور پاپ روگوں سے دکھی و کلیش وان ہوتی ہے -

۳۱ - اچھے قدیم بڑے لوگوں نے بابت اولاد کے سنسار کے بھلے کیواسطے جس پاک دھرم کو کہا ہے اسکو کہتے ہیں -

۳۲ - باپ کا بیٹا ہے ایسا سب جانتے ہیں اور باپ کی بابت دو طرح کی شرتی ہے کوئی کہتے کہ تخم والے کا بیٹا ہے اور کوئی کہتا ہے کہ ظرف دینے کھیترا والے کا بیٹا ہے -

۳۳ - عورت ظرف کی صورت ہے اور تخم مرد کی صورت ہے ظرف اور تخم کی آمیزش سے تمام جانداروں کی پیدایش ہے -

۳۴ - کہیں تخم بڑا ہے کہیں ظرف بڑا ہے جہاں دونوں برابر ہیں وہ اولاد بہت اچھی ہے -

۳۵ - تخم اور ظرف دونوں میں تخم بڑا ہے سب جانداروں کی پیدایش تخم کے نشان سے جانی جاتی ہے -

एताश्चान्याश्च लोकेऽस्मिन्नपकृष्टप्रसूतयः ।। उत्कर्षं योषितः
प्राप्ताः स्वैः स्वैर्भर्तृगुणैः शुभैः ।। २४ ।। एषोदिता लोकयात्रा -
नित्यं स्त्रीपुंसयोः शुभा ।। प्रेत्येह च सुखोदर्कान्प्रजाधर्मान्नि
बोधत ।। २५ ।। प्रजनार्थं महाभागाः पूजार्हा गृहदीप्तयः ।। स्त्रि -
यः श्रियश्च गेहेषु न विशेषोऽस्ति कश्चन ।। २६ ।। उत्पादनमप -
त्यस्य जातस्य परिपालनम् ।। प्रत्यहं लोकयात्रायाः प्रत्यक्षं -
स्त्री निबन्धनम् ।। २७ ।। अपत्यं धर्मकार्याणि शुश्रूषा रतिरु -
त्तमा ।। दाराधीनस्तथा स्वर्गः पितॄणामात्मनश्च ह ।। २८ ।। प -
तिं या नाभिचरति मनोवाग्देहसंयता ।। सा भर्तृलोकानाप्नो -
ति सद्भिः साध्वीति चोच्यते ।। २९ ।।

۲۴- سوائے انکے اور بھی عورتیں ذلیل قوم سے پیدا ہوکر اس لوک میں اپنے شوہروں کی عظمت سے عظمت کو پہونچ گئیں۔

۲۵- عورت و مرد کی قدیم نیک چلنی کو کہا اب اس لوک میں اور پرلوک میں اور زمانہ آئندہ میں سکھ کیواسطے جو رعایا کا دھرم ہے اسکو کہتے ہیں۔

۲۶- گھر میں پیدائش کیواسطے بڑی قسمت والی پوجا کے لائق گھر کی تیج دان استری اور لکشمی میں ان دونوں میں خصوصیت کچھ نہیں ہے، دونوں برابر ہیں۔

۲۷- بیٹا اور بیٹی کی پیدائش اور بعد پیدائش کی انکی حفاظت اور دنیاوی مراسم قدیم ان سبھوں کا ظاہری سبب عورت ہی ہے۔

۲۸- اولاد اور دھرم کارج اور اتم سیوا اور اپنا اور اپنے بزرگوں کا سورگ سبب عورت کے اختیار میں ہیں۔

۲۹- جو عورت دل و زبان و بدن کے عیب سے علیحدہ ہوکر اپنے شوہر کو چھوڑ کر غیر مرد کا خیال نہیں کرتی وہ پتی لوک کو پاتی ہے اور دنیا میں اسکو اچھے لوگ سادھوی نیک چلن کہتے ہیں۔

तथा च श्रुतयो बह्व्यो निगीता निगमेष्वपि । स्वालक्षण्यपरीक्षार्थं तासां शृणुत निष्कृतीः ॥ १९ ॥ यन्मे माता प्रलुलुभे विचरन्त्यपतिव्रता । तन्मे रेतः पिता वृङ्क्तामित्यस्यैतन्निदर्शनम् ॥ २० ॥ ध्यायत्यनिष्टं यत्किंचित्पाणिग्राहस्य चेतसा । तस्यैष व्यभिचारस्य निह्नवः सम्यगुच्यते ॥ २१ ॥ यादृग्गुणेन भर्त्रा स्त्री संयुज्येत यथाविधि । तादृग्गुणा सा भवति समुद्रेणेव निम्नगा ॥ २२ ॥ अक्षमाला वसिष्ठेन संयुक्ताऽधमयोनिजा । शारङ्गी मन्दपालेन जगामाभ्यर्हणीयताम् ॥ २३ ॥

۱۹- بدفعلی کرنا عورتون کی عادت ہے یہ مین پہلے لکھا ہی کہ ہم نہین جانتے ہین کہ برہمن ہین یا غیر برہمن ہین اسکو پرایشچت والے وید مین دیکھو

۲۰- اپنی والدہ کی بدفعلی باطنی دیکھکر کہنا چاہئیے کہ میری والدہ نے غیر پت برتا ہوکر غیر مرد مین رغبت کیا تو والدہ کے بیج روپ (یعنے صورت نطفہ) اس غیر مرد کو میرا والد پاک کرے

۲۱- جو عورت دل سے اپنے شوہر کا کچھ برا خیال کرتی ہی اس بدفعلی کی نسبت کا پاک کرنیوالا پہلا کہا ہوا منتر ہے من وغیرہ رشیون نے کہا ہے-

۲۲- جس طریق سے جیسے آدمی سے عورت وصل پاتی ہی ویسی ہی آپ ہوتی ہے جیسے سمندر سے ندی-

۲۳- ذلیل قوم سے پیدا کش مالا نام عورت نے بششٹ رشی سے وصل کیا دونون پوجن کے قابل ہوئے-

* دل وزبان وجسم کے فعل سے اپنے شوہر کو چھوڑکر غیر مرد کی خواہش کرے وہ پت برتا کہلاتی ہے اسکے سوا غیرت برتا کہلاتی ہے

اس اشارہ کی صورت منتر کال ہے تین حصہ عورتون کی بدفعلی کی عادت ظاہر کرتے ہوا بہ منتر جاننا پاس گیہ مین کام آتا ہے

पानं दुर्जनसंसर्गः पत्या च विरहोऽटनम्। स्वप्नोऽन्यगेहवासश्च नारीसंदूषणानि षट्॥ १३॥ नैता रूपं परीक्षन्ते नासां वयसि संस्थितिः॥ सुरूपं वा विरूपं वा पुमानित्येव भुंजते॥ १४॥ पौंश्चल्याच्चलचित्ताच्च नैःस्नेह्याच्च स्वभावतः॥ रक्षिता यत्नतोऽपीह भर्तृष्वेता विकुर्वते॥ १५॥ एवं स्वभावं ज्ञात्वाऽऽसां प्रजापतिनिसर्गजम्॥ परमं यत्नमातिष्ठेत्पुरुषो रक्षणं प्रति॥ १६॥ शय्यासनमलंकारं कामं क्रोधमनार्जवम्॥ द्रोहभावं कुचर्यां च स्त्रीभ्यो मनुरकल्पयत्॥ १७॥ नास्ति स्त्रीणां क्रियामंत्रैरिति धर्मे व्यवस्थितिः॥ निरिन्द्रिया ह्यमंत्राश्च स्त्रियोऽनृतमिति स्थितिः॥ १८॥

۱۳- عورتین کیواسطے چھ باتین داخل عیب ہین شراب کا پینا بد کی صحبت شوہر سے دوری اور ادہر ادہر گھومنا بیوقت سونا دوسرے کے گھر مین رہنا۔

۱۴- عورتین صورت و عمر کو نہین دیکھتی ہین خوبصورت ہو یا بدصورت ہو لیکن مرد ہو اسی کو بھوگ کرتی ہین۔

۱۵- عورت تدبیر نیک سے محفوظ بھی ہو تاہم اپنی بد اطواری و تلون طبعی و بیوفائی و عادات ان باتون سے شوہر کو رنجیدہ کرتی ہے

۱۶- وقت پیدایش سری برہما جی سے عورتون کی یہ عادت جانکے حفاظت کیواسطے مرد تدبیر کرے۔

۱۷- پلنگ دامن دنار وغیرہ بنانیکی عادت و کام کرودھ و کھوٹ پن و نفسانیت و بدچلنی ان سب کو منو جی نے شروع پیدایش مین عورتون کو دیا اسلیے تدبیر سے حفاظت کرنا چاہیے۔

۱۸- عورتون کی کریا منترون سے نہین ہے یہ دھرم مین داخل ہے اندری اور منتر ان دونون سے عورت علیحدہ ہے و دروغ کے مانند نا مبارک ہے یہ شاستر کا حکم ہے۔

स्वां प्रसूतिं चरित्रं च कुलमात्मानमेव च ॥ स्वं च धर्मं प्रयत्नेन-
जायां रक्षन्हि रक्षति ॥ ७ ॥ पतिर्भार्यां सम्प्रविश्य गर्भो भूत्वेह-
जायते ॥ जायायास्तद्धि जायात्वं यदस्यां जायते पुनः ॥ ८ ॥ या-
दृशं भजते हि स्त्री सुतं सूते तथाविधम् ॥ तस्मात्प्रजाविशुद्ध्यर्थं
स्त्रियं रक्षेत्प्रयत्नतः ॥ ९ ॥ न कश्चिद्योषितः शक्तः प्रसह्य परि-
रक्षितुम् ॥ एतैरुपाययोगैस्तु शक्यास्ताः परिरक्षितुम् ॥ १० ॥
अर्थस्य संग्रहे चैनां व्यये चैव नियोजयेत् ॥ शौचे धर्मेऽन्नप-
क्त्यां च पारिणाह्यस्य चेक्षणे ॥ ११ ॥ अरक्षिता गृहे रुद्धाः पुरु-
षैराप्तकारिभिः ॥ आत्मानमात्मना यास्तु रक्षेयुस्ताः सुरक्षि-
ताः ॥ १२ ॥

۷۔ عورت کی حفاظت کرنیسے اپنے خاندان واولاد وتن اور دھرم وغیرہ کی حفاظت ہوتی ہے

۸۔ شوہر اپنی عورت میں داخل ہوکر بشکل حمل دنیا میں پیدا ہوتا ہے عورت میں عورت سے
نسبت رکھنے والا دھرم وہی ہے کہ عورت میں آپ پیدا ہوئے

۹۔ جس قسم کے مرد کا استعمال عورت کرتی ہے ویسا ہی بیٹا پیدا کرتی ہے اسلیئے اولاد پاک ہونے
کے لیے حتی المقدور عورت کی حفاظت کرنا چاہیئے۔

۱۰۔ کوئی آدمی ضد کرکے عورت کی حفاظت میں صاحب قدرت نہیں ہوتا ہے بلکہ جو تدبیر آگے
کہینگے اُسکے وسیلہ سے آدمی حفاظت کرنیمیں صاحب قدرت ہوتا ہے۔

۱۱۔ مطلبوں کا حاصل کرنا خرچ خانہ پاکیزگی دھرم خانہ بنانا گھر کی چیزوں کو دیکھنا ان
سب کاموں میں عورت کو اختیار دینا چاہیئے۔

۱۲۔ حکم کرکے اچھے آدمی سے عورت گھر میں محفوظ کیگئی ہو اُسپر بھی محفوظ نہیں ہوتی بلکہ جو
عورت اپنے کو آپ حفاظت کرتی ہے وہی محفوظ رہتی ہے۔

पुरुषस्यस्त्रियाश्चैवधर्म्येवर्त्मनितिष्ठतोः॥संयोगेविप्रयो-
गेचधर्मान्वक्ष्यामिशाश्वतान्॥१॥अस्वतंत्राःस्त्रियःका-
र्याःपुरुषैःस्वैर्दिवानिशम्॥विषयेषुचसज्जन्त्यःसंस्थाप्या
आत्मनोवशे॥२॥पितारक्षतिकौमारेभर्त्तारक्षतियौवने॥
रक्षन्तिस्थविरेपुत्रानस्त्रीस्वातंत्र्यमर्हति॥३॥कालेऽदाता
पितावाच्योवाच्यश्चानुपयन्पतिः॥मृतेभर्त्तरिपुत्रस्तुवा-
च्योमातुररक्षिता॥४॥सूक्ष्मेभ्योऽपिप्रसंगेभ्यःस्त्रियोरक्ष्या
विशेषतः॥द्वयोर्हिकुलयोःशोकमावहेयुररक्षिताः॥५॥इ-
मंहिसर्ववर्णानांपश्यन्तोधर्ममुत्तमम्॥यतन्तेरक्षितुंभार्यां
भर्त्तारोदुर्बलाअपि॥६॥

۱- دھرم کی راہ پر چلنے والے جو مرد و عورت ہین ان دونون کے وصل و جدائی مین جو دھرم قدیم ہے اسکو کہتے ہین۔

۲- رات دن عورتون کو شوہر وغیرہ کے وسیلہ سے بے اختیار کرنا مناسب ہے جو عورت بشیون مین لگی ہے اسکو اختیار مین رکھنا چاہیے۔

۳- لڑکپن مین باپ اور جوانی مین شوہر اور بڑھاپے مین بیٹا عورتون کی حفاظت کرے کیونکہ عورتین خودمختار ہونیکے لائق نہین ہین۔

۴- کنیادان کیوقت کنیا کو نہ دیوے تو باپ اسکا پاپی ہوتا اور حیض سے فراغت ہونے پر شوہر اس سے جماع نکرے تو وہ پاپی ہوتا ہے اور بحالت وفات شوہر کے بیٹا اپنی مان کی حفاظت نکرے تو وہ پاپی ہوتا ہے۔

۵- تھوڑی صحبت سے بھی خصوصاً عورتونکی حفاظت کرنا چاہیے عورتین غیر محفوظ رہنے سے دونون کل (یعنی خاندان شوہر و خاندان والد) کو رنج پہونچاتی ہین۔

۶- سب ورنون کے اتم دھرم کو دیکھتے ہوئے کمزور شوہر بھی عورت کی حفاظت کیواسطے کوشش و تدبیر کرتے ہین

वैश्यशूद्रौप्रयत्नेनस्वानिकर्माणिकारयेत्।।तौहिच्युतौस्वक
र्मभ्यःक्षोभयेतामिदंजगत्।।४१८।।अहन्यहन्यवेक्षेतकर्मा-
न्तान्वाहनानिच।। आयव्ययौचनियतावाकरान्कोशमेवच
।।४१९।।एवंसर्वानिमान्राजाव्यवहारान्समापयन्।। व्यपोह्य
किल्विषंसर्वंप्राप्नोतिपरमांगतिम्।।४२०।।

इतिमानवेधर्मशास्त्रेभृगुप्रोक्तायांसंहितायाम-
ष्टमोऽध्यायः ८

۴۱۸ - ویشیہ اور شودر یہ دونوں اپنے کام سے بیکار ہونے نہ پاویں اگر یہ دونوں اپنے دھرم سے علیحدہ ہوں تو زمانہ کو پر آشوب کریں -

۴۱۹ - کام کا ہو جانا و سواری و حاصل زر و خرچ و خزانہ و معدن ان سبھوں کو ہر روز راجہ ملاحظہ کیا کرے

۴۲۰ - اس طریق سے راجہ تمام کاموں کو کرتا ہوا پاپ کو چھوڑ کر پرم گت کو پاتا ہے -

منو جی کا دھرم شاستر بھرگو جی کی سنگھتا کا

آٹھواں ادھیائے سماپت ہوا -

शूद्रंतुकारयेद्दास्यंक्रीतमक्रीतमेववा॥दास्यायैवहिसृष्टोऽ
सौब्राह्मणस्यस्वयंभुवा॥४१३॥नस्वामिनानिसृष्टोऽपिशू-
द्रोदास्याद्विमुच्यते॥निसर्गजंहितत्तस्यकस्तस्मात्तदपोहति
॥४१४॥ध्वजाहृतोभक्तदासोगृहजःक्रीतदत्रिमौ॥पैत्रिको
दण्डदासश्चसप्तैतेदासयोनयः॥४१५॥भार्यापुत्रश्चदासश्च
त्रयएवाधनाःस्मृताः॥यत्तेसमधिगच्छन्तियस्यतेतस्यतद्ध-
नम्॥४१६॥विस्रब्धंब्राह्मणःशूद्राद्द्रव्योपादानमाचरेत्॥
नहितस्यास्तिकिंचित्स्वंभर्तृहार्य्यधनोहिसः॥४१७॥

۴۱۳ - جو شودر خرید کیا گیا ہو یا نہ خرید کیا گیا ہو اُس سے داس کا کام کرانا چاہیے کیونکہ برہمن کا داس کرم کیواسطے سری برہما جی نے شودر کو پیدا کیا ہے۔

۴۱۴ - جو مالک داس کرم سے داس کو آزاد نہیں کرتا تو وہ داس اس کرم سے آزاد نہیں ہوتا کیونکہ داس کرم شودر کے سوبھاو سے پیدا اس کرم کو کون چھوڑا سکتا ہے۔

۴۱۵ - دھوجا ہرت* بھگت داس گھر میں داسی سے پیدا ہوا مول لیا ہوا دان میں ملا ہو بزرگوں سے چلا آیا ڈنڈ داس یہ سات تو بھی داس ہی ہیں۔

۴۱۶ - زوجہ و فرزند داس یہ تینوں بے زر ہیں اور دولت کو فراہم کریں تو جسکے یہ تینوں ہیں اوسکی دولت ہے

۴۱۷ - براہمن داس شودر سے دولت لے لیوے اُسمیں کچھ بچار نکرے کیونکہ وہ دولت کچھ اوسکی ملکیت نہیں ہے وہ بے زر ہے وہ جو دولت فراہم کرے اس دولت کا مالک اُسکا سوامی ہے۔

* جسکو میدان جنگ میں فتح کر کے لائے۔

† یعنے بھوجن کیواسطے داس کرم کو منظور کرنیوالا

‡ یعنے کسی قصور کی سزا کے عوض میں داس بھاو کو منظور کرنیوالا۔

यन्नावि किंचिद्दाशानां विशीर्येतापराधतः ॥ तद्दाशैरेव दातव्यं समागम्य स्वतोंऽशतः ॥४०८॥ एष नौयायिनामुक्तो व्यवहारस्य निर्णयः ॥ दाशापराधतस्तोये दैविके नास्ति निग्रहः ॥ ४०९ ॥ वाणिज्यं कारयेद्वैश्यं कुसीदं कृषिमेव च ॥ पशूनां रक्षणं चैव दास्यं शूद्रं द्विजन्मनाम् ॥ ४१० ॥ क्षत्रियं चैव वैश्यं च ब्राह्मणो वृत्तिकर्शितौ ॥ बिभृयादानृशंस्येन स्वानि कर्माणि कारयन् ॥ ४११ ॥ दास्यं तु कारयंल्लोभाद्ब्राह्मणः संस्कृतान्द्विजान् ॥ अनिच्छतः प्राभवत्याद्राज्ञा दण्ड्यः शतानि षट् ॥ ४१२ ॥

۴۰۸ - کشتی مین ملاحون کے قصور سے کسی چیز کی بربادی ہو تو اُسکو سب ملاح ملکر اپنے حصہ سے دیوین۔

۴۰۹ - ملاحون کے قصور سے پانی مین بہادی چیزون کی تنبیہ کو کہا - آفت آسمانی ملاحون کا جرم و سزا نہین ہے۔

۴۱۰ - ویشیہ کا کام کھیتی کرنا اور سود لینا اور چارپایہ کی پرورش کرنا ہے ان سب کامون کو ویشیہ سے کراوے برہمن اور کشتری اور ویشیہ کی سیوا شودرون سے کراوے۔

۴۱۱ - جو کشتری یا ویشیہ رزق نہونے سے پریشان ہو اُسکو برہمن رحم سے کام کو کراتا ہوا پرورش کرے۔

۴۱۲ - جو برہمن کشتری ویشیہ جنیو وغیرہ سنسکار کو پاکر کام کرنیکی خواہش نہین کرتے اُنسے جو برہمن بوسیلہ اپنے پربھاؤ کے لوبھ سے کام کرنیوالا ہے اُس برہمن سے راجہ چھ سو پن ڈنڈ دیوے۔

पणंयानंतरेदाप्यंपौरुषोऽर्द्धपणंतरे।।पादंपशुश्चयोषिच्चपा-
दार्द्धंरिक्तकःपुमान्।। ४०४।।भाण्डपूर्णानियानानितार्यंदा-
प्यानिसारतः।। रिक्तभाण्डानियत्किंचित्पुमांसश्चापरीच्छदाः
।।४०५।।दीर्घाध्वनियथादेशंयथाकालंतरोभवेत्।। नदीतीरेषु
तद्विद्यात्समुद्रेनास्तिलक्षणम्।।४०६।।गर्भिणीतुद्विमासा-
दिस्तथाप्रव्रजितोमुनिः।।ब्राह्मणालिङ्गिनश्चैवनदाप्यास्ता-
रिकंतरे।। ४०७ ।।

٤٠٤ - کشتی پر سوار ہو کر عبور کرنے میں سواری پیچھے ایک پن لینا چاہئے اور مع بوجھ فی آدمی آدھا پن اور چار پایہ اور استری پیچھے پن کا چوتھا حصہ اور بوجھ رکھنے والے آدمی پیچھے پن کا آٹھواں حصہ لینا چاہئے -

٤٠٥ - گاڑی وغیرہ محمولہ اشیاء وغیرہ کے بلحاظ چیز یا محمول کے سارا سار بچار کر کے محصول مقرر کرنا چاہئے اور جس گاڑی وغیرہ میں اشیاء وغیرہ نہیں ہے اور جو آدمی کچھ سامان وغیرہ نہیں رکھتا ان سے تھوڑا محصول لینا چاہئے -

٤٠٦ - دریا کے راستے سے دور جانے میں دریا کی تیز روی و قیام اور موسم گرمی و برسات وغیرہ کا لحاظ کر کے کشتی کی اجرت مقرر کرنا چاہئے اور سمندر میں چلنا ہوا کے اختیار میں ہے اس لئے اوپر لکھی ہوئی بات کا لحاظ نہیں ہے بلکہ جو مناسب ہو وہی لینا چاہئے -

٤٠٧ - دو مہینہ سے زیادہ کی حاملہ عورت سنیاسی دیان پرستھ برہمن و برہم چاری ان سب سے عبور دریا کا محصول نہ لینا چاہئے -

शुल्कस्थानेषु कुशलाः सर्वपण्यविचक्षणाः॥ कुर्युरर्घं य-
थापण्यं ततो विंशं नृपो हरेत्॥ ३९८॥ राज्ञः प्ररव्यातभाण्डा-
नि प्रतिषिद्धानि यानि च॥ तानि निर्हरतो लोभात्सर्वहारं हरे-
न्नृपः॥ ३९९॥ शुल्कस्थानं परिहरन्नकाले क्रयविक्रयी॥
मिथ्यावादी च संख्याने दाप्योऽष्टगुणमत्ययम्॥ ४००॥ आ-
गमं निर्गमं स्थानं तथा वृद्धिक्षयावुभौ॥ विचार्य सर्वपण्यानां
कारयेत्क्रयविक्रयौ॥ ४०१॥ पंचरात्रे पंचरात्रे पक्षे पक्षेऽथ-
वागते॥ कुर्वीत चैषां प्रत्यक्षमर्घसंस्थापनं नृपः॥ ४०२॥ तु-
लामानं प्रतीमानं सर्वं च स्यात्सुलक्षितम्॥ षट्सु षट्सु च मा-
सेषु पुनरेव परीक्षयेत्॥ ४०३॥

۳۹۸ - خراج سلطنت کو جاننے والے اور ہر چیز کو فروخت کرنے مین ہوشیار ایسا آدمی جس چیز
کی جو قیمت مقرر کرے اسمین جو نفع ہو اسکے بیسوین حصہ کو راجہ لیوے۔

۳۹۹ راجہ کے لائق جو چیز ہے اور جس چیز کو دوسرے کے پاس فروخت کرنے کو راجہ نے
منع کیا ہے ان چیزون کو حرص سے دوسرے مقام پر فروخت کرے تو اسکا تمام مال راجہ لیوے

۴۰۰ - جس مقام پر راج کا محصول لیا جاتا ہے اس مقام کو ترک کرنیوالا و بے وقت خرید و فروخت
کرنیوالا ذون مین کم تولنے والا محصول سرکاری کا ہشت چند تاوان دیوے

۴۰۱ - سب چیزونکا آنا جانا و قیام وردان کو دیکھکر خرید و فروخت کرنا چاہیے۔

۴۰۲ - بعد آخر ہونے پانچ پانچ دن یا ہفتہ ہفتہ کے سب چیزون کی قیمت قائم کرے۔

۴۰۳ - باٹ و تول و سیر و پانچ سیری وغیرہ پستھ دو دون وغیرہ کے باٹون کی کمی و بیشی
کو راجہ دیکھے پھر چھٹھوین چھٹھوین مہینہ مین اونکا امتحان کرے اور سب چیزون پر راج مہر کا نشان
کر دے

प्रातिवेश्यानुवेश्यौ च कल्याणे विंशतिद्विजे ।। अर्हावभोजयन्विप्रो दण्डमर्हति माषकम् ।। ३९२ ।। श्रोत्रियः श्रोत्रियं साधुं भूतिकृत्येष्वभोजयन् ।। तदन्नं द्विगुणं दाप्यो हिरण्यं चैव माषकम् ।। ३९३ ।। अन्धो जडः पीठसर्पी सप्तत्या स्थविरश्च यः ।। श्रोत्रियेषूपकुर्वंश्च न दाप्याः केनचित्करम् ।। ३९४ ।। श्रोत्रियं व्याधितार्तौ च बालवृद्धावकिंचनम् ।। महाकुलीनमार्यं च राजा संपूजयेत्सदा ।। ३९५ ।। शाल्मलीफलके श्लक्ष्णे नेनिज्यान्नेजकः शनैः ।। न च वासांसि वासोभिर्निर्हरेन्न च वासयेत् ।। ३९६ ।। तन्तुवायो दशपलं दद्यादेकपलाधिकम् ।। अतोऽन्यथा वर्तमानो दाप्यो द्वादशकं दमम् ।। ३९७ ।।

۳۹۲ - منگل شانت کرم میں برہمن کو ویشیہ بھوجن کراتا ہوا اور اپنے گھر کے روبرو رہنے والے اور اپنے گھر سے ایک گھر چھوڑ کر دوسرے گھر میں رہنے والے لیتق برہمن کو بھوجن نکراوے تو ایک ماشہ چاندی ڈنڈ دیوے۔

۳۹۳ - شادی وغیرہ خوشی کے کاموں میں وید پاٹھی اور اپنے گھر کے سامنے یا ایک گھر چھوڑ کر دوسرے گھر میں رہنے والے وید پاٹھی برہمن کو بھوجن نکراوے تو ایک ماشہ سونا اور بھوجن کا دو چند تاوان دیوے۔

۳۹۴ - اندھا بہرا لنگڑا ستر برس کی عمر والا دھن دھانیہ سے وید پاٹھیوں کا اپکار کرنے والا ان سبھوں سے راجہ باوجود خالی ہونے خزانے کے اپنے لینے کے لائق محصول کو نہ لیوے۔

۳۹۵ - وید پاٹھی بیادھی دکھی بالک بڈھا اناتھ نردھن بڑا خاندانی نیک چلن والا ان سبھوں کا پوجن ہر دم راجہ کرے۔

۳۹۶ - سیمر کے چکنے پاٹا پر آہستگی سے دھوبی کپڑے دھوئے اور ایک کا کپڑا دوسرے کو نہ دیوے اور بہت دن تک اپنے گھر میں نہ رکھے۔

۳۹۷ - کپڑا بننے والا کپڑا بنانے کے واسطے بمقدار وزن دس گنڈہ چھٹانک کے سوت لیوے تو بمقدار وزن گیارہ گنڈہ کے کپڑا دیوے اس سے کم دیوے تو بمقدار بارہ پن ڈنڈ راجہ کو دیوے یا مالک سوت کو ادا کرے

यस्यस्तेनः पुरेनास्तिनान्यस्त्रीगोनदुष्टवाक् ॥ नसाहसिकद
राडघ्नौसराजाशक्रलोकभाक् ॥ ३८६ ॥ एतेषांनिग्रहोराज्ञः
पंचानांविषयेस्वके ॥ साम्राज्यकृत्सजात्येषुलोकेचैवयश-
स्कर: ॥ ३८७ ॥ ऋत्विजंयस्त्यजेद्याज्योयाज्यंचर्त्विक्त्यजे-
द्यदि ॥ शक्तंकर्मण्यदुष्टंचतयोर्दण्डःशतंशतम् ॥ ३८८ ॥
नमातानपितानस्त्रीनपुत्रस्त्यागमर्हति ॥ त्यजन्नपतिता-
नेतान्राज्ञादण्ड्यःशतानिषट् ॥ ३८९ ॥ आश्रमेषुद्विजाती
नांकार्येविवदतांमिथः ॥ नविब्रूयान्नृपोधर्मंचिकीर्षन्हित
मात्मनः ॥ ३९० ॥ यथार्हमेतानभ्यर्च्यब्राह्मणैःसहपार्थिवः
॥ सांत्वेनप्रशमय्यादौस्वधर्मंप्रतिपादयेत् ॥ ३९१ ॥

۳۸۶ - چور اور دوسرے کی زوجہ سے جماع کرنیوالا اور کھوٹے بچن بولنے والا اور زبردستی
کام کرنیوالا اور ڈنڈا وغیرہ سے مارنیوالا سب جسکی راج مین نہین ہین وہ راجہ اندرلوک کو پاتا ہی
۳۸۷ - اپنی راج مین ان پانچوں کو سزا دینے والا راجہ راجاؤن مین منڈلیشور راجہ کا کام کرتا ہی
اور اس دنیا مین نیکنامی پاتا ہے۔
۳۸۸ - اپنے کام مین لائق اور کھوٹے پن سے علیحدہ رتوگ اور یجمان ان دونوں مین سے
ایک کو ایک ترک کرے تو ترک کرنیوالے کو سو پن ڈنڈ دینا چاہیے۔
۳۸۹ - ماں و باپ و زوجہ و فرزند جو اپنے درن سے بھرشٹ ہو گئے ہون انمین سے کسی
ایک کو ترک کرے تو وہ چھہ سو پن ڈنڈ کے لائق ہوتا ہے۔
۳۹۰ - گرہستھ وغیرہ آشرم مین براہمن و کشتری و ویشیہ کے باہم بحث مطالب شاستر کی ہوتی
ہو تو اپنا بھلا چاہنے والا راجہ ساہس کرکے ایسا نہ بولے کہ یہ مطلب شاستر کا ہی۔
۳۹۱ - راجہ مع براہمنون کے بحث کرنیوالون کو حسب لیاقت آرام صورت کام سے پوجن
کرکے اسکے غصہ کو دور کرکے اپنے دھرم کو بیان کرے۔

नजातुब्राह्मणंहन्यात्सर्व्वपापेष्वपिस्थितम्॥ राष्ट्रादेनंबहि
कुर्य्यात्समग्रधनमक्षतम्॥ ३८०॥ नब्राह्मणवधाद्भूयानध-
र्मोविद्यतेभुवि॥ तस्मादस्यवधंराजामनसापिनचिन्तयेत्॥
३८१॥ वैश्यश्चेत्क्षत्रियांगुप्तांवैश्यांवाक्षत्रियोव्रजेत्॥ यो-
ब्राह्मण्यामगुप्तायांतावुभौदण्डमर्हतः॥ ३८२॥ सहस्रंब्रा-
ह्मणोदण्डदाप्योगुप्तेतुतेव्रजन्॥ शूद्रायांक्षत्रियविशोःसा-
हस्रोवैभवेद्दमः॥ ३८३॥ क्षत्रियायामगुप्तायांवैश्येपंचशतं
दमः॥ मूत्रेणमौण्ड्यमिच्छेत्तुक्षत्रियोदण्डमेववा॥ ३८४॥
अगुप्तेक्षत्रियावैश्ये शूद्रांवाब्राह्मणोव्रजन्॥ शतानिपंच-
दण्ड्यः स्यात्सहस्रंत्वन्त्यजस्त्रियम्॥ ३८५॥

۳۸۰۔ تمام پاپوں کو برہمن نے کیا ہو تو بھی اُسکو قتل نہ کرنا چاہئے بدون دینے سزاے بدنی کے مع سامان خانگی راج سے باہر نکالدینا چاہئے۔

۳۸۱۔ دنیا مین برہمن کے قتل سے زیادہ کوئی دوسرا ادھرم نہین ہے اسلیئے راجہ دلمین بھی برہمن کے قتل کا خیال نکرے۔

۳۸۲۔ شوہر وغیرہ سے محفوظ ویشیہ کی زوجہ سے کشتری جماع کرے یا ویسی ہی کشترانی سے ویشیہ جماع کرے تو شوہر وغیرہ سے غیر محفوظ برہمنی کے جماع مین جو سزا کہی ہے وہی سزا دونوں کو دینا۔

۳۸۳۔ شوہر وغیرہ سے محفوظ کشتری یا ویشیہ کی زوجہ سے جماع کرنیوالے برہمن کو ہزار پن ڈنڈ دینا چاہئے اور شوہر وغیرہ سے محفوظ شودر کی زوجہ سے جماع کرنیمین ویشیہ کو ہزار پن ڈنڈ دینا چاہیئے

۳۸۴۔ شوہر وغیرہ سے غیر محفوظ کشتری کی زوجہ سے جماع کرنیمین ویشیہ کو پانسو پن ڈنڈ دینا چاہئے اور اُسکے ساتھ جماع کرنیوالے کشتری کو گدھے کے پیشاب سے سر مونڈا دینا بھی سزا کافی ہے۔

۳۸۵۔ شوہر وغیرہ سے غیر محفوظ کشتری یا ویشیہ یا شودر کی زوجہ سے جماع کرنیوالے برہمن کو پانسو پن ڈنڈ دینا چاہئے اور چانڈال وغیرہ کی زوجہ سے جماع کرنیمین برہمن کو ہزار پن ڈنڈ دینا چاہئے۔

वैश्यः सर्वस्वदण्डः स्यात्संवत्सरनिरोधतः ॥ सहस्रं क्षत्रियो दण्ड्यो मौण्ड्यं मूत्रेण चार्हति ॥ ३७५ ॥ ब्राह्मणीं यद्यगुप्तां तु गच्छेतां वैश्यपार्थिवौ ॥ वैश्यं पंचशतं कुर्य्यात्क्षत्रियन्तु सहस्रिणम् ॥ ३७६ ॥ उभावपि तु तावेव ब्राह्मण्या गुप्तया सह ॥ विप्लुतौ शूद्रवद्दण्ड्यौ दग्धव्यौ वा कटाग्निना ॥ ३७७ ॥ सहस्रं ब्राह्मणो दण्ड्यो गुप्तां विप्रां बलाद्व्रजन् ॥ शतानि पंच दण्ड्यः स्यादिच्छन्त्या सह संगतः ॥ ३७८ ॥ मौण्ड्यं प्राणान्तिको दण्डो ब्राह्मणस्य विधीयते ॥ इतरेषान्तु वर्णानां दण्डः प्राणान्तिको भवेत् ॥ ३७९ ॥

٣٧٥- محفوظ براہمنی سے جماع کرنیمین ویشیہ کو ایک سال تک جیلخانہ مین قید رکھنا چاہیئے اسکے بعد سب مال کا چھین لینا یہ سزا اسکو دینا چاہیئے اور اسی جرم مین کشتری کو ہزار پن ڈنڈ دیوے اور گدھے کے پیشاب سے مونڈ منڈوا دیوے۔

٣٧٦- شوہر وغیرہ سے غیر محفوظ براہمنی سے جماع کرنیوالے کشتری و ویشیہ پانسو پن سلسلہ وار و ہزار پن ڈنڈ دیوے۔

٣٧٧- شوہر وغیرہ سے محفوظ براہمنی سے جماع کرنیوالے کشتری و ویشیہ دونوں شودر کیطرح ڈنڈ کے لائق ہین یعنے سب عضا سے معذور کرنا چاہیئے خواہ لال کشن سے ڈھک کر ویشیہ کو اور سپر یعنے سرہری سے ڈھلکر کشتری کو جلانا چاہیئے یہ سزا براہمنی صاحب صفت کی جماع مین جاننا چاہیئے۔

٣٧٨- شوہر وغیرہ سے محفوظ براہمنی کے ساتھ زبردستی جماع کرنیوالے براہمن کو ہزار پن ڈنڈ دینا چاہیئے اور اسی براہمنی کی خواہش سے جماع کرنیوالے براہمن کو پانسو پن ڈنڈ دینا چاہیئے۔

٣٧٩- سزاے قتل کے مقام مین براہمن کو مونڈ مونڈانا ہی سزا ہے اور دیگر قوم کو قتل ہی کی سزا دینا چاہیئے۔

यातुकन्यांप्रकुर्यात्स्त्रीसासद्योमौण्ड्यमर्हति ॥ अंगुल्योरेव
वाछेदंखरेणोद्वहनंतथा ॥ ३७० ॥ भर्त्तारंलंघयेद्यातुस्त्रीज्ञाति
गुणदर्पिता ॥ तांश्वभिःखादयेद्राजासंस्थानेबहुसंस्थिते ३७१
॥ पुमांसंदाहयेत्पापंशयनेतप्तआयसे ॥ अभ्यादध्युश्चकाष्ठा
नितत्रदह्येतपापकृत् ॥ ३७२ ॥ संवत्सराभिशस्तस्यदुष्टस्यद्वि
गुणोदमः ॥ व्रात्ययासहसंवासेचाण्डाल्यातावदेवतु ॥ ३७३
शूद्रोगुप्तमगुप्तंवाद्वैजातंवर्णमावसन् ॥ अगुप्तमंगसर्वस्वैर्गु
प्तंसर्वेणहीयते ॥ ३७४ ॥

۳۷۰ - جو استری کنیا کی فرج مین انگلی ڈالکر باعیب کرے اوسکا مونڈ مونڈانا اور انگلیان کاٹنا اور گدھے پر چڑھاکر شہر مین گشت کرانا چاہیئے [illegible]

۳۷۱ - [illegible] ذات وصفات کے غرور سے اپنے شوہر کو ترک کرنیوالی عورت کو راجہ بہت آدمیون کے روبرو کتون سے بھوجن کرادے۔

۳۷۲ - دوسرے کی عورت مرقومہ بالا سے جماع کرنیوالے آدمی کو لوہے کے گرم پلنگ مین سولاکر چارو طرف لکڑی رکھکر آگ لگادے جس سے وہ پاپی جل جاے۔

۳۷۳ - دوسرکی عورت یعنی جسکا جینو وغیرہ وقت محکومہ شاستر پر نہین ہوا اسکی عورت اور چانڈال کی عورت۔ انھون سے جماع کرکے نالائق آدمی بغیر پانے سزا کے ایک سال کے بعد پھر اسی عورت سے جماع کرے تو جو سزا کہ آگے ہین اسکی دو چند سزا دیوے۔

۳۷۴ - براہمن کشتری ویشیہ کی عورت شوہر وغیرہ سے محفوظ ہو خواہ محفوظ ہو اس سے جماع کرنیوالے شودر کا عضو تناسل قطع کرنا و تمام دولت چھین لینا و سزاے قتل دینا چاہیئے مگر غیر محفوظ عورت سے جماع کرنے مین قطع عضو تناسل و تمام دولت کا چھین لینا صرف یہی سزا دینا چاہیئے اور محفوظ عورت سے جماع کرنے مین دونون سزاے مرقومہ بالا مع سزاے قتل دینا چاہیئے

कन्यां भजन्तीमुत्कृष्टं न किंचिदपि दापयेत्॥ जघन्यं सेवमा-
नान्तु संयतां वासयेद्गृहे॥ ३६५॥ उत्तमां सेवमानस्तु जघन्यो
वधमर्हति॥ शुल्कं दद्यात्सेवमानः समामिच्छेत्पिता यदि॥
३६६॥ अभिषह्य तु यः कन्यां कुर्य्याद्दर्पेण मानवः॥ त-
स्याशु कर्त्ये अङ्गुल्यौ दण्डं चार्हति षट्शतम्॥ ३६७॥ सका-
मां दूषयंस्तुल्यो नाङ्गुलिच्छेदमाप्नुयात्॥ द्विशतं तु दमं दा-
प्यः प्रसंगविनिवृत्तये॥ ३६८॥ कन्यैव कन्यां या कुर्य्यात्त-
स्याः स्याद्द्विशतो दमः॥ शुल्कं च द्विगुणं दद्याच्छिफाश्चै-
वाप्नुयाद्दश॥ ३६९॥

۳۶۵ - اپنی ذات سے اونچی ذات کو چاہنے والی کنیا تھوڑا بھی ڈنڈ نہیں پا سکتی اور اپنی ذات سے نیچ ذات کو چاہنے والی کنیا کو گھر میں باندھ کر رکھنا چاہیے۔

۳۶۶ - جو اونچی ذات کی کنیا میں خواہش کرنیوالی یا نکرنیوالی ہے اس سے رذیل آدمی جماع وغیرہ کرنیوالا تفاوت ذات کی سبب سے قطع اعضا و قتل کے لائق ہوتا ہے اور خواہش کرنیوالی ہمقوم کنیا کو کچھ دیکر اس سے جماع وغیرہ کرنیوالا سزا کے لائق نہیں ہوتا اور اگر اس کنیا کا باپ راضی ہو تو اسکو کچھ معاوضہ دیکر شادی کر لے۔

۳۶۷ - جو آدمی زبردستی اور مغروری سے اپنی ذات کی کنیا کی فرج میں جو کہ ناقابل جماع ہے انگلی ڈالکر باعیب کرتا ہے اسکی دو انگلی کاٹنا چاہیے اور چھہ سو پن ڈنڈ لینا چاہیے

۳۶۸ - اور اگر خواہش کرنیوالی ہمقوم کنیا کو بطریق مرقومہ بالا باعیب کرے تو قطع انگشتان کی سزا دینا چاہیے لیکن کچھ سزا دینے کے واسطے دو سو پن ڈنڈ لینا چاہیے۔

۳۶۹ - جو کنیا دوسری کنیا کی فرج میں انگلی ڈالکر باعیب کرے اسکو دو سو پن ڈنڈ دینا چاہیے اور انگلی ڈالنے والی کنیا کا باپ دو چند معاوضہ (شلک) دیوے

भिक्षुकाबन्दिनश्चैवदीक्षिताःकारवस्तथा।।संभाषणंसहस्त्री
भिःकुर्युरप्रतिवारिताः।। ३६०।।नसंभाषांपरस्त्रीभिःप्रतिषि
द्धःसमाचरेत्।।निषिद्धोभाषमाणस्तुसुवर्णंदण्डमर्हति।।
३६१।।नैषचारणदारेषुविधिर्नात्मोपजीविषु।।सज्जयन्ति
हितेनारीर्निगूढाश्चारयन्तिच।। ३६२।।किंचिदेवतुदाप्यःस्या
त्संभाषांताभिराचरन्।।प्रैष्यासुचैकभक्तासुरहःप्रव्रजिता
सुच।। ३६३ ।।योऽकामांदूषयेत्कन्यांससद्योवधमर्हति।।
सकामांदूषयंस्तुल्योनवधंप्राप्नुयान्नरः।। ३६४।।

۳۶۰ - بھکاری و بھاٹ و دیکشت (یعنی جسنے یگیہ کیو اسطے دیکشا لی ہے) - اور رسوئیہ بنانیوالا یہ سب بھیکھ وغیرہ اپنے کام کیو اسطے عورتوں سے باتین کرین - تو انکو منع نکرنا چاہیے -

۳۶۱ - ایک بار منع کیا کہ تم اس عورت سے نہ بولنا اور پھر وہ آدمی اسی عورت سے باتین کرے تو ایک سبرن (یعنے سولہ ماشہ) سونا ڈنڈ دیوے -

۳۶۲ - نٹ اور گانے بجانیوالے کی عورت اور جو شخص عورت کے کسب سے اپنی اوقات بسر کرتے ہیں انکی عورتوں کے واسطے آئین مندرجہ بالا نہیں ہے کیونکہ وہ لوگ تو خود اپنی عورتوں کو پوشیدہ سب جگہ بھیجتے ہیں

۳۶۳ - لیکن تاہم وہ دوسرے کی عورتین ہیں اسواسطے انکے ساتھ بات کرنے سے بات کرنیوالا تھوڑا سا ڈنڈ پاوے اور ایک گھر مین جس عورت کو روک رکھا ہے وہ - اور سنیاسی کی عورت انکے ساتھ بات کرنیوالا تھوڑا ڈنڈ پاوے -

۳۶۴ - جو ہمقوم دختر خواہش نہیں کرتی اور مرد اس سے جماع کرتا ہے اسکو قطع عضو تناسل کی سزا اسی وقت دینا چاہیے لیکن براہمن کو یہ سزا نہ دینا چاہیے کیونکہ اسکو سزا اسکے بدلے دینی کی ممانعت ہے اور جو شخص خواہش کرنیوالی دختر ہمقوم سے جماع کرے وہ سزای قطع اعضا نہ پاوے

परस्यपत्न्यापुरुषःसंभाषांयोजयन्रहः॥ पूर्वमाक्षारितोदो
षैःप्राप्नुयात्पूर्वसाहसम्॥ ३५४॥ यस्त्वनाक्षारितःपूर्वमभि
भाषेतकारणात्॥ नदोषंप्राप्नुयात्किंचिन्नहितस्यव्यतिक्र
मः॥ ३५५॥ परस्त्रियंयोऽभिवदेत्तीर्थेऽरण्येवनेऽपिवा॥ न-
दीनांवापिसंभेदेससंग्रहणमाप्नुयात्॥ ३५६॥ उपचारक्रि-
याकेलिःस्पर्शोभूषणवाससाम्॥ सहखट्वासनंचैवसर्वंसं-
ग्रहणंस्मृतम्॥ ३५७॥ स्त्रियंस्पृशेददेशेयःस्पृष्टोवामर्षयेत्त-
या॥ परस्परस्यानुमतेसर्वंसंग्रहणंस्मृतम्॥ ३५८॥ अब्रा-
ह्मणःसंग्रहणेप्राणान्तंदण्डमर्हति॥ चतुर्णामपिवर्णानां
दारारक्ष्यतमाःसदा॥ ३५९॥

۳۵۴ - دوسرے کی عورت سے جو شخص خلوت میں باتیں کرتا ہے اور پہلے سے اسکا
عیب جانا گیا ہے اسکو پورب ساہس دنڈ دینا چاہیئے۔
۳۵۵ - جسکا عیب پہلے سے جانا نہیں گیا ہے اور کسی باعث سے خلوت میں دوسرے
کی عورت سے باتیں کرتا ہے تو اسکو دنڈ نہ دینا چاہیئے۔
۳۵۶ - پانی میں جانیکا رستہ اور گھاس پھوس سے شامل اور آدمیوں سے علیحدہ مکان جو گانوکے باہر
ہو اور جنگل اور ندی کا سنگم ان مقامات میں دوسرے کی عورت سے باتیں کرے تو سنگرہن نام پاپ کو پاتا ہے
۳۵۷ - مالا پہننا عطر لگانا اور کپڑا اور زیور بھیجنا و مضحکہ و بغلگیری وغیرہ کرنا ایک چارپائی پر
بیٹھنا یہ سب سنگرہن کہلاتا ہے اسبات کو منو وغیرہ رشیوں نے کہا ہے۔
۳۵۸ - جس مرد نے عورت کی ران وغیرہ کو چھوا خواہ عورت نے مرد کے فوطہ وغیرہ کو پکڑا اور مرد نے
غصہ نہ کیا تو باہمی محبت سے یہ سنگرہن کہلاتا ہے منو وغیرہ رشیوں نے کہا ہے۔
۳۵۹ - سوا برہمنوں کے اور ذات والوں کو سنگرہن کی عوض میں قتل کی سزا دینا چاہیئے
کیونکہ چاروں ورن کی استری نہایت حفاظت کے لائق ہیں۔

आत्मनश्चपरित्राणेदक्षिणानांचसंगरे॥ स्त्रीविप्राभ्युपप-
त्तौचघ्नन्धर्मेणनदुष्यति॥ ३४९॥गुरुंवाबालवृद्धौवाब्राह्म-
णंवाबहुश्रुतम्॥ आततायिनमायान्तंहन्यादेवाविचारय-
न्॥ ३५०॥ नाततायिवधेदोषोहन्तुर्भवतिकश्चन॥ प्रकाशं
वाऽप्रकाशंवामन्युस्तंमन्युमृच्छति॥ ३५१॥परदाराभिम-
र्शेषुप्रवृत्तान्नॄन्महीपतिः॥ उद्वेजनकरैर्दण्डैश्छिन्नयित्वा
प्रवासयेत्॥ ३५२॥ तत्समुत्थोहिलोकस्यजायतेवर्णसंक-
रः॥ येनमूलहरोऽधर्मःसर्वनाशायकल्पते॥ ३५३॥

۴۹ ۳ - آتما اور یگیہ کے سامان اور استری اور براہمن اِنکوں کی حفاظت کرنے میں اور
میدان جنگ میں دھرم سے مارنیوالے کو دوش نہیں ہوتا -

۵۰ ۳ - گرو و بالک و بوڑھا و بہت پڑھا ہوا براہمن یہ سب آتتائی ہوکر آویں تو انکو مارنا
چاہئے - کچھ بچار نکرنا چاہئے -

۵۱ ۳ - آتتائی کے قتل میں مارنیوالے کو پاپ نہیں ہوتا جو شخص ظاہر یا پوشیدہ مارنیوالے
کے کرودھ سے مارے گئے اسکے ظاہر و پوشیدہ کرودھ کو سلسلہ ورپاتا ہے -

۳۵۲ جو آدمی دوسرے کی عورت سے بدفعلی کرنیوالے ہیں انکو بیاکل کرنیوالے ڈنڈ کے
وسیلہ سے بدن پریشان کرکے ملک سے باہر نکالدے

۳۵۳ - زمانہ میں عورتوں کی بدفعلی سے ورن سنکر پیدا ہوتے ہیں اور اس ورن سنکر
سے جڑ اکھاڑ نیوالا ادھرم پیدا ہوتا ہے جس سے جگت کی ناش ہوتی ہے -

* آگ لگانا و زہر دینا و کسی دولت و کھیت و عورت کو چھین لینا ان چھ کام کا کرنیوالا آتتائی کہلاتا ہے -

अनेनविधिनाराजाकुर्वाणःस्तेननिग्रहम् ॥ यशोऽस्मिन्प्राप्नु-
याल्लोकेप्रेत्यचानुत्तमंसुखम् ॥ ३४३ ॥ ऐन्द्रंस्थानमभिप्रेप्सुर्य-
शश्चाक्षयमव्ययम् ॥ नोपेक्षेतक्षणमपिराजासाहसिकंनरम्
॥ ३२४ ॥ वाग्दुष्टात्तस्कराच्चैवदण्डेनैवचहिंसतः ॥ साहसस्यन
रःकर्ताविज्ञेयःपापकृत्तमः ॥ ३४५ ॥ साहसेवर्तमानन्तुयोम-
र्षयतिपार्थिवः ॥ सविनाशंव्रजत्याशुविद्वेषंचाधिगच्छति ॥
३४६ ॥ नमित्रकारणाद्राजाविपुलाद्वाधनागमात् ॥ समुत्सृ-
जेत्साहसिकान्सर्वभूतभयावहान् ॥ ३४७ ॥ शस्त्रंद्विजातिभि-
र्ग्राह्यंधर्मोयत्रोपरुध्यते ॥ द्विजातीनांचवर्णानांविप्लवेकाल
कारिते ॥ ३३८ ॥

۳۴۳ - اس طریق سے چوروں کا ڈنڈ دینے والا راجہ اِس لوک میں یش اور پرلوک میں اُتم
سُکھ کو پاوے -

۳۴۴ - جو راجہ اندر کی پدوی پانے کی خواہش کرنیوالا اور زوال نہ کیناہی کا چاہنے والا ہے
وہ زبردستی بھی زبردستی سے کام کرنیوالے آدمی کی دلداری نکرے -

۳۴۵ - گالی دینے والا اور چور ڈنڈ سے مارنیوالا ان سبھوں سے ساہس کرنیوالا پاپی ہے

۳۴۶ - جو راجہ زبردستی سے کام کرنیوالے آدمی کے جرم کا تحمل کرتا ہے وہ جلد عداوت
و فنا کو پاتا ہے -

۳۴۷ - تمام جانداروں کو خوف دینے والے اور زبردستی سے کام کرنیوالے آدمی کو
راجہ دوستی سے یا بہت دولت پانے سے رہا نہ کرے -

۳۴۸ - دھرم مٹانے کی حالت میں زمانہ کی تحریک سے براہمن کشتری ویشیہ تینوں ورن
ہتھیاروں کو دھارن کریں -

अष्टापाद्यन्तुशूद्रस्यस्तेयेभवतिकिल्बिषम्॥ षोडशैवतुवैश्य
स्यद्वात्रिंशत्क्षत्रियस्यच॥ ३३७॥ ब्राह्मणस्यचतुःषष्टीःपूर्णं-
वापिशतम्भवेत्॥ द्विगुणावाचतुःषष्टिस्तद्दोषगुणविद्धिसः
॥ ३३८॥ वानस्पत्यंमूलफलंदार्वग्न्यर्थंतथैवच॥ तृणांचगो-
भ्योग्रासार्थमस्तेयमनुरब्रवीत्॥ ३३९॥ योऽदत्तादायिनोह-
स्ताल्लिप्सेतब्राह्मणोधनम्॥ याजनाध्यापनेनापियथास्ते-
नस्तथैवसः॥ ३४०॥ द्विजोऽध्वगःक्षीणवृत्तिर्द्वाविक्षूद्वेचमूल-
के॥ आददानःपरक्षेत्रान्नदण्डंदातुमर्हति॥ ३४१॥ असंधि-
तानांसन्धातासन्धितानांचमोक्षकः॥ दासाश्वरथहर्ताच-
प्राप्तःस्याच्चोरकिल्बिषम्॥ ३४२॥

۳۳۷- جو شودر ویش وکشتری و براہمن چیزون کے گن اور دوش کو نہین جانتے اونکا چوری مین جو ڈنڈ کہا ہے اُسکا آٹھ گنا سولہ گنا بتیس گنا۔

۳۳۸- چونسٹھ گنا یا سو گنا یا ایک سو اٹھائیس گنا ڈنڈ بسلسلہ وار شودر ویش کشتری براہمن پر دین درحالیکہ چیزون کے گن و دوش کو جانتے ہون۔

۳۳۹- جو درخت وغیرہ محافظ کی حفاظت مین نہین ہے اُس درخت کا مول پھل و پھول اور ہون کیواسطے لکڑی اور گئو کے کھانیکے واسطے گھاس وغیرہ ان سب کو لیوے تو اُسکو سزا نہ دینا کیونکہ وہ چوری نہین ہے منُ جی نے کہا ہے۔

۳۴۰- جو براہمن چور کو پڑھا کر اور یگیہ کرا کر اُسکے ہاتھ سے دولت لینے کی خواہش کرتا ہے وہ براہمن بھی مثل چور کے ہے۔

۳۴۱- براہمن کشتری و ویش سب راستہ مین چلے جاتے ہون اور کھانے کو کچھ پاس نہو تو دوسرے کے کھیت سے دو گنا یعنی اکھ اور دو مولی لیوین تو ڈنڈ کے لائق نہین ہین۔

۳۴۲- دوسرے کا گھوڑا جو بندھا ہے اُسکو کھولدے یا نہ بندھے والا اور طویلہ مین بندھے ہوئے گھوڑے وغیرہ کو چھوڑنیوالا اور غلام اور گھوڑا [illegible] انکو لیجانیوالا چور کے پاپ کو پاتا ہے۔

परिपूतेषुधान्येषुशाकमूलफलेषुच॥ निरन्वयेशतंदण्डः
सान्वयेऽर्द्धशतंदमः॥ ३३१॥ स्यात्साहसंत्वन्वयवत्प्रसभंक-
र्मयत्कृतम्॥ निरन्वयंभवेत्स्तेयंहृत्वापव्ययतेचयत्॥ ३३२
॥ यस्त्वेतान्युपक्लृप्तानिद्रव्याणिस्तेनयेन्नरः॥ तमाद्यंदण्ड
येद्राजायश्चाग्निंचोरयेद्गृहात्॥ ३३३॥ येनयेनयथाङ्गेन
स्तेनोनृषुविचेष्टते॥ तत्तदेवहरेत्तस्यप्रत्यादेशायपार्थिवः॥
३३४॥ पिताचार्यःसुहृन्माताभार्यापुत्रःपुरोहितः॥ नादण्-
ड्योनामराज्ञोऽस्तियःस्वधर्मेनतिष्ठति॥ ३३५॥ कार्षा-
पणंभवेद्दण्ड्योयत्रान्यःप्राकृतोजनः॥ तत्रराजाभवेद्दण्ड्यः
सहस्रमितिधारणा॥ ३३६॥

۳۳۱ - صاف دھان یہ وساگ و مول و پھل اِنھوں میں سے کسی ایک چیز کے چرانے میں چرانیوالا اگر مالک کا رشتہ دار ہو یعنے ہم وطنی وغیرہ رشتہ رکھتا ہو تو پچاس پن ڈنڈ اور اگر رشتہ اور نسبت نہ رکھتا ہو تو سو پن ڈنڈ دیوے -

۳۳۲ - مالک کے دیکھتے ہوئے زبردستی سے چیز کو لیجا دے اور وقت استفسار کے لینے سے انکار کرے تو وہ بھی چور کہلاتا ہے -

۳۳۳ - جو آدمی دوسرے کی چیز کو چرا دیوے یا اگنی ہوتر کے مقام سے اگنی ہوتر کی اگنی کو اور گھر کی آگ کو چرا دے وہ پرتھم ساہس ڈنڈ پاوے اور اگنی استھاپن میں جو کچھ خرچ ہو وہ اگنی کے مالک اگنی ہوتری کو دیوے -

۳۳۴ - جس جس عضو سے دوسرے کی چیز کو چرا دے اُس اُس عضو کو قطع کرنا چاہئے تاکہ پھر ایسا کام نہ کرے

۳۳۵ - راجہ کے نزدیک کوئی آدمی ایسا نہیں کہ وہ بحالت جرمی قابل سزا نہ ہو بلکہ ماں و باپ و آچاریہ و دوست و زوجہ و فرزند و پروہت سب اپنے دھرم میں قائم نہ ہوں تو لائق سزا دینے کے ہیں -

۳۳۶ - جس جرم میں سوا راجہ کے اور آدمی کارشاپن ڈنڈ کے لائق ہوتے ہیں اُس جرم میں راجہ ہزار پن ڈنڈ کے لائق ہوتا ہے -

गोषुब्राह्मणसंस्थासुछुरिकायाश्चभेदने॥पशूनांहरणेचैव
सद्यःकार्योऽर्धपादिकः॥३२५॥सूत्रकार्पासकिण्वा-
नांगोमयस्यगुडस्यच॥दध्नःक्षीरस्यतक्रस्यपानीयस्यतृ-
णस्यच॥३२६॥वेणुवैदलभाण्डानांलवणानांतथैवच॥
मृन्मयानांचहरणेमृदोभस्मनएवच॥३२७॥मत्स्यानांपक्षि-
णांचैवतैलस्यचघृतस्यच॥मांसस्यमधुनश्चैवयच्चान्यत्पशु
सम्भवम्॥३२८॥अन्येषांचैवमादीनामद्यानामोदनस्यच
॥पक्वान्नानांचसर्वेषांतन्मूल्याद्द्विगुणोदमः॥३२९॥पुष्पे-
षुहरितेधान्येगुल्मवल्लीनगेषुच॥अन्येष्वपरिपूतेषुदण्डः
स्यात्पंचकृष्णलः॥३३०॥

۳۲۵ برہمن کی گئو چھین لینے اور سواری کے واسطے بانجھ گئو کی ناک چھید دینے اور بکرا وبھیڑا وغیرہ یگیہ کے لائق چار پایوں کے چرانے مین آدھا پانون فورًا کاٹنا چاہیئے

۳۲۶- اور تاگہ سوت اور کپاس کا سوت اور مہوا اور گوبر اور گڑ اور دہی اور دودھ اور چھاچھ اور جل اور ترن یعنے گھاس وغیرہ۔

۳۲۷- اور بانس کے ٹکڑے کا بنا ہوا پانی کا برتن اور مٹی کا برتن ومٹی وراکھ ونمک۔

۳۲۸- ومچھلی وپرند وتیل وگھی وگوشت وشراب واقسام مرگ چرم وشاخ گوزن وغیرہ۔

۳۲۹- اسی قسم کی اور جو چیزین ہین دال وبھات ولڈو وغیرہ پکوان انہین سے کسی ایک چیز کے چرانے مین اسکی قیمت سے دوچند تاوان دیوے۔

۳۳۰- پھولے ہوئے کھیت مین قائم سبزہ ودھانیہ اور مع پوست گلم لتا درخت اور ایک آدمی کے لیجانیکے لائق دھانیہ انہین سے کسی چیز کے چرانے مین ملک وقت کو دیکھکر ایک ماشہ سونا یا چاندی تاوان دیوے۔

धान्यंदशभ्यःकुम्भेभ्योहरतोऽभ्यधिकंवधः॥ शेषेप्येकादशगु-
णंदाप्यस्तस्यचतद्धनम्॥ ३२० ॥ तथाधरिममेयानांशतादभ्य-
धिकेवधः॥ सुवर्णरजतादीनामुत्तमानांचवाससाम्॥ ३२१
॥ पंचाशतस्त्वभ्यधिकेहस्तच्छेदनमिष्यते॥ शेषेत्वेकादश
गुणंमूल्याद्दण्डंप्रकल्पयेत्॥ ३२२॥ पुरुषाणांकुलीनानां
नारीणांचविशेषतः॥ मुख्यानांचैवरत्नानांहरणेवधमर्ह-
ति॥ ३२३॥ महापशूनांहरणेशस्त्राणामौषधस्यच॥ का-
लमासाद्यकार्यंचदण्डंराजाप्रकल्पयेत्॥ ३२४॥

۳۲۰ - دس* کنبھہ سے زیادہ غلہ چرا دے تو اسکو سزا بدنی دینا مگر چور و مالک مال کی حیثیت دیکھکر تنبیہ و قطع اعضا و قتل کی سزاؤن کو دینا چاہیے اگر اس مقدار سے کم چرا دے تو مال مسروقہ کا گیارہ گنا تاوان دینا چاہیے اور شئے مسروقہ کو مالک پاوے۔

۳۲۱ - سونا و چاندی و ٹپ بستران سبھون کو سو گنڈے سے اوپر چرانیوالے کو قتل کرنا چاہیے سزا کا حکم اخیر ملک و زمانہ و چور و مالک کی قومیت و حیثیت دیکھکر دینا چاہیے اسیطرح اشلوک آئندہ مین بھی جاننا۔

۳۲۲ - اگر اشیاء مرقومہ بالا پچاس گنڈے سے اوپر اور سو گنڈے کے اندر ہو تو اسکے چرانے مین ہاتھہ کاٹنا اور پچاس گنڈے کے نیچے جتنا ہو اسکا گیارہ گنا تاوان دیوے۔

۳۲۳ - خاندانی آدمی یا بڑے خاندان کی عورت یا عمدہ جواہراتون مین سے کسی ایک چیز کے چرانے یا غائب کر دینے مین قتل کرنا۔

۳۲۴ - ہاتھی گھوڑا بھینس گئو ہتھیار او دوا ان سبھون مین سے کسی ایک کے چرانے مین محط وغیرہ زمانہ و مطلب کو دیکھکر تنبیہ و قطع اعضا و قتل کی سزا راجہ دیوے۔

* ۲۰۰ گنڈے پیسے کے وزن کو درون کہتے ہین اور ۲۰ درون کا ایک کنبھہ کہلاتا ہے۔

राजा स्तेनेन गन्तव्यो मुक्तकेशेन धावता ॥ आचक्षाणेन त-
त्स्तेयमेवंकर्मास्मि शाधि माम् ॥ ३१४ ॥ स्कन्धेनादाय मुसलं
लगुडं वापि खादिरम् ॥ शक्तिं चोभयतस्तीक्ष्णामायसं दण्डमे-
व वा ॥ ३१५ ॥ शासनाद्वा विमोक्षाद्वा स्तेनः स्तेयाद्विमुच्यते ॥
अशासित्वा तु तं राजा स्तेनस्याप्नोति किल्बिषम् ॥ ३१६ ॥ अन्ना-
दे भ्रूणहा मार्ष्टि पत्यौ भार्यापचारिणी ॥ गुरौ शिष्यश्च याज्यश्च
स्तेनो राजनि किल्बिषम् ॥ ३१७ ॥ राजनिर्धूतदण्डास्तु कृत्वा
पापानि मानवाः ॥ निर्मलाः स्वर्गमायान्ति सन्तः सुकृतिनो
यथा ॥ ३१८ ॥ यस्तु रज्जुं घटं कूपाद्धरेद्भिन्द्याच्च यः प्रपाम् ॥ स द-
ण्डं प्राप्नुयान्माषं तच्च तस्मिन्समाहरेत् ॥ ३१९ ॥

۳۱۴ - براہمن کا دس ماشہ سونا وغیرہ چرانے والا اپنی چوٹی کو کھولکر دوڑ کر راجہ کے روبرو جاکر -

۳۱۵ - موسل یا کھیر کی لاٹھی یا دونوں طرف سے تیز برچھی یا لوہے کا ڈنڈا کندھے پر رکھکر کہے کہ ایسا کام کرنیوالا میں ہوں مجھکو سزا دیجیے -

۳۱۶ - راجہ اسکو سزا دے یا چھوڑ دے تو وہ مجرم چوری کے پاپ سے چھوٹ جاتا اور اگر راجہ اسکو رحم سے سزا نہ دیوے تو چور کے پاپ کو پاوے -

۳۱۷ - اسقاط حمل کرنیوالا وقتیکہ عورت و چیلا و یگیہ کرنیوالا و چور یہ سب اپنے پاپ کو سلسلہ وار بھوجن دینے والے و شوہر و گرو و راجہ افعل میں دھو ڈالتے ہیں -

۳۱۸ - جسطرح نیک کرنیوالے لوگ بہشت میں جاتے ہیں اسیطرح پاپ کرنیوالے آدمی جو راجہ سے سزا پاکر پاک صاف ہوکر بہشت میں جاتے ہیں -

۳۱۹ - کنوئیں سے رسی اور گھڑا چرانیوالا و پیاؤ کو گرانیوالا ایک ماشہ سونا تاوان دیوے اور گھڑے اور رسی کو کنوئیں پر رکھدیوے -

अरक्षितारंराजानंबलिषड्भागहारिणम्॥ तमाहुःसर्वलोक
स्यसमग्रमलहारकम्॥ ३०८॥ अनपेक्षितमर्य्यादंनास्तिकं
विप्रलुम्पकम्॥ अरक्षितारमत्तारंनृपंविद्यादधोगतिम् ३०९
॥ अधार्मिकंत्रिभिर्न्यायैर्निगृह्णीयात्प्रयत्नतः॥ निरोधनेन
बन्धेनविविधेनबधेनच॥ ३१०॥ निग्रहेणाहिपापानांसाधू-
नांसंग्रहेणाच॥ द्विजातयइवेज्याभिःपूयन्तेसततंनृपाः॥
३११॥ क्षन्तव्यंप्रभुणानित्यंक्षिपतांकार्य्यिणांनृणाम्॥ बा-
लवृद्धातुराणांचकुर्वताहितमात्मनः॥ ३१२॥ यःक्षिप्तोम-
र्षयत्यार्तैस्तेनस्वर्गेमहीयते॥ यस्त्वैश्वर्य्यान्नक्षमतेनरकंते
नगच्छति॥ ३१३॥

۳۰۸- جو راجہ رعیت کی حفاظت نہیں کرتا اور رعیت سے اپنا حصہ یعنے محصول لیتا ہے۔ وہ تمام آلایش و آخور کو لیتا ہے۔

۳۰۹- مرجاد کو چھوڑنے والا اور ناستک (یعنے پرلوک کو نہ ماننے والا) اور کوٹنے والا اور رعیت کی حفاظت نکرکے اپنا محصول لینے والا جو راجہ ہے وہ نرک میں جاتا ہے۔

۳۱۰- روکنا اور باندھنا اور انواع اقسام کی سزا سے بدلی دینا ان تینوں سزاؤں کے وسیلہ تدبیر سے مجرموں کو سزا دیوے۔

۳۱۱- مجرموں کو سزا دینے اور سادھو مہاتماؤں کی حفاظت اور نگہبانی کرنے سے راجہ مانند برہمن و کشتری و ویشیہ کے پاک ہوتا ہے۔

۳۱۲- اپنا بھلا چاہنے والا آدمی مدعی و مدعا علیہ اور بالک اور بوڑھے اور دکھی آدمیوں کی باتوں کی برداشت کرے جو کہ رنج کی حالت میں کہتے ہوں۔

۳۱۳- مصیبت زدہ کی نالائق باتوں کو سنکر جو برداشت کرتا ہے وہ سورگ میں عزت پاتا ہے اور جو حکومت کی خیال سے برداشت نہیں کرتا وہ نرک میں جاتا ہے۔

परसंयत्नमातिष्ठेत्स्तेनानांनिग्रहेन्नृपः॥ स्तेनानांनिग्रहादस्य
यशोराष्ट्रंचवर्द्धते॥ ३०२॥ अभयस्यहियोदातासपूज्यःसततं
नृपः॥ सत्रंहिवर्द्धतेतस्यसदैवाभयदक्षिणाम्॥ ३०३॥सर्वतो
धर्म्मषड्भागोराज्ञोभवतिरक्षतः॥ अधर्म्मादपिषड्भागोभ-
वत्यस्यह्यरक्षतः॥ ३०४॥यदधीतेयद्यजतेयद्ददातियदर्चति
॥ तस्यषड्भागभाग्राजासम्यग्भवतिरक्षणात्॥ ३०५॥रक्ष-
न्धर्म्मेणभूतानिराजावध्यांश्चघातयन्॥ यजतेऽहरहर्यज्ञैः
सहस्रशतदक्षिणैः॥ ३०६॥ योऽरक्षन्बलिमादत्तेकरंशुल्कं
चपार्थिवः॥ प्रतिभागंचदण्डंचससद्योनरकंव्रजेत्॥ ३०७

۳۰۲- چورون کو سزا دینے مین بڑی تدبیر کرے اُس سے راجہ کا یش (نیکنامی) اور راج ترقی پاتا ہے۔

۳۰۳- رعیت کو بیخوف کرنیوالا راجہ ہر ایک وقت پر لائق تعظیم ہوتا ہے اور ہمیشہ اُس راجہ کی بیخوف دکشنا والی یگیہ بڑھتی ہے۔

۳۰۴- چارو طرف سے رعیت کی حفاظت کرنے سے رعیت کے دھرم کا چھٹوان حصہ راجہ پاتا ہے اور حفاظت نکرنے سے اُسکے ادھرم کا چھٹوان حصہ پاتا ہی۔

۳۰۵- رعیت کی حفاظت کرنیسے رعیت کے کئے ہوئے پاٹھ و یگیہ و دان و پوجا کے چھٹوین حصہ کو راجہ پاتا ہے۔

۳۰۶- دھرم سے سب جانداروں کی حفاظت کرتا ہوا اور قطع اعضا خواہ قتل کے لائق مجرمون کو سزا دیتا ہوا راجہ لاکھ دکشنا والی یگیہ کو ہر روز کرتا ہی۔

۳۰۷- جو راجہ بدون حفاظت کرنے رعیت کے رعایا سے محصولات وغیرہ لیتا ہی وہ راجہ جلد نرک مین جاتا ہے

मनुष्यमारणोक्षिप्रंचौरवत्किल्बिषंभवेत्।।प्राणभृत्सुमह-
त्स्वर्द्धंगोगजोष्ट्रहयादिषु।।२९६।।क्षुद्रकाणांपशूनान्तु-
हिंसायांद्विशतोदमः।।पंचाशत्तुभवेद्दण्डःशुभेषुमृगपक्षि
षु।।२९७।।गर्दभाजाविकानान्तुदण्डःस्यात्पंचमाषिकः।।मा-
षकस्तुभवेद्दण्डःश्वसूकरनिपातने।।२९८।।भार्य्यापुत्रश्च
दासश्चप्रेष्योभ्राताचसोदरः।।प्राप्तापराधास्ताड्याःस्युरज्ज्वा
वेणुदलेनवा।।२९९।।पृष्ठतस्तुशरीरस्यनोत्तमांगेकथंचन।।
अतोन्यथातुप्रहरन्प्राप्तःस्याच्चौरकिल्बिषम्।।३००।।एषोऽ
खिलेनाभिहितोदण्डपारुष्यनिर्णयः।।स्तेनस्यातःप्रवक्ष्या-
मिविधिंदण्डविनिर्णये।।३०१।।

۲۹۶- آدمی کے مارنے مین جلد چور کی طرح مجرم ہوتا ہے اُتم ساہس ڈنڈ کے لایق ہوتا ہے اور گئو و ہاتھی و گھوڑا و اونٹ وغیرہ جو بڑے جانور ہین انھون کے مارنے مین مدھیم ساہس ڈنڈ دیوے۔

۲۹۷- چھوٹے چارپایہ کے مارنے مین دوسَو پن یعنے ڈنڈ دیوے اور جو پرند و ہرن اچھے ہین انھون کے مارنے مین پچاس پن ڈنڈ دیوے۔

۲۹۸- گدہا بکری بھیڑا انھون کے مارنے مین ایک ماشہ چاندی ڈنڈ دیوے۔

۲۹۹- استری و بیٹا و غلام و شاگرد و برادر حقیقی انھون سے جرم سرزد ہو تو رسّی اور بانس چھڑی سے انکو سزا دینا چاہیے۔

۳۰۰- پیشانی چھوڑ کر پشت مین مارنا چاہیے اسکے خلاف تنبیہ کرے تو چور کے پاپ کو پاوے یعنے تنبیہ و جرمانہ کے لایق ہووے۔

۳۰۱- یہ سب مار پیٹ کے جرمون کی تنقیح کو بیان کیا اسکے بعد چور کی سزا دہی کے طریق کو بیان کرینگے۔

छिन्नेचैवयंत्राणांयोक्त्ररश्म्योस्तथैवच ॥ आक्रन्देचाप्यपै-
हीतिनदण्डंमनुरब्रवीत् ॥ २९२ ॥ यत्रापवर्त्ततेयुग्यंवैगुण्या-
त्प्राजकस्यतु ॥ तत्रस्वामीभवेद्दण्ड्योहिंसायांद्विशतंदम-
म् ॥ २९३ ॥ प्राजकश्चेद्भवेदाप्तःप्राजकोदण्डमर्हति ॥ यु-
ग्यस्थाःप्राजकेऽनाप्तेसर्वेदण्ड्याःशतंशतम् ॥ २९४ ॥ स-
चेत्तुपथिसंरुद्धःपशुभिर्वारथेनवा ॥ प्रमापयेत्प्राणभृत-
स्तत्रदण्डोऽविचारितः ॥ २९५ ॥

۲۹۲- بانڈھنے کا چمڑا چارپایہ کے گلے کی رسّی کوڑا یہ سب ٹوٹ گئے ہوں اور آواز بلند سے سارتھی (یعنے رتھ ہانکنے والا) نے پکارا ہو کہ ہٹ جاؤ تو رتھی و سارتھی و مالک رتھ انہیں سے کسیکو ڈنڈ نہ دینا چاہئے۔

۲۹۳- جس مقام پر رتھ سارتھی کے قصور سے جیسا چلنا چاہئے ویسا نہیں چلتا ہے اور اس چال سے کوئی مرگیا ہے تو اوس مقام پر بدون سیکھے ہوئے سارتھی کو رتھ پر نوکر رکھنے سے مالک رتھ کا دوسو پن ڈنڈ دیوے۔

۲۹۴- سارتھی رتھ ہانکنے میں ہوشیار ہو اور رتھ سے کوئی مرگیا ہو تو سو پن ڈنڈ سارتھی دیوے سارتھی ہوشیار نہو اور رتھ سے کوئی مرگیا ہو تو بدون سیکھے ہوئے سارتھی کو رتھ پر مقرر کرنے سے مالک رتھ و سارتھی و رتھ کا سوار یہ سب سو سو پن ڈنڈ دیویں۔

۲۹۵- سارتھی کے روبرو دوسرا رتھ آیا خواہ بہت گئو وغیرہ چارپایہ روبرو آگئے اور انکی وجہ سے رتھ رک گیا اور سارتھی آپ رتھ کو پیچھے لیجانے کی قدرت نہیں رکھتا ہو اور گھوڑے کو کوڑا مار کر آگے لیجاتا ہے اسمیں کوئی مرگیا تو بیچار نکرنا سارتھی کو ڈنڈ دینا۔

अंगावपीडनायां च व्रणशोणितयोस्तथा ॥ समुत्थानव्ययं
दाप्यः सर्वदण्डमथापि वा ॥ २८७ ॥ द्रव्याणि हिंस्याद्यो यस्य
ज्ञानतोऽज्ञानतोपि वा ॥ स तस्योत्पादयेत्तुष्टिं राज्ञो दद्याच्च त-
त्समम् ॥ २८८ ॥ चर्मचार्मिकभांडेषु काष्ठलोष्ठमयेषु च ॥ मू-
ल्यात्पंचगुणो दण्डः पुष्पमूलफलेषु च ॥ २८९ ॥ यानस्य चै-
व यातुश्च यानस्वामिन एव च ॥ दशातिवर्तनान्याहुः शेषे द-
ण्डो विधीयते ॥ २९० ॥ छिन्ननास्ये भग्नयुगे तिर्यक्प्रतिमु-
खागते ॥ अक्षभंगे च यानस्य चक्रभंगे तथैव च ॥ २९१ ॥

۲۸۷- ہاتھ پاؤں وغیرہ میں سوراخ کرنے اور خون نکلنے سے دکھ دینے والا آدمی اس زخمی کو خرچ و خوراک و ادویہ اتنے دنوں کا دیوے جتنے دنوں میں وہ زخمی صحیح البدن ہو جاوے اور اگر اس خرچ کے دینے سے انکار کرے تو خرچ اور ڈنڈ دونوں دیوے۔

۲۸۸- کوئی آدمی دانستہ خواہ نادانستہ کسی کی دولت برباد کرے تو اسکو راضی و خوش کرے اور اس دولت کے برابر راجہ کو ڈنڈ دیوے۔

۲۸۹- چمڑا چمڑے کا برتن کاٹھ کا برتن مٹی کا برتن پھول پھل مول انھوں کو برباد کرنیوالا اصل چیز سے پچگنا ڈنڈ دیوے۔

۲۹۰- سواری و سوار و سواری کا مالک ان سب کو دس مقام پر ڈنڈ دینا چاہیئے اور مقام پر ڈنڈ دینا مناسب ہے۔

۲۹۱- بیل کے ناتھ کی رسی اور جوا ٹوٹ گیا ہو زمین کے اونچے نیچے ہونے سے رتھ وغیرہ ٹیڑھا ہو گیا ہو اور روبرو آیا ہو رتھ کے پایہ کے اندر کی لکڑی ٹوٹ گئی ہو رتھ کا پایہ ٹوٹ گیا ہو۔

सहासनमभिप्रेप्सुरुत्कृष्टस्यापकृष्टजः ॥ कट्यांकृतांकोनि-
र्वास्यः स्फिचंवास्यावकर्त्तयेत् ॥ २८१ ॥ अवनिष्ठीवतोदर्प्पा
द्द्वावोष्ठौछेदयेन्नृपः ॥ अवमूत्रयतोमेढ्रमवशर्धयतोगुदम् ॥
२८२ ॥ केशेषुगृह्णतोहस्तौछेदयेदविचारयन् ॥ पादयोर्दाढि-
कायांचग्रीवायांवृषणेषुच ॥ २८३ ॥ त्वग्भेदकःशतंदण्ड्यो
लोहितस्यचदर्शकः ॥ मांसभेत्तातुषण्निष्कान्प्रवास्यस्त्वस्थि
भेदकः ॥ २८४ ॥ वनस्पतीनांसर्वेषामुपभोगंयथायथा ॥ तथा
तथादमःकार्योहिंसायामितिधारणा ॥ २८५ ॥ मनुष्याणां
पशूनांचदुःखायप्रहृतेसति ॥ यथायथामहद्दुःखंदण्डंकुर्य्या
त्तथातथा ॥ २८६ ॥

۲۸۱- چھوٹا آدمی بڑے آدمی کے ساتھ ایک آسن پر بیٹھے تو اسکی کمر مین نشان کرکے نکال دیوے خواہ اسطرح اسکے چوتڑ کو کاٹ دے کہ وہ مرنے نہ پاوے۔

۲۸۲- غرور سے بدن پر تھوکے تو دونون ہونٹھ چھید ڈالے اور پیشاب کرے تو عضو تناسل کو کاٹ ڈالے اور پراز کرے تو مقعد کاٹ ڈالے۔

۲۸۳- جو شودر براہمن کے بال و پانون و داڑھی و گلا و فوطہ کو غرور سے پکڑنیوالا ہے اسکا ہاتھ کاٹنا چاہئے یہ نہ خیال کرنا چاہئے کہ اسکو تکلیف ہوگی۔

۲۸۴- جلد بدن کو چھیدنے والا خون نکالنے والا یہ دونون سوین ڈنڈ پاوین اور گوشت بدن کو علیحدہ کرنیوالا چھ نشک ڈنڈ کو پاوے اور استخوان بدن کو چھیدنیوالا دیش سے نکالا جاوے یہ ڈنڈ ملکیان ذات مین جاننا چاہئے۔

۲۸۵- تمام درختونکا جیسا جیسا تصرف کرے ویسا ویسا ڈنڈ پاوے مارنے مین ویسا ہی جاننا یہ شاستر کا حکم ہے۔

۲۸۶- آدمی و چارپایہ انکو جیسا جیسا دکھ دیوے ویسا ویسا ڈنڈ پاوے۔

मातरंपितरंजायांभ्रातरंतनयंगुरुम्।। आक्षारयञ्छतंदाप्यः
पन्थानंचाददद्गुरोः।।२७५।।ब्राह्मणक्षत्रियाभ्यांतुदण्डःका-
र्योविजानता।। ब्राह्मणेसाहसःपूर्वःक्षत्रियेत्वेवमध्यमः ।।
२७६।। विट्शूद्रयोरेवमेवस्वजातिंप्रतितत्त्वतः।।छेदवर्जंप्रण-
यनंदण्डस्येति विनिश्चयः।।२७७।।एषदण्डविधिःप्रोक्तो-
वाक्पारुष्यस्यतत्त्वतः।। अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामिदण्डपारुष्य
निर्णयम्।। २७८।। येनकेनचिदङ्गेनहिंस्याच्चेच्छ्रेष्ठमन्त्यजः।।
छेत्तव्यंतत्तदेवास्यतन्मनोरनुशासनम्।। २७९।। पाणिमुद्य-
म्यदण्डंवापाणिच्छेदनमर्हति।। पादेनप्रहरन्कोपात्पादच्छे-
दनमर्हति।। २८०।।

٢٧٥- ماتا پتا استری بھائی بیٹیا گرو اِن سب کو اگر ایسا کہے کہ تم پاتکی ہو اور گرو کو راہ نہ دیوے
تو سو پن ڈنڈ دیوے-

٢٧٦- براہمن کو کشتری یا کشتری کو براہمن کلمات حقارت آمیز آواز بلند کہے تو براہمن کو
پورب ساہس ڈنڈ اور کشتری کو مدھیم ساہس ڈنڈ دیوے-

٢٧٧- اسیطرح ویشیہ اور شودر میں بھی اپنی ذات میں سوائے زبان میں سوراخ کرنے کے
باقی سب ڈنڈ جاننا یہ شاستر کا حکم ہے-

٢٧٨- سخت گفتاری کی سزادن کا بیان کیا اُسکے بعد مار پیٹ کی سزادن کا طریق کہتے ہیں
٢٧٩- چانڈال وغیرہ جس عضو سے بڑے آدمیوں کے عضو پر ضرب کرے اس عضو کو کاٹ ڈالنا
یہی منُ جی کا حکم ہے-

٢٨٠- ہاتھ کے ضرب سے مارے تو ہاتھ کاٹنا چاہیے پاؤن کے ضرب سے مارے تو پاؤن کو
کاٹنا چاہیے-

समवर्णेद्विजातीनांद्वादशैवव्यतिक्रमे॥वादेष्ववचनीयेषुत-
देवद्विगुणंभवेत्॥२६९॥एकजातिर्द्विजातींस्तुवाचादारुणा
याक्षिपन्॥जिह्वायाःप्राप्नुयाच्छेदंजघन्यप्रभवोहिसः॥२७०
॥नामजातिग्रहंत्वेषामभिद्रोहेणकुर्वतः॥निक्षेप्योऽयोमयः
शंकुर्ज्वलन्नास्येदशांगुलः॥२७१॥धर्मोपदेशंदर्पेणवि-
प्राणामस्यकुर्वतः॥तप्तमासेचयेत्तैलंवक्त्रेश्रोत्रेचपार्थिवः
॥२७२॥श्रुतंदेशंचजातिंचकर्मशारीरमेवच॥वितथेनब्रुवन्द-
र्पाद्दाप्यःस्याद्द्विशतंदमम्॥२७३॥काणंवाप्यथवाखंजम-
न्यंवापितथाविधम्॥तथ्येनापिब्रुवन्दाप्योदण्डंकार्षाप-
णावरम्॥२७४॥

۲۶۹- ہمقوم مین سخت گفتاری مرقومہ بالا کے کرنے سے بارہ پن اور جو بات کہنے کے لائق نہین ہے اسکے کہنے سے چوبیس پن ڈنڈ ہوتا ہے۔

۲۷۰- اگر شودر براہمن یا کشتری یا ویشیہ سے سخت زبانی کرے تو اسکی زبان مین سوراخ کیا جاوے کیونکہ وہ عضو حقیر سے یعنی پانون سے پیدا ہوا ہے۔

۲۷۱- جو شودر دارے تو فلانے براہمن سے نیچ (ایسا آواز بلند سے) براہمن وغیرہ کے نام اور ذات کو کہے تو اسکے منہ مین بارہ انگل کی سیخ آہنی جلتی ہوئی ڈالنا چاہیئے۔

۲۷۲- جو شودر براہمنون کو غرور سے دھرم کا اپدیش کرنیوالا ہو اسکے منہ اور کان مین گرم تیل راجہ ڈالے۔

۲۷۳- ایکبیان ذات مین ڈنڈ کہتے ہین کہ جو شخص کسیکو غرور سے کہے کہ تمہارا اپنا نہین ہے تم اس ملک مین پیدا نہین ہوئے تمہاری یہ ذات نہین ہے تمہارا جنیو وغیرہ نہین ہے ایسا غرور سے کہنے والا دو سو پن ڈنڈ دیوے۔

۲۷۴- جو کانا یا لنگڑا ہے اسکو راستی سے بھی کانا یا لنگڑا نہ کہنا چاہیئے اور جو کبھی کہے تو ایک کارشاپن ڈنڈ دیوے۔

सामन्ताश्चेन्मृषा ब्रूयुः सेतौ विवदतां नृणाम् ॥ सर्वे पृथक्पृथ-
ग्दण्ड्या राज्ञा मध्यमसाहसम् ॥ २६३ ॥ गृहं तडागमारामं क्षे-
त्रं वा भीषया हरन् ॥ शतानि पंच दण्ड्यः स्यादज्ञानाद्द्विशतो
दमः ॥ २६४ ॥ सीमायामविषह्यायां स्वयं राजैव धर्मवित् ॥
प्रदिशेद्भूमिमेतेषामुपकारादिति स्थितिः ॥ २६५ ॥ एषोऽखि-
लेनाभिहितो धर्मः सीमाविनिर्णये ॥ अत ऊर्ध्वं प्रवक्ष्यामि
वाक्पारुष्यविनिर्णयम् ॥ २६६ ॥ शतं ब्राह्मणमाक्रुश्य क्ष-
त्रियो दण्डमर्हति ॥ वैश्योऽप्यर्द्धशतं द्वे वा शूद्रस्तु वधमर्हति ॥
२६७ ॥ पंचाशद्ब्राह्मणो दण्ड्यः क्षत्रियस्याभिशंसने ॥ वैश्ये
स्यादर्द्धपंचाशच्छूद्रे द्वादशको दमः ॥ २६८ ॥

۲۶۳- گانون والے جھوٹھ بولیں تو راجہ ایک ایک کو مدہیم ساہس ڈنڈ دیوے۔
۲۶۴- گھر تالاب باغیچہ کھیت ان سب کو خوف دکھا کر چھین لینے والے کو پانسو پن ڈنڈ دیوے اور اگر بیان سے چھین لینے والے کو دو سو پن ڈنڈ دیوے۔
۲۶۵- نشان و گواہ وغیرہ مرقومہ بالا کے نہ ہونے میں دھرم جاننے والا راجہ اس شخص کو زمین دیوے جسکا اس زمین کے پانے سے بہت اپکار ہوتا ہو یہ شاستر کی مرجادا ہے۔
۲۶۶- یہ سب تحقیقیں حدود کی کہی گئیں اسکے بعد سخت گفتاری کے جرم اور سزا کی تحقیق کرینگے۔
۲۶۷- اگر کشتری کسی براہمن کو چور کہے تو سو پن ڈنڈ دیوے اور اگر ویشیہ ایسی بات کہے تو ڈیڑھ سو یا دو سو پن ڈنڈ دیوے اور اگر شودر ایسی بات کہے تو قطع عضو کے لائق ہے۔
۲۶۸- اگر براہمن سخت بات مرقومہ بالا (یعنے چور) کشتری کو کہے تو پچاس ڈنڈ دیوے ویشیہ کو کہے تو پچیس ۲۵ پن ڈنڈ دیوے شودر کو کہے تو بارہ پن ڈنڈ دیوے۔

साक्ष्यभावेतुचत्वारोग्रामाःसामन्तवासिनः ॥ सीमाविनिर्णयंकुर्युःप्रयताराजसन्निधौ ॥ २५८ ॥ सामन्तानामभावेतुमौ-लानांसीम्निसाक्षिणाम् ॥ इमानप्यनुयुञ्जीतपुरुषान्वनगोचरान् ॥ २५९ ॥ व्याधाञ्छाकुनिकान्गोपान्कैवर्त्तान्मूलखानकान् ॥ व्यालग्राहानुञ्छवृत्तीनन्यांश्चवनचारिणः ॥ २६० ॥ तेपृष्टास्तुयथाब्रूयुःसीमासन्धिषुलक्षणम् ॥ तत्त-थास्थापयेद्राजाधर्म्मेणग्रामयोर्द्वयोः ॥ २६१ ॥ क्षेत्रकूपत-डागानामारामस्यगृहस्यच ॥ सामन्तप्रत्ययोज्ञेयःसीमासे-तुविनिर्णयः ॥ २६२ ॥

۲۵۸ - گواہ بھی نہ ملیں تو گانوں کے چاروطرف کے رہنے والوں میں سے چار آدمی نیک تدبیر سے راجہ کے روبرو حد کی تنقیح کریں -

۲۵۹ - گانوں کے رہنے والے بھی نہ ملیں تو جو لوگ اور آبادی گانوں سے پشت در پشت اُسی گانوں کے رہنے والے بھی نہ ملیں تو جو لوگ اور آبادی گانوں سے پشت در پشت اُسی گانوں کے رہنے والے ہوں اُن سے تنقیح حدود کرانا چاہیئے یہ بھی نہ ملیں یا تنقیح نہ کر سکیں تو جنگل کے رہنے والوں کو تنقیح کے واسطے حکم دینا چاہیئے -

۲۶۰ - شکاری اور پرند پکڑنیوالے اور گئو چرانیوالے و مچھلی بیچنے سے اوقات بسر کرنیوالے و کند مول اُکھاڑ کر بیچنے والے و سانپ پکڑنیوالے و اُنچھ سے اوقات بسر کرنیوالے و جنگل کے رہنے والے یہ سب اپنے مطلب کے واسطے اُس گانوں سے ہر وقت جنگل کو جاتے ہوئے اُس گانوں کی حد کو جاننے والے ہوتے ہیں -

۲۶۱ - وقت استفسار کے یہ سب جیسا نشان حد کا بیان کریں اُسی طرح راجہ دھرم سے دونوں گانوں کی حدود قائم کرے -

۲۶۲ - کھیت - کنواں - تالاب باغیچہ گھر ان سبھوں کی حد کی تنقیح گانوں والوں کے بیان سے جاننا چاہیئے -

एतैर्लिङ्गैर्नयेत्सीमां राजा विवदमानयोः॥ पूर्वभुक्त्या च सततमुदकस्यागमेन च॥२५२॥ यदि संशय एव स्याल्लिङ्गानाम-
पि दर्शने॥ साक्षिप्रत्यय एव स्यात्सीमावादविनिर्णयः॥२५३
ग्रामीयककुलानां च समक्षं सीम्नि साक्षिणः॥ प्रष्टव्याः सी-
मलिङ्गानि तयोश्चैव विवादिनोः॥२५४॥ ते पृष्टास्तु यथा ब्रू-
युः समस्ताः सीम्नि निश्चयम्॥ निबध्नीयात्तथा सीमां सर्वां-
स्तांश्चैव नामतः॥२५५॥ शिरोभिस्ते गृहीत्वोर्वीं स्रग्विणो
रक्तवाससः॥ सुकृतैः शापिताः स्वैः स्वैर्नयेयुस्ते समञ्जसम्॥
२५६॥ यथोक्तेन नयन्तस्ते पूयन्ते सत्यसाक्षिणः॥ विपरीतं-
नयन्तस्तु दाप्याः स्युर्द्विशतं दमम्॥२५७॥

۲۵۲- یہ سب نشانات اور زمانہ ماضی میں قبضہ وتصرف اور نالہ وغیرہ پانی کا راستہ ان سب کے وسیلہ سے راجہ حدود کی تنقیح وتصفیہ کرے۔

۲۵۳- جب نشان کے دیکھنے میں شک ہو تب گواہوں کے بیانات سے تنازع حدود کی تنقیح وتصفیہ کرے۔

۲۵۴- گانوں کے آدمیوں اور فریقین کے روبرو گواہوں سے نشانات حدود پوچھنا چاہئے۔

۲۵۵- وے سب ایک صلاح ہو کر جیسا تصفیہ کریں اسیطرح حدبندی کرے اور ان سب گواہوں کا نام بھی تصفیہ حدود کے کاغذ پر لکھے۔

۲۵۶- وے سب گواہ پھولوں کی مالا اور لال کپڑے پہنکر سر پر مٹی کا ڈھیلا رکھکر اور تنقیح کرنیوالے سے ایسا کلام (کہ نشان دروغ وکہلاوگے تو تمہارا اچھنیہ جاتا رہیگا) سنکر جیوں کا تیوں حد کی تنقیح کریں۔

۲۵۷- واجبی تنقیح کریں تو بوجہ راست بیانی کے پاک ہو جاتے ہیں اور غلط تنقیح کریں تو ہر ایک دو سو پن تاوان دیوے۔

सीमावृक्षांश्च कुर्वीत न्यग्रोधाश्वत्थकिंशुकान्॥ शाल्मली
सालतालांश्च क्षीरिणश्चैव पादपान्॥२४६॥ गुल्मान्वेणूं-
श्च विविधाञ्छमीवल्लीस्थलानि च॥ शरान्कुब्जकगुल्मांश्च
तथा सीमा न नश्यति॥२४७॥ तडागान्युदपानानि वाप्यः प्र-
स्रवणानि च॥ सीमासन्धिषु कार्याणि देवतायतनानि च॥
२४८॥ उपच्छन्नानि चान्यानि सीमालिंगानि कारयेत्॥ सी
माज्ञाने नृणां वीक्ष्य नित्यं लोके विपर्ययम्॥२४९॥ अश्म-
नोऽस्थीनि गोवालांस्तुषान्भस्म कपालिकाः॥ करीषमिष्ट
कांगाराञ्छर्करा बालुकास्तथा॥२५०॥ यानि चैवं प्रकारा-
णि कालाद्भूमिर्न भक्षयेत्॥ तानि सन्धिषु सीमायामप्रका-
शानि कारयेत्॥२५१॥

۲۴۶- برگد۔ پیپل۔ ڈھاک۔ سیمبل۔ سال۔ تال۔ شیر دار درخت ان میں سے کسی ایک کو حدود کے درمیان میں لگانا چاہیے۔

۲۴۷- جھاڑی و بانس و انواع اقسام کے کم و زیادہ کٹیلے درخت اور اونچی زمین اور ٹیڑھی جھاڑی ان میں سے کسی ایک کو حد کے درمیان لگانا چاہیے۔ اس سے حد کا نشان ملتا ہے

۲۴۸- تالاب و چاہ و باولی و جھرنا و دیواستھان ان میں سے کسی کو حدود کی سینڈ میں قائم کرنا چاہیے۔

۲۴۹- حدود کی پہچان میں آدمیوں کو الٹ پلٹ دیکھا اور بھی پوشیدہ نشانات قائم کرنا چاہیے

۲۵۰- پتھر۔ ہڈی۔ گئو کے بال۔ بھوسہ۔ راکھ۔ ٹھکرا۔ کرسی۔ اینٹ۔ کوئلا۔ کنکرا۔ بالو۔

۲۵۱- جلو بیت ون تک بھی نہ کھائے ایسی جو چیزیں ہیں ان سب کو حد کے اندر رکھنا چاہیے۔ یہ پوشیدہ نشانات ہیں۔

क्षेत्रेष्वन्येषुतुपशुःसपादंपणमर्हति॥ सर्वत्रतुसदोदेयःक्षे-
त्रिकस्येतिधारणा॥ २४१ ॥ अनिर्दशाहांगांसूतांवृषान्देव
पशूंस्तथा॥ सपालान्वाविपालान्वानदण्ड्यान्मनुरब्रवी-
त्॥२४२॥क्षेत्रियस्यात्ययेदंडोभागाद्दशगुणोभवेत्॥ततो
ऽर्द्धदंडोभृत्यानामज्ञानात्क्षेत्रियस्यतु॥२४३॥एतद्विधान-
मातिष्ठेद्धार्मिकःपृथिवीपतिः॥ स्वामिनांचपशूनांचपाला
नांचव्यतिक्रमे॥२४४॥सीमांप्रतिसमुत्पन्नेविवादेग्रामयो
र्द्वयोः॥ज्येष्ठेमासिनयेत्सीमांसुप्रकाशेषुसेतुषु॥२४५॥

۲۴۱- راستہ اور گاؤن کے متصل والے کھیت کے سوا دوسرے کھیت مین چارپایہ اُس کھیت کی چیز کو برباد کرے تو چرواہا سواپن ڈنڈ دیوے اور جرم کے موافق مالک چارپایہ یا چرواہا لقیناً حاصل اراضی مالک زمین کو دیوے۔

۲۴۲- چرواہا ساتھ ہو یا نہو ایسی گئو جو بچہ جنے ہوئے دس دن نہ گذرے ہون اور و دن کے اندر کھیت کو برباد کرے یا سانڈ کھیت کو برباد کرے تو سزا کے لائق نہین ہے یہ من جی نے کہا ہے۔

۲۴۳- بٹائی کے کھیت کے غلہ وغیرہ کو کاشتکار کے چارپایہ نے کھالیا ہو یا وقت تردد کے تخم ریزی نہ کی ہو تو جسقدر منافع سرکاری کا نقصان ہوا ہو اُسکا دس گنا تاوان دیوی اور اگر کاشتکار کے نوکرون نے بیوقوفی سے اُسکی زراعت کا مطابق بیان بالا کیا ہو تو نوکر پنج گنا تاوان دیوے۔

۲۴۴- مالک چرواہا و چارپایہ انھون کے جھگڑے مین اسطرحکی بدھ دھرماتما راجہ کرے۔

۲۴۵- دو گاؤن کی حدود کے جھگڑے کے تصفیہ کو جیٹھ کے مہینہ مین جبوقت ظاہر ہوئے نشانات حدود کے کرے۔

अजाविकेतुसंरुद्धेवृकैः पालेत्वनायति ॥ यांप्रसह्यवृकोहन्यात्पालेतत्किल्विषंभवेत ॥ २३५ ॥ तासांचेदवरुद्धानांचरन्तीनांमिथोवने ॥ यामुत्प्लुत्यवृकोहन्यान्नपालस्तत्रकिल्विषी ॥ २३६ ॥ धनुःशतंपरीहारोग्रामस्यस्यात्समन्ततः ॥ शम्यापातास्त्रयोवापि त्रिगुणोनगरस्यतु ॥ २३७ ॥ तत्रापरिवृतंधान्यंविहिंस्युःपशवोयदि ॥ नतत्रप्रणयेद्दण्डंनृपतिःपशुरक्षिणाम् ॥ २३८ ॥ वृत्तिंतत्रनकुर्वीतयामुष्ट्रोनविलोकयेत ॥ छिद्रंचवारयेत्सर्वंश्वसूकरमुखानुगम् ॥ २३९ ॥ पथिक्षेत्रेपरिवृतेग्रामन्तीयेऽथवापुनः ॥ सपालः शतदण्डार्हो विपालान्वारयेत्पशून् ॥ २४० ॥

٢٣٥- بکری یا بھیڑی کو بھیڑیا نے گھیرا اور اسوقت نہیں آیا اور زبردستی سے بھیڑیے
نے بکری یا بھیڑی کو مارا تو اہیر پاپی ہوتا ہے۔
٢٣٦- اہیر کی حفاظت مین نہوکر جنگل مین چرتی ہوئی بکری یا بھیڑی کو بھیڑیا اچھلکر مارا
تب اہیر کا دوش نہین ہے۔
٢٣٧- گئوؤں کے چرنے کیواسطے گانوں کے چاروطرف سئو دھنش یعنی چارسو ہاتھ تک زراعت
نکرنا یا ہاتھ سے لاٹھی پھینکنا جہان جاکر لاٹھی گرے اتنی زمین کی سہ چند زمین تک کھیتی نہ کرنا
اور شہر کے چاروطرف زمین مرقومہ بالا کا سہ چند چھوڑنا۔
٢٣٨- احاطہ نہ رکھنے والی غیر مزروعہ زمین کے روبرو جو دھان ہے اسکو چارپایہ برباد کر
تو راجہ اہیر کو سزا نہ دیوے۔
٢٣٩- احاطہ ایسا بناوے کہ جسکو اونٹ نہ دیکھ سکے تمام سوراخونکو بند کردے جسمین کتّا یا سور کا منھ نہین جا سکے
٢٤٠- رستہ کے پاس کا کھیت یا گانوں کے پاس کا کھیت احاطہ رکھتا ہوا اور اس کھیت کی چیز کو چارپایہ
نے برباد کیا ہو تو اہیر سئو پن ڈنڈ دیوے اور جس چارپایہ کے ساتھ اہیر نہو اسکو اپنے کھیت سے نکالدے۔

दिवावक्तव्यतापालेरात्रौस्वामिनितद्गृहे॥ योगक्षेमेऽन्य-
थाचेत्तुपालोवक्तव्यतामियात्॥२३०॥ गोपःक्षीरभृतोय-
स्तुसदुह्याद्दशतोवराम्॥ गोस्वाम्यनुमतेभृत्यःसास्यात्पा-
लेऽभृतेभृतिः॥२३१॥ नष्टंविनष्टंकृमिभिःश्वहतंविषमेमृ-
तम्॥ हीनंपुरुषकारेणप्रदद्यात्पालएवतु॥२३२॥ विघु-
ष्यतुहृतंचौरैर्नपालोदातुमर्हति॥ यदिदेशेचकालेचस्वा-
मिनःस्वस्यशंसति॥२३३॥ कर्णौचर्मचबालांश्चबस्तिंस्ना-
युंचरोचनाम्॥ पशुषुस्वामिनांदद्यान्मृतेष्वंगानिदर्शयेत्॥
२३४॥

۲۳۰۔ دن میں گئو چرانے والے کے پاس گئو موجود ہو مالک کی حفاظت نہو سکے تو وہ گئو چرانے والا ملزم ہوتا ہی اور رات میں مالک کے گھر میں اہیر کی سپرد کی ہوئی گائے کی حفاظت نہو سکے تو مالک ملزم ہوتا ہے اگر رات میں بھی اہیر کے گھر گئو رہے اور اسکی حفاظت نہو سکے تو اہیر ہی ملزم ہوتا ہے۔

۲۳۱۔ جس اہیر کی کچھ مزدوری مقرر نہیں ہوئی وہ مالک کی صلاح سے دس گئو چرا دے تو ایک اچھی گئو کا دودھ لیوے۔

۲۳۲۔ جو گئو گم ہو جاوے یا کیڑا اسکو کھا جاوے یا کتا مار ڈالے یا ٹیڑھی زمین میں گر کر یا اہیر سے علیحدہ ہو کر مر جاوے تو اسکا تاوان اہیر دیوے۔

۲۳۳۔ آواز دیکر چور لیجاوے تو اسکو اہیر نہ دیوے بشرطیکہ اسیوقت مالک کو خبر کرے۔

۲۳۴۔ مرجانے پر گئو کے اعضا کو مالک کو دکھلاوے اور گئو کا کان اور چمڑا اور بال اور مثانہ (یعنی حقنہ رگ زیر ناف) ان سب کو گئو کے مالک کو دیوے۔

अकन्येतितुयःकन्यांब्रूयाद्द्वेषेणमानवः॥ सशतम्प्राप्नुयाद्द
ण्डंतस्यादोषमदर्शयन्॥ २२५॥ पाणिग्रहणिकामंत्राः-
कन्यास्वेवप्रतिष्ठिताः॥ नाकन्यासुक्कचिन्नृणांलुप्तधर्म्म
क्रियाहिताः॥२२६॥ पाणिग्रहणिकामंत्रानियतंदारलक्ष
णम्॥ तेषांनिष्ठातुविज्ञेयाविद्वद्भिःसप्तमेपदे॥ २२७॥य-
स्मिन्यस्मिन्कृतेकार्य्येयस्येहानुशयोभवेत्॥ तमनेनविधा
नेनधर्म्मेपथिनिवेशयेत्॥ २२८॥ पशुषुस्वामिनांचैवपा-
लानांचव्यतिक्रमे॥ विवादंसंप्रवक्ष्यामियथावद्धर्म्मतत्त्व-
तः॥ २२९॥

۲۲۵- دشمنی سے کنیا کو با عیب کہے اور اُس عیب کو ثابت نکرے تو سو پن ڈنڈ دیوے-

۲۲۶- وِواہ کرنیکا منتر کنیا ہی کو کہا ہے اور جو کنیا یعنی باعیب ہے، اُسکی دھرم کریا لوپ ہو جاتی ہے اُسکو وِواہ کا منتر نہین ہے-

۲۲۷- نیم کرکے وِواہ کے منتر ہی سے زوجہ کہلاتی ہے اُس زوجیت کی تکمیل ساتوین پھیرے (یعنی بھانور) مین ہوتی ہے وِواہ مین منتر سے سات پھیرے مرد و عورت ہوتے ہین ساتوین پھیرے مین وہ کنیا اُس مرد کی زوجہ ہو جاتی ہے-

۲۲۸- جو جو کام کرتے ہوئے جسکو افسوس ہو اُسکو اس طریق سے دھرم کی راہ پر قائم کرے-

۲۲۹- چوپایہ کے مالک اور اُوسکے رکھنے والے اہیر وغیرہ اُنھون کے جھگڑے کو جیون کا تیون دھرم سے کہینگے-

योग्रामदेशसंघानांकृत्वासत्येनसंविदम्॥ विसंवदेन्नरोलोमा
त्तंराष्ट्राद्विप्रवासयेत॥२१९॥ निगृह्यदापयेच्चैनंसमयव्यभि-
चारिणाम्॥ चतुःसुवर्णान्षण्निष्कांश्छतमानंचराजतम्
॥२२०॥ एतद्दण्डविधिंकुर्याद्धार्मिकःपृथिवीपतिः॥ग्राम
जातिसमूहेषुसमयव्यभिचारिणाम्॥२२१॥ क्रीत्वाविक्रीय
वाकिंचिद्यस्येहानुशयोभवेत॥ सोऽन्तर्दशाहात्तद्द्रव्यंदद्याच्चै
वाददीतच॥२२२॥ परेणतुदशाहस्यनदद्यान्नापिदापयेत्॥
आददानोददच्चैवराज्ञादण्ड्यःशतानिषट्॥२२३॥ यस्तुदो-
षवतींकन्यामनाख्यायप्रयच्छति॥ तस्यकुर्यान्नृपोदण्डं
स्वयंषण्णवतींपणान्॥२२४॥

۲۱۹- جو آدمی گانون و ملک و علاقہ کی صلاح کو راستی سے کرکے پھر طمع سے اُسکو نہین کرتا ہی اُسکو راج سے باہر نکال دینا چاہیئے-

۲۲۰- پکڑ کر اُن سے چار سُبرن چھ نشک ایک ست مان (یعنی ۳۲۰ رتی) چاندی تاوان لیوے اور بعض حصہ معاملہ کی خوردی و بزرگی پر منحصر کرکے ایک ایک کو یا سب کو لینا-

۲۲۱- دھرماتما راجہ گرام جات کے سموہ مین صلاح چھوڑنے والون کی اسی ڈنڈ بدھ کو کرے

۲۲۲- کسی چیز کو مول لیکر یا فروخت کرکے پچھتاوے (یعنی کچھ اچھا نہ بیچا یا اچھا نہ مول لیا ایسا کہے) تو دس دن کے اندر پھیر پھار کرے-

۲۲۳- دس دن کے بعد پھیر پھار نہین ہوتا اور اگر کرے تو چھ سو پن ڈنڈ دیوے-

۲۲۴- جو شخص عیب دار لڑکی کا عیب نہ کہکر اُسکا بیاہ کرے وہ چھیانوے پن تاوان دیوے-

यदिसंसाधयेत्तत्तुदर्पाल्लोभेनवापुनः॥राज्ञादाप्यःसुवर्णंस्या-
त्तस्यस्तेयस्यनिष्कृतिः॥२१३॥दत्तस्यैषोदिताधर्म्यायथावद-
नपक्रिया॥ अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामिवेतनस्यानपक्रियाम्॥२१४
॥भृतोनार्त्तोनकुर्याद्योदर्पात्कर्मयथोदितम्॥सदण्ड्यःकृ-
ष्णलान्यष्टौनदेयंचास्यवेतनम्॥२१५॥आर्त्तस्तुकुर्यात्स्व-
स्थःसन्यथाभाषितमादितः॥सदीर्घस्यापिकालस्यतल्ल-
भेतैववेतनम्॥२१६॥यथोक्तमार्त्तःसुस्थोवायस्तत्कर्मनका-
रयेत्॥ नतस्यवेतनंदेयमल्पोनस्यापिकर्मणः॥२१७॥एष
धर्मोऽखिलेनोक्तोवेतनादानकर्मणः॥ अतऊर्ध्वंप्रवक्ष्यामि
धर्मंसमयभेदिनाम्॥२१८॥

۲۱۳ - جب لوبھ سے وہ نہ لیوے خواہ داتا دینے کو کہکر نہیں دیتا ہے اور لینے والا بزور لیکر دھرم مین نہین لگاتا تو راجہ ان دونوں سے اس چوری کے پرایشچت کیواسطے ایک سبرن دنڈ لیوے اور اس دینیہ کو داتا پاوے یہ تو دنڈ لینے ہی سے ثابت ہے۔

۲۱۴ - دی ہوئی چیز کو واپس لینے کے طریق کو کہا اب اسکے بعد مزدور کی مزدوری نہ دینے کے طریق کو کہتے ہین۔

۲۱۵ - صحیح وسالم آدمی نے ایک کام کو کرنا قبول کیا اور اہنکار یعنی خودی سے نہین کرتا ہے تو راجہ اُس سے آٹھ رتی سونا تاوان لیوے اور مزدوری اُسکو دلاوے۔

۲۱۶ - کام کرنیوالا آدمی بیماری مین مبتلا ہوکر کام کو ترک کرے اور تندرست ہوکر پھر کام کرے تو پچھلے دنوں کی بھی مزدوری دیوے

۲۱۷ - بیمار ہو یا تندرست ہو کام کرنیوالا جس کام کو قبول کرکے اس کام کو کرتا ہے اور وہ کام پورا ہونے سے تھوڑا رہگیا ہے اُسکو نہ آپ کرتا ہے نہ دوسرے سے ختم کراتا ہے تو اُسکو بھی کچھ نہ دینا چاہئے۔

۲۱۸ - مزدوری نہ دینے کے طریق کو کہا اب اسکے بعد کوئی کام کرنے کی صلاح کرکے اُسکو نہین کرتا اُسکا دھرم کہینگے

यस्मिन्कर्मणियास्तुस्युरुक्ताः प्रत्यंगदक्षिणाः ॥ सएवता
आददीतभजेरन्सर्वएवा ॥ २०८ ॥ रथंहरेतचाध्वर्युर्ब्रह्माधा-
नेचवाजिनम् ॥ होतावापिहरेदश्वमुद्गाताचाप्यनः क्रये
॥ २०९ ॥ सर्वेषामर्द्धिनोमुख्यातदर्द्धेनार्द्धिनोऽपरे ॥ तृती-
यिनस्तृतीयांशाश्चतुर्थांशाश्चपादिनः ॥ २१० ॥ सम्भूयस्वा
निकर्माणिकुर्वद्भिरिहमानवैः ॥ अनेनविधियोगेनक-
र्त्तव्यांशप्रकल्पना ॥ २११ ॥ धर्मार्थंयेनदत्तंस्यात्कस्मै-
चिद्याचतेधनम् ॥ पश्चाच्चनतथातत्स्यान्नदेयंतस्यतद्भ-
वेत् ॥ २१२ ॥

۲۰۸- جس کام میں جس انگ کی جو دکشنا ہے اسکو اُس انگ کے کرم کرنیوالے پاویں خواہ سب رتوگ ملکر بانٹ لیویں۔

۲۰۹- ادھوریج رتھ کو پاوے برہما اور ہوتا گھوڑا کو پاویں اوگاتا گاڑی کو پاوے۔

۲۱۰- جس یگیہ کی سَو گئو دکشنا ہے اُسکی تقسیم کا طریق لکھتے ہیں کہ یگیہ میں سولہ رتوگ ہوتے ہیں اُنمیں چار رتوگ مقدم میں یعنی ہوتا ادھوریج برہما اوگاتا یہ چاروں تمام دکشنا کی نصفی پاویں اور میترا برن پرستوتا برہما چھسی پرتی ستوتا یہ چار دو مقدم رتوگ کا آدھا پاویں اور اچھاواک نیشٹا اگنیدھ پرتی ہرتا یہ چارو مقدم رتوگ کا تیسرا حصہ پاویں اور گراوسٹت اُنیتا پوتا سبرہمنیہ یہ چارو مقدم رتوگ کا چوتھا حصہ پاویں اس نظام پر سب کو مطابق بیان کے دکشنا لگے اسلیئے سب کا آدھا اگرچہ پچاس ہے تو بھی اڑتالیس ہے لیا تب پہلی کہی ہوئی تعداد پوری ہوگی

۲۱۱- اپنے کام کو ملکر کرنے والے آدمی اس طریق سے حصہ معین کریں۔

۲۱۲- کسی نے کسی مانگنے والے کو دھرم کیواسطے کچھ دیا اور وہ لیکر دھرم میں کچھ نہیں لگاتا تو اُس دولت کو اُس سے واپس پھیر لے۔

अथमूलमनाहार्यंप्रकाशक्रयशोधितः॥ अदण्ड्योमु-
च्यतेराज्ञानाष्टिकोलभतेधनम्॥ २०२॥ नान्यदन्येनसंसृष्ट
रूपंविक्रयमर्हति॥ नचासारंनचन्यूनंनदूरेणतिरोहितम्॥
२०३॥ अन्यांचेद्दर्शयित्वान्यावोढुःकन्याप्रदीयते॥ उभेतए
कशुल्केनवहेदित्यब्रवीन्मनुः॥ २०४॥ नोन्मत्तायानकुष्ठि-
न्यानचयास्पृष्टमैथुना॥ पूर्वंदोषानभिख्याप्यप्रदातादण्ड
मर्हति॥ २०५॥ ऋत्विग्यदिवृतोयज्ञेस्वकर्मपरिहापयेत्॥
तस्यकर्मानुरूपेणदेयोंऽशःसहकर्तृभिः॥ २०६॥ दक्षिणा-
सुचदत्तासुस्वकर्मपरिहापयन्॥ कृत्स्नमेवलभेतांशमन्ये-
नैवचकारयेत्॥ २०७॥

۲۰۲- جس سے مول لیا اسکو دکھلا نہیں سکتا اور سب کے روبرو مول لینا ثابت کرتا ہے تو اسکو
راجہ سزا دیوے اور مول لی ہوئی چیز کو جسکی چیز برباد ہوتی ہے وہ مالک پاوے جتنے روپیہ وہ
چیز مول لی گئی اتنا روپیہ مول لینے والے کا گیا۔

۲۰۳- زعفران وغیرہ چیزوں میں کسم ملا کر فروخت نکرنا اور ناکارہ چیز کو اچھی کہکر فروخت
نکرنا وزن میں کم نہ تولنا روبرو دینا اور رنگ سے اچھا بنا کر فروخت نکرنا۔

۲۰۴- اور کنیا دکھلا کر دوسری کنیا دیوے تو وواہ کرنیوالا ایک ہی شلک (معاوضہ) سے دونو
کنیا کا وواہ کرے یہ منو جی نے کہا ہے۔

۲۰۵- جو کنیا بیاہ سے دکھی یا کوڑھن ہے یا مباشرت میں یا عیب ہے اسکا وواہ بدون
اسکے عیوب ظاہر کئے ہوئے کر دیوے تو اس کنیا کا دینے والا سزا کے لائق ہے۔

۲۰۶- یگیہ میں ورن لیکر جو لوگ اپنے کام کو نہ کریں تو جتنا کام کیا ہے اتنا ہی حصہ کرم کرنیوالے
کے ساتھ پاوے۔

۲۰۷- تمام دکشنا لے کر بیماری وغیرہ سے اپنے کام کو ترک کرے تو اپنا کرم دوسرے سے کرا دیوے

निक्षेपस्य धनस्यैवं प्रीत्योपनिहितस्य च ॥ राजा विनिर्णयं कुर्यादक्षिणवन्न्यासधारिणम् ॥१९६॥ विक्रीणीते परस्य स्वं योऽस्वामी स्वाम्यसम्मतः ॥ न तं नयेत साक्ष्यं तु स्तेनमस्तेनमानिनम् ॥१९७॥ अवहार्यो भवेच्चैव सान्वयः षट्शतं दमम् ॥ निरन्वयोऽनपसरः प्राप्तः स्याच्चोरकिल्बिषम् ॥१९८॥ अस्वामिना कृतो यस्तु दायो विक्रय एव वा ॥ अकृतः स तु विज्ञेयो व्यवहारे यथा स्थितिः ॥१९९॥ संभोगो दृश्यते यत्र न दृश्येतागमः क्वचित् ॥ आगमः कारणं तत्र न संभोग इति स्थितिः ॥२००॥ विक्रयाद्यो धनं किंचिद्गृह्णीयात्कुलसन्निधौ ॥ क्रयेण स विशुद्धं हि न्यायतो लभते धनम् ॥२०१॥

۱۹۶ - جو چیز دکھلا کر شمار کرا کر کسیکے پاس امانت رکھی گئی اور جو چیز بند یعنے بدون دکھلائے و شمار کرائے کسیکے پاس امانت رکھی گئی اور جو چیز محبت سے دیگئی ان تینوں قسم کی تحقیقات راجہ اصلاح کر کر جسمیں امانت رکھنے والے کو رنج نہ پہونچے -

۱۹۷ - جسکی چیز اسکی صلاح بدون دوسرا شخص اس چیز کو فروخت کرے تو اسکو گواہ نکرنا چاہیئے کیونکہ وہ چور ہے اگرچہ وہ اپنے کو چور نہیں مانتا -

۱۹۸ - اگر فروشندہ بالک چیز کا رشتہ دار ہو تو چھہ سو پن تاوان دیوے اور اگر رشتہ دار نہو تو اسکو وہی سزا دیجاوے جو چور کو دیجاتی ہے -

۱۹۹ - جو شخص چیز کا مالک نہیں ہے اور اسنے اسکو دیدیا یا مول لیا یا فروخت کیا تو وہ بیوپار کے طریقہ میں جائز نہیں ہوتا -

۲۰۰ - جس چیز کا تصرف دیکھہ پڑتا ہے اور ثبوت تحریری نہیں دیکھہ پڑتا ہے اسمیں ثبوت تحریری ہی باعث ہے تصرف نہیں یہ شاستر کی مرجاد ہے -

۲۰۱ - بیوپار کرنیوالے کے روبرو دیا ہے کسی چیز کو کسینے مول لیا اور مول لینا ثابت ہو تو انصاف سے اس چیز کو مول لینیوالا پاتا ہے

निक्षेपस्यापहर्त्तारमनिक्षेप्तारमेवच॥ सर्वैरुपायैरन्विच्छे-
च्छपथैश्चैववैदिकैः॥१९०॥ योनिक्षेपंनार्पयतियश्चानि-
क्षिप्ययाचते॥ तावुभौचौरवच्छास्यौदाप्यौवातत्समंदमम्
॥१९१॥ निक्षेपस्यापहर्त्तारंतत्समंदापयेद्दमम्॥ तथोपनि-
धिहर्त्तारमविशेषेणपार्थिवः॥१९२॥ उपधाभिश्चयःकश्चि-
त्परद्रव्यंहरेन्नरः॥ ससहायःसहन्तव्यःप्रकाशंविविधैर्वधैः
॥१९३॥ निक्षेपोयःकृतोयेनयावांश्चकुलसन्निधौ॥ ता-
वानेवसविज्ञेयोविब्रुवन्दण्डमर्हति॥१९४॥ मिथोदायः
कृतोयेनगृहीतोमिथएववा॥ मिथएवप्रदातव्योयथादा-
यस्तथाग्रहः॥१९५॥

۱۹۰- شئے امانت کو لینے والا اور بدون امانت رکھنے کے اسکو مانگنے والا ان دونوں کو دید بین
جو قسم اور تمام تدبیرین لکھی ہین انکے وسیلہ سے اصل مطلب کو جانے-

۱۹۱- جو شخص شئے امانت کو نہین دیتا اور جو بدون رکھنے کے امانت کو مانگتا ہے دونوکو چور
کیطرح سزا دینا چاہیے یا شئے امانت کے برابر تاوان لینا چاہیئے-

۱۹۲- سر کشادہ و سر بمہر ان دونوں قسمون کی امانتون کو جو نہین دیتا ہے اسکو ان دونو
قسم کی امانت کے برابر تاوان دینا چاہیئے-

۱۹۳- جو شخص فریب کر کے کسیکی دولت لیتا ہے اسکو مع سب مددگاران اس شخص کے سب
آدمیون کے روبرو انواع و اقسام کی سزا دیکر مارے-

۱۹۴- کل کی موجودگی مین جتنی امانت رکھی ہے اسمین خلاف بیان کرے تو اتناہی تاوان
دیوے-

۱۹۵- جسنے بغیر گواہ کے دیا تو وہ بے گواہی لیوے کیونکہ جیسا دیا ویسا لینا-

निक्षेपोपनिधीनित्यंनदेयौप्रत्यनन्तरे॥नश्यतोविनिपाते-
तावनिपातेत्वनाशिनौ॥१८५॥स्वयमेवतुयोदद्यान्मृतस्य
प्रत्यनन्तरे॥नसराज्ञानियोक्तव्योननिक्षेप्तुश्चबन्धुभिः॥१८६
॥अच्छलेनैवचान्विच्छेत्तमर्थंप्रीतिपूर्वकम्॥विचार्यत-
स्यवावृत्तंसाम्नैवपरिसाधयेत्॥१८७॥निक्षेपेष्वेषुसर्वेषु
विधिःस्यात्परिसाधने॥समुद्रेनाप्नुयात्किंचिद्यदितस्मा-
न्नसंहरेत्॥१८८॥चौरैर्हृतंजलेनोढमग्निनादग्धमेववा॥
नदद्याद्यदितस्मात्सनसंहरतिकिंचन॥१८९॥

۱۸۵- جو چیز جانی ہوئی امانت رکھی جا(ئے) اور جو چیز بغیر جانی ہوئی امانت رکھی جا(ئے) (ان دونوں طرح کی) امانت کو مالک کے بیٹے وغیرہ کو نہ دیوے بلکہ جسکی امانت ہو اُسی کو دیوے۔

۱۸۶- کوئی آدمی کچھ امانت رکھکر مرگیا تو جسکے پاس شئے امانت ہو وہ از خود اس چیز کو اُسکے سپرد کرے جسنے متوفی کے مال پر قبضہ پایا ہو اور متوفی کے بیٹے وغیرہ اور راجہ یہ دونوں اُس سے دوسری چیز نہ طلب کریں (یعنی یہ نہ کہیں کہ دوسری چیز بھی تمھارے گھر امانت رکھی ہو اُسکو بھی لاؤ۔

۱۸۷- سام نام تدبیر جو فریب سے علیحدہ ہے اُسکے ذریعہ سے براہ محبت جسکے پاس امانت رکھی گئی ہے اسکے آچرن کو بچار کرکے اپنا مطلب حاصل کرے۔

۱۸۸- امانت کا طریقہ بیان کیا اور بند چیز کو جیسا لے ویسا ہی دے اشرفی کو توڑکر اسمیں سے کچھ نہ لیوے تو کچھ دوش نہیں پاتا۔

۱۸۹- امانت رکھی گئی چیز چوری گئی ہو یا پانی میں بہ گئی ہو یا آگ میں جل گئی ہو تو جسکے پاس رکھی گئی ہے وہ نہ دیوے بشرطیکہ اسمیں سے کچھ آپ نہ لی ہو۔

कुलजेवृत्तसम्पन्नेधर्मज्ञेसत्यवादिनि ॥ महापक्षेधनिन्यार्येनिक्षेपंनिक्षिपेद्बुधः ॥ १७९ ॥ योयथानिक्षिपेद्धस्तेयमर्थं-
यस्यमानवः ॥ सतथैवग्रहीतव्योयथादायस्तथाग्रहः ॥ १८०
॥ योनिक्षेपंयाच्यमानोनिक्षेप्तुर्नप्रयच्छति ॥ सयाच्यःप्राड्वि
वाकेनतन्निक्षेप्तुरसन्निधौ ॥ १८१ ॥ साक्ष्यभावेप्रणिधि-
भिर्वयोरूपसमन्वितैः ॥ अपदेशैश्चसंन्यस्यहिरण्यंतस्यत
त्वतः ॥ १८२ ॥ सयदिप्रतिपद्येतयथान्यस्तंयथाकृतम् ॥ न
तत्रविद्यतेकिंचिद्यत्परैरभियुज्यते ॥ १८३ ॥ तेषांनदद्याद्य
दितुतद्धिरण्यंयथाविधि ॥ उभौनिगृह्यदाप्यःस्यादितिध-
र्मस्यधारणा ॥ १८४ ॥

۱۷۹ - کلین ساد ہو (یعنے خاندانی عابد) آچار کرنیوالا وو دھرم جاننے والا سچ بولنے والا اور بہت
بیٹے پوتے والا اور دولتمند جو آدمی ہے اوسکے پاس امانت کو رکھنا چاہیئے -

۱۸۰ - جو آدمی جس آدمی کے ہاتھ مین جس چیز کو جسطرح دیوے وہ اس سے اس چیز کو اسیطرح لیوے
جیسا دینا ویسا لینا -

۱۸۱ - جالی ہوئی چیز کو امانت رکھنے والے نے اپنی چیز کو اس آدمی سے جسکے پاس امانت رکھی ہو مانگا
اور وہ نہین دیتا ہو تب امانت رکھنے والے کی غیر حاضری مین جسکے پاس امانت رکھی گئی اس سے حاکم سوال کرے

۱۸۲ - گواہ کے نہونے مین امانت مین خیانت کرنیوالا شخص اہالیان بکرما یا ایک کو اگر چیز امانت
نہین دیتا ہے تو اسکے پاس کچھ سونا رکھا کر -

۱۸۳ - بعدہ امانت رکھنے والا اپنی امانت کو اس سے یعنے امانت دار سے طلب کرے اگر وہ دیدے
تو اسکو سچا جاننا اور اس سے جو شخص اپنی امانت مانگتا ہے وہ جھوٹھا ہے -

۱۸۴ - اور جبکہ اہالیان دربار یا وکیل کو جنھون نے سونا وغیرہ کوئی چیز امانت رکھی ہو انکو بھی
وہ امانت دار نہ دیوے تو اس سے دونون امانت کو راجہ لیوے یہ بات دھرم مین داخل ہے -

यस्त्वधर्म्मेणकार्य्याणिमोहात्कुर्य्यान्नराधिपः॥ अचिरात्तं
दुरात्मानंवशेकुर्व्वन्तिशत्रवः॥ १७४॥कामक्रोधौतुसंयम्य
योऽर्थान्धर्म्मेणपश्यति॥ प्रजास्तमनुवर्त्तन्तेसमुद्रमिवसि-
न्धवः॥ १७५॥यःसाधयन्तंछन्देनवेदयेद्धनिकंनृपे॥ सराज्ञा
तच्चतुर्भागंदाप्यस्तस्यचतद्धनम्॥ १७६॥कर्म्मणापिसमंकु-
र्य्याद्धनिकायाधमर्णिकः॥ समोऽवकृष्टजातिस्तुदद्याच्छ्रे-
यांस्तुतच्छनैः॥ १७७॥ अनेनविधिनाराजामिथोविवदतांनृ-
णाम्॥साक्षिप्रत्ययसिद्धानिकार्याणिसमतांनयेत्॥ १७८॥

۱۷۴ - جو راجہ موہ سے ادھرم کرکے کام کو کرے اُس دُراتما راجہ کو دشمن لوگ اپنے قابو میں کر لیتے ہیں

۱۷۵ - جو راجہ کام کرودھ کو چھوڑ کر دھرم سے مطلب کو دیکھتا ہے اسکے پیچھے سب رعیت رہتی ہے جیسے سب ندی سمدر کے پیچھے رہتی ہیں یعنے سمدر میں جاکر پھر اس سے علیحدہ نہیں ہوتی اسیطرح راجہ سے رعیت علیحدہ نہیں ہوتی -

۱۷۶ - جو قرض دینے والا قرضدار سے اپنے دیئے ہوئے دھن کو اپنے زور سے لیتا ہے اور قرضدار راجہ کے پاس جاکر نالش کرے تو راجہ اُس قرضدار سے قرضہ کا چوتھا حصّہ تاوان لیوے اور قرضہ دہندہ کو زر قرضہ دلادے -

۱۷۷ - اگر شخص مذکور قرضہ دہندہ کا ہمقوم یا ذلیل قوم ہو اور قرضہ ادا کرنے کی استطاعت نہ رکھتا ہو تو قرضہ دہندہ کا کام کرکے قرضہ ادا کرے اور اگر قرضدار قرضہ دہندہ کی قوم سے اونچی قوم والا ہے تو وہ قرضہ دہندہ کا کام نکرے بلکہ آہستہ آہستہ جب کچھ ملے تب دیوے -

۱۷۸ - اس طریق سے جو مقدمہ باہم مخالفت کرنیوالے آدمیوں کے گواہوں سے ثابت ہو راجہ انمیں خلاف باتوں کو رد کرکے اصل مطلب کو پہچان لے -

त्रयः परार्थे क्लिश्यन्ति साक्षिणः प्रतिभूः कुलम्॥ चत्वारस्तु-
पचीयन्ते विप्रश्चाढ्यो वणिङ्नृपः॥१६९॥ अनादेयं ना-
ददीत परिक्षीणोऽपि पार्थिवः॥ न चादेयं समृद्धोऽपि सू-
क्ष्ममप्यर्थमुत्सृजेत्॥१७०॥ अनादेयस्य चादानादादेय-
स्य च वर्जनात्॥ दौर्बल्यं ख्याप्यते राज्ञः स प्रेत्येह च नश्यति
१७१॥ स्वादानाद्वर्णसंसर्गात्त्वबलानां च रक्षणात्॥ बलं सं-
जायते राज्ञः स प्रेत्येह च वर्द्धते॥१७२॥ तस्माद्यम इव स्वामी
स्वयं हित्वा प्रियाप्रिये॥ वर्त्तेत याम्यया वृत्त्या जितक्रोधो-
जितेन्द्रियः॥१७३॥

۱۶۹- گواہ و ضامن و کل یہ تینون دوسرے کیواسطے تکلیف اٹھاتے ہین اور برہمن و دولتمند و بنیا و راجہ یہ چار دوسرے کے واسطے ترقی پاتے ہین اسلیے پہلے کہے ہوئے تین آدمی اول ہی اپنے کام کو منظور کرین یعنی گواہی و ضامنی و بیوہار دیکھنا ان کامون کو نہ کرین اور پچھلے کہے جو چار ہین وہ سلسلہ سے اپنے کام مین قوت سے مشغول ہوویں یعنی برہمن داتا کو و دولتمند قرضدار کو بنیا خرید کرنیوالے کو راجہ بیوہار کرنیوالے کو زور سے کام مین مشغول کرین۔

۱۷۰- راجہ اگرچہ بے زر ہو لیکن جو چیز لینے کے قابل نہین ہے اسکو ہرگز نہ لیوے اور اگرچہ بڑا دولتمند ہو لیکن جو چیز چھوٹی بھی لینے کے قابل ہو اسکو لیوے۔

۱۷۱- لینے کے لائق چیز کو ترک کرنے سے اور نہ لینے کے لائق چیز کو لینے سے راجہ کی کم قوتی ظاہر ہوتی ہے اور وہ راجہ اس لوک مین اور پرلوک مین ناش کو پاتا ہے۔

۱۷۲- لینے کے لائق چیز کو لینے سے اور ہمقوم کا ہمقوم کے ساتھ شاستر کے موافق شادی وغیرہ نسبت کرانے سے و کم قوت رعایا کی حفاظت کرنے سے راجہ کو قوت ہوتی ہے اور وہ راجہ اس لوک اور پرلوک مین بڑھتا ہے۔

۱۷۳- اسلیے راجہ یم راج کے مانند مرغوب و نامرغوب کو ترک کرکے کرودھ و اندریونکو جیت کرکے

आधिश्चोपनिधिश्चोभौनकालात्ययमर्हतः॥ अवहार्यौभवे
तान्तौदीर्घकालमवस्थितौ॥१४५॥संप्रीत्याभुज्यमानानिन
नश्यन्तिकदाचन॥ धेनुरुष्ट्रोवहन्नश्वोयश्चदम्यःप्रयुज्यते॥
१४६॥यत्किंचिद्दशवर्षाणिसन्निधौप्रेक्षतेधनी॥ भुज्यमा-
नंपरैस्तूष्णींनसतल्लब्धुमर्हति॥१४७॥ अजडश्चेदपोगण्डो
विषयेचास्यभुज्यते॥ भग्नंतद्व्यवहारेणभोक्तातद्द्रव्यमर्हति
॥१४८॥ आधिःसीमाबालधनंनिक्षेपोपनिधिःस्त्रियः॥रा-
जस्वंश्रोत्रियस्वंचनभोगेनप्रणश्यति॥१४९॥

۱۴۵ - شے مرہونہ براہ محبت استعمال کیلئے کسیکو کوئی چیز امانتاً دینا۔ یہ دونوں قسم کی چیز جسوقت مالک طلب کرے اسیوقت دینا چاہیئے یہ نہ کہنا کہ اتنے دنوں تک کے اور بہت دن تک رہنے سے یہ دونوں چیز کالعدم نہیں ہو جاتی ہیں اصل مالک کی ملکیت قائم رہتی ہے جسکے پاس رکھی ہے وہ مالک نہیں ہوتا ہے۔

۱۴۶ - گئو اور اونٹ اور گھوڑا اور بیل ان سب کو مالک کی محبت سے جو کوئی استعمال کرے تو بھی وہ چیزیں ہیں اسکی ملکیت زائل نہیں ہوتی ہے۔

۱۴۷ - مالک دیکھتا ہے اور منع نہیں کرتا ہے اسکی چیز کو دس برس تک دوسرے آدمی نے استعمال کیا پھر مالک اس چیز کو پا نہیں سکتا۔

۱۴۸ - کیونکہ استعمال کرنیوالا کہتا ہے کہ یہ دیوانہ یا نابالغ نہیں ہے، اسکے دیکھتے ہوئے ہمنے استعمال کیا ہے تب وہ کچھ جواب نہیں دیسکتا اسواسطے بیوپار سے وہ خارج ہوتا ہے استعمال کرنیوالا اس چیز کو پاتا ہے۔

۱۴۹ - شے مرہونہ و حدود و نابالغ کی دولت و امانت جو دیکھا کر اور شمار کرا کے کسیکے پاس رکھی جاوے اور مہر بند (یعنی جو بدون دیکھلائے اور شمار کرائے کے سربند چیز کسیکے پاس امانت رکھی جاوے) وہ استری و راجہ کی دولت و وید خوان کی دولت یہ سب استعمال کرنے سے کالعدم نہیں ہوتی ہیں لیکن اصل مالک کی ملکیت قائم رہتی ہے

वसिष्ठविहितांवृद्धिंसृजेद्वित्तविवर्द्धिनीम्॥ असीतिभागं
गृह्णीयान्मासाद्वार्द्धुषिकःशते॥१४०॥द्विकंशतंवागृह्णी-
यात्सतांधर्ममनुस्मरन्॥ द्विकंशतंहिगृह्णानोनभवत्यर्थ-
किल्बिषी॥१४१॥द्विकंत्रिकंचतुष्कंचपंचकंचशतंसम-
म्॥ मासस्यवृद्धिंगृह्णीयाद्वर्णानामनुपूर्वशः॥१४२॥न-
त्वेवाधौसोपकारेकौसीदींवृद्धिमाप्नुयात्॥ नचाधेःका-
लसंरोधान्निसर्गोऽस्तिनविक्रयः॥१४३॥नभोक्तव्यो
बलादाधिर्भुञ्जानोवृद्धिमुत्सृजेत्॥ मूल्येनतोषयेच्चैनमा-
धिस्तेनोऽन्यथाभवेत्॥१४४॥

۱۴۰۔ بسشٹ جی کا کہا ہوا سود جو روپیہ کا بڑھانیوالا ہے اُسکو نزک کرے اور سَو روپیہ کا اسّی
دان حصہ یعنے فیصدی سوا روپیہ سود ماہواری مقرر کرے۔
۱۴۱۔ خواہ اچھے لوگوں کو دھرم خیال کرکے فیصدی دو روپیہ ماہواری لیوے اسکے لینے
سے دربیہ پاپی نہیں ہوتا۔
۱۴۲۔ براہمن سے فیصدی دو روپیہ کشتری سے تین روپیہ ویشیہ سے چار روپیہ سود شودر سے
پانچ روپیہ سود فیصدی ماہواری لیوے۔
۱۴۳۔ اب رہن کے قواعد لکھتے ہیں کہ جو چیز نفع دینے والی مثل زمین و غلام و گئو وغیرہ رہن
کیجاوے اسمیں سود نہ لینا چاہئے جب رہن کو بہت دن ہو جاویں اور رہن رکھکر جتنا روپیہ لیا
تھا اُس سے دو چند روپیہ نفع شئی مرہونہ سے مالک نے پایا تب اُس شئے مرہونہ کو کسیکو دیدیوے
یا فروخت کر ڈالے ایسا نکرے کہ جبتک زر اصل نہ یا دے تب تک اُسکی نفع کو حاصل کرتا رہے
۱۴۴۔ زبردستی سے شئے مرہونہ کو تصرف نکرے اگر کرے تو سود چھوڑ دے یا جسکی چیز ہو
اُسکو قیمت دیکر راضی کرے اگر ایسا نکرے تو شئے مرہونہ کا چور ہوتا ہے۔

सर्षपाः षड्यवोमध्यस्त्रियवंत्वेककृष्णलम्॥ पंचकृष्णल-
कोमाषस्तेसुवर्णास्तुषोडश॥१३४॥पलंसुवर्णाश्चत्वारःप-
लानिधरणंदश॥ द्वेकृष्णलेसमधृतेविज्ञेयोरौप्यमाषकः॥
१३५॥ तेषोडशस्याद्धरणंपुराणश्चैवराजतः॥कार्षापणस्तु-
विज्ञेयस्ताम्रिकःकार्षिकःपणः॥१३६॥धरणानिदशज्ञेयः
शतमानस्तुराजतः॥ चतुःसौवर्णिकोनिष्कोविज्ञेयस्तुप्रमा-
णतः॥१३७॥पणानांद्वेशतेसार्द्धेप्रथमःसाहसःस्मृतः॥ म-
ध्यमःपंचविज्ञेयःसहस्रंत्वेवचोत्तमः॥१३८॥ ऋणेदेयेप्रति-
ज्ञातेपंचकंशतमर्हति॥ अपन्हवेतद्द्विगुणंतन्मनोरनुशास-
नम्॥१३९॥

۱۳۴- چھ سرسون کا ایک مدھیم جو تین جو کی ایک رتی پانچ رتی کا ایک ماشہ سولہ ماشہ کا ایک سبرن ہوتا ہے۔

۱۳۵- چار سبرن کا ایک پل دش پل کا ایک دھرن ہوتا ہے اب روپیہ کے وزن کی مقدار کو کہتے ہیں۔ کہ دو رتی کا ایک ماشہ۔

۱۳۶- اور سولہ ماشہ کا ایک دھرن ہوتا ہے اور اوسکو پران بھی کہتے ہیں سولہ ماشہ تانبا کو مرک اور کارشاپن کہتے ہیں۔

۱۳۷- دش دھرن کا ایک ست مان چار سبرن کا ایک نشک ہوتا ہے۔

۱۳۸- ڈھائی سو پن کا پورب ساہس اور پانسو پن کا مدھیم ساہس اور ہزار پن کا اتم ساہس ہوتا ہے۔

۱۳۹- دربار میں جا کر معروض کرے کہ قارض کا قرضہ ہمکو دینا ہے تو فیصدی پن پر پانچ پن ڈنڈ دیوے اور اگر کہے کہ ہم قرضدار نہیں ہیں اور گواہ تحریر کے ذریعہ سے مدعی کا دعویٰ ثابت ہو تو فیصدی پن پر دش پن ڈنڈ مدعا علیہ دیوے یہ منُ جی کا حکم ہے۔

अदण्ड्यान्दण्डयन्राजादण्ड्यांश्चैवाप्यदण्डयन्॥ अयशो
महदाप्नोतिनरकंचैवगच्छति॥१२८॥वाग्दण्डंप्रथमंकुर्या
द्धिग्दण्डंतदनन्तरम्॥ तृतीयंधनदण्डन्तुवधदण्डमतःपरम्
॥१२९॥वधेनापियदात्वेतान्निग्रहीतुंनशक्नुयात्॥ तदैषुस-
र्वमप्येतत्प्रयुञ्जीतचतुष्टयम्॥१३०॥लोकसंव्यवहारार्थंयाः
संज्ञाःप्रथिताभुवि॥ ताम्ररूप्यसुवर्णानांताःप्रवक्ष्याम्यशेष
तः॥१३१॥जालान्तरगतेभानौयत्सूक्ष्मंदृश्यतेरजः॥ प्रथमं
तत्प्रमाणानांत्रसरेणुंप्रचक्षते॥१३२॥त्रसरेणवोऽष्टौविज्ञे
यालिक्षैकापरिमाणतः॥ ताराजसर्षपस्तिस्रस्तेत्रयोगौर
सर्षपः॥१३३॥

۱۲۸- جو سزا کے لایق نہین ہے، اُسکو سزا دینے سے جو سزا کے لائق ہے اُسکو سزا نہ دینے
سے راجہ بدنام ہوتا ہے- اور نرک مین جاتا ہے-
۱۲۹- اوّل تو کہنا کہ تم نے اچھا نہین کیا پھر ایسا نہ کرنا ایسی باتون سے خوف دینا یہ پہلا
ڈنڈ ہے اسکے بعد یہ کہنا کہ تجھکو لعنت ہے بڑا پاپی و مُورکھ ہے تیری زندگی ہنو یہ دوسرا ڈنڈ
ہے دھن ڈنڈ تیسرا ڈنڈ ہے اعضا کاٹ ڈالنا چوتھا ڈنڈ ہے-
۱۳۰- صرف کسی عضو کے کاٹ ڈالنے سے بھی مجرم کو قابو مین نکر سکے تو چارو ڈنڈ دیوے
۱۳۱- جگت کے اچھے بیوہار کے واسطے تانبا و روپا و سونا اِن کے وزن کی مقدار رکھی ہے
اُس سب کو مین کہتا ہون-
۱۳۲- جھروکھے مین سورج کی کرن آنے سے جو ذرہ دیکھ پڑتا ہے وہ مقدارمین اول
کہلاتا ہے اُسکو ترسرین کہتے ہین-
۱۳۳- آٹھ ترسرین کا ایک لکشا تین لکشا کی ایک رائی اور تین رائی کی ایک پیلی سرسون کی

कौटसाक्ष्यन्तुकुर्वाणांस्त्रीन्वर्णान्धार्मिकोनृपः॥प्रवासयेद्दंड
यित्वाब्राह्मणान्तुविवासयेत्॥१२३॥दशस्थानानिदण्डस्यम-
नुःस्वायंभुवोऽब्रवीत्॥त्रिषुवर्णेषुयानिस्युरक्षतोब्राह्मणो
व्रजेत्॥१२४॥उपस्थमुदरंजिह्वाहस्तौपादौचपंचमम्॥चक्षु-
र्नासाचकर्णौचधनंदेहस्तथैवच॥१२५॥अनुबन्धम्परिज्ञाय-
देशकालौचतत्त्वतः॥सारापराधौचालोक्यदण्डंदण्ड्येषुपा-
तयेत्॥१२६॥अधर्मदण्डनंलोकेयशोघ्नंकीर्त्तिनाशनम्॥अ-
स्वर्ग्यंचपरित्रापितस्मात्तत्परिवर्जयेत्॥१२७॥

۱۲۳- کشتری ویشیہ شودر یہ تینوں ورن گواہ ہوکر جھوٹھ بولیں تو دھرماتما راجہ سزا قرار واقعی دیکر اپنے راج منڈل سے باہر نکالدے مگر برہمن کو جرم مرقومۂ بالا میں صرف اپنے راج منڈل سے باہر نکالدے اُسکی جایداد کو ضبط نکرے -

۱۲۴- کشتری ویشیہ شودر ان تینوں ورنوں کے ڈنڈ کے مقامات سد سمبھو کے بیٹے من جی نے کہے برہمن تو بدون پانے سزا بے بدنی کے چلا جاے -

۱۲۵- عضو تناسل شکم زبان دونوں ہاتھ دونوں پانوں دونوں کان دونوں آنکھ ناک جایداد جسم یہ دس ڈنڈ (یعنے سزا) کے مقام ہیں -

۱۲۶- خواہش سے متواتر جرم کرنا مقامات جرم وقت جرم مجرم کا جسم و جایداد وغیرہ سامرتھ بڑا چھوٹا جرم ان سب کو دیکھکر سزا کے لائق آدمیوں کو سزا دینا چاہئے -

۱۲۷- دھرم کے خلاف جو سزا ہے وہ یش* اور کیرت کو نابود کرتی ہے اور پرلوک میں سورگ کو بھی چھڑاتی ہے اسلیے دھرم کے خلاف سزا نہ دینا چاہیے -

* جو نیکنامی بحالت زندگی ہو اُسکو یش کہتے ہیں اور جو نیکنامی بعد وفات ہو اُسکو کیرت کہتے ہیں -

लोभान्मोहाद्भयान्मैत्रात्कामात्क्रोधात्तथैव च॥ अज्ञानाद्बा
लभावाच्च साक्ष्यं वितथमुच्यते॥ ११८॥ एषामन्यतमे स्थाने
यः साक्ष्यमनृतं वदेत्॥ तस्य दण्डविशेषांस्तु प्रवक्ष्याम्यनुपूर्व-
शः॥ ११९॥ लोभात्सहस्रं दण्ड्यस्तु मोहात्पूर्वं तु साहसम्॥
भयाद्द्वौ मध्यमौ दण्डौ मैत्रात्पूर्वं चतुर्गुणम्॥ १२०॥ कामाद्दश
गुणं पूर्वं क्रोधात्तु त्रिगुणं परम्॥ अज्ञानाद्द्वे शते पूर्णे बालिश्या
च्छतमेव तु॥ १२१॥ एतानाहुः कौटसाक्ष्ये प्रोक्तान्दण्डान्मनीषि-
भिः॥ धर्मस्याव्यभिचारार्थमधर्मनियमाय च॥ १२२॥

۱۱۸۔ لوبھ۔ موہ۔ ڈر۔ متر تا۔ کام۔ کرودھ۔ اگیان۔ لڑکپن ان سببون مین سے کسی ایک سبب کے ہونے سے گواہ لوگ جھوٹھ بولتے ہین۔

۱۱۹۔ انکے سواے اور مقامات مین جھوٹھی گواہی دے تو اسکے واسطے خاص سزا سلسلہ وار کہین گے۔

۱۲۰۔ اگر گواہ لوبھ سے جھوٹھ بولے تو ہزار پن جرمانہ دیوے اور اگر موہ سے جھوٹھ بولے تو بمقدار پورب ساہس جرمانہ دیوے اور اگر خوف سے جھوٹھ بولے تو بمقدار دو مدھیم ساہس جرمانہ دیوے اور اگر بلحاظ دوستی جھوٹھ بولے تو بمقدار چار پورب ساہس جرمانہ دیوے۔

۱۲۱۔ اگر گواہ کام کے غلبہ سے جھوٹھ بولے تو دس پورب ساہس جرمانہ دیوے اور اگر کرودھ سے جھوٹھ بولے تو بمقدار تین اتم ساہس جرمانہ دیوے اگر اگیانتا سے جھوٹھ بولے تو بمقدار دو سو پن جرمانہ دیوے اور اگر لڑکپن سے جھوٹھ بولے تو بمقدار ایک سو پن جرمانہ دیوے۔

۱۲۲۔ ادھرم کے بند ہونے اور دھرم کے جاری ہونے کے واسطے پنڈتون نے یہ ڈنڈ گواہون کے جھوٹھ بولنے مین کہا ہے۔

✢ دیکھو اشلوک ۱۳۸۔

कामिनीषु विवाहेषु गवां भक्ष्ये तथेन्धने ॥ ब्राह्मणाभ्युपपत्तौ च
शपथे नास्ति पातकम् ॥ ११२ ॥ सत्येन शापयेद्विप्रं क्षत्रियं वा-
हनायुधैः ॥ गोबीजकांचनैर्वैश्यं शूद्रं सर्वैस्तु पातकैः ॥ ११३ ॥
अग्निं वाहारयेदेनमप्सु चैनं निमज्जयेत् ॥ पुत्रदारस्य वाप्येनं
शिरांसि स्पर्शयेत्पृथक् ॥ ११४ ॥ यमिद्धो न दहत्यग्निरापो नो-
न्मज्जयन्ति च ॥ न चार्तिमृच्छति क्षिप्रं स ज्ञेयः शपथे शुचिः ॥
११५ ॥ वत्सस्य ह्यभिशस्तस्य पुरा भ्रात्रा यवीयसा ॥ नाग्निर्द-
दाह रोमापि सत्येन जगतः स्पशः ॥ ११६ ॥ यस्मिन्यस्मिन्विवा-
दे तु कौटसाक्ष्यं कृतं भवेत् ॥ तत्तत्कार्यं निवर्तेत कृतं चाप्य-
कृतं भवेत् ॥ ११७

١١٢ - عورت وبیاہ وگئو کے کھانے کی چیز وایندھن و براہمن کی حفاظت میں جھوٹھی قسم کھانیسے پاپ نہیں ہوتا

١١٣ - براہمن کو سچ کی قسم اور کشتری کو سواری اور ہتھیارون کی اور ویشیہ کو گئو اور بیج اور سونے کی اور شودر کو تمام پاپون کی قسم دلاوے —

١١٤ - آگ کو اٹھواوے یا پانی میں ڈبادے اور عورت کے بیٹیا کے سر کو چھواوے -

١١٥ - جسکو آگ جلاوے یا پانی نہ ڈباوے یا جو جلدی دکھ نہ پاوے اسکو قسم میں پاک جاننا چاہیئے —

١١٦ - اگلے زمانہ میں تبش رشی کے چھوٹے بھائی نے انکو عیب لگایا اور تبش رشی نے اپنی صفائی کے واسطے آگ کو اٹھایا لیکن تمام دنیا کے عمل نیک وبد جاننے والی آگ نے رشی کا ایک بال بھی نہ جلایا -

١١٧ - جو جو کام گواہون کے سچ بولنے سے صحیح ہوگئے ہین اور پیچھے سے گواہ کا جھوٹھ بولنا ثابت ہوگیا ہے تو اس کام کو غلط سمجھنا چاہیئے

कुष्माण्डैर्वापिजुहुयाद्घृतमग्नौयथाविधि।।उदित्यृचावा
वारुणयातृचेनाब्दैवतेनवा।।१०६।।त्रिपक्षादब्रुवन्साक्ष्य-
मृणादिषुनरोऽगदः।।तदृणंप्राप्नुयात्सर्वंदशबन्धंचसर्वतः।।
१०७।।यस्यदृश्येतसप्ताहादुक्तवाक्यस्यसाक्षिणः।।रोगोऽग्नि
र्ज्ञातिमरणमृणंदाप्योदमंचसः।।१०८।। असाक्षिकेषुत्वर्थे-
षुमिथो विवदमानयोः।। अविन्दंस्तत्त्वतःसत्यंशपथेनापि
लम्भयेत्।।१०९।।महर्षिभिश्चदेवैश्चकार्य्यार्थंशपथाःकृ-
ताः।।वशिष्ठश्चापिशपथंशेपेपैजवनेनृपे।।११०।।नवृथाश
पथंकुर्यात्स्वल्पेऽप्यर्थेनरोबुधः।।वृथाहिशपथंकुर्वन्प्रेत्यचेहच
नश्यति।।१११।।

۱۰۶- خواہ کوشمانڈ منتر جو یجروید مین ہے اسکو پڑھکر یا اُدُتّم اُو پڑھکر اُن دونون منترون مین سے کسی ایک منتر کو پڑھ پڑھکر گھی سے ہون کرے شاستر کی بِدھ کے موافق۔

۱۰۷- قرض وغیرہ کے مقدمات مین تندرست گواہ ڈیڑھ مہینہ کے اندر کچھ نہ کہے تو جس مقدمہ مین گواہ ہوا ہے اُس مقدمہ کے قرضہ کو دسوان حصہ ڈنڈ کو دیوے۔

۱۰۸- عدالت سے گواہ گواہی دیکر آوے اور سات دن کے اندر بیماری و آگ کا لگنا و رشتہ دار کی موت ان مین سے کوئی ایک سچ گواہ کو ہو تو وہ گواہ اُس قرضہ کو اور اُس قرضہ کا دسوان حصہ ڈنڈ کو دیوے۔

۱۰۹- جس مقدمہ مین گواہ نہین ہے، اور غور کرنے سے حاکم اصلی بات کو نہین پا سکتا تب آگے لکھی ہوئی سوگند کے وسیلے سے اصلی بات کو دریافت کرے۔

۱۱۰- دیوتا اور بڑے بڑے رشی لوگون نے کام کے واسطے سوگند کھائی ہے اور بسوامتر کے جھگڑے مین بششٹ رشی نے پیون کے بیٹے سداس نام راجہ کے روبرو قسم کھائی تھی

۱۱۱- تھوڑے مطلب مین کبھی نادان آدمی جھوٹھی سوگند نہ کھاوین کیونکہ جھوٹھی قسم کھانے سے اس لوک مین اور پرلوک مین نشٹ ہوتا ہے

अप्सुभूमिवदित्याहुःस्त्रीणांभोगेचमैथुने॥ अब्जेषुचवरत्ने
षुसर्वेष्वश्ममयेषुच॥१००॥एतान्दोषानवेक्ष्यत्वंसर्वाननृ-
तभाषणे॥ यथाश्रुतंयथादृष्टंसर्वमेवाञ्जसावद॥१०१॥
गोरक्षकान्वाणिजिकांस्तथाकारुकुशीलवान्॥ प्रेष्यान्
वार्धुषिकांश्चैवविप्रान्शूद्रवदाचरेत्॥१०२॥तद्वदन्धर्मतो
ऽर्थेषुजानन्नप्यन्यथानरः॥नस्वर्गाच्च्यवतेलोकाद्दैवींवाचं
वदन्तिताम्॥१०३॥शूद्रविट्क्षत्रविप्राणांयत्रर्तोक्तौभवेद्व-
धः॥तत्रवक्तव्यमनृतंतद्धिसत्याद्विशिष्यते॥१०४॥वा-
ग्दैवत्यैश्चचरुभिर्यजेरंस्तेसरस्वतीम्॥ अनृतस्यैनसस्तस्य
कुर्व्वाणानिष्कृतिंपराम्॥१०५॥

۱۰۰- پانی- عورت- جلج- موتی- جواہرات وغیرہ کے مقدمات مین بھی مثل زمین کے جاننا-
۱۰۱- جھوٹھ بولنے مین اِتنے دوشون کو دیکھکر جیسا دیکھا اور سُنا ہے ویسا راست بیان بولو-
۱۰۲- گیئو کی حفاظت سے اوقات بسر کرنیوالا ویش کا کام کرنیوالا دوسرے کی رسوئی بنانیوالا
گانے والا غلامی کرنیوالا بیاج لینے والا جو برہمن ہے اُسکو شودر کی طرح ماننا چاہئے-
۱۰۳- وید و دھرم شاستر رحم کی نظر سے جھوٹھ بولتے ہین سورگ سے نہین گرتا اور اُسکی
بانی مُن وغیرہ دیوتا کی بانی کے برابر سمجھتے ہین-
۱۰۴- جہان سچ بولنے سے برہمن کشتری ویشیہ شودر قتل ہوتا ہو وہان جھوٹھ بولنا
سچ سے بھی زیادہ اچھا ہے-
۱۰۵- جھوٹھ بولکر گھر مین آکر سرسوتی دیبی کی یگیہ کرے تب جھوٹھ بولنے کے پاپ سے چھوٹے

अन्धोमत्स्यानिवाश्नातिसनरःकण्टकैःसह॥ योभाषतेऽर्थ
वैकल्यमप्रत्यक्षंसभांगतः॥९५॥यस्यविद्वान्हिवदतः क्षेत्रज्ञो
नाभिशंकते॥ तस्मान्नदेवाः श्रेयांसंलोकेऽन्यंपुरुषंविदुः९६
॥यावतोबान्धवान्यस्मिन्हन्तिसाक्ष्येऽनृतम्वदन्॥ तावतः
संख्ययातस्मिन् शृणुसौम्यानुपूर्वशः॥९७॥ पंचपश्वनृते
हन्तिदशहन्तिगवानृते॥ शतमश्वानृतेहन्तिसहस्रंपुरुषा-
नृते॥९८॥हन्तिजातानजातांश्चहिरण्यार्थेनृतंवदन्॥सर्वं
भूम्यनृतेहन्तिमास्मभूम्यनृतंवदीः॥९९॥

۹۵ - جو آدمی دربار مین جاکر رشوت لیکر جھوٹھ بولتا ہے وہ اندھے کی طرح مچھلی کو مع کانٹون کے کھاتا ہے ۔

۹۶ - جس آدمی کے بولتے ہوئے اندر آتما شک نہین کرتی ہے اُس سے اچھا دوسرے آدمی کو اس لوک مین دیوتا لوگ نہین جانتے ۔

۹۷ - جس کام مین جھوٹھ بولنے سے جتنے رشتہ دارون کو مارتا ہے وہ سب اے رشی لوگو ہم سے سنئے ۔

۹۸ - پشو یعنے چارپایہ کے مقدمہ مین جھوٹھی گواہی دینے سے پانچ پشت کی فنا کرتا ہے اور گئو کے مقدمہ مین دس پشت کی اور گھوڑے کے مقدمہ مین سو پشت کی اور آدمی کے مقدمہ مین ہزار پشت کی فنا کرتا ہے ۔

۹۹ - سونے کے مقدمہ مین جھوٹھی گواہی دینے سے ہوئے اور ہونیوالے رشتہ دارون کی فنا کرتا ہے اور زمین کے مقدمہ مین جھوٹھی گواہی دینے سے سب کو نابود کرتا ہے اسلیئے زمین کی بابت گواہی دینے مین کبھی جھوٹھ نہ بولے ۔

ब्रह्मघ्नोयेस्मृतालोकायेचस्त्रीबालघातिनाम्॥ मित्रद्रुहः
कृतघ्नस्यतेतेस्युर्ब्रुवतोमृषा॥८९॥जन्मप्रभृतियत्किंचित्पु-
ण्यंभद्रत्वयाकृतम्॥ तत्तेसर्वंशुनोगच्छेद्यदिब्रूयास्त्वमन्य-
था॥९०॥ एकोऽहमस्मीत्यात्मानंयत्त्वंकल्याणमन्यसे॥ नि-
त्यंस्थितस्तेहृद्येषपुण्यपापेक्षितामुनिः॥९१॥यमोवैवस्व-
तोदेवोयस्तवैषहृदिस्थितः॥ तेनचेदविवादस्तेमागंगांमाकु-
रून्गमः॥९२॥नग्नोमुण्डःकपालेनभिक्षार्थीक्षुत्पिपासितः
॥ अन्धःशत्रुकुलंगच्छेद्यःसाक्ष्यमनृतंवदेत्॥९३॥ अवाक्
शिरास्तमस्यन्धेकिल्बिषीनरकंव्रजेत्॥ यःप्रश्नंवितथंब्रूया-
त्पृष्टःसन्धर्मनिश्चये॥९४॥

۸۹ — براہمن اور استری اور بالک ان تینوں کا مارنیوالا اور دوست سے دشمنی کرنیوالا اور اُپکار کو نہ ماننے والا ان سب کو جو لوک ملتا ہے وہی لوک جھوٹھ بولنے سے تمکو ملے۔

۹۰ — جو پنیہ تمام جنم میں تمنے کیا ہو وہ سب جھوٹھ بولنے سے کتہ کو ملے۔

۹۱ — اپنے کو تم ایسا مانتے ہو کہ میں اکیلا ہوں سو نہ مانو کیونکہ ہمیشہ سے تمہارے سینہ میں پاپ اور پنیہ کا دیکھنے والا منیشور قائم ہے

۹۲ — یم راج وویوسوت دیوتا تمہارے دل میں قائم ہے اسکے ساتھ اگر تمہاری بحث ہو تو گنگا اور کرکشیتر میں نجاؤ یعنے جھوٹھ بولنے سے یم راج کے ساتھ بحث ہوگی تو اُس پاپ کے دور ہونے کے واسطے گنگا جی اور کرکشیتر میں جانا پڑیگا۔

۹۳ — جو گواہ جھوٹھ بولے وہ برہنہ مونڈ مونڈائے ہوئے بھوکھ پیاس سے دکھی اندھا ہوکر بھیکھ مانگنے کیواسطے کپال لیکر دشمن کے خاندان میں جاوے۔

۹۴ — جو شخص دھرم کے نشچے کرنے میں پوچھا گیا اور جھوٹھ بولا وہ پاپی نیچے سر کئے ہوئے بہت اندھیارے نرک میں جاتا ہے

आत्मैव ह्यात्मनः साक्षी गतिरात्मा तथात्मनः ॥ मावमंस्थाः स्वमात्मानं नृणां साक्षिणमुत्तमम् ॥ ८४ ॥ मन्यन्ते वै पापकृतो न कश्चित्पश्यतीति नः ॥ तांस्तु देवाः प्रपश्यन्ति स्वस्यैवान्तरपूरुषः ॥ ८५ ॥ द्यौर्भूमिरापो हृदयं चन्द्रार्काग्नियमानिलाः ॥ रात्रिः सन्ध्ये च धर्मश्च वृत्तज्ञाः सर्वदेहिनाम् ॥ ८६ ॥ देवब्राह्मणसान्निध्ये साक्ष्यं पृच्छेदृतं द्विजान् ॥ उदङ्मुखान् प्राङ्मुखान्वा पूर्वाह्णे वै शुचिः शुचीन् ॥ ८७ ॥ ब्रूहीति ब्राह्मणं पृच्छेत्सत्यं ब्रूहीति पार्थिवम् ॥ गोबीजकाञ्चनैर्वैश्यं शूद्रं सर्वैस्तु पातकैः ॥ ८८ ॥

۸۴- آتما کی گت اور گواہ آتما ہی ہے اسلئے سب آدمیون مین اُتم اپنی آتما ہی اُسکا اپمان نکرنا چاہیئے۔

۸۵- پاپ کرنیوالے یہ جانتے ہین کہ ہمکو کوئی نہین دیکھتا ہے اور اُس پاپ کو دیوتا لوگ اور اپنے جسم کے اندر رہنے والا پرش دیکھتا ہے۔

۸۶- سورگ بھوم جل ہردے مین رہنے والا جیو آتما سورج چندرمان اگن یم راج ہوا رات یہ دونون سندھیا یہ سب آدمیون کے کرم کو دیکھتے و جانتے ہین۔

۸۷- دیوتا اور براہمن کے سامنے گواہان قوم براہمن و کشتری و ویشیہ پاک ہوکر پورب منھ یا اُتر منھ کھڑے ہووین اور ایسے حاکم پاک ہوکر دن کے حصہ اول مین سوال کرے۔

۸۸- کہو۔ اسطرح براہمن سے پوچھے سچ کہو اسطرح کشتری سے پوچھے گیہو اور بیج اور سونا کی قسم دے کر ویشیہ سے پوچھے اور جھوٹھ بولنے سے سب پاپون کے بھوگ کرنیوالے ہوگے ایسا کہکر شودر سے پوچھے۔

स्वभावेनैव यद्ब्रूयुस्तद्ग्राह्यं व्यावहारिकम्॥ अतो यदन्यद्विब्रू-
युर्धर्मार्थं तदपार्थकम्॥७८॥ सभान्तः साक्षिणः प्राप्तानर्थि-
प्रत्यर्थिसन्निधौ॥ प्राड्विवाकोऽनुयुञ्जीत विधिनानेन सान्त्व-
यन्॥७९॥ यद्द्वयोरनयोर्वेत्थ कार्येऽस्मिन्चेष्टितं मिथः॥ तद्ब्रू-
त सर्वं सत्येन युष्माकं ह्यत्र साक्षिता॥८०॥ सत्यं साक्ष्ये ब्रुवन्सा-
क्षी लोकानाप्नोति पुष्कलान्॥ इह चानुत्तमां कीर्तिं वागेषा
ब्रह्मपूजिता॥८१॥ साक्ष्येऽनृतं वदन्पाशैर्बध्यते वारुणैर्भृश-
म्॥ विवशः शतमाजातीस्तस्मात्साक्ष्यं वदेदृतम्॥८२॥ सत्ये-
न पूयते साक्षी धर्मः सत्येन वर्द्धते॥ तस्मात्सत्यं हि वक्तव्यं स-
र्ववर्णेषु साक्षिभिः॥८३॥

۷۸ - اپنی طبیعت سے جو بات کہے اسکو قبول کرنا چاہیے (یعنی درج اظہار کرنا چاہیے)
اور جو بات سکھانے سے کہے وہ بیفائدہ ہے اُسکو قبول نکرنا چاہیے -
۷۹ - راجہ کے حکم سے مقدمہ فیصل کرنیوالا برہمن دربار مین مدعی و مدعاعلیہ کے روبرو مطابق
طریقہ مندرجہ آئندہ بوسیلہ سام نام تدبیر کے گواہون کو حکم دے -
۸۰ - کہ مدعی و مدعاعلیہ کے مقدمہ تداِمین باہم ظہور مین آئے ہوئے حال کو جو کچھ تم جانتے ہو
بہ راستی تمام کہو اِس مقدمہ مین تمہاری گواہی ہے -
۸۱ - گواہی مین سچ بولنے سے اونچا لوک (یعنے برہم لوک وغیرہ) کو پاتا ہے اور اس لوک مین
بڑی نیکنامی کو پاتا ہے اور بانی اُسکی شتری برہماجی نے تعریف کی ہوئی ہے یعنے برہماجی اسکی تعریف کرتے ہین
۸۲ - گواہی مین جھوٹھ بولنے سے دوسرے کے قابو مین پڑ کر سو جنم تک برن دیوتا کے پاش سخت
باندھا جاتا ہے اس سے سچی گواہی دینا چاہیے -
۸۳ - سچ بولنے سے گواہ پاک ہوتا ہے اور اُسکا دھرم ترقی پاتا ہے اسواسطے سب ورنون
مین گواہ کو سچ بولنا چاہیے -

बहुत्वं परिगृह्णीयात्साक्षिद्वैधे नराधिपः ॥ समेषु तु गुणोत्कृष्टान्गुणिद्वैधे द्विजोत्तमान् ॥७३॥ समक्षदर्शनात्साक्ष्यं श्रवणाच्चैव सिध्यति ॥ तत्र सत्यं ब्रुवन्साक्षी धर्मार्थाभ्यां न हीयते ॥७४॥ साक्षी दृष्टश्रुतादन्यद्विब्रुवन्नार्यसंसदि ॥ अवाङ्नरकमभ्येति प्रेत्य स्वर्गाच्च हीयते ॥७५॥ यत्रानिबद्धोऽपीक्षेत शृणुयाद्वापि किंचन ॥ पृष्टस्तत्रापि तद्ब्रूयाद्यथादृष्टं यथाश्रुतम् ॥७६॥ एकोऽलुब्धस्तु साक्षी स्याद्बह्व्यः शुच्योऽपि न स्त्रियः ॥ स्त्रीबुद्धेरस्थिरत्वात्तु दोषैश्चान्येऽपि ये वृताः ॥७७॥

۷۳ - جہان گواہون کے دو قسم کے بیان ہون وہان زیادہ تعداد والے گواہون کا بیان ماننا چاہیے اگر تعداد مین برابر ہین اور دو قسم کے بیان ہین تو گواہان نیک و صاحب صفت کے بیان کو ماننا چاہیے اور صاحب صفت کے دو قسم کے بیانون مین برہمن کے بیان کو ماننا چاہیے۔

۷۴ - حالات بچشم دیدہ و بگوش خود شنیدہ مین گواہی دینا ٹھیک ہے، اور اسمین سچ بولنے سے دھرم و ارتھ کا نقصان نہین ہوتا۔

۷۵ - جو شخص امر واقعی بچشم دیدہ و بگوش شنیدہ کے برخلاف اچھے لوگون کی سبھا مین گواہی دیتا ہے وہ نیچے سر کئے ہوئے نرک مین جاتا ہے سورگ اسکو نہین ملتا۔

۷۶ - تم اسمین گواہ ہو اسطرح نہین کہا ہے اور کیفیت مقدمہ کو اسنے دیکھا ہے اسکو طلب کر کے مقدمہ کا حال پوچھا جاوے تو جسطرح دیکھا اور سنا ہے اسی طرح سے بیان کرے۔

۷۷ - طمع نہ رکھنے والا ایک آدمی بھی گواہ ہو سکتا ہے اور طہارت رکھنے والی بہت عورتین گواہ نہین ہو سکتین کیونکہ عورتون کی عقل ایک حالت پر قائم نہین رہتی اور جو آدمی عیب دار ہین وہ بھی گواہ نہین ہو سکتے۔

स्त्रीणांसाक्ष्यंस्त्रियःकुर्युर्द्विजानांसदृशाद्विजाः ।। शूद्राश्चस-
न्तः शूद्राणामंत्यानामंत्ययोनयः ।।६८।। अनुभावीतुयःकश्चि
त्कुर्यात्साक्ष्यंविवादिनाम् ।। अन्तर्वेश्मन्यरण्येवाशरीरस्यापि
चात्यये।६९। स्त्रियाप्यसंभवेकार्यंबालेनस्थविरेणवा ।। शि-
ष्येणबन्धुनावापिदासेनभृतकेनवा ।।७०।। बालवृद्धातुराणां
चसाक्ष्येषुवदतांमृषा ।। जानीयादस्थिरांवाचमुत्सिक्तमन-
सांतथा ।।७१।। साहसेषुचसर्वेषुस्तेयसंग्रहणेषुच ।। वाग्दण्ड-
योश्चपारुष्येनपरीक्षेतसाक्षिणः ।।७२।।

۶۸- عورتون کی گواہ عورتین ہووین دوجون کے گواہ دوج ہووین شودرون کے گواہ شودر ہووین چانڈال کے گواہ چانڈال ہووین-

۶۹- مدعی اور مدعا علیہ کے مطالب کو جو جانتا ہو وہ گواہ ہووے جنگل گھر ان دونون کے اندر وجانکشی ان تینون طرح کے مقدمون مین قرض لینے مین جو لکشن گواہونکے کہے گئے ہین انکا آدر نکرنا یعنے اس مقام پر اُسکی تعمیل نکرنا-

۷۰- اُن تینون مقدمون مین اگر گواہ مرقومہ بالا کے نہونے پر عورت لڑکے وبڈھے وشِشتا دشاگرد غلام ومزدور یہ سب بھی گواہ ہووین-

۷۱- گواہی مین بالک و بوڑھے ودُکھی وانمت وغیرہ کی بات معتبر نجاننا-

۷۲- زور سے کام کرنا (مثل آتش زنی وغیرہ) اور چوری اور عورت کو زبردستی لیجانا اور سخت زبانی کرنا اور لاٹھی وغیرہ سے مارنا ان مقدمون مین گواہون کی گواہی معتبر نہونا چاہیئے-

गृहिणाःपुत्रिणोमौलाःक्षत्रविट्शूद्रयोनयः॥ अर्थ्युक्ताःसा-
क्ष्यमर्हन्तिनयेकेचिदनापदि॥ ६२॥ आप्ताःसर्वेषुवर्णेषुका-
र्याःकार्येषुसाक्षिणः॥ सर्वधर्मविदोलुब्धाविपरीतांस्तुवर्ज-
येत्॥ ६३॥ नार्थसम्बन्धिनोनाप्तानसहायानवैरिणः॥ नदृ-
ष्टदोषाःकर्तव्याःनव्याध्यार्त्तानदूषिताः॥ ६४॥ नसाक्षीनृप-
तिःकार्योनकारुककुशीलवौ॥ नश्रोत्रियोनलिंगस्थोन-
संगेभ्योविनिर्गतः॥ ६५॥ नाध्यधीनोनवक्तव्योनदस्युर्नविक-
र्मकृत्॥ नवृद्धोनशिशुर्नैकोनान्त्योनविकलेन्द्रियः॥ ६६॥ ना-
र्त्तोनमत्तोनोन्मत्तोनक्षुत्तृष्णोपपीडितः॥ नश्रमार्त्तोनकामा-
र्त्तोनक्रुद्धोनापितस्करः॥ ६७॥

۶۲ وقت مصیبت ہونے پر جو کوئی ملے وہی گواہ تجویز ہو سکتا ہے بلکہ عیالدار صاحب اولاد و خاندانی کشتری و دیش یہ سودر ذات مدعی کی گواہی دینے کے لائق ہوتے ہین ۔

۶۳ ۔ سب ورنون کے کام مین سچ بولنے والے تمام دھرمون کو جاننے والے حرص نہ رکھنے والے جو آدمی ہین وہی گواہی دینے کے لائق ہوتے ہین اور جو صفات مرقومہ بالا نہ رکھتے ہون اُنکو گواہ نکرنا چاہیئے ۔

۶۴ ۔ جس مطلب کی بحث ہے اُس سے نسبت رکھنے والا و دوست و مدد کرنیوالا و دشمن اور جسکا عیب سے جلد دیکھنے مین آیا ہو اور بیماری سے دُکھی اور دوش والا ۔

۶۵ ۔ اور راجہ اور سوئین بنانیوالا اور نٹ وغیرہ و بید پڑھنے والا اور برہم چاری وغیرہ صحبت سے جو الگ ہو گیا

۶۶ ۔ و غلام و نیچ کرم کرنیوالا و چور و برخلاف کرم کرنیوالا و اسّی برس سے زیادہ عمر والا و سولہ برس سے کم عمر والا و اکیلا و چانڈال وغیرہ و کوئی ایک عضو نہ رکھنے والا ۔

۶۷ ۔ اور دُکھی اور بھنگ کا نشہ وغیرہ کے نشہ مین مست و مخمور و بھوت وغیرہ کا خلل رکھنے والا بھوک پیاس کی تکلیف رکھنے والا محنت کا ماندہ سے دُکھی و کام دیو سے دُکھی و کرودھی و چور ان سبکو گواہ نکرنا چاہیئے

ब्रूहीत्युक्तश्चनब्रूयादुक्तंचनविभावयेत्।। नचपूर्वापरंविद्यात्त-
स्मादर्थात्सहीयते।।५६।।साक्षिणःसन्तिमेत्युक्त्वादिशेत्युक्तो
दिशेन्नयः।।धर्मस्थःकारणैरेतैर्हीनन्तमपिनिर्दिशेत्।।५७।।अ-
भियोक्तानचेद्ब्रूयाद्बध्योदण्ड्यश्चधर्मतः।। नचेत्त्रिपक्षात्प्रब्रू-
याद्धर्मम्प्रतिपराजितः।।५८।।योयावन्निह्नुवीतार्थंमिथ्यायावतिवावदेत्।। तौनृपेणह्यधर्मज्ञौदाप्यौतद्द्विगुणंदमम्।।५९
पृष्टोऽपव्ययमानस्तुकृतावस्थोधनैषिणा।। त्र्यवरैःसाक्षिभि-
र्भाव्योनृपब्राह्मणसन्निधौ।।६०।।यादृशाधनिभिःकार्य्या-
व्यवहारेषुसाक्षिणः।।तादृशान्सम्प्रवक्ष्यामियथावाच्यमृ-
तंचतैः।।६१।।

۵۶ - اور جب حاکم نے حکم دیا کہ بولو تب بولتا نہیں ہے اور جو بیان کئے ہوئے دعوے گواہی و تحریر وغیرہ سے ثابت نہیں کرتا اور جو اول و آخر بات کو نہیں جانتا یہ سب اپنے مطلب کا نقصان کرتے ہیں۔

۵۷ - ہمارے گواہ ہیں ایسا کہکر گواہوں کو حاضر نہیں کرتا ان سببوں سے حاکم اسکو ہارنیوالا جانلے۔

۵۸ - جو مدعی حاکم کے روبرو کہتا ہے اور مدعا علیہ کے سامنے کچھ بولتا نہیں ہے وہ بیوپار کا بڑا جھوٹھا متصور ہوکر قتل و جرمانہ کے لائق ہوتا ہے۔

۵۹ - جو مدعی یا مدعا علیہ جتنے دھن کو جھوٹھ بیان کرتا ہے اتنے دھن کا دوچند تاوان دونوں سے راجہ لیوے اور یہ دونوں ادھرم کے جاننے والے ہیں۔

۶۰ - جب مدعا علیہ عدالت میں آکر کہے کہ ہمنے اوسکا دھن نہیں لیا ہے تب مدعی حاکم کے روبرو تین سے زیادہ گواہوں کے وسیلے سے اپنے دئے ہوئے دھن کو ثابت کرے۔

۶۱ - جو گواہان صاحب دولت مقدمات میں مقرر ہونے چاہئیں اور جیسا وہ گواہ لوگ سچ بولیں اسکو ہم کہتے ہیں۔

अर्थेऽपव्ययमानन्तुकरणेनविभावितम्॥ दापयेद्धनिकस्या-
र्थंदण्डलेशंचशक्तितः॥५१॥ अपह्नवेऽधमर्णस्यदेहीत्यु-
क्तस्यसंसदि॥ अभियोक्तादिशेद्देश्यंकरणंवान्यदुद्दिशेत्
॥५२॥ अदेश्यंयश्चदिशतिनिर्दिश्यापह्नुतेचयः॥ यश्चाधरो-
त्तरानर्थान्विगीतान्नावबुध्यते॥५३॥ अपदिश्यापदेश्यं-
चपुनर्यस्त्वपधावति॥ सम्यक्प्रणिहितंचार्थंपृष्टःसन्ना-
भिनन्दति॥५४॥ असंभाष्येसाक्षिभिश्चदेशेसंभाषतेमि-
थः॥ निरुच्यमानंप्रश्नंचनेच्छेद्यश्चापिनिष्पतेत्॥५५॥

۵۱ — مدعی کے عرض کئے ہوئے دعوے سے مدعا علیہ نے انکار کیا اور مدعی نے گواہی گواہان وپیشی دستاویزات وغیرہ سے اپنے دعوے کو ثابت کیا تو راجہ قرض دینے والے کے روپیہ کو شخص مقروض سے دلادے اور بلحاظ حیثیت سزا بھی شخص مقروض کو دیوے۔

۵۲ - عدالت میں حاکم نے شخص مقروض سے کہا کہ قرض دینے والے کا روپیہ دے دو اور مقروض نے جواب دیا کہ ہمنے نہیں لیا ہے اسوقت مدعی گواہی وتحریر وغیرہ وجہ ثبوت کو پیش کرے۔

۵۳ — جس شہر میں مدعا علیہ کا قیام کسیوقت میں بھی ممکن نہیں اور مدعی اُس شہر کو کہکر پھر کہے کہ اُس شہر کو میں نے نہیں کہا اور وہ مدعی اول و آخر خلاف بولتا ہے۔

۵۴ — اور جو کہتا ہے کہ اِسنے میرے ہاتھ سے اسقدر سونا لیا ہے ایسا کہکر پھر کہے کہ میرے لڑکے کے ہاتھ سے لیا ہے اور جس بات کو حاکم پوچھتا ہے اُسکو ثابت نہیں کرتا۔

۵۵ - اور جو خلوت میں گواہوں سے گفتگو کرتا ہے اور سوال کو قائم کرنے کے واسطے حاکم سوال کرتا ہے اُسکا جواب نہیں دیتا اور جو ایک مقام میں قائم نہیں رہتا۔

सद्भिराचरितंयत्स्याधार्मिकैश्वद्विजातिभिः॥ तद्देशकुलजा-
तीनामविरुद्धंप्रकल्पयेत्॥४६॥ अधमर्णार्थसिद्ध्यर्थमु-
त्तमर्णेनचोदितः॥ दापयेद्धनिकस्यार्थमधमर्णाद्विभावि-
तम्॥४७॥ यैर्यैरुपायैरर्थंस्वंप्राप्नुयादुत्तमर्णिकः॥ तैस्तैरुपा-
यैःसंगृह्यदापयेदधमर्णिकम्॥४८॥ धर्मेणव्यवहारेणच्छ-
लेनचरितेनच॥ प्रयुक्तंसाधयेदर्थंपंचमेनबलेनच॥४९॥
यःस्वयंसाधयेदर्थमुत्तमर्णोऽधमर्णिकात्॥ नसराज्ञाभि-
योक्तव्यःस्वकंसन्साधयन्धनम्॥५०॥

۴۶ - دھرماتما اچھے دِج لوگوں نے جس دھرم پر عمل کیا ہے اُس دیش و کُل و ذات کے موافق دھرم کو تجویز کرے -

۴۷ - قرضہ دینے والے نے راجہ کے روبرو اپنے دیئے ہوئے دھن کو ملنے کیو اسطے عرض کیا اور گواہ اور تحریر وغیرہ ثبوت سے اُس قرضہ کو ثابت کیا تو راجہ اوسکے دھن کو قرضدار سے دلادے -

۴۸ - جس جس تدبیر سے قرضہ دینے والا اپنے دھن کو پاوے اُس اُس تدبیر سے قرضدار کو پکڑ کر راجہ دھن کو دلادے -

۴۹ - دھرم ویوہار (یعنے گواہی و تحریر وغیرہ) و فریب و آچرت (یعنے برت اپاس) و طاقت اِن پانچو تدبیروں میں سے کسی تدبیر سے اپنے دیئے ہوئے دھن کو وصول کرے -

۵۰ - جو قرض دینے والا اپنے روپیہ کو مقروض آدمیوں سے بذریعہ تدبیر ذاتی کے وصول کرتا ہے اُسکو راجہ منع نکرے کہ ہمارے یہاں نالش کیوں نکی آپ اپنی تدبیر سے کیوں لینا ہے -

दातव्यंसर्ववर्णेभ्योराज्ञाचौरैर्हृतंधनम्।।राजातदुपयुंजा
नश्चौरस्याप्नोतिकिल्बिषम्।। ४०।।जातिजानपदान्धर्मान्श्रे
णीधर्मांश्चधर्मवित्।।समीक्ष्यकुलधर्मांश्चस्वधर्मम्प्रतिपा-
लयेत्।।स्वानिकर्माणिकुर्वाणादूरेसन्तोऽपिमानवाः।।प्रि
याभवन्तिलोकस्यस्वेस्वेकर्मण्यवस्थिताः।।४२।।नोत्पाद-
येत्स्वयंकार्यंराजानाप्यस्यपूरुषः।।नचप्रापितमन्येनग्रसे
दर्थंकथंचन।।४३।।यथानयत्यसृक्पातैर्मृगस्यमृगयुःपद
म्।।नयेत्तथानुमानेनधर्मस्यनृपतिःपदम्।।४४।।सत्यमर्थं
चसम्पश्येदात्मानमथसाक्षिणः।।देशंरूपंचकालंचव्यव
हारविधौस्थितः।।४५।।

۴۰ - راجہ چور کی چرائی ہوئی چیز کو لیکر سب ورنون کو دیوے (یعنی جسکی چیز ہے اُسکو دیوی
اگر اُس چیز کو راجہ آپ لے لے تو جو پاپ چور کو ہوتا ہے وہ راجہ کو ہووے
۴۱ - جات دھرم و دیش دھرم و سمپردائے وغیرہ دھرم و کل دھرم ان سب دھرمون کو
دیکھکر اپنے دھرم کو قائم کرے۔
۴۲ - اپنے کرم کو کرتے ہوئے دور بھی رہنے والے آدمی سنسار کو پیارے ہوتے ہین
۴۳ - راجہ و راجہ کے نوکر آپسے کام کو پیدا نکرین اور مدعی و مدعاعلیہ کے عرض کئے ہوئے
کام کو دولت کی حرص سے ترک نکرے (اُس مقدمہ کا فیصلہ راستی سے کرے)۔
۴۴ - جسطرح شکاری آدمی زخمی ہرن کے بدن سے زمین پر قطرات خون گرنے سے اُسکا
مقام ڈھونڈھ لیتا ہے اسیطرح راجہ خیال سے دھرم پد کو حاصل کرے
۴۵ - راجہ طریق بیوہار پر قائم ہوکر راستی و اصل مطلب و آتما (یعنی تجویز وغیرہ) و گواہ و دیش
و روپ و کال ان سب کو دیکھے۔

ममायमिति यो ब्रूयान्निधिं सत्येन मानवः ॥ तस्याददीत षड्भा-
गं राजा द्वादशमेव वा ॥ ३५ ॥ अनृतं तु वदन्दण्ड्यः स्ववित्तस्यां-
शमष्टमम् ॥ तस्यैव वा निधानस्य संख्यायाल्पीयसीं कला-
म् ॥ ३६ ॥ विद्वांस्तु ब्राह्मणो दृष्ट्वा पूर्वोपनिहितं निधिम् ॥ अ-
शेषतोऽप्याददीत सर्वस्याधिपतिर्हि सः ॥ ३७ ॥ यन्तु पश्येन्नि-
धिं राजा पुराणं निहितं क्षितौ ॥ तस्माद्द्विजेभ्यो दत्त्वार्द्धमर्द्धं को-
शे प्रवेशयेत् ॥ ३८ ॥ निधीनान्तु पुराणानां धातूनामेव च क्षि-
तौ ॥ अर्द्धभाग्रक्षणाद्राजा भूमेरधिपतिर्हि सः ॥ ३९ ॥

۳۵- جو چیز زمین مین گڑھی ہے اُسکو راجہ کے روبرو لیپاے اور کوئی دوسرا آدمی کہے کہ چیز ہماری ہے اور صورت اور تعداد کے وسیلے سے جیسی ہے ویسی ثابت کرے تو اُس چیز کو وہی پاوے اور اُس چیز کا چھٹوان حصہ راجہ لیوے دفینہ کے مالک کی صفت و بے صفتی کو دیکھکر حصہ تعین کرے صفت والے سے بارھوان حصہ اور بے صفت والے سے چھٹوان حصہ لیوے

۳۶- اگر جھوٹھ بولے تو اپنی چیز کا آٹھوان حصہ جرمانہ دیوے یا اُس چیز مدفونہ کے حصہ قلیل کے برابر اپنے گھر سے جرمانہ دیوے اور تعین حصہ کا موافق طریقہ مرقومہ بالا سمجھنا چاہیے

۳۷- اگر پنڈت برہمن چیز مدفونہ کو پاوے تو وہ اُس تمام چیز کو لیوے کیونکہ وہ سب کا مالک ہے

۳۸- اگر راجہ چیز مدفونہ کو خود پاوے تو اُسمین سے آدھا برہمنون کو دیوے اور آدھا اپنے خزانہ مین رکھے-

۳۹- چیز مدفونہ یا فیرہ کے نصف حصہ کو لینے والا راجہ ہے کیونکہ حفاظت کرتا ہے اور سب کا مالک ہے-

प्रणष्टस्वामिकंरिक्थंराजात्र्यब्दंनिधापयेत्॥ अर्वाक्त्र्य-
ब्दाद्धरेत्स्वामीपरेणनृपतिर्हरेत्॥ ३०॥ ममेदमितियोब्रूयात्
सोऽनुयोज्योयथाविधि॥ संवाद्यरूपसंख्यादीन्स्वामीतद्द्रव्य
मर्हति॥ ३१॥ अवेदयानोनष्टस्यदेशंकालंचतत्त्वतः॥ वर्णंरू
पंप्रमाणंचतत्समंदण्डमर्हति॥ ३२॥ आददीताथषड्भागं
प्रणष्टाधिगतान्नृपः॥ दशमंद्वादशंवापिसतांधर्ममनुस्मर-
न्॥ ३३॥ प्रणष्टाधिगतंद्रव्यंतिष्ठेद्युक्तैरधिष्ठितम्॥ यांस्तत्र
चौरान्गृह्णीयात्तान्राजेभेनघातयेत्॥ ३४॥

۳۰ - جس دولت کا کوئی مالک نہین ہے اُس دولت کو تین سال تک راجہ اپنے پاس رکھے اگر تین سال کے اندر اسکا مالک آوے تو اُس دولت کو پاوے اور بعد تین سال کے راجہ آپ لیوے -

۳۱ - جو آدمی راجہ کے روبرو جا کر کہے کہ یہ چیز ہماری ہے تو اُس سے بابت صورت و تعداد اُس چیز کے سوال کرے جب وہ اُس چیز کی تعداد و صورت کو صحیح بتلا دے وہ اُس چیز کو پاوے -

۳۲ - جب اوپر کہی ہوئی چیز کی تعداد و رنگ اور مقام و وقت کو نہ بتلا وے تب اُس چیز کے برابر جرمانہ دے -

۳۳ - اُس چیز کے چھٹھوین دسوین بارھوین حصہ کو بطور خرچ حفاظت کے لیوے اچھے لوگون کے دھرم کو خیال کرتا ہوا راجہ حصہ کا تقرر مالک کے بے صفتی و صاحب صفتی کو دیکھکر کرے -

۳۴ - پڑی ہوئی چیز ملے تو اُسکی حفاظت اچھے لوگون سے کرا کے رکھے اور راجہ اُسکی چرانے والون کو بھی ہاتھی سے مروا دے -

अर्थानर्थावुभौ बुद्ध्वा धर्माधर्मौ च केवलौ ॥ वर्णक्रमेण सर्वा-
णि पश्येत्कार्याणि कार्यिणाम् ॥२४॥ बाह्यैर्विभावयेल्लिङ्गै-
र्भावमन्तर्गतं नृणाम् ॥ स्वरवर्णेङ्गिताकारैश्चक्षुषा चेष्टितेन
च ॥२५॥ आकारैरिङ्गितैर्गत्या चेष्टया भाषितेन च ॥ नेत्रवक्त्र-
विकारैश्च गृह्यतेऽन्तर्गतं मनः ॥२६॥ बालदायादिकं रिक्थं ता-
वद्राजानुपालयेत् ॥ यावत्स स्यात्समावृत्तो यावच्चातीतशैश-
वः ॥२७॥ वशापुत्रासु चैवं स्याद्रक्षणं निष्कुलासु च ॥ पतिव्र-
तासु च स्त्रीषु विधवास्वातुरासु च ॥२८॥ जीवन्तीनां तु तासां
ये तद्धरेयुः स्वबान्धवाः ॥ ताञ्छिष्याच्चौरदण्डेन धार्मिकः पृ-
थिवीपतिः ॥२९॥

۲۴ امر واجب و غیر واجب کو تحقیق کرکے اور صرف دھرم و ادھرم پر لحاظ کرکے (ان دنیوی
براہمن و کشتری وغیرہ) کے سب مقدمات کو ورنہ وار دیکھے۔

۲۵ - آواز و صورت و قیافہ و اشارہ وغیرہ علامات بیرونی کے ذریعے سے آدمیوں کے
مافی الضمیر کو جان لیوے۔

۲۶ - صورت و بشرہ و رفتار و گفتار و چہرہ و اشارہ چشم انھون کے وسیلے سے دل کی
بات جانی جاتی ہے۔

۲۷ - لاوارث لڑکے کی دولت کو اسکے چچا وغیرہ لیتے ہون تو اس دولت کو راجہ اسوقت
تک اپنے پاس رکھے جبتک اسکا سماورتن کرم ہو اور عہد طفولیت آخر ہو۔

۲۸ - بانجھ و لاولد و خاندان سے نکالی ہوئی پتی برتا و رانڈ و روگنی ان سب کی دولت
کی حفاظت راجہ کرے کوئی لینے نہ پاوے۔

۲۹ - ان سبھون کے جیتے جی انکی دولت کو انھون کے رشتہ دار لیتے ہوین تو دھرماتما راجہ
اُس دولت کے لینے والے کو چور کی طرح سزا دیوے۔

पादोधर्मस्यकर्त्तारंपादःसाक्षिणमृच्छति॥ पादःसभासदः
सर्वान्पादोराजानमृच्छति॥१८॥राजाभवत्यनेनास्तुमुच्य-
न्तेचसभासदः॥एनोगच्छतिकर्त्तारंनिन्दार्होयत्रनिन्द्यते॥
१९॥जातिमात्रोपजीवीवाकामंस्याद्ब्राह्मणब्रुवः॥धर्मप्र-
वक्तानृपतेर्नतुशूद्रःकथंचन॥२०॥यस्यशूद्रस्तुकुरुतेराज्ञो
धर्मविवेचनम्॥तस्यसीदतितद्राष्ट्रंपंकेगौरिवपश्यतः॥२१
॥यद्राष्ट्रंशूद्रभूयिष्ठंनास्तिकाक्रान्तमद्विजम्॥विनश्यत्याशु
तत्कृत्स्नंदुर्भिक्षव्याधिपीडितम्॥२२॥धर्मासनमधिष्ठायसं-
वीतांगःसमाहितः॥प्रणम्यलोकपालेभ्यःकार्य्यदर्शनमा-
रभेत्॥२३॥

۱۸- ادھرم کے چار حصہ ہوتے ہیں ایک ایک حصہ کو ادھرم کرنیوالا گواہ وزیر و راجہ یہ چاروں پاتے ہیں۔

۱۹- جہاں نندا کے قابل آدمی نندا کو پاتے ہیں وہاں راجہ پاپ سے علیحدہ ہوتا ہے اور سبھا میں بیٹھنے والے وزیر بھی پاپ سے چھوٹ جاتے ہیں اور دھرم کرنیوالے ہی کو پاپ لگتا ہے۔

۲۰- جو ذات ہی میں برہمن ہو اور برہمن کا کرم کچھ بھی نہ کرتا ہو اور مورکھ ہو تو بھی وہ راجہ کو دھرم کا اپدیش کر سکتا ہے اور شودر کیسا ہی ہو وہ اپدیش نہیں کر سکتا۔

۲۱- جس راجہ کے دھرم کا بچار شودر کرتا ہے اس راجہ کا راج اسکے دیکھتے ہی دیکھتے مٹ جاتا ہے جیسی دلدل میں گئو پھنس کر مر جاتی ہے۔

۲۲- جس راج میں شودر اور ناستک بہت ہیں براہمن کشتری ویش نہیں ہیں وہ تمام راج قحط اور آفت سے پریشان ہو کر جلد مٹ جاتا ہے۔

۲۳- دھرم سبھا میں بیٹھ کر پوشاک سے بدن کو چھپا کر یکدل ہو کر لوکپالوں کو پرنام کر کے کام کا دیکھنا شروع کرے

धर्मो विद्धस्त्वधर्मेण सभां यत्रोपतिष्ठते॥ शल्यं चास्य न कृन्त-
न्ति विद्धास्तत्र सभासदः॥१२॥ सभां वा न प्रवेष्टव्यं वक्तव्यं वा
समञ्जसम्॥ अब्रुवन्विब्रुवन्वापि नरो भवति किल्बिषी॥१३
यत्र धर्मो ह्यधर्मेण सत्यं यत्रानृतेन च॥ हन्यते प्रेक्षमाणानां
हतास्तत्र सभासदः॥१४॥ धर्म एव हतो हन्ति धर्मो रक्षति रक्षि-
तः॥ तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतोऽवधीत्॥१५॥ वृ-
षो हि भगवान्धर्मस्तस्य यः कुरुते ह्यलम्॥ वृषलं तं विदुर्देवा-
स्तस्माद्धर्मं न लोपयेत्॥ एक एव सुहृद्धर्मो निधनेऽप्यनुया-
ति यः॥ शरीरेण समं नाशं सर्वमन्यद्धि गच्छति॥१७॥

۱۲ ادھرم سے بیدھا ہوا دھرم جس سبھا مین رہتا ہے وہ سبھا کے بیٹھنے والے اُس ادھرم کو دور نہین کرسکتے وے سب سبھا کے بیٹھنے والے ادھرم سے بیدھے گئے ہین۔

۱۳ ۔ سبھا مین جانا نچاہیئے اگر جانا تو صحیح بات کہنا چاہیئے اگر جان کر صحیح نہ بولے یا خلاف بولے تو پاپی ہوتا ہے۔

۱۴ ۔ جہان ادھرم سے دھرم اور جھوٹھ سے سچ مارا جاتا ہے اور دیکھنے والے اسکو دور نہین کرسکتے وہان گویا سبھا کے مالک ہی مارے گئے ہین۔

۱۵ ۔ مارا گیا دھرم مارتا ہے اور حفاظت کیا گیا دھرم حفاظت کرتا ہے دھرم ہمکو نہ مارے اسلیئے دھرم کو نہ مارنا چاہیئے۔

۱۶ ۔ بھگوان جو دھرم ہے اسکو برکھہ یعنی بیل کہتے ہین اور جو اُسکو مارتا ہے اسکو برسل کہتے ہین اسلیئے دھرم کو نابود نکرنا چاہیئے۔

۱۷ ۔ دھرم ہی دوست ہی اور وہی ساتھ جاتا ہے اور زن و فرزند وغیرہ سب جسم کے ساتھ ہی چھوٹ جاتے ہین۔

اگر کوئی کہے کہ مرنے کے بعد ادھرم بھی ساتھ جاتا ہے وہ بھی دوست ہوا اسکا جواب یہ ہے کہ دھرم نتیجہ دلوانے کیواسطے اور ادھرم نتیجہ نامرغوب دینے کیواسطے ساتھ جاتا ہے تو جو نتیجہ دلواہ دینے کیواسطے ساتھ جاتا ہے وہی دوست کہلاتا ہے۔

स्त्रीपुन्धर्मो विभागश्च द्यूतमाह्वय एव च ॥ पदान्यष्टादशैता-
निव्यवहारस्थिताविह ॥७॥ एषु स्थानेषु भूयिष्ठं विवादं चर-
तां नृणाम् ॥ धर्मं शाश्वतमाश्रित्य कुर्यात्कार्यविनिर्णयम् ॥
८॥ यदा स्वयं न कुर्यात्तु नृपतिः कार्यदर्शनम् ॥ तदा नियु-
ञ्ज्याद्विद्वांसं ब्राह्मणं कार्यदर्शने ॥९॥ सोऽस्य कार्याणि सं-
पश्येत्सभ्यैरेव त्रिभिर्वृतः ॥ सभामेव प्रविश्याग्र्यामासीनः
स्थित एव वा ॥१०॥ यस्मिन्देशे निषीदन्ति विप्रा वेदविदस्त्र-
यः ॥ राज्ञश्चाधिकृतो विद्वान्ब्रह्मणस्तां सभां विदुः ॥११॥

۷- استری پرش کا دھرم تقسیم حصص شراکت - قمار بازی و جنگ جانوران وغیرہ اس لوک میں یہ اٹھارہ طرح کے مقدمات مقدم رکھے گئے ہیں اور سب مقدمات انھیں میں شامل ہیں۔

۸- راجہ ہمیشہ دھرم کی پناہ میں ہو کر ان اٹھارہ طرح کے مقدمات میں سب کارپردازوں کے خاص کاموں کو غور سے دیکھے۔

۹- جب راجہ آپ کاموں کو ملاحظہ نکرے تب پنڈت براہمن کو کام دیکھنے کا حکم دے۔

۱۰- وہ براہمن عدالت العالیہ میں بیٹھکر خواہ کھڑا ہو کر تین مشیروں کے ساتھ راجہ کے کام کو دیکھے۔

۱۱- جس ملک میں ایک براہمن پنڈت وید پڑھے ہوئے تین براہمنوں کے ساتھ مقدمات دیکھنے کے واسطے موافق حکم راجہ کے بیٹھتا ہے اس سبھا کو سری برہما جی کی سبھا جاننا چاہیئے۔

۷ بعچہ الاقول میں کہ نارد سمرت ہے کہ راجہ کے سپاہی سبھا شد دھرم شاستر حاسب منشی سونا آگ پانی اٹھ ارکان کارروائی عدالت کے ہیں اسباب میں قول برہسپت و بیاس منو رچہ و یہ سترا وقت ووہار ودرشٹو دھرم سوتر وپر ببیرہ پشٹ سمرت و متاکشرا وپرار کرو سکرنت وستشیم پران لائق ملاحظہ ہیں کہ کس کس کام پر کون کون قوم مقرر کرنا چاہیئے۔

व्यवहारान्दिदृक्षुस्तुब्राह्मणैःसहपार्थिवः॥ मंत्रज्ञैर्मंत्रिभि
श्चैवविनीतःप्रविशेत्सभाम्॥ १॥ तत्रासीनःस्थितोवापिपा
णिमुद्यम्यदक्षिणम्॥ विनीतवेषाभरणःपश्येत्कार्याणि
कार्यिणाम्॥ २॥ प्रत्यहंदेशदृष्टैश्चशास्त्रदृष्टैश्चहेतुभिः॥
अष्टादशसुमार्गेषुनिबद्धानिपृथक्पृथक्॥ ३॥ तेषामाद्य-
मृणादानंनिक्षेपोऽस्वामिविक्रयः॥ सम्भूयचसमुत्थानंद-
त्तस्यानपकर्मच॥ ४॥ वेतनस्यैवचादानंसंविदश्चव्यतिक्र-
मः॥ क्रयविक्रयानुशयोविवादःस्वामिपालयोः॥ ५॥ सी
माविवादधर्मश्चपारुष्येदण्डवाचिके॥ स्तेयंचसाहसंचैव
स्त्रीसंग्रहणमेवच॥ ६॥

۱- راجہ مع مشیران سلطنت و براہمنان کے مقدمات کے ملاحظہ کی خواہش سے سادی
پوشاک پہن کر راج سبھا میں داخل ہو

۲- سبھا میں بیٹھکر خواہ کھڑا ہو کر داہنا ہاتھ اوٹھا کر سادی پوشاک و زیور پہنکر کاربرداران
سلطنت کے کاموں کو دیکھے-

۳- داد و ستد و قرضہ وغیرہ اٹھارہ طرح کے مقدمات مفصلہ ذیل کو ملک و قوم و رواج علاقہ
و شاستر سے جانے ہوئے گواہ و سوگند وغیرہ کے وسیلہ سے علیحدہ علیحدہ ہر روز غور کرے

۴- اٹھارہ طرح کے مقدمات یہ ہیں داد و ستد قرضہ - امانت - لاوارثی چیز کا بیچنا - شراکت
قرضہ وغیرہ سے انکار کرنا-

۵- تنخواہ یا اجرت کا نہ دینا عہد شکنی کرنا - خرید و فروخت میں تکرار و رنج پیدا ہونا - مالک و
نوکر کا جھگڑا-

۶- تنازع حدود اراضی - دشنام دہی - مارپیٹ - خفیہ چوری - ظاہرا رہزنی و زناکاری
عورات کا زبردستی لیجانا-

गत्वाकक्षान्तरंत्वन्यत्समनुज्ञाप्यतंजनम्॥ प्रविशेद्भोजना-
र्थंचस्त्रीवृतोऽन्तःपुरंपुनः॥२२४॥ तत्रभुक्त्वापुनःकिंचित्तू-
र्यघोषैःप्रहर्षितः॥ सविशेत्तुयथाकालमुत्तिष्ठेच्चगतक्लमः
॥२२५॥ एतद्विधानमातिष्ठेदरोगःपृथिवीपतिः॥ अस्वस्थः
सर्वमेतत्तुभृत्येषुविनियोजयेत्॥ २२६॥

इतिमानवेधर्मशास्त्रेभृगुप्रोक्तायांसंहितायां
राजधर्मोनामसप्तमोऽध्यायः ७

۲۲۴- دوسرے استھان مین جاکر وہان کے آدمیون کو حکم دے کر پھر بھوجن کرنیکے عورتون کے محلات مین داخل ہو۔

۲۲۵- پھر تھوڑا کھانا کھاکر تشیری کی آواز سے خوش ہوکر خواب مین آرام کرے کسل وہمت کو رفع کرکے وقت مناسب پر خواب سے بیدار ہو۔

۲۲۶- جو راجہ تندرست ہو وہ اس طریق چلے اگر آپ تندرست نہو تو ان سب امور سلطنت کے کرنے کو وزیرون کو حکم دے۔

منوجی کا دھرم شاستر بھرگ جی کی
سنگھتا کا ساتوان ادھیا سماپت ہوا۔

परीक्षिताः स्त्रियश्चैनं व्यजनोदकधूपनैः॥ वेषाभरणसंशु-
द्धाः स्पृशेयुः सुसमाहिताः॥२१९॥ एवं प्रयत्नं कुर्वीत यानश-
य्यासनाशने॥ स्नाने प्रसाधने चैव सर्वालंकारकेषु च॥२२०॥
भुक्तवान्विहरेच्चैव स्त्रीभिरन्तःपुरे सह॥ विहृत्य तु यथाका-
लं पुनः कार्याणि चिन्तयेत्॥२२१॥ अलंकृतश्च संपश्येदा-
युधीयं पुनर्जनम्॥ वाहनानि च सर्वाणि शस्त्राण्याभरणा-
नि च॥२२२॥ सन्ध्यां चोपास्य शृणुयादन्तर्वेश्मनि शस्त्रभृ-
त्॥ रहस्याख्यायिनां चैव प्रणिधीनां च चेष्टितम्॥२२३॥

۲۱۹- جو عورت خوبصورت اور صاف زیور رکھنے والی اور ایک دل ہونے والی اور امتحان کی ہوئی ہو وہ پنکھا اور پانی اور دھوپ اور اسپرس یعنی چھونا ان سبھی کاموں کو کرے۔

۲۲۰- اس طریق سے سواری و پلنگ و نشست و غسل و حجامت وغیرہ سب ساتھ تدبیر کے کرے۔

۲۲۱- کھانا کھا کر عورتوں کے ساتھ محل میں بہار کرے اسکے بعد بوقت موقع پھر امور سلطنت کو دیکھے۔

۲۲۲- پھر زیور اور راج اور پوشاک کو زیب بدن کرکے پہلوانوں اور سواریوں اور سلاح خانوں اور جواہر خانوں اور پوشاک خانوں کو بنفس نفیس خود ملاحظہ کرے۔

۲۲۳- وقت شام سندھیا کرکے خلوت گاہ میں مسلح ہو کر دوت و خفیہ گویان کے کرنے لائق کاموں کو سنے۔

सहसर्वाःसमुत्पन्नाःप्रसमीक्ष्यापदोभृशम्॥संयुक्तांश्च-
वियुक्तांश्चसर्वोपायान्सृजेद्बुधः॥२१४॥उपेतारमुपेयंचस-
र्वोपायांश्चकृत्स्नशः॥एतत्त्रयंसमाश्रित्यप्रयतेतार्थसिद्ध-
ये॥एवंसर्वमिदंराजासहसंमन्त्र्यमंत्रिभिः॥व्यायम्याप्लुत्य
मध्याह्नेभोक्तुमन्तःपुरंविशेत्॥२१६॥तत्रात्मभूतैःकालज्ञै-
रहार्यैःपरिचारकैः॥सुपरीक्षितमन्नाद्यमद्यान्मंत्रैर्विषाप-
हैः॥२१७॥विषघ्नैरगदैश्चास्यसर्वद्रव्याणियोजयेत्॥वि-
षघ्नानिचरत्नानिनियतोधारयेत्सदा॥२१८॥

۲۱۴- ایک ہی زمانہ مین خزانہ کا خالی ہونا اور پرکرت کا کوپ اور دوست سے رنج
واقع ہو تو موہ نکرے بلکہ سام وغیرہ جو تدبیرین ہین اُنمین سے ایک ایک یا سبکو کرے

۲۱۵- تدبیر تدبیر کا بتانے والا تدبیر کے وسیلے سے جو چیز حاصل ہو اِن تینون کا آسرا
کرکے حصول مطلب کیواسطے تدبیر کرے -

۲۱۶- اسطرح اِن باتون کو وزیرون کے ساتھ بچار کرکے اُسکے بعد کسرت یا ورزش کرکے
اور وقت دوپہر غسل کرکے کھانا کھانے کیواسطے محل مین داخل ہو -

۲۱۷- اپنے برابر کال کا جاننے والا دولت وغیرہ پانے سے بھید نہ کھولنے والا ایسا
جو دوست ہو اور زہر کا دور کرنیوالا جو منتر ہے اُن سبکے وسیلے سے جس غلہ کا امتحان ہوگیا ہو
اُسکو کھاوے -

۲۱۸- زہر اور بیماری کو فنا کرنے والی جو چیزین ہین اُنکو سب چیزون مین ملانا چاہیئے
اور جو جواہر زہر کے فنا کرنیوالے ہین اُنکو ہر وقت زیب بدن کرنا مناسب ہے زہر آمیز
غلہ کو دیکھنے سے چکور نام پرند کی آنکھ سرخ ہو جاتی ہے اسواسطے اُسکو غلہ دکھلاکر
امتحان لینا چاہیئے -

धर्मज्ञंचकृतज्ञंचतुष्टप्रकृतिमेवच॥ अनुरक्तंस्थिरारम्भंल-
घुमित्रंप्रशस्यते॥२०९॥ प्राज्ञंकुलीनंशूरंचदक्षंदातारमे-
वच॥ कृतज्ञंधृतिमंतंचकष्टमाहुररिंबुधाः॥२१०॥ आर्य्य-
तापुरुषज्ञानंशौर्य्यंकरुणवेदिता॥ स्थौललक्ष्यंचसततमु-
दासीनगुणोदयः॥२११॥ क्षेम्यांसस्यप्रदांनित्यंपशुवृद्धि-
करीमपि॥ परित्यजेन्नृपोभूमिमात्मार्थमविचारयन्॥२१२
॥ आपदर्थंधनंरक्षेद्दारान्रक्षेद्धनैरपि॥ आत्मानंसततंरक्षे-
द्दारैरपिधनैरपि॥२१३॥

۲۰۹۔ اپکار اور دھرم کا جاننے والا مستقل کام شروع کرنیوالا اچھی خصلت والا محبت سے بھرا ہوا جو دوست ہے وہ نہایت اچھا ہے۔

۲۱۰۔ جو دشمن پنڈت ہے اور بڑے کل میں پیدا ہوا ہے اور شوربیر اور چتر اور داتا اور اپکار جاننے والا اور دھیر ہے وہ بڑا کٹھن ہے یعنے وہ قابو میں نہیں آسکتا ہے یہ بات کو پنڈتوں نے کہا ہے۔

۲۱۱۔ جو راجہ اوداسین بسا دھرم زیادہ جاننے والا وشوربیر دکرپال ہر ایک وقت پہ سہت دینے والا ہے اسکی پناہ میں ہوکر دشمن کے ساتھ جنگ کرے۔

۲۱۲۔ جو زمین بے عیب اور دھان دینے والی اور ہمیشہ جانوروں کی ترقی کرنیوالی اسکو بھی اپنی آتما کی حفاظت کے واسطے ترک کرے یعنے بدون ترک کرنے ایسی زمین کے آتما کی حفاظت نہو سکے تو بھی اس زمین کو ترک کرے اور آتما کی حفاظت اور طرح سے کرے۔

۲۱۳۔ وقت مصیبت کے واسطے دولت فراہم کرے اور دولت سے عورت کی حفاظت کرے اور عورت اور دولت کے وسیلے سے آتما کی حفاظت کرے

सर्व्वं कर्म्मेदमायत्तं विधाने दैवमानुषे ॥ तयोर्दैवमचिन्त्यं तु मा-
नुषे विद्यते क्रिया ॥ २०५ ॥ सह वापि व्रजेद्युक्तः सन्धिं कृत्वा प्र-
यत्नतः ॥ मित्रं हिरण्यं भूमिं वा सम्पश्यंस्त्रिविधं फलम् ॥ २०६
॥ पार्ष्णिग्राहं च सम्प्रेक्ष्य तथाक्रन्दं च मण्डले ॥ मित्रादथा-
प्यमित्राद्वा यात्राफलमवाप्नुयात् ॥ २०७ ॥ हिरण्यभूमिसं-
प्राप्त्या पार्थिवो न तथैधते ॥ यथा मित्रं ध्रुवं लब्ध्वा कृशमप्या-
यतिक्षमम् ॥ २०८ ॥

۲۰۵- دیوکرم اور مانش کرم انھین دونون کرمون کے اختیار مین کرنیکے لائق جو چیزین ہین انھین دیوکرم تو لائق فکر کرنے کے نہین ہے مگر مانش کرم مین بچار ہے یعنے اس جنم مین جو کام کرے اسکو خوب سمجھکر کرے۔

۲۰۶- اس طریق سے جنگ کرے اور اگر وہ راجہ دوستی کرے تو جاترا کا پھل یعنے دوست و زمین و سونا وغیرہ کا ملنا) دیکھکر اسکے ساتھ ملاپ کرے۔

۲۰۷- راج منڈل مین پارشن گراہ اور اگرندان دونون راجاون کی صلاح سے جاترا کرے ورنہ بدون مرضی ان دونون کے جاترا کرنے سے اندیشہ ہے کہ وے دونون فساد برپا کرینگے اسوجہ سے صلاح لیکر جاترا کرنے سے دوست خواہ دشمن سے بھی جاترا کا پھل ملتا ہی۔

۲۰۸- زمانہ حال مین کم قوت دوست اور زمانہ مستقبل مین صاحب ترقی و قائم دل دوست کو پاکر راجہ جیسی ترقی پاتا ہے ویسا ترقی سونا و زمین پانے سے نہین پاتا۔

* پچھلے جنم مین جو پاپ اور پنیہ کئے وہ دیوکرم کہلاتا ہی۔

* اس لوک مین جو پاپ و پنیہ کئے وہ مانش کرم کہلاتا ہی۔

* پارشن گراہ سے وہ راجہ جو پیچھے رہتا ہو۔

* کرند وہ راجہ ہے کہ جو اس پارشن گراہ کے کہنے پر عمل کرتا ہو جو کہ اپنے شمار کے خلاف کام کرتا ہو

त्रयाणामप्युपायानांपूर्वोक्तानामसम्भवे ॥ तथायुध्येत
सम्पन्नोविजयेतरिपून्यथा॥२००॥जित्वासंपूजयेद्देवान्ब्रा-
ह्मणांश्चैवधार्मिकान्। प्रदद्यात्परिहारांश्चख्यापयेदभया
निच॥२०१॥सर्वेषान्तुविदित्वैषांसमासेनचिकीर्षितम् ॥
स्थापयेत्तत्रतद्वंश्यंकुर्याच्चसमयक्रियाम्॥२०२॥प्रमाणा
निचकुर्वीततेषांधर्म्यान्यथोदितान्॥रत्नैश्चपूजयेदेनंप्रधा-
नपुरुषैःसह॥२०३॥आदानमप्रियकरंदानंचप्रियकारक-
म्॥अभीप्सितानामर्थानांकालेयुक्तंप्रशस्यते॥२०४॥

۲۰۰ - جب تین تدابیر مرقومۂ بالا نہ چل سکین تب ایسے تدبیر سے جنگ کرے جسکے وسیلہ سے فتحیاب ہی ہوا کرے۔

۲۰۱ - فتح حاصل ہونیکے بعد دیوتاؤن اور دھرماتما برہمنون کا پوجن کرے اور سونا وغیرہ فتح کی ہوئی چیزون کو دیوتا اور رشی لوگون کے واسطے سنکلپ کرکے اُس دیش کے رہنے والون کو بطور معافی دوام کے دیوے اور سب آدمیون کو بیخوف کرے۔

۲۰۲ - مجملاً سب کا منشا سمجھکر اُس راجہ کی نسل مین جو ہو اُسکو اُسی کی گدی پر بٹھلاوے اور یہ کم کرنا یہ نکرنا اب اُس راجہ کو اور اُسکے وزیرون کو سمجھاوے۔

۲۰۳ - انھون کا جو آچار شاستر کے موافق دھرم سے شامل ہے اُسکو پرمان کرے اور مع پردھان آدمیون کے رتنون سے راجہ کا پوجن کرے۔

۲۰۴ - اگرچہ دلخواہ چیزون کا لینا رنج کا دینے والا ہے اور دان یعنی چیزون کا دینا خاطر خواہ آرام وعیش کا دینے والا ہے یہ بات خلقی ہے تاہم خاص وقت پر دینا لینا اچھا ہوتا ہے اسلیئے اُسوقت دان ہی کرنا چاہئے۔

उपरुध्यारिमासीतराष्ट्रंचास्योपपीडयेत्॥ दूषयेच्चास्यसत
तंयवसान्नोदकेन्धनम्॥१९५॥ भिन्द्याच्चैवतडागानिप्राका-
रपरिखास्तथा॥ समवस्कन्दयेच्चैनंरात्रौवित्रासयेत्तथा१९६
॥उपजप्यानुपजपेद्बुध्येतैवचतत्कृतम्॥ युक्तेचदैवेयुध्येतज-
यप्रेप्सुरपेतभीः॥१९७॥साम्नादानेनभेदेनसमस्तैरथवापृथ-
क्॥ विजेतुंप्रयतेतारीन्नयुद्धेनकदाचन॥१९८॥ अनित्यो-
विजयोयस्माद्दृश्यतेयुध्यमानयोः॥ पराजयश्चसंग्रामेतस्मा-
द्युद्धंविवर्जयेत्॥१९९॥

۱۹۵- دشمن قلعہ مین رہے یا باہر رہے اور جنگ بھی نہ چاہتا ہو لیکن اسکو گھیرے رہے اور اوسکی راج کو تکلیف دے اور گھاس اور لکڑی اور پانی انھون مین ناکارہ چیز ڈالکر خراب کرے۔

۱۹۶- تالاب و قلعہ و بالاخانہ و کھائین ان سب کو کھود ڈالے یعنی توڑ ڈالے دشمن کو باخوف کرے اور برچھی لیکر رات کو ڈھکا نام باجہ کی آواز سے زیادہ تکلیف دے۔

۱۹۷ جو لوگ وزیر وغیرہ راجہ کے خاندان مین راج لینے کی خواہش رکھتے ہون انکو توڑ پھوڑ سے ملا کر اپنے قابو مین کرے اور انکو قیافہ سے جانے کہ اونکا قابو مین ہونا یا نہین فتح کی خواہش کرنیوالا راجہ خوف چھوڑ کر جب سب گرہ دشا اچھے ہون تب لڑائی کرے۔

۱۹۸- سام - دان - بھید ان مین سے ایک ایک کے وسیلے سے خواہ تینونکے وسیلے سے دشمنون کو فتح کرنے کیواسطے تدبیر کرے نہ صرف جنگ ہی کے وسیلے سے۔

۱۹۹- کیونکہ جنگ مین فتح ہوتی بھی ہے اور شکست بھی ہوتی ہے اسواسطے جنگ نہ کرنا چاہئے۔

गुल्मांश्च स्थापयेदाप्तान्कृतसंज्ञान्समन्ततः ॥ स्थाने युद्धे च कु-
शलानभीरूनविकारिणः ॥ १९० ॥ संहतान्योधयेदल्पान्का-
मं विस्तारयेद्बहून् ॥ सूच्या वज्रेण चैवैतान्व्यूहेन व्यूह्य योधयेत् ॥
॥ १९१ ॥ स्यन्दनाश्वैः समे युध्येदनूपे नौद्विपैस्तथा ॥ वृक्षगुल्मा-
वृते चापैरसिचर्मायुधैः स्थले ॥ १९२ ॥ कुरुक्षेत्रांश्च मत्स्यांश्च
पंचालान् शूरसेनजान् ॥ दीर्घांल्लघूंश्चैव नरानग्रानीकेषु यो-
जयेत् ॥ १९३ ॥ प्रहर्षयेद्बलं व्यूह्य तांश्च सम्यक्परीक्षयेत् ॥ चे-
ष्टाश्चैव विजानीयादरीन्योधयतामपि ॥ १९४ ॥

۱۹۰- جو حصہ فوج کا مع سیناپت و بلادھیکش کے نیک آدمیوں سے شامل ہو اور قیام کرنے اور بچھانے اور لڑنے کیواسطے بھیری سنکھ وغیرہ باجونکے اشارون کو سمجھتا ہو اور قیام و جنگ مین ہوشیار اور خوف و بغاوت سے خالی ہو ایسے حصہ فوج کو دور دور سب دشاؤن مین دشمن کے روکنے اور اسکی خواہش دلی جاننے کیواسطے حکم دیوے -

۱۹۱- فوج تھوڑی ہو تو ملکر جنگ کرے اور بہت ہو تو موافق خواہش دل کے متفرق کرکے جنگ کرے سوچی بیوہ بجر بیوہ کرکے جنگ کرے -

۱۹۲- برابر زمین مین رتھ اور گھوڑونکے وسیلے سے جنگ کرے اور زمین پر آب مین کشتی و ہاتھی سے جنگ کرے اور درخت اور جھاڑی والی زمین پر تیر کمان سے اور صاف زمین پر ڈھال تلوار سے جنگ کرے -

۱۹۳- کرکشیتر و متسیہ و پنچال و سورسین ان ملکون مین جو آدمی چھوٹے یا بڑے پیدا ہوئے ہون - انکو آگے کرکے جنگ کرے -

۱۹۴- بیوہ آراستہ کرکے فوج کو خوش و خرم کرے اور اس فوج کا اچھی طرح امتحان لیوے اور دشمنون کے ساتھ لڑتے ہوئے فوج کی حالت کو دریافت کرے کہ وہ دشمن کے ساتھ ملی ہے یا نہین -

दंडव्यूहेनतन्मार्गंयायात्तुशकटेनवा॥वराहमकराभ्यांवासूच्या
वागरुडेनवा॥१८७॥यतश्चभयमाशंकेत्ततोविस्तारयेद्बलं॥प-
द्मेनचैवव्यूहेननिविशेतसदास्वयम्॥१८८॥सेनापतिबलाध्यक्षौ
सर्वदिक्षुनिवेशयेत्॥यतश्चभयमाशंकेत्प्राचींतांकल्पयेद्दिशं॥१८९

۱۸۷۔ ڈنڈ۔ سکٹ۔ براہ۔ مکر۔ شوچی۔ گڑوان بیوہ کرکے چلے یعنی جب چاروطرف سے خوف پیدا ہو تب ڈنڈ بیوہ سے جاوے جب پیچھے خوف پیدا ہو تب سکٹ بیوہ سے جاوے جب پہلو مین خوف پیدا ہو تب براہ اور گڑر بیوہ سے جاوے جب آگے پیچھے خوف پیدا ہو تب مکر بیوہ جاوے جب آگے خوف پیدا ہو تب سوچی بیوہ سے جاوے

۱۸۸۔ جسطرف خوف کا خیال ہو اسطرف فوج کو بڑھاوے پدم بیوہ کرکے شہر سے نکلکر راجہ ہر وقت پوشیدہ رہے۔

۱۸۹۔ سیناپت اور بلادھیکش کو چارو اطراف مین رکھنا چاہئے اور جس دشا سے خوف کا خیال ہو اسکو پورب دشا جانو۔

ڈنڈ کی صورت فوج کو بنانا ڈنڈ بیوہ کہلاتا ہے شرح اسکی یہ ہے کہ بلادھیکش آگے درمیان مین راجہ پیچھے افسر فوج دونون پہلوین ہاتھی اسکے روبرو گھوڑا پھر پیادہ اسطرح سے لمبا اور چارو طرف سے برابر ہو وہ ڈنڈ بیوہ کہلاتا ہے۔

+ آگے پتلا مثل گاڑی کے اور پیچھے موٹا یہ سکٹ بیوہ کہلاتا ہے۔

‡ آگے پیچھے پتلا ہو بیچ مین موٹا ہو وہ براہ بیوہ کہلاتا ہے۔

§ آگے پیچھے موٹا ہو بیچ مین پتلا ہو وہ مکر بیوہ کہلاتا ہے۔

× چیونٹی کی پانت کے مانند آگا پیچھا برابر ہو اور پہلوان آگے رہین یہ سوچی بیوہ کہلاتا ہے۔

¶ آگا پیچھا پتلا ہو اور بیچ مین بہت موٹا ہو وہ گرڑ بیوہ کہلاتا ہے۔

++ چارو طرف برابر فوج اور درمیان مین راجہ اسکو پدم بیوہ کہتے ہین۔

÷ دس ہاتھی دس گھوڑا دس پیادہ دس رتھ کا ایک مالک کرنا اسکا نام پٹک کہلاتا ہے دس پٹک کا ایک سیناپت کہلاتا ہے دس سیناپت کا پیا ایک بلادھیکش کہلاتا ہے۔

मार्गशीर्षेशुभेमासियायाद्यात्रांमहीपतिः।।फाल्गुणंवाथ
चैत्रंवामासौप्रतियथाबलम्।।१८२।।अन्येष्वपितुकालेषु-
यदापश्येद्ध्रुवंजयम्।।तदायायाद्विगृह्यैवव्यसनेचोत्थितेरिपोः
।।१८३।।कृत्वाविधानमूलेतुयात्रिकंचयथाविधि।।उपगृ-
ह्यास्पदंचैवचारान्सम्यग्विधायच।।१८४।।संशोध्यत्रिविधं
मार्गंषड्विधंचबलंस्वकम्।।सांपरायिककल्पेनयायादरिपु
रंशनैः।।१८५।।शत्रुसेविनिमित्रेचगूढेयुक्ततरोभवेत्।।गतप्र
त्यागतेचैवसहिकष्टतरोरिपुः।।१८६।।

۱۸۲ - راجہ شبھ مہینہ اگھن مین دشمن کے اوپر جاترا کرے خواہ پھاگن یا چیت مین اپنی فوج کی موافق جاترا کرے

۱۸۳ - دوسرے وقت پر بھی جب یقیناً اپنی فتح جانے تب بگاڑ کرکے جاوے اور دشمن کے اوپر جب دکھ دیکھے تب بھی جاوے -

۱۸۴ - اپنے ملک کی حفاظت کرکے اور دستور کے موافق جاترا کے وقت کے کام کو کرکے (یعنی سواری و ہتھیار و زرہ وغیرہ بدرستی تمام ساتھ لیکر) دشمن کے ملک مین جا کر جس سے اپنا قیام ہو اوسکو لیکر اور دشمن کے نوکرون کو اپنے اختیار مین کرکے اور دشمن کے ملک کا حال جاننے کے واسطے کاٹپٹ وغیرہ چار قسم کے آدمیون کو رخصت کرے -

۱۸۵ - تین طرح کے جو راستہ ہین (یعنی جانگل انوپ اٹباک) انکو صاف کرکے (یعنی درخت وغیرہ کاٹکر اور نیچی اونچی زمین برابر کرکے) اور چھہ طرح کے زور ہین (یعنی ہاتھی گھوڑا رتھ پیادہ فوج - کاریگر) ان سب کو خوراک و ادویہ دستکار وغیرہ سے درست کرکے سنگرام مین نیک طریق سے جلد دشمن کے شہر مین جاوے -

۱۸۶ - جو اپنا دوست دشمن کی خدمتگذاری پوشیدہ کرتا ہو اور جو نوکر وغیرہ اپنے یہان سے نکلکر پھر آئے ہون ان دونون سے ہوشیار رہے کیونکہ انکا اٹھایا ہوا فساد بڑی مشکل سے رفع ہوتا ہے

* دیکھو اشلوک ۱۵۴ -

यदितत्रापिसंपश्येद्दोषसंश्रयकारितम्॥ सुयुद्धमेवतत्रापि
निर्विशंकः समाचरेत्॥ १७६॥ सर्व्वोपायैस्तथाकुर्य्यान्नीति-
ज्ञः पृथिवीपतिः॥ यथास्याभ्यधिकानस्युर्मित्रोदासीनशत्र-
वः॥ १७७॥ आयतिंसर्व्वकार्य्याणांतदात्वंचविचारयेत्॥
अतीतानांचसर्वेषांगुणदोषौचतत्वतः॥ १७८॥ आयत्यां
गुणदोषज्ञस्तदात्वेक्षिप्रनिश्चयः॥ अतीतेकार्य्यशेषज्ञः श-
त्रुभिर्नाभिभूयते॥ १७९॥ यथैनंनाभिसंदध्युर्मित्रोदासीनश-
त्रवः॥ तथासर्व्वंसविदध्यादेषसामासिकोनयः॥ १८०॥ य-
दातुयानमातिष्ठेदरिराष्ट्रंप्रतिप्रभुः॥ तदानेनविधानेनयाया-
दरिपुरंशनैः॥ १८१॥

۱۷۶ - جب پناہ لینے مین بھی کچھ نقصان سمجھے تب شک کو دور کرکے اچھی لڑائی کرے۔

۱۷۷ - نیت جاننے والا راجہ سب تدبیرون سے اپنے کو ایسا کرے - جسمین دوست اداسین دشمن یہ سب اپنے سے بڑھے نہونے پاوین۔

۱۷۸ - تمام کامون کا دوش اور گن زمانہ ماضی و حال و مستقبل سے نسبت رکھنے والا ان سب کو کما حقہ خیال کرے۔

۱۷۹ - ایسا خیال کرنے والا راجہ دشمنون سے رنج نہین پاتا۔

۱۸۰ - مجملاً سب نیت کا خلاصہ یہ ہے کہ دشمن اور دوست اور اداسین سب تکلیف نہ دے سکین ایسی تدبیر کرے۔

۱۸۱ - جب دشمن کے اوپر جانے کی خواہش ہو تب موافق تدبیر مندرجہ اشلوک ہاے آیندہ کے آہستہ آہستہ دشمن کے شہر مین جاوے۔

यदाप्रकृष्टामन्येतसर्वास्तुप्रकृतीर्भृशम्॥ अत्युच्छ्रितंतथा
त्मानंतदाकुर्वीतविग्रहम्॥१७०॥ यदामन्येतभावेनहृष्टंपु-
ष्टंबलंस्वकम्॥ परस्यविपरीतंचतदायायाद्रिपुंप्रति॥ १७१॥
यदातुस्यात्परिक्षीणोवाहनेनबलेनच॥ तदासीतप्रयत्नेन
शनकैःसान्त्वयन्नरीन्॥ १७२॥ मन्येतारिंयदाराजासर्वथा
बलवत्तरम्॥ तदाद्विधाबलंकृत्वासाधयेत्कार्य्यमात्मनः
॥ १७३॥ यदापरबलानांतुगमनीयतमोभवेत्॥ तदातुसं-
श्रयेत्क्षिप्रंधार्म्मिकंबलिनंनृपम्॥ १७४॥ निग्रहंप्रकृती-
नांचकुर्य्याद्योऽरिबलस्यच॥ उपसेवेततंनित्यंसर्वयत्नैर्गु-
रुंयथा॥ १७५॥

۱۷۰- جب اپنی پرکرت کو بلوان دیکھے اور اپنے کو نہایت اونچا دیکھے تب بگاڑ کرے

۱۷۱- جب اپنی فوج کو زور آور صاحب ہمت دیکھے اور دشمن کی فوج اسکے برخلاف دیکھے
تب دشمن کے اوپر چڑھائی کرے -

۱۷۲- جب سواری و فوج اپنے پاس نہو تب دشمن کو سام تمام تدبیر سے اپنے قابو مین
کرکے اپنے مقام پر رہے -

۱۷۳- جب دشمن کو سب طرح سے زور آور جانے تب اپنی فوج کے دو حصّہ کرے یعنی
کچھ فوج لیکر آپ قلعہ مین رہے اور کچھ لڑنے کو بھیجے اپنے کام کو اسطرح سدھ کرے -

۱۷۴- جب جانے کہ دشمن سے بھاگینگے تب جلدی سے زور آور دھرماتما راجہ کی پناہ
لیوے -

۱۷۵- جو راجہ دشمن کی پرکرت اور فوج کو قابو مین کرنیکی طاقت رکھتا ہو اُسکی خدمت
ہمیشہ اسطرح کرے کہ جسطرح گرو کی کرتے ہین -

एकाकिनश्चात्ययिकेकार्य्येप्राप्तेयदृच्छया ॥ संहतस्यचमि-
त्रेणाद्विविधंयानमुच्यते ॥ १६५ ॥ क्षीणस्यचैवक्रमशोदै-
वात्पूर्व्वकृतेनवा ॥ मित्रस्यचानुरोधेनद्विविधंस्मृतमासन-
म् ॥ १६६ ॥ बलस्यस्वामिनश्चैवस्थितिःकार्य्यार्थसिद्धये ॥
द्विविधंकीर्त्यतेद्वैधंषाड्गुण्यगुणवेदिभिः ॥ १६७ ॥ अर्थसं-
पादनार्थंचपीड्यमानस्यशत्रुभिः ॥ साधुषुव्यपदेशार्थंद्वि-
विधःसंश्रयःस्मृतः ॥ १६८ ॥ यदावगच्छेदायत्यामाधिक्यं-
ध्रुवमात्मनः ॥ तदात्वेचाल्पिकांपीडांतदासन्धिंसमाश्र-
येत् ॥ १६९ ॥

۱۶۵ - وقت دربیش کا ضروری آپ اکیلا دشمن پر چڑھائی کرے یہ پہلی چڑھائی ہے اور دوست کی مدد سے چڑھائی کرے یہ دوسری چڑھائی ہے۔

۱۶۶ - پہلے جنم کے پاپ سے یا اس جنم کے پاپ سے ہاتھی و گھوڑا و دولت وغیرہ ہاتھ سے نکلجا دیں اسوقت دوسرے راجہ پر چڑھائی نکرے خواہ دولت و ہاتھی و گھوڑا وغیرہ سامان اپنے پاس موجود ہے اور جا نہیں دوست کی حفاظت نہیں ہوسکتی تب اسکے واسطے بچانا چاہیئے۔ یہ دو طرحکا قیام ہے۔

۱۶۷ - اپنے کام سدھ ہونیکے واسطے ہاتھی و گھوڑا وغیرہ و سیناپت (یعنی سپہ سالار) کو دشمن کے کئے ہوئے فساد دور کرنیکے واسطے ایک جگہ پر قائم رکھنا یہ پہلا بھید ہوا اور قلعہ میں مع افسر تمام فوج راجہ کا قائم ہونا یہ دوسرا بھید ہے۔

۱۶۸ - دشمن سے دکھی ہو خواہ دشمن سے دکھ نہووے ان دو فائدوں کے لئے طاقتور راجہ کی پناہ لیوے یہ دو طرح کی پناہ ہے۔

۱۶۹ - جب لڑائی کے پیچھے اپنی لڑائی کو یقیناً جانے اور اسوقت تھوڑے ہی دھن وغیرہ کا نقصان دیکھے تب صلح کرے۔

तान्सर्व्वानभिसन्दध्यात्सामादिभिरुपक्रमैः ॥ व्यस्तैश्चैवस-
मस्तैश्चपौरुषेणनयेनच ॥ १५९ ॥ सन्धिंचविग्रहंचैवयानमा-
सनमेवच ॥ द्वैधीभावंसंश्रयंचषड्गुणांश्चिन्तयेत्सदा ॥ १६०
॥ आसनंचैवयानंचसन्धिंविग्रहमेवच ॥ कार्य्यंवीक्ष्यप्र-
युञ्जीतद्वैधंसंश्रयमेवच ॥ १६१ ॥ सन्धिन्तुद्विविधंविद्याद्रा-
जाविग्रहमेवच ॥ उभेयानासनेचैवद्विविधःसंश्रयःस्मृतः ॥
१६२ ॥ समानयानकर्म्माचविपरीतस्तथैवच ॥ तदात्वायति
संयुक्तःसन्धिर्ज्ञेयोद्विलक्षणः ॥ १६३ ॥ स्वयंकृतश्चकार्या-
र्थमकालेकालएववा ॥ मित्रस्यचैवापकृतेद्विविधोविग्रहः
स्मृतः ॥ १६४ ॥

۱۵۹- اِن سب راجاؤن کو سام وغیرہ چار تدبیرون مین سے جیسا موقع ہو ایک یا چار و
کے وسیلے سے اور اپنی فوج و ہمت سے قابو مین کرنا چاہئے-
۱۶۰- صُلح و بگاڑ و دشمن کے اوپر چڑھائی و قیام و بھید و کسی زورآور راجہ کی پناہ لینا اِن
چھ باتون کو ہمیشہ خیال کرنا چاہئے-
۱۶۱- کام کا موقع دیکھکر منجملہ اِن چھ باتون کے جہان جسکی ضرورت ہو وہان اُسکو کرے-
۱۶۲- صُلح - بگاڑ - چڑھائی - قیام - بھید - پناہ لینا - یہ چھ باتین دو دو طرح کی
ہین-
۱۶۳- اسوقت یا زمانہ آیندہ مین نتیجہ پانے کے واسطے ایک راجہ کے ساتھ دوسرا راجہ
پر چڑھائی کرنا یہ سمان پان کرنا نام صلح کہاتی ہے اور اگر تم یہان جاوگے تو ہم وہان جائینگے
یہ کہکر صلح کرے تو وہ اسمان پان کرنا نام صلح ہے-
۱۶۴- وقت پر خواہ بے وقت اپنی خواہش سے آپ بگاڑ کیا یہ پہلا بگاڑ ہوا اور اپنے دوست
کی توہین دیکھکر توہین کرنیوالے سے بگاڑ کیا وہ دوسرا بگاڑ ہوا-

मध्यमस्यप्रचारंच विजिगीषोश्चचेष्टितम् ॥ उदासीनप्रचा-
रंचशत्रोश्चैवप्रयत्नतः ॥ १५५ ॥ एताः प्रकृतयो मूलं मण्डल-
स्यसमासतः ॥ अष्टौचान्याः समाख्याता द्वादशैवतुताः स्मृ-
ताः ॥ १५६ ॥ अमात्यराष्ट्रदुर्गार्थदण्डाख्याः पंचचापराः ॥
प्रत्येकंकथिताह्येताः संक्षेपेणद्विसप्ततिः ॥ १५७ ॥ अनन्तर
मरिंविद्यादरिसेविनमेवच ॥ अरेरनन्तरंमित्रमुदासीनंतयोः
परम् ॥ १५८ ॥

۱۵۵- وسط دشمن فتح کی خواہش کرنیوالا مدھیم* اداسین† ان چارون کی خواہش لی دریافت کرے اور بچارے-

۱۵۶- راج منڈل کی یہ چار مول پرکرت ہین آٹھ ساکھا پرکرت‡ ہین یہ سب ملکر بارہ ہوتی ہین

۱۵۷- چار مول پرکرت اور آٹھ ساکھا پرکرت ہونون مین ہر ایک کی پانچ پانچ دیبہ پرکرت§ ہین یہ سب ملکر بہتر پرکرت ہین-

۱۵۸- اپنے راج کے سامنے کا راجہ دشمن ہے اور اسکی سیوا کرنے والا بھی دشمن ہے اس راجہ کے ملک سے آگے جو راجہ ہو وہ دوست ہے اور دوست سے آگے جو راجہ ہو وہ اداسین ہے-

* مدھم اسکو کہتے ہین کہ جو دشمن و دشمن فتح چاہنے والے ان دونونکے ملک کے بیچ مین راج رکھتا ہو اور انھین دونون راجاؤنکی صلح و جنگ کرا دینے کی طاقت رکھتا ہو-

† اداسین وہ ہے کہ جو دشمن و فتح چاہنے والے و مدھیم ان تینون کی صلح و جنگ کرا دینے کی طاقت رکھتا ہو-

‡ آٹھ ساکھا پرکرت یہ ہین دشمن کے ملک کے آگے کا دوست، دشمن دوست، دوست کا دوست، دشمن کے دوست کا دوست، پارشن گراہ، آکرند، پارشن گراہ آسار، آکرند آسار-

§ پانچ دیبہ پرکرت یہ ہین- وزیر، راج، قلعہ، دولت، سزا-

कृत्स्नंचाष्टविधंकर्म्मपंचवर्गंचतत्त्वतः॥ अनुरागापरागौ-चप्रचारंमण्डलस्यच॥ १५४॥

۱۵۴ - آٹھہ کاموں کو اور سدّھانت سے پانچ برگ کو بھی بچارے اور دوسرے راجاؤں
اور اپنے وزیروں کی محبت و دشمنی کو جانکر اُنکی تدبیر کرے -

ایہ - آٹھہ کام یہ ہین - رعیت سے محصول لینا - نوکرون کی تنخواہ تقسیم کرنا - اُس لوک اور پرلوک کے واسطے جو کام ہین
اُنکو کرنا اور کرانا - اِن باتون کا حکم وزیرون کو دینا اور کام مین شک ہو تو بھی حکم دینا - بیوہار دیکھنا یعنی مقدمہ ہارے ہین اُنسے موافق حکم شاستر
کے دنڈ لینا یا بیٹون کو پرایشچت کرانا یعنی جو لوگ اپنے ورن آشرم کو ترک کیا ہو اُنسے پرایشچت کراکے پھر اُنکو اُسی راہ پر چلانا - پانچ برگ یہ
ہین - جو شخص دوسرے کے دل کا حال جاننیوالا و بخوف تقریر کرنیوالا و کپٹ بیوہار کرنیوالا ہے ایسا آدمی جیوکا کے واسطے
آوے تو اُسکو دان مان سے اپنا کرکے خلوت مین اُس سے کہے کہ جسکا کام بُرا دیکھو فوراً ہم سے کہو - سنیاس آشرم سے
جو بھرشٹ ہو گئے یعنے اُس درجہ سے گر گئے ہین اور اُنکا دوش تو جہان مین مشہور ہے اُنکو صاحب عقل و صاحب طہارت کرکے
اور بہت پیدایش والے مٹھہ مین جگہہ دیکر مثل بالا اُنسے کہے اور جس زمین مین دھان پیدا ہوتا ہے اُس زمین کو جیوکا کے واسطے دیوے
وہ بھرشٹ سنیاسی راج کاج کرنیوالے اور سنیاسیونکو کھانا کپڑا دیا کرے - جو شخص جیوکا نہین رکھتا اور کھیتی کا کام
کرنیوالا ہے اُسکو صاحب عقل و صاحب طہارت کرکے خلوت مین مثل بالا اُس سے گفتگو کرے اور اپنی زمین کھیتی کرنیکے واسطے دے -
جو دکاندار جیوکا نہین رکھتا اُس سے مثل سابق گفتگو کرکے دھن اور مکان کو دیکر اپنے اختیار مین کرکے اُس سے دکانداری کا کام
کراوے - مونڈ مونڈاوے ہو یا جٹا رکھائے ہو اور جیوکا رکھتا ہو اُسکو پوشیدہ معاش دیکر مثل بالا خلوت مین گفتگو کرے
اور وہ کٹی بہت شدت اور چیلون کے ساتھ تپسیا کرے مہینہ دو مہینہ سب کے آگے مٹھی بھر بیر وغیرہ کھاوے
اور رات کو جب کوئی نہ جانے سب طرح کا بھوجن کرے اور اُسکے چیلے اُسکی کرامات کو مشہور کرین کہ گرو جی ماضی و حال
و استقبال تینون زمانون کا حال جانتے ہین اس سبب سے لوگ اپنے مطلب کو کہینگے - یہ پانچو سلسلہ وار کاپٹک
اور استھت - گرہپت - بیدیک - تاپس کہلاتے ہین پس اِن ذریعون سے اپنا مطلب حاصل کرے -

जडमूकान्धबधिरांस्तिर्यग्योनान्वयोतिगान् ॥ स्त्रीम्लेच्छव्या-
धितव्यंगान्मंत्रकालेऽपसारयेत् ॥ १४९ ॥ भिन्दन्त्यवमतामं-
त्रंतिर्य्यग्योनास्तथैवच ॥ स्त्रियश्चैवविशेषेणतस्मात्तत्राहृ-
तोभवेत् ॥ १५० ॥ मध्यंदिनेऽर्द्धरात्रेवा विश्रान्तोविगतक्लमः ॥
चिन्तयेद्धर्म्मकामार्थान्सार्द्धंतैरेकएववा ॥ १५१ ॥ परस्परविरु-
द्धानांतेषांचसमुपार्जनम् ॥ कन्यानांसम्प्रदानंचकुमाराणां
चरक्षणम् ॥ १५२ ॥ दूतसम्प्रेषणंचैवकार्य्यशेषंतथैवच ॥
अन्तःपुरप्रचारंचप्रणिधीनांचचेष्टितम् ॥ १५३ ॥

۱۴۹- باولا گونگا- اندھا بہرا پرند- بڈھا یعنی ۸۰ برس سے زیادہ عمر کا کچھ عورت مریض ایک عضو نہ رکھنے والا ان سب کو وقت صلاح و مشورہ کے اپنے پاس نہ رکھے-

۱۵۰- یہ سب پہلے جنم کے پاپ سے ایسے ہوئے ہیں اسلیئے اپان پاکر بھید کو ظاہر کر دیتے ہیں اور پرند اور بڈھے اور عورت انھون کی عقل قائم نہین رہتی اسوجہ سے یہ بھی بھید ظاہر کرتے ہین اسواسطے وقت مشورہ انتظام ملک کے یہ لوگ پاس نہ رہنے پاوین-

۱۵۱- دوپہر دن یا آدھی رات کے وقت آرام و بیفکری سے ان مشیرون کے ساتھ یا اکیلا آپ ہی دھرم و ارتھ کرو کام بچار کرے-

۱۵۲- دھن ملنے کیواسطے ایسی تدبیر سوچے کہ جسمین دھرم ارتھ کام جو باہم مختلف ہین انھون کا برودھ نہو وے اپنے کام سدھ ہووے کیواسطے کنیان کا دان اور بیٹے شاستر کے موافق پڑھانے سکھانے کیواسطے راج کمارون کی حفاظت ان باتون کو بھی بچار کرے-

۱۵۳- سفیر و وکیل کو بھیجنا باقی رہا ہوا کام شہر کے اندر کا چلن دوسرے راجاؤنکا حال لانیوالا جو شخص ہے اسکے دل کی خواہش کو جاننا ان سب باتون کو بھی بچار کرے-

विक्रोशन्त्योयस्यराष्ट्राद्ध्रियन्तेदस्युभिः प्रजाः ॥ सम्पश्यतःस-
भृत्यस्यमृतःसनतुजीवति ॥ १४३ ॥ क्षत्रियस्यपरोधर्मः प्र-
जानामेवपालनम् ॥ निर्दिष्टफलभोक्ताहिराजाधर्मेणयुज्य-
ते ॥ १४४ ॥ उत्थायपश्चिमेयामेकृतशौचःसमाहितः ॥ हुताग्नि
र्ब्राह्मणांश्चार्च्यप्रविशेत्सशुभांसभाम् ॥ १४५ ॥ तत्रस्थितःप्र
जाःसर्वाःप्रतिनन्द्यविसर्जयेत् ॥ विसृज्यचप्रजाःसर्वामंत्रये
त्सहमंत्रिभिः ॥ १४६ ॥ गिरिपृष्ठंसमारुह्यप्रासादंवारहोगतः
॥ अरण्येनिःशलाकेवामंत्रयेदविभावितः ॥ १४७ ॥ यस्य-
मंत्रंनजानन्तिसमागम्यपृथग्जनाः ॥ सकृत्स्नांपृथिवींभुंक्ते
कोशहीनोऽपिपार्थिवः ॥ १४८ ॥

۱۴۳ جس راجہ اور راجہ کے اہلکارون کے دیکھتے ہوئے اُسکے راج مین چورون سے لوٹی ہوئی پرجا پکارتی ہے وہ راجہ زندہ نہین ہے بلکہ مرگیا ہے ۔

۱۴۴ ۔ پرجا کو پالنا کشتریون کا پرم دہرم ہے جو راجہ شاستر کے موافق کام کرتا ہے اُسکو دہرماتما کہتے ہین ۔

۱۴۵ ۔ پہر رات باقی رہے اُٹھکر اشنان وغیرہ کرکے بکبدل ہوکر اگن ہوتر اور براہمن کا پوجن کرکے دربار مین داخل ہو ۔

۱۴۶ ۔ دربار مین بیٹھکر سب رعایا کو دیکھ بھال کر بول چال کر رخصت کرے تو وہ وزیرون کے ساتھ انتظام ملک کی بابت مشورہ کرے ۔

۱۴۷ ۔ پہاڑ یا بالاخانہ یا جنگل وغیرہ مقام خلوت مین بیٹھکر لگاڑنے والے آدمیون کو دور کرکے بیچا تنگ والی صلاح کا مشورہ کرے ۔

۱۴۸ ۔ سوائے مشیرون کے اور لوگ میل ملاپ کرکے جس راجہ کے مشورہ کو نہین جانتے ہین وہ راجہ اگرچہ بے زر ہو تو بھی پرتھوی پر راج کر سکتا ہے ۔

यत्किंचिदपि वर्षस्य दापयेत्करसंज्ञितम्॥ व्यवहारेण जीवन्तं
राजा राष्ट्रे पृथग्जनम्॥ १३७॥ कारुकाञ्छिल्पिनश्चैव शूद्रां
श्चात्मोपजीविनः॥ एकैकं कारयेत्कर्म मासि मासि महीपतिः
॥१३८॥ नोच्छिन्द्यादात्मनो मूलं परेषां चातितृष्णया॥ उच्छि
न्दन्ह्यात्मनो मूलमात्मानं तांश्च पीडयेत्॥१३९॥ तीक्ष्णश्चै-
व मृदुश्च स्यात्कार्यं वीक्ष्य महीपतिः॥ तीक्ष्णश्चैव मृदुश्चैव रा
जा भवति सम्मतः॥१४०॥ अमात्यमुख्यं धर्मज्ञं प्राज्ञं दान्तं
कुलोद्गतम्॥ स्थापयेदासने तस्मिन्खिन्नः कार्येक्षणे नृणा
म्॥१४१॥ एवं सर्वं विधायेदमितिकर्तव्यमात्मनः॥ युक्तश्चै
वाप्रमत्तश्च परिरक्षेदिमाः प्रजाः॥१४२॥

۱۳۷-راج مین چھوٹے آدمیون سے بھی تھوڑا ساگ پتّا وغیرہ سال تمام مین بطور محصول کے لیوے

۱۳۸-رسوئی بنانیوالے ہر قسم کے کاریگر شودر جسم کی تکلیف سے اوقات بسر کرنیوالے (پلّہ دار وغیرہ) اِن سبھون سے ہر مہینہ مین ایک دن کام کراوے اِنکا یہی محصول ہے-

۱۳۹-اگر تقاضاے محبت محصول رعیت سے نہ لیوے تو راجہ اپنی جڑ اوکھاڑتا ہے- اور حرص سے زیادہ محصول لیوے تو بھی اس سبب اِن دونون کامون کو نہ کرے اگر کرے تو وہ راجہ آپکو اور رعیت کو دکھی کرتا ہے-

۱۴۰-راجہ کام کو دیکھکر کام کے موافق نرم و سخت ہووے (یعنی اچھا کام دیکھکر نرم ہو اور بُرا کام دیکھکر سخت ہو) ایسا راجہ سب کو اچھا معلوم ہوتا ہے-

۱۴۱-آپ مقدمات فیصل کرنے مین تکلیف پاوے تو اپنی جگہ پر ایسے برہمن کو بٹھلاوے جوکہ وزیر اعظم ہو اور دھرم کا جاننے والا اور نفس پر غالب اور خاندانی ہو

۱۴۲-اسطرح اپنے کرنے کے لائق کامون کو تجویز کرکے بیہودہ پن کو چھوڑکر مشغولی و محنت تمام رعایا کی حفاظت کرے

आददीताथषड्भागंद्रुमांसमधुसर्पिषाम्॥ गन्धौषधिरसा-
नांचपुष्पमूलफलस्यच॥१३१॥ पत्रशाकतृणानांचचर्मणां
वैदलस्यच॥ मृन्मयानांचभाण्डानांसर्वस्याश्ममयस्यच॥
१३२॥ म्रियमाणोऽप्याददीतनराजाश्रोत्रियात्करम्॥ नचक्षु-
धाऽस्यसंसीदेच्छ्रोत्रियोविषयेवसन्॥१३३॥ यस्यराज्ञस्तुवि
षयेश्रोत्रियःसीदतिक्षुधा॥ तस्यापितत्क्षुधाराष्ट्रमचिरेणैव
सीदति॥१३४॥ श्रुतवृत्तेविदित्वाऽस्यवृत्तिंधर्म्यांप्रकल्पयेत्॥
संरक्षेत्सर्वतश्चैनंपितापुत्रमिवौरसम्॥१३५॥ संरक्ष्यमाणो-
राज्ञायंकुरुतेधर्ममन्वहम्॥ तेनायुर्वर्द्धतेराज्ञोद्रविणंराष्ट्रमे-
वच॥१३६॥

۱۳۱ - درخت باس۔ شراب۔ گھی۔ خوشبودار چیزیں اودیات رس پھول مول پھل۔

۱۳۲ - پتا۔ ساگ۔ گھاس چمڑا بانس کا برتن مٹی کا برتن پتھر کا برتن ان سبھوں کے نفع میں سے چھٹواں حصہ راجہ لیوے۔

۱۳۳ - راجہ مرتا بھی ہو تو بھی وید پڑھنے والے براہمن سے محصول نہ لیوے اور تمام راج میں کوئی وید پاٹھی کھانے پینے کا دکھ نہ پاوے۔

۱۳۴ - جس راجہ کے راج میں وید پاٹھی بھوکا مرتا ہے اسکا راج بہت جلد مٹ جاتا ہے۔

۱۳۵ - براہمنوں کے پڑھنے اور آچرن کو سمجھکر انکی ایسی معاش تجویز کرے جو انکے دھرم کے خلاف نہو اور انکی حفاظت سب طرف سے اسطرح کرے کہ جسطرح باپ بیٹے کی حفاظت کرتا ہے۔

۱۳۶ - راجہ کی حفاظت پاکر براہمن ہر روز جو دھرم کرتا ہے اسکے پرتاپ سے راجہ کی دولت و عمر بڑھتی ہے۔

परणोदेयोवकृष्टस्यषडुत्कृष्टस्यवेतनम्॥ षाण्मासिकस्त-
थाच्छादोधान्यद्रोणस्तुमासिकः॥१२६॥ क्रयविक्रयमध्वा
नंभक्तंचसपरिव्ययम्॥ योगक्षेमंचसंप्रेक्ष्यवणिजोदापये-
त्करान्॥१२७॥यथाफलेनयुज्येतराजाकर्त्ताचकर्मणाम्॥
तथावेक्ष्यनृपोराष्ट्रेकल्पयेत्सततंकरान्॥१२८॥यथाल्पा
ल्पमदन्त्याद्यंवार्योकोवत्सषट्पदाः॥तथाल्पाल्पोग्रही-
तव्योराष्ट्राद्राज्ञाब्दिकःकरः॥१२९॥पंचाशद्भागआदेयो
राज्ञापशुहिरण्ययोः॥धान्यानामष्टमोभागःषष्ठोद्वादश-
एववा॥१३०॥

۱۲۶- جو شخص گھر کا صاف کرنیوالا اور پانی کا لانیوالا ہے، اُسکو ایک پن یومیہ دیوے اور
مہینہ مین ایک درون ان دیوے اور چھٹے مہینہ دو کپڑے دیوے اور جو شخص اُتم کام کرنیوالا
ہے اسکو چھ پن یومیہ دیوے اور چھٹے مہینے چار کپڑے دیوے ہر مہینہ مین چھ درون دھان
دیوے چھٹے مہینہ کپڑے دیوے

۱۲۷- ان سب باتون کا بچار کر بنیون سے محصول لیوے یعنی کس قیمت پر خرید کیا ہے بیچنے
مین کتنا ملیگا کتنی دور سے لایا ہے کیا اُسکی خوراک مین خرچ ہوا کتنا حفاظت مال مین
خرچ ہوا ہے کتنا اُسکو نفع ملیگا

۱۲۸- جس طریق سے کام کرنیوالے کو اور راجہ کو فائدہ ہو اس طریق کو دیکھکر راجہ اپنے محصول لائق کو تجویز کرے ہمیشہ ہر شخص پر

۱۲۹- جس طرح جونک اور بچھڑا اور بھونرا یہ سب کھانے کے لائق چیزون کو تھوڑا تھوڑا کھاتے ہین اسی
طرح راجہ راج سے محصول سالانہ کو تھوڑا تھوڑا لیوے ۔

۱۳۰- پشو اور سونے کے نفع مین سے پچاسوان حصہ لیوے دھان کے نفع مین آٹھوان یا
چھٹوان یا بارھوان حصہ لیوے زمین کی عمدگی و غیر عمدگی اور جوتنے کی محنت و بے محنت کو دیکھکر محصول تجویز کرے

तेषांग्राम्याणिकार्याणिपृथक्कार्याणिचैवहि ॥ राज्ञोऽन्यः
सचिवः स्निग्धस्तानिपश्येदतन्द्रितः ॥ १२० ॥ नगरेनगरेचैकं
कुर्यात्सर्वार्थचिन्तकम् ॥ उच्चैःस्थानंघोररूपंनक्षत्राणामि-
वग्रहम् ॥ १२१ ॥ सताननुपरिक्रामेत्सर्वानेवसदास्वयम् ॥ ते-
षांवृत्तंपरिणयेत्सम्यग्राष्ट्रेषुतच्चरैः ॥ १२२ ॥ राज्ञोहिरक्षाधि-
कृताः परस्वादायिनः शठाः ॥ भृत्याभवन्तिप्रायेणतेभ्योर-
क्षेदिमाः प्रजाः ॥ १२३ ॥ येकार्यिकेभ्योऽर्थमेवगृह्णीयुःपाप-
चेतसः ॥ तेषांसर्वस्वमादायराजाकुर्यात्प्रवासनम् ॥ १२४ ॥ रा-
जकर्मसुयुक्तानांस्त्रीणांप्रेष्यजनस्यच ॥ प्रत्यहंकल्पयेद्वृत्तिं
स्थानंकर्मानुरूपतः ॥ १२५ ॥

۱۲۰ - جو وزیر اعظم نہایت عاقل دار السلطنت میں راجہ کے پاس رہنے والا ہو وہ بستی کو چھوڑ کر گانون اور نگر اور پور کے مالکونکا کام اور دیگر کامونکو بھی دیکھتا اور جانچتا رہے -

۱۲۱ - ہر ایک نگر میں ایک آدمی جو تمام مطلبون کا سوچنے والا ہو رکھے اور ایک مکان بڑا اونچا بھیانک روپ بناوے وہ مکان ایسا خوبصورت ہو جیسے ستارون میں چاند ہے

۱۲۲ - وہ وزیر اعظم گانون اور نگر وغیرہ کے مالکونکو بے مطلب بھی وقتاً فوقتاً اپنی قوت سے دیکھتا رہے اور مخبرون کے وسیلے سے سب کے من کی بات کھولے -

۱۲۳ - راجہ کے اکثر عہدہ دار دوسرے کا مال لے لیا کرتے ہیں اور ظالم ہوتے ہیں اسواسطے انکے ہاتھ سے رعیت کی حفاظت کرے -

۱۲۴ - دل میں پاپ رکھنے والے جو عہدہ دار رعیت سے روپیہ لیتے ہیں راجہ انکی تمام جائداد ضبط کرلے اور انکو راج سے باہر نکال دیوے -

۱۲۵ - جو عورت نوکر چاکر راجہ کا کام کرتے ہوں انکی وجہ معاش انکے روزمرہ کے کام کے موافق مقرر کرے -

ग्रामस्याधिपतिं कुर्याद्दशग्रामपतिं तथा ॥ विंशतीशं शतेशं-
च सहस्रपतिमेव च ॥ ११५ ॥ ग्रामदोषान्समुत्पन्नान्ग्रामिकः
शनकैः स्वयम् ॥ शंसेद्ग्रामदशेशाय दशेशो विंशतीशिनम् ॥
११६ ॥ विंशतीशस्तु तत्सर्वं शतेशाय निवेदयेत् ॥ शंसेद्ग्रामश-
तेशस्तु सहस्रपतये स्वयम् ॥ ११७ ॥ यानि राजप्रदेयानि प्रत्यहं
ग्रामवासिभिः ॥ अन्नपानेन्धनादीनि ग्रामिकस्तान्यवाप्नुया-
त् ॥ ११८ ॥ दशी कुलं तु भुंजीत विंशी पंच कुलानि च ॥ ग्रामं ग्रा-
मं शताध्यक्षः सहस्राधिपतिः पुरम् ॥ ११९ ॥

۱۱۵- لیاقت کے موافق کسی کو ایک گانون کا کسیکو دس گانون کا کسیکو بیس گانون کا کسیکو تنلو گانون کا کسیکو ہزار کا مالک کرے۔

۱۱۶- گانون مین کچھ واردات ہو تو گانون کا مالک آہستگی دس گانون کے مالک سے کہے اور وہ بیس گانون کے مالک سے کہے۔

۱۱۷- بیس گانون کا مالک تنلو گانون کے مالک سے کہے اور وہ ہزار گانون کے مالک سے کہے۔

۱۱۸- ہر روز جو حصہ راجہ کا مثل اناج اور پان اور لکڑی وغیرہ گانون کے رہنے والون سے لینے کے لائق ہے۔ اسکو گانون کا مالک لیوے۔

۱۱۹- دس گانون کا مالک ایک کل کی مقدار کے موافق زمین اپنے گزارہ کے واسطے لیوے اور بیس گانون کا مالک پانچ کل کے موافق لیوے اور تنلو گانون کا مالک ایک گانون درجہ متوسط کو لیوے اور ہزار گانون کا مالک ایک پورا اپنے گزارہ کے واسطے لیوے۔

چھ بیل سے ایک ہل چلا دو ایسے دو ہل سے جسقدر زمین جوتی جاسکے اُسیقدر زمین کو کل کہتے ہین۔

सामादीनामुपायानांचतुर्णामपिपण्डिताः॥ सामदण्डौप्र-
शंसन्तिनित्यंराष्ट्राभिवृद्धये॥ १०९॥ यथोद्धरतिनिर्दाताक-
क्षंधान्यंचरक्षति॥ तथारक्षेन्नृपोराष्ट्रंहन्याच्चपरिपन्थिनः॥
११०॥ मोहाद्राजास्वराष्ट्रंयःकर्शयत्यनवेक्षया॥ सोऽचिराद्भ्र-
श्यतेराज्याज्जीविताच्चसबान्धवः॥ १११॥ शरीरकर्षणात्प्रा-
णाःक्षीयन्तेप्राणिनांयथा॥ तथाराज्ञामपिप्राणाःक्षीय-
न्तेराष्ट्रकर्षणात्॥ ११२॥ राष्ट्रस्यसंग्रहेनित्यंविधानमिदमा-
चरेत्॥ सुसंगृहीतराष्ट्रोहिपार्थिवःसुखमेधते॥ ११३॥ द्वयो-
स्त्रयाणांपञ्चानांमध्येगुल्ममधिष्ठितम्॥ तथाग्रामशता-
नांचकुर्याद्राष्ट्रस्यसंग्रहम्॥ ११४॥

109 - سام وغیرہ چار تدبیروں میں سام و دنڈ کی تعریف پنڈت لوگ واسطے ترقی راج کے کرتے ہیں۔

110 - جسطرح کھیتی کرنیوالا غلہ کی حفاظت کرتا ہے اور گھاس وغیرہ اوکھاڑ ڈالتا ہے اسیطرح راجہ حفاظت راج کی کرے اور دشمنوں کو نیست و نابود کرے۔

111 - جو راجہ بدون غور کے موہ سے راج کو دکھ دیتا ہے وہ تھوڑے دنوں میں اپنا راج اور پران اور بھائی بندوں کو نابود کرتا ہے۔

112 - جسطرح شریر کو دکھ دینے سے پران کو دکھ ہوتا ہے اسیطرح راج (یعنی رعیت) اسکے دکھی ہونے سے راجہ کا پران دکھ پاتا ہے۔

113 - راج کی ترقی کیواسطے ہمیشہ اس آئین پر چلے جس راجہ نے راج کی اچھی طرح ترقی پائی ہے وہ راجہ بخوشی تمام ترقی پاتا ہے۔

114 - وہ تین پانچ گانوں کے بیچ میں ایک حفاظت کا مکان بناوے اسمیں واسطے انتظام کرنے کے اپنے اہلکاروں کو رکھے۔

नित्यमुद्यतदण्डस्य कृत्स्नमुद्विजते जगत् ॥ तस्मात्सर्वाणि भू-
तानि दण्डेनैव प्रसाधयेत् ॥ १०३ ॥ अमाययैव वर्तेत न कथंच
न मायया ॥ बुध्येतारिप्रयुक्तां च मायां नित्यं सुसंवृतः ॥ १०४
॥ नास्य छिद्रं परो विद्याद्विद्याच्छिद्रं परस्य तु ॥ गूहेत्कूर्म इवां-
गानि रक्षेद्विवरमात्मनः ॥ १०५ ॥ बकवच्चिन्तयेदर्थान्सिंहवच्च
पराक्रमेत् ॥ वृकवच्चावलुम्पेत शशवच्च विनिष्पतेत् ॥ १०६
एवं विजयमानस्य येऽस्य स्युः परिपन्थिनः ॥ तानानयेद्वशं स-
र्वान्सामादिभिरुपक्रमैः ॥ १०७ ॥ यदि ते तु न तिष्ठेयुरुपायैः
प्रथमैस्त्रिभिः ॥ दण्डेनैव प्रसह्यैतांश्छनकैर्वशमानयेत् ॥
१०८ ॥

۱۰۳- جسکی سزا زبردست ہو اُس راجہ سے تمام عالم ڈرتا ہے اسلیئے سزا کے وسیلے سے سب جانداروں کو اپنے اختیار میں کرے -

۱۰۴- آپ فریب نہ کرے اور دشمن کے فریب کو ہمیشہ جانتا رہے اور اپنے تابعداروں کی حفاظت تدبیر نیک سے کرے -

۱۰۵- اِس راجہ کے عیب کو دوسرا نجانے مگر راجہ دوسرے کے عیب کو جان لیوے جسطرح کچھوا اپنے اعضا کو چھپاتا ہے اسطرح اپنے عیب کو چھپاوے -

۱۰۶- بگلا کیطرح اپنے مطالب کا غور کرے سنگھ کے مانند پراکرم کرے بھیڑیا کیطرح چیزوں کو لیوے خرگوش کیطرح بھاگے -

۱۰۷- اسطرح فتح یافتہ راجہ اپنے دشمنوں کو سام دان ڈنڈ بھید ان چار تدبیروں سے اپنے اختیار میں کرے -

۱۰۸- جب دشمن اوپر کہی ہوئی تین تدبیروں سے قابو میں نہ آئے تو ڈنڈ ہی کے وسیلے سے اُسکو قابو میں لاوے -

۱۔ ملاپ و صلح - ۲۔ روپیہ وغیرہ دینا ۳۔ سزا - ۴۔ دشمن کی فوج میں پھوٹ کرنا -

एषोऽनुपस्कृतः प्रोक्तो योधधर्मः सनातनः ॥ अस्माद्धर्मान्न च्यवेत क्षत्रियो घ्नन्रणे रिपून् ॥ ९८ ॥ अलब्धं चैव लिप्सेत लब्धं रक्षेत्प्रयत्नतः ॥ रक्षितं वर्द्धयेच्चैव वृद्धं पात्रेषु निःक्षिपेत् ॥ एतच्चतुर्विधं विद्यात्पुरुषार्थप्रयोजनम् ॥ अस्य नित्यमनुष्ठानं सम्यक्कुर्यादतन्द्रितः ॥१००॥ अलब्धमिच्छेद्दण्डेन लब्धं रक्षेदवेक्षया ॥ रक्षितं वर्द्धयेद्वृद्ध्या वृद्धं दानेन निःक्षिपेत् ॥१०१॥ नित्यमुद्यतदण्डः स्यान्नित्यं विवृतपौरुषः ॥ नित्यं संवृतसंवार्यो नित्यं छिद्रानुसार्य्यरेः ॥ १०२॥

۹۸ - پہلوانوں کے دھرم بے عیب قدیم کو کہا کشتری لوگ لڑائی مین دشمنوں کو مارتے ہوئے اس دھرم کو نہ چھوڑیں -

۹۹ - جو چیز نہین ملی راجہ اُسکے ملنے کی خواہش کرے اور جو مل گئی اُسکی حفاظت تدبیر سے کرے محفوظ چیزوں کو بڑھاوے اور بڑھی ہوئی چیزوں کو سب پاترون مین قائم کرے -

۱۰۰ - راجہ کے پرشارتھ (یعنی سورگ وغیرہ) کا پرچن بھی چار طرح کا ہے اسکو جانے اور سُستی کو ترک کرکے اُن چاروں کا سیون یعنے استعمال کرے جو اوپر کے اشلوک مین کہے گئے -

۱۰۱ - جو چیز نہین ملی اُسکی خواہش کرے اور جو ملا اُسکے ذریعہ سے حاصل ہوئی (مثل جرمانہ وغیرہ) اسکی حفاظت کرے جسکی حفاظت دیکھنے سے ہوتی ہے اُسکی ترقی دیکھنے سے کرے بیاج بڑھی چیز کو دان سے قائم کرے -

۱۰۲ - ہاتھی گھوڑا وغیرہ کی سواری اور جنگ کے قاعدے سیکھنے کی مہارت کرے اور استر (ہتیار) وغیرہ کے وسیلے سے اپنی شجاعت کی شہرت ہمیشہ کرے اور منتر اور اچار و چیشٹا وغیرہ کو ظاہر نکرے اور دشمن کے عیب کو جاننا ہے ان سب باتونکو ہمیشہ کرتا ہے -

* یعنی جو براہم چاری اور بان پرستھ اور سنیاسی اور برہمن اگنی ہوتری وغیرہ جنکا دن رات برہم کرم ہی مین گزرتا ہے ان لوگوں کو اُن چیزوں کو دے -

नसुप्तन्नविसन्नाहंननग्नंननिरायुधम्॥नायुध्यमानंपश्यन्तंनप-
रेणसमागतम्॥९२॥नायुधव्यसनप्राप्तंनार्त्तंनातिपरीक्षितम्
॥नभीतंनपरावृत्तंसतान्धर्ममनुस्मरन्॥९३॥यस्तुभीतःपरा
वृत्तःसंग्रामेहन्यतेपरैः॥भर्त्तुर्यद्दुष्कृतंकिंचित्तत्सर्वंप्रतिपद्य-
ते॥९४॥यच्चास्यसुकृतंकिंचिदमुत्रार्थमुपार्जितम्॥भर्त्तात-
त्सर्वमादत्तेपरावृत्तहतस्यतु॥९५॥रथाश्वंहस्तिनंछत्रंधनं
धान्यंपशून्स्त्रियः॥सर्वद्रव्याणिकुप्यंचयोयज्जयतितस्यत-
त्॥९६॥राज्ञश्चदद्युरुद्धारमित्येषावैदिकीश्रुतिः॥राज्ञाच-
सर्वयोधेभ्योदातव्यमपृथग्जितम्॥९७॥

۹۲ - جو شخص سوتا ہو یا زرہ اسکے بدن مین نہو بے ہتھیار ہو لڑائی کا ارادہ نرکھتا ہو کسی کے ساتھ تماشا دیکھنے کو آیا ہو ایسے آدمیون کو بھی نہ مارے۔

۹۳ - جسکا ہتھیار ٹوٹ گیا ہو یا بیمار جانے فرزند وغیرہ کے رنج مین ہو زخم شدید مین مبتلا ہو ڈرا ہوا ہو لڑائی سے بھاگا ہوا ہو ان سب کو اچھے لوگون کے دھرم کو خیال کرکے نہ مارے۔

۹۴ - جو آدمی ڈرکر بھاگ کر لڑائی مین دوسرے کے ہتھیار سے زخمی ہو کر مارا گیا ہے وہ اپنے مالک کے پاپ کو پاتا ہے۔

۹۵ - جو آدمی بھاگ کر مارا گیا اسکا پنیہ (یعنے نتیجہ فعل نیک) اسورگ کے ملنے کیواسطے جو فراہم ہوا ہو اسکو اسکا مالک پاتا ہے۔

۹۶ - رتھ گھوڑا ہاتھی چھتری۔ دھن دھانیہ چارپایہ عورت اور تمام دولت سوا سونا چاندی کے سیسا پیتل وغیرہ ان سب کو جو فتح کرے وہی اوسکا مالک ہوتا ہے۔

۹۷ - سونا چاندی زمین وغیرہ جو عمدہ چیزین فتح ہون انکا فتح کرنے والا اپنے راجہ کو دلوے یہ ویدمین لکھا ہے اور راجہ اس چیز کو ان سب پہلوانون کو تقسیم کرے جنہون نے ملک فتح کیا ہو۔

पात्रस्यहि विशेषेण श्रद्दधानतयैवच॥ अल्पंवा बहुवा प्रेत्य
दानस्यावाप्यते फलम्॥ ८६॥ समोत्तमाधमै राजा त्वाहूतः पा-
लयन्प्रजाः॥ न निवर्त्तेत संग्रामात्क्षात्रंधर्ममनुस्मरन्॥ ८७॥
संग्रामेष्वनिवर्त्तित्वं प्रजानां चैव पालनम्॥ शुश्रूषा ब्राह्मणा
नां च राज्ञां श्रेयस्करं परम्॥ ८८॥ आहवेषु मिथोऽन्योन्यं जि
घांसन्तो महीक्षितः॥ युध्यमानाः परं शक्त्या स्वर्गं यान्त्यपरां
मुखाः॥ ८९॥ न कूटैरायुधैर्हन्याद्युध्यमानो रणे रिपून्॥ नक
र्णिभिर्नापि दिग्धैर्नाग्निज्वलिततेजनैः॥ ९०॥ न च हन्यात्स्थ
लारूढं न क्लीबं न कृताञ्जलिम्॥ न मुक्तकेशं नासीनं न तवा-
स्मीति वादिनम्॥ ९१॥

۸۶ - جو براہمن دان لیتا ہے اسکی عبادت کی بزرگی اور دینے والے کی توفیق کی وجہ سے
دان کا پھل تھوڑا یا بہت پرلوک میں ملتا ہے۔
۸۷ - جو راجہ رعایا کی پرورش کرتا ہوا کشتری کے دھرم کا خیال رکھتا ہو اگر اسکو اس سے
بڑا یا چھوٹا راجہ لڑائی کے واسطے بلاوے تو اوسکا مقابلہ کرے لڑائی سے منھ نہ پھیرے۔
۸۸ - جنگ میں ثابت قدم رہنا رعیت کی پرورش کرنا برہمنوں کی سیوا کرنا یہ تین کام راجہ
کے پرم کلیان کرنے والے ہیں۔
۸۹ - لڑائی میں مارتے ہوئے اور لڑائی میں منھ نہ پھیر کر جو کشتری مرتا ہے وہ سُورگ میں
جاتا ہے۔
۹۰ - جو ہتھیار زہر سے بجھائے گئے اور جنکے اوپر لکڑی اور اندر سے لوہا ہے اور جس تیر کی
گانسی کرنیلے کی صورت ہے اور جو ہتھیار آگ سے گرم کیا گیا ایسے ہتھیاروں سے لڑائی میں شتروں کو نہ مارے
۹۱ - زمین پر کھڑا ہوا اور نپنسک اور ہاتھ جوڑنے والا اور جسکے سر کے بال کھلے ہوں اور
ایسا کہنے والے کہ میں تمہارا ہوں اور بیٹھے ہوئے کو نہ مارے۔

अध्यक्षान्विविधान्कुर्यात्तत्रतत्रविपश्चितः॥तेऽस्यसर्वाण्य
वेक्षेरन्नृणांकार्याणिकुर्वताम्॥८१॥आवृत्तानांगुरुकुला-
द्विप्राणांपूजकोभवेत्॥नृपाणामक्षयोह्येषनिधिर्ब्राह्मोऽ
भिधीयते॥८२॥नतंस्तेनानचामित्राहरन्तिनचनश्यति॥त-
स्माद्राज्ञानिधातव्योब्राह्मणेष्वक्षयोनिधिः॥८३॥नस्क-
न्दतेनव्यथतेनविनश्यतिकर्हिचित्॥वरिष्ठमग्निहोत्रेभ्योब्रा
ह्मणस्यमुखेहुतम्॥८४॥सममब्राह्मणेदानंद्विगुणंब्राह्म-
णब्रुवे॥प्राधीतेशतसाहस्रमनन्तंवेदपारगे॥८५॥

۸۱- ہر ایک جگہ پر ایک ایک عالم عہدہ دار انواع اقسام کا رکھے وہ عہدہ دار راجہ کے نوکرون کا کام سب دیکھے۔

۸۲- جو براہمن گروکل مین وِدیا کو پڑھکر اپنے باپ کے گھر آوین راجہ اُنکا پوجن کرے وے براہمن راجہ کے خزانہ بے زوال ہین۔

۸۳- جو دولت وسامان براہمن کو دیا جاتا ہے وہ لازوال ہے اُسکو چور چرا نہین سکتا پس راجہ اپنی دولت سے ایسے براہمنون کی سیوا اور پوجا کرے۔

۸۴- براہمن کے مکھ مین جو ہون کیا گیا یعنی دیوتا اور پترون اور رشیون کیلئے جو اُنکو بھوجن کرایا گیا خواہ پرمیشر کی خوشی کیواسطے بھوجن کرایا گیا وہ گرتا نہین نہ خراب جاوے نہ دکھ دیوے اور ایسا ہون (یعنے برہم بھوج) اگن ہوتر سے بڑا ہے۔

۸۵- سوا براہمن کے کشتری وغیرہ کو جسقدر دیوے اسقدر ملتا ہے اور کہنہ براہمن کو دینے سے دو چند ملتا ہے وید کے ایک ساکھا پڑھے ہوئے کو دینے سے لاکھ گنا ملتا ہے تمام وید پڑھے ہوئے کو دینے سے بے نہایت پھل ملتا ہے۔

* براہمن اُسکو کہتے ہین کہ جو اپنے ورن و آشرم کے دھرم مین قایم ہوکر پرمیشر کی اُپاسنا کرتا ہو اور گیانی گیبانی ہو

तत्स्यादायुधसम्पन्नं धनधान्येन वाहनैः॥ ब्राह्मणैः शिल्पिभि
र्यन्त्रैर्यवसेनोदकेन च॥७५॥ तस्य मध्ये सुपर्याप्तं कारयेद् गृहमा
त्मनः॥ गुप्तं सर्वर्तुकं शुभ्रं जलवृक्षसमन्वितम्॥७६॥ तदध्या-
स्योद्वहेद्भार्यां सवर्णां लक्षणान्विताम्॥ कुले महति सम्भू-
तां हृद्यां रूपगुणान्विताम्॥७७॥ पुरोहितं च कुर्वीत वृणुयादे-
व चर्त्विजः॥ तेऽस्य गृह्याणि कर्माणि कुर्युर्वैतानिकानि-
च॥७८॥ यजेत राजा क्रतुभिर्विविधैराप्तदक्षिणैः॥ धर्मार्थं चै
व विप्रेभ्यो दद्याद्भोगान्धनानि च॥७९॥ सांवत्सरिकमाप्तैश्च
राष्ट्रादाहारयेद्बलिम्॥ स्याच्चाम्नायपरो लोके वर्तेत पितृवन्नृ
षु॥८०॥

۷۵ - قلعہ کے اندر یہ سامان موجود رہے ہتھیار - دھن - دھانیہ - سواری - برہمن - کاریگر جنتر (یعنی کل) - گھاس - پانی

۷۶ - اس قلعہ کے اندر اپنا مکان ایسا بناوے کہ جسمیں علیحدہ علیحدہ منزل رات دن ہو تا ہتھیار و اگن کے گھر ہوں اور کھائیں بھی ہوا اور سب فصلوں کے پھل پھول بھی موجود ہوں مکان سفید رنگ اور اسمیں باؤلی کنواں درخت ہوں -

۷۷ - اس مکان میں بیٹھکر ایسی ہم قوم عورت کے ساتھ شادی کرے کہ جو اچھے خاندان کی ہو اور دل کو پیاری ہو اور خوبصورت و ہنرمند و نیک خصلت ہو -

۷۸ - پروہت اور رتوگ (یعنی یگیہ کرانیوالا) ان دونوں کو اختیار دے یہ دونوں اسکے گھر کے ہوم وغیرہ کو کریں

۷۹ - انیک پرکار کی یگیہ بہت دکشنا دے کر کرے اور دھرم کیواسطے برہمنوں کو بھوگ دیوے مکان و چارپائی و زیور و کپڑا وغیرہ و دھن کو دیوے -

۸۰ - راجہ اپنی راج سے اپنا حصہ سالانہ لیوے اور وید کے احکام کی تعمیل کرے اور تمام رعایا کو مثل اپنی اولاد کے پرورش کرے اور رعیت اسکو باپ کیطرح سمجھکر اسکے حکم کی تعمیل کرے

धनुर्दुर्गंमहीदुर्गमब्दुर्गंवार्क्षमेववा॥नृदुर्गंगिरिदुर्गंवासमा-
श्रित्यवसेत्पुरम्॥७०॥सर्वेणतुप्रयत्नेनगिरिदुर्गंसमाश्रयेत्
॥एषांहिबहुगुणयेनगिरिदुर्गंविशिष्यते॥७१॥त्रीण्याद्यान्या
श्रितास्त्वेषांमृगगर्त्ताश्रयाऽप्सराः॥त्रीण्युत्तराणिक्रमशः
प्लवंगमनरामराः॥७२॥यथादुर्गाश्रितानेतान्नोपहिंसन्ति
शत्रवः॥तथारयोनहिंसन्तिनृपंदुर्गसमाश्रितम्॥७३॥एकः
शतंयोधयतिप्राकारस्थोधनुर्द्धरः॥शतंदशसहस्राणितस्मा
द्दुर्गंविधीयते॥७४॥

۷۰- جسکے چارو طرف پانی ہو جہان کی زمین ٹھنڈھی ہو جسکے چارو طرف پانی ہو جسکے چارو طرف درخت ہون جسکے چارو طرف آدمی جنگ جو ہون جسکے چارو طرف پہاڑ ہون یہ چھہ مقامات مانند قلعہ کے ہین ایسے مقام پر راجہ قیام کرے جہان پر دشمن کی فوج نہ جا سکے۔

۷۱- جس ملک کے چارو طرف پہاڑ ہین اس ملک مین قیام کرے جبتک ایسا ملک ملے تب تک دوسرے ملک مین قیام نکرے ان سبھون مین ایسا ملک سب سے اچھا ہے۔

۷۲- پہلے تین قلعہ مین ہرن - چوہا جل کے جیو رہتے ہین پچھلے تین قلعہ مین بندر آدمی دیوتا رہتے ہین۔

۷۳- جسطرح ہرن وغیرہ اپنے قلعہ مین رہنے سے دشمنون سے تکلیف نہین پاتے اسیطرح راجہ قلعہ مین رہنے سے دشمنون سے تکلیف نہین پاتا۔

۷۴- قلعہ مین رہنے والا ایک کماندار نیچے رہنے والے سو آدمی سے لڑائی کرسکتا ہے اور قلعہ مین رہنے والے ایک سو آدمی نیچے رہنے والے دس ہزار آدمی سے لڑائی کر سکتے ہین اسلیئے قلعہ بنانے کا اپدیش کرتے ہین۔

अमात्येदण्डआयत्तोदण्डेवैनयिकीक्रिया ॥ नृपतौकोशरा-
ष्ट्रेचदूतेसन्धिविपर्ययौ ॥ ६५ ॥ दूतएवहिसन्धत्तेभिनत्त्येवच
संहतान् ॥ दूतस्तत्कुरुतेकर्मभिद्यन्तेयेनवानवा ॥ ६६ ॥ सवि
द्यादस्यकृत्येषुनिगूढेङ्गितचेष्टितैः ॥ आकारमिङ्गितंचेष्टांभृ
त्येषुचचिकीर्षितम् ॥ ६७ ॥ बुद्ध्वाचसर्वंतत्त्वेनपरराजचिकी-
र्षितम् ॥ तथाप्रयत्नमातिष्ठेद्यथात्मानंनपीडयेत् ॥ ६८ ॥ जां-
गलंसस्यसम्पन्नमार्यप्रायमनाविलम् ॥ रम्यमानतसामन्तं
स्वाजीव्यंदेशमावसेत् ॥ ६९ ॥

۶۵ - وزیر کے اختیار میں سزا ہے اور سزا کے اختیار میں انصاف ہے راجہ کے اختیار میں خزانہ اور راج ہے دوت کے اختیار میں صلح اور لڑائی ہے -

۶۶ - دوت ہی بگڑے ہوئے کو ملاتا ہے اور ملے ہوئے کو بگاڑتا ہے جس سے ملاپ اور بگاڑ ہوتا ہے وہ کام دوت ہی کرتا ہے -

۶۷ - سب اہلکاروں میں دوت ہی راجہ کی بات اور اشارہ اور آثار و قیافہ سے راجہ کے کرنے کے لائق سب کام کو جانے -

۶۸ - اور دوسرے راجاؤں کے دل کی اصل بات اپنی حکمت سے معلوم کرے اور ایسی تدبیر کرے جس سے اپنی آتما کو تکلیف نہ ہووے -

۶۹ - جس ملک میں تھوڑا پانی اور گھاس ہو اور سیت ہوا اور دھوپ اور غلہ ہو اسکو جانگل دیش کہتے ہیں اسمیں اور جس ملک میں اچھے آدمی ہوں اور بیمار نہ ہوں اور وہ ملک پھل پھول لتا وغیرہ سے سرسبز ہو اور وہاں کے سب سمت کے آدمی ملائم ہوں اور زراعت و تجارت وغیرہ دولت ملنے کی تدبیریں وہاں پر آسانی تمام ممکن ہوں ایسے ملک میں راجہ قیام کرے -

नित्यं तस्मिन्समाश्वस्तः सर्वकार्याणि निःक्षिपेत् ॥ तेन सार्द्धं विनिश्चित्य ततः कर्म्म समारभेत् ॥ ५९ ॥ अन्यानपि प्रकुर्वीत शुचीन्प्राज्ञानवस्थितान् ॥ सम्यगर्थसमाहर्त्तॄनमात्यान्सुपरीक्षितान् ॥ ६० ॥ निर्वर्त्तेतास्य यावद्भिरितिकर्त्तव्यता नृभिः ॥ तावतोऽतन्द्रितान्दक्षान्प्रकुर्वीत विचक्षणान् ॥ ६१ ॥ तेषामर्थे नियुञ्जीत शूरान्दक्षान्कुलोद्गतान् ॥ शुचीनाकरकर्म्मान्ते भीरूनन्तर्निवेशने ॥ ६२ ॥ दूतं चैव प्रकुर्वीत सर्वशास्त्रविशारदम् ॥ इङ्गिताकारचेष्टज्ञं शुचिं दक्षं कुलोद्गतम् ॥ ६३ ॥ अनुरक्तः शुचिर्दक्षः स्मृतिमान्देशकालवित् ॥ वपुष्मान्वीतभीर्वाग्मी दूतो राज्ञः प्रशस्यते ॥ ६४ ॥

۵۹ - اعتماد پاکر اُسی برہمن وزیر کے ساتھ یقین کرکے کام شروع کرے -

۶۰ - جو آدمی پاک ہیں اور سب باتون کے جاننے والے اور اچھی راہ سے دولت حاصل کرنیوالے ہیں اور عمدہ طریق سے جنکا امتحان ہو گیا ایسے اور بھی وزیر مقرر کرے -

۶۱ - جتنے آدمیون سے مطلب حاصل ہو سکے اتنے آدمیون کو نوکر رکھے مگر وہ آدمی چالاک و مستعد و ہوشیار و کام کرنے مین صاحب ہمت ہون -

۶۲ - ان وزیرون مین جو ہوشیار و عمدہ خاندانی و پاک و نیکخواہش و صابر ہون انکو وہ کام سپرد کرے جسمین دولت کی پیدایش ہو اور جو آدمی ڈرنیوالے ہین انکو قلعہ کے اندر رکھے

۶۳ - جو آدمی شاستر کا جاننے والا اور اشارون اور قیافون کا سمجھنے والا اور پاک اور ہوشیار اور عمدہ خاندان ہو اُسکو دوت (یعنی سفیر و وکیل) مقرر کرے -

۶۴ - جو دوت اپنے مالک کو خوش رکھنے والا و پاک و ہوشیار و سب باتون کو یاد رکھنے والا و ملک و وقت کا جاننے والا و اچھی صورت و شکل والا و اچھی تقریر کرنیوالا و بیخوف ہو وہ دوت راجہ کو اچھا ہوتا ہے -

व्यसनस्य च मृत्योश्च व्यसनं कष्टमुच्यते ॥ व्यसन्यधोऽधो व्रज-
ति स्वर्यात्यव्यसनी मृतः ॥ ५३ ॥ मौलाञ्छास्त्रविदः शूरांल्लब्ध
लक्षान्कुलोद्गतान् ॥ सचिवान्सप्त चाष्टौ वा प्रकुर्वीत परीक्षिता
न् ॥ ५४ ॥ अपि यत्सुकरं कर्म तदप्येकेन दुष्करम् ॥ विशेषतो
ऽसहायेन किन्तु राज्यं महोदयम् ॥ ५५ ॥ तैः सार्द्धं चिन्तयेन्नि-
त्यं सामान्यं सन्धिविग्रहम् ॥ स्थानं समुदयं गुप्तिं लब्धप्रशम-
नानि च ॥ ५६ ॥ तेषां स्वं स्वमभिप्रायमुपलभ्य पृथक्पृथक् ॥
समस्तानां च कार्य्येषु विदध्याद्धितमात्मनः ॥ ५७ ॥ सर्वेषां तु
विशिष्टेन ब्राह्मणेन विपश्चिता ॥ मन्त्रयेत्परमं मन्त्रं राजा षाड्गु-
ण्यसंयुतम् ॥ ५८ ॥

۵۳ ان اٹھارہ کا نام بیسن ہے بیسن اور موت مین بیسن برا ہے کیونکہ بیسن والا نرک مین
جاتا ہے اور جسنے بیسن کو ترک کیا وہ مرنے کے بعد سورگ مین جاتا ہے اسکو بیسن سے موت اچھی ہے

۵۴ - جو لوگ شاستر کے جاننے والے و شجاع و *علم انداز ہون اور اچھے خاندان مین پیدا
ہوئے مین انکا امتحان لیکر راجہ انکو اپنا وزیر بنا وے اور وہ وزیر تعداد مین سات یا آٹھ ہون

۵۵ - جو کام سہل ہے وہ بھی اکیلے نہین ہو سکتا اور راج کا کاج بڑا بھاری ہے وہ کسطرح اکیلے ہو سکے

۵۶ ان وزیرون کے ساتھ امور مفصلہ ذیل پر ہر روز غور کرے یعنی صلح و جنگ و خزانہ و شہر و راج و رتھ خانہ وغیرہ
و فوج کی پرورش و غلہ و سونا وغیرہ کی پیدایش کا مقام و اپنی و راج کی حفاظت اور ملے
ہوئے دھن کو اچھے لوگون کو دان دینا۔

۵۷ - وزیر لوگ جو صلاح دین اسکو علیحدہ علیحدہ یا ایک ہی دفعہ سمجھکر حکم مناسب دیوے جسمین
اپنا بھلا ہو۔

۵۸ - سب وزیرون مین جو اچھا ہو اسکے ساتھ چھ گن والے پرم منتر (یعنی صلاح) کو بچار کرے

* جسکا تیر نشانہ پر خطا نکرے۔

पैशुन्यंसाहसंद्रोहईर्ष्यासूयार्थदूषणम्॥वाग्दण्डजंचपारु-
ष्यंक्रोधजोऽपिगणोऽष्टकः॥४८॥द्वयोरप्येतयोर्मूलंयंसर्वे
कवयोविदुः॥तंयत्नेनजयेल्लोभंतज्जावेतावुभौगणौ४९
पानमक्षाःस्त्रियश्चैवमृगयाचयथाक्रमम्॥एतत्कष्टतमंवि-
द्याच्चतुष्कंकामजेगणे॥५०॥दण्डस्यपातनंचैववाक्पारु-
ष्यार्थदूषणे॥क्रोधजेऽपिगणेविद्यात्कष्टमेतत्त्रिकंसदा
॥५१॥सप्तकस्यास्यवर्गस्यसर्वत्रैवानुषंगिणः॥पूर्वंपूर्वंगु-
रुतरंविद्याद्व्यसनमात्मवान्॥५२॥

۴۸- جو چیزیں کرودھ سے پیدا ہوتی ہیں وہ یہ ہیں - بدون جانے عیب کو کہنا - اپنے بل سے کام کرنا - دغا سے کسیکو مارڈالنا - دوسرے کی عظمت کو نہ سہنا - کسیکے ہنر میں عیب لگانا - ارتھ کو چورانا - خواہ جو چیز دینے کے قابل ہے اوسکو نہ دینا - سخت زبانی سے گفتگو کرنا - ڈنڈے سے تاڑنا کرنا -

۴۹- اوپر جو دو طرح کی باتیں واجب الترک کہہ آئے ہیں اونکی جڑ لالچ ہے یعنے لالچ کرنے سے وہ پیدا ہوتی ہیں اسواسطے لالچ کو حکمت عملی سے چھوڑنا چاہیے اسکو قابو میں کرنے سے سب قابو میں ہو جاتی ہیں اس بات کو عقلمندوں نے کہا ہے -

۵۰- کام سے پیدا ہوئی چیزوں میں شراب پینا - پانسا کھیلنا - عورت کی اطاعت - شکار کھیلنا - یہ چاروں ایک سے ایک زیادہ زبون ہیں -

۵۱- کرودھ سے پیدا ہوئی چیزوں میں ڈنڈے مارنا - گالی دینا - دینے کے لائق چیز کو نہ دینا یہ تین ہمیشہ سخت زبون ہیں -

۵۲- یہ ساتوں ایک جگہ رہنے والے ہیں انمیں درجہ بدرجہ ایک سے ایک زیادہ زبون ہیں -

त्रैविद्येभ्यस्त्रयीं विद्यां दण्डनीतिं च शाश्वतीम् ॥ आन्वीक्षि-
कीं चात्मविद्यां वार्त्तारम्भांश्च लोकतः ॥ ४३ ॥ इन्द्रियाणां ज-
ये योगं समातिष्ठेद्दिवानिशम् ॥ जितेन्द्रियो हि शक्नोति वशे-
स्थापयितुं प्रजाः ॥ ४४ ॥ दश कामसमुत्थानि तथाष्टौ क्रोधजा-
नि च ॥ व्यसनानि दुरन्तानि प्रयत्नेन विवर्जयेत् ॥ ४५ ॥ कामजेषु
प्रसक्तो हि व्यसनेषु महीपतिः ॥ वियुज्यतेऽर्थधर्माभ्यां क्रोधजे-
ष्वात्मनैव तु ॥ ४६ ॥ मृगयाक्षो दिवास्वप्नः परिवादः स्त्रियो मदः ॥
तौर्यत्रिकं वृथाट्या च कामजो दशको गणः ॥ ४७ ॥

۴۳- تین وید کے جاننے والوں سے تینوں وید کو اور ڈنڈا اور نیت جاننے والوں سے نیت شاستر کو اور برہم ودیا جاننے والوں سے برہم ودیا کو پڑھے اور حصول دولت کی تدبیر جاننے والوں سے کھیتی اور تجارت اور حفاظت چارپایہ وغیرہ کو سیکھے۔

۴۴- رات دن اندریوں کو قابو میں کرنے کی کوشش کرے جو راجہ جتیندری یعنی اپنے نفس پر غالب ہے وہ تمام رعایا کو اپنے اختیار میں رکھ سکتا ہے

۴۵- دس چیز کام سے پیدا ہوتی ہیں اور آٹھ چیز کرودھ سے پیدا ہوتی ہیں اونکا ترک واجب سمجھے۔

۴۶- کام سے پیدا ہوئی چیزوں میں مصروف ہونے سے راجہ کے دھرم اور ارتھ کا ناش ہو جاتا ہے اور کرودھ سے پیدا ہوئی چیزوں میں مصروف ہونے سے راجہ آپ نشٹ جاتا ہے۔

۴۷- جو چیزیں کام سے پیدا ہوتی ہیں وہ یہ ہیں۔ شکار کھیلنا پانسا کھیلنا دن میں سونا دوسرے کا عیب ظاہر کرنا عورت کی صحبت کرنا۔ شراب پیکر مست ہو جانا۔ ناچنا۔ گانا بجانا بے فائدہ گھومنا

ब्राह्मणान्पर्युपासीतप्रातरुत्थायपार्थिवः ॥ त्रैविद्यवृद्धा-
न्विदुषस्तिष्ठेत्तेषांचशासने ॥ ३७ ॥ वृद्धांश्च नित्यंसेवेतविप्रा-
न्वेदविदःशुचीन् ॥ वृद्धसेवीहिसततंरक्षोभिरपिपूज्यते ॥ ३८ ॥
तेभ्योऽधिगच्छेद्विनयंविनीतात्मापिनित्यशः ॥ विनीतात्मा
हिनृपतिर्नविनश्यतिकर्हिचित् ॥ ३९ ॥ बहवोऽविनयान्नष्टा
राजानःसपरिच्छदाः ॥ वनस्थाअपिराज्यानि विनयात्प्रति
पेदिरे ॥ ४० ॥ वेनोविनष्टोऽविनयान्नहुषश्चैवपार्थिवः ॥ सु-
दासोयवनश्चैवसुमुखोनिमिरेवच ॥ ४१ ॥ पृथुस्तुविनयाद्रा-
ज्यंप्राप्तवान्मनुरेवच ॥ कुबेरश्चधनैश्वर्यंब्राह्मण्यंचैवगा-
धिजः ॥ ४२ ॥

۳۷ - راجہ وقت صبح اُٹھکر رگ یجر سام ویدون کے ارتھ جاننے والے براہمنون کا درشن اور
اور پوجن کرے - اور اُنکا تابع حکم رہے -

۳۸ - پوتر اور بڈھے وید پڑھنے والے براہمنون کی ہر روز خدمت کرے ایسا راجہ راکششون
سے بھی پوجا پاتا ہے -

۳۹ - پیدایشی عقل اور وید شاستر کے پڑھنے سے جو عقل پیدا ہوا ان دونون کی وجہ سے
اگر مزاج ملائم ہو تا ہم مرادزیادتی عاجزی کے براہمنون سے عاجزی کیا کرے تاکہ کبھی نشٹ نہو

۴۰ - بہت راجہ عاجزی نکرنے سے مع اپنی راج و دولت کے بگڑ گئے اور جنگل مین رہنے
والے راجاؤن نے عاجزی کرنے سے راج کو پایا ہے -

۴۱ - بین نہش چمن کا بیٹا شداس سکھ نم یہ سب راجا لوجہ عاجزی نکرنے کے مٹ گئے -

۴۲ - عاجزی کرنے سے پرتھو منو نے راج پایا اور کبیر بھگوان کے بھنڈارے کے
خزانچی ہوئے اور بسوامتر کشتری سے براہمن ہو گئے -

शुचिनासत्यसन्धेनयथाशास्त्रानुसारिणा।। प्रणेतुंशक्यतेदंडः
सुसहायेनधीमता।।३१।।स्वराष्ट्रेन्यायवृत्तःस्याद्भृशदंडश्चश-
त्रुषु।।सुहृत्स्वजिह्मःस्निग्धेषुब्राह्मणेषुक्षमान्वितः।।३२।।ए-
वंवृत्तस्यनृपतेःशिलोञ्छेनापिजीवतः।। विस्तीर्यतेयशोलोके
तैलविन्दुरिवाम्भसि।।३३।। अतस्तुविपरीतस्यनृपतेरजितात्म-
नः।। संक्षिप्यतेयशोलोकेघृतविन्दुरिवाम्भसि।। ३४।। स्वेस्वेध-
र्मेनिविष्टानांसर्वेषामनुपूर्व्वशः।। वर्णानामाश्रमाणांचरा-
जासृष्टोऽभिरक्षिता।। ३५।। तेनयद्यत्सभृत्येनकर्त्तव्यंरक्षताप्र-
जाः।। तत्तद्वोऽहंप्रवक्ष्यामियथावदनुपूर्वशः।।३६।।

۳۱ — جو راجہ پاک و سچ بولنے والا و شاستر کی ریت پر چلنے والا و پناہ رکھنے والا و دانشمند
ہے وہ اُس سزا کے دے سکتا ہے —

۳۲ — اپنے راج مین انصاف کے موافق چلے اور دشمنون کو سزاے سخت دیوے اور
وفادار دوستون کے ساتھہ مہربانی کرتا رہے اور کم قصور والے براہمنون کی عفو تقصیر
کرے

۳۳ — اس ریت سے راجہ رکھ شل اونچھ سے اوقات گذاری کرے تو اُسکا یش لوک
مین پھیل جاوے جیسے پانی مین تیل کا بوند پھیل جاتا ہے —

۳۴ — جو راجہ اسکے برخلاف ہو اور جسنے اپنے نفس کو مغلوب نہین کیا اُسکا یش لوک مین
نہین پھیلتا ہے جیسے گھی کا بوند پانی مین نہین پھیلتا ہے —

۳۵ — جو ورن اور آشرم اپنے اپنے دھرم پر ثابت قدم ہین انکون کی حفاظت
کے لئے راجہ پیدا کیا گیا ہے —

۳۶ — بھرگ جی مہاراج کہتے ہین کہ اے رشی لوگو جو راجہ مع اپنے اہلکارون کے رعایا
کی حفاظت مین مشغول رہتے ہین اُنکے کرنیکے لائق کامونکو سلسلہ سے ہم آپ لوگون سے کہینگے

यत्रश्यामोलोहिताक्षोदण्डश्चरतिपापहा॥ प्रजास्तत्रनमु-
ह्यन्तिनेताचेत्साधुपश्यति॥२५॥तस्याहुःसम्प्रणेतारंराजा-
नंसत्यवादिनम्॥समीक्ष्यकारिणंप्राज्ञंधर्मकामार्थकोवि-
दम्॥२६॥तंराजाप्रणयन्सम्यक्त्रिवर्गेणाभिवर्द्धते॥का-
मात्माविषमःक्षुद्रोदण्डेनैवनिहन्यते॥२७॥दण्डोहिसुम-
हत्तेजोदुर्द्धरश्चाकृतात्मभिः॥ धर्माद्विचलितंहन्तिनृपमेव
सबान्धवम्॥२८॥ततोदुर्गंचराष्ट्रंचलोकंचसचराचरम्॥अं-
तरिक्षगतांश्चैवमुनीन्देवांश्चपीडयेत्॥२९॥सोऽसहायेन-
मूढेनलुब्धेनाकृतबुद्धिना॥नशक्योन्यायतोनेतुंसक्तेनवि-
षयेषुच॥३०॥

۲۵ - جہاں سیاہ رنگ سرخ آنکھ والا ناس کرنیوالا ڈنڈ گھومتا ہے وہاں پرجا کو موہ نہیں ہوتا لیکن اُس حالت میں کہ جب ڈنڈ دینے والا آدمی اچھی طرح سے ڈنڈ کو دیوے -

۲۶ - جو راجہ سچ بولنے والا و غور کرنے والا اور دھرم ارتھ کام تینوں میں ہوشیار اچھی طرح سے جاننے والا ہو وہی اس ڈنڈ کا دینے والا ہے -

۲۷ - اُس سزا کو دینے سے راجہ دھرم وارتھ وکام سے بڑھتا ہے جتنے آدمی کامی کرودھی پیچ ہیں وے سب سزا ہی سے مارے جاتے ہیں -

۲۸ - سزا نہایت پُرجلال ہے جو راجہ شاستر کو نہیں جانتا وہ سزا دہی کو اختیار نہیں کر سکتا وہی سزا ادھرمی راجہ اور اوسکے رشتہ داروں کو نیست و نابود کر دیتی ہے -

۲۹ - وہی سزا قلعہ و راج و ساکن و متحرک عالم و انترکش یعنے عالم بالا میں جو منی و دیوتا لوگ ہیں اُنکو تکلیف دیتی ہے

۳۰ - جو راجہ پناہ نہیں رکھتا اور جاہل اور لالچی اور دنیاوی عیش میں بھولا ہوا ہے وہ انصاف کے موافق سزا نہیں دے سکتا -

समीक्ष्यसधृतःसम्यक्सर्व्वारंजयतिप्रजाः॥ असमीक्ष्यप्रणी
तस्तुविनाशयतिसर्वतः॥ १९॥ यदिनप्रणयेद्राजादण्डं-
दण्ड्येष्वतन्द्रितः॥ शूलेमत्स्यानिवापक्ष्यन्दुर्बलान्बलवत्तराः
॥२०॥ अद्यात्काकःपुरोडाशंश्वाचलिह्याद्धविस्तथा॥स्वा
म्यंचनस्यात्कस्मिंश्चित्प्रवर्त्तेताधरोत्तरम्॥ २१॥सर्वोदण्डजि
तोलोकोदुर्लभोहिशुचिर्नरः॥दण्डस्यहिभयात्सर्वंजगद्भोगा
यकल्पते॥२२॥देवदानवगन्धर्वारक्षांसिपतगोरगाः॥तेपि
भोगायकल्पन्तेदण्डेनैवनिपीडिताः॥२३॥दुष्येयुःसर्ववर्णा
श्चभिद्येरन्सर्वसेतवः॥सर्वलोकप्रकोपश्चभवेद्दण्डस्यविभ्र-
मात्॥ २४॥

۱۹- جب غور کرکے اچھی طرح سے سزا دیجاتی ہے تب تمام رعایا کو آرام ملتا ہے اور جب وہی سزا بدون غور کئے بے محابا دیجاتی ہے تب تمام رعایا کو سب طرف سے مٹا دیتی ہے -

۲۰- اگر راجہ سُستی کرکے اشخاص واجب التعزیر کو سزا نہ دیوے تو زبردست آدمیون کو زبردست آدمی جیسا مشکل کر دیوین -

۲۱- اگر سزا نہو تو دیوتاؤن کا حصہ کوّا کھا ڈالے اور کوئی مالک نرہے سب اُلٹ پلٹ ہو جاے

۲۲- جتنے جاندار ہین سب سزا کے لائق ہین پاک آدمی نا توان ہین سزا کے خوف سے سب جاندار کام کرنے کی طاقت رکھتے ہین -

۲۳- دیو دانو گندھرب راکشش پکھشی سانپ یہ سب سزا کے وسیلے سے کام کرنے کی طاقت رکھتے ہین -

۲۴- سزا کے لائق آدمیون کو سزا نہ دینے سے اور سزا نہ دینے کے لائق آدمیون کو سزا دینے سے تمام ورن دشٹ ہو جاینگے اور مریادا ٹوٹ جائیگی تمام عالم درہم برہم ہو کر بگڑ جائیگا -

तस्माद्धर्म्मं यमिष्टेषु सव्यवस्येन्नराधिपः॥ अनिष्टं चाप्यनि
ष्टेषु तं धर्म्मं न विचालयेत्॥१३॥ तस्यार्थे सर्व्वभूतानां गोप्तारं
धर्म्ममात्मजम्॥ ब्रह्मतेजोमयं दण्डमसृजत्पूर्व्वमीश्वरः॥१४
॥ तस्य सर्व्वाणि भूतानि स्थावराणि चराणि च॥ भयाद्भोगा
य कल्पन्ते स्वधर्म्मान्न चलन्ति च॥१५॥ तं देशकालौ शक्तिं
च विद्यां चावेक्ष्य तत्वतः॥ यथार्हतः संप्रणयेन्नरेष्वन्याय-
वर्त्तिषु॥१६॥ स राजा पुरुषो दण्डः स नेता शासिता च सः॥
चतुर्णामाश्रमाणां च धर्मस्य प्रतिभूः स्मृतः॥१७॥ दण्डः शा-
स्ति प्रजाः सर्वा दण्ड एवाभिरक्षति॥ दण्डः सुप्तेषु जागर्त्ति द-
ण्डं धर्म्मं विदुर्बुधः॥१८॥

١٣- اس سبب سے دھشت انشٹ مین وید کے موافق جس دھرم کو راجہ قایم کرے
اس سے انحراف نکرنا چاہیئے-

١٤- ایشور نے اس راجہ کے واسطے سب جانداروں کے حفاظت کے لئے اپنے بیٹے
برھم تیج روپ ڈنڈ کو پہلے ہی پیدا کیا-

١٥- اُس ڈنڈ کے خوف سے جاندار ان ساکن و متحرک بھوگ کرنے کے لئے سمرتھ ہوتے
ہین اور اپنے دھرم سے منحرف نہین ہوسکتے-

١٦- ملک و وقت و علم و طاقت کو دیکھکر مجرمون کو درجہ بدرجہ سزا سے مناسب
دیوے-

١٧- وہی ڈنڈ (یعنی سزا) جسکا اوپر بیان کیا گیا ہے راجہ ہے اور وہی مرد ہے اور سب
بمنزلہ عورت ہین کامونکا انجام دینے والا چار آشرمونکے دھرم کا حکم دینے والا اور ضامن وہی ہے

١٨- سب رعایا کی حفاظت کرنیوالا اور حکم دینے والا اور سوتے ہوئے لوگون کا جگانیوالا
وہی ڈنڈ ہے اُسی ڈنڈ کو پنڈت لوگ دھرم کہتے ہین-

सोऽग्निर्भवति वायुश्च सोऽर्कः सोमः स धर्मराट्॥ स कुबेरः
स वरुणः स महेन्द्रः प्रभावतः॥ ७॥ बालोऽपि नावमन्तव्यो
मनुष्य इति भूमिपः॥ महती देवता ह्येषा नररूपेण तिष्ठति॥
८॥ एकमेव दहत्यग्निर्नरन्दुरुपसर्पिणम्॥ कुलन्दहति
राजाग्निः सपशुद्रव्यसंचयम्॥ ९॥ कार्य्यं सोऽवेक्ष्य शक्तिं-
च देशकालौ च तत्त्वतः॥ कुरुते धर्म्मसिद्ध्यर्थं विश्वरूपं पुनः
पुनः॥ १०॥ यस्य प्रसादे पद्मा श्रीर्विजयश्च पराक्रमे॥ मृत्यु-
श्च वसति क्रोधे सर्व्वतेजोमयो हि सः॥ ११॥ तं यस्तु द्वेष्टि संमो-
हात्स विनश्यत्यसंशयम्॥ तस्य ह्याशु विनाशाय राजा प्रकु-
रुते मनः॥ १२॥

۷- وہی راجہ اپنے پربھاؤ کے موافق-اگن ہوا سورج چندرمان دھرم راج اندر کبیر برن ہے-

۸- راجہ بالک بھی ہو تو بھی بعقل انسانی اسکی تحقیر نکرنا چاہیے کیونکہ راجہ بصورت انسان بڑا اوتار زمین پر قائم ہے-

۹- اگن کے سامنے جو کوئی جاتا ہے صرف اسی کو اگن جلاتی ہے مگر راج روپی اگن تمام خاندان کو مع اسباب و چارپایہ کے جلا دیتی ہے-

۱۰- وہ راجہ اپنے کام و شکست و دیش و کال کو تتو پورک دیکھکر دھرم سدھ کیلئے انیک روپ بارم بار دھارن کرتا ہے-

۱۱- جس راجہ کی خوشی مین لکشمی رہتی ہے اور پراکرم مین فتح اور غصہ مین موت وہ راجہ تمام تیجون کا دھارن کرنیوالا ہے-

۱۲- جو آدمی موہ سے ایسے راجہ کے ساتھ دشمنی کرتا ہے وہ ضرور ناش ہوجاتا ہے ایسے آدمی کے ناش کے لئے راجہ بہت جلد دل لگاتا ہے-

राजधर्मान्प्रवक्ष्यामियथावृत्तोभवेन्नृपः।।सम्भवश्चयथा
तस्यसिद्धिश्चपरमायथा।।१।।ब्राह्मंप्राप्तेनसंस्कारंक्षत्रि
येरायथाविधि।।सर्व्वस्यास्ययथान्यायंकर्त्तव्यंपरिरक्ष-
राम्।।२।।अराजकेहिलोकेऽस्मिन्सर्व्वतोविद्रुतेभयात्।।
रक्षार्थमस्यसर्व्वस्यराजानमसृजत्प्रभुः।।३।।इन्द्रानिलयमा
र्कारामग्नेश्चवरुरास्यच।।चन्द्रवित्तेशयोश्चैवमात्राभि-
र्निर्म्मितोनृपः।।४।।यस्मादेषांसुरेन्द्रारांमात्राभ्योनिर्मि-
तोनृपः।।तस्मादभिभवत्येषसर्वभूतानितेजसा।।५।।तपत्या
दित्यवच्चैषचक्षूंषिचमनांसिच।।नचैनंभुविशक्नोतिकश्चि-
दप्यभिवीक्षितुम्।।६।।

۱- جس پرکار سے راجون کی پیدایش اور پرم سدہو اور آچرن ہے اس سب کو کہین گے -

۲- کشتری بدہ سے جینوسے کر اپنی راج کی پرجا کا پالن ارز و سے انصاف سے کرے -

۳- جو ملک سب طرف سے خوفناک ہے اور اوسمین راجہ نہین ہے اس ملک کی حفاظت کیواسطے سری برہماجی نے راجہ کو پیدا کیا -

۴- اندر - بایو - یم - راج - سورج - اگنی - برن - چندرما - ن کبیر - ان آٹھون کے انس سے سری برہماجی نے راجہ کو پیدا کیا

۵- جوکہ دیوتون کے انش سے راجہ پیدا ہوا ہے اس سبب سے اپنے تیج سے سب جانداروں کو مغلوب کرتا ہے -

۶- دیکھنے والے کی آنکھون کو اور دل کو سورج کیطرح تپاتا ہے کوئی آدمی زمین پر راجون کے روبرو ہوکر انکو دیکھ نہین سکتا کیونکہ اونکا تیج سورج کے مانند ہے -

दशलक्षणकं धर्ममनुतिष्ठन्समाहितः ॥ वेदान्तं विधिवच्छ्रु-
त्वासंन्यसेदनृणोद्विजः ॥ ९४ ॥ संन्यस्यसर्वकर्माणिकर्मदो-
षानपानुदन् ॥ नियतोवेदमभ्यस्यपुत्रैश्वर्येसुखंवसेत् ॥ ९५
॥ एवंसंन्यस्यकर्माणिस्वकार्यपरमोऽस्पृहः ॥ संन्यासेना-
पहत्यैनः प्राप्नोतिपरमांगतिम् ॥ ९६ ॥ एषवोऽभिहितोध-
र्मोब्राह्मणस्यचतुर्विधः ॥ पुण्योऽक्षयफलः प्रेत्यराज्ञांध-
र्मंनिबोधत ॥ ९७ ॥

इतिमानवेधर्मशास्त्रेभृगुप्रोक्तायांसंहितायां षष्ठोऽध्यायः ६

۹۴- بے فکر ہو کر اس دھرم کو کرتا ہوا بدھ پوروک ویدانت شاستر کو سنکر تینوں رن یعنے قرض کو ادا کرکے سنیاس دھارن کرے۔

۹۵- سب کرموں کو چھوڑکر اور کرم دوش کا ناش کرکے نیم سے وید کا ابھیاس کرکے پتر کے ایشوریہ میں سکھ سے رہے۔

۹۶- اسطرح سب کرموں کو چھوڑکر آتم گیان کو مقدم کر سورگ وغیرہ کی خواہش چھوڑ کر سنیاس کے وسیلہ سے پاپوں کو دور کرکے پرم گت کو پاتا ہے۔

۹۷- بھرگ جی کہتے ہیں کہ اے رشی لوگو آپ سے براہمنوں کا چار پرکار کا دھرم کہا وہ دھرم پاک ہے اور پرلوک میں اسکا پھل بے زوال ہے اسکے بعد راجن کا دھرم کہتے ہیں۔

منّ جی کا دھرم شاستر بھرگ جی کی سنگھتا کا چھٹوان ادھیاے

سماپت ہوا۔

सर्वेषामेव चैतेषां वेदस्मृतिविधानतः॥ गृहस्थ उच्यते श्रेष्ठः स त्रीनेतान्बिभर्तिहि॥८९॥ यथा नदीनदाः सर्वे सागरे यान्ति संस्थितिम्॥ तथैवाश्रमिणः सर्वे गृहस्थे यान्ति संस्थितिम्॥९०॥ चतुर्भिरपि चैवैतैर्नित्यमाश्रमिभिर्द्विजैः॥ दशलक्षणको धर्मः सेवितव्यः प्रयत्नतः॥९१॥ धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः॥ धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥९२॥ दशलक्षणानि धर्मस्य ये विप्राः समधीयते॥ अधीत्य चानुवर्त्तन्ते ते यान्ति परमां गतिम्॥९३॥

۸۹ - ویداور اسمرت کے بدھان سے چاروں آشرموں سے گرہستھ آشرم بڑا ہے کیونکہ تینوں آشرم مین رہنے والے آدمیون کو کھانے اور کپڑے سے گرہستھ ہی پالن کرتا ہے -

۹۰ - جسطرح ندی اور نالے سمندر مین جاکر قائم ہوتے ہین اسیطرح سب آشرم والے گرہستھ ہی مین قیام پاتے ہین -

۹۱ - چاروں آشرم والے ہمیشہ دس لکشن والے دھرم کو تدبیر سے اختیار کرین

۹۲ - دھرم کے دس لکشن یہ ہین سنتوش (یعنے قناعت) کشما (یعنے کسی سے نقصان پاکر اُسکا نقصان نکرنا) دم (یعنے بکار کرنیوالے بسئے پاکر من مین بکار نہونا) چوری کا تیاگ پوترتا (یعنے طہارت) بشیوں سے اندریون کو روکنا - شاستر وغیرہ کا تتو گیان آتم گیان (یعنی خودشناسی) ستیہ - غصہ کرنے والی بات مین بھی غصہ نکرنا

۹۳ - جو آدمی ان دھرموں کو جان کر اختیار کرتا ہے وہ پرم گت کو پاتا ہے -

अधियज्ञंब्रह्मजपेदाधिदैविकमेवच॥ आध्यात्मिकंचसततं वेदान्ताभिहितंचयत्॥ ८३॥ इदंशरणमज्ञानामिदमेवविजानताम्॥ इदमन्विच्छतांस्वर्गमिदमानन्त्यमिच्छताम्॥ ८४॥ अनेनक्रमयोगेनपरिव्रजतियोद्विजः॥ सविधूयेहपाप्मानंपरंब्रह्माधिगच्छति॥ ८५॥ एषधर्मोऽनुशिष्टोवोयतीनांनियतात्मनाम्॥ वेदसंन्यासिकानान्तुकर्मयोगंनिबोधत॥ ८६॥ ब्रह्मचारीगृहस्थश्चवानप्रस्थोयतिस्तथा॥ एतेगृहस्थप्रभवाश्चत्वारःपृथगाश्रमाः॥ ८७॥ सर्वेऽपिक्रमशस्त्वेतेयथाशास्त्रंनिषेविताः॥ यथोक्तकारिणंविप्रंनयन्तिपरमांगतिम्॥ ८८॥

۸۳- یگیہ اور دیوتا اور جیو ان سبھون کے ادھکار کرکے جو برہم کا سروپ ویدا ور ویدانت مین کہا ہے ان سبھون کا برت یا دن کرنے والا جو ویدہے اسکا جپ کرے۔

۸۴- گیان اور اگیانی اور موکش و سورگ کی اچھا کرنیوالون کو تدبیر بتانیوالا ایک وید ہی ہے

۸۵- جو برہمن کشتری ویشیہ اس طریق سے سنیاسی ہوتا ہے وہ اس لوک مین پاپ کو چھوڑکر پرلوک مین پرم برہم کو پاتا ہے۔

۸۶- بھرگ جی کہتے ہین کہ اے رشیو چار طرح کے جو یتی ہین کٹیچر بہودک ہنس پرم ہنس ان سبھون کا سادھارن دھرم کہا اب تینون مین جو بیس کٹیچر ہین انکا اسا دھارن دھرم کہتے ہین

۸۷- برہمچاری گرہستھ بانپرستھ یتی یعنی سنیاسی یہ چارو آشرم علیحدہ علیحدہ گرہستھ ہی سے پیدا ہین۔

۸۸- جو براہمن شاستر کی بدہ سے ان چارو آشرم کا سیون کرتا ہے وہ پرم گت کو پاتا ہے۔

जराशोकसमाविष्टंरोगायतनमातुरम् ॥ रजस्वलमनित्यंचभूता
वासमिमंत्यजेत् ॥७७॥ नदीकूलंयथावृक्षोवृक्षंवाशकुनिर्यथा
॥ तथात्यजन्निमन्देहंकृच्छ्राद्ग्राहाद्विमुच्यते ॥७८॥ प्रियेषुस्वे
षुसुकृतमप्रियेषुचदुष्कृतम् ॥ विसृज्यध्यानयोगेनब्रह्माभ्ये-
तिसनातनम् ॥७९॥ यथाभावेनभवतिसर्वभावेषुनिःस्पृहः ॥
तदासुखमवाप्नोतिप्रेत्यचेहचशाश्वतम् ॥८०॥ अनेनविधि-
नासर्वांस्त्यक्त्वासंगान्शनैःशनैः ॥ सर्वद्वन्द्वविनिर्मुक्तोब्रह्म-
ण्येवावतिष्ठते ॥८१॥ ध्यानिकंसर्वमेवैतद्यदेतदभिशब्दितम्
॥ नह्यनध्यात्मवित्कश्चित्क्रियाफलमुपाश्नुते ॥८२॥

۷۷- ضعیفی اور رنج کی وجہ سے بیماری کا گھر بھوک پیاس سردی گرمی سے بے چین رجوگن کے ساتھ ناش ہونے والا پانچ عناصر کا گھر ایسے بدن میں جیو آتما رہتا ہے سو ایسے بدن کو ترک کرے یعنے جس کرم کرنے سے ایسا شریر ملے وہ کرم نہ کرے۔

۷۸- جسطرح ندی کے کنارے کو درخت چھوڑ دیتا ہے اور درخت کے پرند درخت کو اسیطرح شریر کو تیاگ کرتا ہوا برہم کی اپاسنا کرنیوالا کشٹ روپی گراہ سے چھوٹ جاتا ہے۔

۷۹- برہم کو جاننے والا مہاتما ہت کارج میں سکرت کو تیاگ کرکے دھیان یوگ کے وسیلہ برہم میں لین ہو جاتا ہے۔

۸۰- جب پرمارتھ کی وجہ سے بستیوں میں دوش جانکر سب چیزوں سے بیخواہش ہو جاتا ہے تب اس لوک میں اور پرلوک میں سکھ پاتا ہے۔

۸۱- اسطرح آہستہ آہستہ سب کو تیاگ کرکے کام کرودھ و سردی و گرمی وغیرہ جو جفت چیزیں ہیں ان سے علیحدہ ہو کر برہم میں لین ہوتا ہے۔

۸۲- پتر وغیرہ کی ممتا کا تیاگ اور مان و اپمان کا سہنا یہ سب باتیں جیو آتما کو پرماتما کے دھیان کے وسیلے سے ملتی ہیں آتما کا نجاننے والا آدمی کریا پھل (یعنی موہ کا تیاگ اور جفت چیزوں کا سہنا) ہو کس نہیں پا سکتا

दह्यन्ते ध्मायमानानां धातूनां हि यथा मलाः ॥ तथेन्द्रियाणां दह्य-
न्ते दोषाः प्राणस्य निग्रहात् ॥७१॥ प्राणायामैर्दहेद्दोषान्धार-
णाभिश्च किल्बिषम् ॥ प्रत्याहारेण संसर्गान्ध्यानेनानीश्वरा
न्गुणान् ॥ उच्चावचेषु भूतेषु दुर्ज्ञेयामकृतात्मभिः ॥ ध्यानयोगे-
न सम्पश्येद्गतिमस्यान्तरात्मनः ॥७३॥ सम्यग्दर्शनसम्पन्नः क
र्मभिन निबध्यते ॥ दर्शनेन विहीनस्तु संसारं प्रतिपद्यते ॥७४॥
अहिंसयेन्द्रियासंगैर्वैदिकैश्चैव कर्मभिः ॥ तपसश्चरणैश्चोग्रैः
साधयन्तीह तत्पदम् ॥७५॥ अस्थिस्थूणं स्नायुयुतं मांसशो
णितलेपनम् ॥ चर्मावनद्धं दुर्गन्धि पूर्णं मूत्रपुरीषयोः ॥७६॥

۷۱ - جسطرح سب دھات (مثل چاندی و سونا وغیرہ) آگ مین تپانے سے میل سے صاف ہو جاتی ہے اُسی طرح پرانایام کرنے سے اندریون کا سب دوش بھسم ہو جاتا ہے -

۷۲ - پرانایام کے وسیلے سے راگ و دویش وغیرہ دوشون کو جلا دینا چاہئے برہم مین دل لگانے سے پاپ کو دور کرنا اور اندریون کو روکنے سے بِشے کو دور کرنا اور دھیان سے کرودھ لوبھ مد وغیرہ جو کہ ایشور سے نسبت نہین رکھتے چھوڑنا چاہئے -

۷۳ - اونچ نیچ بھوتون مین اس انتراتما کی گت کو دھیان جوگ کرکے دیکھے جس گت کو شاستر کے موافق سنسکار سے جدا انشٹ کرن والے آدمی کشٹ سے بھی نہین دیکھ سکتے -

۷۴ - تتو پوروک برہم کو دیکھنے والا آدمی کرمون کے بندھن مین نہین آتا اور جو آدمی برہم درشن سے محروم رہتا ہے وہ سنسار کو پاتا ہے برہم کو نہین پاتا -

۷۵ - جیون کو نہ مارنا اندریون کی صحبت مین نہ پڑنا وید کے موافق کرم کرنا بڑا تپ کرنا انھون کے ذریعے سے عقلمند آدمی برہم پدوی کو سادھن کرتا ہے -

۷۶ - (اب شریر کا برنن کرتے ہین) ہاڑ کا کھمبھا یعنے ستون رگون سے کسا ہوا خون و گوشت سے لپا ہوا چمڑے سے بندھا ہوا بو دار غلیظ و پیشاب سے بھرا ہوا ہے -

सूक्ष्मताचान्ववेक्षेतयोगेनपरमात्मनः॥ देहेषुचसमुत्पत्ति
मुत्तमेष्वधमेषुच॥ ६५॥ दूषितोऽपिचरेद्धर्मयत्रतत्राश्रमेर-
तः॥समःसर्व्वेषुभूतेषुनलिंगंधर्म्मकारणम्॥ ६६॥ फलंक-
तकवृक्षस्ययद्यप्यम्बुप्रसादकम्॥ ननामग्रहणादेवतस्यवा-
रिप्रसीदति॥ ६७॥ संरक्षणार्थंजन्तूनांरात्रावहनिवासदा॥
शरीरस्यात्ययेचैवसमीक्ष्यवसुधांचरेत्॥ ६८॥ अह्नारात्र्या
चयान्जन्तून्हिनस्त्यज्ञानतोयतिः॥ तेषांस्नात्वाविशुद्ध्यर्थं
प्राणायामान्षडाचरेत्॥ ६९॥ प्राणायामाब्राह्मणस्यत्रयो
ऽपिविधिवत्कृताः॥ व्याहृतिप्रणवैर्युक्ताविज्ञेयंपरमंतपः
॥ ७०॥

۶۵- یوگ کے وسیلے سے پرماتما کی گت کو اعمال نیک و بد کا نتیجہ پانے کیواسطے اتم مدھیم ادھم یون مین جانداروں کی پیدائش کو بھی غور کرے۔

۶۶- کسی آشرم مین رہے اور اُس آشرم کے دھرم پر چلتا ہو لیکن برہم بدھ سے سب کو برابر دیکھے یہی دھرم ہے گیروا کپڑا وغیرہ پہننا کچھ دھرم مین داخل نہین ہے۔

۶۷- نرملی پھل اگرچہ پانی کو صاف کرتا ہے لیکن اُسکے نام لینے سے پانی صاف نہین ہوتا جب اُسکو گھسکر پانی مین ڈالینگے تب صاف ہوگا اسیطرح چھہ دھارن کرنا کچھ دھرم نہین ہے بلکہ اس دھرم پر چلنا دھرم کہلاتا ہے۔

۶۸- جانداروں کی حفاظت کیواسطے دن رات ہر وقت زمین کو دیکھکر چلے تاکہ کوئی جیو نہ مرے اور اوسکے بدن کو بھی تکلیف ہو۔

۶۹- جو سنیاسی بغیر جانے جانداروں کو مارتا ہے اس پاپ کے دور کرنے کے واسطے اشنان کرکے چھہ پرانایام کرنے سے شدھ ہوتا ہے۔

۷۰- بیاہرت اور اونکار کرکے بدھ سے تین پرانایام بھی کرے تو اس براہمن کا پرم تپ ہے۔

अल्पान्नाभ्यवहारेण रहः स्थानासनेन च॥ ह्रियमाणानि-
विषयैरिन्द्रियाणि निवर्त्तयेत्॥ ५९॥ इन्द्रियाणां निरोधेन राग
द्वेषक्षयेण च॥ अहिंसया च भूतानाममृतत्वाय कल्पते॥ ६०॥
अवेक्षेत गतीर्नृणां कर्मदोषसमुद्भवाः॥ निरये चैव पतनं यात
नाश्च यमक्षये॥ ६१॥ विप्रयोगं प्रियैश्चैव संयोगं च तथाप्रियैः॥
जरया चाभिभवनं व्याधिभिश्चोपपीडनम्॥ ६२॥ देहादुत्क्रमणं
चास्मात्पुनर्गर्भे च संभवम्॥ योनिकोटिसहस्रेषु सृतीश्चास्या
न्तरात्मनः॥ ६३॥ अधर्मप्रभवं चैव दुःखयोगं शरीरिणाम्॥ ध
र्मार्थप्रभवं चैव सुखसंयोगमक्षयम्॥ ६४॥

۵۹ — تھوڑا بھوجن کرے اور ایکانت مین رہے اس سے بشئون کی قابو کی ہوئی اندریون کو نبرت کرے یعنے نفس امّارہ کو ہوا و ہوس سے خالی کرے۔

۶۰ — اندریون کو روکنا راگ اور دویش سے الگ رہنا کسی جاندار کو نہ مارنا ان باتون سے سنّیاسی موکش کے لائق ہوتا ہے —

۶۱ — کرمون کے دوش سے آدمیون کی حالت اور نرک مین پڑنا اور یم راج کے ملک مین بڑا دکھ پانا ان سب باتون کو دیکھے یعنے بچار کرے۔

۶۲ — پیاری چیزون کا چھوٹنا نامرغوب چیزون کا ملنا بحالت پیری بے قدری گناہ کو عذاب و رنج ان باتون پر بھی غور کرے۔

۶۳ — بدن سے جان کا نکلنا پھر حمل مین قیام کرنا کروڑون قالب مین پیدا ہونا ان باتون پر بھی غور کرے —

۶۴ — دینہ دھاری آدمیون کے ادھرم سے دکھ کا ہونا اور دھرم دارتھ سے لازوال سکھ کا ہونا بھی غور کرے۔

अतैजसानि पात्राणि तस्य स्युर्निर्व्रणानि च ॥ तेषामद्भिः स्मृ-
तं शौचं चमसानामिवाध्वरे ॥ ५३ ॥ अलाबुं दारुपात्रं च मृन्मयं
वैदलं तथा ॥ एतानि यतिपात्राणि मनुः स्वायंभुवोऽब्रवीत् ५४
एककालं चरेद्भैक्षं न प्रसज्जेत विस्तरे ॥ भैक्षे प्रसक्तो हि यतिर्वि-
षयेष्वपि सज्जति ॥ ५५ ॥ विधूमे सन्नमुसले व्यंगारे भुक्तवज्जने
॥ वृत्ते शरावसंपाते भिक्षां नित्यं यतिश्चरेत् ॥ ५६ ॥ अलाभे न वि
षादी स्याल्लाभे चैव न हर्षयेत् ॥ प्राणयात्रिकमात्रः स्यान्मात्रा
संगाद्विनिर्गतः ॥ ५७ ॥ अभिपूजितलाभांस्तु जुगुप्सेतैव सर्व
शः ॥ अभिपूजितलाभैश्च यतिर्मुक्तोऽपि बध्यते ॥ ५८ ॥

۵۳ - جو برتن کانسے و پیتل وغیرہ کے ہین اُنکو چھوڑ کر تونبا وغیرہ کو رکھے جنمین چھید نہو اُنکو پانی و مٹی سے پاک کرے جیسے یگیہ مین چمس نام برتن کو پاک کرتے ہین -

۵۴ - تونبی اور کاٹھ اور مٹی اور بانس کا برتن اپنے پاس رکھے صرف اتنی ہی برتن سنیاسی کے ہین ایسا منو جی نے کہا ہے -

۵۵ - صرف ایک وقت بھیکھ مانگے زیادہ بھیکھ لینے کی خواہش نکرے کیونکہ زیادہ بھیکھ لینے سے سنیاسی لذت دنیا مین گرفتار ہو جاتا ہے -

۵۶ - جسوقت گرہستھ کے گھر مین دھوان و موسل کی آواز نہو اور آگ بھی روشن نہو اور سب آدمی بھوجن کر چکے ہون اور جوٹھی پتیل وغیرہ گھر سے باہر ڈال دیگئی ہو اسوقت سنیاسی بھیکھ کیواسطے ہمیشہ جاوے -

۵۷ - بھیکھ نملے تو رنجیدہ نہو اور ملے تو خوش نہو جسمین پران کی رکشا ہو وہی کرے اور ڈنڈ وغیرہ سامگری مین اچھے برے کا خیال نکرے جیسا ملجاوے اُسی سے کارروائی کرے -

۵۸ - جو چیز پوجا سے ملے اُسکی نندا کرے یعنی اُسکو نہ لیوے اور پوجا مین خوش ہونے سے مکت روپ سنیاسی بندھن مین پھنس جاتا ہے -

क्रुध्यन्तं न प्रतिक्रुध्येदाक्रुष्टः कुशलं वदेत्॥ सप्तद्वारावकीर्णां
च न वाचमनृतां वदेत्॥४८॥ अध्यात्मरतिरासीनो निरपेक्षो
निरामिषः॥ आत्मनैव सहायेन सुखार्थी विचरेदिह॥४९॥
न चोत्पातनिमित्ताभ्यां न नक्षत्राङ्गविद्यया॥ नानुशासनवा
दाभ्यां भिक्षां लिप्सेत कर्हिचित्॥५०॥ न तापसैर्ब्राह्मणैर्वा व
योभिरपि वा श्वभिः॥ आकीर्णं भिक्षुकैर्वान्यैरागारमुपसंव्र-
जेत्॥५१॥ क्लृप्तकेशनखश्मश्रुः पात्री दण्डी कुसुम्भवान्॥
विचरेन्नियतो नित्यं सर्वभूतान्यपीडयन्॥५२॥

۴۸ - اپنے اوپر کوئی غصہ کرے تو آپ اسپر غصہ نہ کرے اور اگر اپنی برائی کرے تو بھی اپنی اچھی باتوں سے اسکو خوش کرے پانچ گیان اندری اور من اور بدھ ان ساتوں سے جو چیز گرہن کی گئی ایسی بانی کی پرورت ہے پس ان ساتوں وسیلوں سے جو مطلب حاصل کیا گیا اس مطلب سے نسبت رکھنے والی بانی کو نہ بولے بلکہ جو بانی برہم سے نسبت رکھتی ہے وہی بولے یعنی سچ بولا کرے۔

۴۹ - آتما میں پریت کرتا ہے کسی چیز کی خواہش نہ کرے اس کھانا چھوڑ دے صرف اپنی آتما ہی کو مددگار رکھا سکھ کے لئے اس لوک میں رہے

۵۰ - زلزلہ زمین آنکھ کا پھڑکنا وغیرہ نکشتر اور ہاتھ کی ریکھا انہوں کا پھل کہکر نیت شاستر کا اپدیش کرکے کبھی بھیکھ لینے کی خواہش نہ کرے۔

۵۱ - تپسوی براہمن و پرند و کتے و بھکاری یہ سب جس گھر میں ہوں اس گھر کو چھوڑ دے۔

۵۲ - بال و ناخن و مونچھ کو چھوٹا رکھے ڈنڈ و کمنڈل و پاتر کو پاس رکھے کسی جاندار کو رنج و تکلیف نہ دیوے بیٹھکر ہو کر ہمیشہ رہے۔

अनग्निरनिकेतःस्याद्ग्राममन्नार्थमाश्रयेत्॥ उपेसकोऽशं-
कुसुकोमुनिर्भावसमाहितः॥४३॥कपालंवृक्षमूलानिकु-
चैलमसहायता॥ समताचैवसर्व्वस्मिन्नेतन्मुक्तस्यलक्षण-
म्॥४४॥नाभिनन्देतमरणंनाभिनन्देतजीवितम्॥ कालमे-
वप्रतीक्षेतनिर्देशंभृतकोयथा॥४५॥दृष्टिपूतंन्यसेत्पादंव-
स्त्रपूतंजलंपिबेत्॥ सत्यपूतांवदेद्वाचंमनःपूतंसमाचरेत्॥४६
॥ अतिवादांस्तितिक्षेतनावमन्येतकंचन॥ नचेमंदेहमाश्रि-
त्यवैरंकुर्वीतकेनचित्॥४७॥

۴۳- اگن اور گھر سے علیحدہ ہوکر سب چیزون کو ترک کرکے مستقیم العقل ہوکر برہم مین چت لگائے ہوئے ان کے واسطے گانون کا آسرا کرے۔

۴۴- مکت کا لکشن یہ ہے کہ بھیکھ کے واسطے مٹی کا برتن رکھے درخت کی جڑ مین سووے اور ایسے کپڑے رکھے کہ جو کسی کام کے لائق نہون اور کسی سے مدد نہ چاہے اور سب جاندارون کو برابر سمجھے۔

۴۵- موت یا زندگی ان دونون مین سے کسی کی خواہش نکرے صرف وقت ہی کا خیال رکھے جیسے نوکر اپنے مالک کے حکم کا خیال رکھتا ہے۔

۴۶- بال اور ہڈی سے علیحدہ رہنے کے لیئے دیکھکر زمین پر پانون رکھے اور چھوٹے چھوٹے جاندارون کی حفاظت کے لیئے پانی چھان کر پیوے اور جو باتین سچ کرکے پاک ہین انکو بولے اور من کو سنکلپ سے خالی کرکے ہر وقت پوتر آچار رہے۔

۴۷- لوگون کی بیہودہ باتون کی برداشت کرے اور کسی کا اپمان (توہین) نکرے اور نہ کسی سے دشمنی کرے۔

अनधीत्य द्विजो वेदाननुत्पाद्य तथा सुतान्॥ अनिष्ट्वा चैव य-
ज्ञैश्च मोक्षमिच्छन्व्रजत्यधः॥ ३७॥ प्राजापत्यां निरूप्येष्टिं सर्व-
वेदसदक्षिणाम्॥ आत्मन्यग्नीन्समारोप्य ब्राह्मणः प्रव्रजे-
द्गृहात्॥ ३८॥ यो दत्त्वा सर्वभूतेभ्यः प्रव्रजत्यभयं गृहात्॥ त-
स्य तेजोमया लोका भवन्ति ब्रह्मवादिनः॥ ३९॥ यस्मादण्व-
पि भूतानां द्विजान्नोत्पद्यते भयम्॥ तस्य देहाद्विमुक्तस्य भयं-
नास्ति कुतश्चन॥ ४०॥ आगारादभिनिष्क्रान्तः पवित्रोपचि-
तो मुनिः॥ समुपोढेषु कामेषु निरपेक्षः परिव्रजेत्॥ ४१॥ ए-
क एव चरेन्नित्यं सिद्ध्यर्थमसहायवान्॥ सिद्धिमेकस्य सम्प-
श्यन्न जहाति न हीयते॥ ४२॥

۳۷ - جو براہمن کشتری ویشیہ وید کو نہ پڑھکر اور دھرم سے پتر نہ پیدا کرکے اور یگیہ کا انشٹھان نہ کرکے موکش کی اچھا کرتا ہے وہ نرک مین جاتا ہے۔

۳۸ - پرجاپت دیوتا کی یگیہ کرکے سب کو دکشنا دے کر سب اگن کو اپنی آتما مین رکھکر براہمن گھر سے نکلے یعنے سنیاس دھارن کرے

۳۹ - جو آدمی وید کا پڑھنے والا تمام جانداروں کو بیخوفی دے کر گھر سے باہر نکلتا ہے (یعنے سنیاس دھارن کرتا ہے) اسکو تیج روپ لوک ملتا ہے۔

۴۰ - جس براہمن سے سب جانداروں کو تھوڑا بھی ڈر نہین ہے اسکو پرلوک مین کسی سے ڈر نہین ہوتا۔

۴۱ - گھر سے نکلا ہوا اور طہارت سے ترقی پایا ہوا اور بچار کرتا ہوا اور دوسرے کی دی ہوئی ان وغیرہ چیزون مین اچھا نرکھنے والا سنیاس دھارن کرے۔

۴۲ - کسی کی مدد کی خواہش نکرے ہمیشہ اکیلا رہے سدھ کے لئے ایک ہی کو سدھ ہوتی ہے اسبات کو دیکھکر کسیکو تیاگ نہین کرتا اور اسکو بھی کوئی تیاگ نہین کرتا۔

अपराजितांवास्थायब्रजेद्दिशमजिह्मगः॥ आनिपाताच्छ-
रीरस्ययुक्तोवार्यनिलाशनः॥ ३१॥ आसांमहर्षिचर्याणांत्य
क्त्वान्यतमयातनुम्॥ वीतशोकभयोविप्रोब्रह्मलोकेमहीय-
ते॥ ३२॥ वनेषुचविहृत्यैवंतृतीयंभागमायुषः॥ चतुर्थमायु
षोभागंत्यक्त्वासंगान्परिव्रजे॥ ३३॥ आश्रमादाश्रमंगत्वाहु
तहोमोजितेन्द्रियः॥ भिक्षाबलिपरिश्रान्तःप्रव्रजन्प्रेतवर्द्धते
॥ ३४॥ ऋणानित्रीण्यपाकृत्यमनोमोक्षेनिवेशयेत्॥ अ-
नपाकृत्यमोक्षन्तुसेवमानोव्रजत्यधः॥ ३५॥ अधीत्यविधि
वद्वेदान्पुत्रांश्चोत्पाद्यधर्मतः॥ इष्ट्वाचशक्तितोयज्ञैर्मनोमो-
क्षेनिवेशयेत्॥ ३६॥

۳۱- خواہ پانی و ہوا کو کھاتا ہوا ایسان کونہ یعنے پورب واتر گوشہ کی طرف سیدھا چلا جاے
جبتک شریر نہ چھوٹے-

۳۲- یہ سب آچرن بڑے بڑے رشیون نے کہا ہے انمین کسی آچرن سے شریر کا تیاگ کرکے شوک
اور ڈر کو چھوڑکر برہم لوک مین پوجت ہوتا ہے-

۳۳- اسطرح سے عمر کا تیسرا حصہ جنگل مین آخر کرکے سنگھ کو چھوڑکر عمر کے حصہ چہارم مین
سنیاس کو دھارن کرے-

۳۴- اندریون کو جیت کر ہون کو تمام کر ایک آشرم سے دوسرے آشرم مین جاکر بھیکھ اور بل
کرم سے تھکا ہو سنیاس لیکر پرلوک مین برہم پد کو پاتا ہے-

۳۵- تینون رن یعنی قرض جسکو دیورن پتر رن رش رن کہتے ہین ادا کرکے دلکو موکش
مین لگا دے بدون ادا کرنے ان تینون قرضون کے جو موکش کا سیون کرتا ہے وہ نرک مین جاتا

۳۶- برہمن سے وید کو پڑھکر دھرم سے پتر پیدا کرکے اپنے مقدور کے موافق یگیہ کو کرتا ہوا
موکش مین دل لگا دے-

अग्नीनात्मनि वैतानान्समारोप्य यथाविधि ॥ अनग्निरनिकेतः स्यान्मुनिर्मूलफलाशनः ॥ २५ ॥ अप्रयत्नः सुखार्थेषु ब्रह्मचारी धराशयः ॥ शरणेष्वममश्चैव वृक्षमूलनिकेतनः ॥ २६ ॥ तापसेष्वेव विप्रेषु यात्रिकं भैक्षमाहरेत् ॥ गृहमेधिषु चान्येषु द्विजेषु वनवासिषु ॥ २७ ॥ ग्रामादाहृत्य वाश्नीयादष्टौ ग्रासान्वने वसन् ॥ प्रतिगृह्य पुटेनैव पाणिना शकलेन वा ॥ २८ ॥ एताश्चान्याश्च सेवेत दीक्षा विप्रो वने वसन् ॥ विविधाश्चौपनिषदीरात्मसंसिद्धये श्रुतीः ॥ २९ ॥ ऋषिभिर्ब्राह्मणैश्चैव गृहस्थैरेव सेविताः ॥ विद्यातपोविवृद्ध्यर्थं शरीरस्य च शुद्धये ॥ ३० ॥

۲۵ - بدھ سے اگن ہوتر کی آگ کو اپنی آتما مین قائم کرے بعد اسکے اگن اور استھان سے علیحدہ ہوکر مول و پھل کھاتا ہوا شاستر کو بچارے۔

۲۶ - سُکھ کے واسطے کوشش و تدبیر نکرے برہم چاری ہوکر زمین پر سووے درخت کی جڑ مین قیام کرے اور قیامگاہ سے محبت نہ رکھے۔

۲۷ - تپسوی براہمن سے بھیکھ مانگے اور جو گرہستھ بن باسی دوِج ہین اُن سے بھی بھیکھ مانگے۔

۲۸ - خواہ گانون سے بھیکھ مانگ کر آٹھ لقمہ کھاوے جنگل مین رہکر دونا یا ہاتھ یا مٹی کے برتن کے ٹکڑے مین بھیکھ لیوے۔

۲۹ - جنگل مین رہکر اس دیکشا کا اور دوسری دیکشا کا بھی سیون کرے اور طرح طرح کے اپنشدون مین جو وید کے منتر ہین اُنکو آتما کی بھلی پرکار سدھ ہونے کے لئے پڑھے اور سمجھے۔

۳۰ - بدن کے شدھ ہونے اور تپ بڑھنے کے واسطے اس وِدیا کا سیون کرے جس وِدیا کا سیون رِشی اور گرہستھ براہمنون نے کیا ہے۔

नक्तंचान्नंसमश्नीयाद्दिवावाहृत्यशक्तितः ॥ चतुर्थकालिको
वास्यात्स्याद्वाप्यष्टमकालिकः ॥ १९ ॥ चान्द्रायणविधानैर्वा
शुक्लकृष्णेचवर्त्तयेत् ॥ पक्षान्तयोर्वाप्यश्नीयाद्यवागूंक्वथि
तांसकृत् ॥ २० ॥ पुष्पमूलफलैर्वापिकेवलैर्वर्त्तयेत्सदा ॥ का-
लपक्वैःस्वयंशीर्णैर्वैखानसमतेस्थितः ॥ २१ ॥ भूमौविपरिव-
र्त्तेततिष्ठेद्वाप्रपदैर्दिनम् ॥ स्थानासनाभ्यांविहरेत्सवनेषूपय-
न्नपः ॥ २२ ॥ ग्रीष्मेपंचतपस्तुस्याद्वर्षास्वभ्रावकाशिकः ॥ आ-
र्द्रवासास्तुहेमन्तेक्रमशोवर्द्धयंस्तपः ॥ २३ ॥ उपस्पृशंस्त्रिषव-
णांपितॄन्देवांश्चतर्पयेत् ॥ तपश्चरंश्चोग्रतरंशोषयेद्देहमात्मनः
॥ २४ ॥

۱۹ - اپنی طاقت کے موافق دن مین لاکر رات کو بھوجن کرے یا ایک دن اُپاس کرے دوسرے دن ایک دفعہ بھوجن کرے یا تین دن اُپاس کرے چوتھے دن ایک دفعہ بھوجن کرے

۲۰ - چاندراین برت کو کرے خواہ اماوسیا خواہ پورنماشی کے دن ایک دفعہ جو کی لپسی کھاوے -

۲۱ - جو پھول پھل مول بسبب گذرنے ایام کے پختہ ہوکر خود بخود گرے ہون انکو کھاکر زندگی بسر کرے -

۲۲ - بان پرستھ کے مت مین رہکر صرف زمین ہی پر لوٹا کرے یا پانون کے اگلے حصہ کے زور سے تمام دن کھڑا رہے اور استھان اور آسن مین بہار کرے تینون کال یعنی صبح دوپہر شام کو اشنان کرے -

۲۳ - آہستہ آہستہ تپ کو بڑھاتا ہوا گرمی مین پنچ اگن تاپے برسات مین مکان بے پردہ مین رہے یعنی کھلے میدان مین رہے جاڑے مین گیلا کپڑا پہنے رہے -

۲۴ - تینون کال اشنان کرکے دیوتا اور پترون کا ترپن کرے بڑے بھاری تپ کو کرتا ہوا بدن کو سکھاوے

स्थलजौदकशाकानि पुष्पमूलफलानि च॥ मेध्यवृक्षोद्भवा
न्यद्यात्स्नेहांश्च फलसंभवान्॥ १३॥ वर्जयेन्मधु मांसं च भौमा
नि कवकानि च॥ भूस्तृणं शिगुकं चैव श्लेष्मातकफलानि च॥
१४॥ त्यजेदाश्वयुजे मासि मुन्यन्नं पूर्वसंचितम्॥ जीर्णानि चै
व वासांसि शाकमूलफलानि च॥ १५॥ न फालकृष्टमश्नीया
दुत्सृष्टमपि केनचित्॥ न ग्रामजातान्यार्त्तोऽपि मूलानि च फ-
लानि च॥ १६॥ अग्निपक्वाशनो वा स्यात्कालपक्वभुगेव वा।
अश्मकुट्टो भवेद्वापि दन्तोलूखलिकोऽपि वा॥ १७॥ सद्यः प्र-
क्षालको वा स्यान्माससंचयिकोऽपि वा॥ षण्माससनिचयो-
वा स्यात्समानिचय एव वा॥ १८॥

۱۳- زمین و پانی و پاک درخت سے جو ساگ مول پھول و پھل پیدا ہوتے ہیں۔ انکو بھوجن کرے اور پھل سے پیدا ہوئے تیل کو بھی بھوجن کرے۔

۱۴- شراب و مانس و زمین سے پیدا ہوا چھتر اکار و بھوستڑن جو مالوہ دیش میں مشہور ہے و سگرساگ جو باہلیک دیش میں مشہور ہے و بھیڑا ان سب کا کھانا ترک کرے۔

۱۵- منیوں کا ان جو جوڑا ہے و پارچہ کہنہ و بوسیدہ و ساگ مول پھل ان سب کو ترک کرے کنوار کے مہینے میں۔

۱۶- جو چیز ہل کے ذریعہ سے پیدا ہوئی اور جو چیز کھیت کے متصل ہو اگرچہ اسکو مالک نے ترک بھی کردیا ہو تو بھی اوسکو بھوجن نہ کرے اور دکھی ہو تو بھی جو پھل مول بدون ہل چلائے گانوں کے اندر پیدا ہوتے ہوں انکو نہ کھاوے۔

۱۷- جو چیز اگ کے ذریعہ سے یا زمانہ پاکر پختہ ہوئی ہو اوسکو بھوجن کرے پتھر سے کوٹ کر دانتوں کی اوکھلی بناکر بھوجن کرے۔

۱۸- ایکدن کے بھوجن کے لائق چیز کو رکھے یا ایک مہینہ یا چھ مہینہ یا ایکسال تک کے بھوجن کے لائق چیز کو رکھے۔

यद्भक्ष्यंस्यात्ततोदद्याद्बलिंभिक्षांचशक्तितः॥ अम्मूलफल-
भिक्षाभिरर्चयेदाश्रमागतान्॥७॥स्वाध्यायेनित्ययुक्तःस्या-
द्दान्तोमैत्रःसमाहितः॥ दातानित्यमनादातासर्वभूतानुकम्प-
कः॥८॥वैतानिकंचजुहुयादग्निहोत्रंयथाविधि॥ दर्शमस्क-
न्दयन्पर्वपौर्णमासंचयोगतः॥ ९॥ ऋक्षेष्ट्याग्रयणंचैव
चातुर्मास्यानिचाहरेत्॥ उत्तरायणंचक्रमशोदाक्षस्यायन
मेवच॥ १०॥वासन्तशारदैर्मेध्यैर्मुन्यन्नैःस्वयमाहृतैः॥पुरो-
डाशांश्चरूंश्चैवविधिवन्निर्वपेत्पृथक्॥ ११॥ देवताभ्यस्तु त-
द्धुत्वावन्यंमेध्यतरंहविः॥ शेषमात्मनियुञ्जीतलवणंचस्वयं
कृतम्॥ १२॥

٧ – جس چیز کو کھاوے اسی چیز سے بل کرم کرے اور اسی چیز کو حسب مقدور اپنے بھیکھ دیوے اور اسکے قیام گاہ پر جو کوئی آوے تو مول پھل بھیکھ سے اسکا پوجن کرے۔

٨ – ہر روز وید پڑھے چت کو قائم رکھے سب کا دوست ہو کر رہے سردی و گرمی و کام و کرودھ وغیرہ کی برداشت کرے کسی سے کچھ نہ لیوے سب جیون پر دیا رکھے۔

٩ – ویدوک شاستر سے اگنی ہوتر کرے اور درشن پورنماش یگیہ کرے۔

١٠ – نکشتر یگیہ اگرین چاترماس اتراین دکشناین کرمون کو کرے۔

١١ – بسنت اور جاڑے میں جو پاک غلہ قابل خورش منیشہ ران پیدا ہوتا ہے اسکو خود لا کر اس سے بطریق شاستر علیحدہ علیحدہ پروڈاس چرو دیوتاؤن کو یگیہ سدھ کے لیے دیوے۔

١٢ – نہایت پاک ہنیہ دیوتاؤن کو دے کر جو بچے اسکو آپ بھوجن کرے اپنے بنائے ہوئے نمک کو بھوجن کرے۔

एवंगृहाश्रमे स्थित्वा विधिवत्स्नातको द्विजः ॥ वने वसेत्तु नियतो
यथावद्विजितेन्द्रियः ॥ १ ॥ गृहस्थस्तु यदा पश्येद्वलीपलित
मात्मनः ॥ अपत्यस्यैव चापत्यं तदाऽरण्यं समाश्रयेत् ॥ २ ॥ सं
त्यज्य ग्राम्यमाहारं सर्व्वं चैव परिच्छदम् ॥ पुत्रेषु भार्य्यां निक्षि
प्य वनं गच्छेत्सहैव वा ॥ ३ ॥ अग्निहोत्रं समादाय गृह्यं चाग्नि
परिच्छदम् ॥ ग्रामादरण्यं निःसृत्य निवसेन्नियतेन्द्रियः ॥ ४
॥ मुन्यन्नैर्विविधैर्मेध्यैः शाकमूलफलेन वा ॥ एतानेव महा
यज्ञान्निर्वपेद्विधिपूर्व्वकम् ॥ ५ ॥ वसीत चर्म्म चीरं वा सायं-
स्नायात्प्रगे तथा ॥ जटाश्च बिभृयान्नित्यं श्मश्रुलोमनखानि
च ॥ ६ ॥

۱ - اس طریق سے گرہستھ آشرم مین رہکر اسناتک دوج بیفکر حواس پر غالب رہکر جنگلمین واسطے کرنے عبادت کے مقیم ہووے -

۲ - جب گرہستھ آدمی آپکو حالت پیری مین دیکھے اور بیٹی کے بیٹے کو دیکھے تب جنگلمین قیام کرے -

۳ - گانون کے اہار کو اور گھر کی سامگری کو ترک کرکے اور عورت کو بیٹے کے سپرد کرکے جنگل مین جاوے خواہ مع عورت کے جنگل مین جاوے -

۴ - اگنی ہوتر کو اور مع سامگری کے گھر کی اگنی کو لیکر اور اندریون کو روک کر گانون سے نکلکر جنگلمین رہے -

۵ - انواع و اقسام کے منیون کے ان اور پوتر شاک مول پھل انکون سے شاستر کے موافق پنج مہا یگیو نکو کرے -

۶ - چمڑا یا کپڑے کا ٹکڑا پہنکر صبح و شام اشنان کرے جٹا و مونچھ و بال اور ناخن کو بڑھا دے یعنی حجامت نہ بنواوے -

अनेननारीवृत्तेनमनोवाग्देहसंयता॥ इहाग्र्यांकीर्त्तिमाप्नोति
पतिलोकंपरत्रच॥ १६६॥ एवंवृत्तांसवर्णांस्त्रींद्विजातिःपूर्व
मारिणीम्॥ दाहयेदग्निहोत्रेणयज्ञपात्रैश्चधर्मवित्॥१६७
भार्यायैपूर्वमारिण्यैदत्वाग्नीनन्त्यकर्मणि॥पुनर्दारक्रियांकु-
र्यात्पुनराधानमेवच॥ १६८॥ अनेनविधिनानित्यंपंचयज्ञान्न
हापयेत्॥ द्वितीयमायुषोभागंकृतदारोगृहेवसेत्॥ १६९॥

इतिमानवेधर्मशास्त्रेभृगुप्रोक्तायांसंहितायां पंचमोऽध्यायः ५

۱۶۶ - اسطرح دل و زبان و جسم کو قابو مین کرکے اِس لوک مین بڑی نیکنامی اور پرلوک مین پت لوک کو پاتی ہے —

۱۶۷ - دھرم کے جاننے والے براہمن و کشتری و ویشیہ ایسی اپنی ذات کی استری کے مرجانے مین اسکا داہ اگن ہوتر کی آگ اور یگیہ پاتر سے کرین -

۱۶۸ - اسکے بعد عمل آخری کرنیکے دوسرا بواہ کرین اور اگن کو استھاپن کرین -

۱۶۹ - اِس طرح سے ہمیشہ پنچ یگیہ کو کرین اُنکو کبھی ترک نکرین اور عمر کے دوسرے حصّہ تک بواہ کرکے گھر مین رہین -

منو جی کا دھرم شاستر جی کی سنگھتا کا پانچوان ادھیاے سماپت ہوا

मृतेभर्त्तरिसाध्वीस्त्रीब्रह्मचर्येव्यवस्थिता।।स्वर्गंगच्छत्यपु-
त्रापियथातेब्रह्मचारिणः।।१६०।। अपत्यलोभाद्यातुस्त्री-
भर्त्तारमतिवर्तते।।सेहनिन्दामवाप्नोतिपतिलोकाच्चहीयते
।।१६१।।नान्योत्पन्नाप्रजास्तीहनचाप्यन्यपरिग्रहे।।नद्वि-
तीयश्चसाध्वीनांक्वचिद्भर्त्तोपदिश्यते।।१६२।।पतिंहित्वाप-
कृष्टंस्वमुत्कृष्टंयानिषेवते।।निन्द्यैवसाभवेल्लोकेपरपूर्वेति
चोच्यते।।१६३।।व्यभिचारात्तुभर्त्तुःस्त्रीलोकेप्राप्नोतिनिन्द्य
ताम्।।शृगालयोनिंप्राप्नोतिपापरोगैश्चपीड्यते।।१६४।।प
तिंयानाभिचरतिमनोवाग्देहसंयता।।साभर्तृलोकमाप्नोति
सद्भिःसाध्वीतिचोच्यते।।१६५।।

۱۶۰ - بعد وفات شوہر کے پت برتا استری برہم چرج میں قائم رہے تو بدون ہونے اولاد کے سورگ میں جاتی ہے جیسے کمار برہم چاری سورگ کو گئے -

۱۶۱ - جو عورت اولاد کے ہونے کی طمع سے دوسرے پت سے جماع کرتی ہے وہ دنیا میں بدنام ہوتی ہے اور عاقبت میں پت لوک یعنی عالم شوہر کو نہیں پاتی -

۱۶۲ - دوسرے پت سے جو اولاد پیدا ہوتی ہے وہ شاستر کی موافق اپنی اولاد نہیں کہلاتی کیونکہ پت برتا استری کو شاستر میں دوسرا پت نہیں لکھا ہے -

۱۶۳ - جو عورت اپنے کم ہنر والے شوہر کو چھوڑ کر دوسرے زیادہ ہنر والے شوہر کو اختیار کرتی ہے وہ دنیا میں مکروہ اور دو شوہر والی کہلاتی ہے -

۱۶۴ - دوسرے شوہر سے جماع کرنے سے عورت دنیا میں بدنام ہوتی ہے اور گیدڑ کا جنم پاتی ہے اور پاپ روگوں سے دکھی ہوتی ہے -

۱۶۵ - جو عورت دوسرے شوہر سے جماع نہیں کرتی اور دل و زبان و جسم کو اپنے قابو میں رکھتی ہے وہ پرلوک میں پت لوک کو پاتی ہے اور اچھے لوگ اسکو سادھو کہتے ہیں -

नास्तिस्त्रीणांपृथग्यज्ञोनव्रतंनाप्युपोषितम्॥ पतिंशुश्रूषतेयेनतेनस्वर्गेमहीयते॥१५५॥ पाणिग्राहस्यसाध्वीस्त्री-जीवतोवामृतस्यवा॥ पतिलोकमभीप्सन्तीनाचरेत्किंचिदप्रियम्॥१५६॥ कामन्तुक्षपयेद्देहंपुष्पमूलफलैःशुभैः॥ नतु-नामापिगृह्णीयात्पत्यौप्रेतेपरस्यतु॥१५७॥ आसीतामरणात्क्षान्तानियताब्रह्मचारिणी॥ योधर्मएकपत्नीनांकाङ्क्षन्तीतमनुत्तमम्॥१५८॥ अनेकानिसहस्राणिकुमारब्रह्मचारिणाम्॥ दिवंगतानिविप्राणामकृत्वाकुलसन्ततिम्॥१५९॥

۱۵۵- عورتون کے واسطے یگیہ اور برت اور اُپاس علیحدہ نہیں ہے صرف شوہر کی خدمتگذاری سے سورگ لوک مین پہونچکر درجہ اعلےٰ پاتی ہے۔

۱۵۶- پت برتا استری پت کے لوک مین جانے کی خواہش رکھنے والی بحالت زندگی یا وفات اپنے شوہر کے کوئی کام ایسا نہ کرے جو اُسکے شوہر کے خلاف مرضی ہو۔

۱۵۷- بعد وفات اپنے شوہر کے دوسرے شوہر کا نام بھی نہ لیوے اچھے مول پھل پھول سے حسب خواہش تھوڑا کھا کر صحیح البدن رہکر اوقات بسر کرے۔

۱۵۸- جس استری کا ایک ہی پت ہے وہ پت برتا دھرم کی خواہش کرتی ہوئی اپنے مرنے دم تک نیم سے برہم چاری ہوکر لاغر بدنی سے زندگی بسر کرے۔

۱۵۹- اگر کہو کہ بدون اولاد کے سورگ نہیں ملتا اسلئے اولاد کے واسطے دوسرا شوہر کرنا چاہئے اسکا جواب یہ ہے کہ کئی ہزار کمار برہم چاری برہمن بدون ہوئے اولاد کے سورگ کو چلے گئے اس بات کو سمجھکر بدون اولاد کے نیم سے رہے۔

* پت برتا استری اس عورت کو کہتے ہین جو کوئی کام خلاف مرضی شوہر کے نہ کرے اور شوہر کو مثل پرمیشور کے سمجھکر اُسی کی سیوا اور بھگت کرتی رہے۔

पित्राभर्त्रासुतैर्वापिनेच्छेद्विरहमात्मनः॥ एषांहिविरहेण-
स्त्रीगर्ह्येकुर्यादुभेकुले॥१४९॥ सदाप्रहृष्टयाभाव्यंगृहका-
र्येषुदक्षया॥ सुसंस्कृतोपस्करयाव्ययेचामुक्तहस्तया॥
१५०॥ यस्मैदद्यात्पितात्वेनांभ्रातावानुमतेपितुः॥ तंशुश्रूषे-
तजीवन्तंसंस्थितंचनलंघयेत्॥१५१॥ मंगलार्थंस्वस्त्ययनं-
यज्ञश्चासांप्रजापतेः॥ प्रयुज्यतेविवाहेतुप्रदानंस्वाम्यकार-
णम्॥१५२॥ अनृतावृतुकालेचमन्त्रसंस्कारकृत्पतिः॥ सु-
खस्यनित्यंदातेहपरलोकेचयोषितः॥१५३॥ विशीलःका-
मवृत्तोवागुणैर्वापरिवर्जितः॥ उपचर्यःस्त्रियासाध्व्यासततं
देववत्पतिः॥१५४॥

۱۴۹ — باپ اور بھائی اور بیٹا ان تینون سے علیحدہ ہونے کی خواہش نہ کرے انھون سے علیحدہ ہونے مین استری دونون کل کو بدنامی دلاتی ہے —

۱۵۰ — ہر وقت خوشدل اور امور خانگی مین مستعد رہے گھر کی چیزون کو اچھی طرح درست رکھے فضول خرچ نہ ہووے —

۱۵۱ — باپ جسکے ساتھ شادی کردے یا باپ کے حکم سے بھائی جسکے ساتھ شادی کردے اسکی خدمت مین رہے اور بعد وفات شوہر کے کسی مرد غیر سے صحبت کرے —

۱۵۲ — بواہ مین شانت منتر پڑھنا اور شری پرجاپتی کیواسطے یگیہ کرنا یہ دونون استریونکے آنند کیواسطے ہین اور وان شوہر کے مالک ہونیکا باعث ہے —

۱۵۳ — رت کال مین یا غیر رت کال مین منتر سنسکار کرنیوالا شوہر اس لوک اور پرلوک مین استریونکو سکھ دینے والا ہے —

۱۵۴ — اگرچہ شوہر بے مروت ہو اور دوسری عورت کے ساتھ محبت رکھتا ہو یا بے ہنر ہو تو بھی پت برتا استری ہمیشہ اسکی سیوا دیوتا کی طرح کرے

उच्छिष्टेनतुसंस्पृष्टोद्रव्यहस्तःकथंचन॥ अनिधायैवतद्द्रव्य
माचान्तःशुचितामियात्॥१४३॥वान्तोविरिक्तःस्नात्वातुघृ
तप्राशनमाचरेत॥ आचामेदेवभुक्त्वान्नंस्नानंमैथुनिनःस्मृ
तम्॥१४४॥सुप्त्वाक्षुत्वाचभुक्त्वाचनिष्ठीव्योक्त्वानृतानिच
॥पीत्वापोऽध्येष्यमाणश्च आचामेत्प्रयतोऽपिसन्॥१४५॥
एषशौचविधिःकृत्स्नोद्रव्यशुद्धिस्तथैवच॥उक्तोवःसर्ववर्
णानांस्त्रीणांधर्मान्निबोधत॥१४६॥बालयावायुवत्यावा
वृद्धयावापियोषिता॥नस्वातंत्र्येणकर्त्तव्यंकिंचित्कार्यं
गृहेष्वपि॥१४७॥बाल्येपितुर्वशेतिष्ठेत्पाणिग्राहस्ययौव
ने॥पुत्राणांभर्त्तरिप्रेतेनभजेत्स्त्रीस्वतंत्रताम्॥१४८॥

۱۴۳-چیز کو ہاتھ مین لیئے ہوئے آدمی جو جھوٹے آدمی سے چھو جاے تو اُس چیز کو لیے ہوئے ہی آچمن کرنے سے پاک ہو جاتا ہے-

۱۴۴-قے کرنیوالا اور دستون کی بیماری والا اسنان کرکے گھی کھاے اور اَن وغیرہ بھوجن کرکے آچمن کرے اور جماع کرکے غسل کرے-

۱۴۵-سوے کر اور چھینک کر اور بھوجن کرکے اور کھکھار کر اور جھوٹھ بول کر اور پانی پی کر پاک ہوکے پر بھی آچمن کرے-

۱۴۶-بھرگ جی کہتے ہین کہ ہے رشی لوگو آپ سے سب ورنون کی پاکی کے طریق کو کہا اور چیزون کی پاکی کو بھی کہا اب اِسکے بعد استریون کے دھرم کہتے ہین-

۱۴۷-عورت نابالغ ہو یا جوان یا بڈھی ہو گھر مین کوئی کام خود مختاری سے نہ کرے

۱۴۸-عورت لڑکپن مین اپنے باپ کے اختیار مین رہے اور جوانی مین اپنے شوہر کے اختیار مین اور بعد وفات شوہر کے اپنے بیٹون کے اختیار مین رہے خود مختار ہوکر کبھی نہ رہے-

स्त च्छौचं गृहस्थानां द्विगुणां ब्रह्मचारिणाम्॥ त्रिगुणां स्याद्व-
नस्थानां यतीनां तु चतुर्गुणाम्॥ १३७॥ कृत्वा मूत्रं पुरीषं वा ख-
न्याचान्त उपस्पृशेत्॥ वेदमध्येष्यमाणश्च अन्नमश्नंश्च सर्वदा
॥ १३८ ॥ त्रिराचामेदपः पूर्वं द्विः प्रमृज्यात्ततो मुखम्॥ शारीरं
शौचमिच्छन्हि स्त्री शूद्रस्तु सकृत्सकृत्॥ १३९॥ शूद्राणां मा-
सिकं कार्यं वपनं न्यायवर्तिनाम्॥ वैश्यवच्छौचकल्पश्च द्वि-
जोच्छिष्टं च भोजनम्॥ १४०॥ नोच्छिष्टं कुर्वते मुख्या विप्रुषोऽ
ङ्गे पतन्ति याः॥ न श्मश्रूणि गतान्यास्यं न दन्तान्तरधिष्ठितम्॥
१४१॥ स्पृशन्ति बिन्दवः पादौ य आचामयतः परान्॥ भौमिकै-
स्ते समा ज्ञेया न तैरप्रयतो भवेत्॥ १४२॥

۱۳۷- یہ شوچ یعنے طہارت گرہستھ لوگون کے واسطے ہے اور برہم چاریون کو دوچند اور بان پرستھ یعنے جنگل مین عبادت کرنیوالون کو سہ چند اور سنیاسیون کو چہار چند کرنا چاہیے۔

۱۳۸- پیشاب و پاخانہ کرکے ہاتھ پاؤن دھوکر آچمن کرکے اندریون کو چھووے اور وقت تناول طعام و وید خوانی کے بھی آچمن کرکے اندریون کو چھووے۔

۱۳۹- بدن کی طہارت کیواسطے تین دفعہ پہلے آچمن کرے تب دو دفعہ منھ دھووے اور استری اور شودر صرف ایک ہی دفعہ منھ دھووین اور آچمن کرین۔

۱۴۰- نیاے سے رہنے والے شودر کو مہینے کے اندر ایکبار حجامت کرانا چاہیے اوسکی طہارت ویشیہ کے مانند ہے اور براہمن کا پس خوردہ اوسکی غذا ہے۔

۱۴۱- تھوک کے بوند بدن کے کسی عضو پر گرجائین اور موچھ کا بال منھ مین جاتا رہے اور دانت مین جو چیز لگی ہو یہ سب پاک ہین۔

۱۴۲- کوئی شخص کسی کو آچمن کراتا ہو اور آچمن کرنیوالے کے منھ سے پانی کا بوند زمین پر گر کر آچمن کرنیوالے کے پاؤن پر پڑے تو وہ بوند آب زمین کے برابر ہے اوس سے ناپاکی نہین ہوتی۔

श्वभिर्हतस्ययन्मांसंशुचितन्मनुरब्रवीत्॥ क्रव्याद्भिश्चहत
स्यान्यैश्चाण्डालाद्यैश्चदस्युभिः॥१३१॥ऊर्द्ध्वंनाभेर्यानिखा-
नितानिमेध्यानिसर्वशः॥ यान्यधस्तान्यमेध्यानिदेहाच्चैव
मलाश्च्युताः॥१३२॥ मक्षिकाविप्रुषश्छायागौरश्वःसूर्यर
श्मयः॥ रजोभूर्वायुरग्निश्चस्पर्शेमेध्यानिनिर्दिशेत्॥१३३॥
विण्मूत्रोत्सर्गशुद्ध्यर्थंमृद्वार्य्यादेयमर्थवत्॥ दैहिकानांमला
नांचशुद्धिषुद्वादशस्वपि॥१३४॥वसाशुक्रमसृङ्मज्जामूत्र
विड्घ्राणकर्णविट्॥ श्लेष्माश्रुदूषिकास्वेदोद्वादशैतेनृणां-
मलाः॥१३५॥एकालिङ्गेगुदेतिस्रस्तथैकत्रकरेदश॥उभयोः
सप्तदातव्यामृदःशुद्धिमभीप्सता॥१३६॥

۱۳۱۔ کتّے و شیر باز و صیاد و غیرہ و ہرن کے مارنے سے اوقات بسر کرنیوالے ان سب سے جو جانور کھانیکے قابل مار گیا اوسکا گوشت سراد و غیرہ اتفعہ بھوجن مین پاک ہے منو جی نے کہا ہے

۱۳۲۔ ناف سے اوپر کے تمام اعضا پاک ہین اور ناف سے نیچے کے تمام اعضا ناپاک ہین اور جو فضلہ بدن سے علیحدہ ہو وہ بھی ناپاک ہے۔

۱۳۳۔ مکھی و قطرۂ آب و سایہ و گئو و گھوڑا و سورج کی کرن و دھول و زمین و ہوا و آگ یہ سب چھونے مین پاک ہین

۱۳۴۔ غلیظ و پیشاب و دیگر بارہو فضلون کو جبکہ وہ جسم سے علیحدہ ہو کر گرے ہون چھو کر پانی اور مٹی بقدر ضرورت لگا کر دھونے سے پاک ہوتا ہے۔

۱۳۵۔ آدمی کے جسم مین یہ بارہ مل یعنے فضلے ہوتے ہین۔ چربی[۱] بیج[۲]۔ خون[۳] مجا[۴] پیشاب[۵] غلیظ[۶] ناک[۷]۔ کھونٹ[۸]۔ کھنکھار[۹]۔ آنسو[۱۰]۔ کیچڑ[۱۱] پسینا[۱۲]۔

۱۳۶۔ مٹی کے وسیلے سے پاکی کی خواہش کرنیوالا آدمی ایک بار مٹی مقام پیشاب پر اور پانچ دفعہ مقام پاخانہ پر اور دس دفعہ بائین ہاتھ مین اور سات دفعہ دونون ہاتھ مین لگاوے۔

पक्षिजग्धं गवा घ्रातमवधूतमवक्षुतम् ॥ दूषितं केशकीटैश्च
मृत्प्रक्षेपेण शुध्यति ॥ १२५ ॥ यावन्नापैत्यमेध्याक्ताद्गन्धो ले-
पश्च तत्कृतः ॥ तावन्मृद्वारि चादेयं सर्वासु द्रव्यशुद्धिषु ॥ १२६
॥ त्रीणि देवाः पवित्राणि ब्राह्मणानामकल्पयन् ॥ अदृष्टम-
द्भिर्निर्णिक्तं यच्च वाचा प्रशस्यते ॥ १२७ ॥ आपः शुद्धा भूमि-
गता वैतृष्ण्यं यासु गोर्भवेत् ॥ अव्याप्ताश्चेदमेध्येन गन्धव-
र्णरसान्विताः ॥ १२८ ॥ नित्यं शुद्धः कारुहस्तः पण्ये यच्च प्र-
सारितम् ॥ ब्रह्मचारिगतं भैक्ष्यं नित्यं मेध्यमिति स्थितिः १२९
॥ नित्यमास्यं शुचि स्त्रीणां शकुनिः फलपातने ॥ प्रस्रवे च शु-
चिर्वत्सः श्वा मृगग्रहणे शुचिः ॥ १३० ॥

۱۲۵۔ کھانے کے لائق پرند سے جس چیز کا ایک حصہ چھوٹا ہو گیا ہو اور جس چیز کو گئو نے سونگھ لیا ہو اور جو چیز پاؤں لگنے سے کانپنے لگے اور جس چیز پر چھینک پڑی ہو اور جس چیز میں بال چوٹے کیڑے پڑ گئے ہوں یہ سب اور مٹی پانے سے پاک ہوتے ہیں۔

۱۲۶۔ جس چیز میں ناپاک چیز لگی ہو جب تک اُس ناپاک چیز کی بو اور آلودگی اُس چیز سے دور نہ ہو تب تک مٹی اور پانی سے اسکو پاک کرنا چاہیے یہ طریق سب چیزوں کے پاک کرنے میں جاننا۔

۱۲۷۔ دیوتوں نے برہمنوں کیواسطے تین چیزیں پاک کی ہیں ایک بےدیکھی ہوئی چیز دوسرے وہ چیز جو پانی سے دھوئی گئی ہے تیسرے جو بانی سے شرشٹھ ہو۔

۱۲۸۔ جو پانی ایک گئو کی پیاس بجھانے بھر کو ہو اور ناپاک چیز سے شامل نہو اور بو رنگ والے رس کے ہو اور زمین پر قائم ہو وہ پانی پاک ہے۔

۱۲۹۔ کاریگر کا ہاتھ اور بیپاری کی دوکان کی چیز اور برہمچاری کی بھیکھ یہ تینوں چیزیں ہمیشہ پاک ہیں یہ شاستر کی مرجاد ہے۔

۱۳۰۔ جماع کے وقت عورت کا منھ پھل گرانے میں پرند دودھ دوہتے وقت بچھڑا ہرن کے پکڑنے میں کتا

श्वभिर्हतस्ययन्मांसंशुचितन्मनुरब्रवीत्॥ क्रव्याद्भिश्चहत
स्यान्यैश्चाण्डालाद्यैश्चदस्युभिः॥१३१॥ऊर्द्ध्वंनाभेर्यानिखा-
नितानिमेध्यानिसर्वशः॥ यान्यधस्तान्यमेध्यानिदेहाच्चैव
मलाश्च्युताः॥१३२॥ मक्षिकाविप्रुषश्छायागौरश्वःसूर्यर
श्मयः॥ रजोभूर्वायुरग्निश्चस्पर्शेमेध्यानिनिर्दिशेत्॥१३३॥
विण्मूत्रोत्सर्गशुद्ध्यर्थंमृद्वार्यादेयमर्थवत्॥ दैहिकानांमला
नांचशुद्धिषुद्वादशस्वपि॥१३४॥वसाशुक्रमसृङ्मज्जामूत्र
विड्घ्राणकर्णविट्॥ श्लेष्माश्रुदूषिकास्वेदोद्वादशैतेनृणां-
मलाः॥१३५॥एकालिंगेगुदेतिस्रस्तथैकत्रकरेदश॥उभयोः
सप्तदातव्यामृदःशुद्धिमभीप्सता॥१३६॥

۱۳۱- کتّہ و شیر باز و پیادہ وغیرہ دیرن کے مارنے سے اوقات بسر کرنیوالے ان سب سے جو جانور کھانیکے قابل مارا گیا اوسکا گوشت سرادھ وغیرہ آتمہ کتھوں مین پاک ہے منّو جی نے کہا ہے

۱۳۲- ناف سے اوپر کے تمام اعضا پاک ہین اور ناف سے نیچے کے تمام اعضا ناپاک ہین اور جو فضلہ بدن سے علیحدہ ہو وہ بھی ناپاک ہے -

۱۳۳- مکھی و قطرۂ آب و سایہ و گئو و گھوڑا و سورج کی کرن دھول و زمین و ہوا و آگ یہ سب چھونے مین پاک ہین

۱۳۴- غلیظ و پیشاب و دیگر بارہو فضلون کو جبکہ وہ جسم سے علیحدہ ہو کر گرے ہون چھو کر پانی اور مٹی بقدر ضرورت لگا کر دھونے سے پاک ہوتا ہے -

۱۳۵- آدمی کے جسم مین یہ بارہ مل یعنے فضلے ہوتے ہین - چربی[1] بیج[2] خون[3] مجّا[4] پیشاب[5] غلیظ[6] ناک[7] کی گونٹ[8] کھنکھار[9] آنسو[10] کیچڑ[11] پسینا[12] -

۱۳۶- مٹی کے وسیلے سے پاکی کی خواہش کرنیوالا آدمی ایک بار مٹی مقام پیشاب پر اور پانچ دفعہ مقام پاخانہ پر اور دس دفعہ بائین ہاتھ مین اور سات دفعہ دونو ہاتھ مین لگا دے -

पक्षिजग्धं गवाघ्रातमवधूतमवक्षुतम्॥ दूषितं केशकीटैश्च
मृत्प्रक्षेपेण शुध्यति॥ १२५॥ यावन्नापैत्यमेध्याक्ताद्गन्धो ले-
पश्च तत्कृतः॥ तावन्मृद्वारि चादेयं सर्वासु द्रव्यशुद्धिषु॥ १२६
॥ त्रीणि देवाः पवित्राणि ब्राह्मणानामकल्पयन्॥ अदृष्टम
द्भिर्निर्णिक्तं यच्च वाचा प्रशस्यते॥ १२७॥ आपः शुद्धा भूमि
गता वैतृष्ण्यं यासु गोर्भवेत्॥ अव्याप्ताश्चेदमेध्येन गन्धव-
र्णरसान्विताः॥ १२८॥ नित्यं शुद्धः कारुहस्तः पण्ये यच्च प्र-
सारितम्॥ ब्रह्मचारिगतं भैक्ष्यं नित्यं मेध्यमिति स्थितिः १२९
॥ नित्यमास्यं शुचि स्त्रीणां शकुनिः फलपातने॥ प्रस्रवे च शु-
चिर्वत्सः श्वा मृगग्रहणे शुचिः॥ १३०॥

۱۲۵- کھانے کے لائق پرند سے جس چیز کا ایک حصّہ چھوٹا ہو گیا ہو اور جس چیز کو گئو نے سونگھ لیا ہو اور جو چیز پاؤں لگنے سے کانپنے لگے اور جس چیز پر چھینک پڑی ہو اور جس چیز میں بال چونٹے کیڑے پڑ گئے ہوں یہ سب چیزیں مٹی پانے سے پاک ہوتے ہیں۔

۱۲۶- جس چیز میں ناپاک چیز لگی ہو جب تک اس ناپاک چیز کی بو اور آلودگی اُس چیز سے دور نہ ہو تب تک مٹی اور پانی سے اُسکو پاک کرنا چاہیے یہ طریق سب چیزوں کے پاک کرنے میں جاننا۔

۱۲۷- دیوتوں نے برہمنوں کے واسطے تین چیزیں پاک کی ہیں ایک بغیر دیکھی ہوئی چیز دوسرے وہ چیز جو پانی سے دھوئی گئی ہے تیسرے جو بانی سے مشتہر ہو۔

۱۲۸- جو پانی ایک گئو کی پیاس بجھانے بھر کو ہو اور ناپاک چیز سے شامل نہ ہو اور صحیح رنگ بو رس کے ہو اور زمین پر قائم ہو وہ پانی پاک ہے۔

۱۲۹- کاریگر کا ہاتھ اور بیوپاری کی دوکان کی چیز اور برہمچاری کی بھیکھ یہ تینوں چیزیں ہمیشہ پاک ہیں یہ شاستر کی مرجادا ہے۔

۱۳۰- جماع کے وقت عورت کا منہ پھل گرانے میں پرند دودھ دیتے وقت بچھڑا ہرن کے پکڑنے میں کتا

चैलवच्चर्मणांशुद्धिर्वैदलानांतथैवच ॥ शाकमूलफलानांच
धान्यवच्छुद्धिरिष्यते ॥ ११९ ॥ कौशेयाविकयोरूषैःकुतपा
नामरिष्टकैः ॥ श्रीफलैरंशुपट्टानांक्षौमाणांगौरसर्षपैः ॥१२०
क्षौमवच्छंखशृंगाणामस्थिदन्तमयस्यच ॥ शुद्धिर्विजानता-
कार्यागोमूत्रेणोदकेनवा ॥ १२१ ॥ प्रोक्षणात्तृणकाष्ठंच पला
लंचैवशुध्यति ॥ मार्जनोपांजनैर्वेश्मपुनः पाकेनमृन्मयम् ॥
१२२ ॥ मद्यैर्मूत्रैः पुरीषैर्वाष्ठीवनैःपूयशोणितैः ॥ संस्पृष्टंनैव-
शुध्येतपुनःपाकेनमृन्मयम् ॥ १२३ ॥ संमार्जनोपांजनेनसे-
केनोल्लेखनेनच ॥ गवांचपरिवासेनभूमिःशुध्यतिपंचभिः
॥ १२४ ॥

۱۱۹- جو پَش چھونے کے لائق ہیں اُنکے چمڑے کا برتن اور بانس کا برتن ان دونوں کی پاکی کپڑے کی پاکی کے مانند جاننا اور ساگ مول پھل انھوں کی پاکی غلہ کی پاکی کے مانند جاننا چاہیے
۱۲۰- ریشمی اور اونی کپڑا کھاری مٹی سے اور نیپالی کمل ریٹھی سے اور پٹ لسترے بیل کے پھل سے اور تیسی کا کپڑا سفید سرسوں سے پاک ہوتا ہے۔
۱۲۱- سنکھ کا برتن اور جو جانور مثل ہاتھی وغیرہ چھونے کے قابل ہو اُسکے دانت اور سینگ اور ہڈی کا برتن انھوں کی پاکی مثل پاکی پارچہ دیبی کے جاننا یا گئو کے موتر یا پانی سے سمجھنا۔
۱۲۲- پانی چھڑکنے سے ترن اور کاٹھ و پوال اور جھاڑو دینے سے انگن اور لیپنے سے گھر اور دوسری بار لپکانے سے مٹی کا برتن پاک ہوتا ہے۔
۱۲۳- شراب۔ پیشاب۔ غلیظ۔ کھکھار۔ پیپ و خون انہیں سے کوئی ایک اگر لگ گیا ہو تو وہ برتن دوسری بار پکانے سے پاک نہیں ہوتا۔
۱۲۴- جھاڑو۔ لگانا۔ لیپنا۔ چھڑکاؤ کرنا۔ اوپر کی مٹی چھیلنا گئو کا باس یعنی قیام ان پانچوں سے زمین پاک ہوتی ہے۔

ताम्रायःकांस्यरैत्यानांत्रपुणाःसीसकस्यच ॥ शौचंयथार्हंक
र्त्तव्यंक्षाराम्लोदकवारिभिः ॥ ११४ ॥ द्रवाणांचैवसर्व्वेषांशु
द्धिरुत्पवनंस्मृतम् ॥ प्रोक्षणंसंहतानांचदारवाणांचतक्षणा
म् ॥ ११५ ॥ मार्जनंयज्ञपात्राणांपाणिनायज्ञकर्म्मणि ॥
चमसानांग्रहाणांचशुद्धिःप्रक्षालनेनतु ॥ ११६ ॥ चरूणां
स्रुक्स्रुवाणांचशुद्धिरुष्णेनवारिणा ॥ स्फ्यशूर्पशकटाना
मुसलोलूखलस्यच ॥ ११७ ॥ अद्भिस्तुप्रोक्षणंशौचंबहूनां
धान्यवाससाम् ॥ प्रक्षालनेनत्वल्पानामद्भिःशौचंविधीयते
॥ ११८ ॥

۱۴ ॥ - تانبا - لوہا - کانسا - پیتل - رانگا - سیسا - ان سب کی پاکی ریتھو والی وجل سے بدھ پوروک کرنا چاہیے -

۱۵ ॥ - جتنی چیزیں رواں شل تیل و گھی وغیرہ کے ہیں انکو اگر کوا و کیڑا وغیرہ چھو لیویں اور ایک پاتھ میں آنیکے لائق ہوں تو سباہ اور انگشت کے پھیلاؤ کے برابر دو کش لے کر اس چیزیں چلانے سے پاک ہو جاتی ہیں اور اگر چار پائی وغیرہ پر دشمن گر پڑے تو وہ پانی کے چھینٹے دینے سے پاک ہو جاتی ہے اور کاٹھ کا برتن جب دشمن وغیرہ سے نجاست آلودہ ہو تب وہ چھیلنے سے پاک ہوتا ہے -

۱۶ ॥ - یگیہ کے برتنوں کی صفائی ہاتھ سے کرنا چاہیئے یگیہ میں چمس اور گرہ ان دونوں کی پاکی دھونے سے ہوتی ہے -

۱۷ ॥ - چرو - سرک - سروا - سوپ گاڑی موسل اوکھلی ان سب کی پاکی گرم پانی سے ہوتی ہے -

۱۸ ॥ - اور کپڑوں کا ڈھیر ہو تو وہ پانی کے چھینٹے دینے سے پاک ہو جاتا ہے اور اگر تھوڑا ہو تو پانی سے دھونے سے پاک ہوتا ہے -

* یہ سب یگیہ کے برتن ہیں -

मृत्तोयैः शुध्यते शोध्यं नदी वेगेन शुध्यति ॥ रजसा स्त्री मनोदु-
ष्टा संन्यासेन द्विजोत्तमः ॥ १०८ ॥ अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति म-
नः सत्येन शुध्यति ॥ विद्यातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्य-
ति ॥ १०९ ॥ एष शौचस्य वः प्रोक्तः शारीरस्य विनिर्णयः ॥ ना-
नाविधानां द्रव्याणां शुद्धेः शृणुत निर्णयम् ॥ ११० ॥ तैजसा-
नां मणीनां च सर्वस्याश्ममयस्य च ॥ भस्मनाद्भिर्मृदा चैव शु-
द्धिरुक्ता मनीषिभिः ॥ १११ ॥ निर्लेपं काञ्चनं भाण्डमद्भिरेव वि-
शुध्यति ॥ अब्जमश्ममयं चैव राजतं चानुपस्कृतम् ॥ ११२ ॥ अ-
पामग्नेश्च संयोगाद्धैमं रौप्यं च निर्बभौ ॥ तस्मात्तयोः स्वयोन्यैव
निर्णेको गुणवत्तरः ॥ ११३ ॥

۱۰۸ - جو چیزیں پاک کرنے کے قابل ہیں وہ مٹی اور پانی سے اور ندیاں روانی سے اور جس عورت کا دل غیر مرد سے لگا ہے وہ حیض سے اور برہمن سنّیاس اختیار کرنے سے پاک ہو جاتا ہے۔

۱۰۹ - پانی سے تمام اعضا بدن کے پاک ہوتے ہیں اور راستی سے دل پاک ہوتا ہے اور برہم وِدیا اور تپ سے بھوت آتما یعنے لنگ شریر یعنی جیو آتما کے پاک ہوتا ہے اور گیان سے بدھ شُدھ ہوتی ہے۔

۱۱۰ - بھرگ جی کہتے ہیں کہ ہے رشیو جسم کی پاکی کے طریق کو کہا اب انواع اقسام کی چیزوں کے پاک ہونیکا طریق سنو

۱۱۱ - سونے وغیرہ کے برتن جواہرات کے برتن پتھر کے برتن یہ سب راکھ و مٹی و پانی سے پاک ہوتے ہیں ایسا بات کو منُو وغیرہ رشیوں نے کہا ہے۔

۱۱۲ - جس سونے یا سنکھ یا موتی یا پتھر کے برتن میں جوٹھن وغیرہ نہیں لگی اور جس روپے کے برتن میں ریکھا یعنے خطوط نہیں ہیں یہ سب صرف پانی ہی سے پاک ہو جاتے ہیں۔

۱۱۳ - آگ اور پانی کے ملنے سے سونا اور چاندی پیدا ہوتا ہے اسلئے اپنی اصل کرکے دونوں کی پاکی سب سے اچھی ہے۔

अनुगम्येच्छयाप्रेतंज्ञातिमज्ञातिमेवच॥ स्नात्वासचैलःस्पृष्ट्वा
ग्निंघृतंप्राश्यविशुध्यति॥ १०३॥नविप्रंस्वेषुतिष्ठत्सुमृतं-
शूद्रेणनाययेत्॥ अस्वर्ग्याह्याहुतिःसास्याच्छूद्रसंस्पर्श-
दूषिता॥ १०४॥ज्ञानंतपोऽग्निराहारोमृन्मनोवार्युपांज-
नम्॥ वायुःकर्मार्ककालौचशुद्धेःकर्तॄणिदेहिनाम् १०५
॥सर्वेषामेवशौचानामर्थशौचंपरंस्मृतम्॥ योऽर्थेशुचिर्हि
सशुचिर्नमृद्वारिशुचिःशुचिः॥१०६॥क्षान्त्याशुध्यन्तिवि-
द्वांसोदानेनाकार्यकारिणः॥ प्रच्छन्नपापाजप्येनतपसावे-
दवित्तमाः॥१०७॥

۱۰۳ - مرا ہوا آدمی اپنی ذات ہو یا دوسری ذات ہو اُسکے پیچھے اپنی خواہش سے جاکر
مع کپڑون کے اسنان کرے اور گھی کھاوے اور اگ کو چھووے تب شدھ ہوتا ہے -
۱۰۴ - جو براہمن کا ہم ذات موجود ہو تو اُس مُردہ براہمن کو شودر نہ لیجاے کیونکہ شودر کے چھونے
سے اُسکے شریر کی اگن مین آہت دینا سورگ کے واسطے نہین ہوتا -
۱۰۵ - گیان - تپ - اگن - آہار - مٹی - من - جل - لیپ - ہوا - سورج - زمانہ - یہ سب آدمیون کو
پاک کرنیوالے ہین -
۱۰۶ - سب شوچ یعنی پاکی مین ارتھ شوچ (یعنے دولت کو راستی سے حاصل کرنا) بڑا ہے جس
آدمی کی دولت پاک ہو وہی پاک ہے اور جو آدمی مٹی و پانی کے سبب سے پاک ہو مگر دولت مین
پاک نہین ہے وہ آدمی پاک نہین ہے -
۱۰۷ - جو پنڈت ہو وہ کشما (یعنے عفو تقصیر) کرکے پاک ہو جاتا ہے اور جو آدمی کام ناجب
الترک کو کرتا ہے وہ دان کرنے سے پاک ہوتا ہے اور جو پاپ کرنے مین مصروف
ہے وہ جپ کرکے پاک ہوتا ہے اور وید پڑھنے والا تپ کرکے پاک ہوتا
ہے -

लोकेशाधिष्ठितोराजानास्याशौचंविधीयते।।शौचाशौचंहि
मर्त्यानांलोकेशप्रभवाप्ययम्।।९७।।उद्यतैराहवेशस्त्रैःक्षत्रध-
र्महतस्यच।।सद्यःसन्तिष्ठतेयज्ञस्तथाशौचमितिस्थितिः९८
।।विप्रःशुध्यत्यपःस्पृष्ट्वाक्षत्रियोवाहनायुधम्।।वैश्यःप्रतोदं
रश्मीन्वायष्टिंशूद्रःकृतक्रियः।।९९।।एतद्वोऽभिहितंशौचंस-
पिण्डेषुद्विजोत्तमाः।। असपिण्डेषुसर्वेषुप्रेतशुद्धिंनिबो-
धत।। १००।। असपिण्डंद्विजंप्रेतंविप्रोनिर्हृत्यबन्धुवत्।।वि-
शुध्यतित्रिरात्रेणमातुराप्तांश्चबान्धवान्।। १०१।।यद्यन्नम-
त्तितेषान्तुदशाहेनैवशुध्यति।। अनदन्नन्नमह्नैवनचेत्तस्मि-
न्गृहेवसेत्।। १०२

۹۷ - راجہ سب لوکپالون کا انش یعنے حصہ ہے اس سے اسکو سوتک نہین لگتا اور راجا لوک کا مالک ہے، اس سبب سے آدمیون کی پاکی اور ناپاکی کو دور کر سکتا ہے۔

۹۸ - لڑائی مین کشتری دھرم کرکے جو آدمی ہتھیار لگنے سے مرگئے انکو اسی وقت پاکی اور یگیہ قائم ہوتی ہے۔

۹۹ تمام کریا کرکے سوتک کے آخیر براہمن جل اور کشتری سواری ہتھیار اور ویش پینا اور شودر لاٹھی کو چھوکر پاک ہو جاتے ہیں۔

۱۰۰ - بھرگ جی کہتے ہین کہ ہے رشی لوگو آپسے سپنڈون کا سوتک ہمنے کہا اب ان لوگون کی پریت شدھ کو کہتے ہین جو سپنڈ مین نہین ہین۔

۱۰۱ - جو براہمن سپنڈ نہین ہین ہے اسکو بھائی کے مانند مرگھٹ تک لیجا کر تین رات مین پاک ہوتا ہے اور ماما اور موسی وغیرہ کو بھی مرگھٹ تک لیجا کر تین رات مین پاک ہوتا ہے۔

۱۰۲ - جب مرے ہوئے کے سپنڈ کے ان کو بھوجن کرے تو دس دن مین شدھ ہوتا ہے اور اگر ان کا بھوجن نہ کرے اور نہ اوسکے گھر مین قیام کرے تو ایک دن مین شدھ ہوتا ہے۔

+ آنسو ورانی یار بس—

दक्षिणेन मृतं शूद्रं पुरद्वारेण निर्हरेत् ॥ पश्चिमोत्तरपूर्वैस्तु य-
थायोगं द्विजन्मनः ॥९२॥ न राज्ञामघदोषोऽस्ति व्रतिनां न च
सत्त्रिणाम् ॥ ऐन्द्रं स्थानमुपासीना ब्रह्मभूता हि ते सदा ॥९३॥
राज्ञो महात्मिके स्थाने सद्यः शौचं विधीयते ॥ प्रजानां परिर-
क्षार्थमासनं चात्र कारणम् ॥ डिम्बाहवहतानां च विद्युता पा-
र्थिवेन च ॥ गोब्राह्मणस्य चैवार्थे यस्य चेच्छति पार्थिवः ॥
९५ ॥ सोमाग्न्यर्कानिलेन्द्राणां वित्ताप्पत्योर्यमस्य च ॥ अष्टा-
नां लोकपालानां वपुर्धारयते नृपः ॥९६॥

۹۲ - شہر کے پچھم - اتر - پورب - دکھن - دروازہ سے حسب سلسلہ اوّل و دوم و سوم و چہارم دروازہ سے برہمن کشتری ویشیہ شودر کا مردہ لیجانا چاہیے -

۹۳ - راجا و برہمچاری چاندراین وغیرہ برت کا کرنیوالا و یگیہ کرنیوالا ان تینوں کو سوتک نہیں لگتا کیونکہ راجا تو راجا اندر کی جگہ پر بیٹھا ہے اور برہمچاری برت کرنیوالا اور یگیہ کرنیوالا یہ سب ہر وقت برہم سروپ ہیں -

۹۴ - راجا انصاف کرنے میں پاک رہتا ہے دوسرے کام میں نہیں کیونکہ رعایا کی حفاظت بغیر سنگھاسن پر بیٹھے نہیں ہوتی -

۹۵ - بدون راجا کے جو لڑائی ہوئی اور اسمیں جو آدمی مر گئے اور بجلی گر کر جو مر گئے اور راجا کے حکم سے جو آدمی مارنے کے لائق مارے گئے اور برہمن اور گئو کے واسطے جو آدمی مر گئے ایسے مرن میں سوتک نہیں ہوتا اور اپنے کام کے لیے جسکو راجا سوتک لگنا نہیں چاہتا اسکو بھی سوتک نہیں لگتا -

۹۶ - چندرماں - اگن - سورج - بایو - اندر - کبیر - برن - یم ان سب کے دہنوں کو راجا دھارن کرتا ہے -

आचम्यप्रयतोनित्यंजपेदशुचिदर्शने॥ सौरान्मंत्रान्यथोत्साहं
पावमानीश्चशक्तितः॥ ८६॥ नारंस्पृष्ट्वास्थिसस्नेहंस्नात्वावि-
प्रोविशुद्ध्यति॥ आचम्यैवतुनिःस्नेहंगामालभ्यार्कमीक्ष्य-
वा॥ ८७॥ आदिष्टीनोदकंकुर्य्यादाव्रतस्यसमापनात्॥ समा
प्तेतूदकंकृत्वात्रिरात्रेणैवशुद्ध्यति॥ ८८॥ वृथासंकरजाता-
नांप्रव्रज्यासुचतिष्ठताम्॥ आत्मनस्त्यागिनांचैवनिवर्तेतो
दकक्रिया॥ ८९॥ पाषण्डमाश्रितानांचचरन्तीनांचकाम
तः॥ गर्भभर्तृद्रुहांचैवसुरापीनांचयोषिताम्॥ ९०॥ आचा-
र्य्यंस्वमुपाध्यायंपितरंमातरंगुरुम्॥ निर्हृत्यतुव्रतीप्रेतान्न-
व्रतेनवियुज्यते॥ ९१॥

۸۶ — ناپاکی کے دیکھنے مین آچمن کرکے بعد حسب اپنی طاقت کے موافق ہمیشہ جیسے اچھا لوم
ہو ویسے ہی سورج نارائن کے منتر یا کسی دوسرے پاک کرنیوالے منتر کا جپ کرے۔
۸۷ — برہمن آدمی کی استخوان تر کو چھوکر اشنان کرنے سے پاک ہوتا ہے اور استخوان
خشک کو چھوکر آچمن کرکے گئو چھو لے یا سورج بھگوان کے درشن سے پاک ہوتا ہے۔
۸۸ — برہمچاری کسی کے مرنے مین جل نہ دیوے جب تک اسکا برت پورا نہو جب برت پورا ہوئے
پر جل دیکر تین رات مین پاک ہوتا ہے۔
۸۹ — جسنے اپنے دھرم کو چھوڑ دیا اور جو اتم ورن کی استری مین نیچ ورن کے بیج سے پیدا ہوا
اور جو جھوٹھا سنیاس دھارن کئے ہو اور جو خلاف شاستر آتما کا تیاگ کرنے والا ہو ان سب کے
مرنے مین جل نہ دینا چاہیے۔
۹۰ — پاکھنڈ دھرم یعنی وید کے خلاف دھرم کرنیوالی اور اپنی خوشی سے جہان چاہے وہان جانیوالی
حمل گرانے اور اپنے شوہر سے دشمنی کرنیوالی شراب پینے والی ایسی عورتون کے مرنے مین جل نہ دینا چاہیے۔
۹۱ — آچارج اپادھیا ماتا پتا گورو ان سبھون کا داہ کرنے سے برہمچاری اپنے برت سے بھرشٹ نہین ہوتا

श्रोत्रिये तूपसम्पन्ने त्रिरात्रमशुचिर्भवेत् ॥ मातुले पक्षिणीं रा-
त्रिं शिष्यर्त्विग्बान्धवेषु च ॥ ८१ ॥ प्रेते राजनि सज्योतिर्यस्य स्या-
द्विषये स्थितः ॥ अश्रोत्रिये त्वहः कृत्स्नमनूचाने तथा गुरौ ॥ ८२
॥ शुध्येद्विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन भूमिपः ॥ वैश्यः पंचदशाहेन
शूद्रो मासेन शुध्यति ॥ ८३ ॥ न वर्द्धयेदघाहानि प्रत्यूहेन्नाग्निषु क्रि-
याः ॥ न च तत्कर्म कुर्वाणाः सनाभ्योऽप्यशुचिर्भवेत् ॥ ८४ ॥ दि-
वाकीर्तिमुदक्यां च पतितं सूतिकां तथा ॥ शवं तत्स्पृष्टिनं चैव
स्पृष्ट्वा स्नानेन शुध्यति ॥ ८५ ॥

۸۱ - وید اور شاستر کا پڑھنے والا مرا ہو تو دوستی وغیرہ کرکے اُسکے پاس رہنے والے کو یا اُسکے گھر مین رہنے والے کو تین رات تک سوتک ہوتا ہے اور ماما چیلا و یگیہ کرنے والا و بھائی بند اِنکون کے مرنے مین پکھنی رات (یعنے اول و آخر دن کے بیچ کی رات) تک سوتک ہوتا ہے -

۸۲ - راجا اگر دن مین مرا ہو تو تمام دن اور رات مین مرا ہو تو تمام رات اُس راج مین رہنے والے پرجا کو سوتک ہوتا ہے اور مورکھ برہمن کے مرنے مین اُسکے گھر مین رہنے والون کو ایک دن سوتک ہوتا ہے یعنے اگر دن مین مرا ہو تو تمام دن اور رات مین مرا ہو تو تمام رات سوتک ہوتا ہے ہم مکتب کے مرنے مین اور گیانی وید اور شاستر پڑھانیوالے کے مرنے مین ایک دن سوتک ہوتا ہے حسب مرقومہ بالا -

۸۳ - برہمن دس۱۰ دن مین کشتری بارہ۱۲ دن مین ویش پندرہ۱۵ دن مین شودر تیس۳۰ دن مین شدھ ہوتے ہین -

۸۴ - پاپ کے دن کو نہ بڑھانا اور اگنی ہوتر نہ چھوڑنا چاہئے اگنی ہوتری سا مرتھ رکھتا ہو تو اُسکا بیٹا وغیرہ اگنی ہوتر کو کر لیوے اس کرم کے کرنے سے ناپاکی اُسکو نہین ہوتی -

۸۵ - چانڈال حیض والی عورت پتیت عورت جسنے بیٹا یا بیٹی جنی ہو مردے کے چھونیوالے ان سب کو چھوکر اشنان کرنے سے پاک ہو جاتا ہے -
(بچہ دن و آخر ...)

विगतन्तुविदेशस्यंशृणुयाद्योह्यनिर्दशम्॥ यच्छेषंदशरात्र-
स्यतावदेवाशुचिर्भवेत्॥७५॥ अतिक्रान्तेदशाहेचत्रिरात्रम-
शुचिर्भवेत्॥ सम्वत्सरव्यतीतेतुस्पृष्ट्वैवापोविशुध्यति॥७६॥नि
र्दशंज्ञातिमरणंश्रुत्वापुत्रस्यजन्मच॥ सवासजलमाप्लुत्यशुद्धो
भवतिमानवः॥७७॥बालेदेशान्तरस्थेचपृथक्पिंडेचसंस्थिते
॥ सवासाजलमाप्लुत्यसद्यएवविशुध्यति॥७८॥ अन्तर्दशा
हेस्यातांचेत्पुनर्मरणजन्मनी॥ तावत्स्यादशुचिर्विप्रोयाव
त्तत्स्यादनिर्दशम्॥७९॥त्रिरात्रमाहुराशौचमाचार्येसंस्थि
तेसति॥ तस्यपुत्रेचपत्न्यांचदिवारात्रमितिस्थितिः॥८०॥

۷۵ - دوسرے ملک میں وفات پائے ہوئے کی خبر دس دن کے اندر سننے میں آوے تو دس دن
میں جتنے دن باقی رہیں اُن باقی ماندہ دنوں تک سوتک ماننا چاہیئے

۷۶ - اگر مرنے سے دس دن بعد سننے میں آوے تو تین دن رات تک سوتک ماننا چاہیئے
اور اگر ایک سال کے بعد سننے میں آوے تو سننے والا اسنان کرکے شدھ ہوتا ہے -

۷۷ - دس دن کے بعد اگر براوری میں کسی کا مرن اور بیٹے کا جنم سننے میں آوے تو مع
کپڑوں کے غسل کرنے سے پاک ہو جاتا ہے -

۷۸ - دوسرے ملک میں سماودک بالک کا مرن سننے میں آوے تو مع کپڑوں کے غسل کرنے
سے اُسیوقت پاک ہو جاتا ہے -

۷۹ - ایک کا جنم ہو کر دوسرے کا جنم دس دن کے اندر ہو یا ایک کے مرنے سے دس دن کے اندر
دوسرے کا مرن ہو تو پہلے سوتک کے ختم ہونے سے دوسرا سوتک بھی ختم ہو جاتا ہے -

۸۰ - آچاریہ کے مرنے میں چیلا کو تین رات تک سوتک ہوتا ہے اور آچاریہ کی استری
اور اُسکے بیٹے کے مرنے میں ایک رات دن تک سوتک ہوتا ہے شاستر میں لکھا ہے

नास्यकार्योऽग्निसंस्कारोनचकार्योदकक्रिया॥ अरण्येका
ष्ठवत्त्यक्त्वाक्षपेयुस्त्र्यहमेवच॥६९॥नात्रिवर्षस्यकर्त्तव्याबा
न्धवैरुदकक्रिया॥जातदन्तस्यवाकुर्युर्नाम्निवापिकृतेसति॥७०
॥ सब्रह्मचारिण्येकाहमतीतेक्षपणंस्मृतम्॥ जन्मन्येकोदका
नान्तुत्रिरात्राच्छुद्धिरिष्यते॥७१॥स्त्रीणामसंस्कृतानान्तुत्र्य-
हाच्छुद्ध्यन्तिबान्धवाः॥ यथोक्तेनैवकल्पेनशुद्ध्यन्तितुसना-
भयः॥७२॥ अक्षारलवणान्नाःस्युर्निमज्जेयुश्चतेत्र्यहम्॥मां-
साशनंचनाश्नीयुःशयीरंश्चपृथक्क्षितौ॥७३॥सन्निधावे-
षवैकल्पःशावाशौचस्यकीर्त्तितः॥ असन्निधावयंज्ञेयोविधिः
सम्बन्धिबान्धवैः॥७४॥

۶۹ - اور اُس لڑکے کا اگن سے سنسکار بھی نکرنا اور نہ جلادینا جنگل مین لکڑی کی طرح چھوڑکر
تین دن تک سوتک ماننا چاہیے۔

۷۰ - اور جو تین برس سے کم ہو اُسکے مرنے مین جل دینا مگر اگن سے داہ نکرنا اور اگر دانت پیدا
ہوکر مرا ہو یا نام کرن کے بعد مرا ہو تو داہ کرنا جل دینا شمشان مردہ کو آنند ہوتا ہے اور نکرنے تو
دوش بھی نہین ہوتا۔

۷۱ - ہم مکتب کے مرنے مین ایک دن سوتک ہوتا ہے اور جنم مین سمانودکون کو تین رات تک سوتک ہوتا ہے

۷۲ - وواہ کے پہلے بالکدان کے پیچھے استری کے مرنے مین پت وغیرہ تین دن مین شدھ
ہوتے ہین اور وواہ کے پیچھے مرنے مین باپ وغیرہ سب تین دن مین شدھ ہوتے ہین

۷۳ - کھاری نمک نہ کھانا اور ندی وغیرہ مین تین دن تک اشنان کرنا اور ماس کو نہ
کھانا اور علیحدہ زمین پر سونا چاہیے۔

۷۴ - جو رشتہ دار پاس موجود ہون اونکا سوتک مرنے مین بیان کیا گیا اب جو رشتہ دار
برادری کے لوگ دوسرے ملک مین ہون اونکا سوتک کہتے ہین۔

निरस्य तु पुमाञ्छुक्रमुपस्पृश्यैव शुध्यति॥ बैजिकादभिसंबन्धादनुरुन्ध्यादघं त्र्यहम्॥ ६३॥ अह्ना चैकेन रात्र्या च त्रिरात्रैरेव च त्रिभिः॥ शवस्पृशो विशुध्यन्ति त्र्यहादुदकदायिनः॥ ६४॥ गुरोः प्रेतस्य शिष्यस्तु पितृमेधं समाचरन्॥ प्रेतहारैः समं तत्र दशरात्रेण शुध्यति॥ ६५॥ रात्रिभिर्मासतुल्याभिर्गर्भस्रावे विशुध्यति॥ रजस्युपरते साध्वी स्नानेन स्त्री रजस्वला॥ ६६॥ नृणामकृतचूडानां विशुद्धिर्नैशिकी स्मृता॥ निर्वृत्तचूडकानां तु त्रिरात्राच्छुद्धिरिष्यते॥ ६७॥ ऊनद्विवार्षिकं प्रेतं निदध्युर्बान्धवा बहिः॥ अलंकृत्य शुचौ भूमावस्थिसंचयनादृते॥ ६८॥

۶۳- اگر علاوہ خواہش جماع کے تخم گر پڑے تو غسل کرکے پاک ہو جاتا ہے اور جس استری نے پہلے پت کو چھوڑ کر دوسرا پت کیا اس استری میں دوسرے پت سے جو پُتر پیدا ہوئے ہیں وہ دوسرے پت کو تین دن کا سوتک ہوتا ہے۔

۶۴- سپنڈ لوگ دس رات میں شُدھ ہوتے ہیں اور جو لوگ ان سپنڈ ایک دن سوتک کے لائق اوپر کہہ آئے ہیں وہ جب مردے کو چھوئیں تو تین دن میں شدھ ہوتے ہیں اور جو سمانودک ہیں وہ بھی تین دن میں شدھ ہوتے ہیں۔

۶۵- گرو کے داہ کرنے سے چیلا بھی گرو کے سپنڈ کے برابر شوچ کو پاتا ہے۔

۶۶- جب حمل گر جاوے تو جتنے مہینے کا حمل ہو اتنی ہی رات تو اشوچ ہوتا ہے حیض ختم ہونے غسل کرکے حیض والی عورت پاک ہو جاتی ہے۔

۶۷- جسکا مونڈن نہوا ہو اسکے مرنے میں ایک رات دن کا سوتک ہوتا ہے اور مونڈن ہو چکے پر مرنے میں تین رات تک سوتک ہوتا ہے۔

۶۸- جو لڑکا دو مہینے کا ہو کر مر جاوے اسکو النکار کرکے گانو سے باہر جنگل میں گاڑنا چاہئے اسکی ہڈیاں جمع کرنا نہ چاہئے۔

दन्तजातेऽनुजाते च कृतचूडे च संस्थिते ॥ अशुद्धा बान्धवाः स-
र्वे सूतके च तथोच्यते ॥ ५८ ॥ दशाहं शावमाशौचं सपिण्डेषु-
विधीयते ॥ अर्वाक्संचयनादस्थ्नां त्र्यहमेकाहमेव च ॥ ५९ ॥ सपि
ण्डता तु पुरुषे सप्तमे विनिवर्तते ॥ समानोदकभावस्तु जन्मना-
म्नोरवेदने ॥ ६० ॥ यथेदं शावमाशौचं सपिण्डेषु विधीयते ॥ ज-
ननेऽप्येवमेव स्यान्निपुणां शुद्धिमिच्छताम् ॥ ६१ ॥ सर्वेषां शाव-
माशौचं मातापित्रोस्तु सूतकम् ॥ सूतकं मातुरेव स्यादुपस्पृश्य
पिता शुचिः ॥ ६२ ॥

۵۸ - جنکے دانت نکل آئے ہون اور ہو مُنڈن اور جنیو ہو گیا ہو اُنکے مرنے اور پیدا ہونے مین تمام رشتہ دار سات پرش تک اور سات پرش سے اوپر تک جنم نام گیان تک اشدھ ہوتے ہین۔

۵۹ - جو براہمن وید کے دونون بھاگ (یعنی منتر بھاگ اور براہمن بھاگ) کو تمام پڑھا ہوا اور اگنی ہوتر کرتا ہو اُسکے مرنے مین ایک دن رات کا سوتک ہوتا ہے اور جو صرف وید پڑھا ہوا اور اگنی ہوتر نکرتا ہو اُسکو تین دن کا سوتک ہوتا ہے اور جو نہ وید پڑھا ہو اور نہ اگنی ہوتر کرتا ہو لیکن سمارت اگنی کو رکھتا ہو اُسکو چار دن کا سوتک ہوتا ہے اور جو سب گنون سے خالی ہو اُسکو دس دن کا سوتک ہوتا ہے۔

۶۰ - ساتوین پرش مین سپنڈتا کی نبرت ہوتی ہے اور اپنے گوتر مین جب جنم نام کا گیان نہین ہوتا تب سمانودکتا کی نبرت ہوتی ہے۔

۶۱ - جو پرش سپنڈ مین ہون اور بڑی شُدھی کی اچھا رکھنے والے ہون اُنکا سوتک پیدا ہونے مین بھی مرنے کے سوتک کے برابر ہوتا ہے۔

۶۲ - مرن کا سوتک سبکو ہوتا ہے مگر جنم کا سوتک صرف مان باپ ہی کو ہوتا ہے اِن دونون مین مان کو چھونا نہ چاہئے اور باپ اشنان کرنے کے بعد چھونے کے لائق ہوتا ہے۔

वर्षेवर्षेऽश्वमेधेनयोयजेतशतंसमाः॥ मांसानिचनखादेद्य
स्तयोःपुण्यफलंसमम्॥५३॥ फलमूलाशनैर्मेध्यैर्मुन्यन्ना-
नांचभोजनैः॥ नतत्फलमवाप्नोतियन्मांसपरिवर्जनात्॥५४
॥मांसभक्षयितामुत्रयस्यमांसमिहाद्म्यहम्॥ एतन्मांसस्य-
मांसत्वंप्रवदन्तिमनीषिणः॥५५॥ नमांसभक्षणेदोषोनम-
द्येनचमैथुने॥ प्रवृत्तिरेषाभूतानांनिवृत्तिस्तुमहाफला॥५६
॥ प्रेतशुद्धिंप्रवक्ष्यामिद्रव्यशुद्धिंतथैवच॥ चतुर्णामपिवर्णा
नांयथावदनुपूर्वशः॥५७॥

۵۳ — جو شخص سو برس تک ہر ایک برس مین ایک ایک اشومیدھ یگیہ کرتا ہے اور دوسرا شخص مانس کو نہین کھاتا ہے ان دونون کے پنیہ کا پھل برابر ہے۔

۵۴ — مانس کے ترک کرنے سے جو پھل ہوتا ہے وہ پھل پوتر اناج تنی وغیرہ جو منی جی کا ان ہے اور مول پھل انھون کے کھانے سے نہین ہوتا۔

۵۵ — جسکی مانس کو مین اس لوک مین کھاتا ہون او پرلوک مین مجھکو کھائیگا مانس لفظ کے یہی معنی ہین یہ بات پنڈت لوگ کہتے ہین۔

۵۶ — مانس اور شراب ان دونون کے کھانے مین کچھ دوش نہین ہے اور جماع مین بھی دوش نہین ہے کیونکہ یہ تو جیونکا سبھاو ہے لیکن انھون کا ترک کرنا بڑا پھل ہے۔

۵۷ — اب چارون ورنون کی پریت شدھی اور دربیہ شدھی کہتے ہین۔

ملحم اس شلوک کا اصل مطلب یہ کہ یگیہ کے مانس کھانے مین اور شادی مین جماع کرنے مین اور شرو ترامنی نام یگیہ مین شراب پینے مین دوش نہین ہے لیکن تاہم اوسکا ترک کرنا بہت اچھا ہے۔

नियुक्तस्तुयथान्यायंयोमांसंनात्तिमानवः॥सप्रेत्यप यतेनयो
तिसम्भवानेकविंशतिम्॥ ३५॥ असंस्कृतान्पशून्मंत्रैन नमुत्पद्य
प्रः कदाचन॥मंत्रैस्तुसंस्कृतानद्याच्छाश्वतंविधिमा येत॥
३६॥ कुर्य्याद्घृतपशुंसंगेकुर्य्यात्पिष्टपशुन्तथा॥ नत्वे निवर्त्ते
थाहन्तुंपशुमिच्छेत्कदाचन॥ ३७॥यावन्तिपशुरोमा धिंहि-
वत्कृत्वोहमारणम्॥ वृथापशुघ्नःप्राप्नोतिप्रेत्यजन्म पीड्यते
न्मनि॥ ३८॥यज्ञार्थंपशवःसृष्टाःस्वयमेवस्वयम्भुवा। संस्कार्त्तो
स्यभूत्यैसर्व्वस्यतस्माद्यज्ञेवधोऽवधः॥ ३९॥ ओषध रमांसेन-
वृक्षास्तिर्य्यंचःपक्षिरास्तथा॥ यज्ञार्थंनिधनंप्राप्ताः न्योनास्त्य
न्युत्सृती:पुनः॥ ४०॥

۴۷- جو شخص کسی شاستر کی بدھی کے جو ماس سندھ ہے اوسکو جو آدمی نہیں کھاتا وہ پرلوک میں اکّیس جنم تک
وہ اُسکو بدون محنت [illegible]
۴۸- بدون مہا جیوں کا سنسکار نہیں ہوا اسکو براہمن کبھی نہ کھاوے اور ہمیشہ شاستر کے موافق [illegible]
نہیں ہے اسواسطے ماس [illegible] کے ماس کو کھایا کرے۔
۴۹- ماس کی پیدائش اور جیو [illegible] کا نہایت دل چاہے تب گھی یا میٹھی کا پشو بناکر کھاوے مگر پشو
کھانا ترک کرے۔
۵۰- جو آدمی بدھ کو چھوڑ کر پشاچ کی طرح ماس نہیں کھاتا وہ لوگ میں سب کا پیارا ہوتا ہے جتنا [illegible]
اور مصیبت سے تکلیف نہیں پاتا۔
۵۱- جسکی صلاح بغیر جیو ہنسا نہو سکے اور ہتھیار سے ماس کو کاٹنے والا مارنیوالا بیچنے والا مول
لینے والا بنانے والا لانیوالا ماس کا کھانیوالا یہ آٹھو مارنیوالے ہی کہلاتے ہیں۔
۵۲- جو شخص دوسرے کے ماس سے اپنے ماس کے بڑھانے کی اچھا کرتا ہے اس سے زیادہ کوئی
دوسرا پاپی نہیں ہے۔

मधुपर्के १४
न्यत्रेत्यः चयज्ञेचपितृदैवतकर्म्मणि ॥ अत्रैवपशवोहिंस
जः ॥ भोब्रवीन्मनुः ॥ ४१ ॥ एष्वर्थेषुपशुंहिंसंवेदतत्वार्थवि
वरायेस्मभंस्मानंचपशुंचैवगमगत्युत्तमांगतिम् ॥ ४२ ॥ गृहेगु
द्यपिसंप्रवतेवसन्नात्मवान्द्विजः ॥ नावेदविहितान्हिंसामाप
चेर ॥ अमेथुनरेत् ॥ ४३ ॥ यावेदविहिताहिंसानियतास्मिंश्चरा-
सकानि सामेवतांविद्याद्वेदाद्धर्मोहिनिर्बभौ ॥ ४४ ॥ योऽहिं-
सकचित्सु भूतानिहिनस्त्यात्मसुखेच्छया ॥ सजीवंश्चमृतश्चैवन-
कीर्थति खमेधते ॥ ४५ ॥ योबन्धनवधक्लेशान्प्राणिनांनचि
॥ ससर्व्वस्यहितप्रेप्सुः सुखमत्यन्तमश्नुते ॥ ४६ ॥

۴۱ - مدھو پرک یگیہ دیوکرم پترکرم ان سب مین پشو کو مارنا چاہیے اور ... کرم مین نہ مارنا چاہیئے
اسبات کو منو جی نے کہا ہے -
۴۲ - ایسے کرمون مین پشو کو مارکر وید کے اصل مطلب کو ... والا براہمن آپ کو اور اس پشو
کو اتم گت کو پہونچاتا ہے -
۴۳ - گرہست ... مین رہکر براہمن وید کے خلاف جان کشی کو د...
۴۴ - جو ہنسا اس دنیا مین وید کے حکم کے موافق ہے اسکو ہنسا یعنی جان کشی نہ جاننا چاہیئے کیونکہ وید
ہی سے دھرم نکلا ہے -
۴۵ - جو جیو مارنے کے لائق نہین ہے انکو جو کوئی اپنے سکھ کے واسطے مارتا ہے وہ جیتا ہوا مردہ ...
کہین سکھ نہین پاتا ہے -
۴۶ - جو شخص کسی جاندار کو پکڑنے اور مارنے اور ایذا دینے کی خواہش نہین رکھتا وہ سبکا بھلا
چاہنے والا ہے اسلیئے بڑا سکھ پاتا ہے -

नियुक्तस्तु यथान्यायं यो मांसं नात्ति मानवः ॥ स प्रेत्य पशुतां या
ति सम्भवानेकविंशतिम् ॥ ३५ ॥ असंस्कृतान्पशून्मंत्रैर्नाद्याद्वि
प्रः कदाचन ॥ मंत्रैस्तु संस्कृतानद्याच्छाश्वतं विधिमास्थितः ॥
३६ ॥ कुर्याद्घृतपशुं संगे कुर्यात्पिष्टपशुं तथा ॥ नत्वेव तु वृ-
था हन्तुं पशुमिच्छेत्कदाचन ॥ ३७ ॥ यावन्ति पशुरोमाणि ता
वत्कृत्वो ह मारणम् ॥ वृथापशुघ्नः प्राप्नोति प्रेत्य जन्मनि ज-
न्मनि ॥ ३८ ॥ यज्ञार्थं पशवः सृष्टाः स्वयमेव स्वयम्भुवा ॥ यज्ञ-
स्य भूत्यै सर्वस्य तस्माद्यज्ञे वधोऽवधः ॥ ३९ ॥ ओषध्यः पशवो
वृक्षास्तिर्यंचः पक्षिणस्तथा ॥ यज्ञार्थं निधनं प्राप्ताः प्राप्नुव-
न्त्युत्सृतीः पुनः ॥ ४० ॥

۳۵ - شاستر کی بدھ سے جو مانس شدھ ہے اسکو جو آدمی نہین کھاتا وہ پرلوک مین اکیس جنم تک پشو ہوتا ہے۔

۳۶ - جس مانس کا سنسکار نہین ہوا اسکو برہمن کبھی نہ کھاوے اور ہمیشہ شاستر کے موافق وید منتر سے سنسکار کیئے ہوئے مانس کو کھایا کرے۔

۳۷ - جب پشو کے مانس کھانے کا نہایت دل چاہے تب گھی یا پیٹھی کا پشو بناکر کھاوے مگر پشو کے مارنے کی نیت نہ کرے۔

۳۸ - جو آدمی پشو کو بیفایدہ مارتا ہے وہ پرلوک مین کئی جنم تک اتنی دفعہ مارا جاتا ہے جتنے بال اس پشو کے بدن پر ہون

۳۹ - شری برہما جی نے آپ سے آپ یگیہ کیواسطے پشو کو پیدا کیا اس سے یگیہ مین جو بدھ لیئے قتل ہوتا ہے وہ بدھ نہین کہلاتا۔

۴۰ - ان پشو - درخت - پرند - کچھوا - وغیرہ یہ سب یگیہ کے واسطے مارے جانے سے اتم ذات کو دوسرے جنم مین پاتے ہین۔

चराणामन्नमचरा दंष्ट्रिणामप्यदंष्ट्रिणः ॥ अहस्ताश्च सहस्ता-
नां शूराणां चैव भीरवः ॥ २९ ॥ नात्ता दुष्यत्यदन्नाद्यान्प्राणि-
नोऽहन्यहन्यपि ॥ धात्रैव सृष्टा ह्याद्याश्च प्राणिनोऽत्तार एव च
॥ ३० ॥ यज्ञाय जग्धिर्मांसस्येत्येष दैवो विधिः स्मृतः ॥ अतोऽ
न्यथा प्रवृत्तिस्तु राक्षसो विधिरुच्यते ॥ ३१ ॥ क्रीत्वा स्वयं वाप्यु-
त्पाद्य परोपकृतमेव वा ॥ देवान्पितॄंश्चार्चयित्वा खादन्मांसं-
न दुष्यति ॥ ३२ ॥ नाद्यादविधिना मांसं विधिज्ञोऽनापदि द्विजः
॥ जग्ध्वा ह्यविधिना मांसं प्रेत्य तैरद्यतेऽवशः ॥ ३३ ॥ न तादृशं भ-
वत्येनो मृगहन्तुर्धनार्थिनः ॥ यादृशं भवति प्रेत्य वृथामांसा-
नि खादतः ॥ ३४ ॥

۲۹- جانداران متحرک کی غذا جانداران ساکن ہین ڈاڑھ والون کی غذا بدون ڈاڑھ والے ہین ہاتھ والون کی غذا بدون ہاتھ والے ہین شورمیرون کی غذا ڈرنے والے ہین

۳۰- کھانے کے لائق جانورون کو کھانے سے کھانیوالے کو دوش نہین ہوتا کیونکہ کھانیکے لائق جانور کو اور کھانیوالے جاندار کو برہما جی ہی نے پیدا کیا ہے۔

۳۱- یگیہ کے نمت مانس کو بھوجن کرنا شاستر کی بدھ ہے سوائے اسکے اور مانس بھوجن کرنا راکشسی بدھ ہے۔

۳۲- مول لئے ہوئے یا دوسرے کے لائے ہوئے مانس کو دیوتا اور پتّرون کو بھوگ لگا کر کھانے سے پاپ نہین ہوتا۔

۳۳- جو براہمن شاستر کی بدھ جاننے والا ہے وہ بغیر وقت مصیبت کے اور حالت مین بدھ کے خلاف اگر مانس کو کھاوے تو اسکے مانس کو پرلوک مین وہ کھاتا ہے جسکے مانس کو اسنے کھایا۔

۳۴- دولت کے لئے ہرن کے مارنیوالے کو ویسا پاپ نہین ہوتا جیسا پاپ بیفائدہ مانس کھانیوالے کو پرلوک مین ہوتا ہے۔

यत्किंचित्स्नेहसंयुक्तंभक्ष्यंभोज्यमगर्हितम्॥ तत्पर्युषितम-
प्याद्यंहविःशेषंचयद्भवेत्॥ २४ ॥ चिरस्थितमपित्वाद्यमस्नेहा
क्तंद्विजातिभिः॥ यवगोधूमजंसर्वंपयसश्चैवविक्रिया॥ २५॥
एतदुक्तंद्विजातीनांभक्ष्याभक्ष्यमशेषतः॥ मांसस्यातःप्रवक्ष्या
मिविधिंभक्षणवर्जने॥ २६ ॥ प्रोक्षितंभक्षयेन्मांसंब्राह्मणा-
नांचकाम्यया॥ यथाविधिनियुक्तस्तुप्राणानामेवचात्यये
॥२७॥ प्राणस्यान्नमिदंसर्व्वंप्रजापतिरकल्पयत्॥ स्थावरं
जंगमंचैवसर्व्वंप्राणस्यभोजनम्॥२८॥

۲۴ - جو چیز گھی یا تیل سے پکی ہو اور کھانے کے لائق ہو وہ باسی بھی ہو تو اسکو بھوجن کرے اور بچا ہوا ہبیہ* بھی اگرچہ باسی ہو کھانا چاہیے -

۲۵ - جو چیز جو یا گیہوں سے بنی ہے مگر گھی یا تیل سے نہیں پکی اور باسی ہے اور جو چیز دودھ سے بنی ہے وہ باسی ہے اسکو بھوجن کرے -

۲۶ - جو چیز برہمن کشتری ویشیہ کے کھانے کے لائق ہیں اور جو نہیں لائق ہیں اونکو کہا اب مانس کھانے کی ممانعت کو کہتے ہیں

۲۷ - پروکشن نام سنسکار سے جو مانس بنا ہے اور یگیہ میں ہون کرنے سے جو مانس بچا ہے ان دونوں طرح کے مانس کو بھوجن کرنا چاہیے اور جب برہمنوں کو مانس کی اچھا ہو تب شاستر کی ودھ سے مانس کو بھوجن کریں اور جبکہ بھوکھ سے جان جاتی ہو اسوقت بھی مانس بھوجن کریں

۲۸ - استھاور+ جنگم‡ جتنی چیزیں دنیا میں ہیں وہ سب جان کی غذا ہیں اسبات کو برہما جی نے کہا ہے -

* جو دیوتاؤں کا حصہ -

+ ساکن -

‡ متحرک -

श्वाविधंशल्यकंगोधांखड्गकूर्मशशांस्तथा।। भक्ष्यान्पंचनखे-
ष्वाहुरनुष्ट्रांश्चैकतोदतः।।१८।। छत्राकंविड्वराहंचलशुनंग्रा-
मकुक्कुटम्।। पलाण्डुंगृंजनंचैवमत्याजग्ध्वापतेद्द्विजः।।१९
।। अमत्यैतानिषड्जग्ध्वाकृच्छ्रंसांतपनंचरेत्।। यतिचान्द्रा-
यणंवापिशेषेषूपवसेदहः।।२०।। संवत्सरस्यैकमपिचरेत्कृ-
च्छ्रंद्विजोत्तमः।। अज्ञातभुक्तशुद्ध्यर्थंज्ञातस्यतुविशेषतः २१
यज्ञार्थंब्राह्मणैर्वध्याःप्रशस्तामृगपक्षिणः।। भृत्यानांचैव-
वृत्त्यर्थमगस्त्योह्याचरत्पुरा।।२२।।बभूवुर्हिपुरोडाशाभक्ष्या-
णांमृगपक्षिणाम्।। पुराणेष्वपियज्ञेषुब्रह्मक्षत्रसवेषुच ।।
।।२३।।

۱۸- پانچ ناخن والوں میں سالی گوہ ساہی گینڈا کچھوا۔ کھرہا کھانے کے لائق ہیں اور اونٹ کو چھوڑ کر ایک طرف دانت رکھنے والے علاوہ انکے سبکی ممانعت ہی کھانے کے لائق نہیں ہیں

۱۹- کُکرمُتا گاؤں کا رہنے والا سور لہسن گاؤں کا مُرغا پیاز۔ گاجر ان سب کو جانکر بھوجن کرے تو پتت ہو جاتا ہے یعنے اپنے دھرم ورن آشرم کے درجہ سے گرجاتا ہے۔

۲۰- اگر ان چھئو کو بغیر جانے بھوجن کرے تو سانت پن نام کو چھربرت کو کرے یا یت چندرائن برت کو کرے باقی درخت کا لا سا وغیرہ کھانے میں ایک دن فاقہ کرے۔

۲۱- جو چیز کھانیکے لائق نہیں ہے اسکو بغیر جانے کھا جانے میں جو دوش ہے اُسکو ناش کرنیکے لئے سال بھر میں ایک کرچھربرت کو کرے اور اگر جانکر کھایا ہو تو اسکے لئے خاص کرچھربرت کرے۔

۲۲- یگیہ کیواسطے اور نوکروں کے کھانے کیواسطے اچھے ہرن اور پکشی (پرند) مارنا چاہئے اگست رشی نے اگلے زمانہ میں ایسا کیا ہے۔

۲۳- اگلے زمانہ میں رشیوں نے یگیہ کے لئے کھانے کے لائق ہرن اور پکشیوں کو مارا ہے

कलविंकंप्लवंहंसंचक्रांगंग्रामकुक्कुटम्॥ सारसंरज्जुबालंच-
दात्यूहंस्तुकसारिके॥१२॥ प्रतुदांजालपादांश्चकोयष्टिनख
विष्किरान्॥ निमज्जतश्चमत्स्यादान्शौनंवल्लूरमेवच॥१३॥
बकंचैवबलाकांचकाकोलंखंजरीटकम्॥ मत्स्यादान्विड्वरा-
हाँश्चमत्स्यानेवचसर्वशः॥१४॥ योयस्यमांसमश्नातिसतंमां-
सादउच्यते॥ मत्स्यादःसर्वमांसादस्तस्मात्मत्स्यान्विवर्जयेत्
॥१५॥ पाठीनरोहितावाद्यौनियुक्तौहव्यकव्ययोः॥ राजीवा-
न्सिंहतुण्डांश्चसशल्कांश्चैवसर्वशः॥१६॥ नभक्षयेदेकचरान
ज्ञातांश्चमृगद्विजान्॥ भक्ष्येष्वपिसमुद्दिष्टान्सर्वान्पंचनखां
स्तथा॥१७॥

۱۲- گوراجل میں پیر والے ہنس چکوا گانوں کا رہنے والا مُرغا سارس رجّوال- پرند جل کاگ طوطا- مینا- ان کو بھی نہ کھاوے۔

۱۳- چونچ سے کھانے والے بٹ کھوڑ نام جانور وغیرہ آڑی وغیرہ ٹھٹری وغیرہ ناخن سے نوچ کر کھانے والے باز وغیرہ پانی میں ڈوب کر مچھلی کھانے والے جانور کسائی کے گھر کا ماس سوکھا ماس ان سب کو بھی نہ کھاوے۔

۱۴- بگلا اور بلاکا (یعنی دوسری قسم کا بگلا) نہایت سیاہ زاغ کھٹر ہچہ مچھلی کھانیوالے پرندگانوں کا سؤر اور مچھلی ان سب کو کبھی نہ کھاوے۔

۱۵- جو جیو جسکے ماس کو کھاتا ہے وہ اوسکا کھانیوالا کہلاتا ہے جیسے مچھلی سب کا ماس کھاتی ہے اور اسکو جسنے کھایا وہ گویا سب ماس کھا چکا اسلیے مچھلی کو کھانا نچاہیئے

۱۶- راجیو سنگھ تنڈ شنشلک بہیار وہو ان سب کو دیوتا اور پتروں کو بھوگ لگاکر کھانا چاہیے

۱۷- جو جاندار اکثر اکیلے رہتے ہیں مثل سانپ وغیرہ اور جو جانے ہوئے نہیں ہیں ہرن و پرند وغیرہ اور پانچ ناخن والے بندر وغیرہ ان سب کو بھوجن نکرے۔

त्थाकसरसंयावंपायसापूपमेवच॥ अनुपाकृतमांसानिदे-
वान्नानिहवींषिच॥७॥ अनिर्दशायागोःक्षीरमौष्ट्रमैकशफं
तथा॥ आविकंसंधिनीक्षीरंविवत्सायाश्चगोःपयः॥८॥ आर-
ण्यानांचसर्वेषांमृगाणांमाहिषंविना॥ स्त्रीक्षीरंचैववर्ज्यानि
सर्वशुक्तानिचैवहि॥९॥ दधिभक्ष्यंचशुक्तेषुसर्वंचदधिसंभवम्
॥ यानिचैवाभिषूयन्तेपुष्पमूलफलैःशुभैः॥१०॥ क्रव्यादाञ्छ
कुनीन्सर्वांस्तथाग्रामनिवासिनः॥ अनिर्दिष्टांश्चैकशफांष्टि
ट्टिभंचविवर्जयेत॥११॥

۷۔ دیوتا اور پتروں کو چھوڑکر اپنے واسطے تل ملا ہوا بھات دودھ گڑ گیہوں کے آٹا سے بنا ہوا پکوان کھیر مال پوا اور جو جانور منتر سے شدھ نہیں کیا گیا اوسکا مانس اور جو ان دیوتاؤں کے واسطے بنایا گیا ہو اور انکو بھوگ نہ لگایا گیا ہو اور جو ہتیہ ہون کیواسطے بنا اور ہون نہیں ہوا ان سب کو دیوتا اور پتروں کے بھوگ لگائے بغیر نکھاوے۔

۸۔ بیانے سے دس دن تک گئو کا دودھ اور اونٹنی اور ایک کھروالی (یعنی گھوڑی وغیرہ) اور بھیڑ اور گابھن گئو اور وہ گئو جسکا بچہ مرگیا ہو ان سب کا دودھ پینا منع ہے۔

۹۔ سواے بھینس کے اور جتنے جاندار جنگل کے رہنے والے ہیں اونکا دودھ اور عورت کا دودھ اور جو چیز بدون ملانے کسی دوسری چیز کے محض بسبب گذرنے ایام کے کھٹی ہو جاے ان سب کا کھانا منع ہے۔

۱۰۔ لیکن کھٹی چیزوں میں دہی اور دہی سے بنی ہوئی چیزیں اور پانی سے بنا ہوا پھول مول پھل وغیرہ کو کھانا منع نہیں ہے۔

۱۱۔ کچے گوشت کے کھانے والے گدھ وغیرہ پرند گانوں میں رہنے والے کبوتر وغیرہ پرند ایک کھر والے جانور باستثناء انکے جو شاستر میں کھانے کے لائق لکھے گئے ہیں اور ٹٹہری ان سب کو نہ کھاے۔

श्रुत्वैतानृषयोधर्मान्स्नातकस्ययथोदितान्॥ इदमूचुर्महात्मा-
नमनलप्रभवंभृगुम्॥१॥एवंयथोक्तंविप्राणांस्वधर्ममनुति
ष्ठताम्॥ कथंमृत्युःप्रभवतिवेदशास्त्रविदांप्रभो॥ २॥सतानु
वाचधर्मात्मामहर्षीन्मानवोभृगुः॥श्रूयतांयेनदोषेणमृत्युर्वि-
प्रांजिघांसति॥ ३॥ अनभ्यासेनवेदानामाचारस्यचवर्जनात्॥
आलस्यादन्नदोषाच्चमृत्युर्विप्रांजिघांसति॥ ४॥ लशुनंगृञ्ज
नंचैवपलाण्डुंकवकानिच॥ अभक्ष्याणिद्विजातीनाममेध्य
प्रभवाणिच॥ ५॥लोहितान्वृक्षनिर्यासान्व्रश्चनप्रभवांस्तथा
॥शेलुंगव्यंचपेयूषंप्रयत्नेनविवर्जयेत्॥ ६॥

۱- اسناتک کے دھرموں کو سنکر رشی لوگوں نے مہاتما بھرگ جی سے (جو اگ سے پیدا ہین) اس بات کو پوچھا کہ ہے پربھو-

۲- اسطرح براہمن لوگ جو اپنے دھرم پر جیسا کہ کہا گیا ہے قائم ہون اور وید اور شاستر جانتے ہون انکی موت کیون ہوتی ہے-

۳- من جی کے پتر دھرماتما بھرگ جی نے ان رشیون سے کہا کہ جس دوش سے براہمنون کو موت مارتی ہے اسکو سنئے-

۴- وید کے ابھیاس نکرنے سے کاہلی کرنے سے آچار کو چھوڑنے سے کھانے کے نقص سے براہمنون کو موت مارتی ہے-

۵- لہسن - گاجر - پیاز - گکرمتا - غلیظ وغیرہ ناپاک چیزون سے جو چیز پیدا ہو ان سب کو براہمن بھوجن نکرے-

٦- درخت کا لال رنگ کا یا جو کاٹنے سے پیدا ہو کسی رنگ کا ہو اندر جونئی بیائی ہوئی گئو کا دودھ پیوس ان سب کو بھوجن نہ کرے

۱* اگن بھی من جی کا نام ہے - دیکھو ادھیاے ۱۲

महर्षिपितृदेवानांगत्वानृणयंयथाविधि।।पुत्रेसर्वंसमासज्य
वसेन्माध्यस्थमाश्रितः।।२५७।।एकाकीचिन्तयेन्नित्यंविवि-
क्तेहितमात्मनः।।एकाकीचिन्तयानोहिपरंश्रेयोऽधिगच्छति-
।।२५८।।एषोदितागृहस्थस्यवृत्तिविप्रस्यशाश्वती।।स्नात-
कव्रतकल्पश्चसत्त्ववृद्धिकरःशुभः।।२५९।।अनेनविप्रोवृत्ते-
नवर्तयन्वेदशास्त्रवित्।। व्यपेतकल्मषोनित्यंब्रह्मलोकेम-
हीयते।।२६०।।

इतिमानवेधर्मशास्त्रेभृगुप्रोक्तायांसंहितायां
चतुर्थोऽध्यायः ४

۲۵۷- دیو رشی پتران تینون کے رن سے یتھا بدھ چھوٹ کر سب چیز بیٹے کو سپرد کر کے تارک الدنیا ہو کر سب کو یکچشم وحدت برابر دیکھے اور گھر ہی مین رہے۔

۲۵۸- ایکانت مین اکیلا اپنی آتما کے ہت کو نتیہ ہی دھیان کرے اسمین پرم کلیان ہوگا۔

۲۵۹- براہمن گرہستھ کا یہ نتیہ برت کہا اور بدھ کا بڑھانیوالا اسناتک برت بھی کہا۔

۲۶۰- دیدا ورشاستر کا جاننے والا براہمن اور پرکہی ہوئی رتی سے رہا کرے تو سب پاپون سے چھوٹ کر ہمیشہ برہم لوک مین پوجنے کے لائق ہو۔

من جی کا دھرم شاستر بھرگ جی کی سنگھتا

کا چوتھا ادھیائے سماپت ہوا

गुरून्भृत्यांश्चोज्जिहीर्षन्नर्चिष्यन्देवतातिथीन्॥ सर्वतः प्रतिगृह्णीयान्न तु तृप्येत्स्वयं ततः॥२५१॥ गुरुषु त्वभ्यतीतेषु विना वा तैर्गृहे वसन्॥ आत्मनो वृत्तिमन्विच्छन्गृह्णीयात्साधुतः सदा॥२५२॥ आर्द्धिकः कुलमित्रं च गोपालो दासनापितौ॥ एते शूद्रेषु भोज्यान्ना यश्चात्मानं निवेदयेत्॥२५३॥ यादृशोऽस्य भवेदात्मा यादृशं च चिकीर्षितम्॥ यथा चोपचरेदेनं तथात्मानं निवेदयेत्॥२५४॥ योऽन्यथा सन्तमात्मानमन्यथा सत्सु भाषते॥ स पापकृत्तमो लोके स्तेन आत्मापहारकः॥२५५॥ वाच्यर्था नियताः सर्वे वाङ्मूला वाग्विनिःसृताः॥ तांस्तु यः स्तेनयेद्वाचं स सर्वस्तेयकृन्नरः॥२५६॥

۲۵۱۔ اگر ماتا پتا سیوک استری وغیرہ بھوک سے تکلیف پاتے ہوں تو انکی رنج تکلیف کی نسبت سے دیوتا و اتتھی کی پوجن کرتا ہوا پتت کے سوا اور سب سے لیوے مگر آپ اسکو نہ کھاوے۔

۲۵۲۔ ماتا پتا کے مرنے کے بعد یا بحالت زندگی انکے دوسرے مقام پر رہکر اپنی وجہ معاش کے لئے اچھے لوگوں سے لیوے۔

۲۵۳۔ جو شودر جسکی کھیتی کرتا ہے اس شودر کا ان اسکے کھانے کے لائق ہے اور جو شودر خاندان کا دوست ہے اور گوپال اور داس اور ناؤ اور جس شودر نے غلامی اختیار کی ہو ان سب کا ان کھانا چاہیئے۔

۲۵۴۔ جس شودر کا جیسا کل جیسا سوروپ اور جیسی کرنیکی اچھا ہو اور جسطرح سیوا کرنا چاہیئے ویسا ہی وہ شودر اپنے کو کہے۔

۲۵۵۔ جو کوئی اچھے لوگوں میں اپنے کو چھپاتے یعنی جیسا ویسا نہیں کہلاتا وہ بڑا پاپ کرنیوالا ہے اور اپنی آتما کا چور ہے

۲۵۶۔ جتنے ارتھ ہیں سو سب بانی میں رہتے ہیں اور بانی انکی جڑ ہے بانی سے نکلتے ہیں اس بانی کو جسنے چرایا وہ سب چیزوں کا چرانیوالا ہوا۔

दृढकारीमृदुर्दान्तः क्रूराचारैरसंवसन् ।। अहिंस्रोदमदानाभ्याज-
येत्स्वर्गंतथाव्रतः।।२४६।।एधोदकंमूलफलमन्नमभ्युद्यतं
चयत्।।सर्वतःप्रतिगृह्णीयान्मध्वथाभयदक्षिणाम्।।२४७।।
आहृताभ्युद्यतांभिक्षांपुरस्तादप्रचोदिताम्।।मेनेप्रजापतिर्ग्रा
ह्यामपिदुष्कृतकर्मणः।।२४८।।नाश्नन्तिपितरस्तस्यदशव-
र्षाणिपंचच।। नचहव्यंवहत्यग्निर्यस्तामभ्यवमन्यते।।२४९।।
शय्यांगृहांकुशान्गन्धानपःपुष्पंमणीन्दधि।।धानामत्स्यान्प
योमांसंशाकंचैवननिर्नुदेत्।।२५०।।

۲۴۶ - کسی کام کو شروع کرکے اسکو اختتام تک پہونچانے والا نرم مزاج والا گرمی سردی وغیرہ دوندون کا سہنے والا - اندریون کو وشیون سے روکنے والا بد آدمیون سے رشتہ مندی ترک کرنیوالا - جان کشی نکرنیوالا - دان دینے والا سورگ مین جاتا ہے -

۲۴۷ - لکڑی - جل - مول - پھل - ان - مدھ - ابھے (دچھنی) یہ بے مانگے ملین تو انکو سب سے لینا چاہئے مگر زناکار - نپت - نامرد و دشمن سے نہ لیوے -

۲۴۸ - جبکہ کسی چیز کو دینے والے نے پہلے سے دینے کو نہ کہا ہو اور لینے والے کے پاس بیٹھکر بے مانگے دے تو اُس چیز کو سوائے تپت کے بدکرم کرنے والے سے بھی لینا چاہئے برہما جی نے کہا ہے -

۲۴۹ - جو شخص ایسی چیز کو نہین لیتا ہے اُسکے دئیے ہوئے ہویہ اور کبیہ کو دیوتا اور پتر پندرہ برس تک نہین لیتے ہین

۲۵۰ - چارپائی - مکان - کُش - خوشبو - پانی - پھول - جواہر - دہی - لائی - مچھلی دودھ - گوشت - ساگ - ان سب کو ترک نکرے -

एकः प्रजायते जन्तुरेक एव प्रलीयते॥ एकोऽनुभुंक्ते सुकृतमेक
एव च दुष्कृतम्॥२४०॥ मृतं शरीरमुत्सृज्य काष्ठलोष्ठसमं क्षितौ
॥ विमुखा बान्धवा यान्ति धर्मस्तमनुगच्छति॥२४१॥ तस्माद्ध-
र्मं सहायार्थं नित्यं संचिनुयाच्छनैः॥ धर्मेण हि सहायेन तमस्तर-
ति दुस्तरम्॥२४२॥ धर्मप्रधानं पुरुषं तपसा हतकिल्बिषम्॥
परलोकं नयत्याशु भास्वन्तं खशरीरिणम्॥२४३॥ उत्तमैरुत्तमै
र्नित्यं संबंधानाचरेत्सह॥ निनीषुः कुलमुत्कर्षमधमानधमां-
स्त्यजेत्॥२४४॥ उत्तमानुत्तमान्गच्छेन्हीनान्हीनांश्च वर्जयन्-
॥ब्राह्मणः श्रेष्ठतामेति प्रत्यवायेन शूद्रताम्॥२४५॥

۲۴۰- ایک ہی پیدا ہوتا ہے ایک ہی مرتا ہے ایک ہی پنیہ بھوگ کرتا ہے ایک ہی پاپ
بھوگ کرتا ہے-

۲۴۱ مردہ کو لکڑی ڈھیلا کی طرح زمین مین چھوڑکر بھائی بندہ الگ ہو جاتے ہین دھرم
ہی ساتھ جاتا ہے-

۲۴۲- اسلئے اپنی مدد کیواسطے دھرم کو ہمیشہ کرتا رہے کیونکہ دھرم کی مدد سے
بھوساگر پار اتر جاتا ہے-

۲۴۳- جس آدمی دھرم مددگار ہے اور تپ سے اوسکا پاپ دور ہو گیا ہے وہی دھرم
اسکو سورگ لوک مین لیجاتا ہے-

۲۴۴- خاندان کو اسکی بزرگی دینے کے لئے اچھے اچھے لوگونکے ساتھ رشتہ مندی
کرے نالائقون سے ترک تعلق کرے-

۲۴۵- اچھون اچھون سے رشتہ مندی کرکے اور برون برون سے ترک کرکے
براہمن بزرگی حاصل کرتا ہے اور دوش لگنے سے سودر کے برابر ہوتا ہے-

येनयेनतुभावेनयद्यद्दानंप्रयच्छति॥ तत्तत्तेनैवभावेनप्राप्नो-
तिप्रतिपूजितः॥२३४॥ योऽर्चितंप्रतिगृह्णातिददात्यर्चितमे-
वच॥ तावुभौगच्छतःस्वर्गंनरकन्तुविपर्यये॥२३५॥नवि-
स्मयेततपसावदेदिष्ट्वाचनानृतम्॥नार्त्तोऽप्यपवदेद्विप्रान्नद-
त्वापरिकीर्त्तयेत्॥२३६॥यज्ञोऽनृतेनक्षरतितपःक्षरतिवि-
स्मयात्॥ आयुर्विप्रापवादेनदानंचपरिकीर्त्तनात्॥२३७॥
धर्मंशनैःसंचिनुयाद्वल्मीकमिवपुत्तिकाः॥परलोकसहाया-
र्थंसर्व्वभूतान्यपीडयन्॥२३८॥नामुत्रहिसहायार्थंपितामा-
ताचतिष्ठतः॥ नपुत्रदारानज्ञातिर्धर्म्मस्तिष्ठतिकेवलः॥
२३९॥

۲۳۴- جو دان جسطرح دیا جاتا ہے وہ اسی طرح دوسرے جنم مین ملتا ہے-

۲۳۵- جو شخص اچھی چیز دیتا ہے اور جو اسکو لیتا ہے وہ دونون سورگ مین جاتے ہین-

۲۳۶- تپ کرکے غرور نکرے یگیہ کرکے جھوٹھ نہ بولے رنجیدہ ہوکر براہمن کو جا بجا نہ کہے دان دیکر نہ کہے-

۲۳۷- جھوٹھ بولنا غرور کرنا براہمن کی توہین یا بیقدری کرنا دان دیکر کہنا ان سبھون سے حسب سلسلہ یگیہ تپ عمر دان کا ناش ہو جاتا ہے-

۲۳۸- اس طریق سے کہ جس سے کسی جاندار کو تکلیف نہونے پاوے پرلوک کی امداد کے واسطے دھرم کو جمع کرلے جیسے چینٹی غلہ کو جمع کرتی ہے-

۲۳۹- مان باپ عورت ہمقوم بیٹا یہ سب پرلوک مین امداد نہین کرسکتے صرف دھرم ہی کام آتا ہے-

यत्किंचिदपिदातव्यंयाचितेनानसूयया।।उत्पत्स्यतेहितत-
त्पात्रंयत्तारयतिसर्वतः।।२२८।।वारिदस्तृप्तिमाप्नोतिसुखम-
क्षय्यमन्नदः।। तिलप्रदःप्रजामिष्टांदीपदश्चक्षुरुत्तमम्।।२२९
।।भूमिदोभूमिमाप्नोतिदीर्घमायुर्हिरण्यदः।। गृहदोऽग्र्याणि
वेश्मानिरूप्यदोरूपमुत्तमम्।।२३०।।वासोदश्चन्द्रसालोक्य
मश्विसालोक्यमश्वदः।। अनडुहःश्रियंपुष्टांगोदोब्रध्नस्य
विष्टपम्।।२३१।।यानशय्याप्रदोभार्यामैश्वर्यमभयप्रदः।।
धान्यदःशाश्वतंसौख्यंब्रह्मदोब्रह्मसार्ष्टिताम्।।२३२।।स-
र्वेषामेवदानानांब्रह्मदानंविशिष्यते।।वार्यन्नगोमहीवास
स्तिलकांचनसर्पिषाम्।।२३३।।

۲۲۸ - گن مین دوش نہ لگا کر مانگنے والون کو اپنی شکت کے موافق اَن دیا کرے کیونکہ ہر روز جب اَن دیا کرے گا تو ایک دن کسی طرف سے ایسا شخص آجائیگا جو سب طرح سے نہال کر دیگا۔

۲۲۹ - جل - اَن - تل - دیپ - انکھون کا دینے والا حسب سلسلہ آسودگی عیش لازوال اچھی اولاد - اچھی انکھون کو پاتا ہے۔

۲۳۰ - زمین - سونا - گھر روپا انھون کا دینے والا حسب سلسلہ زمین بڑی عمر اچھا گھر اچھی صورت کو پاتا ہے۔

۲۳۱ - کپڑا - گھوڑا - بیل - گئو - دینے والا حسب سلسلہ چندر لوک اسون کا لوک دولت لازوال سورج لوک کو پاتا۔

۲۳۲ - سواری - چارپائی - بجوقی - وید انھون کا دینے والا حسب سلسلہ استری دولت عیش لازوال - برہم لوک کے برابر درجہ پاتا ہے۔

۲۳۳ - اَن - جل - گئو - زمین - کپڑا - تل - سونا - گھی ان سب دانون مین وید کا دان اتم ہے۔

भुक्त्वातोऽन्यतमस्यान्नममत्याक्षपणंत्र्यहम्॥ मत्याभुक्त्वा
चरेत्कृच्छ्रंरेतोविण्मूत्रमेवच॥२२२॥ नाद्याच्छूद्रस्यपक्वान्नं
विद्वानश्राद्धिनोद्विजः॥ आददीतागमेवास्मादवृत्तावेकरात्रि
कम्॥२२३॥ श्रोत्रियस्यकदर्यस्यवदान्यस्यचवार्द्धुषेः॥ मी
मांसित्वोभयंदेवाः सममन्नमकल्पयन्॥२२४॥ तान्प्रजाप-
तिराहैत्यमाकृध्वंविषमंसमम्॥ श्रद्धापूतंवदान्यस्यहतमश्र
द्धयेतरत्॥२२५॥ श्रद्धयेष्टंचपूर्त्तंचनित्यंकुर्यादतन्द्रितः॥ श्र-
द्धाकृतेह्यक्षयेतेभवतःस्वागतैर्धनैः॥२२६॥ दानधर्म्मंनिषेवे-
तनित्यमैष्टिकपौर्त्तिकम्॥ परितुष्टेनभावेनपात्रमासाद्यश-
क्तितः॥२२७॥

۲۲۲ - انھون مین سے کسی کے اَن کو اگر بغیر جانے ہوئے بھوجن کرے تو تین دن اُپاس کرے اور اگر جان کر بھوجن کرے تو کرچھ برت جو آگے کہین گے اسکو کرے اور تبشا اور موتر کے بھوجن مین بھی علیحدہ علیحدہ وہی بھوجن کرے۔

۲۲۳ - پنڈت جو براہمن ہو وہ شودر کا پکوان برتکرے اگر گھر مین اَن نہو تو ایک رات کے بھوجن کے موافق کچا اَن لے لینا کچھ مضائقہ نہین۔

۲۲۴ - بخیل وید پڑھنے والا فیاض بیاج سے اوقات بسر کرنیوالا ان دونون کے اَن کو دیوتاؤن نے برابر کہا ہے۔

۲۲۵ - اُن دیوتاؤن کے پاس برہما جی نے آکر کہا کہ انکے اَن کو برابر نکرو شخص فیاض کا اَن بوجہ علو ہمتی کے پاک ہے اور بخیل کا اَن بوجہ پست ہمتی ناپاک ہے۔

۲۲۶ - کاہلی چھوڑ کر ہمت کے ساتھ ہمیشہ یگیہ اور تعمیر چاہ و تالاب و باولی کو کرے نیک کمائی کا روپیہ لگا کر ہمت کے ساتھ یہ دونون کام کرے تو لازوال ہو۔

۲۲۷ - اچھے براہمنون کو پاکر حسب مقدور بسیر چشمی کے ساتھ ہمیشہ یگیہ اور کنوان وغیرہ کا دان کرے

श्ववतांशौण्डिकानांचचैलनिर्णेजकस्यच।।रंजकस्यनृशं
सस्ययस्यचोपपतिर्गृहे।।२१६।।मृष्यंतियेचोपपतिंस्त्रीजि
तानांचसर्वशः।।अनिर्दशंचप्रेतान्नमतुष्टिकरमेवच।।२१७
।।राजान्नंतेजआदत्तेशूद्रान्नंब्रह्मवर्चसम्।।आयुःसुवर्णका
रान्नंयशश्चर्मावकर्तिनः।।२१८।।कारुकान्नंप्रजांहन्तिबलं
निर्णेजकस्यच।।गणान्नंगणिकान्नंचलोकेभ्यःपरिकृन्तति
।।२१९।।पूयंचिकित्सकस्यान्नंपुंश्चल्यास्त्वन्नमिन्द्रियम्।।वि
ष्ठावार्द्धुषिकस्यान्नंशस्त्रविक्रयिणोमलम्।।२२०।।यएतेऽ
न्येत्वभोज्यान्नाःक्रमशःपरिकीर्तिताः।।तेषांत्वगस्थिरोमा
णिवदन्त्यन्नंमनीषिणः।।२२१।।

۲۱۶- کتّے سے اوقات بسر کرنیوالا کلوار- دھوبی- رنگریز- گھاتک- جسکے گھر مین دوسرا شوہر ہو-

۲۱۷- جو دوسرا شوہر ہونے سے راضی رہتے ہون جو عورت سے مغلوب ہون جسکے عورت کا دسوان نہوا ہو انھون کا ان اور جو ان آسودگی نہین بخشتا یہ سب ان بھوجن نکرنا-

۲۱۸- راجا- شودر- چمار- سنار- ان لوگون کا ان حسب ترتیب سلسلہ تیج برہم تیج عمر نیکنامی کو ناش کرتا ہے-

۲۱۹- دال بنانیوالا- دھوبی- ان دونون کا ان حسب سلسلہ اولاد و طاقت کو کھوتا ہے اور جماعت اور بیسیا کا ان اس سورگ لوک کو کھوتا ہے جو اور کرمون سے ملنے والا ہو-

۲۲۰- علاج کرنیوالا- زناکار- بیاج سے اوقات بسر کرنیوالا- ہتھیار بیچنے والا انھون کا ان حسب سلسلہ پیپ- بیج- لیٹا- کھکھار کے برابر ہے-

۲۲۱- جتنے ان کھانیکے لائق نہین ہین وہ سب حسب مفصلہ بال کھال اور ہڈی اور بال کے برابر ہین یہ پنڈتون نے کہا ہے یعنی بال وغیرہ کھانے مین جو تکلیف ہے وہی تکلیف ہوتی ہے ان کے بھوجن کرنے سے

अभिशस्तस्य षंढस्य पुंश्चल्या दाम्भिकस्य च॥ शुक्तं पर्युषितं चैव
शूद्रस्योच्छिष्टमेव च॥२११॥ चिकित्सकस्य मृगयोः क्रूरस्यो-
च्छिष्टभोजिनः॥ उग्रान्नं सूतिकान्नं च पर्याचान्तमनिर्दशम्॥
अनर्चितं वृथामांसमवीरायाश्च योषितः॥ द्विषदन्नं नगर्यन्नं
पतितान्नमवक्षुतम्॥२१३॥ पिशुनानृतिनोश्चान्नं क्रतुवि-
क्रयिणस्तथा॥ शैलूषतुन्नवायान्नं कृतघ्नस्यान्नमेव च२१४
॥ कर्मारस्य निषादस्य रंगावतारकस्य च॥ सुवर्णकर्तुर्वेणस्य
शस्त्रविक्रयिणस्तथा॥२१५॥

۲۱۱ - عیب دار ۔ نامرد ۔ زناکار ۔ پاکھنڈی اِن لوگون کا اَن نشکٹ† باسی شودر کا جھوٹھا ۔
۲۱۲ - علاج کرنیوالا ۔ آفت والا ۔ کھوٹا ۔ جوٹھا بھوجن کرنے والا ۔ بد کام کرنے والا ان
سبھون کا اَن اور وہ اَن جو زچہ خانے کے واسطے بنایا گیا ہو اور ایک صف مین کچھ آدمی
کھانا کھاتے ہون اور کوئی آدمی توہین کی غرض سے سب سے پہلے بھوجن کی سماپت کی آچمن
کرے اسوقت کا اَن اور سوتک والے کا اَن ۔
۲۱۳ - اور وہ اَن جو شخص واجب التعظیم کو بیقدری کے ساتھ دیا گیا ہو اور وہ مانس جو دیوتا
وغیرہ کے لئے نہین بنایا گیا ہو اور پت اور پتر نہ رکھنے والی استری اور دشمن اور شہر سے
نکالا ہوا اِن لوگون کا اَن اور وہ اَن جسپر چھینک پڑی ہو ۔
۲۱۴ - چغل خور ۔ یگیہ کرکے پھر اسکو بیچنے والا نٹ٭ ۔ درزی ۔ احسان نہ ماننے والا ۔
۲۱۵ - لوہار ۔ نکھاد ۔ نٹ سوا سے گانیوالے کے اِن دونون کے پیشہ سے اوقات
بسر کرنیوالا ۔ سنار ۔ بکھور ۔ ہتھیار بیچنے والا ۔

† یعنے وہ اَن جو لوہ ملانے کسی چیز کے محض بسبب گذرنے ایام کے کھٹا ہو گیا ہو ۔
٭ جسکا ذکر دسوین ادھیاے مین ہے ۔

नाश्रोत्रियतते यज्ञे ग्रामयाजिकृते तथा ॥ स्त्रिया क्लीबेन च हु-
ते भुंजीत ब्राह्मणः क्वचित् ॥ २०५ ॥ अश्लीकमेतत्साधूनां यत्र-
जुह्वत्यमी हविः ॥ प्रतीपमेतद्देवानां तस्मात्तत्परिवर्जयेत् ॥
२०६ ॥ मत्तक्रुद्धातुराणां च न भुंजीत कदाचन ॥ केशकीटावप-
न्नं च पदा स्पृष्टं च कामतः ॥ २०७ ॥ भ्रूणघ्नावेक्षितं चैव संस्पृष्टं
चाप्युदक्यया ॥ पतत्रिणावलीढं च शुना संस्पृष्टमेव च ॥ २०८
॥ गवा चान्नमुपघ्रातं घुष्टान्नं च विशेषतः ॥ गणान्नं गणिका-
न्नं च विदुषा च जुगुप्सितम् ॥ २०९ ॥ स्तेनगायनयोश्चान्नं तक्ष्
णो वार्धुषिकस्य च ॥ दीक्षितस्य कदर्यस्य बद्धस्य निगडस्य च
॥ २१० ॥

۲۰۵ - مورکھ - گرام کی یگیہ کرانے والا استری نپنسک ان سب کی یگیہ مین براہمن کبھی نہ بھوجن کرے -

۲۰۶ - ان سب کی یگیہ کرنا بھلے لوگون کو لکشمی رہت ہے اور دیوتاون کو اچھا نہین ہے اسلیئے اس کرم کو نہ کرے -

۲۰۷ - بدمست غصہ ور آتر دکھون کے ان کو اور جس ان مین بال یا کیڑا ہو اور جو ان قصداً پاؤن سے چھوا گیا ہو ان سب کو بھوجن نکرے -

۲۰۸ - حمل گرانے والے کا دیکھا ہوا حیض والی عورت کا چھوا ہوا چڑیون کی چونچ کا کا بچھوڑا ہوا کتے کا چھوا ہوا -

۲۰۹ - گئو کا سونگھا ہوا یگیہ وغیرہ مین وہ ان جو باواز بلند یہ کہکر کہ کون بھوجن کریگا دیا گیا ہو اور جماعت کا ان اور بیسیون کا ان ان سب اناجون کی پنڈت لوگ نندا کرتے ہین

۲۱۰ - چور گانیوالا بڑھئی بیاج سے جینے والا جسکی یگیہ ابھی سماپت نہین ہوئی کنجوس قیدی پابجولان -

अलिंगीलिंगिवेषेणयोवृत्तिमुपजीवति॥ सलिंगिनांहरत्ये-
नस्तिर्यग्योनौचजायते॥ २००॥ परकीयनिपानेषुनस्नायाद्ध
कदाचन॥ निपानकर्तुःस्नात्वातुदुष्कृतांशेनलिप्यते॥२०१॥
यानशय्यासनान्यस्यकूपोद्यानगृहाणिच॥ अदत्तान्युपभुं-
जानएनसःस्यात्तुरीयभाक्॥२०२॥ नदीषुदेवखातेषुतडागे-
षुसरःसुच॥ स्नानंसमाचरेन्नित्यंगर्तप्रस्रवणेषुच॥२०३॥
यमान्सेवेतसततंननित्यंनियमान्बुधः॥ यमान्पतत्यकुर्व्वा-
णोनियमान्केवलान्भजन्॥२०४॥

۲۰۰- برہم چاری نہین ہے اور برہم چاری کے بھیس سے رہتا ہے سو برہم چاری کے پاپ کو پاتا ہے اور کیڑے مکوڑے کا جنم پاتا ہے اسی طرح سب آشرم والون کو جاننا۔

۲۰۱- دوسرے کا کھدایا ہوا کنوان یا تالاب وغیرہ جسکا اُتسرگ نہوا ہو اسمین اسنان نکرے اُس مین اسنان کرنے سے کھدانے والے کے پاپ کو پاتا ہے

۲۰۲- سواری- چارپائی- کنوان- باغ- مکان- یہ سب جسکے ہون اُسکی اجازت بغیر جو شخص استعمال کرتا ہے وہ جسکے یہ سب ہون اُسکے پاپ کے چوتھائی حصہ کو پاتا ہے۔

۲۰۳- ندی- دیوتاؤن کا کھدایا ہوا تالاب اور سَر* اور جھرنا اور گڑھا ان سب مین روز اسنان کرے۔

۲۰۴- یم اور نیم جسکا بیان آگے آویگا ان مین یم کو ہر روز اختیار کرے اور نیم کو نہین یم کو چھوڑکر صرف نیم کو اختیار کرنے سے پتت ہو جاتا ہے۔

* سَر اسکو کہتے ہین جو ۲۰۰۰ ہاتھ لمبا چوڑا ہو۔

۲۰۱- اسمین یہ شک ہو سکتا ہے کہ دوسرے کا کھدایا ہوا کنوان تالاب وغیرہ مین اسنان کرنا منع ہے تو جواب یہ ہے کہ اپنا کھدایا ہوا اور وہ دوسرون کیواسطے چھوڑ دیا گیا ہو تو کچھ مضائقہ نہین۔

धर्म्मध्वजीसदालुब्धश्छाद्मिकोलोकदम्भकः ।। वैडालव्रतिको
ज्ञेयोहिंस्रःसर्वाभिसन्धकः ।। १९५ ।। अधोदृष्टिर्नैष्कृतिकःस्वा
र्थसाधनतत्परः ।। शठोमिथ्याविनीतश्चबकव्रतचरोद्विजः १९६
येबकव्रतिनोविप्रायेचमार्जारलिंगिनः ।। तेपतन्त्यन्धतामि-
स्रेतेनपापेनकर्म्मणा ।। १९७ ।। नधर्म्मस्यापदेशेनपापंकृत्वा
व्रतंचरेत् ।। व्रतेनपापंप्रच्छाद्यकुर्व्वन्स्त्रीशूद्रदम्भनम् ।। १९८
।। प्रेत्येहचेदृशाविप्रागर्ह्यन्तेब्रह्मवादिभिः ।। छद्मनाचरितंय-
च्चव्रतंरक्षांसिगच्छति ।। १९९ ।।

۱۹۵- دھرم دھوجی لوبھی بہانہ سے چلنے والا ٹھگنے والا- مارنیوالا سب کی نندا کرنیوالا
ایسا آدمی بیڈال برتک کہلاتا ہے-
۱۹۶- نیچ ہی دیکھنے والا نٹھر نردئی اپنے مطلب میں مستعد جھوٹھی معافی سے رہنے والا
جھوٹی ملائمت کرنیوالا ایسا آدمی بک برتک کہلاتا ہے-
۱۹۷- بک برتک اور بیڈال برتک یہ دونوں اپنے پاپ سے اندھتامستر نام نرک میں
جاتے ہیں-
۱۹۸- پاپ کرکے دھرم کے بہانہ سے برت کو نکرے یعنی پاپ تو کرتا ہے اور استری
اور شودر کو دمبھ دکھلاتا ہے کہ میں دھرم کرتا ہوں-
۱۹۹- وید پڑھنے والے پرش لوگ اور یہ لوگ میں ایسے براہمنوں کو برا کہتے ہیں کپٹ
کا برت راکششون کے پاس جاتا ہے-

* دھرم دھوجی اسکو کہتے ہیں جو بہت آدمیوں کو دکھلاکر دھرم کرتا ہو-
* بلی کی طرح ہے برت جسکی-
* بگلا کی طرح ہے برت جسکی-

हिरण्यमायुरन्नंच भूर्गौश्चाप्योषतस्तनुम्॥ अश्वश्चक्षुस्त्वचं
वासो घृतंतेजस्तिलाःप्रजाः॥१८९॥ अतपास्त्वनधीयानः प्र
तिग्रहरुचिर्द्विजः॥ अंभस्यश्मप्लवेनेवसहतेनैवमज्जति॥
१९०॥ तस्मादविद्वान्बिभियाद्यस्मात्तस्मात्प्रतिग्रहात्॥ स्व-
ल्पकेनाप्यविद्वान्हिपंकेगौरिवसीदति॥१९१॥ नवार्यपि
प्रयच्छेत्तुबैडालव्रतिकेद्विजे॥ नबकव्रतिकेविप्रेनावेदवि-
दिधर्मवित्॥१९२॥ त्रिष्वप्येतेषुदत्तंहिविधिनाप्यर्जितंधनं
॥ दातुर्भवत्यनार्थायपरत्रादातुरेवच॥१९३॥ यथाप्लवेनौप
लेननिमज्जत्युदकेतरन्॥ तथानिमज्जतोऽधस्तादज्ञौदातृप्र-
तीच्छकौ॥१९४॥

۱۸۹- سونا اور ان کا دان لینے سے مورکھ براہمن کی عمر کم ہو جاتی ہے اسیطرح گیہوں اور زمین
جسم کو گھوڑا آنکھوں کو کپڑا چمڑے کو گھی تیج کو تل سنتروں کو نقصان پہونچاتا ہے۔
۱۹۰- جو براہمن تپ اور وید ابھیاس نہیں کرتا ہے اور دان لیا کرتا ہے وہ مع اس دان
دینے والے کے ڈوب جاتا ہے جیسے پانی میں پتھر کی ناؤ۔
۱۹۱- اسلیئے مورکھ براہمن تھوڑا دان لینے سے بھی ڈرتا ہے ورنہ جسطرح کیچڑ میں گیو پھنس کر
تکلیف اٹھاتی ہے اسیطرح وہ بھی تکلیف اٹھاتا ہے۔
۱۹۲- بیڈال برتک باک برتک مورکھ ان تینوں براہمنوں کو دھرم جاننے والا آدمی
پانی تک نہ دیوے۔
۱۹۳- یہ دھرم پوروک پیدا کیئے ہوئے دھن کو ان تینوں کو دینے سے پرلوک میں کچھ فائدہ نہیں ہے
۱۹۴- جسطرح پتھر کی ناؤ پر چڑھکر آدمی پانی میں ڈوب جاتا ہے اسیطرح مورکھ براہمن کو دان
دینے والا اور لینے والا دونوں نرک میں ڈوبتے ہیں۔

۱۸ ۔ اسکی تعریف اشلوک ۱۹۵ و ۱۹۶ میں لکھی ہے۔

यामयोऽप्सरसांलोके वैश्वदेवस्यबान्धवाः ।। सम्बन्धिनश्चपां
लोकेपृथिव्यांमातृमातुलौ ।।१८३।। आकाशेशास्तुविज्ञेया
बालवृद्धकृशातुराः ।। भ्राताज्येष्ठःसमःपित्राभार्यापुत्रःस्व-
कातनुः ।।१८४।। छायास्वोदासवर्गश्चदुहिताकृपणंपरम् ।।
तस्मादेतैरधिक्षिप्तःसहेतासंज्वरःसदा ।।१८५।। प्रतिग्रहसम-
र्थोऽपिप्रसंगंतत्रवर्जयेत् ।। प्रतिग्रहेणह्यस्याशुब्राह्मंतेजःप्र
शाम्यति ।।१८६।। नद्रव्याणामविज्ञायविधिंधर्म्यंप्रतिग्रहे ।।
प्राज्ञःप्रतिग्रहंकुर्यादवसीदन्नपिक्षुधा ।।१८७।। हिरण्यंभूमि
मश्वंगामन्नंवासस्तिलान्घृतम् ।। प्रतिगृह्णन्नविद्वांस्तुभस्मी
भवतिदारुवत् ।।१८८।।

۱۸۳- بہن اور بہو وغیرہ باندھو سمبندھی ماما اور ماما یہ سب سلسلے سے اپسرا لوک وشودیو لوک
برن لوک مرت کے سوامی ہیں
۱۸۴- بال برودھ کرش اتر یہ چاروں آکاش لوک کے سوامی ہیں بڑا بھائی باپ کے برابر
بھائی کا بیٹا اپنا شریر ہے۔
۱۸۵- داس کلوا اپنی چھایا ہے اور لڑکی غریب ہے، اسلئے ان سب کی باتوں کی برداشت
کرکے دلمیں رنج نہ لاوے۔
۱۸۶- دان لینے کی سامرتھ رکھتا ہو تو بھی نہ لیوے کیونکہ دان لینے سے برہم تیج جاتا
رہتا ہے۔
۱۸۷- اگر مصیبت میں بھوکھ کے مارے بے چین ہو تو بھی دان کو اس حالمیں نہ لیوے
بلا اس دان لینے کے بدھان یعنے دیوتا اور منتر کو سمجھا نتا ہو۔
۱۸۸- سونا- زمین- گھوڑا- گئو- ان بستر تل گھی ان میں سے کسی ایک چیز کے لینے سے
مورکھ براہمن لکڑی کی طرح جلکر راکھ ہو جاتا ہے۔

नपाणिपादचपलोननेत्रचपलोऽनृजुः।।नस्याद्वाक्चपल-
श्चैवनपरद्रोहकर्मधीः।।१७७।।येनास्यपितरोयातायेनयाताः
पितामहाः।।तेनयायात्सतांमार्गंतेनगच्छन्नरिष्यते।।१७८।।
ऋत्विक्पुरोहिताचार्यैर्मातुलातिथिसंश्रितैः।।बालवृद्धातु-
रैर्वैद्यैर्ज्ञातिसम्बन्धिबान्धवैः।।१७९।।मातापितृभ्यांयामीभि-
र्भ्रात्रापुत्रेणभार्यया।।दुहित्रादासवर्गेणविवादन्नसमाचरे-
त्।।१८०।।एतैर्विवादान्संत्यज्यसर्वपापैःप्रमुच्यते।।एभिर्जि-
तैश्चजयतिसर्वांल्लोकानिमान्गृही।।१८१।।आचार्योब्रह्म-
लोकेशःप्राजापत्येपिताप्रभुः।।अतिथिस्त्विन्द्रलोकेशोदे-
वलोकस्यचर्त्विजः।।१८२।।

۱۷۷ - ہاتھ پاؤں آنکھ زبان سے شوخی نکرے ٹیڑھا نرہے کسی کی بُرائی بین نرہے -
۱۷۸ - بہت پرکار کا شاستر ارتھ سمجھو سننے پتر پتامہ آدکرکے سنگر ہیت جو شاستر ارتھ ہے
اُسی کا انشٹھان کرے اُس کرکے ادھرم سے مارا نہیں جاتا -
۱۷۹ - رتوک - پروہت - اچارج - ماما - اتھتھ - آشرت - بال - برودھ - اتر - بید - جاتی - سمبندھی - باندھو
۱۸۰ - جام - ماتا - پتا - بھائی - پتر - استری - بیٹی - داس لوگ ان لوگوں کے ساتھ لڑائی نہ کرے -
۱۸۱ - انھوں سے لڑائی نکرنے سے سب پاپوں سے چھوٹ جاتا ہے ان سبھوں سے ہارنے سے گرہستھ
آدمی سب لوک جیتتا ہے -
۱۸۲ - آچارج برہم لوک کا سوامی ہے اور پتا پرجاپت لوک کا اتھتھ اندر لوک کا اور رتوک دیولوک کا سوامی ہے

* پتا پکش والے
+ ساے سسُرے -
+ استری پکش والے -
۷ بہن اور پتو وغیرہ -

नाधर्मश्चरितो लोके सद्यः फलति गौरिव ॥ शनैरावर्त्तमानस्तु
कर्त्तुर्मूलानि कृन्तति ॥ १७२ ॥ यदि नात्मनि पुत्रेषु न चेत्पुत्रेषु न-
प्तृषु ॥ न त्वेव तु कृतोऽधर्मः कर्त्तुर्भवति निष्फलः ॥ १७३ ॥ अध-
र्मेणैधते तावत्ततो भद्राणि पश्यति ॥ ततः सपत्नाञ्जयति स-
मूलस्तु विनश्यति ॥ १७४ ॥ सत्यधर्मार्यवृत्तेषु शौचे चैवारमेत्स-
दा ॥ शिष्यांश्च शिष्याद्धर्मेण वाग्बाहूदरसंयतः ॥ १७५ ॥ परि
त्यजेदर्थकामौ यौ स्यातां धर्मवर्जितौ ॥ धर्मं चाप्यसुखोदर्कं
लोकविक्रुष्टमेव च ॥ १७६ ॥

۱۷۲- ادھرم جلدی نہیں پھل دیتا جیسے زمین بیج بونے سے جلدی پھل نہیں
دیتی کچھ دنوں بعد پھل دیتی ہے ۔
۱۷۳- ادھرم کا پھل ادھرم کرنے والے کو نہیں ملتا تو اسکے بیٹے کو ملتا ہے۔ اگر
بیٹے کو نہ ہوا تو اسکے پوتے کو ملتا ہے اگر پوتے کو بھی نہ ملا تو ناتی کو ملتا ہے حاصل
یہ کہ ادھرم بے پھلے نہیں رہتا ۔
۱۷۴- ادھرم کرنیوالا پہلے ادھرم کرنے سے بڑھتا ہے پھر کلیان پاتا ہے پھر دشمن
کو جیتتا ہے آخر کو جڑ بنیاد سے مٹ جاتا ہے ۔
۱۷۵- بھلے لوگوں کا آچار ستّ دھرم پوترتا ہے ان سب میں ہمیشہ مصروف رہے
استری - پوتر - داس - چیلہ - ان سب کو راہ راستی بتاوے بانی ہاتھ اودر کا سنجم
کرے ۔
۱۷۶- ادھرم سے برخلاف جو ارتھ کام ہے اوسکا تیاگ کرنا دھرم ہے مگر لوک ریت
کے خلاف ہے اور جو زمانہ آیندہ میں سکھ دینے والا نہیں ہے اسکو بھی تیاگ
کرنا چاہیے ۔

× بانی کا سنجم یہ ہے کہ سچ بولے - ہاتھ کا سنجم یہ ہے کہ ہاتھ سے کسی کو کلیش نہ پہنچاوے اودر کا سنجم یہ ہے کہ تھوڑا ہو جو کچھ ملے اسی کو کافی سمجھے

अयुध्यमानस्योत्पाद्यब्राह्मणस्यासृगङ्गतः॥ दुःखंसुमहदा
प्नोतिप्रेत्याप्राज्ञतयानरः॥१६७॥ शोणितंयावतःपांसून्संगृ-
ह्णातिमहीतलात्॥ तावतोऽब्दानमुत्रान्यैःशोणितोत्पादको
ऽद्यते॥१६८॥ नकदाचिद्द्विजेतस्माद्विद्वानवगुरेदपि॥ नताडये
त्तृणेनापिनगात्रात्स्रावयेदसृक्॥१६९॥ अधार्मिकोनरोयो
हियस्यचाप्यनृतंधनम्॥ हिंसारतश्चयोनित्यंनेहासौसुखमे
धते॥१७०॥ नसीदन्नपिधर्मेणमनोऽधर्मेनिवेशयेत्॥ अधा-
र्मिकाणांपापानामाशुपश्यन्विपर्ययम्॥१७१॥

١٦٧- جو براہمن لڑائی نہین کرتا ہے۔ اسکے بدن سے خون نکالنے والا اپنی بےعقلی سے پرلوک مین بڑا دکھ پاتا ہے۔

١٦٨- جو براہمن لڑائی نہین کرتا اسکے بدن سے ہتھیار سے خون نکالنے والا پرلوک مین مہا دکھ پاتا ہے ہتھیار وغیرہ سے براہمن کے بدن سے جو خون نکل کر زمین پر گرتا ہے اس خون مین جتنے ذرے زمین کے آلودہ ہو جاتے ہین اتنے برس تک پرلوک مین وہ خون نکالنے والا کتے و سیار وغیرہ سے بھوجن کیا جاتا ہے۔

١٦٩- اسلیئے عقلمند آدمی کبھی براہمن کو مارنے کے واسطے ہتھیار نہ اٹھاوے بلکہ تنکے سے بھی نہ مارے۔ اور نہ جسم سے خون نکالے۔

١٧٠- جو ادھرمی یا ناپاک دولت والے یا ہر روز جان مارنے والے ہین وہ اس لوک مین سکھ نہین پاتے۔

١٧١- ادھرمی اور پاپیون کے دھن وغیرہ کو جلد ناش ہوتے ہوئے دیکھکر اور دھرم مین تکلیف پانے پر بھی ادھرم مین مصروف نہووے۔

यत्कर्म कुर्वतोऽस्य स्यात्परितोषोऽन्तरात्मनः ॥ तत्प्रयत्नेन
कुर्वीत विपरीतं तु वर्जयेत् ॥ १६१ ॥ आचार्यं च प्रवक्तारं पित-
रं मातरं गुरुम् ॥ न हिंस्याद्ब्राह्मणान्गाश्च सर्वांश्चैव तपस्विनः
॥ १६२ ॥ नास्तिक्यं वेदनिन्दां च देवतानां च कुत्सनम् ॥ द्वेषं दम्भं
च मानं च क्रोधं तैक्ष्ण्यं च वर्जयेत् ॥ १६३ ॥ परस्य दण्डं नोद्यच्छे-
त्क्रुद्धो नैनं निपातयेत् ॥ अन्यत्र पुत्राच्छिष्याद्वा शिष्ट्यर्थं ता-
डयेत्तु तौ ॥ १६४ ॥ ब्राह्मणायावगुर्यैव द्विजातिर्वधकाम्यया
॥ शतं वर्षाणि तामिस्रे नरके परिवर्तते ॥ १६५ ॥ ताडयित्वा-
तृणेनापि संरम्भान्मतिपूर्वकम् ॥ एकविंशतिमाजातीः पा-
पयोनिषु जायते ॥ १६६ ॥

۱۶۱- جس کرم کے کرنے سے اپنے دل کو اطمینان ہو اسکو کرے اور اگر بالعکس ہو تو نکرے
۱۶۲- آچارج وید کا ارتھ پڑھانیوالا باپ ماں گرو× براہمن گئو تپسوی - انہیں سے کسی کو نہ مارے -
۱۶۳- ناستک پن - وید اور دیوتا کی برائی کرنا دشمنی - پاکھنڈ - غرور - غصہ - تند مزاجی ان سب کو نہ کرے -
۱۶۴ غصہ سے کسیکے مارنے کو ڈنڈا نہ پھینکے اور کسیکو ضرب جسمانی پہنچاوے مگر بیٹا اور چیلہ کو تعلیم کیواسطے جسم پر ضرب دینا ناموزون نہیں ہے -
۱۶۵- براہمن کشتری ویش اگر براہمن کو مار ڈالنے کی نیت سے ہتھیار اٹھاوین اور ماریں نہیں تو بھی تامسر نام نرک میں سؤ برس تک رہتے ہیں -
۱۶۶- اگر غصہ کرکے قصداً ایک تنکے سے بھی مارے تو اکیس جنم تک پاپ یونیوں میں (یعنی کتے گدھا وغیرہ کے جسم میں) پیدا ہوتا ہے -

× یعنی یگیوپویت کرانے والا -

श्रुतिस्मृत्युदितंसम्यङ्निबद्धंस्वेषुकर्मसु ॥ धर्ममूलंनिषेवेतस-
दाचारमतन्द्रितः ॥ १५५ ॥ आचाराल्लभतेह्यायुराचारादीप्सि-
ताः प्रजाः ॥ आचाराद्धनमक्षय्यमाचारोहन्त्यलक्षणम् ॥ १५६
॥ दुराचारोहिपुरुषोलोकेभवतिनिन्दितः ॥ दुःखभागीचस-
ततंव्याधितोऽल्पायुरेवच ॥ १५७ ॥ सर्वलक्षणहीनोऽपि
यःसदाचारवान्नरः ॥ श्रद्दधानोऽनसूयश्चशतंवर्षाणिजी-
वति ॥ १५८ ॥ यद्यत्परवशंकर्मतत्तद्यत्नेनवर्जयेत् ॥ यद्यदा-
त्मवशंतुस्यात्तत्तत्सेवेतयत्नतः ॥ सर्वंपरवशंदुःखंसर्वमा-
त्मवशंसुखम् ॥ एतद्विद्यात्समासेनलक्षणंसुखदुःखयोः
॥ १६० ॥

۱۵۵- وید اور شاستر کے موافق جو اچھے لوگوں کا آچار ہے وہ عین دھرم ہے کاہلی چھوڑ کر اُسی اچار پر ہمیشہ چلے۔

۱۵۶- عمر و اچھی اولاد و لازوال دولت یہ سب آچار سے ملتے ہیں اور جو عیوب نتیجہ بد دینے والے جسم میں ہوں اُنکو آچار دور کر دیتا ہے۔

۱۵۷- دُراچاری آدمی دنیا میں بدنام ہوتا ہے اور ہمیشہ رنج و مصیبت میں رہ کر تھوڑے دن جیتا ہے۔

۱۵۸- جسمیں کوئی لکشن نہیں ہے اور کسی کی بُرائی نہیں کرتا اور شردھا اور اچھے لوگوں کی طرح آچار رکھتا ہے وہ سو برس تک جیتا ہے۔

۱۵۹- جو کرم دوسرے کے اختیار میں ہے اُسکو ترک کرے اور جو اپنے اختیار میں ہے اُسکا سیون کرے۔

۱۶۰- جو کرم پرائے بس میں ہے وہ دُکھ ہے اور جو کرم اپنے بس میں ہے وہ سُکھ ہے سُکھ دُکھ کا یہ لکشن ہے۔

पौर्विकीं संस्मरञ्जातिं ब्रह्मैवाभ्यसते पुनः ॥ ब्रह्माभ्यासेन चा
जस्रमनन्तं सुखमश्नुते ॥ १४९ ॥ सावित्राञ्छान्तिहोमांश्च कु
र्यात्पर्वसु नित्यशः ॥ पितॄंश्चैवाष्टकास्वर्चेन्नित्यमन्वष्टका
सु च ॥ १५० ॥ दूरादावसथान्मूत्रं दूरात्पादावसेचनम् ॥ उच्छि
ष्टान्ननिषेकं च दूरादेव समाचरेत् ॥ १५१ ॥ मैत्रं प्रसाधनं स्नानं
दन्तधावनमञ्जनम् ॥ पूर्वाह्ण एव कुर्वीत देवतानां च पूजनम् ॥
१५२ ॥ दैवतान्यभिगच्छेत्तु धार्मिकांश्च द्विजोत्तमान् ॥ ईश्व
रं चैव रक्षार्थं गुरूनेव च पर्वसु ॥ १५३ ॥ अभिवादयेद्वृद्धांश्च
दद्याच्चैवासनं स्वकम् ॥ कृताञ्जलिरुपासीत गच्छतः पृष्ठतोऽ
न्वियात् ॥ १५४ ॥

۱۴۹ - اگلی جنم کی ذات کو یاد کرتے ہوئے پھر وید ہی کا استعمال کرتا رہے وید کے استعمال سے ہمیشہ سکھ ملتا ہے۔

۱۵۰ - پرب میں ہر روز گایتری دیوتا کا ہون اور ارشٹ نراس کے لئے سانت ہون کرے اشٹکا انوشٹکا میں پتروں کی ہر روز پوجا کرے۔

۱۵۱ - اگنی کے گرہ سے دور دیش میں موتر - پاد پرچھالن - جوٹھا ان - بیرج - ان سب کو تیاگ کرے۔

۱۵۲ - بشا تیاگ (یعنی رفع براز) سنگار وغیرہ اسنان - داتون - انجن - دیوتا کا پوجن ان سب کاموں کو قبل دوپہر کرنا چاہیے۔

۱۵۳ - رکشا کے واسطے دیوتا - دھارمک - براہمن - گرو - راجا - ان سب کا درشن پرب میں کرے۔

۱۵۴ - اگر کوئی بڑا بوڑھا اپنے گھر میں آوے تو اسکو پرنام کرکے اپنا آسن بیٹھنے کیواسطے دے اور ہاتھ جوڑ کر سامنے کھڑا رہے جب چلنے لگے تو آپ بھی پیچھے ہوکر چلے۔

स्पृष्ट्वैतानशुचिर्नित्यमद्भिः प्राणानुपस्पृशेत् ॥ गात्राणि चैव सर्वाणि नाभिं पाणितलेन तु ॥ १४३ ॥ अनातुरः स्वानि खानि न स्पृशेदनिमित्ततः ॥ रोमाणि च रहस्यानि सर्वाण्येव विवर्जयेत् ॥ १४४ ॥ मंगलाचारयुक्तः स्यात्प्रयतात्मा जितेन्द्रियः ॥ जपेच्च जुहुयाच्चैव नित्यमग्निमतन्द्रितः ॥ १४५ ॥ मंगलाचारयुक्तानां नित्यं च प्रयतात्मनाम् ॥ जपतां जुह्वतां चैव विनिपातो न विद्यते ॥ १४६ ॥ वेदमेवाभ्यसेन्नित्यं यथाकालमतन्द्रितः ॥ तं ह्यस्याहुः परं धर्ममुपधर्मोऽन्य उच्यते ॥ १४७ ॥ वेदाभ्यासेन सततं शौचेन तपसैव च ॥ अद्रोहेण च भूतानां जातिं स्मरति पौर्विकीम् ॥ १४८ ॥

۱۴۳ – جنکو چھونا نہین کہا ہے اگر انکو چھوے تو آچمن کرکے ہاتھ مین پانی رکھکر اس پانی سے ناک کان وغیرہ سب اندریون کو اور سب بدن کو چھوے اور ناف کو ہتھیلی سے چھوے۔

۱۴۴ – آتر جو نہین ہے وہ بغیر ضرورت اپنی اندریون کو نہ چھوے اور پوشیدہ مقامات کے بال (یعنی بغل و مقام پاخانہ و پیشاب وغیرہ کے بال) بھی نہ چھوے۔

۱۴۵ – خوش خرم و اندرو باہر سے پاک و صاف رہکر نفس پر قادر ہوکر جپ ہون کرے کاہلی نکرے۔

۱۴۶ – جو شخص ان سب کرمون کو کرتا ہے اور شاستر کی ریت پر چلتا ہو اوسکا دیوتا اور آدمی کچھ نقصان نہین کر سکتے۔

۱۴۷ – آلس چھوڑکر اپنے وقت پر ہر روز وید کا استعمال کرے یہ پرم دھرم ہے اور سب اپ دھرم ہے۔

۱۴۸ – ہر روز وید کا ابھیاس پوتر تا تپ جیون پر دیا کرنا یہ سب کرنے سے اگلی جنم کی ذات یاد آتی ہے۔

नात्मानमवमन्येतपूर्वाभिरसमृद्धिभिः ॥ आमृत्योः श्रियम-
न्विच्छेन्नैनांमन्येतदुर्लभाम् ॥ १३७ ॥ सत्यंब्रूयात्प्रियंब्रूयान्न
ब्रूयात्सत्यमप्रियम् ॥ प्रियंचनानृतंब्रूयादेषधर्मःसनातनः
॥ १३८ ॥ भद्रंभद्रमितिब्रूयाद्भद्रमित्येववावदेत् ॥ शुष्कवैरंवि-
वादंचनकुर्यात्केनचित्सह ॥ १३९ ॥ नातिकल्यंनातिसायं-
नातिमध्यंदिनेस्थिते ॥ नाज्ञातेनसमंगच्छेन्नैकोनवृषलैःस-
ह ॥ १४० ॥ हीनांगानतिरिक्तांगान्विद्याहीनान्वयोधिकान् ॥
रूपद्रव्यविहीनांश्चजातिहीनांश्चनाक्षिपेत् ॥ १४१ ॥ नस्पृशे-
त्पाणिनोच्छिष्टोविप्रोगोब्राह्मणानलान् ॥ नचापिपश्येद-
शुचिःसुस्थोज्योतिर्गणान्दिवि ॥ १४२ ॥

۱۳۷- افلاس ہونے پر بھی اپنی بیقدری نکرے مرتے دم تک دولت کی تمنّا رکھے
حصول دولت کو غیر ممکن نہ سمجھے۔
۱۳۸- بات سچی اور میٹھی کہے اور اگر سچی ہو اور میٹھی نہو تو نہ کہے اور اگر میٹھی ہو اور سچی نہو
تو بھی نہ کہے یہ روزمرّہ کا دھرم ہے۔
۱۳۹- بُری کو بھی اچھی کہنا چاہیئے خالی عداوت اور جھگڑا کسی سے نہ
کرے۔
۱۴۰- عین صبح اور عین شام اور عین دوپہر کے وقت اور اجنبی شخص اور شودر کے
ساتھ اور اکیلے کہیں نجاوے۔
۱۴۱- کوئی عضو نہ رکھنے والا- کوئی عضو زیادہ رکھنے والا- مورکھ- بوڑھا- بدصورت
نیچ ذات والا کم دولت والا اُنکی بدگوئی نکرے یعنی کانے کو کانا کہکر نہ پکارے۔
۱۴۲- براہمن جوٹھے منھ ہوکر اپنے ہاتھوں سے براہمن و گئو و اگنی کو نہ چھووے اور جو تندرست
اپوتر ہین ہے وہ چاند سورج و ستاروں کو نہ دیکھے۔

मध्यंदिनेऽर्द्धरात्रे च श्राद्धं भुक्त्वा च सामिषम् ॥ सन्ध्ययोरुभयो-
श्चैव न सेवेत चतुष्पथम् ॥१३१॥ उद्वर्तनमपस्नानं विण्मूत्रे रक्त-
मेव च ॥ श्लेष्मनिष्ठ्यूतवान्तानि नाधितिष्ठेत्तु कामतः ॥१३२॥ वै-
रिणं नोपसेवेत सहायं चैव वैरिणः ॥ अधार्मिकं तस्करं च पर-
स्यैव च योषितम् ॥१३३॥ न हीदृशमनायुष्यं लोके किंचन वि-
द्यते ॥ यादृशं पुरुषस्येह परदारोपसेवनम् ॥१३४॥ क्षत्रियं चै-
व सर्पं च ब्राह्मणं च बहुश्रुतम् ॥ नावमन्येत वै भूष्णुः कृशानपि
कदाचन ॥१३५॥ एतत्त्रयं हि पुरुषं निर्दहेदवमानितम् ॥ तस्मा-
देतत्त्रयं नित्यं नावमन्येत बुद्धिमान् ॥१३६॥

۱۳۱ دن کو وقت دوپہر اور آدھی رات کو اور صبح و شام کیوقت اور شرادھ کا مانس بھوجن کرکے چوراہے مین نجاے -

۱۳۲ - ادبٹن کی لیچھی پر استان کرنے سے جو پانی زمین پر گرے اُسپر غلیظ اور پیشاب و نطفہ و کھکھار و تھوک و قے ان سب پر قصداً نہ ٹھہرے -

۱۳۳ - دشمن اور دشمن کا دوست اور ادھرمی اور چور اور پرائی عورت ان سب کی صحبت مین نہ رہے -

۱۳۴ - پرائی عورت کی صحبت کے برابر دوسری کوئی چیز عمر کی گھٹانے والی مرد کیواسطے نہین ہے -

۱۳۵ - جو شخص سب چیزون مین ترقی پانے کی آرزو رکھتا ہو وہ کشتری اور سانپ اور بہت پڑھے ہوئے براہمن اگرچہ ضعیف و لاغر بھی ہون تو بھی اونکی بیقدری نکرے -

۱۳۶ - یہ تینون توہین پانے سے ناش کرتے ہین اسلیئے عقلمند آدمی ان تینون کی بیقدری نکرے -

सतद्विदन्तो विद्वासस्त्रयी निष्कर्षमन्वहम्॥ क्रमतः पूर्वमभ्य
स्यपश्चाद्वेदमधीयते॥१२५॥ पशुमण्डूकमार्जारश्वसर्पनकु
लाखुभिः॥ अन्तरागमने विद्यादनध्यायमहर्निशम्॥१२६
द्वावेव वर्जयेन्नित्यमनध्यायौ प्रयत्नतः॥ स्वाध्यायभूमिं चाशु
द्धामात्मानं चाशुचिं द्विजः॥१२७॥ अमावस्यामष्टमीं च पौर्ण
मासीं चतुर्दशीम्॥ ब्रह्मचारी भवेन्नित्यमप्यृतौ स्नातको द्वि-
जः॥१२८॥ न स्नानमाचरेद्भुक्त्वा नातुरो न महानिशि॥ न वा-
सोभिः सहाजस्रं नाविज्ञाते जलाशये॥१२९॥ देवतानां गुरो
राज्ञः स्नातकाचार्ययोस्तथा॥ नाक्रामेत्कामतश्छायां बभ्रु
णो दीक्षितस्य च॥१३०॥

۱۲۵- اسبات کے جاننے والے جو پرش ہین وہ ہر روز تینون ویدون کا سار بھوت اونکار- بیاہرت- گایتری- ان تینون کو سلسلے سے پڑھکر پیچھے وید کو پڑھتے ہین-

۱۲۶- چوپایہ- مینڈک- بلی- کتا- سانپ- نیولا- چوہا- اِن مین سے کوئی ایک اگر گرو اور چیلے کے بیچ سے نکل جاوے تو ایک رات اندھیاے کرنا-

۱۲۷- پڑھنے کی زمین یا اپنا جسم ناپاک ہو تو بھی نہ پڑھے اِن دونون اندھیاے مین پڑھنا جتن سے تیاگ کرے

۱۲۸- سناتک برہمچاری کال ہین بھی اماوس اشٹمی اور پورنماشی چتردشی ان تتھون مین استری سے بھوگ نکرے

۱۲۹- بھوجن کرکے اور آتر ہو تو اسنان نکرے کپڑا پہنے ہوئے بھی بار بار اسنان نکرے آدھی رات کو اور جو جل کا استھان جانا ہوا نہین ہے اُس مین اسنان نکرے-

۱۳۰- دیوتا- گرو- راجہ- سناتک- اچارج- کپل- برن- جو شخص یگیہ کرنے کو ہے اُنھون مین سے کسی کی چھایا جتن سے نہ لانگھنا چاہیے-

* یعنی سگہرہ جبرہ گوہ وغیرہ-

उपाकर्मणिचोत्सर्गे त्रिरात्रंक्षेपणंस्मृतम्॥ अष्टकासुत्वहोरा-
त्रमृत्वन्तासु चरात्रिषु ॥ ११९॥ नाधीयीताश्वमारूढोनवृ-
क्षंनचहस्तिनम्॥ ननावंनखरंनोष्ट्रंनेरिणस्थोनयानगः॥१२०
॥ नविवादेनकलहेनसेनायांनसंगरे॥ नभुक्तमात्रेनाजीर्णेनव-
मित्वानसूतके॥१२१॥ अतिथिंचाननुज्ञाप्यमारुतेवातिवा
भृशम्॥ रुधिरेचस्रुतेगात्राच्छस्त्रेणचपरिक्षते॥१२२॥ सा-
मध्वनावृग्यजुषीनाधीयीतकदाचन॥ वेदस्याधीत्यवाप्यन्त-
मारण्यकमधीत्यच॥ १२३॥ ऋग्वेदोदेवदैवत्योयजुर्वेद-
स्तुमानुषः॥ सामवेदःस्मृतः पित्र्यस्तस्मात्तस्याशुचिर्ध्वनिः
॥१२४॥

۱۱۹ اپاکرن مین اور اُتسرگ مین تین رات اشٹکا مین ایک دن رات اور رت کے
انت مین ایک دن رات اندھیایا کرنا چاہئے۔

۱۲۰- گھوڑا- ہاتھی- درخت- ناؤ- گدھا- اونٹ- اوسر زمین- سواری- انھون پر
بیٹھکر وید کو نہ پڑھے-

۱۲۱- لڑائی- جھگڑا- رنج- فوج کی لڑائی- بدہضمی- قے- ان سب مین بھی اندھیایے
جاننا اور بھوجن کرکے بھی نہ پڑھنا-

۱۲۲- بہت ہوا چلنے مین بدن سے خون نکلنے مین ہتھیار سے گھاؤ لگنے مین اتتھی کی
بلا مرضی مین بھی اندھیایے جاننا-

۱۲۳- سام وید کو سنکر رگ وید اور یجر وید کو نہ پڑھے وید کا انت اور رنیک پڑکرن
ان دونون مین سے کسی کو پڑھکر اندھیایے کرے-

۱۲۴- رگ وید کے دیوتا دیو مین یجر وید کے دیوتا منشیہ مین سام وید کے دیوتا پتر
مین اس سے سام وید کا شبد پوتر نہین ہے

नीहारेबाणशब्देचसन्ध्ययोरेवचोभयोः॥ अमावस्याचतुर्द-
श्योःपौर्णमास्यष्टकासुच॥११३॥ अमावस्यांगुरुंहन्तिशि-
ष्यंहन्तिचतुर्दशी॥ब्रह्माष्टकापौर्णमास्यौतस्मात्ताःपरिवर्ज-
येत्॥११४॥पांसुवर्षेदिशांदाहेगोमायुविरुतेतथा॥श्वखरोष्ट्रे
चरुवतिपंक्तौचनपठेद्द्विजः॥११५॥नाधीयीतश्मशानान्तेग्रा-
मान्तेगोव्रजेऽपिवा॥वसित्वामैथुनंवासःश्राद्धिकंप्रतिगृह्यच॥
११६॥प्राणिवायदिवाऽप्राणियत्किंचिच्छ्राद्धिकंभवेत्॥त-
दालभ्याप्यनध्यायःपाण्यास्योहिद्विजःस्मृतः॥११७॥चौरै
रुपप्लुतेग्रामेसंभ्रमेनाग्निकारिते॥आकालिकमनध्यायंवि
द्यात्सर्वाद्भुतेषुच॥११८॥

۱۳۔ کُہرا پڑتے وقت بان کا شبد دونوں سندھیا۔ اماوس۔ چتردشی۔ پورنماشی
اسٹمی۔ اِن سب میں وید کو نہ پڑھے۔
۱۴۔ اماوس گرو کو چتردشی چیلہ کو اسٹمی و پورنماشی وید کو ناش کرتی ہے اسلیے اِن
سب کو ہٹاے دے۔
۱۵۔ جس وقت خاک اُڑتی ہو یا کسی طرف آگ لگی ہو یا سیارنی و کُتّا و گدہا و اونٹ روتا ہو
اور پنگت اِن سب میں وید کو نہ پڑھے۔
۱۶۔ مرگھٹ اور گؤشالہ اور گاؤں کے پاس اور جماع کے وقت والے کپڑے پہن کر
اور شرادھ کے اَن کو لیکر وید کو نہ پڑھے۔
۱۷۔ شرادھ کی چیز خواہ جاندار ہو یا بے جان اُسکو لیکر وید کو نہ پڑھے کیونکہ براہمن
اُسکا منھ ہاتھ ہے۔
۱۸۔ جس گاؤں میں چوری بہت ہوئی ہو اُسمیں اور آگ کے داہ میں اور اَدبھت کرم
کے دیکھنے میں اوس وقت سے دوسرے دن کے اسی وقت تک انادھیاے جاننا۔

नित्यानध्याय एव स्याद्ग्रामेषु नगरेषु च ॥ धर्मनैपुण्यका-
मानां पूतिगन्धे च सर्वदा ॥ १०७ ॥ अन्तर्गतशवे ग्रामे वृषलस्य
च सन्निधौ ॥ अनध्यायो रुद्यमाने समवाये जनस्य च ॥ १०८ ॥
उदके मध्यरात्रे च विण्मूत्रस्य विसर्जने ॥ उच्छिष्टः श्राद्धभुक्
चैव मनसापि न चिन्तयेत् ॥ १०९ ॥ प्रतिगृह्य द्विजो विद्वाने-
कोद्दिष्टस्य केतनम् ॥ त्र्यहं न कीर्तयेद्ब्रह्म राज्ञो राहोश्च सू-
तके ॥ ११० ॥ यावदेकानुदिष्टस्य गन्धो लेपश्च तिष्ठति ॥ वि-
प्रस्य विदुषो देहे तावद्ब्रह्म न कीर्तयेत् ॥ १११ ॥ शयानः प्रौ-
ढपादश्च कृत्वा चैवावसक्थिकाम् ॥ नाधीयीतामिषं जग्-
ध्वा सूतकान्नाद्यमेव च ॥ ११२ ॥

۱۰۷- گانوں اور شہر مین تو ہر روز اندھیائے ہے اور درگندھ مین بھی اندھیا کرنا چاہئے پورا دھرم کرنے کی کامنا والے کو-

۱۰۸ جبتک گانون مین مردہ پڑا رہے تب تک ادھرمی کے پاس اور رونے مین اور دوسرے کام کے لئے بہت آدمیون کے ملاپ مین اندھیائے جاننا-

۱۰۹- پانی مین اور آدھی رات کو پاخانہ و پیشاب کرتے وقت دل مین بھی وید کا خیال نہ لاوے اور جوٹھے منھ اور شرادھ مین بھوجن کرکے بھی کو نہ پڑھے-

۱۱۰- ایکودشٹ شرادھ کا نیوتا لیکر نیوتا کے دن سے تین دن تک وید کو نہ پڑھے اور راجا کے سوتک مین اور چندر سورج کے گرہن مین بھی-

۱۱۱- جبتک ایکودشٹ شرادھ کی بوباس بدن مین رہے تب تک وید کو نہ پڑھے-

۱۱۲- مانس اور سوتک کا ان دونون مین سے کسی ایک کو بھوجن کرکے اور سوتے ہوئے اور آسن پر پانون رکھے ہوئے اور دونون گھٹنون کو بیچ کیے ہوئے وید کو نہ پڑھے-

इमान्नित्यमनध्यायानधीयानो विवर्जयेत्॥ अध्यापनं चकु-
र्वाणः शिष्याणां विधिपूर्वकम्॥१०१॥ कर्णश्रवेऽनिलेरात्रौ
दिवापांसुसमूहने॥ एतौवर्षास्वनध्यायावध्यायज्ञाः प्रचक्ष-
ते॥१०२॥ विद्युत्स्तनितवर्षेषु महोल्कानांचसंप्लवे॥ आका-
लिकमनध्यायमेतेषुमनुरब्रवीत्॥१०३॥ एतांस्त्वभ्युदितांवि
द्याद्यदाप्रादुष्कृताग्निषु॥ तदाविद्यादनध्यायमनृतौचाभ्रद
र्शने॥१०४॥ निर्घातेभूमिचलनेज्योतिषांचोपसर्जने॥ एता-
नाकालिकान्विद्यादनध्यायानृतावपि॥१०५॥ प्रादुष्कृतेष्व
ग्निषुतुविद्युत्स्तनितनिःस्वने॥ सज्योतिःस्यादनध्यायःशे-
षेरात्रौयथादिवा॥१०६॥

۱۰۱ - آگے جو اندھیا (یعنی روز تعطیل) کہینگے اُنہین گرو اور چیلہ دونون وید کو نہ پڑھین پڑھاوین

۱۰۲ - رات کے وقت کان مین ہوا سنسناتی ہو اور دن مین دھول اُڑتی ہو تو برسات مین اُس دن اندھیاے جاننا یہ بات اندھیاے جاننے والے نے کہا ہے۔

۱۰۳ - بجلی کا چمکنا گرجنا برستا ہوتے مین بجلی کا ٹوٹنا ایسے وقت مین دوسرے دن اُسیوقت تک اندھیاے سے یہ بات منوجی نے کہا ہے۔

۱۰۴ - بجلی کا چمکنا گرجنا پانی برسنا یہ تینون شام کیوقت ہون تو فصل برسات مین اندھیا جاننا ہمیشہ نہین کیونکہ برسات مین تو یہ سب ہوتے ہی ہین اور اگر بے فصل ابر دکھائی دے تو بھی اندھیا جاننا

۱۰۵ - اکاش مین اوتپات کا شبد ہوا اور بھوچال اور چندر سورج تارا ان سب کا اپدرو ہو تو جسوقت یہ ہون اُس سے دوسرے دن اُسیوقت تک اندھیاے ہر فصل مین جاننا۔

۱۰۶ - وقت صبح و شام ہون کے لیئے آگ لکڑی کے گھسنے سے ظاہر ہوئی اور اسیوقت بجلی کا چمکنا اور گرجنا ہوا مگر برسنا نہوئی تو دن بھر اندھیا ہے اور اگر وقت صبح و شام اوپر کہی ہوئی تینون باتین ہون تو صرف رات بھر اندھیا جاننا دوسرے دن کے اسیوقت تک۔

श्रावण्यां प्रौष्ठपद्यां वाप्युपाकृत्य यथाविधि॥ युक्तश्छन्दा-
स्यधीयीत मासान्विप्रोऽर्धपञ्चमान्॥९५॥ पुष्ये तु छन्दसां कु
र्याद्बहिरुत्सर्जनं द्विजः॥ माघशुक्लस्य वा प्राप्ते पूर्वाह्णे प्रथ
मेऽहनि॥९६॥ यथाशास्त्रं तु कृत्वैवमुत्सर्गं छन्दसां बहिः॥
विरमेत्पक्षिणीं रात्रिं तदेवैकमहर्निशम्॥९७॥ अत ऊर्ध्वं तु
छन्दांसि शुक्लेषु नियतः पठेत्॥ वेदाङ्गानि च सर्वाणि कृष्ण-
पक्षेषु संपठेत्॥९८॥ नाविस्पष्टमधीयीत न शूद्रजनसन्निधौ
॥ न निशान्ते परिश्रान्तो ब्रह्माधीत्य पुनः स्वपेत्॥९९॥ यथो-
दितेन विधिना नित्यं छन्दस्कृतं पठेत्॥ ब्रह्म छन्दस्कृतं चैव द्वि
जो युक्तो ह्यनापदि॥१००॥

۹۵- ساون یا بھادون مین بدھ سے اُپاکرم کرکے ساڑھے چار مہینے تک کوشش کرکے وید کو پڑھے۔

۹۶ ساڑھے چار مہینہ بعد پکھیہ نکشتر مین گانون سے باہر جاکر چھند کا تیاگ کرے اور ساون یا بھادون مین جو اُپاکرن کیا ہو اسکو ماگھ شکل پرتپدا مین پورباہن کال مین اُتسرجن کرے۔

۹۷- اسطرح گانون کے باہر جاکر یتھا شکت اُتسرگ کرکے پکھشی* رات تک یا اُتسرگ کا دن رات تک وید نہ پڑھے۔

۹۸- اسکے بعد نیم سے شکل پکش مین وید کو اور کرشن پکش مین شاستر کو پڑھے۔

۹۹ پڑھنے مین حرف حرف صاف زبان سے نکلے اور شودر کے پاس نہ پڑھے اور اگر رات کے چوتھے پہر مین وید کے پڑھنے سے تھک جاوے تو سووے نہین۔

۱۰۰- جو بدھ کہی گئی اسی بدھ سے ہر روز وید کے دونون بھاگ (یعنی منتر اور براہمن) کو پڑھے

* یعنی اُتسرگ کا دن اور آنیوالا دن یہ دونون پکش کی طرح ہین ان دونون کے بیچ کی رات۔

संजीवनंमहावीचिंतपनंसम्प्रतापनम् ॥ संहातंचसकाकोलंकुड्मलंप्रतिमूर्त्तिकम् ॥ ८९ ॥ लोहशंकुमृजीषंचपन्थानंशाल्मलींनदीम् ॥ असिपत्रवनंचैवलोहदारकमेवच ॥ ९० ॥
एतद्विदन्तोविद्वांसोब्राह्मणाब्रह्मवादिनः ॥ नराज्ञःप्रतिगृह्णन्तिप्रेत्यश्रेयोऽभिकांक्षिणः ॥ ९१ ॥ ब्राह्मेमुहूर्त्तेबुध्येतधर्म्मार्थौचानुचिंतयेत् ॥ कायक्लेशांश्चतन्मूलान्वेदतत्वार्थमेवच ॥ ९२ ॥ उत्थायावश्यकंकृत्वाकृतशौचःसमाहितः ॥ पूर्व्वांसन्ध्यांजपंस्तिष्ठेत्स्वकालेचापरांचिरम् ॥ ९३ ॥ ऋषयोदीर्घसन्ध्यत्वाद्दीर्घमायुरवाप्नुयुः ॥ प्रज्ञांयशश्चकीर्त्तिंचब्रह्मवर्चसमेवच ॥ ९४ ॥

٨٩ - سنجیون - مہاویچ - تپن - سمپرتاپن - سنگھات - کاکول - کڈمل - پوتی مرتک -

٩٠ - لوہ شنک - رجیش - شال ملی ندی - اسی پتربن - لوہ دارک -

٩١ - اسباب کے جاننے والے اور پرلوک مین کلیان چاہنے والے اور وید کے پڑھنے والے جو براہمن ہین وہ راجہ سے دان نہین لیتے -

٩٢ - دو گھڑی رات رہے اٹھکر دھرم اور ارتھ کا دھیان کرے دھرم وارتھ کی جڑ جو کایا کلیس ہے اسکو اور وید کے تتوارتھ یعنے برہم گیان کو بھی دھیان کرے

٩٣ - اٹھکر ضروری کامون سے فرصت کرکے اطمینان کے ساتھ طہارت کرے اور صبح و شام سندھیا مین دیر تک جپ کرتا رہے -

٩٤ - دیر تک سندھیا کرنے سے رشی لوگون نے بڑی عمر کو پایا ہے اور بدھ ادرش اور کیرت اور برہم تیج کو بھی پایا ہے

केशग्रहान्प्रहारांश्चशिरस्येतान्विवर्जयेत् ॥ शिरःस्नातश्चतैलेन नांगंकिंचिदपिस्पृशेत् ॥ ८३ ॥ नराज्ञःप्रतिगृह्णीयादराजन्यप्रसूतितः ॥ सूनाचक्रध्वजवतांवेश्येनैवचजीवताम् ॥ ८४ ॥ दशसूनासमंचक्रंदशचक्रसमोध्वजः ॥ दशध्वजसमोवेशोदशवेशसमोनृपः ॥ ८५ ॥ दशसूनासहस्राणियोवाहयतिसौनिकः ॥ तेनतुल्यःस्मृतोराजाघोरस्तस्यप्रतिग्रहः ॥ ८६ ॥ योराज्ञःप्रतिगृह्णातिलुब्धस्योच्छास्त्रवर्जितः ॥ सपर्य्यायेणयातीमान्नरकानेकविंशतिम् ॥ ८७ ॥ तामिस्रमन्धतामिस्रंमहारौरवरौरवौ ॥ नरकंकालसूत्रंचमहानरकमेवच ॥ ८८ ॥

۸۳ - غصہ سے اپنے یا دوسرے کے سر مین نہ مارے اور بالون کو نہ کھینچے اگر سر مین تیل لگا کر اسنان کرے تو پھر اور کسی عضو مین تیل نہ لگا وے -

۸۴ - جو راجا کشتری نہین ہے اُس سے اور کسائی اور تیلی اور کلار اور جو مرد یا عورت بیسوا کی جیوکا سے جینے والے ہین اِن سب سے دان نہ لیوے -

۸۵ - دس کسائی کے برابر تیلی ہے دس تیلی کے برابر کلار ہے دس کلار کے برابر بیسوا ہے دس بیسوا کے برابر راجا ہے -

۸۶ - جو کسائی اپنے لیئے دس ہزار جان مارتا ہے اسکے برابر راجا ہے اسوجہ سے راجا کا دان سخت ہے -

۸۷ - جو راجا لالچی اور خلاف شاستر کے کام کرنے والا ہے اُس سے جو کوئی دان لیتا ہے وہ سلسلے سے اکیس قسم کے نرک جو آگے کہین گے اُن مین جاتا ہے -

۸۸ - تامسر - اندھتامسر - مہارورو - رورو - نرک - کال - سوتر - مہا نرک -

अचक्षुर्विषयंदुर्गंनप्रमाद्येतकर्हिचित्॥नविण्मूत्रंनिरीक्षेत नबाहुभ्यांनदींतरेत्॥७७॥अधितिष्ठेन्नकेशांस्तुनभस्मास्थिक पालिकाः॥नकार्पासास्थिनतुषान्दीर्घमायुर्जिजीविषुः॥७८॥ नसंवसेच्चपतितैर्नचाण्डालैर्नपुल्कसैः॥नमूर्खैर्नावलिप्तैश्चनां त्यैर्नान्त्यावसायिभिः॥७९॥नशूद्रायमतिंदद्यान्नोच्छिष्टंनह विष्कृतम्॥नचास्योपदिशेद्धर्मंनचास्यव्रतमादिशेत्॥८०॥ योह्यस्यधर्ममाचष्टेयश्चैवादिशतिव्रतम्॥सोऽसंवृतंनामतमः सहतेनैवगच्छति॥८१॥नसंहताभ्यांपाणिभ्यांकण्डूयेदात्म नःशिरः॥नस्पृशेच्चैतदुच्छिष्टोनचस्नायाद्विनाततः॥८२॥

۷۷- جو ملک آنکھوں سے دیکھا نہیں ہے، اور جس مقام پر مرجانیکا اندیشہ ہے اُس ملک و مقام میں کبھی نہ جاوے اور اپنے غلیظ و پیشاب کو کبھی آنکھوں سے نہ دیکھے اور ندی کو ہاتھوں سے تیرے

۷۸- زیادہ عمر کا چاہنے والا آدمی بال یا راکھ یا ہڈی یا مٹی کے ٹوٹے ہوئے برتنوں کے ٹکڑے یا بنولا یا بھوسا پر کھڑا نہ رہے —

۷۹- دوسرے گانوں کے رہنے والے آدمی جو پتت چانڈال پکس* مغروران دولت مورکھ دھوبی وغیرہ دانتیا وسائی ہوں اُنکے ساتھ ایک درخت کے سایہ میں نہ رہے —

۸۰- شودر کو صلاح نہ دیوے اور اس کے اور شودروں کو جو کھانا ان ندے جو ہبیہ ہوں کرنے سے بچ رہا ہے وہ شودر کو نہ دے اور وہ هوم اور برت کا اپدیش کبھی شودر کو نہ دے —

۸۱- جو شخص شودر کو دھرم اور برت کا اپدیش دیتا ہے وہ مع اُس شودر کے اسمبرت نام نرک میں جاتا ہے،

۸۲- ملے ہوئے دونوں ہاتھوں سے اپنے سر کو نہ کھجلاوے اور ہاتھ جوٹھے ہوں تو سر کو نہ چھوئے اور سر کو چھوڑ کر گلے سے اسنان نہ کرے یعنی سر سے پاؤں تک اسنان کرے —

* یعنے نکھاد سے شودر استری میں پیدا — + یعنے چانڈال سے نکھاد استری میں پیدا — + گرمار کنڈے پران میں لکھا ہے کہ بغیر ضرورت کے سر سے اسنان نہ کرے —

लोष्ठमर्दी तृणच्छेदी नखखादी च यो नरः॥ स विनाशं व्रजत्या-
श्वशु सूचकोऽशुचिरेव च॥७१॥ न विगर्ह्य कथां कुर्याद्बहिर्मा-
ल्यं न धारयेत्॥ गवां च यानं पृष्ठेन सर्वथैव विगर्हितम्॥७२॥
अद्वारेण च नातीयाद्ग्रामं वा वेश्म वावृतम्॥ रात्रौ च वृक्षमू-
लानि दूरतः परिवर्जयेत्॥७३॥ नाक्षैः क्रीडेत्कदाचित्तु स्वयं
नोपानहौ हरेत्॥ शयनस्थोऽपि भुञ्जीत न पाणिस्थं न चा-
सने॥७४॥ सर्वं च तिलसंबद्धं नाद्यादस्तमिते रवौ॥ न च नग्नः
शयीतेह न चोच्छिष्टः क्वचिद्व्रजेत्॥७५॥ आर्द्रपादस्तु भुञ्जी-
त नार्द्रपादस्तु संविशेत्॥ आर्द्रपादस्तु भुञ्जानो दीर्घमायुर-
वाप्नुयात्॥७६॥

۷۱ - ڈھیلا مردن کرنیوالا تنکا توڑنے والا دانتوں سے ناخن اکھاڑنیوالا چغلی کرنیوالا ناپاک رہنے والا جلد ناش ہو جاتا ہے۔

۷۲ - لوک ریت یا وید ریت میں دل لگا کر قصہ گوئی نکرے بالوں میں مالا نہ پہنے بیل کی پیٹھ پر چڑھکر نہ چلے یہ سب باتیں ہمیشہ منع ہیں۔

۷۳ - گاؤں یا گھر یہ دونوں طرف سے گھرے ہوئے ہوں تو دروازہ چھوڑکر اور طرف سے پھاند کر اسکے اندر نجاے اور رات کے وقت درخت کی جڑ میں نرہے۔

۷۴ - پانسا نہ کبھی کھیلے اپنا جوتا اپنے ہاتھ سے اٹھا کر ایک جگہ سے دوسری جگہ نلیجاے بلکہ پاؤں سے لیجاے چارپائی پر بیٹھکر اور بہت ان کو ہاتھ میں رکھکر اسمیں سے تھوڑا تھوڑا نکال کر اور آسن کے اوپر بھوجن کے پاتر کو رکھکر بھوجن نکرے۔

۷۵ - تل ملی ہوئی چیز کو رات کے وقت نہ کھاے ننگا ہوکر نسووے جوٹھے منھ کہیں نجاے۔

۷۶ - گیلے پاؤں ہوکر بھوجن کرنا اچھا ہے مگر گیلے پاؤں ہوکر سونا منع ہے جو شخص پاؤں دھوکر بھوجن کرتا ہے وہ بڑی عمر پاتا ہے۔

न पादौ धावयेत्कांस्ये कदाचिदपि भाजने॥ न भिन्नभाण्डे भु-
ञ्जीत न भावप्रतिदूषिते॥६५॥ उपानहौ च वासश्च धृतमन्यै-
र्न धारयेत्॥ उपवीतमलंकारं स्रजं करकमेव च॥६६॥ नावि-
नीतैर्भजेद्धुर्यैर्न च क्षुद्व्याधिपीडितैः॥ न भिन्नशृंगाक्षिखुरैर्न-
वालधिविरूपितैः॥६७॥ विनीतैस्तु व्रजेन्नित्यमाशुगैर्लक्षणा-
न्वितैः॥ वर्णरूपोपसम्पन्नैः प्रतोदेनातुदन्भृशम्॥६८॥ बा-
लातपः प्रेतधूमो वर्ज्यं भिन्नं तथासनम्॥ न छिन्द्यान्नखलो-
मानि दन्तैर्नोत्पाटयेन्नखान्॥६९॥ न मृल्लोष्ठं च मृद्नीयान्न-
च्छिन्द्यात्करजैस्तृणम्॥ न कर्म निष्फलं कुर्यान्नायत्यामसु-
खोदयम्॥७०॥

۶۵ - کانسے کے برتن مین پاؤن نہ دھووے اور پھوٹے برتن مین یا جس برتن مین اپنا من پرسن نہو اُسمین بھوجن نکرے -

۶۶ - جوتا - چھتری - جنیو - گہنا - پھولونکی مالا کمنڈل کپڑا - ان سب کو اگر کسی نے استعمال کیا ہو تو آپ استعمال نکرے -

۶۷ - جس رتھہ مین ایسا بیل لگا ہو کہ جسکو رتھہ مین چلنا نہ سکھایا گیا ہو یا بھوکھا یا پیاسا یا بیمار ہو یا جسکی سینگ آنکھہ کھر لو چھہ ٹوٹ گئی ہو ایسے رتھہ پر سوار ہوکر نہ چلے -

۶۸ - جس رتھہ مین ایسا بیل لگا ہو کہ جسکو رتھہ مین چلنا سکھایا گیا ہو اور دلکش رنگ روپ جسکا اچھا ہو اُس رتھہ پر سوار ہوکر چلے مگر بیل کو پینیا سے نہ مارے -

۶۹ - صبح کے وقت تین گھڑی تک سورج کا گھام اور کسی کے مت مین کنیان راس مین سورج کا گھام چلتے ہوئے مردے کا دھوان ٹوٹا آسن ان سب سے علیحدہ رہے بال اور ناخن نہ نوچے اور ناخن کو دانتونسے نہ اوکھاڑے -

۷۰ - مٹی اور ڈھیلا کو نہ مردن کرے ناخن سے تنکے نہ توڑے بیفائدہ کام نکرے اور جسکام کے کرنیسے سکھہ ہونیوالا نہین اسکام کو نکرے

नावारयेद्गांधयन्तींनचाचक्षीतकस्यचित्॥ नदिवीन्द्रायुधंदृ-
ष्ट्वाकस्यचिद्दर्शयेद्बुधः॥ ५९॥ नाधार्मिकेवसेद्ग्रामेनव्याधि
बहुलेभृशम्॥ नैकःप्रपद्येताध्वानंनचिरंपर्वतेवसेत्॥६०॥
नशूद्रराज्येनिवसेन्नाधार्मिकजनावृते॥ नपाषण्डिगणा
क्रान्तेनोपसृष्टेऽन्त्यजैर्नृभिः॥ ६१॥ नभुंजीतोद्धृतस्नेहंना-
तिसौहित्यमाचरेत्॥ नातिप्रगेनातिसायंनसायंप्रातराशि-
तः॥ ६२॥ नकुर्वीतवृथाचेष्टांनवार्य्यञ्जलिनापिबेत्॥ नो-
त्सङ्गेभक्षयेद्भक्ष्यान्नजातुस्यात्कुतूहली॥ ६३॥ ननृत्येदथ-
वागायेन्नवादित्राणिवादयेत्॥ नास्फोटयेन्नचक्ष्वेडेन्नच
रक्तोविरावयेत्॥ ६४॥

۵۹- دودھ یا پانی پیتی ہوئی گئو کو نہ ہٹاوے اور نہ کسی سے کہے اور اندر دھنکھ کو دیکھکر کسی کو نہ دکھاوے-

۶۰- جس گانوں میں دھرم نہیں ہے- اور آفتوں سے بھرا ہوا، اوسمین نہ رہے اکیلے راہ نہ چلے بہت دنوں تک پہاڑ پر نہ رہے-

۶۱- جس گانوں میں شودر کا راج ہے اور جسمین ادھرمی پاکھنڈی چانڈال آدمی فساد کرتے ہوں اس گانوں میں نہ رہے-

۶۲- جس چیز سے تیل نکال لیا گیا ہو اسکو نہ کھاوے اور عین صبح اور عین شام کے وقت بھوجن نکرے اور بہت بھوجن نکرے اور اگر صبح کو زیادہ کھا گیا ہو تو شام کو نہ کھاوے-

۶۳- جس تجارت سے اس لوک اور پرلوک میں کچھ فائیدہ نہ ہو اسکو نکرے اور چلّو سے پانی نہ پیئے جانگھ پر لڈو وغیرہ رکھکر نہ کھاوے اور بے مطلب کسی کے بھید جاننے کی خواہش نکرے-

۶۴- ناچنا- گانا- بجانا- تالی ٹھوکنا- کٹ کٹانا- بھنگ سے گدھے وغیرہ کی بولی بولنا سب باتوں سے پرہیز کرے-

नाग्निंमुखेनोपधमेन्नग्नांनेक्षेतचस्त्रियम्॥ नामेध्यंप्रक्षिपे-
दग्नौनचपादौप्रतापयेत्॥ ५३॥ अधस्तान्नोपदध्याच्चनचैनम-
भिलंघयेत्॥ नचैनंपादतःकुर्य्यान्नप्राणाबाधमाचरेत्॥ ५४॥
नाश्नीयात्सन्धिवेलायांनगच्छेन्नापिसंविशेत्॥ नचैवप्र-
लिखेद्भूमिंनात्मनोपहरेत्स्रजम्॥ ५५॥ नाप्सुमूत्रंपुरीषंवा
ष्ठीवनंवासमुत्सृजेत्॥ अमेध्यलिप्तमन्यद्वालोहितंवाविषा-
णिवा॥ ५६॥ नैकःस्वपेच्छून्यगेहेशयानंनप्रबोधयेत्॥ नो-
दक्ययाभिभाषेतयज्ञंगच्छेन्नचावृतः॥ ५७॥ अग्न्यगारेग-
वांगोष्ठेब्राह्मणानांचसन्निधौ॥ स्वाध्यायेभोजनेचैवदक्षि-
णांपाणिमुद्धरेत्॥ ५८॥

۵۳ - اگن کو منھ سے نہ پھونکنا اور اگن میں ناپاک چیز نہ ڈالنا اور پانوں کو نہ تپانا اور ننگی استری کو نہ دیکھنا چاہیئے -

۵۴ - چارپائی کے نیچے اگن کو نہ رکھنا اور نہ اسکو نانگھنا اور نہ پانوں سے چھونا اور نہ پران بادھا کرنا چاہیئے -

۵۵ - وقت صبح و شام کھانا اور سونا اور چلنا نچاہیے اور زمین پر لکیریں نہ کھینچے اور جو پھول کی مالا اپنے بدن میں پہنے اسکو آپ نہ اُتارے دوسرے سے اُتروا لے -

۵۶ - پانی میں پیشاب اور غلیظ اور کھنکھار اور ناپاک چیز اور خون اور زہر ان سب کو نہ ڈالنا چاہیئے -

۵۷ - گھر میں اکیلا نہ سووے اور جو شخص آپ سے علم وغیرہ میں زیادہ ہو اور سوتا ہو اوسکو نہ جگا دے اور حیض والی عورت سے بات نہ کرے اور بغیر بلائے یگیہ میں نجاوے -

۵۸ - اگن کا گھر - گیو کا استھان - براہمن کے پاس وید کا پڑھنا - بھوجن کا کرنا ان سب میں داہنا ہاتھ نکالنا چاہیئے -

नससत्वेषुगर्तेषुनगच्छन्नापिचस्थितः॥ननदीतीरमासाद्य
नचपर्व्वतमस्तके॥ ४७॥ वाय्वग्निविप्रमादित्यमपःपश्यं
स्तथैवगाः॥ नकदाचनकुर्वीतविण्मूत्रस्यविसर्जनम्॥ ४८
॥ तिरस्कृत्योच्चरेत्काष्ठलोष्ठपत्रतृणादिना॥ नियम्यप्रयतो
वाचंसंवीतांगोऽवगुण्ठितः॥४९॥ मूत्रोच्चारसमुत्सर्गंदिवा
कुर्यादुदङ्मुखः॥ दक्षिणाभिमुखोरात्रौसन्ध्ययोश्चयथादि-
वा॥ ५०॥ छायायामन्धकारेवारात्रावहनिवाद्विजः॥ यथा
सुखमुखःकुर्य्यात्प्राणबाधभयेषुच॥ ५१ ॥प्रत्यग्निंप्रतिसू-
र्य्यंचप्रतिसोमोदकद्विजान्॥ प्रतिगांप्रतिवातंचप्रज्ञानश्य-
तिमेहतः॥ ५२॥

۴۷- کھڑے ہوکر اور اس گڑھے میں جسمیں جاندار رہتے ہوں اور چلتے ہوئے اور ندی کے کنارہ اور پہاڑ کے چوٹی پر بھی پاخانہ وپیشاب نکرے-

۴۸- اگن- سورج- جل- براہمن- گئو- ہوا- ان سب کو دیکھتے ہوئے بھی پاخانہ وپیشاب نکرے-

۴۹- سوکھا پتہ گھاس پھوس- کاٹھ ڈھیلا وغیرہ سے زمین کو چھپا کر اور سر کو باندھکر سب اعضا کو کپڑے سے پوشیدہ کرکے خاموش ہوکر پاخانہ وپیشاب کرے-

۵۰- دن کو وقت صبح وشام اُتر طرف منھ کرکے اور رات کو دکشن طرف منھ کرکے پاخانہ وپیشاب کرے-

۵۱- چھایا- اندھکار- پران بادھا- بھئے- ان سب میں رات یا دن کو جس طرف منھ کرنے سے سکھ ہو اُس طرف منھ کرکے پاخانہ وپیشاب کرے-

۵۲- اگن- سورج- سوم- جل- براہمن- گئو- ہوا- ان سب کو دیکھتے ہوئے پاخانہ وپیشاب کرنے سے بدھ کا ناش ہوتا ہے-

रजसाभिप्लुतांनारींनरस्यह्युपगच्छतः॥ प्रज्ञातेजोबलंचक्षु-
रायुश्चैवप्रहीयते॥ ४१॥ तांविवर्जयतस्तस्यरजसासमभि-
प्लुताम्॥ प्रज्ञातेजोबलंचक्षुरायुश्चैवप्रवर्द्धते॥४२॥नाश्नीया
द्भार्य्ययासार्द्धंनैनामीक्षेतचाश्नतीम्॥ क्षुवतींजृम्भमाणांवा
नचासीनांयथासुखम्॥ ४३॥ नांजयन्तींस्वकेनेत्रेनचाभ्य-
क्तामनावृताम्॥ नपश्येत्प्रसवन्तींचतेजस्कामोद्विजोत्तमः
॥४४॥नान्नमद्यादेकवासाननग्नःस्नानमाचरेत्॥ नमूत्रं-
पथिकुर्वीतनभस्मनिनगोव्रजे॥ ४५॥नफालकृष्टेनज-
लेनचित्यांनचपर्व्वते॥ नजीर्णदेवायतनेनवल्मीकेकदा
चन॥४६॥

۴۱- جو شخص حیض والی عورت سے صحبت کرتا ہے اسکی عقل و جلال و قوت و نظر و عمر یہ سب کم ہو جاتی ہے -

۴۲- جو شخص حیض والی عورت سے صحبت نہین کرتا ہے اسکی عقل و جلال و قوت و نظر و عمر یہ سب بڑھتی ہے -

۴۳- عورت کے ساتھہ بھوجن نکرنا اور جسوقت عورت کھاتی ہو یا چھینکتی ہو یا جمہائی لیتی ہو یا سکھ سے بیٹھی ہو تو اوسکو نہ دیکھنا چاہیے -

۴۴- اور جسوقت عورت آنکھون مین انجن یا بدن مین ابٹن لگاتی ہو یا ننگی ہو یا لڑکا جنتی ہو تو اوسکو نہ دیکھے جس براہمن کو تیج کی اچھا ہو -

۴۵- ایک کپڑا پہنے ہوئے بھوجن نکرے ننگے ہو کر اسنان نکرے راستہ اور راکھہ اور گئو کے استھان مین پیشاب نکرے -

۴۶- جوتا ہوا کھیت پانی - آگ پزاوہ - پہاڑ - دیوتاؤن کا پرانا مندر - چھوٹے چھوٹے کیڑون سے ڈھیر کی ہوئی مٹی - ان سب چیزون پر پیشاب نکرے -

क्लृप्तकेशनखश्मश्रुर्दान्तः शुक्लाम्बरः शुचिः।। स्वाध्याये चैव
युक्तः स्यान्नित्यमात्महितेषु च।। ३५।। वैणवीं धारयेद्यष्टिं
सोदकं च कमण्डलुम्।। यज्ञोपवीतं वेदं च शुभे रौक्मे च कुण्डले
।। ३६।। नेक्षेतोद्यन्तमादित्यं नास्तं यान्तं कदाचन।। नोपसृष्टं
न वारिस्थं न मध्यं नभसो गतम्।। ३७।। न लंघयेद्वत्सतंत्रीं न प्रधा
वेच्च वर्षति।। न चोदके निरीक्षेत स्वं रूपमिति धारणा।। ३८।।
मृदं गां दैवतं विप्रं घृतं मधु चतुष्पथम्।। प्रदक्षिणानि कुर्वीत प्र-
ज्ञातांश्च वनस्पतीन्।। ३९।। नोपगच्छेत्प्रमत्तोऽपि स्त्रियमा-
र्तवदर्शने।। समानशयने चैव न शयीत तया सह।। ४०।।

۳۵ - وید خوانی اور اعمال نیک مین ہمیشہ مصروف رہے اور بال اور ناخن اور داڑھی کو چھوٹا کئے رہے سفید کپڑے پہنے پاک صاف رہکر حواس پر ضابط رہے۔

۳۶ - بانس کی لاٹھی - کمنڈل مع پانی - جنیو - سونے کے دو کنڈل - وید انکو استعمال کرے۔

۳۷ - وقت طلوع و وقت غروب و وقت دوپہر کے آفتاب کو نہ دیکھے اور اگر گہن پڑتا ہو تب بھی نہ دیکھے اور نہ پانی کے اندر آفتاب کو دیکھے۔

۳۸ - بچھڑا باندھنے کی رسّی کو نہ نانگھے پانی برستے ہوئے نہ دوڑے - پانی مین اپنی صورت نہ دیکھے یہ شاستر مین لکھا ہے۔

۳۹ - کہین جاتا ہو اور سامنے - اکھاڑی - مٹّی - گئو - دیوتا - برہمن - گھی - شہد - چوراہا جاتا ہو درخت یہ سب ملین تو دہنی طرف انکو کرکے جاوے۔

۴۰ - اگر شہوت بدرجہ غایت ہو تو بھی حیض والی عورت سے صحبت نکرے اور اپنی چارپائی پر عورت کے ساتھہ نہ سووے۔

आसनाशनशय्याभिरद्भिर्मूलफलेन वा ॥ नास्य कश्चिद्वसेद्गे-
हे शक्तितोऽनर्चितोऽतिथिः ॥ २९ ॥ पाखण्डिनो विकर्मस्था
न्बैडालव्रतिकाञ्छठान् ॥ हैतुकान्बकवृत्तींश्च वाङ्मात्रे-
णापि नार्चयेत् ॥ ३० ॥ वेदविद्याव्रतस्नातांश्रोत्रियान्गृहमे-
धिनः ॥ पूजयेद्धव्यकव्येन विपरीतांश्च वर्जयेत् ॥ ३१ ॥ शक्ति
तोऽपचमानेभ्यो दातव्यं गृहमेधिना ॥ संविभागश्च भूतेभ्यः
कर्त्तव्योऽनुपरोधतः ॥ ३२ ॥ राजतो धनमन्विच्छेत्संसीदन्स्ना-
तकः क्षुधा ॥ याज्यान्तेवासिनोर्वापि न त्वन्यत इति स्थितिः
॥ ३३ ॥ न सीदेत्स्नातको विप्रः क्षुधा शक्तः कथंचन ॥ न जी-
र्णमलवद्वासा भवेच्च विभवे सति ॥ ३४ ॥

۲۹- آسن بھوجن شیّا جل مول پھل اِن سبھوں میں سے کسی ایک چیز سے یتھا شکت بغیر پوجا پائے اتتھ گرہستھ کے گھر میں نہ رہنے پاوے۔

۳۰- اگر پاکھنڈی و ناقص معاش سے اوقات بسر کرنیوالے و بیڈال برتک و بیدخوانی نکرنیوالے و خلاف دلیل اٹھانیوالے یہ سب اتتھ کال میں آویں تو گفتگو سے بھی اُنکی پوجا نکرے بلکہ بھوجن و

۳۱- جو گرہستھ وید میں یا برت میں یا دونوں میں پکا ہے اُسکا پوجن ہبیہ اور کبیہ سے کرے خلاف عمل نکرے۔

۳۲- جو برہم چاری یا سنیاسی وغیرہ اپنے ہاتھ سے کھانا نہیں بناتے ہیں اُنکو حسب توفیق گرہستھ آدمی کھانا پانی دے پھر کیڑا یا لون کے کھانے سے جو کھانا پانی بچ رہے جانداروں کو دے۔

۳۳- اگر سناتک گرہستھ بھوکھ سے بیچین ہو تو راجا و یجمان و دیارتھی ان سب سے دھن لیوے اور کسی سے نہ لیوے یہ شاستر کی مریادا ہے۔

۳۴- جو گرہستھ سناتک اور صاحب قدرت ہو وہ بھوکھ سے کسی طرح رنجیدہ دل ہو اور مقدور ہوتے ہوئے پرانے اور میلے کپڑے نہ پہنے۔

वाच्येके जुह्वति प्राणं प्राणे वाचं च सर्वदा॥ वाचि प्राणे च पश्य-
न्तो यज्ञनिर्वृत्तिमक्षयाम्॥२३॥ ज्ञानेनैवापरे विप्रा यजन्त्येतैर्म-
खैः सदा॥ ज्ञानमूलां क्रियामेषां पश्यन्तो ज्ञानचक्षुषा॥२४॥ अ-
ग्निहोत्रं च जुहुयादाद्यन्ते द्युनिशोः सदा॥ दर्शेन चार्द्धमासान्ते पौ-
र्णमासेन चैव हि॥२५॥ सस्यान्ते नवसस्येष्ट्या तथर्त्वन्ते द्विजोऽ-
ध्वरैः॥ पशुना त्वयनस्यादौ समान्ते सौमिकैर्मखैः॥२६॥ नानि-
ष्ट्वा नवसस्येष्ट्या पशुना चाग्निमान्द्विजः॥ नवान्नमद्यान्मांसं-
वा दीर्घमायुर्जिजीविषुः॥२७॥ नवेनानर्चिता ह्यस्य पशुहव्येन-
च [illegible] नेवात्तुमिच्छन्ति नवान्नामिषगर्द्धिनः॥२८॥

۲۳ - جو آدمی بانی اور پران مین لا[illegible] ہین وہ پران کو بانی مین اور بانی
کو پران [illegible] ہون کرتے ہین)

۲۴ - بعض آدمی [illegible] ہی گیان روپی آنکھ سے دیکھکر گیان ہی سے ان یگیون کو
[illegible] کرتے ہین۔

۲۵ - طلوع آفتاب سے پہلے و بعد طلوع آفتاب مین ہون کرنا چاہئے اور اماوس اور پورنماشی کے
دن بھی ہون کرنا چاہئے۔

۲۶ - جب نیا غلہ پیدا ہو اوسوقت نوسسیہ اشٹ سی ہون کرنا اور فصل کی اخیر مین چترماس یگیہ سے
اور دونون آین مین پشو سی ہون کرنا چاہئے اور سال کے اخیر پر اگنشٹوم وغیرہ یگیہ کرے۔

۲۷ - جو برہمن اگن ہوتری زیادہ عمر جینے کی خواہش رکھتا ہو وہ نیا غلہ جبتک ہون غلہ سے
یگیہ نکرے اور پشو کا مانس جبتک ہون مانس سے یگیہ نکرے دونون کو بھوجن نہ کرے۔

۲۸ - جو اگن نیا غلہ اور پشو کے مانس سے آسودہ نہین ہوئی وہ اوس آدمی کے پران کو بھوجن
کرنیکی اچھا کرتی ہے جسنے نئے غلہ اور پشو کے مانس سے یگیہ نہین کیا اور کھانے لگا۔

सर्वान्परित्यजेदर्थान्स्वाध्यायस्य विरोधिनः॥ यथातथाध्यापयं-
स्तुसाह्यस्यकृतकृत्यता॥१७॥वयसःकर्मणोऽर्थस्यश्रुतस्या-
भिजनस्यच॥वेषवाग्बुद्धिसारूप्यमाचरन्विचरेदिह॥१८॥बु-
द्धिवृद्धिकराण्याशुधान्यानिचहितानिच॥ नित्यंशास्त्राण्य
वेक्षेतनिगमांश्चैववैदिकान्॥१९॥यथायथाहिपुरुषःशास्त्रं
समधिगच्छति॥तथातथा विजानाति विज्ञानंचास्यरोचते॥२०
ऋषियज्ञंदेवयज्ञंभूतयज्ञंचसर्वदा॥ नृयज्ञंपितृयज्ञंचयथाश
क्तिनहापयेत्॥२१॥एतानेकेमहायज्ञान्यज्ञशास्त्रविदोज-
नाः॥ अनीहमानाःसततमिन्द्रियेष्वेवजुह्वति॥२२॥

۱۷- جس دولت سے وید پڑھنے میں ہرج ہو اسکو ترک کرے اور جس طریق سے وید پڑھنے
مین ہرج ہو اس طریق سے مطلب حاصل کرے-
۱۸- عمر و دولت و عمل و سنی سنائی بات و ملک و پوشاک و تقریر و عقل ان سب کی
صورت کو آچرن کرتا ہوا دنیا مین رہے-
۱۹- عقل و دولت کو ترقی دینے والے جو مفید دیدک (وید انگ وغیرہ) و نگم علم صناعت
و طب و سلجرانی و دھرم شاستر وغیرہ علوم مین انکو ہر روز مطالعہ کیا کرے-
۲۰- آدمی جیسی جیسی مہارت شاستر مین کرتا ہے ویسا ویسا اوسکا مطلب سمجھتا ہے اور
گیان بھی اوسکو اچھا لگتا ہے-
۲۱- رشی یگیہ- دیو یگیہ- بھوت یگیہ- منشیہ یگیہ- پتر یگیہ- ان سب یگیون کو حتی الامکان ہمیشہ
ترک نکرے-
۲۲- جو آدمی یگیہ شاستر کو جانتے ہین مگر ان یگیون کے کرنے کی خواہش نہین کرتے
وے ہمیشہ اندریون مین ہون کرتے ہین-

नलोकवृत्तंवर्त्तेतवृत्तिहेतोः कथंचन॥ अजिह्मामशठांशुद्धां
जीवेद्ब्राह्मणजीविकाम्॥११॥ संतोषंपरमास्थायसुखार्थी
संयतोभवेत्॥सन्तोषमूलंहिसुखंदुःखमूलविपर्य्ययः॥१२॥
अतोऽन्यतमयावृत्त्याजीवंस्तुस्नातकोद्विजः॥स्वर्गायुष्यय-
शस्यानिव्रतानिमानिधारयेत्॥१३॥वेदोदितंस्वकंकर्म्म
नित्यंकुर्य्यादतन्द्रितः॥तद्धिकुर्वन्यथाशक्तिप्राप्नोतिपर-
मांगतिम्॥१४॥नेहेतार्थान्प्रसंगेननविरुद्धेनकर्मणा॥न
विद्यमानेष्वर्थेषुनार्त्यामपियतस्ततः॥१५॥इन्द्रियार्थेषु
सर्व्वेषुनप्रसज्जेतकामतः॥ अतिप्रसक्तिंचैतेषांमनसास-
न्निवर्त्तयेत्॥१६॥

۱۱- واسطے حصول معاش کے دروغگوئی وشیرین زبانی ومضحکہ اختیار کرے دروغ و فریب والی معاش کو ترک کرکے براہمنوں کی نیک معاش سے اوقات گذاری کرے۔

۱۲ قناعت کرکے حواس کو قابو مین لاوے کیونکہ خوشی کی بنیاد قناعت ہے اور رنج کی جڑ بے صبری ہے۔

۱۳- منجملہ معاش مفصلہ بالا کے کسی معاش سے اوقات گذاری کرے اور وید پڑھنے سے فارغ ہوکر سماورتن کیواسطے اندریون کو قابو مین لاوے اور سورگ اور عمر اور نیکنامی کیواسطے مفید برت جو آگے کہین گے اسکو کرے۔

۱۴- کاہلی چھوڑکر اپنے اعمال مندرجہ وید کو کرے حتی المقدور ان اعمال کو کرنے سے مکت پدوی کو پاویگا۔

۱۵- گانا بجانا اور جو آدمی یگیہ کرانیکے لائق نہین ہے اسکو یگیہ کرانا ان سب باتون سے اوقات گذاری نکرے اور جو آدمی تپت یعنی اپنے درن سے پھر شب ہوگیا ہے اسکے دھن وغیرہ بھی نہ لیوے

۱۶ اندریون کو قابو مین لاکر اونکی زیادتی خواہش کو دل سے دور کرے۔

सत्यानृतंतुवाणिज्यंतेनचैवापिजीव्यते।।सेवाश्ववृत्तिराख्या
तातस्मात्तांपरिवर्जयेत्।।६।।कुसूलधान्यकोवास्यात्कुंभी-
धान्यकएववा।।त्र्यहैहिकोवापिभवेदश्वस्तनिकएववा।।७।।
चतुर्णामपिचैतेषांद्विजानागृहमेधिनाम्।।ज्यायान्परःपरो-
ज्ञेयोधर्मतोलोकजित्तमः।।८।।षट्कर्मैकोभवेत्येषांत्रिभिर-
न्यःप्रवर्त्तते।। द्वाभ्यामेकश्चतुर्थस्तुब्रह्मसत्रेणजीवति।।९।।
वर्त्तयंश्चशिलोञ्छाभ्यामग्निहोत्रपरायणः।।इष्टीःपार्वाय
णांतीयाःकेवलानिर्वपेत्सदा।।१०।।

۶ — بنیا کے کرم کو جھوٹھ سچ کہتے ہیں سیوا کو کتا کی برت کہتے ہیں اسلئے سیوا نہ کرے ۔

۷ — نتیہ نیمتک دھرم وغیرہ کرنیوالے کو اتنا غلہ فراہم کرنا چاہئے جو تین سال تک کافی ہو یا ایک سال تک یا ایک دن تک کفایت کرے ۔

۸ — چار طرح کے براہمن کہے ہیں انمین پہلے سے دوسرا دوسرے سے تیسرا تیسرے سے چوتھا بڑا ہے ۔ اور وے دھرم سے لوک کو جیت سکتے ہیں ۔

۹ — ان چاروں میں پہلا چھہ* کرم سے اوقات بسر کرے اور دوسرا تین* کرم سے اور تیسرا دو* کرم سے اور چوتھا ایک* کرم سے اوقات بسر کرے ۔

۱۰ — شِل اور اُنچھ سے اوقات گذاری کرے اگنہوتر کرے اماوس اور پورنماسی اور اسوقت جبکہ نیا غلہ پیدا ہوتا ہے ان تینوں وقت میں یگیہ کرے ۔

* یعنی یگیہ کرانا پڑھانا دان لینا رت وغیرہ جو اوپر کہہ آئے ہیں ۔
* یعنی یگیہ کرانا پڑھانا دان دینا ۔
* یعنی یگیہ کرانا پڑھانا ۔
* یعنی پڑھانا ۔

चतुर्थमायुषोभागमुषित्वाद्यंगुरौद्विजः॥ द्वितीयमायुषो-
भागंकृतदारोगृहेवसेत्॥१॥ अद्रोहेणैवभूतानामल्पद्रोहेण
वापुनः॥ यावृत्तिस्तांसमास्थायविप्रोजीवेदनापदि॥२॥
यात्रामात्रप्रसिद्ध्यर्थंस्वैःकर्मभिरगर्हितैः॥ अक्लेशेनशरीर
स्यकुर्वीतधनसंचयम्॥३॥ ऋतामृताभ्यांजीवेत्तुमृतेनप्र-
मृतेनवा॥ सत्यानृताभ्यामपिवानश्ववृत्त्याकदाचन॥४॥
ऋतमुञ्छशिलंज्ञेयममृतंस्यादयाचितम्॥ मृतन्तुयाचितंभै-
क्ष्यंप्रमृतंकर्षणंस्मृतम्॥५॥

۱- تمام عمر کے* چار حصّہ فرض کرکے اول حصّہ تک گروکل مین باس کرے دوسرے حصہ تک شادی کرکے گھر مین رہے۔

۲- جو وجہ معاش ایسی ہے کہ حاصل ہونا اوسکا بحالت عدم ایذا رسانی جانداران کم ایذادہی جانداران ممکن ہے اُس سے براہمن اپنی بسر اوقات کرے بشرطیکہ وقت مصیبت نہو۔

۳- اعمال نیک سے اور ایسے طریقہ سے کہ جس سے بدن کو تکلیف نہو صرف اپنے کھانے بھر کو دولت جمع کرے۔

۴- رت امرت مرت پرمرت جھوٹھ سچ ان سب طریقون سے زندگی بسر کرے۔

۵- انچھ شل کو رت کہتے ہین بغیر مانگے ملے اسکو امرت کہتے ہین مانگے سے ملے اسکو مرت کہتے ہین۔ کھیتی کو پرمرت ہین۔

* اس مقام پر یہ شک ہو سکتا ہے کہ یقیناً عمر کی تعداد صحیح معلوم نہین ہو سکتی جسکے چار حصّہ مقرر کرے لیکن آدمی کی عمر کلجگ مین سو برس کی ہوتی ہے تو پچیس ۲۵ برس چوتھا حصہ ہوا۔

वसून्वदन्तितुपितॄन्रुद्रांश्चैवपितामहान्॥ प्रपितामहां-
स्तथादित्याञ्छ्रुतिरेषासनातनी॥२८४॥विघसाशीभवेन्नि
त्यंनित्यंवाऽमृतभोजनः॥ विघसोभुक्तशेषंतुयज्ञशेषंतथाऽ
मृतम्॥२८५॥एतद्वोऽभिहितंसर्वंविधानंपांचयाज्ञिकम्।
द्विजातिमुख्यवृत्तीनांविधानंश्रूयतामिति॥२८६॥

इतिमानवेधर्मशास्त्रेभृगुप्रोक्तायांसंहितायां
तृतीयोऽध्यायः३

۲۸۴- پتا کو بسو کہتے ہین پتامہ کو رُدر کہتے ہین پرپتامہ کو آدتیہ کہتے ہین یہ نتیہ شرت ہے-

۲۸۵- براہمنون کے بھوجن سے یا یگیہ کرنے سے جو کھانا بچ رہے اسکو آپ بھوجن کرے

۲۸۶- بھرگ جی کہتے ہین کہ ہے رشی لوگو پنچ یگیہ کی بدھی کہی اب براہمنون کے جیوکا کی بدھ کہتے ہین سنو-

مُنّ جی کا دھرم شاستر بھرگُ جی کی سنگھِتا
کا تیسرا ادھیاے سماپت ہُوا-

प्राचीनावीतिनासम्यगपसव्यमतन्द्रिणा॥ पित्र्यमानिधना
त्कार्यंविधिवद्दर्भपाणिना॥२७९॥ रात्रौश्राद्धंनकुर्वीतराक्ष-
सीकीर्त्तिताहिसा॥ संध्ययोरुभयोश्चैवसूर्येचैवाचिरोदिते॥
२८०॥ अनेनविधिनाश्राद्धंत्रिरब्दस्येहनिर्वपेत्॥ हेमन्तग्री-
ष्मवर्षासुपांचयज्ञिकमन्वहम्॥२८१॥ नपैत्रयज्ञियोहोमो
लौकिकेऽग्नौविधीयते॥ नदर्शेनविनाश्राद्धमाहिताग्नेर्द्वि-
जन्मनः॥२८२॥ यदेवतर्पयत्यद्भिः पितॄन्स्नात्वाद्विजोत्तमः
॥ तेनैवकृत्स्नमाप्नोति पितृयज्ञक्रियाफलम्॥२८३॥

۲۷۹ - داہنے کندھے پر جنیو رکھے ہوئے آلس کو چھوڑے ہوئے کش ہاتھ مین لئے ہوئے پتر تیرتھ کرکے شاستر کی ریت سے پتروں کے کرم کرے۔

۲۸۰ - رات کے وقت شرادھ نکرنا چاہئے کیونکہ وہ راکشسی سمے ہے اور دونوں سندھیا کے وقت اور پراتہ کال تین گھڑی تک اسمین بھی شرادھ نکرنا چاہئے۔

۲۸۱ - اسطرح ہر سال ہیمنت گریشم برشا یعنے جاڑا گرمی برسات تینوں فصلوں مین تین بار شرادھ کرے اور پنج مہایگیہ تو ہر روز کرے۔

۲۸۲ - اگنہوتری کو پتر یگیہ سمبندھی ہون دنیا کی آگ مین نہین ہوتا اور بغیر اماوشیا کے شرادھ نہین ہوتی۔

۲۸۳ - پنج یگیہ سمبندھی شرادھ نہو سکے تو اسنان کرکے براہمن جل سے ترپن کرے اسی سے سب پتر یگیہ کے پھل کو پاسکتے ہیں۔

अपिनःसकुलेजायाद्योनोदद्यात्त्रयोदशीम् ॥ पायसंमधुसर्पि-
र्भ्यांप्राक्छायेकुंजरस्यच ॥ २७४ ॥ यद्यद्ददातिविधिवत्सम्यक्श्र-
द्धासमन्वितः ॥ तत्तत्पितृणांभवतिपरत्रानन्तमक्षयम् ॥ २७५
॥ कृष्णपक्षेदशम्यादौवर्जयित्वाचतुर्दशीम् ॥ श्राद्धेप्रशस्ता-
स्तिथयोयथैतानतथेतराः ॥ २७६ ॥ युक्षुकुर्वन्दिनर्क्षेषुसर्वा-
न्कामान्समश्नुते ॥ अयुक्षुतुपितॄन्सर्वान्प्रजांप्राप्नोतिपुष्क-
लाम् ॥ २७७ ॥ यथाचैवापरःपक्षःपूर्वपक्षाद्विशिष्यते ॥ त-
थाश्राद्धस्यपूर्वाह्णादपराह्णोविशिष्यते ॥ २७८ ॥

۲۷۴ - پتر لوگ مناتے ہین کہ ہمارے کل مین ایسا شخص پیدا ہو کر جو بھادون کرشن ترپودشی تتھہ یا اسی مہینہ کی کسی اور تتھہ مین اپراہن کال مین (یعنے بعد دوپہر) دودھ اور گھی ملی ہوئی کھیر دیوے -

۲۷۵ - جو چیز بدھ پورک اچھے پرکار سے شردھا سمیت پترونکو دیجاتی ہے اوسکا پھل پرلوک مین بے انتہا ہے -

۲۷۶ - کرشن پکش مین دسمی سے لیکر چتردشی کے سواے اماوشیا تتھہ جیسی شرادھ مین اچھی ہے ویسی اور نہین -

۲۷۷ - سم* (جفت) تتھہ اور سم نکشتر مین شرادھ کرنے سے سمپورن کامنا ملتی ہے اور بکھم** (طاق) تتھہ اور بکھم نکشتر مین شرادھ کرنے سے علم و دولت والی اولاد ملتی ہے -

۲۷۸ - جسطرح شکل پکش سے کرشن پکش اتم ہے اسیطرح پوربا ہن کال (قبل دوپہر) سے اپراہن کال (بعد دوپہر) شرادھ مین اتم ہے -

* جیسے دوج و چوتھ تتھہ و بھرنی و روہنی وغیرہ -

** جیسے پڑوا و تیج و اسونی و کرتکا وغیرہ -

द्वौमासौमत्स्यमांसेनत्रींमासान्हारिणेनतु॥ औरभ्रेणाथचतु
रःशाकुनेनाथपंचवै॥२६८॥ षण्मासांश्छागमांसेनपार्षतेन
चसप्तवै॥ अष्टावेणस्यमांसेनरौरवेणनवैवतु॥२६९॥ दश-
मासांस्तुतृप्यन्तिवराहमहिषामिषैः॥ शशकूर्मौस्तुमांसेनमां-
सानेकादशैवतु॥२७०॥ संवत्सरन्तुगव्येनपयसापायसेनच॥
वार्ध्रीणसस्यमांसेनतृप्तिर्द्वादशवार्षिकी॥२७१॥ कालशाकं
महाशल्काःखड्गलोहामिषम्मधु॥ आनन्त्यायैवकल्प्य-
न्तेमुन्यन्नानिचसर्वशः॥२७२॥ यत्किञ्चिन्मधुनामिश्रंप्र-
दद्यात्तुत्रयोदशीम्॥ तदप्यक्षयमेवस्याद्वर्षासुचमघासुच
॥२७३॥

۲۶۸ - مچھلی کے گوشت سے دو مہینہ تک اور ہرن کے گوشت سے تین مہینے تک اور بھیڑ کے گوشت سے چار مہینہ تک اور پرند جانور کے گوشت سے پانچ مہینہ تک پتر آسودہ رہتے ہیں

۲۶۹ - بکرا کے گوشت سے چھ مہینہ تک چترمرگ کے گوشت سے سات مہینہ تک این نام ہرن کے گوشت سے آٹھ مہینہ تک رورو نام ہرن کے گوشت سے نو مہینہ تک پتر آسودہ رہتے ہیں

۲۷۰ - جنگلی سور یا بھینسا کے گوشت سے دس مہینہ تک اور خرگوش اور کچھوا کے گوشت سے گیارہ مہینہ تک

۲۷۱ - گئو کے دودھ سے یا اسی دودھ کی کھیر سے ایک برس تک اور ایسا بکرا جسکے دونوں کان پانی پیتے وقت پانی کو چھوئیں اور سفید رنگ ہو اور اندری جسکی چھین ہو اسکے گوشت سے بارہ برس

۲۷۲ - کال شاک اور مہاسلک (ایک قسم کی مچھلی) اور گینڈا اور لال بکرا ان سب میں سے کسی کے گوشت دینے سے اور مدھ اور منی سے بے انتہا برس تک -

۲۷۳ - موسم برسات میں جب ترودشی تتھہ کو مگھا نکشتر ہو اسدن میٹھی چیز دینے سے *پتروں کو لازوال پھل ہوتا ہے -

* یعنے بزرگوں

पतिव्रता धर्मपत्नी पितृपूजनतत्परा॥ मध्यमं तु ततः पिण्डम
द्यात्सम्यक्सुतार्थिनी॥२६२॥ आयुष्मन्तं सुतं सूते यशोमेधास-
मन्वितम्॥ धनवन्तं प्रजावन्तं सात्विकं धार्मिकं तथा॥२६३॥प्र-
क्षाल्य हस्तावाचम्य ज्ञातिप्रायं प्रकल्पयेत्॥ ज्ञातिभ्यः सत्कृ
तं दत्वा बान्धवानपि भोजयेत्॥२६४॥उच्छेषणं तु तत्तिष्ठेद्या-
वद्विप्रा विसर्जिताः॥ ततो गृहबलिं कुर्यादिति धर्मो व्यवस्थि-
तः॥२६५॥ हविर्यच्चिररात्राय यच्चानन्त्याय कल्प्यते॥ पितृभ्यो
विधिवद्दत्तं तत्प्रवक्ष्याम्यशेषतः॥२६६॥ तिलैर्व्रीहियवैर्माषै
रद्भिर्मूलफलेन वा॥ दत्तेन मासं तृप्यन्ति विधिवत्पितरो नृणा-
म्॥२६७॥

۲۶۲- پت برتا استری پتردن کی پوجا کرنے والی لڑکا پیدا ہونے کی مراد سے بیچ
کے پنڈ کو اچھی طرح سے بھوجن کرے-
۲۶۳- تو اس استری کے بڑی عمر والا نیکنام و عقلمند و صاحب اولاد و ستوگن
دھرم والا لڑکا پیدا ہو-
۲۶۴- ہاتھ دھو کر آچمن کر کے بچا ہوا کھانا اپنی ذات والون کو کھلاوے اسکے بعد
رشتہ مندون کو-
۲۶۵- براہمنون کا لیس خوردہ تب تک رہے جب تک براہمن رخصت ہون بعد رخصت
ہونے براہمنون کے جوٹھے استھان کو دھووے اسکے بعد گرہ بل کرے یہ دھرم ہے
۲۶۶- جو ہبیہ پتر ونکو بدھ پورک دینے سے بہت دن تک آسودہ رکھتی ہے اور بے
انتہا پھل دیتی ہے وہ سب کہتے ہین-
۲۶۷- تل- دھان- جو- اُرد- جل- مول- پھل- ان مین سے کوئی ایک چیز بھی شاستر
کے موافق دینے سے ایک مہینہ تک پتر آسودہ رہتے ہین-

दर्भाः पवित्रं पूर्वाह्णो हविष्याणि च सर्वशः ॥ पवित्रं यच्च पूर्वो-
क्तं विज्ञेया हव्यसम्पदः ॥ २५६ ॥ मुन्यन्नानि पयः सोमो मांसं-
यच्चानुपस्कृतम् ॥ अक्षारलवणं चैव प्रकृत्या हविरुच्यते ॥
२५७ ॥ विसृज्य ब्राह्मणांस्तांस्तु नियतो वाग्यतः शुचिः ॥ दक्षि
णां दिशमाकाङ्क्षन्याचेतेमान्वरान्पितॄन् ॥ २५८ ॥ दातारो नो ऽ
भिवर्द्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च ॥ श्रद्धा च नो मा व्यगमद्बहु देयं च
नो ऽस्त्विति ॥ २५९ ॥ एवं निर्वपणं कृत्वा पिण्डांस्तांस्तदनन्त-
रम् ॥ गां विप्रमजमग्निं वा प्राशयेदप्सु वा क्षिपेत् ॥ २६० ॥ पिण्ड
निर्वपणं केचित्पुरस्तादेव कुर्वते ॥ वयोभिः खादयन्त्यन्ये प्रक्षि-
पन्त्यनले ऽप्सु वा ॥ २६१

۲۵۶ - منتر - پوّر باہن کال ہَبِشیہ بھوجن کا شُودھنا جو اُوپر کہہ آئے ہیں یہ سب یوگ کرم کی سمپت (دولت) ہیں۔

۲۵۷ - منیوں کے ان دودھ - سوم لتا کا رس بنا بنایا ہوا مانس بے بنا ہوا سیندھا نمک وغیرہ یہ سب سُبھاو سے ہَبِیہ کہاتے ہیں۔

۲۵۸ - جو بھی شرادھ ہو وہیں سُمترتنگ کہنا چاہیے ان براہمنوں کو بدا کرکے شرادھ کرنے والا پوتر ہو کر مکھ چپ دکشن دشا کی طرف ہو کر پتروں سے یہ بردان مانگے کہ

۲۵۹ - ہمارے کل میں داتا - وید - اولاد کی ترقی ہو شردھا بنی رہے بہت دولت وغیرہ دینے کی چیزیں ہوں۔

۲۶۰ - اس طرح پنڈ دان کو دے کر بعدہ ان پنڈوں کو گئو یا براہمن یا بکرا یا اگن کو کھلا دے یا جل میں ڈال دے۔

۲۶۱ - کوئی آچاری کہتے ہیں کہ براہمن بھوجن کے بعد پنڈ دان کرنا چاہیے اور کوئی آچاری ان پنڈوں کو پرندوں کو کھلانا اور کوئی جل یا اگن میں ڈال دینا کہتے ہیں۔

श्राद्धभुग्वृषलीतल्पंतदहर्योऽधिगच्छति॥ तस्याः पुरीषेत-
न्मासंपितरस्तस्यशेरते॥ २५०॥ पृष्ट्वास्वदितमित्येवंतृप्तानाचा-
मयेत्ततः॥ आचान्तांश्चानुजानीयादभितोरम्यतामिति २५१
॥ स्वधास्त्वित्येवतंब्रूयुर्ब्राह्मणास्तदनन्तरम्॥ स्वधाकारःप-
राह्याशीःसर्वेषुपितृकर्मसु॥ २५२॥ ततोभुक्तवतांतेषामन्न-
शेषंनिवेदयेत्॥ यथाब्रूयुस्तथाकुर्यादनुज्ञातस्ततोद्विजैः॥
२५३॥ पित्र्येस्वदितमित्येववाच्यंगोष्ठेतुसुश्रुतम्॥ सम्पन्नमि-
त्यभ्युदयेदैवेरुचितमित्यपि॥ २५४॥ अपराह्णस्तथादर्भावा-
स्तुसम्पादनंतिलाः॥ सृष्टिर्मृष्टिर्द्विजाश्चाग्र्याःश्राद्धकर्मसुस-
म्पदः॥ २५५॥

۲۵۰ - شرادھ کا ان بھوجن کرکے اس دن رات مین جو کوئی عورت کے ساتھ جماع کرتا ہے اسکے پتر اسی عورت کے غلیظ مین ایک مہینہ تک پڑے رہتے ہین۔

۲۵۱ - اچھی طرح بھوجن کیا یہ پوچھکر اور آسودہ جان کر آچمن کرا کے شرادھ ہو کرنیوالا براہمنون سے کہے کہ جائیے۔

۲۵۲ - بجواب اسکے براہمن لوگ سودھا ستو کہین پتر کرمون مین سودھا بولنا بڑا آشیرباد ہے۔

۲۵۳ - تسکے بعد سب براہمنون کے بچے ہوئے ان کو نہیدن کرے جیسا وہ براہمن کہین ویسا کرے۔

۲۵۴ - ایکودشٹ شرادھ مین ترپت اور پرشن سے ارتھ سودہنگ کہنا چاہیے بردھ شرادھ مین سمپن کہنا چاہیے دیوتا کے نمت جو شرادھ ہے اسمین رچتم کہنا چاہیے۔

۲۵۵ - اپراہن کال - کُش گوبر آدی سے بھوم کو شدھ کرنا تل آدرنا - ان آدی کا سنسکار نگلت کے پونتر کرنیوالے براہمن یہ سب پدارتھ شرادھ مین سمپت ہین۔

सार्ववर्णिकमन्नाद्यंसन्नीयाप्लाव्यवारिणा॥ समुत्सृजेद्भुक्तव-
तामग्रतोविकिरन्भुवि॥२४४॥ असंस्कृतप्रमीतानांत्यागि-
नांकुलयोषिताम्॥ उच्छिष्टंभागधेयंस्याद्दर्भेषुविकिरश्चयः
॥२४५॥ उच्छेषणंभूमिगतमजिह्मस्याशठस्यच॥ दासवर्ग-
स्यतत्पित्र्येभागधेयंप्रचक्षते॥२४६॥ आसपिण्डक्रिया-
कर्मद्विजातेःसंस्थितस्यतु॥ अदैवंभोजयेच्छ्राद्धंपिण्डमेकंतु
निर्वपेत्॥२४७॥ सहपिण्डक्रियायांतुकृतायामस्यधर्मतः
॥ अनयैवावृताकार्य्यंपिण्डनिर्वपणंसुतैः॥२४८॥ श्राद्धंभु-
क्त्वायउच्छिष्टंवृषलायप्रयच्छति॥ समूढोनरकंयातिका-
लसूत्रमवाक्शिराः॥२४९॥

۲۴۴ - سب طرح کے ان بینجن وغیرہ سے ملا کر پانی ڈالکر اس ان کو بھوجن کیے ہوئے برہمنوں کے آگے زمین میں کش پر ڈالدے۔

۲۴۵ - جو بالک اگنی داہ کرنے کے لائق نہیں تھے اور مر گئے ہیں جو نیرودشٹ کل استریوں کو تیاگ کرکے مر گئے ہیں ان سب کو یہ ان جو کش پر ڈالا گیا ہے ملتا ہے۔

۲۴۶ - زمین پر جو جھوٹھا ان ہے وہ داس لوگوں کا ہے مگر وہ داس کٹل اور نٹ کھٹ نہوں

۲۴۷ - برہمن کشتری ویشیہ کے مرنے کے دن سے سپنڈی کریا تک وشوے دیو کے نمت برہمن بھوجن نہ کراوے بلکہ پتر کے نمت ایک برہمن بھوجن کرا دے اور ایک پنڈ دیوے

۲۴۸ - سپنڈی کرنے کے بعد ماتا پتا کی شرادھ کی بدھان سے کنیا (چھپاہ) میں بھی پنڈ کو بیٹا دیوے۔

۲۴۹ - جو کوئی شرادھ کے ان کو بھوجن کرکے جھوٹھا ان شودر کو دیتا ہے وہ مورکھ نیچے سر کئے ہوئے کال سوتر نام نرک میں جاتا ہے۔

यद्वेष्टितशिरा भुंक्ते यद्भुंक्ते दक्षिणामुखः॥ सोपानत्कश्च य-
द्भुंक्ते तद्वै रक्षांसि भुंजते॥ २३८॥ चाण्डालश्च वराहश्च कुक्कु-
टः श्वा तथैव च॥ रजस्वला च षण्ढश्च नेक्षेरन्नश्नतो द्विजान्॥
२३९॥ होमे प्रदाने भोज्ये च यदेभिरभिवीक्ष्यते॥ दैवे कर्मणि
पित्र्ये वा तद्गच्छत्ययथातथम्॥ २४०॥ घ्राणेन शूकरो हन्ति
पक्षवातेन कुक्कुटः॥ श्वा तु दृष्टिनिपातेन स्पर्शेनावरवर्णजः॥
२४१॥ खंजो वा यदि वा काणो दातुः प्रेष्योऽपि वा भवेत्॥ हीना-
तिरिक्तगात्रो वा तमप्यपनयेत्पुनः॥ २४२॥ ब्राह्मणं भिक्षुकं
वापि भोजनार्थमुपस्थितम्॥ ब्राह्मणैरभ्यनुज्ञातः शक्तितः
प्रतिपूजयेत्॥ २४३॥

۲۳۸ - سر کو باندھے ہوئے اور دکشن منہ بیٹھے ہوئے اور جوتا پہنے ہوئے جو بھوجن کرتے ہیں وہ بھوجن راکشس کو پہونچتا ہے۔

۲۳۹ - چانڈال۔ سور۔ مرغا۔ کتا۔ حیض والی عورت نامرد یہ سب لوگ برہمنوں کو بھوجن کرتے ہوئے نہ دیکھیں۔

۲۴۰ - دیوکرم یا پتر کرم میں ان سب کے دیکھنے سے سب کرم نشٹ ہو جاتے ہیں۔

۲۴۱ - سور سونگھنے سے۔ مرغا پر کی ہوا دینے سے کتا دیکھنے سے شودر چھونے سے ناش کرتا ہے۔

۲۴۲ - لنگڑا کانا اگرچہ شرادھ کرنیوالے کا خدمتگار بھی ہو کوئی ایک عضو کم رکھنے والا کوئی عضو زیادہ رکھنے والا ان سب کو شرادھ کے مکان سے نکال دے۔

۲۴۳ - اگر براہمن یا بھکاری بھوجن کے واسطے آئے ہوں تو نیوتے ہوئے براہمنوں کی اگیا لیکر یتھا شکت ہر ایک کا پوجن کرے۔

स्वाध्यायंश्रावयेत्पित्र्येधर्मशास्त्राणिचैवहि।। आख्यानानी-
तिहासांश्चपुराणानिखिलानिच।।२३२।। हर्षयेद्ब्राह्मणांस्तु-
ष्टोभोजयेच्चशनैःशनैः।। अन्नाद्येनासकृच्चैतान्गुणैश्चपरिचो-
दयेत्।।२३३।। व्रतस्थमपिदौहित्रंश्राद्धेयत्नेनभोजयेत्।। कुत-
पंचासनेदद्यात्तिलैश्चविकिरेन्महीम्।।२३४।। त्रीणिश्राद्धेपवि-
त्राणिदौहित्रःकुतपस्तिलाः।। त्रीणिचात्रप्रशंसन्तिशौचम-
क्रोधमत्वराम्।।२३५।। अत्युष्णंसर्वमन्नंस्याद्भुञ्जीरंस्तेचवाग्य-
ताः।। नचद्विजातयोब्रूयुर्दात्राऽऽपृष्टाहविर्गुणान्।।२३६।। यावदु-
ष्णंभवत्यन्नंयावदश्नन्तिवाग्यताः।। पितरस्तावदश्नन्तियाव-
न्नोक्ताहविर्गुणाः।।२३७।।

۲۳۲ - وید دھرم شاستر کتھا اتہاس پران شری سوکت ان سب کو براہمنونکو سناوے -

۲۳۳ - آپ مطمئن ہوکر شیرین بیانی وغیرہ سے براہمنون کو خوش کرے جلدی نہ کرے یہ لڈو ہے یہ اچھی کھیر ہے اسطرح سب چیزونکا گن کہہ کہکر بھوجن کراوے -

۲۳۴ - لڑکی کا لڑکا اگر برت مین بھی ہو تو اسکو کسی تدبیر سے شرادھ مین بھوجن ضرور کراوے نیپالی کمل کا آسن دے شرادھ کی زمین مین تل چھڑکا دے -

۲۳۵ - شرادھ مین تین چیزین پاک ہین - ناتی - نیپالی کمل - تل - اور تین چیزون کی تعریف ہے وہ یہ ہین پوترتا - شانتی و دھیرتا -

۲۳۶ - براہمن لوگ مون ہوکر نہایت گرم کھانے کو بھوجن کرین اگر کھلانیوالا چیزون کا گن پوچھے تو بھی کچھ نہ بولین -

۲۳۷ - جبتک کھانا گرم رہتا ہے اور کھانیوالے بولتے نہین ہین تب تک پتر لوگ بھوجن کرتے ہین -

गुणांश्चसूपशाकाद्यान्पयोदधिघृतंमधु॥विन्यसेत्प्रयतःपूर्वं
भूमावेवसमाहितः॥२२६॥भक्ष्यंभोज्यंचविविधंमूलानि-
चफलानिच॥हृद्यानिचैवमांसानिपानानिसुरभीणिच॥
२२७॥उपनीयतुतत्सर्वंशनकैस्सुसमाहितः॥परिवेषयेतप्रय-
तोगुणान्सर्वान्प्रचोदयन्॥२२८॥नास्रमापातयेज्जातुनकुप्यें
नानृतंवदेत्॥नपादेनस्पृशेदन्नंनचैतदवधूनयेत्॥२२९॥अस्रं
गमयतिप्रेतान्कोपोऽरीननृतंशुनः॥पादस्पर्शस्तुरक्षांसिदुष्कृ-
तीनवधूननम्॥२३०॥यद्यद्रोचेतविप्रेभ्यस्ततद्दद्यादमत्सरः॥
ब्रह्मोद्याश्चकथाःकुर्य्यात्पितॄणामेतदीप्सितम्॥२३१॥

۲۲۶ - اِسی طرح سے کہ جس سے زمین مین گرنے نہ پاوے ایک چِت ہو کر بھجن دال شاگ دودھ دہی گھی مدھ کو زمین پر رکھے۔

۲۲۷ - لڈو وغیرہ و کھیر وغیرہ و طرح طرح کے پھل پھول اور ہرن کا مانس اور پینے والی خوشبودار چیز ان سب کو بھی رکھے۔

۲۲۸ - ایک چِت ہو کر سب چیزون کو براہمنون کے پاس لا کر یہ کہکر کہ یہ میٹھا ہے یہ کھٹا ہے پروسے۔

۲۲۹ - رونا غصہ کرنا جھوٹھ بولنا اِن سب کو چھوڑ دے پاؤن سے اُن کو نہ چھوے اور نہ اچھال اچھال کر اُن کو برتن مین رکھے۔

۲۳۰ - رونے سے پریت کو اور غصہ کرنے سے دشمن کو اور جھوٹھ بولنے سے کُتے کو اور پاؤن سے چھونے سے راکشس کو اور اچھالنے سے پاپی کو وہ انّ ملتا ہے۔

۲۳۱ - دُکھ کو چھوڑ کر جو جو چیز براہمنون کو اچھی معلوم ہو وہ وہ چیز دیوے اور پرماتما کی کتھا کہے کیونکہ یہ باتین پتّرون کو پیاری ہین۔

ध्रियमाणेतुपितरिपूर्वेषामेवनिर्वपेत्॥ विप्रवद्वापितंश्राद्धे-स्वकंपितरमाशयेत्॥२२०॥ पितायस्यनिवृत्तःस्याज्जीवेच्चा-पिपितामहः॥ पितुःसनामसंकीर्त्यकीर्तयेत्प्रपितामहम्॥ २२१॥ पितामहोवातच्छ्राद्धंभुंजीतेत्यब्रवीन्मनुः॥ कामंवा समनुज्ञातः स्वयमेवसमाचरेत्॥२२२॥ तेषांदत्वातुहस्तेषु-सपवित्रंतिलोदकम्॥ तत्पिण्डाग्रंप्रयच्छेतस्वधैषामस्त्विति ब्रुवन्॥ २२३॥ पाणिभ्यान्तूपसंगृह्यस्वयमन्नस्यवर्द्धितम्॥ विप्रान्तिकेपितॄन्ध्यायन्शनकैरुपनिक्षिपेत्॥२२४॥ उभ-योर्हस्तयोर्मुक्तंयदन्नमुपनीयते॥ तद्विप्रलुम्पन्त्यसुराःसह-सादुष्टचेतसः॥ २२५॥

۲۲۰- پتا کے جیتے ہوتے ہوئے جو پتامہ وغیرہ تین پرش ہیں انکی شرادھ کرے یا پتا کے برہمن کی جگہ پتا ہی کو بھوجن کراوے اور پتامہ پرپتامہ کو پنڈ دیوے اور دونوں کی نمت برہمن بھوجن بھی کراوے

۲۲۱- جسکا پتا مر گیا ہو اور پتامہ جیتا ہو وہ پتا کا نام لیکر پرپتامہ کا نام لیوے -

۲۲۲- یا جسطرح جیتے ہوئے پتا کو بھوجن کرانا کہا ہے اسیطرح جیتے ہوئے پتامہ کو بھوجن کراوے پتا پرپتامہ کو پنڈ دیوے اس بات کو منو جی نے کہا ہے یا پتامہ کی اگیا پاکر پتا پرپتامہ [illegible] پرپتامہ کو پنڈ دیوے پتامہ کو بھوجن کراوے -

۲۲۳- ان برہمنوں کے ہاتھ میں تل [illegible] کر پنڈوں سے لگا ہوا جو تھوڑا تھوڑا [illegible] ہے اسکو پتا وغیرہ تینوں [illegible] کے برہمنوں کو سنکلپ کرکے دیوے -

۲۲۴- آپ دونوں ہاتھوں سے کھانے کی سب چیز کو رسوئی میں سے باہر لاکر پتروں کا دھیان کرتا ہوا برہمنوں کے پاس آہستہ سے پروسے -

۲۲۵- ایک ہاتھ سے لائے ہوئے ان کو اسر لوگ چھین لیتے ہیں اسلئے دونوں ہاتھ سے لانا چاہئے -

अपसव्यमग्नौ कृत्वा सर्वमावृत्य विक्रमम्॥ अपसव्येन हस्ते
न निर्वपेदुदकं भुवि॥२१४॥ त्रींस्तु तस्माद्धविःशेषात्पिण्डा
न्कृत्वा समाहितः॥ औदकेनैव विधिना निर्वपेद्दक्षिणामुख
॥२१५॥ न्युप्य पिण्डांस्ततस्तांस्तु प्रयतो विधिपूर्वकम्॥ तेषु द
र्भेषु तं हस्तं निमृज्याल्लेपभागिनाम्॥२१६॥ आचम्योदक्प
रावृत्य त्रिरायम्य शनैरसून्॥ षडृतूंश्च नमस्कुर्यात्पितॄनेव
च मंत्रवित्॥२१७॥ उदकं निनयेच्छेषं शनैः पिण्डान्तिके पुन
॥ अवजिघ्रेच्च तान्पिण्डान्यथान्युप्तान्समाहितः॥२१८॥
पिण्डेभ्यस्त्वल्पिकां मात्रां समादायानुपूर्वशः॥ तानेव विप्रा
नासीनान्विधिवत्पूर्वमाशयेत्॥२१९॥

٢١٤- اگنی ہون کو دکشن دشا مین کرکے آپ سبیہ ہوکر داہنے ہاتھ سے پنڈ رکھنے کی زمین پر جل دیوے-

٢١٥- ہون سے جو ہویہ بچا ہو اُس سے تین پنڈ بنا کر دکشن کی طرف منھ کرکے داہنے ہاتھ سے کشون کے اوپر اُن پنڈون کو ایک چِت ہوکر دیوے

٢١٦- جو بدھ کرم کانڈ کے سوتر مین لکھی ہے اسکے مطابق کشون پر اُن پنڈون کو دیکر پنڈ کے نیچے کا جو کشا ہے اوسکی جڑ مین ہاتھ کو پونچھے پردادا پرپتامہ وغیرہ تین پرکھون کی تریپت کیواسطے-

٢١٧- منتر جاننے والا اُتّر منھ ہوکر آچمن اور تین پرانایام تھا شکت کرکے بسنت وغیرہ چھ رتون کو اور پترون کو نمسکار کرے-

٢١٨- پنڈ دان سے پہلے پنڈ رکھنے کی زمین پر جو جل دیا اُس پاتر مین بچا ہوا جو جل ہو اسکو سب پنڈون کے پاس سلسلے سے دیوے پیچھے اُن پنڈون کو ایک چت ہوکر سلسلے سے سونگھے-

٢١٩- پنڈون سے تھوڑا تھوڑا اُن سلسلے لیکر [illegible]

आसनेषूपक्लृप्तेषु बर्हिष्मत्सु पृथक्पृथक्॥ उपस्पृष्टोदकान्
सम्यग्विप्रांस्तानुपवेशयेत्॥२०८॥ उपवेश्य तु तान्विप्राना
सनेष्वजुगुप्सितान्॥ गन्धैर्माल्यैः सुरभिभिरर्चयेद्दैवपूर्वकम्
॥२०९॥ तेषामुदकमानीय सपवित्रांस्तिलानपि॥ अग्नौ कु
र्यादनुज्ञातो ब्राह्मणो ब्राह्मणैः सह॥२१०॥ अग्नेः सोमयमा
भ्यां च कृत्वाप्यायनमादितः॥ हविर्दानेन विधिवत्पश्चात्सं
तर्पयेत्पितॄन्॥२११॥ अग्न्यभावे तु विप्रस्य पाणावेवोपपाद
येत्॥ यो ह्यग्निः स द्विजो विप्रैर्मन्त्रदर्शिभिरुच्यते॥२१२॥ अ
क्रोधनान्सुप्रसादान्वदन्त्येतान्पुरातनान्॥ लोकस्याप्यायने
युक्ताञ्छ्राद्धदेवान्द्विजोत्तमान्॥२१३॥

۲۰۸ - الگ الگ کُش کے آسنون پر نیوتے ہوئے براہمنون کو اسنان اور
اچمن کرا کے بٹھلا دے -

۲۰۹ - پہلے دیو کارج مین نیوتے ہوئے براہمنون کی پھول مالا وغیرہ سے
پوجن کرے بعد اوسکے پتر کارج مین نیوتے ہوئے براہمنون کی بھی پوجن کرے

۲۱۰ - کُش تِل سمیت جل کو براہمنون کو دے کر اُن کی اگیا لیکر اُن براہمنون
سمیت اگن مین ہون کرے -

۲۱۱ - پہلے اگن سوم یم اِن سب کو ہبیہ دے کر پیچھے پتروں کو اَن وغیرہ دیوے

۲۱۲ - اگن نہو تو براہمن کے ہاتھوں ہی مین ہون کرے جو اگن سو براہمن ہے ایسا بات
کو منتر جاننے والے براہمنون نے کہا ہے -

۲۱۳ - تارک غصہ و خوش رو و قدیم و ترقی عالم مین کوشش کرنے والے شرادھ
کے پاتر براہمن ہی ہین ایسا بات کو مُن وغیرہ رشیون نے کہا ہے اسلئے دیوتا اور
شرادھ کو برہمن کے ہاتھ مین دینا سد ہوتا ہے -

राजतैर्भाजनैरेषामथोवारजतान्वितैः॥वार्यपिश्रद्धयादत्तम
क्षयायोपकल्पते॥२०२॥दैवकार्याद्द्विजातीनांपितृकार्यंवि
शिष्यते॥दैवंहिपितृकार्यस्यपूर्वमाप्यायनंस्मृतम्॥२०३॥
तेषामारक्षभूतन्तुपूर्वंदैवंनियोजयेत्॥रक्षांसिहिविलुंपंति
श्राद्धमारक्षवर्जितम्॥२०४॥दैवाद्यन्तंतदीहेतपित्राद्यन्तंन
तद्भवेत्॥पित्राद्यन्तंत्वीहमानःक्षिप्रंनश्यतिसान्वयः॥२०५॥
शुचिंदेशंविविक्तंचगोमयेनोपलेपयेत्॥दक्षिणाप्रवणंचैव
प्रयत्नेनोपपादयेत्॥२०६॥अवकाशेषुचोक्षेषुनदीतीरेषुचै
वहि॥विविक्तेषुचतुष्यन्तिदत्तेनपितरःसदा॥२०७॥

۲۰۲ – اِن سب پِترون کو روپے کے برتن مین یا جس برتن مین روپا ملا ہوا ہو اُسمین اگر صرف پانی بھی دیوے تو لازوال خوشی حاصل ہوا۔

۲۰۳ – براہمن کشتری ویشیون کے دیوکارج سے پِتر کارج بڑا ہے اسوجہ سے دیوکارج پہلے ہونے سے پِتر کارج پورا۔

۲۰۴ – پِتر کارج کی رکشا کرنیوالے دیوکارج کو پہلے کرنا چاہیئے رکشا ہت کارج کو راکشش لے لیتے ہین۔

۲۰۵ – پِتر کارج کے آد اور انت مین دیوکارج کرنا چاہیئے اور دیوکارج کے آد اور انت مین پِتر کارج کرنے والا اپنے ونش سمیت جلد ناش ہو جاتا ہے۔

۲۰۶ ایکانت پوتر دکشن کی طرف ڈھلوت دیش کو گوبر سے لیپے۔

۲۰۷ – سبھاؤ سے شدھ بن وغیرہ جو دیش ندی کے کنارے آدی ہون سے جن کی ہو ایسی جگہہ شرادھ کرنے سے پِتر لوگ ہمیشہ آسودہ رہتے ہین۔

दैत्यदानवयक्षाणां गन्धर्वोरगरक्षसाम्॥ सुपर्णकिन्नराणां
च स्मृता बर्हिषदोऽत्रिजाः॥१९६॥ सोमपा नाम विप्राणां क्ष-
त्रियाणां हविर्भुजः॥ वैश्यानामाज्यपा नाम शूद्राणां तु सुका-
लिनः॥१९७॥ सोमपास्तु कवेः पुत्रा हविष्मन्तोऽङ्गिरःसुताः
पुलस्त्यस्याज्यपाः पुत्रा वसिष्ठस्य सुकालिनः॥१९८॥ अन-
ग्निदग्धानग्निदग्धान्काव्यान्बर्हिषदस्तथा॥ अग्निष्वात्तां-
श्च सौम्यांश्च विप्राणामेव निर्दिशेत्॥१९९॥ य एते तु गणा
मुख्याः पितॄणां परिकीर्तिताः॥ तेषामपीह विज्ञेयं पुत्रपौ-
त्रमनन्तकम्॥२००॥ ऋषिभ्यः पितरो जाताः पितृभ्यो देवमा-
नवाः॥ देवेभ्यस्तु जगत्सर्वं चरं स्थाण्वनुपूर्वशः॥२०१॥

۱۹۶- دیتیہ- دانو- یکیش- گندھرب- اُرگ- راکشش- سپرن- کنر- ان سب کا
پتر اتر کا بیٹا برہشد ہے-
۱۹۷- برہمن- کشتری- ویشیہ- شودر- ان سب کے پتر بہ ترتیب سلسلہ سوم پہ-
ہوربھج- آجیپ- سکالی ہیں-
۱۹۸- کوی- انگرا- پلستیہ- بشسٹ کے پتر بہ ترتیب سلسلہ سوم پہ- ہوربھج- آجیپ
سکالی ہیں-
۱۹۹- اگن دگدھ- انگن- دگدھ کا ویہ برہشد اگن شوات سوم پہ یہ سب براہمن کے
پتر ہیں-
۲۰۰- یہ سب پتر مقدم ہیں انکے بیٹے اور پوتے بہت ہیں-
۲۰۱- رشیوں سے پتر پیدا ہوئے ہیں اور پتروں سے دیوتا اور آدمی پیدا ہوئے
ہیں- دیوتوں سے ساکن و متحرک جاندار یعنی تمام عالم پیدا ہوا
ہے-

आमंत्रितस्तुयः श्राद्धेवृषल्यासहमोदते।।दातुर्यदुष्कृतंकिं
च्चित्तत्सर्व्वंप्रतिपद्यते।।१९१।।अक्रोधनाःशौचपराःसततं
ब्रह्मचारिणः।।न्यस्तशस्त्रामहाभागाःपितरःपूर्वदेवताः१९२
यस्मादुत्पत्तिरेतेषांसर्वेषामप्यशेषतः।।येचयैरुपचर्य्याःस्यु
र्नियमैस्तान्निबोधत।।१९३।।मनोर्हैरण्यगर्भस्ययेमरीच्या-
दयःसुताः।।तेषामृषीणांसर्वेषांपुत्राःपितृगणाःस्मृताः।।
१९४।।विराट्सुताःसोमसदःसाध्यानांपितरःस्मृताः।।अग्नि
ष्वात्ताश्चदेवानांमारीचालोकविश्रुताः।।१९५।।

۱۹۱- شرادھ کرم مین نیوتا پاکر جو براہمن شودر کی استری سے بھوگ کرتا ہے وہ شرادھ کرنیوالے کے سپورن پاپ کو پاتا ہے -

۱۹۲- پتر لوگ کرودھ سے رہت باہر اور بھیتر سے پوتر اگ اور ودیش سے رہت استری بھوگ سے رہت لڑائی سے وو دیاو غیرہ آٹھ گن سے بھرے ہوئے مہا بھاگی آدی دیوتا روپ ہین اسوجہ سے شرادھ کرنے والا اور شرادھ مین بھوجن کرنیوالا دونون کرودھ سے رہت ہون -

۱۹۳- جس سے ان سب کی پیدایش ہے، اور جن نیمون سے جکا سیون ہے، ان سب کو سنیئے سنیئے

۱۹۴- برہما کے پتر یعنے منُ جی کے مریچ وغیرہ جو پتر ہین تنھون سبکے جو پتر ہین سو پتر گن ہین -

۱۹۵- سادھو گن کے پتر براٹ کے پتر سوم سد ہین دیوتون کے پتر اگنشواتّ ہین یہ سب مریچ کے پتر ہین اور لوک مین پرسدھ ہین -

* یعنی حصول مراد کی تمنا -

* یعنے مراد نہ حاصل ہونے مین رنج -

त्रिणाचिकेतः पंचाग्निस्त्रिसुपर्णः षडंगवित्॥ ब्रह्मदेयात्म-
सन्तानो ज्येष्ठसामग एव च॥१८५॥ वेदार्थवित्प्रवक्ता च ब्रह्म-
चारी सहस्रदः॥ शतायुश्चैव विज्ञेया ब्राह्मणाः पंक्तिपावनः
॥१८६॥ पूर्व्वेद्युरपरेद्युर्वा श्राद्धकर्मण्युपस्थिते॥ निमंत्रये-
त त्र्यवरान्सम्यग्विप्रान्यथोदितान्॥१८७॥ निमंत्रितो द्विजः
पित्र्ये नियतात्मा भवेत्सदा॥ न च छन्दांस्यधीयीत यस्य श्राद्धं
च तद्भवेत्॥१८८॥ निमंत्रितान्हि पितर उपतिष्ठन्ति तान्द्विजा-
न्॥ वायुवच्चानुगच्छन्ति तथासीनानुपासते॥१८९॥ केति-
तस्तु यथान्यायं हव्यकव्ये द्विजोत्तमः॥ कथंचिदप्यतिक्राम-
न्पापः सूकरतां व्रजेत्॥१९०॥

۱۸۵ - ترناچکیت. اگنی ہوتری - ترسپرن بیاکرن وغیرہ چھ انگوں کا پڑھنے والا براہم
وواہ سے پیدا ہوا سام وید کے آرنیک بھاگ کو پڑھنے والا چھ پنگت پوتر کرنیوالے ہیں
۱۸۶ - وید اور معنی کا جاننے والا اور کہنے والا برہم چاری اور ہزار گئو دینے والا سو برس کا
ہو سو پنگت کو پوتر کرنیوالا ہے -
۱۸۷ - شرادھ کرنے سے ایک دن پہلے یا اسی دن تین سے زیادہ اچھے براہمن ملسکیں
تو انکو نیوتا دینا نہ مل سکیں تو ایک یا دو یا تین کو بھی نیوتا دینا چاہیے -
۱۸۸ - نیوتا پاکر براہمن اس رات دن میں استری سے بھوگ کرے اور وید کو بھی نہ پڑھے
اور شرادھ کرنیوالا بھی یہ دونوں کرم نکرے -
۱۸۹ - نیوتا پاتے ہوئے براہمن کے پاس پتر لوگ کھڑے رہتے ہیں اور پون صورت ہوا
ہوکر براہمن کے پیچھے پیچھے چلتے ہیں -
۱۹۰ - دیو کرم اور پتر کرم میں نیوتا پاکر براہمن اگر کسیطرح بھوجن نکرے تو وہ پاپ سے
دوسرے جنم میں سور ہوتا ہے -

सोमविक्रयिणे विष्ठा भिषजे पूयशोणितम्॥ नष्टं देवलके दत्त
मप्रतिष्ठं तु वार्धुषौ॥ १८०॥ यत्तु वाणिजके दत्तं नेह नामुत्र तद्भ
वेत्॥ भस्मनीव हुतं हव्यं तथा पौनर्भवे द्विजे॥ १८१॥ इतरेषु
त्वपाङ्क्त्येषु यथोद्दिष्टेष्वसाधुषु॥ मेदोऽसृङ्मांसमज्जास्थि
वदन्त्यन्नं मनीषिणः॥ १८२॥ अपाङ्क्त्योपहता पङ्क्तिः पाव्य
ते यैर्द्विजोत्तमैः॥ तान्निबोधत कार्त्स्न्येन द्विजाग्र्यान्पङ्क्तिपा
वनान्॥ १८३॥ अग्र्याः सर्वेषु वेदेषु सर्वप्रवचनेषु च॥ श्रोत्रि
यान्वयजाश्चैव विज्ञेयाः पङ्क्तिपावनाः॥ १८४॥

۱۸۰ - سوم کتا کے بیچنے والے براہمن کو دان دینے سے داتا دوسرے جنم میں غلیظ کھانیوالا جانور ہوتا ہے اور اسیطرح جیو کا لے کیلئے علاج کرنے والے براہمن کو دان دینے سے داتا دوسرے جنم میں خون اور پیپ پینے والا جانور ہوتا ہے اور مزدوری لیکر تین برس تک دیو مورت کی پوجا کرنیوالا براہمن اور بیاج لینے والے براہمن کو دان دینے سے دان کا پھل نہیں ہوتا۔

۱۸۱ - بنیا کے کرم سے جینے والے براہمن کو دان دینے سے اس لوک اور پرلوک میں دان کا پھل نہیں ہوتا اور پہلے پت کو چھوڑ کر دوسرا پت کرنیوالی جو استری ہے انمیں دوسرے پت کے جوڑ کا پیدا ہوا اسکو دان دینا کیسا ہے جیسے راکھ میں ہون کرنا۔

۱۸۲ - جو براہمن پنگت میں بٹھلانے کے لائق نہیں ہیں انکو دان دینے سے دوسرے جنم میں داتا سینہ کا گوشت و خون و ہڈی وغیرہ کھانیوالا جانور ہوتا ہے۔

۱۸۳ - جو پنگت چور وغیرہ براہمنوں سے دوشت ہوا اسکو پوتر کرنیوالے جو براہمن ہیں انکو سنو۔

۱۸۴ - جس کل میں دس پرش تک وید او شاستر کا پڑھنا اور پڑھانا چلا آیا ہے اس کل میں پیدا ہوا اور چار وید کے چھ انگ ویاکرن وغیرہ کو پڑھا سکتا ہو وہ براہمن پنگت کا پوتر کرنیوالا ہے۔

तौतुजातौपरक्षेत्रेप्राणिनौप्रेत्यचेहच॥ दत्तानिहव्यकव्यानिनाशयेतेप्रदायिनाम्॥ १७५॥ अपांक्त्योयावतःपांक्त्यान्भुञ्जानाननुपश्यति॥ तावतान्नफलंप्रेत्यदाताप्राप्नोतिबालिशः॥ १७६॥ वीक्ष्यान्धोनवतेःकाणःषष्टेःश्वित्रीशतस्यतु॥ पापरोगीसहस्रस्यदातुर्नाशयतेफलम्॥ १७७॥ यावतःसंस्पृशेदङ्गैर्ब्राह्मणाञ्छूद्रयाचकः॥ तावतान्नभवेद्दातुःफलंदानस्यपौर्तिकम्॥ १७८॥ वेदविच्चापिविप्रोऽस्यलोभात्कृत्वाप्रतिग्रहम्॥ विनाशंभवतिक्षिप्रमामपात्रमिवाम्भसि॥ १७९॥

١٧٥- اِن دونون کو دیو یا پتر کرم مین بھوجن کرانے سے اور دان دینے سے داتا کو پرلوک مین کچھ پھل نہین ملتا۔

١٧٦- جو براہمن پنگت کے لائق نہین ہے، وہ پنگت کے لائق جتنے براہمنون کو بھوجن کرتے ہوئے دیکھتا ہے، اتنے کا پھل داتا نہین پاتا۔

١٧٧- اندھا- کانا- سفید کوڑھ والا- راج روگی- ان سب کے دیکھنے سے بترتیب سلسلہ ٩٠- ٦٠- ١٠٠- ١٠٠٠- براہمن بھوجن کرانیکا پھل بھوجن کرانے والے کو نہین ملتا ہے×

١٧٨- شودر کی یگیہ مین یگیہ کرانے والا براہمن اپنے انگون سے جتنے براہمنونکو چھوتا ہے اتنے براہمنونکو دینے کا پھل داتا نہین پاتا اور شرادھ مین بھی اچھے براہمنونکی پنگت مین شودر کو یگیہ کرانیوالا براہمن اگر بیٹھکر بھوجن کرے تو جتنے براہمن بھوجن کرتے ہون- ان سب کے بھوجن کرانیکا پھل داتا نہین پا سکتا-

١٧٩- شودر کو یگیہ کرانیوالے براہمن سے لوبھ کر کے وید پڑھنے والا براہمن بھی جو دان لیوے تو جھٹ پٹ ناش ہو جاتا ہے جیسے مٹی کا کچا برتن پانی مین-

× اسمین یہ شک ہے کہ اندھا تو دیکھ نہین سکتا کسطرح پھل کو ناش کریگا- اسکا جواب یہ ہے کہ دیکھنے کے مقام مین لینے بھوجن کرانے والے براہمن کے پاس بیٹھا ہو-

अपांक्तदाने यो दातुर्भवत्यूर्ध्वं फलोदयः॥ दैवे हविषि पित्र्ये वा
तम्प्रवक्ष्याम्यशेषतः॥ १६९॥ अव्रतैर्यद्द्विजैर्भुक्तं परिवेत्रादि-
भिस्तथा॥ अपांक्तेयैर्यदन्यैश्च तद्वै रक्षांसि भुंजते॥ १७०॥ दारा-
ग्निहोत्रसंयोगं कुरुते योऽग्रजे स्थिते॥ परिवेत्ता स विज्ञेयः प-
रिवित्तिस्तु पूर्वजः॥ १७१॥ परिवित्तिः परिवेत्ता यया च परि-
विद्यते॥ सर्वे ते नरकं यान्ति दातृयाचकपंचमाः॥ १७२॥ भ्रा-
तुर्मृतस्य भार्यायां योऽनुरज्येत कामतः॥ धर्मेणापि नियु-
क्तायां स ज्ञेयो दिधिषूपतिः॥ १७३॥ परदारेषु जायेते द्वौ सुतौ
कुण्डगोलकौ॥ पत्यौ जीवति कुण्डः स्यान्मृते भर्तरि गोल-
कः॥ १७४॥

۱۶۹ - دیوکرم یا پتر کرم مین نندک براہمنوں کو بھوجن کرانے سے جو پھل پرلوک مین ملتا ہے اُسکو ہم (یعنی بھرگ جی) کہتے ہین کہ

۱۷۰ - اوپر کہے ہوئے نندت براہمن جو بھوجن کرتے ہین وہ راکشس بھوجن کرتے ہین یعنی کچھ پھل نہین ہوتا۔

۱۷۱ - بے بیاہے سگے بڑے بھائی کے ہوتے ہوئے چھوٹا بھائی وواہ کرے اور اگنی ہوتر کرے تو بڑا بھائی پریت کہلاتا ہے اور چھوٹا بھائی پربیتا کہلاتا ہے۔

۱۷۲ - پریت - پربیتا - پربیتا - (یعنی جس کنیا سے وواہ ہوا ہے سو) اور اس کنیا کو دینے والا اور وواہ کرانے والا براہمن یہ پانچوں نرک مین جاتے ہین۔

۱۷۳ - مرے ہوئے بھائی کی استری کے ساتھ بھوگ کرنے کی بدھ جو آگے کہینگے اُس بدھ سے بھی اپنی اچھا سے بھوگ کرنیوالا ددھشوپت کہلاتا ہے۔

۱۷۴ - پر استری مین دو پتر ہوتے ہین ایک کنڈ دوسرا گولک استری جیوت پت والی کا بیٹا کنڈ کہلاتا ہے اور مرے پت والی کا بیٹا گولک کہلاتا ہے۔

स्रोतसां भेदको यश्च तेषां चावरणे रतः॥ गृहसंवेशको दूतो वृक्षारो
पक एव च॥ १६३॥ श्वक्रीडी श्येनजीवी च कन्यादूषक एव च॥
हिंस्रो वृषलवृत्तिश्च गणानां चैव याजकः॥ १६४॥ आचारही
नः क्लीबश्च नित्यं याचनकस्तथा॥ कृषिजीवी श्लीपदी च स
द्भिर्निन्दित एव च॥ १६५॥ औरभ्रिको माहिषिकः परपूर्वाप
तिस्तथा॥ प्रेतनिर्यातकश्चैव वर्जनीयाः प्रयत्नतः॥ १६६॥
एतान्विगर्हिताचारानपाङ्क्तेयान्द्विजाधमान्॥ द्विजातिप्रव
रो विद्वानुभयत्र विवर्जयेत्॥ १६७॥ ब्राह्मणस्त्वनधीयानस्तृ
णाग्निरिव शाम्यति॥ तस्मै हव्यं न दातव्यं न हि भस्मनि हूयते
॥ १६८॥

۱۶۳- بہتے ہوئے پانی کو دوسرے مقام پر لیجانے والا- بہتے ہوئے پانی کو روکنے والا
پیشہ معماری سے اوقات بسر کرنیوالا- دوت- مزدوری لیکر درخت لگانیوالا-
۱۶۴- کتوں سے کھیل کرنیوالا- باز وغیرہ پرندے سے اوقات بسر کرنیوالا- کنواری کنیا سے
بھوگ کرنیوالا- جیو ہتیا کرنے والا- شودروں سے اوقات بسر کرنیوالا- بہت آدمیوں کو یگیہ کرانیوالا
۱۶۵- آچار نہ رکھنے والا- نامرد- ہر روز مانگنے والا- کھیتی سے اوقات بسر کرنیوالا- سوجھا
پاؤں والا اچھے لوگوں سے نندا پانیوالا-
۱۶۶- بھیڑ بھینس سے زندگی بسر کرنیوالا- اپنے شوہر کو چھوڑ کر دوسرے شخص سے شادی
کرنیوالی جو عورت اُسکا دوسرا شوہر مزدوری لیکر مردہ کو پھونکنے والا-
۱۶۷- یہ سب نندک آچار والے ہیں براہمنوں میں ادھم ہیں- پنگت میں بٹھانیکے
لائق نہیں ہیں- ان سب کو دیوتا یا پتر کرم میں بھوجن نہ کراوے-
۱۶۸- جیسے پھوس کی آگ جھٹ پٹ بجھ جاتی ہے اسیطرح مورکھ براہمن ہی اسلیے ہویہ اور
کویہ اسکو نہ دینا چاہیے کیونکہ راکھ میں ہون نہیں ہو سکتا-

अकारणपरित्यक्तामातापित्रोर्गुरोस्तथा॥ ब्राह्मैर्यौनैश्चस-
म्बन्धैःसंयोगंपतितैर्गतः॥१५७॥ अगारदाहीगरदःकुण्डा-
शीसोमविक्रयी॥ समुद्रयायीबन्दीचतैलिकःकूटकारकः॥
१५८॥ पित्राविवदमानश्चकितवोमद्यपस्तथा॥ पापरोग्यभि
शस्तश्चदाम्भिकोरसविक्रयी॥१५९॥ धनुःशराणांकर्ताच-
यश्चाग्रेदिधिषूपतिः॥ मित्रध्रुग्द्यूतवृत्तिश्चपुत्राचार्यस्तथैव-
च॥१६०॥ भ्रामरीगण्डमालीचश्वित्र्यथोपिशुनस्तथा॥उन्म
त्तोऽन्धश्चवर्ज्याःस्युर्वेदनिन्दकएवच॥१६१॥ हस्तिगोऽश्वोष्ट्र
दमकोनक्षत्रैर्यश्चजीवति॥ पक्षिणांपोषकोयश्चयुद्धाचार्य
स्तथैवच॥१६२॥

۱۵۷- بے وجہ ماتا پتا گرو کو ترک کرنیوالا پتت سے پڑھنے والا پتت کو پڑھانیوالا پتت سے یوہ وغیرہ رشتہ کرنیوالا

۱۵۸- گھر میں آگ لگانیوالا - زہر دینے والا کنڈ کا اَن کھانیوالا سوم لتا کا بیچنے والا سمندر میں جانیوالا - بندی یعنی تیل کے واسطے تل وغیرہ پیسنے والا - بیہودہ بکنے والا -

۱۵۹- باپ سے لڑائی کرنیوالا آپ پانسہ کھیلنا نہیں جانتا اور اپنے واسطے دوسرے کو پانسہ رکھلانیوالا - شراب پینے والا - کوڑھی - ابھشست پاپ لگنے سے دھرم کرنے والا رس بیچنے والا -

۱۶۰- تیر کمان رکھنے والا - بڑی سگی بہن کی شادی ہوئے بغیر چھوٹی بہن سے شادی کرنیوالا دوست سے دشمنی کرنیوالا - قمار بازی سے اوقات بسر کرنیوالا - بیٹے سے پڑھنے والا -

۱۶۱- مرگی گنڈمالا - سفید کوڑھ ان روگوں میں سے کوئی ایک روگ رکھنے والا کھوٹا آدمی دیوانہ - اندھا - وید کی نندا کرنیوالا -

۱۶۲- ہاتھی - بیل - اونٹ - گھوڑا ان سب کو بدھیا کرنیوالا - جوتش ودیا سے اوقات بسر کرنیوالا پرند پالنے والا - لڑائی کے واسطے علم سلحہ سکھانیوالا -

ع یعنی باپ کے ترکے بنا پاپی کا اَن کھانیوالا -

चिकित्सकान्देवलकान्मांसविक्रयिणस्तथा॥ विपणेन च
जीवन्तोवर्ज्याःस्युर्हव्यकव्ययोः॥ १५२॥ प्रेष्योग्रामस्यराज्ञ-
श्चकुनखीश्यावदन्तकः॥ प्रतिरोद्धागुरोश्चैवत्यक्ताग्निर्वा-
र्धुषिस्तथा॥ १५३॥ यक्ष्मीचपशुपालश्चपरिवेत्तानिराकृतिः
॥ब्रह्मद्विट्परिवित्तिश्चगणाभ्यन्तरएवच॥ १५४॥ कुशील-
वोऽवकीर्णीचवृषलीपतिरेवच॥ पौनर्भवश्चकाणश्चयस्य
चोपपतिर्गृहे॥ १५५॥ भृतकाध्यापकोयश्चभृतकाध्यापित-
स्तथा॥ शूद्रशिष्योगुरुश्चैववाग्दुष्टःकुण्डगोलकौ॥ १५६॥

۱۵۲- بید (یعنی طبیب) مزدوری لیکر تین برس تک دیوتا کی مورت کا پوجن کرنیوالا- ماس بیچنے والا بنیون کے کرم سے جینے والا-

۱۵۳- مزدوری لیکر رعیت یا راجا کی فرمانبرداری کرنیوالا- خراب ناخن رکھنے والا- بید یعنی سیاہ دانت والا گرو کے خلاف کام کرنے والا- اختیار رہوتے ہوئے اگن ہوتر نہ کرنیوالا سود بیاج سے اوقات بسر کرنیوالا-

۱۵۴ چھئی روگ والا پشو کے پالنے سے اوقات بسر کرنیوالا- پریتیا پنچ مہایگیہ کو نہ کرنیوالا براہمنوں سے دشمنی کرنیوالا پریت- گنا بھینتر-

۱۵۵- ناچ سے اوقات بسر کرنیوالا عورت کے جماع سے ناپاک برہم چاری شودر استری کا شوہر دوسرے شوہر سے عورت کا بیٹا کانا اور جسکی عورت نے دوسرا شوہر کیا ہو-

۱۵۶- مزدوری لیکر پڑھانیوالا مزدوری دیکر پڑھنے والا شودر کا چیلہ شودر کا گرو سخت گفتار رہنت کو پڑھانیوالا- کنڈ- گولک-

* دیکھو اشلوک ۱۷۱ + دیکھو اشلوک ۱۷۱- ‡ یعنی سب جانداروں کے رہنے کے لئے بڑے آدمیوں نے جو متھ وغیرہ عمارت بنائی ہو یا دولت دی ہو اس سے اوقات بسر کرنیوالا- (یعنی بحالت زندگی ایک شوہر کے دوسرے سے پیدا ا اشلوک)- ¶ یعنی بعد وفات ایک شوہر کے دوسرے سے پیدا- دیکھو اشلوک ۱۶۶ و ۱۷۴-

एषामन्यतमोयस्यभुञ्जीतश्राद्धमर्चितः॥ पितृणांतस्यतृप्तिः
स्याच्छाश्वतीसाप्तपौरुषी॥१४६॥एषवैप्रथमःकल्पःप्रदाने
हव्यकव्ययोः॥ अनुकल्पस्त्वयंज्ञेयःसदासद्भिरनुष्ठितः॥१४७
॥मातामहंमातुलंचस्वस्रीयंश्वशुरंगुरुम्॥ दौहित्रंविट्पतिं-
बन्धुमृत्विग्याज्यौचभोजयेत्॥ १४८ ॥ नब्राह्मणंपरीक्षेतदैवे
कर्म्मणिधर्म्मवित्॥ पित्र्येकर्म्मणितुप्राप्तेपरीक्षेतप्रयत्नतः॥
१४९ ॥येस्तेनपतितक्लीबायेचनास्तिकवृत्तयः॥ तान्हव्यक-
व्ययोर्विप्राननर्हान्मनुरब्रवीत्॥ १५० ॥जटिलंचानधीयानं-
दुर्ब्बलंकितवन्तथा॥ याजयन्तिचयेपूगांस्तांश्चश्राद्धेनभो-
जयेत्॥ १५१॥

۱۴۶- اِن وید پاٹھیون مین سے ایک کو بھی اگر پوجا کرکے شرادھ مین بھوجن کرا دے تو سات برش تک پترون کی ترپت ہوتی ہے۔

۱۴۷- ہویہ اور کویہ اِن دونون کے دان مین مکھیہ پکش کو کہا اب گُن پکش کو جسے اچھے لوگون نے اختیار کیا ہے کہتے ہین۔

۱۴۸- نانا- ماما- بھانجا- سُسر- ودیاگرو- بیٹی کا بیٹا- داماد- موسی کا بیٹا- یگیہ کرانیوالا ججمان- اِن دسون کو مکھیہ پکش کے ہونے مین بھوجن کرانا چاہیے۔

۱۴۹- دیوکرم مین براہمن کا امتحان نہ لینا چاہیے مگر پترکرم مین حکمت عملی سے براہمنون کا امتحان لینا چاہیے۔

۱۵۰- جن براہمنون کو منو جی نے شرادھ بھوجن کرانے کے لائق نہین کہا ہے وہ یہ ہین چور- مہاپاپی- نامرد (ناستک)۔

۱۵۱- برہمچاری- مورکھ- ناقص جسم والا- جوا کھیلنے والا- بہت آدمیون کو یگیہ کرانے والا۔

यःसंगतानिकुरुतेमोहाच्छ्राद्धेनमानवः॥सस्वर्गाच्च्यवतेलो
काच्छ्राद्धमित्रोद्विजाधमः॥१४०॥संभोजनीसाभिहितापैशा
चीदक्षिणाद्विजैः॥इहैवास्तेतुसालोकेगौरन्धेवैकवेश्मनि॥
॥१४१॥यथेरिणेबीजमुप्त्वानवप्तालभतेफलम्॥तथाऽनृ-
चेहविर्दत्त्वानदातालभतेफलम्॥१४२॥दातॄन्प्रतिग्रहीतॄं-
श्चकुरुतेफलभागिनः॥विदुषेदक्षिणांदत्त्वाविधिवत्प्रेत्यचे-
हच॥१४३॥कामंश्राद्धेऽर्चयेन्मित्रंनाभिरूपमपित्वरिम्॥
द्विषताहिहविर्भुक्तंभवतिप्रेत्यनिष्फलम्॥१४४॥यत्नेनभो
जयेच्छ्राद्धेबह्वृचंवेदपारगम्॥शाखान्तगमथाध्वर्युंछन्दोग-
न्तुसमाप्तिकम्॥१४५॥

۱۴۰- جو براہمن شرادھ مین بھوجن ہی کیواسطے متر ناکرتا ہے وہ سورگ لوک سے بھرشٹ ہوتا ہے اور وہ براہمنون مین ادھم ہے۔

۱۴۱- ایسا بھوجن پشاچون کا ہے اسی لوک مین پھلدایک ہے جسطرح اندھی گئو ایک ہی گھر مین رہسکتی ہے اسی طرح وہ بھوجن اسی لوک مین رہتا ہے پرلوک مین کام نہین آتا۔

۱۴۲- جسطرح اوسر زمین مین بیج بونے والا پھل نہین پاتا اسیطرح مورکھ براہمن کو دیوتا کی چیز بھوجن کرانے سے داتا پھل نہین پاتا۔

۱۴۳- پنڈت براہمن کو بدھی پوربک دکشنا دینے سے دینے والا اور لینے والا دونون پھل کو پاتے ہین اس لوک مین بھی اور پرلوک مین بھی

۱۴۴- شرادھ مین متر کو بھوجن کرانا کچھ مضائقہ نہین مگر شتر اگر پنڈت بھی ہو تو بھی اسکو بھوجن نہ کرانا کیونکہ اوسکے بھوجن کرنے سے پرلوک مین داتا پھل نہین پاتا ہے

۱۴۵- وید کے دو بھاگ ہین ایک منتر بھاگ دوسرا براہمن بھاگ۔ رگ وید کے دونون بھاگ یا یجر وید کے دونون بھاگ یا سمپورن ایک شاکھا کو پڑھے ہو تو ایسے براہمن کو یتن پوروک شرادھ مین بھوجن کراوے

ज्ञाननिष्ठा द्विजाः किंचित्तपोनिष्ठास्तथापरे॥ तपःस्वाध्याय निष्ठास्वकर्मनिष्ठास्तथापरे॥१३४॥ ज्ञाननिष्ठेषु कव्यानि प्रतिष्ठाप्यानि यत्नतः॥ हव्यानि तु यथान्यायं सर्वेष्वेव चतुर्ष्वपि॥१३५॥ अश्रोत्रियः पिता यस्य पुत्रः स्याद्वेदपारगः॥ अश्रोत्रियो वा पुत्रः स्यात्पिता स्याद्वेदपारगः॥१३६॥ ज्यायांसमनयोर्विद्याद्यस्य स्याच्छ्रोत्रियः पिता॥ मंत्रसंपूजनार्थन्तु सत्कारमितरोऽर्हति॥१३७॥ न श्राद्धे भोजयेन्मित्रं धनैः कार्योऽस्य संग्रहः॥ नारिन्न मित्रं यं विद्यात्तं श्राद्धे भोजयेद्द्विजम्॥१३८॥ यस्य मित्रप्रधानानि श्राद्धानि च हवींषि च॥ तस्य प्रेत्यफलं नास्ति श्राद्धेषु च हविःषु च॥१३९॥

۱۳۴ - چار طرح کے براہمن ہین - گیانی - تپسوی - وید پاٹھی - کرم کانڈی -

۱۳۵ - پترون کے دینے لائق چیز کو گیانی براہمن کو دینا چاہیئے اور دیوتون کے دینے لائق چیز کو چارون مین سے جو ملے اُسکو دینا چاہیئے -

۱۳۶ - جسکا باپ وید پاٹھی ہو اور آپ مورکھ ہو یا آپ وید پاٹھی ہو اور باپ مورکھ ہو تو -

۱۳۷ - ان دونون مین جسکا باپ وید پاٹھی ہو وہ بڑا ہے اور دوسرا بھی پڑھنے کی ستکار کے لائق ہے

۱۳۸ - شرادھ مین متر براہمن کو بھوجن نکراوے کچھ نقدی وغیرہ دیکر خاطرداری کرے بلکہ جو براہمن نہ دوست ہو نہ دشمن اُسکو بھوجن کراوے -

۱۳۹ - جس کسی کے دیو یا پتر کرم مین متر ہی بھوجن کرتا ہے اُسکو بھوجن کرانے کا پھل پرلوک مین نہین ہوتا -

श्रोत्रियायैवदेयानिहव्यकव्यानिदातृभिः॥ अर्हत्तमायवि
प्रायतस्मैदत्तंमहाफलम्॥१२८॥एकैकमपिविद्वांसंदैवेपि
त्र्येचभोजयेत्॥पुष्कलंफलमाप्नोतिनमंत्रज्ञान्बहूनपि १२९
॥ दूरादेवपरीक्षेतब्राह्मणंवेदपारगम्॥ तीर्थंतद्धव्यकव्या-
नांप्रदानेसोऽतिथिःस्मृतः॥ १३०॥सहस्रंहिसहस्राणाम
नृचांयत्रभुञ्जते॥ एकस्तान्मंत्रवित्प्रीतःसर्वानर्हतिधर्मतः
॥१३१॥ ज्ञानोत्कृष्टायदेयानिकव्यानिचहवींषिच॥ नहि-
हस्तावसृग्दिग्धौरुधिरेणैवशुध्यतः॥ १३२॥यावतोग्रसते
ग्रासान्हव्यकव्येष्वमंत्रवित्॥ तावतोग्रसतेप्रेत्यदीप्तशूलर्ष्ट्य
योगुडान्॥१३३॥

۱۲۸- دیوتا یا پتروں کے نام جو چیز دینا ہو وہ وید پاٹھی بڑے پوجیہ براہمن کو دے کیونکہ
ایسے براہمن کو دینے سے مہا پھل ہوتا ہے۔
۱۲۹- دیوتا یا پترکرم میں ایک بھی پنڈت براہمن کو بھوجن کرانے سے بڑا پھل ہوتا ہے
اور بہت سے مورکھ براہمن کے بھوجن کرانے سے ویسا پھل نہیں ہوتا۔
۱۳۰- دور سے وید پڑھنے والے براہمن کی پریکشا کرنا چاہیے کیونکہ دیوتا اور پتروں
کی چیز کا لینے والا وہی ہے۔
۱۳۱- دس لاکھ مورکھ براہمن کے بھوجن کرانے سے جو پھل ہوتا ہے وہی پھل منتر
کے جاننے والے ایک براہمن کے بھوجن کرانے سے ہوتا ہے۔
۱۳۲- دیوتا یا پتروں کے دینے کی چیز گیانی براہمن کو دینا چاہیے کیونکہ خون سے
بھرا ہاتھ خون ہی سے دھونے سے صاف نہیں ہوتا۔
۱۳۳- دیوتا یا پتروں کے ان کے جتنے گراس مورکھ براہمن بھوجن کرتا ہے اتنے
شرادھ کرنیوالا آگ سے گرم کیئے ہوئے لوہے کے پنڈ اور دو دھارا شستر کو بھوجن کرتا

पितृयज्ञन्तु निर्वर्त्य विप्रश्चन्द्रक्षयेऽग्निमान्॥ पिण्डान्वाहा-
र्यकं श्राद्धं कुर्यान्मासानुमासिकम्॥१२२॥ पितृणांमासिकं-
श्राद्धमन्वाहार्यंविदुर्बुधाः॥ तच्चामिषेणकर्त्तव्यंप्रशस्तेनसम
न्ततः॥१२३॥ तत्रयेभोजनीयाःस्युर्येचवर्ज्याद्विजोत्तमाः॥या-
वन्तश्चैवयैश्चान्नैस्तान्प्रवक्ष्याम्यशेषतः॥ १२४॥ द्वौदैवेपितृ-
कार्येत्रीनेकैकमुभयत्रवा॥ भोजयेत्सुसमृद्धोऽपिन प्रसज्जेत
विस्तरे॥१२५॥ सत्क्रियान्देशकालौचशौचंब्राह्मणसम्पदः
॥ पंचैतान्विस्तरोहन्तितस्मान्नेहेतविस्तरम्॥१२६॥ प्रथिता
प्रेतकृत्यैषापित्र्यंनामविधुक्षये॥ तस्मिन्युक्तस्यैतिनित्यंप्रे-
तकृत्यैवलौकिकी॥१२७॥

۱۲۲ — ہر مہینہ کی اماوس میں پتر یگیہ سے اگنی ہوتری براہمن شرادھ کرے۔

۱۲۳ — ہر مہینہ میں پتروں کی شرادھ کو انواہاری کہتے ہیں اُس شرادھ کو سدھ ماش میں اُتم مانس سے کرنا چاہیئے۔

۱۲۴ — اس شرادھ میں جو بھوجن کرانے کے لائق ہے اور جو لائق نہیں ہے اور جتنے چاہیئے اور جو انّ بھوجن کرانا چاہیئے وہ سب ہم کہیں گے۔

۱۲۵ — شرادھ میں دو کرم ہیں ایک پتر کرم دوسرا دیو کرم لیکن کیسا ہی دھنی ہو مگر دیو کرم میں ایک اور پتر کرم میں دو ہی براہمن کو بھوجن کراوے یا دونوں کرموں میں ایک ایک براہمن کو بھوجن کراوے زیادہ بستار نہ کرے۔

۱۲۶ — ستکار دیش کال پوترتا سریشٹھ براہمن ان سب باتوں کا ناش بستار کرنے سے ہوتا ہے اسلیئے بستار نہ کرنا چاہیئے۔

۱۲۷ — اماوش میں شرادھ کرنے سے پتر دنکا اُپکار ہوتا ہے بلکہ اسکے پتر لوگ شرادھ کرنے والے کو گن - بیٹیا - پوتا - دولت وغیرہ سب کچھ دیتے ہیں اسلیئے شرادھ ضرور کرنا چاہیئے

उपासते ये गृहस्थाः परपाकमबुद्धयः।। तेन ते प्रेत्य पशुतां व्रज-
न्त्यन्नादिदायिनाम्।। २०४ ।। अप्रणोद्योऽतिथिः सायं सूर्योढो
गृहमेधिना।। काले प्राप्तस्त्वकाले वा नास्यानश्नन्गृहे वसेत् ।।
१०५ ।। न वै स्वयं तदश्नीयादतिथिं यन्न भोजयेत्।। धन्यं यशस्य
मायुष्यं स्वर्ग्यं वातिथिपूजनम्।। २०६ ।। आसनावसथौ शय्या
मनुव्रज्यामुपासनाम्।। उत्तमेषूत्तमं कुर्याद्धीने हीनं समे समम्
।।१०७।। वैश्वदेवे तु निर्वृत्ते यद्यन्योऽतिथिराव्रजेत्।। तस्याप्य-
न्नं यथाशक्ति प्रदद्यान्न बलिं हरेत् ।। २०८ ।। न भोजनार्थं स्वे वि
प्रः कुलगोत्रे निवेदयेत्।। भोजनार्थं हि ते शंसन्वान्ताशीत्युच्य-
ते बुधैः ।। २०९ ।।

۱۰۴ – جو گرہستھ پرائے بھوجن کی اپاسنا (اگیانتا) سے کرتے ہیں اسکے کرنے سے پرلوک میں ان دینے والے کے پشو ہوتے ہیں۔

۱۰۵ – سورج ڈوبے اتتھ آیا ہو تو اسکو کھانا پانی ضرور دینا چاہیئے وقت پر آوے یا بے وقت مگر بغیر کھانا کھائے گھر میں نہ رہنے پاوے۔

۱۰۶ – جو چیز اتتھ کو بھوجن نہ کراوے اسکو آپ بھی نہ کھاوے اتتھ کو کھانا کھلانا دولت نیکنامی عمر و سورگ کے واسطے ہے۔

۱۰۷ – آسن گرہ شیا پیچھے چلنا سیوا ان سب کو اتم میں اتم مدھم میں مدھم ہین پرش میں ہین کرنا چاہیئے۔

۱۰۸ – بیشودیو کرم کرنے کے پیچھے دوسرا اتتھ آوے تو اسکو یتھا شکت ان دیوے بل کرم نہ کرے۔

۱۰۹ – بھوجن کے لئے براہمن اپنا کل اور گوتر نہ کہے اگر کہے تو اگلی ہوئی چیز کا کھانیوالا ہے اس بات کو پنڈتوں نے کہا ہے۔

संप्राप्तायत्वतिथयेप्रदद्यादासनोदके॥ अन्नंचैवयथाशक्तिस-
त्कृत्यविधिपूर्वकम्॥९९॥शिलानप्युंछतोनित्यंपंचाग्नीन-
पिजुह्वतः॥सर्वंसुकृतमादत्तेब्राह्मणोऽनर्चितोवसन्॥१००॥
तृणानिभूमिरुदकंवाक्चतुर्थीचसूनृता॥एतान्यपिसतांगेहे
नोच्छिद्यन्तेकदाचन॥१०१॥एकरात्रंतुनिवसन्नतिथिर्ब्राह्म-
णःस्मृतः॥अनित्यंहिस्थितोयस्मात्तस्मादतिथिरुच्यते१०२
॥नैकग्रामीणमतिथिंविप्रंसांगतिकंतथा॥उपस्थितंगृहेवि-
द्याद्भार्यायत्राग्नयोऽपिवा॥१०३॥

۹۹- جو اتتھ آپسے آیا ہو اُسکو اپنی شکت کے موافق بدھ پوروک آسن
آن جل آدر سے دیوے-

۱۰۰- جو براہمن اتتھ بغیر پوجن پائے گھر مین رہے تو گھر والا اگرچہ برا تجیوی
ہو اور شل اُنچھ سے اوقات بسر کرتا ہو اور پنچ اگن کو سیون کرتا ہو تو بھی اُسکا
سُکرت جاتا رہتا ہے-

۱۰۱- گھاس زمین پانی شیرین زبانی اِن چیزون سے اچھے لوگون کا گھر کبھی
خالی نہین رہتا-

۱۰۲- ایک رات کے رہنے والے کو اتتھ کہتے ہین اسلیئے اتتھ کو سواے
ایک رات کے ہر روز نہ رہنا چاہیئے-

۱۰۳- جس گرہستھ کے گھر استری اور اگن موجود ہو اُسکے گھر دوسرے دیہ کے
سے اتتھ آیا ہو تو اتتھ ہے مگر ایک گانون کا رہنے والا اور بچپنے کا ہمنشین کہتا کہنے
والا اتتھ نہین کہا جاتا ہے-

* کھیتی کرنیوالے جب غلہ کھیت سے کاٹ کر لیجاتے ہین اُس سے جو غلہ زمین مین گر کر پڑا رہجاتا ہے اُوسکو شل کہتے ہین
* بنیا لوگ بازار مین غلہ کا ڈھیر لگاتے ہین اور شام کو جو غلہ اُٹھا لیجاتے ہین اُس سے جو غلہ گر کر پڑا رہجاتا ہے وہ اُنچھ کہلاتا ہے-

एवं यः सर्वभूतानि ब्राह्मणो नित्यमर्चति॥ स गच्छति परं स्था-
नं तेजोमूर्त्तिपथर्जुना॥ ९३॥ कृत्वैतद्बलिकर्मैवमतिथिं पूर्व-
माशयेत्॥ भिक्षां च भिक्षवे दद्याद्विधिवद्ब्रह्मचारिणे॥ ९४॥ य-
त्पुण्यफलमाप्नोति गां दत्वा विधिवद्गुरोः॥ तत्पुण्यफलमाप्नो-
ति भिक्षां दत्वा द्विजो गृही॥ ९५॥ भिक्षामप्युदपात्रं वा सत्कृत्य वि-
धिपूर्वकम्॥ वेदतत्वार्थविदुषे ब्राह्मणायोपपादयेत्॥ ९६॥ न-
श्यन्ति हव्यकव्यानि नराणामविजानताम्॥ भस्मीभूतेषु विप्रे-
षु मोहाद्दत्तानि दातृभिः॥ ९७॥ विद्यातपःसमृद्धेषु हुतं विप्रमुखा-
ग्निषु॥ निस्तारयति दुर्गाच्च महतश्चैव किल्बिषात्॥ ९८॥

۹۳ - اسطرح جو برہمن ہر روز سب جیوؤں کی پوجا کرتا ہے وہ تیج روپ ہوکر کومل مارگ سے بڑے استھان کو جاتا ہے۔

۹۴ - اسطرح بل کرم کرکے گرہ جن کے بھوجن کے پہلے اتیتھہ کو بھوجن کرادے اور برہم چاری بھکھاری کو بھیکھ دے۔

۹۵ - بدھ پوروک گرو کو گئو دینے سے جو پھل ہوتا ہے وہی پھل بھکھاری کو بھیکھ دینے سے گرہستھہ آشرم والا پاتا ہے۔

۹۶ - وید کا سدھانت اور ارتھہ جاننے والے براہمن کو آدر سے بدھ پوروک بھکشا یا جل دیوے۔

۹۷ - داتا لوگ جو بسنت موہ سے دیوتا یا پتر کے ہیت مورکھہ براہمن کو دیتے ہیں سو سب نسپھل ہو جاتی ہے۔

۹۸ - ودیا وان اور تپ دان براہمن کے مکھہ روپی اگن میں جو ہون کیا جاتا ہے وہ بڑے پاپ سے ہون کرنے والے کو چھڑاتا ہے۔

एवंसम्यग्घविर्हुत्वासर्वदिक्षुप्रदक्षिणम्॥इन्द्रान्तकाप्पतीन्दुभ्यः
सानुगेभ्योबलिंहरेत्॥ ८७॥मरुद्भ्यइतितुद्वारिक्षिपेदप्स्वद्भ्यइत्य-
पि॥ वनस्पतिभ्यइत्येवंमुशलोलूखलेहरेत्॥ ८८॥उच्छीर्षकेश्रि
यैकुर्याद्भद्रकाल्यैचपादतः॥ ब्रह्मवास्तोष्पतिभ्यांतुवास्तुमध्ये
बलिंहरेत्॥ ८९॥ विश्वेभ्यश्चैवदेवेभ्योबलिमाकाशउत्क्षिपेत्
॥दिवाचरेभ्योभूतेभ्योनक्तंचारिभ्यएवच॥ ९०॥पृष्ठवास्तुनि
कुर्वीतबलिंसर्वात्मभूतये॥ पितृभ्योबलिशेषन्तुसर्वंद-
क्षिणातोहरेत्॥ ९१॥ शुनांचपतितानांचश्वपचांपापरोगि-
णाम्॥वायसानांकृमीणांचशनकैर्निर्वपेद्भुवि॥९२॥

۸۷ - اچھی پرکار سے ہَون کرکے سب دشا مین پَردکشن کرم سے اندر
برن یم چندر ان سب کو اور انکھون کے سیوکون کو بل دیوے -
۸۸ - دوار دیش مین مرت کو جل استھان مین جل کو موسل او کھلی کے
استھان مین بنسپت کو -
۸۹ - واستو پرش کے سر پا وند حصہ مین کرم سے شری بھدر کالی واستو
شپت ان سب کو دیوے -
۹۰ - وشوے دیوون مین پھرنے والے بھوت رات مین پھرنے والے بھوت
ان سب کو آکاش مین دیوے -
۹۱ - واستو پرش کی پیٹھ مین سرباتم بھوت کو بل دیوے بل دینے سے
جو ان بچے وہ دکشن دشا مین پتِرون کو دیوے -
۹۲ - کتا پتت ڈوم پاپ روگی کوا چھوٹا کیڑا ان سب کو آہستہ سے زمین مین
دیوے -

स्वाध्यायेनार्चयेदृषीन्होमैर्देवान्यथाविधि ॥ पितॄन्श्राद्धैश्चनॄ-
नन्नैर्भूतानिबलिकर्म्मणा ॥ ८१ ॥ कुर्य्यादहरहः श्राद्धमन्नाद्ये-
नोदकेनवा ॥ पयोमूलफलैर्वापिपितृभ्यः प्रीतिमावहन् ८२
॥ एकमप्याशयेद्विप्रंपित्रर्थेपांचयज्ञिके ॥ नचैवात्राशये-
त्किञ्चिद्वैश्वदेवंप्रतिद्विजम् ॥ ८३ ॥ वैश्वदेवस्यसिद्धस्यगृह्ये-
ऽग्नौविधिपूर्व्वकम् ॥ आभ्यः कुर्य्याद्देवताभ्योब्राह्मणोहो-
ममन्वहम् ॥ ८४ ॥ अग्नेःसोमस्यचैवादौतयोश्चैवसमस्तयोः
॥ विश्वेभ्यश्चैवदेवेभ्योधन्वन्तरयएवच ॥ ८५ ॥ कुह्वैचैवानुम-
त्यैचप्रजापतयएवच ॥ सहद्यावापृथिव्योश्चतथास्विष्टकृते-
ऽन्ततः ॥ ८६ ॥

۸۱ - وید پڑھنے سے رشی کی پوجا اور ہون کرنے سے دیوتا کی پوجا شرادھ کرنے سے پتر کی پوجا انّ دان سے منشیہ کی پوجا بلدان سے بھوت کی پوجا بدھ سہت کرنا چاہیے -

۸۲ - پتروں سے پریت کرتا ہوا انّ جل دودھ مول پھل سے دن دن میں پاروں شرادھ کرے -

۸۳ - پنچ مہایگیہ میں پتروں کے نمت جو بل کرم کہا ہے وہ اگر ہو سکے تو ایک یا بہت براہمنوں کو بھوجن کرا دے لیکن وشوے دیو کے نمت براہمن بھوجن نہ کرا دے -

۸۴ - سنسکار سہت اوستھ نام اگنی میں جو آگے دیوتا کہیں گے ان کو دن دن میں بدھ سہت آہت دیوے -

۸۵ - اگنی سوم - اگنی سوم - وشوے دیو دھنونتر -

۸۶ - کہو - انمت - پرجاپت - دیاوا - پرتھوی - سوشٹ کرت ان سب کو آہت دیوے -

स्वाध्याये नित्ययुक्तः स्याद्दैवे चैवेह कर्मणि। दैवकर्मणि युक्तो हि बिभर्तीदं चराचरम्॥७५॥ अग्नौ प्रास्ताहुतिः सम्यगादित्यमुपतिष्ठते। आदित्याज्जायते वृष्टिर्वृष्टेरन्नं ततः प्रजाः॥७६॥ यथा वायुं समाश्रित्य वर्त्तन्ते सर्वजन्तवः। तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्त्तन्ते सर्व आश्रमाः॥७७॥ यस्मात्त्रयोऽप्याश्रमिणो ज्ञानेनान्नेन चान्वहम्। गृहस्थेनैव धार्यन्ते तस्माज्ज्येष्ठाश्रमो गृही॥७८॥ स संधार्यः प्रयत्नेन स्वर्गमक्षयमिच्छता। सुखं चेहेच्छता नित्यं योऽधार्यो दुर्बलेन्द्रियैः॥७९॥ ऋषयः पितरो देवा भूतान्यतिथयस्तथा। आशासते कुटुम्बिभ्यस्तेभ्यः कार्यं विजानता॥८०॥

۷۵- جوآدمی ہرروز وید کو پڑھتا ہے اور اگن ہین ہون کرتا ہے- وہ سمپورن سنسار کرلے سکتا ہے-

۷۶- اگن ہین جو آہت پڑتی ہے وہ سورج کے پاس جاتی ہے اور سورج سے پانی برستا ہے پانی سے اناج پیدا ہوتا ہے ناج سے پرجا پیدا ہوتی ہے-

۷۷- جسطرح ہوا کے سہارے سے سب جیو جیتے ہین اسیطرح گرہستھ آشرم کے سہارے سب آشرم والے رہتے ہین-

۷۸- وید کے پڑھنے اور ان دان دینے سے تینون آشرمون کو گرہستھ آشرم والا ہرروز اختیار کرتا ہے اس سے گرہستھ آشرم ہی بڑا ہے-

۷۹- پرلوک ہین اکشی سورگ اور اس لوک ہین سکھ کی اچھا کرنیوالا اس گرہستھ آشرم کو ہرروز دھارن کرتا ہے جو دربل اندری والون سے دھارن نہین ہوسکتا-

۸۰- رشی پتر- دیوتا اتتھی یہ سب گرہستھون سے بھوجن کا آسرا رکھتے ہین اسلیے ان سب کو ان جل دینا چاہیے-

तासांक्रमेणसर्वासांनिष्कृत्यर्थंमहर्षिभिः।।पंचक्लृप्तामहाय-
ज्ञाःप्रत्यहंगृहमेधिनाम्।।६९।।अध्यापनंब्रह्मयज्ञःपितृयज्ञस्तु
तर्पणम्।।होमोदैवोबलिर्भौतोनृयज्ञोऽतिथिपूजनम्।।७०।।पं-
चैतान्योमहायज्ञान्नहापयतिशक्तितः।।सगृहेऽपिवसन्नित्यं
सूनादोषैर्नलिप्यते।।७१।।देवतातिथिभृत्यानांपितृणामात्म-
नश्चयः।।ननिर्वपतिपंचानामुच्छ्वसन्नसजीवति।।७२।।अहुतं-
चहुतंचैवतथाप्रहुतमेवच।।ब्राह्म्यंहुतंप्राशितंचपंचयज्ञान्प्र-
चक्षते।।७३।।जपोऽहुतोहुतोहोमःप्रहुतोभौतिकोबलिः।।ब्रा-
ह्म्यंहुतंद्विजाग्र्यार्चाप्राशितंपितृतर्पणम्।।७४।।

۶۹- ان پانچوں کے پراسچت کے لیئے پانچ مہایگیہ کو گرہستھ لوگ نتیہ ہی کریں-

۷۰- پانچ مہایگیہ یہ ہیں یعنے وید کا پڑھنا- پتر کا ترپن- ہون کرنا- بل دینا اتتھی کا پوجن- ان سب کو بلحاظ سلسلہ برہم یگیہ- پتر یگیہ- دیو یگیہ- بھوت یگیہ- منشیہ یگیہ کہتے ہیں-

۷۱- جو کوئی سامرتھ کے موافق ان پانچوں مہایگیوں کو کرتا ہے وہ روزمرہ کی ہنسا (یعنی جان کشی) کے پاپ سے چھوٹتا رہتا ہے-

۷۲- جو آدمی دیوتا مسافر اقارب بزرگوں کو کھانا نہیں دیتا ہے وہ بحالت زندگی مردہ ہے-

۷۳- آہت- ہت- پرہت- براہم ہت- پراشت- یہ پانچ یگیہ ہیں-

۷۴- ان پانچوں کو سلسلہ سے جپ- ہون- بھوت بل- اتتھ پوجا- پتر ترپن کہتے ہیں-

कुविवाहैः क्रियालोपैर्वेदानध्ययनेनच ॥ कुलान्यकुलतांयांति
ब्राह्मणातिक्रमेणच ॥ ६३ ॥ शिल्पेनव्यवहारेण शूद्रापत्यैश्च
केवलैः ॥ गोभिरश्वैश्चयानैश्चकृष्याराजोपसेवया ॥ ६४ ॥ अया
ज्ययाजनैश्चैवनास्तिक्येन चकर्मणाम् ॥ कुलान्याशुविनश्यंति
यानिहीनानिमंत्रतः ॥ ६५ ॥ मंत्रतस्तुसमृद्धानिकुलान्यल्पधना-
न्यपि ॥ कुलसंख्यांचगच्छन्तिकर्षन्तिचमहद्यशः ॥ ६६ ॥ वैवा-
हिकेऽग्नौकुर्वीतगृह्यंकर्मयथाविधि ॥ पंचयज्ञविधानंचपं-
क्तिचान्वाहिकिंगृही ॥ ६७ ॥ पंचसूनागृहस्थस्य चूल्लीपेषण्यु
पस्करः ॥ कण्डनीचोदकुंभश्चबध्यतेयास्तुवाहयन् ॥ ६८ ॥

۶۳- نندت وواہ کرنا کا نہ ہونا - وید کا نہ پڑھنا براہمن کا اپمان ان سب باتون سے
کل نشٹ ہو جاتا ہے -

۶۴- تصویر کشی وغیرہ سودی روپیہ دینا صرف شودر کی عورت سے لڑکا پیدا کرنا گئو
گھوڑا رتھ کی خرید فروخت کرنا کھیتی کرنا راج سیوا کرنا ان سب سے

۶۵- اور جو یگیہ کرانے کے لائق نہیں ہے اسکو یگیہ کرانا اور بغیر منتر کے کرم کرنا ان
سب باتون سے کل جلد ناش ہو جاتا ہے -

۶۶- جس کل مین منتر سے سب کرم ہوتے ہون گو کہ بہت دولت نہ ہو تا ہم وہ کل بڑا
کہلاتا ہے اور نیک نام ہوتا ہے -

۶۷- کرم مندرجہ گرہیہ سوتر اور پنچ یگیہ* اور نتیہ بھوجن پاک ان سب کو وواہ سے کی
اگن مین بدھ سے کرنا چاہیئے -

۶۸- گرہستھ کے گھر مین چولھا - سل - بٹہ - جھاڑو - اوکھلی - موسل پانی کا گھڑا ان
سے کام لینے مین جیو مرتے ہین -

* یعنے وید کا پڑھنا - دیو رشی پتر کا ترپن - ہوم - بل - اتتھ کا پوجن -

शोचन्तिजामयोयत्रविनश्यत्याशुतत्कुलम् ॥ नशोचन्तितुय-
त्रैतावर्द्धतेतद्धिसर्व्वदा ॥ ५७ ॥ जामयोयानिगेहानिशपन्त्यप्र-
तिपूजिताः ॥ तानिकृत्याहतानीवविनश्यन्तिसमन्ततः ॥ ५८
॥ तस्मादेताःसदापूज्याभूषणाच्छादनाशनैः ॥ भूतिकामैर्न-
रैर्नित्यंसत्कारेषूत्सवेषुच ॥ ५९ ॥ सन्तुष्टोभार्ययाभर्त्ताभर्त्राभा-
र्य्यातथैवच ॥ यस्मिन्नेवकुलेनित्यंकल्याणंतत्रवैध्रुवम् ॥
६० ॥ यदिहिस्त्रीनरोचेतपुमांसंनप्रमोदयेत् ॥ अप्रमोदात्पुनः
पुंसःप्रजननंनप्रवर्त्तते ॥ ६१ ॥ स्त्रियान्तुरोचमानायांसर्व्वंतद्रो-
चतेकुलम् ॥ तस्यांत्वरोचमानायांसर्व्वमेवनरोचते ॥ ६२ ॥

۵۷ - جس کل میں استری لوگ دکھی رہتی ہیں وہ کل جلد نشٹ ہو جاتا ہے -
اور جس کل میں استری لوگ سکھی رہتی ہیں وہ کل ہمیشہ بڑھتا ہے -
۵۸ - پوجا نہ پا کر استری لوگ جس کل کو سراپ دیتی ہیں وہ کل چاروں طرف سے
نشٹ ہو جاتا ہے -
۵۹ - اسلیئے دولت کا چاہنے والا آدمی گہنا کپڑا کھانا سے ہمیشہ استریوں کو پوجا
کرے -
۶۰ - جس کل میں استری سے پت اور پت سے استری پرسن رہتی ہیں اس کل میں
بیشک کلیان ہے -
۶۱ - اگر استری پت کو پرسن نہ رکھے گی تو اولاد کہان سے ہوگی -
۶۲ - استری کے پرسن رہنے سے سب کل پرسن رہتا اور استری کے اپرسن رہنے سے سب کل
اپرسن رہتا ہے -

नकन्यायाः पिता विद्वान्गृह्णीयाच्छुल्कमण्वपि ॥ गृह्णञ्शुल्कं
हि लोभेन स्यान्नरोऽपत्यविक्रयी ॥ ५१ ॥ स्त्रीधनानि तु ये मोहा
दुपजीवन्ति बान्धवाः ॥ नारीयानानि वस्त्रं वा ते पापा यान्त्यधो-
गतिम् ॥ ५२ ॥ आर्षे गोमिथुनं शुल्कं केचिदाहुर्मृषैव तत् ॥ अ-
ल्पोऽप्येवं महान्वापि विक्रयस्तावदेव सः ॥ ५३ ॥ यासां नाददते
शुल्कं ज्ञातयो न स विक्रयः ॥ अर्हणं तत्कुमारीणामानृशंस्यं
च केवलम् ॥ ५४ ॥ पितृभिर्भ्रातृभिश्चैताः पतिभिर्देवरैस्तथा ॥
पूज्या भूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभिः ॥ ५५ ॥ यत्र नार्य्य
स्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ॥ यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्रा-
फलाः क्रियाः ॥ ५६ ॥

۵۱ - لڑکی کا باپ تھوڑا معاوضہ بھی نہ لیوے طمع سے کچھ معاوضہ لینے سے لڑکی کا بیچنے والا کہلاتا ہے -

۵۲ - عورتوں کی سواری و دولت و کپڑا اسے کر جو عزیز و اقارب اوقات بسری کرتے ہیں وہ بڑے پاپی ہیں نرک میں جاتے ہیں -

۵۳ - کسی رشی نے آرش وواہ میں دو گئو لینا جائز رکھا ہے لیکن تھوڑا یا بہت کچھ بھی لینا لڑکی کا بیچنا ہی کہلاتا ہے -

۵۴ - جس لڑکی کا معاوضہ ذات کے لوگ نہیں لیتے وہ بیچنا نہیں کہلاتا معاوضہ نہ لینا لڑکی کا پوجن ہے اور ترحم ہے -

۵۵ - بہت کلیان کے چاہنے والے باپ بھائی پت دیور گہنا اور کپڑا سے عورتوں کی پوجا کریں -

۵۶ - جس کل میں عورتوں کی پوجا ہوتی ہے اس کل میں دیوتا لوگ بہار کرتے ہیں اور جہاں عورتوں کی پوجا نہیں ہوتی وہاں سب کریا بے پھل ہے -

ऋतुः स्वाभाविकः स्त्रीणां रात्रयः षोड़शस्मृताः ॥ चतुर्भिरितरैः
सार्द्धमहोभिः सद्विगर्हितैः ॥ ४६ ॥ तासामाद्याश्चतस्रस्तु निंदि-
तैकादशी च या ॥ त्रयोदशी च शेषास्तु प्रशस्ता दशरात्रयः ॥ ४७
युग्मासु पुत्रा जायन्ते स्त्रियोऽयुग्मासु रात्रिषु ॥ तस्माद्युग्मासु
पुत्रार्थी संविशेदार्तवे स्त्रियम् ॥ ४८ ॥ पुमान्पुंसोऽधिके शुक्रे-
स्त्री भवत्यधिके स्त्रियाः ॥ समेऽपुमान्पुंस्त्रियौ वा क्षीणेऽल्पे च-
विपर्ययः ॥ ४९ ॥ निन्द्यास्वष्टासु चान्यासु स्त्रियो रात्रिषु वर्जय-
न् ॥ ब्रह्मचार्येव भवति यत्र तत्राश्रमे वसन् ॥ ५० ॥

۴۶۔ رِتُ کال کی سولہ رات ہین باستثناے چار کے جو مکروہ ہین۔

۴۷۔ انمین پہلی چار اور گیارھوین اور تیرھوین رات نندت (ممنوع) ہین باقی دس رات اچھی ہین۔

۴۸۔ غالبًا سم* (جفت) رات ہین بھوگ (جماع) کرنے سے لڑکا پیدا ہوتا ہے اور بکھم† (طاق) رات ہین بھوگ کرنے سے لڑکی پیدا ہوتی ہے۔ اسلئے لڑکا پیدا ہونے کی خواہش رکھنے والا سم راتین بھوگ کرے

۴۹۔ مرد کے نطفہ زیادہ ہونے سے بکھم رات ہین بھی لڑکا پیدا ہوتا ہے اور عورت کے نطفہ زیادہ ہونے سے سم رات ہین بھی لڑکی پیدا ہوتی ہے اگر مرد و عورت دونون کا نطفہ برابر ہو تو لڑکا نامرد پیدا ہوتا ہے یا لڑکا و لڑکی دونون پیدا ہوتے ہین اور اگر دونونکا نطفہ کم ہو تو حمل نہین رہتا۔

۵۰۔ آٹھ راتین جو منع ہین انمین بھوگ نہ کرنے سے جس آشرم ہین رہے اسمین برہم چاری ہی کہلاتا ہے۔

* جیسے چھٹوین آٹھوین دسوین بارھوین چودھوین سولھوین رات۔

† جیسے پانچوین ساتوین نوین گیارھوین تیرھوین پندرھوین رات۔

इतरेषु तु शिष्टेषु नृशंसानृतवादिनः॥ जायन्ते दुर्विवाहेषु ब्रह्मध-
र्मद्विषः सुताः॥४१॥ अनिन्दितैः स्त्रीविवाहैरनिन्द्या भवति प्रजा
॥ निन्दितैर्निन्दिता नॄणां तस्मान्निन्द्यान्विवर्जयेत्॥ ४२॥ पाणि
ग्रहणसंस्कारः सवर्णासूपदिश्यते॥ असवर्णास्वयं ज्ञेयो वि-
धिरुद्वाहकर्मणि॥ ४३॥ शरः क्षत्रियया ग्राह्यः प्रतोदो वैश्य-
कन्यया॥ वसनस्य दशा ग्राह्या शूद्रयोत्कृष्टवेदने॥ ४४॥ ऋतु-
कालाभिगामी स्यात्स्वदारनिरतः सदा॥ पर्ववर्जं व्रजेच्चैनां तद्व्र-
तो रतिकाम्यया॥ ४५॥

۴۱- اور باقی چار وواہوں سے جو لڑکا پیدا ہوتا ہے وہ گھاتک ہوتا ہے اور جھوٹھ بولتا ہے اور برہم دھرم کا شتر (دشمن) ہوتا ہے۔

۴۲- انندت (بے عیب ۱۲) وواہ سے آنندت اولاد پیدا ہوتی ہے اور نندت (معیوب ۱۲) وواہ سے نندت اولاد پیدا ہوتی ہے اسلئے نندت وواہ نکرنا چاہئے۔

۴۳- اپنی ذات کی جو کنیا ہے اسی سے ہست گرہن کا سنسکار جاننا دوسری ذات کی کنیا کے ساتھ وواہ کرنیمیں جو طریق آگے کہینگے وہ کرنا۔

۴۴- کشتری کی کنیا تیر کو گرہن کرے اور ویشیہ کی کنیا آلہ ستوررانی کو اور شودر کی کنیاں کپڑے کے کونے کو پکڑے جبکہ اسکا وواہ بڑی ذات کے پرش سے ہوتا ہو۔

۴۵- رت کال میں استری سے بھوگ کرے اور دوسرے کی استری سے بھوگ نکرے مگر اپنی استری سے رت کال میں بھی پرب کے دن بھوگ نکرے اور جو استری کا من ہو تو بغیر رت کال کے بھی بھوگ کرے یہ نیم ہے اور رت کال میں پاس ہے اور سامرتھ رکھتا ہو تو ضرور بھوگ کرے نہیں تو بڑا دوش ہے۔

* یعنے بعد فراغت حیض سولہ دن تک۔

* یعنے کرشن پکش کی اشٹمی چتردشی اماوس پورنماشی سنکرانت۔

योयस्यैषांविवाहानांमनुनाकीर्त्तितोगुणः ॥ सर्वंशृणुततंवि-
प्राःसर्वंकीर्त्तयतोमम: ॥ ३६ ॥ दशपूर्वान्परान्वंश्यानात्मानंचै-
कविंशकम् ॥ ब्राह्मीपुत्रःसुकृतकृन्मोचयेदेनसःपितॄन् ॥ ३७
॥ दैवोढाजःसुतश्चैवसप्तसप्तपरावरान् ॥ आर्षोढाजःसुतस्त्रीं
स्त्रीन्षट्षट्कायोढजःसुतः ॥ ३८ ॥ ब्राह्मादिषुविवाहेषुच-
तुर्ष्वेवानुपूर्वशः ॥ ब्रह्मवर्चस्विनःपुत्राजायन्तेशिष्टसम्मताः ॥
३९ ॥ रूपसत्वगुणोपेताधनवन्तोयशस्विनः ॥ पर्याप्तभोगाध-
र्म्मिष्ठाजीवन्तिचशतंसमाः ॥ ४० ॥

۳۶ - جس دواہ کا جو گن منّ جی نے کہا ہے وہ ہم اے برہمن لوگو اچھی طرح سے کہتے ہیں آپ لوگ سنیئے کہ اگر -

۳۷ - براہم دواہ سے لڑکا پیدا ہوا اور اچھے کرمون کو کرے تو دش برش اوپر کے اور دش برش نیچے کے اور اکیسوان اپنے کو پاپ سے چھڑاتا ہے -

۳۸ - دیو دواہ سے لڑکا پیدا ہو کر اچھے کرم کرنے والا ہو تو سات برش اوپر کے اور سات برش نیچے کے اور پندرھوان اپنے پاپ سے چھڑاتا ہے اور آرش دواہ سے لڑکا پیدا ہو کر تین تین برش اوپر اور نیچے کے اور پراجاپتیہ دواہ سے لڑکا پیدا ہو کر چھہ چھہ برش نیچے اور اوپر کے ان سب کو پاپ سے چھڑاتا ہے بشرطیکہ اچھے کرمون کا کرنے والا ہو -

۳۹ - براہم دواہ وغیرہ چارو دواہون سے جو لڑکا پیدا ہوتا ہے وہ برہمچاری اور اچھے لوگون کے برابر ہوتا ہے -

۴۰ - اور روپ اور اچھے گن اور دیش اور بھاگ اور دھرم اور دھن والا ہوتا ہے اور سو برش تک جی سکتا ہے -

सहनौचरतांधर्ममितिवाचानुभाष्यच॥कन्याप्रदानमभ्यर्च्य-
प्राजापत्योविधिःस्मृतः॥३०॥ज्ञातिभ्योद्रविणंदत्वाकन्यायै
चैवशक्तितः॥कन्याप्रदानंस्वाच्छन्द्यादासुरोधर्म्मउच्यते॥
३१॥इच्छयान्योन्यसंयोगःकन्यायाश्चवरस्यच॥गान्धर्व्वः
सतुविज्ञेयोमैथुन्यःकामसम्भवः॥३२॥हत्वाछित्वाचभित्वा
चक्रोशन्तींरुदतींगृहात्॥प्रसह्यकन्याहरणंराक्षसोविधिरु
च्यते॥३३॥सुप्तांमत्तांप्रमत्तांवारहोयत्रोपगच्छति॥सपा-
पिष्ठोविवाहानांपैशाचश्चाष्टमोऽधमः॥३४॥अद्भिरेवद्वि-
जाग्र्याणांकन्यादानंविशिष्यते॥इतरेषांतुवर्णानामितरे-
तरकाम्यया॥३५॥

۳۰ - براور کنیا دونون ساتھہ دھرم کو کرین یہ بات کہکر براور کنیا کی پوجا کرکے کنیا کو دیوے یہ پراجاپتیہ وواہ کہلاتا ہے -

۳۱ - کنیا اور کنیا کی ذات والون کو دولت دے اور کنیا لیبا اسر وواہ کہلاتا ہے -

۳۲ - براور کنیان آپسمین اچھیا کرکے جو سنجوگ کرین وہ گاندھرب وواہ کہلاتا ہے یہ وواہ یعنے شادی صحبت داری کیواسطے ہے -

۳۳ - مارپیٹ ضد کرکے روتی پکارتی ہوئی کنیا کو گھر سے لے آنا راکشس وواہ کہلاتا ہے -

۳۴ - جو عورت سوتی ہو یا دولت یا شہوت سے مست ہو یا کسی بیماری مین مبتلا یا بیخبر ہو اُس سے تنہائی مین صحبت کرنا پشاچ وواہ ہے یہ سب سے ادھم ہے -

۳۵ - براہمن کو جل سے کنیا دان کرنا اچھا ہے اور کشتری وغیرہ کا بغیر جل کے آپس کی اچھیا سے صرف زبان کے کہنے سے وواہ ہوسکتا ہے -

चतुरो ब्राह्मणस्याद्यान्प्रशस्तान्कवयो विदुः ॥ राक्षसं क्षत्रि-
यस्यैकमासुरं वैश्यशूद्रयोः ॥ २४ ॥ पंचानां तु त्रयो धर्म्या द्वाव
धर्म्यौ स्मृताविह ॥ पैशाचश्चासुरश्चैव न कर्त्तव्यौ कदाचन ॥
२५ ॥ पृथक्पृथग्वा मिश्रौ वा विवाहौ पूर्व्वचोदितौ ॥ गान्धर्वो
राक्षसश्चैव धर्म्यौ क्षत्रस्य तौ स्मृतौ ॥ २६ ॥ आच्छाद्य चार्चयि-
त्वा च श्रुतिशीलवते स्वयम् ॥ आहूय दानं कन्याया ब्राह्मो ध-
र्मः प्रकीर्त्तितः ॥ २७ ॥ यज्ञे तु वितते सम्यगृत्विजे कर्म कुर्व्वते ॥
अलंकृत्य सुतादानं दैवं धर्मं प्रचक्षते ॥ २८ ॥ एकं गोमिथुनं द्वे-
वा वरादादाय धर्मतः ॥ कन्याप्रदानं विधिवदार्षो धर्मः स उच्य-
ते ॥ २९ ॥

۲۴ - پہلے کے چار وِواہ براہمن کو اور کشتری کو راکشش وواہ اور ویشیہ کو اسر وواہ بعضوں نے مخصوص قرار دیا ہے۔

۲۵ - لیکن منجملہ پانچ وواہ آخرالذکر کے تین جائز اور دو نا جائز ہین لہذا پیشاچ اور اسر وواہ نکرنا چاہیے۔

۲۶ - گاندھرپ اور راکشش وواہ دونون علیحدہ ہون یا یکجا صرف کشتری کیواسطے کہا ہے۔

۲۷ - (اب آٹھو وواہون کا لکشن کہتے ہین) برا ور کنیا کو کپڑا اور زیور دیکر بر کو بلاکر کنیا ان کو دیوے وہ براہم وواہ کہلاتا ہے۔

۲۸ - یگیہ مین رتوج کو النکار سہت کنیا کو دیوے وہ دیو وواہ کہلاتا ہے

۲۹ - ایک یا دو گئو اور بیل بر سے لیکر کنیا کو دیوے وہ آرش وواہ کہلاتا ہے۔

दैवपित्र्यातिथेयानि तत्प्रधानानि यस्य तु ॥ नाश्नन्ति पितृदेवा-
स्तन्न च स्वर्गं स गच्छति ॥ १८ ॥ वृषलीफेनपीतस्य निःश्वासो-
पहतस्य च ॥ तस्यां चैव प्रसूतस्य निष्कृतिर्न विधीयते ॥ १९ ॥
चतुर्णामपि वर्णानां प्रेत्य चेह हिताहितान् ॥ अष्टाविमान्स-
मासेन स्त्रीविवाहान्निबोधत ॥ २० ॥ ब्राह्मो दैवस्तथैवार्षः
प्राजापत्यस्तथासुरः ॥ गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचश्चाष्टमो
ऽधमः ॥ २१ ॥ यो यस्य धर्म्यो वर्णस्य गुणदोषौ च यस्य यौ ॥ त-
द्वः सर्वं प्रवक्ष्यामि प्रसवे च गुणागुणान् ॥ २२ ॥ षडानुपूर्व्या
विप्रस्य क्षत्रस्य चतुरोऽवरान् ॥ विट्शूद्रयोस्तु तानेव विद्याद्धर्म्या-
नराक्षसान् ॥ २३ ॥

۱۸ - جس براہمن کے گھر مین شودر کی کنیان دیوکرم اور پتر کرم کرتی ہو اُسکے دئیے ہوئے پتر اور
کبیہ کو دیوتا اور پتر نہین لیتے اور وہ براہمن سورگ مین نہین جاتا -
۱۹ - جس براہمن نے شودر کی کنیا کے لب پر اپنا لب ملایا اور اوسکی سانس سے اسکا منہ ملا اور
بصورت فرزند آپ اُس سے پیدا ہوا اُس براہمن کا پراسچت شاستر مین نہین ہے -
۲۰ - اِس لوک اور پرلوک مین چارو ورنون کا ہت کرنیوالا اور اہت کرنیوالا آٹھ طرح کا
وواہ ہے اُسکو ہمسے سُنئے یہ بات بھرگ جی کہتے ہین -
۲۱ - براہم - دیو - آرش - پراجاپتیہ - اسر - گاندھرب - راکشس - پشاچ - اسمین آٹھوان
وواہ ادھم ہے -
۲۲ - جو وواہ جس ورن کو دھرم ہے اور جس وواہ کا جو گن اور دوش ہے اور جس وواہ سے پتر پیدا ہو مین جو
گن اگن ہو سو سب آپ لوگون سے ہم کہین گے
۲۳ - پہلے کے چھ وواہ براہمن کو اور پچھلے چار کشتری اور انہین سے تین یا سواے
راکشس کے ویشیہ اور شودر کو بعضون نے جائز کیا ہے -

सवर्णाग्रे द्विजातीनां प्रशस्ता दारकर्मणि ॥ कामतस्तु प्रवृत्ता-
नामिमाः स्युः क्रमशोवराः ॥ १२ ॥ शूद्रैव भार्या शूद्रस्य सा च
स्वा च विशः स्मृते ॥ ते च स्वा चैव राजश्च ताश्च स्वा चाग्रजन्मनः ॥
१३ ॥ न ब्राह्मणक्षत्रिययोरापद्यपि हि तिष्ठतोः ॥ कस्मिंश्चिद-
पि वृत्तान्ते शूद्रा भार्योपदिश्यते ॥ १४ ॥ हीनजातिस्त्रियं मोहा-
दुद्वहन्तो द्विजातयः ॥ कुलान्येव नयन्त्याशु ससन्तानानि शूद्र-
ताम् ॥ १५ ॥ शूद्रावेदी पतत्यत्रेरुतथ्यतनयस्य च ॥ शौनकस्य
सुतोत्पत्त्या तदपत्यतया भृगोः ॥ १६ ॥ शूद्रां शयनमारोप्य ब्रा-
ह्मणो यात्यधोगतिम् ॥ जनयित्वा सुतं तस्यां ब्राह्मण्यादेव ही-
यते ॥ १७

۱۲- تینوں ورنوں کو اپنی ذات کی عورت کے ساتھ ووا ہ کرنا افضل ہے اور اگر بسبب
تحریک کام دیو غیر ذات کی لڑکی کے ساتھ ووا ہ کرے تو بطریق ذیل کرے مگر وہ افضل نہیں ہے

۱۳- شودر صرف اپنی ذات کی لڑکی سے اور ویشیہ اپنی ذات اور شودر کی لڑکی سے اور کشتری
اپنی ذات اور ویشیہ اور شودر کی لڑکی سے اور برہمن چاروں ورنوں کی لڑکی سے ووا ہ کر سکتا ہے

۱۴- مگر کسی پران میں وقت مصیبت کے بھی برہمن اور کشتری کو شودر ذات کی لڑکی کے
ساتھ ووا ہ کرنا پایا نہیں گیا -

۱۵- برہمن کشتری ویشیہ تینوں ورن اگر محبت کی وجہ سے نیچ ذات کی لڑکی کے ساتھ ووا ہ کریں
تو اولاد اور اپنی کل کو جلد ناش کر دیتے ہیں -

۱۶- اتر اور اتتھیہ رشی کا یہ مت ہے کہ شودر کی کنیا سے ووا ہ کرنے سے تینوں ورن پتت
ہو جاتے ہیں اور شونک رشی کا یہ مت ہے کہ شودر کی لڑکی سے لڑکا پیدا ہونے سے پتت
ہوتا ہے اور بھرگ رشی کا یہ مت ہے کہ پوتا پیدا ہونے سے پتت ہوتا ہے -

۱۷- شودر کی لڑکی کو اپنی پلنگ پر بیٹھانے سے برہمن نرک میں جاتا ہے اور اس سے لڑکا پیدا ہونے سے دھرم کرم سے الگ ہو جاتا ہے

हीनक्रियंनिष्पुरुषंनिश्छन्दोरोमशार्शसम्॥ क्षय्यामयाव्यप-
स्मारिश्वित्रिकुष्ठिकुलानिच॥७॥नोद्वहेत्कपिलांकन्यांना-
धिकांगींनरोगिणीम्॥ नालोमिकांनातिलोमांनवाचाटींन
पिंगलाम्॥८॥नर्क्षवृक्षनदीनाम्नींनान्त्यपर्वतनामिकाम्॥
नपक्ष्यहिप्रेष्यनाम्नींनचभीषणनामिकाम्॥९॥अव्यंगांगीं
सौम्यनाम्नींहंसवारणगामिनीम्॥ तनुलोमकेशदशनांमृद्वं-
गीमुद्वहेत्स्त्रियम्॥१०॥यस्यास्तुनभवेद्भ्रातानविज्ञायेतवापि-
ता॥नोपयच्छेततांप्राज्ञःपुत्रिकाधर्मशंकया॥११॥

۷- جس کُل کی کریا نشٹ ہوگئی ہے اور جسمین مرد نہون اور جس کُل مین بہت رُوم والے مرد وعورت ہون اور جسمین وید کا پڑھنا نہین ہے اور بواسیر کی بیماری اوچھی روگ اور ضُعف ہاضمہ اور مرگی اور سفید داغ وغیرہ بہت طرح کے کوڑھ جس کُل مین ہون وہ اگر اوپر کہے ہوئے دھن ودولت سے بھرا ہو تو بھی اس کُل مین ووِاہ نکرے۔

۸- کپِل رنگ کی زیادہ اعضار کھنی والی بیمار- بغیر بال والی- بہت بال والی بہت بولنیوالی پنگلا رنگ کی

۹- اور جسکا نام ستارہ ودرخت وپرند وسانپ وملیکش وپہار ووس کی طرح ہیبت ناک ہے اوسکے ساتھ ووِاہ نکرنا چاہیئے۔

۱۰- بلکہ جو سب اعضا رکھنے والی ہو اور نام بھی اوسکا اچھا ہو اور چال جسکی مثل ہاتھی و ہنس کے ہو اور بال اور دانت بھی چھوٹے ہون ایسی عورت کے ساتھ ووِاہ کرنا چاہیئے-

۱۱- جس لڑکی کے بھائی نہو اور جسکے باپ کا نام معلوم نہو اوس سے ووِاہ نکرنا چاہیئے کیونکہ پُتر کا دھرم کا شُبہہ رہیگا- (باپ ووِاہ کے وقت ارادہ کرے کہ اس لڑکی کا لڑکا میرا ہوگا اوسکو پُتر کا کرن کہتے ہین پس وہ لڑکا اپنے نانا کا ہوگا-

षट्त्रिंशदाब्दिकं चर्यं गुरौ त्रैवेदिकं व्रतम्॥ तदर्द्धिकं पादिकं वा
ग्रहणान्तिकमेव वा॥ १॥ वेदानधीत्य वेदौ वा वेदं वापि यथाक्र-
मम्॥ अविप्लुतब्रह्मचर्यो गृहस्थाश्रममावसेत्॥ २॥ तं प्रतीतं स्व
धर्मेण ब्रह्मदायहरं पितुः॥ स्रग्विणं तल्प आसीनमर्हयेत् प्रथमं
गवा॥ ३॥ गुरुणानुमतः स्नात्वा समावृत्तो यथाविधि॥ उद्वहेत
द्विजो भार्य्यां सवर्णां लक्षणान्विताम्॥ ४॥ असपिण्डा च या
मातुरसगोत्रा च या पितुः॥ सा प्रशस्ता द्विजातीनां दारकर्मणि-
मैथुने॥ ५॥ महान्त्यपि समृद्धानि गोजाविधनधान्यतः॥ स्त्री-
सम्बन्धे दशैतानि कुलानि परिवर्जयेत्॥ ६॥

۱- چھتیس یا اٹھارہ یا نو برش تا تحصیل علم وید کے تینوں ویدوں کے پڑھنے کا برت کرنا چاہیے۔

۲- تینوں وید یا دو وید یا ایک وید سلسلے سے پڑھکر اکھنڈ برت کرنیوالا آدمی گرہستھ آشرم مین آوے۔

۳- دھرم کا انشٹھان کرنے سے جو برہم چاری پرسدھ ہو اور باپ سے وید پڑھا ہو مالا پہنے ہو کھٹیا پر بیٹھا ہو اور گئو کے دودھ آدسے مدھپرک بناکر آچارج یا باپ اوسکی پوجا کرے۔

۴- گرو کی آگیا سے اسنان کرکے سماورتن کرم کرکے اپنی ذات کی اچھی لڑکی سے (وواہ شادی) کرے۔

۵- جو لڑکی ماں کے سپنڈ مین نہ ہو اور نہ باپ کے گوتر مین ہو ایسی لڑکی تینوں ورنوں کو زوجہ بنانے کے لئے اچھی ہوتی ہے۔

۶- اگرچہ گئو بکری دولت وغیرہ کی کثرت ہو تو بھی جو دش کُل یعنی خاندان آگے کہینگے اُن مین وواہ نکرنا چاہیے۔

आचार्ये तु खलु प्रेते गुरुपुत्रे गुणान्विते ॥ गुरुदारे सपिण्डे वा गुरुवद्वृत्तिमाचरेत् ॥ २४७ ॥ एतेष्वविद्यमानेषु स्थानासनविहारवान् ॥ प्रयुञ्जानोऽग्निशुश्रूषां साधयेद्देहमात्मनः ॥ २४८ ॥ एवं चरति यो विप्रो ब्रह्मचर्यमविप्लुतः ॥ स गच्छत्युत्तमं स्थानं न चेह जायते पुनः ॥ २४९ ॥

इति मानवे धर्म्मशास्त्रे भृगुप्रोक्तायां संहितायां द्वितीयोऽध्यायः २

۲۴۷ - گرو کے مرنے کے بعد گرو کا لڑکا جو گن وان ہو اور گرو کی استری اور گرو کے سپنڈ (یعنی بھائی بندھو) ان سب کو بھی گرو کی طرح ماننا چاہیے۔

۲۴۸ - جو برہم چاری نیشٹک ہے وہ بحالت نہ موجود ہونے گرو و عزیز و اقارب گرو کے اُنکے مکان اور آسن میں رہکر اگنی کی سیوا کرتا ہوا اپنے کو برہم میں ملجانے کے لائق کرے

۲۴۹ - اسطرح جو براہمن اکھنڈ برہم چرج کو کرتا ہے وہ اتم استھان میں جاتا ہے اور پھر سنسار میں نہیں آتا۔

منو جی کا دھرم شاستر بھرگ جی کی

سنگھتا کا دوسرا ادھیاے سماپت ہوا۔

नाब्राह्मणेगुरौशिष्योवासमात्यन्तिकंवसेत्॥ ब्राह्मणेचा
ननूचानेकांक्षन्गतिमनुत्तमाम्॥ २४२॥ यदित्वात्यन्तिकंव
संरोचयेतगुरोःकुले॥ युक्तःपरिचरेदेनमाशरीरविमोक्षणा
त्॥ २४३॥ आसमाप्तेःशरीरस्ययस्तुशुश्रूषतेगुरुम्॥ सगच्छ
त्यंजसाविप्रोब्रह्मणःसद्मशाश्वतम्॥ २४४॥ नपूर्वंगुरवे-
किंचिदुपकुर्वीतधर्मवित्॥ स्नास्यंस्तुगुरुणाज्ञप्तःशक्त्यागु
र्वर्थमाहरेत्॥ २४५॥ क्षेत्रंहिरण्यंगामश्वंछत्रोपानहमास
नम्॥ धान्यंशाकंचवासांसिगुरवेप्रीतिमावहेत्॥ २४६॥

۲۴۲ - آتم گت کی اچھا کرنے والا آدمی کشتری وغیرہ گرو اور مورکھ براہمن کے پاس زیادہ قیام نہ کرے۔

۲۴۳ - اگر گرو کے پاس زیادہ عرصہ تک قیام کرنا منظور ہو تو ہوشیاری سے جب تک زندہ رہے خدمت کرتا ہوا قیام کرے مگر براہمن گرو کے پاس یہ نیشٹک برہم چاری کہلاتا ہے۔

۲۴۴ - جو برہم چاری شریر تیاگ کرنے تک گرو کی سیوا کرتا ہے وہ بلا محنت ابناشی برہم لوک کو پاتا ہے۔

۲۴۵ - دھرم کا جاننے والا برہم چاری جب تک پڑھتا ہے تب تک سوائے سیوا کے دوسرا اپکار گرو کا نہ کرے پڑھ چکنے کے بعد سماورتن کے نمت اشنان کرکے گرو کا حکم لیکر گرو کو حسب توفیق دکشنا دے۔

۲۴۶ - جیسے - زمین - سونا - گئو - گھوڑا - چھتری - جوتا - آسن - شاک - کپڑا وغیرہ گرو کو دیوے۔

٭ یعنی پتر کل میں آنے کے لیے دعا کے واسطے۔

तेषामनुपरोधेनपारत्र्यंयद्यदाचरेत्॥ तत्तन्निवेदयेत्तेभ्योमनो-
वचनकर्मभिः॥२३६॥त्रिष्वेतेष्वितिकृत्यंहिपुरुषस्यसमा-
प्यते॥ एषधर्मःपरःसाक्षादुपधर्मोऽन्यउच्यते॥२३७॥श्रद्द-
धानःशुभांविद्यामाददीतावरादपि॥ अन्त्यादपिपरंधर्मंस्त्री
रत्नंदुष्कुलादपि॥२३८॥विषादप्यमृतंग्राह्यंबालादपिसुभा
षितम्॥ अमित्रादपिसद्वृत्तममेध्यादपिकाञ्चनम्॥ २३९ ॥
स्त्रियोरत्नान्यथोविद्याधर्मःशौचंसुभाषितम्॥ विविधानि-
चशिल्पानिसमादेयानिसर्वतः॥ २४०॥ अब्राह्मणादध्यय-
नमापत्कालेविधीयते॥ अनुव्रज्याचशुश्रूषायावदध्ययनं
गुरोः॥ २४१॥

۲۳۶ - انھون کی سیوا کرتا ہوا اور دوسرا دھرم بھی کرے تو من بانی کرم کر کے انھون سے کہدیوے۔

۲۳۷ - انھین تینون مین آدمی کے کرنے کی جو بات ہے وہ ہوجاتی ہے پس انکی خدمت کے سوای اور دھرم جو ہین وہ اُپ دھرم ہین۔

۲۳۸ شردھا کرکے اچھی وِدّیا کو نیچ ذات سے بھی لینا اور پرم دھرم کو چانڈال سے بھی لینا اور سندر استری کو دُشٹ کل سے بھی لینا چاہیے۔

۲۳۹ - زہر و طفل و دشمن . ان تینون سے سلسلہ کے موافق آبحیات و شیرین زبانی و طریقہ نیک و طلا کو لینا چاہیے۔

۲۴۰ - عورت و جواہرات و علم و دھرم و صفائی و پاکی و شیرین زبانی و طرح طرح کی کاریگری ان سب کو جہانسے ملے وہان سے لینا چاہیے

۲۴۱ - اگر مصیبت آپڑے تو کشتری وغیرہ سے براہمن پڑھے اور جبتک پڑھے تب تک اُس گرو کے پیچھے چلے اور سیوا کرے۔

तएवहित्रयोलोकास्तएवत्रयआश्रमाः॥ तएवहित्रयोवेदा
स्तएवोक्तास्त्रयोऽग्नयः॥२३०॥ पितावैगार्हपत्योऽग्निर्मा-
ताग्निर्दक्षिणःस्मृतः॥ गुरुराहवनीयस्तुसाग्नित्रेतागरीय-
सी॥२३१॥ त्रिष्वप्रमाद्यन्नेतेषुत्रींल्लोकान्विजयेद्गृही॥ दी-
प्यमानःस्ववपुषादेववद्दिविमोदते॥२३२॥ इमंलोकंमातृ-
भक्त्यापितृभक्त्यातुमध्यमम्॥ गुरुशुश्रूषयात्वेवंब्रह्मलोकं
समश्नुते॥२३३॥ सर्व्वेतस्यादृताधर्म्मायस्यैतेत्रयआदृताः॥
अनादृतास्तुयस्यैतेसर्व्वास्तस्याफलाःक्रियाः॥२३४॥ या-
वत्त्रयस्तेजीवेयुस्तावन्नान्यंसमाचरेत्॥ तेष्वेवनित्यंशुश्रूषां
कुर्य्यात्प्रियहितेरतः॥२५॥

۲۳۰ - تینون لوک تینون آشرم تینون وید تینون اگن یہی تینون شخص ہین -

۲۳۱ - گارہپتیہ اگن پتا ہے اور دکشن اگن ماتا ہے آہونی اگن گرو ہین یہی تینون اگن بہت بڑی ہین -

۲۳۲ - ان تینون کی خدمتگذاری مین مستعد رہنے سے آدمی تینون لوک کو جیت کر اور بڑا تیج وان ہوکر دیوتاؤن کی طرح سورگ مین آنند کرتا ہے -

۲۳۳ - ماتا کی بھگت کرنے سے بھولوک اور پتا کی بھگت کرنے سے انترکش لوک اور گرو کی بھگت کرنے سے برہم لوک کو پاتا ہے -

۲۳۴ - جس شخص نے ان تینون کا آدر کیا وہ گویا سب دھرمون کا آدر کر چکا اور جسنے ان تینون کا آدر نہین کیا اسکی سب کریا نشپھل ہے -

۲۳۵ - جبتک یہ تینون زندہ رہین تب تک خود مختار ہوکر دوسرا دھرم نکرے انھین کی خدمت اور بھلائی اور ہرشی مین رہے -

× یعنے ماتا پتا گرو -

धर्मार्थावुच्यते श्रेयः कामार्थौ धर्म एव च ।। अर्थ एवेह वा श्रेय-
स्त्रिवर्ग इति तु स्थितिः ।। २२४ ।। आचार्यो ब्रह्मणो मूर्तिः पिता
मूर्तिः प्रजापतेः ।। माता पृथिव्या मूर्तिस्तु भ्राता स्वो मूर्तिरात्मनः
।। २२५ ।। आचार्यश्च पिता चैव माता भ्राता च पूर्वजः ।। नार्तेना-
प्यवमन्तव्या ब्राह्मणेन विशेषतः ।। २२६ ।। यं मातापितरौ क्ले-
शं सहेते संभवे नृणाम् ।। न तस्य निष्कृतिः शक्या कर्तुं वर्षशतै-
रपि ।। २२७ ।। तयोर्नित्यं प्रियं कुर्यादाचार्यस्य च सर्वदा ।।
तेष्वेव त्रिषु तुष्टेषु तपः सर्वं समाप्यते ।। २२८ ।। तेषां त्रयाणां
शुश्रूषा परमं तप उच्यते ।। न तैरभ्यननुज्ञातो धर्ममन्यं समा-
चरेत् ।। २२९ ।।

۲۲۴ - کسی کے مت مین دھرم اور ارتھ دونون اور کسی کے مت مین ارتھ اور کام اور کسی کے مت مین صرف دھرم کلیان کرنیوالا ہے اب اپنی مت کو کہتے ہین کہ دھرم اور ارتھ اور کام تینون باہم موافق ہین - انھین تینون سے سب کچھ ملتا ہے -

۲۲۵ - آچارج پرماتما کی مورت ہے اور ماتا پرتھوی کی مورت ہے اور پتا برہما کی مورت ہے اور سگا بھائی اپنی گرد کی مورت ہے -

۲۲۶ - آچارج اور پتا اور سگا بڑا بھائی ان تینون کی توہین رنجیدہ دل ہونیپر بھی نکرے اسبات کی تعمیل برہمن کو تو ضرور ہی واجب ہے -

۲۲۷ - آدمی کے پیدا ہونے مین جو تکلیف مان اور باپ سہتے ہین اوسکا عوض سو برس کے اوپکار کرنے سے بھی نہین ہو سکتا یہ سب دیوتا روپ ہین انکا اپمان نکرنا چاہیے -

۲۲۸ - مان اور باپ اور آچارج ان تینون کی خدمت ہمیشہ کرنا چاہیے انکے خوش کرنے سے سب عبادت پوری ہوتی ہے

۲۲۹ - ان تینون کی سیوا پرم تپ یعنی عبادت اعظم ہے ان لوگون کے حکم بغیر کوئی دوسرا دھرم نکرنا چاہیے

यथा खनन्खनित्रेण नरो वार्यधिगच्छति ॥ तथा गुरुगतां विद्यां
शुश्रूषुरधिगच्छति ॥ २१८ ॥ मुण्डो वा जटिलो वा स्यादथवा स्या
च्छिखाजटः ॥ नैनं ग्रामेऽभिनिम्लोचेत्सूर्यो नाभ्युदियात्क्वचित्
॥ २१९ ॥ तं चेदभ्युदियात्सूर्यः शयानं कामचारतः ॥ निम्लो-
चेद्वाप्यविज्ञानाज्जपन्नुपवसेद्दिनम् ॥ २२० ॥ सूर्येण ह्यभि
निर्मुक्तः शयानोऽभ्युदितश्च यः ॥ प्रायश्चित्तमकुर्वाणो यु-
क्तः स्यान्महतैनसा ॥ २२१ ॥ आचम्य प्रयतो नित्यमुभे सन्ध्ये
समाहितः ॥ शुचौ देशे जपञ्जप्यमुपासीत यथाविधि ॥ २२२
॥ यदि स्त्री यद्यवरजः श्रेयः किंचित्समाचरेत् ॥ तत्सर्वमाचरेद्यु
क्तो यत्र वास्य रमेन्मनः ॥ २२३ ॥

۲۱۸ - جسطرح کدّاری سے کھودتے کھودتے آدمی پانی پاتا ہے اسیطرح گرو کی سیوا کرنے سے گرو کی سمپورن ودیا کو چیلا پاتا ہے۔

۲۱۹ - اگرچہ برہمچاری مونڈ منڈائے یا جٹا رکھائے یا چوٹی کو جٹا کے برابر بنائے ہو مگر وقت طلوع و غروب آفتاب کے گانوں یا شہر میں نہ رہے یعنی یہ دونوں وقت شہر سے باہر برہمچاری ہرگز نہیں

۲۲۰ - اگر برہمچاری وقت طلوع و غروب آفتاب کے گھر میں موجود ہو تو اسدن جپ کرتا ہوا اپاس کرے۔

۲۲۱ اگر وہ پرکھا ہوا پرائشچت نکرے تو بڑا پاپ ہوتا ہے۔

۲۲۲ آچمن کر کے دونوں سندھیا میں ایکچت ہو کر پوتر استھان میں اچھی طرح گایتری کا جپ کرے۔

۲۲۳ - عورت یا چھوٹا آدمی کوئی اچھی بات کرتا ہو تو اسکو آپ بھی کرے یا شاستر کے موافق جس عمل میں دل کو اطمینان ہو وہ کام کرے۔

गुरुपत्नीतु युवतीर्नाभिवाद्येह पादयोः ॥ पूर्णविंशतिवर्षेण
गुणदोषौ विजानता ॥ २१२ ॥ स्वभाव एष नारीणां नराणामि-
ह दूषणम् ॥ अतोऽर्थान्न प्रमाद्यन्ति प्रमदासु विपश्चितः ॥ २१३
॥ अविद्वांसमलं लोके विद्वांसमपि वा पुनः ॥ प्रमदा ह्युत्पथं ने-
तुं कामक्रोधवशानुगम् ॥ २१४ ॥ मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा न-
विविक्तासनो भवेत् ॥ बलवानिन्द्रियग्रामो विद्वांसमपि क-
र्षति ॥ २१५ ॥ कामन्तु गुरुपत्नीनां युवतीनां युवा भुवि ॥ विधि-
वद्वन्दनं कुर्यादसावहमिति ब्रुवन् ॥ २१६ ॥ विप्रोष्य पादग्रह-
णमन्वहं चाभिवादनम् ॥ गुरुदारेषु कुर्वीत सतां धर्ममनुस्म-
रन् ॥ २१७ ॥

۲۱۲ جو چیلہ بیس برش کا ہو اور عیب ہنر جانتا ہو وہ گرو کی جوان عورت کا پانون پکڑ کے پرنام نہ کرے

۲۱۳ آدمیون کو عیب لگانا عورتون کی عادت ہے اسلیئے پنڈت لوگ عورتون سے ہوشیار رہین

۲۱۴ کام کرودھ مین پھنسے پنڈت ہو یا مورکھ ہو اسکو بری راہ مین لیجانے کیواسطے استری لوگ سامرتھ رکھتی ہین

۲۱۵ - ماں بہن لڑکی ان سب کے ساتھ اکیلے مکان مین نہ رہے کیونکہ اندری بہت بلوان ہین پنڈتون کو بھی بری راہ پر کھینچ لیجاتی ہین -

۲۱۶ - گرو کی جوان عورت کو جوان چیلا اچھی طرح سے یہ کہکر کہ مین فلانا ہون زمین پر گر کر ڈنڈوت کرے -

۲۱۷ سفر سے آکر اچھے لوگون کے دھرم کو یاد کرکے گرو کی استری کے پاؤن پکڑے اور پرنام تو ہر روز کرے -

विद्यागुरुष्वेतदेवनित्यावृत्तिःस्वयोनिषु॥ प्रतिषेधत्सुचा-
धर्माद्धितंचोपदिशत्स्वपि॥ २०६॥ श्रेयस्सुगुरुवद्वृत्तिंनित्य-
मेवसमाचरेत्॥ गुरुपुत्रेषुचार्येषुगुरोश्चैवस्वबन्धुषु॥ २०७॥
बालःसमानजन्मावाशिष्योवायज्ञकर्मणि॥ अध्यापयन्गु-
रुपुत्रोगुरुवन्मानमर्हति॥ २०८॥ उत्सादनंचगात्राणांस्नाप-
नोच्छिष्टभोजने॥ नकुर्याद्गुरुपुत्रस्यपादयोश्चावनेजनम्॥ २०९॥
गुरुवत्प्रतिपूज्याःस्युःसवर्णागुरुयोषितः॥ असवर्णास्तुसंपू-
ज्याःप्रत्युत्थानाभिवादनैः॥ २१०॥ अभ्यंजनंस्नापनंचगा-
त्रोत्सादनमेवच॥ गुरुपत्न्यानकार्य्याणिकेशानांचप्रसाध-
नम्॥ २११॥

۲۰۶- اسی طرح سوا آچارج کے اپادھیا وغیرہ دس گرو ہیں اور چچا وغیرہ رشتہ دار
اور ادھرم سے بچانیوالے اور اچھی بات سکھانے والے بھی مثل گرو کے ہیں۔

۲۰۷- جو بڑے لوگ ہیں اور گرو کے بڑے بیٹے اور گرو کے بھائی بندھو ان سب کو
بھی مثل گرو کے جانے۔

۲۰۸- گرو کا بیٹا اپنی عمر سے چھوٹا ہو یا بڑا ہو اور پڑھانے کی سامرتھ رکھتا ہو اور اپنی
یگیہ دیکھنے کو آوے تو اوسکی تعظیم مثل گرو کے کرنا چاہئے۔

۲۰۹- اسنان کرانا- ابٹن لگانا- جوٹھا بھوجن کرنا- پاؤں دھونا یہ سب کام گرو کے
بیٹے کے نہ کرے۔

۲۱۰- گرو کے ہمقوم زوجہ کی پوجا مثل گرو کے کرے اور جو عورت ہمقوم نہیں ہے تو اوسکی
پوجا یہی ہے کہ اٹھکر صرف پرنام کرے۔

۲۱۱- گرو کی استری کے بدن میں تیل یا ابٹن نہ لگاوے اور نہ اسنان کراوے
نہ بال سکھاوے۔

परिवादात्खरोभवतिश्वावैभवतिनिन्दकः॥परिभोक्ताकृमि
र्भवतिकीटोभवतिमत्सरी॥२०१॥दूरस्थोनार्चयेदेनंनक्रुद्धोना
न्तिकेस्त्रियाः॥यानासनस्थश्चैवैनमवरुह्याभिवादयेत्॥२०२॥
प्रतिवातेऽनुवातेचनासीतगुरुणासह॥असंश्रवेचैवगुरोर्नकिं
चिदपिकीर्तयेत्॥२०३॥गोऽश्वोष्ट्रयानप्रासादस्रस्तरेषुकटेषु
च॥ आसीतगुरुणासार्द्धंशिलाफलकनौषुच॥२०४॥गु
रोर्गुरौसन्निहितेगुरुवद्वृत्तिमाचरेत्॥नचाविसृष्टोगुरुणा
स्वान्गुरूनभिवादयेत्॥२०५॥

۲۰۱- گرو کا سچا یا جھوٹا عیب کہنے سے گدھا اور نندا کرنے سے کتا ہوتا ہے اور اور گرو انچت دھن بھوجن کرنے سے چھوٹا کیڑا اور گرو کی بڑائی نہ سہہ سکنے سے بڑا کیڑا ہوتا ہے -

۲۰۲- گرو کی پوجا دور سے (یعنی کسی کے ہاتھ پوجا کی سامگری بھیکر) نہ کرے اور غصہ سے بھی نہ کرے اور اگر اپنی عورت کے پاس بیٹھا ہو یا سواری یا آسن پر بیٹھا ہو تو سواری سے اتر کر اور آسن کو چھوڑ کر پرنام کرے -

۲۰۳- جو آدمی گرو کے ملک سے چیلے کے ملک مین آیا ہو یا چیلے کے ملک سے گرو کے ملک مین آیا ہو ان دونون کے روبرو چیلہ گرو کے ساتھ نہ رہے جو بات گرو کی سننے مین نہ آوے ایسی کوئی بات گرو کی یا اور کسی کی نہ کہے یعنے گرو سے چھپا کر کوئی بات نہ کہے -

۲۰۴- بیل گھوڑا اونٹ والے رتھ یا گاڑی پر اور چٹائی اور پتھر اور لکڑی اور ناو پر گرو کے ساتھ بیٹھے -

۲۰۵- گرو کے گرو کو بھی مثل اپنے گرو کے جانے اور بغیر حکم گرو کے اپنے ملک سے آئے ہوئے چچا وغیرہ کو پرنام نہ کرے -

प्रतिश्रवणसंभाषेनसयानःसमाचरेत्।। नासिनोनचभुञ्जानो
नतिष्ठन्नपराङ्मुखः।।१९५।। आसीनस्यस्थितःकुर्यादभिग
च्छंस्तुतिष्ठतः।। प्रत्युद्गम्यत्वाव्रजतःपश्चाद्धावंस्तुधावतः१९६
पराङ्मुखस्याभिमुखोदूरस्थस्यैत्यचान्तिकम्।। प्रणम्यतुश-
यानस्यनिदेशेचैवतिष्ठतः।।१९७।।नीचंशय्यासनंचास्यस-
र्वदागुरुसन्निधौ।। गुरोस्तुचक्षुर्विषयेनयथेष्टासनोभवेत्।
।।१९८।।नोदाहरेदस्यनामपरोक्षमपिकेवलम्।। नचैवास्या
नुकुर्वीतगतिभाषितचेष्टितम्।। १९९।।गुरोर्यत्रपरीवादोनि-
न्दावापिप्रवर्त्तते।। कर्णौतत्रपिधातव्यौगन्तव्यंवाततोऽन्य
तः।।२००।।

۱۹۵- سوتا ہوا اور آسن پر بیٹھا ہوا اور بھوجن کرتا ہوا اور مکھ پھیرے ہوئے گرو سے بات چیت نہ کرے اور نہ سنے۔

۱۹۶- گرو بیٹھے ہوں تو آپ کھڑا ہو کر اور گرو کھڑے ہوں تو آپ چلکر اور گرو چلتے ہوں تو آپ سامنے جا کر اور گرو دوڑتے ہوں تو آپ بھی پیچھے دوڑ کر گفت و شنید کرے۔

۱۹۷- گرو منھ پھیرے کھڑے ہوں تو سامنے جا کر اور دور ہوں تو پاس جا کر اور سوتے ہوں تو پرنام کر کے اونکی آگیا کو سنے۔

۱۹۸- گرو کے پاس خوابگاہ اور بستره اپنا نیچا رکھے جیسا دل چاہے ویسا نہ رکھے۔

۱۹۹- گرو کے پیچھے بھی صرف انکے نام کو نہ لیوے اور گرو کی جیسی چال ڈھال بولی چیشٹھا (یعنی وضع) ہو ویسی اپنی نہ رکھے۔

۲۰۰- جہاں گرو کا سچا یا جھوٹا عیب کہا جاتا ہو یا نندا (بدگوئی) ہوتی ہو وہاں اپنے کان بند کرے یا وہاں سے اٹھ جاے۔

ब्राह्मणस्यैवकर्मैतदुपदिष्टंमनीषिभिः ॥ राजन्यवैश्ययोस्त्वेवं-
नैतत्कर्म विधीयते ॥ १९० ॥ चोदितोगुरुणानित्यमप्रचोदितए-
ववा ॥ कुर्य्यादध्ययनेयत्नमाचार्य्यस्यहितेषुच ॥ १९१ ॥ शरी-
रंचैववाचंचबुद्धीन्द्रियमनांसिच । नियम्यप्राञ्जलिस्तिष्ठेद्वीक्ष-
माणोगुरोर्मुखम् ॥ १९२ ॥ नित्यमुद्धृतपाणिःस्यात्साध्वाचारः
सुसंवृतः ॥ आस्यतामितिचोक्तःसन्नासीताभिमुखंगुरोः ॥
१९३ ॥ हीनान्नवस्त्रवेषःस्यात्सर्वदागुरुसन्निधौ ॥ उत्तिष्ठे-
त्प्रथमंचास्यचरमंचैवसंविशेत् ॥ १९४ ॥

۱۹۰ - شرادھ مین بھوجن کرنا براہمن ہی کا کام ہے کشتری و ویشیہ برھم چاریون کا کام نہین ہے

۱۹۱ - گرو کی اجازت ہو یا نہو مگر وید کے پڑھنے اور گرو کی بھلائی کرنے مین کوشش کرے

۱۹۲ - جسم و زبان و عقل و حواس و دل کو قابو مین رکھکر ہاتھ جوڑے ہوئے گرو کو دیکھتا ہو سامنے کھڑا رہے -

۱۹۳ - داہنے ہاتھ کو چادر سے ہمیشہ باہر رکھے سادھ کیطرح آچار سے رہے چنچل پنے کو چھوڑے رہے اور جب گرو بیٹھنے کی اجازت دین تب سامنے اونکے بیٹھے -

۱۹۴ - گرو کے سامنے ایسا طریقہ اختیار کرے کہ جیسا گرو بھوجن کرے اوس سے اونے درجہ کا بھوجن آپ کرے اور جیسا کپڑا گرو پہنین اوس سے کم درجہ کا کپڑا آپ پہنے اور جیسی صورت سے گرو رہین اوس سے کمتر صورت سے آپ رہے اور گرو کے جاگنے سے پہلے جاگے اور گرو کے سونے کے بعد آپ سووے -

गुरोःकुलेनभिक्षेतनज्ञातिकुलबन्धुषु ।। अलाभेत्वन्यगेहानांपू
र्वंपूर्वंविवर्जयेत् ।। १८४ ।। सर्वंवापिचरेद्ग्रामंपूर्वोक्तानामसं-
भवे ।। नियम्यप्रयतोवाचमभिशस्तांस्तुवर्जयेत् ।। १८५ ।। दूरा-
दाहृत्यसमिधःसन्निदध्याद्विहायसि ।। सायंप्रातश्चजुहुयात्ता-
भिरग्निमतन्द्रितः ।। १८६ ।। अकृत्वाभैक्षचरणमसमिध्यचपा-
वकम् ।। अनातुरःसप्तरात्रमवकीर्णिव्रतंचरेत् ।। १८७ ।। भैक्षेणा
वर्त्तयेन्नित्यंनैकान्नादीभवेद्व्रती ।। भैक्षेणाव्रतिनोवृत्तिरुपवाससम
मास्मृता ।। १८८ ।। व्रतवद्देवदैवत्ये पित्र्येकर्मण्यथर्षिवत् ।। का-
ममभ्यर्थितोऽश्नीयाद्व्रतमस्यनलुप्यते ।। १८९ ।।

۱۸۴- گرو کے کل مین ذات کے کل مین بھائی کے کل مین بھیکھ نہ مانگے اور اگر کہین نہ ملے تو اوّل اوّل کو چھوڑ کر دوسرے دوسرے سے مانگے۔

۱۸۵- جو ایسے گھر نہون تو سب گانؤن مین ہون ہو کر اندریون کو قابو مین لا کر بھیکھ مانگے لیکن پاپیون کا گھر چھوڑ دیوے۔

۱۸۶- دور سے لکڑی لا کر زمین سے اوپر آکاش مین (یعنی اونچے پر) رکھے اوسی لکڑی سے صبح و شام ہون کرے۔

۱۸۷- اگر سامرتھ ہو تو سات دن تک بھیکھ نہ مانگے اور آگ مین ہون نہ کرے اوکیرن نام برت (جو آگے کہین گے) کرے۔

۱۸۸- ہر روز بھیکھ مانگ کر بھوجن کرے مگر ایک ہی گھر کا ان نہ کھاوے بھیکھ مانگ کر بھوجن کرنا برت کے برابر ہے۔

۱۸۹- اگر کسی شخص نے دیو یا پتر کرم کے نمت نیوتا دیا ہو تو خاطر خواہ شرادھ مین بھوجن کرے لیکن دونون کرمون مین سے برتی اور رشی کی طرح مدھ، مانس وغیرہ اشیاء ممنوعہ سے پرہیز کرے ایسا کرنے سے برت نہین جاتا۔

अभ्यंगमञ्जनंचाक्ष्णोरुपानच्छत्रधारणम्।। कामंक्रोधंचलोभंच
नर्त्तनंगीतवादनम्।।१७८।। द्यूतंचजनवादंचपरिवादंतथानृत-
म्।। स्त्रीणांचप्रेक्षणालम्भमुपघातंपरस्यच।। १७९ ।।एकः
शयीतसर्व्वत्रनरेतःस्कन्दयेत्क्वचित्।। कामाद्धिस्कन्दयन्रेतो
हिनस्तिव्रतमात्मनः।।१८०।।स्वप्नेसिक्त्वाब्रह्मचारीद्विजःशुक्र
मकामतः।। स्नात्वार्कमर्चयित्वात्रिःपुनर्मामित्यृचंपठेत्।।१८१
।। उदकुम्भंसुमनसोगोशकृन्मृत्तिकाकुशान्।। आहरेद्यावद-
र्थानिभैक्षंचाहरहश्चरेत्।। १८२ ।।वेदयज्ञैरहीनानांप्रशस्तानां
स्वकर्म्मसु ।। ब्रह्मचार्य्याहरेद्भैक्षंगृहेभ्यः प्रयतोऽन्वहम् ।।
१८३।।

۱۷۸- ادبٹن - کاجل - جوتا - چھتری - کام - کرودھ - لوبھ - ناچنا - گانا بجانا -

۱۷۹- جوا - جھگڑا - کسی کا جھوٹا عیب بیان کرنا - عورتون کو دیکھنا اور اونسے ملنا کسی کی بدخواہی - ان سب باتون سے پرہیز کرے -

۱۸۰- اکیلا سووے بیج کو نہ گرادے اور جو کوئی عمداً بیج کو گراتا ہے وہ اپنا برت کھوتا ہے -

۱۸۱- اگر خواب مین بلا خواہش بیج گر جاوے تو غسل کرکے سورج کی پوجا کرکے پُنرمام اس منتر کو تین بار جپ کرے -

۱۸۲- پانی کا گھڑا پھول گوبر مٹی کشا - ان سب کو ضرورت کے موافق لادے اور ہر روز بھیکھ مانگے

۱۸۳- جو شخص وید اور یگیہ اور اپنے اچھے کرمون کے ساتھ ہو اسکے گھر سے بھیکھ لاوے -

नाभिव्याहारयेद्ब्रह्मस्वधानिनयनादृते॥ शूद्रेण हि समस्तावद्याव
द्वेदे न जायते॥ १७२॥ कृतोपनयनस्यास्य व्रतादेशनमिष्यते॥ ब्रह्म
णो ग्रहणं चैव क्रमेण विधिपूर्वकम्॥ १७३॥ यद्यस्य विहितं चर्म
यत्सूत्रं या च मेखला॥ यो दण्डो यच्च वसनं तत्तदस्य व्रतेष्वपि॥
१७४॥ सेवेतेमांस्तु नियमान्ब्रह्मचारी गुरौ वसन्॥ सन्नियम्येन्द्रि
यग्रामं तपोवृद्ध्यर्थमात्मनः॥ १७५॥ नित्यं स्नात्वा शुचिः कुर्या
द्देवर्षिपितृतर्पणम्॥ देवताभ्यर्चनं चैव समिदाधानमेव च १७६
वर्जयेन्मधुमांसं च गन्धं माल्यं रसान्स्त्रियः॥ शुक्तानि यानि स
र्व्वाणि प्राणिनां चैव हिंसनम्॥ १७७॥

۱۷۲- بغیر جنیئو ہونے کے لڑکے کا ادھکار شرادھ کرنے میں ہوتا ہے لیکن شودر کے برابر ہوتا ہے۔

۱۷۳- جنیئو کے بعد برت کرنا چاہیے اور بدھ کے ساتھ وید پڑھنا چاہیئے۔

۱۷۴- جسکا جو میکھلا جو چرم جو سوت جو ڈنڈ جو کپڑا ہے وہی برت میں بھی رہے۔

۱۷۵- برہم چاری گروکل میں مقیم ہو کر اندریوں کو قابو میں لا کر اپنی عبادت کی ترقی کے واسطے بطریق مندرجہ ذیل عمل کرے۔

۱۷۶- ہر روز غسل کر کے پاک ہو کر دیورشی پِتر دِن کا ترپن کر کے دیوتاؤں کا پوجن کرے اور آگ میں ہون کرے۔

۱۷۷- مدھ- مانس- گندھ- مالا- رس- استری- شکت* - جیوؤں کا مارنا۔

* جو میٹھا ہے مگر پانی پاکر کچھ زمانہ گذرنے سے کھٹا ہو گیا ہے۔

वेदमेवसदाभ्यस्येत्तपस्तप्स्यन्द्विजोत्तमः॥वेदाभ्यासोहिविप्रस्य
तपःपरमिहोच्यते॥ १६६॥ आहैवसनखाग्रेभ्यःपरमंतप्यते
तपः॥यःस्रग्व्यपिद्विजोऽधीतेस्वाध्यायंशक्तितोऽन्वहम्॥
१६७॥योऽनधीत्यद्विजोवेदमन्यत्रकुरुतेश्रमम्॥ सजीवन्नेव
शूद्रत्वमाशुगच्छतिसान्वयः॥१६८॥मातुरग्रेऽधिजननंद्वि-
तीयंमौञ्जिबन्धने॥ तृतीयंयज्ञदीक्षायांद्विजस्यश्रुतिचोदना-
त्॥ १६९॥तत्रयद्ब्रह्मजन्मास्यमौञ्जीबन्धनचिह्नितम्॥ तत्रा-
स्यमातासावित्रीपितात्वाचार्य्यउच्यते॥ १७०॥वेदप्रदानादा-
चार्य्यंपितरंपरिचक्षते॥ नह्यस्मिन्युज्यतेकर्म्मकिंचिदामौंजि
बन्धनात॥ १७१॥

١٦٦- براہمن تپ کرتا ہوا ویدہی کو پڑھے یہی اوسکا بڑا تپ ہے۔

١٦٧- سر سے لیکر پانوں تک پرم تپ وہ کرتا ہے جو مالا پہنے ہوے بھی شکت پورک ہر روز وید کو پڑھتا ہے (یعنی برہم چاری کو مالا پہننا منع ہے پس فعل ممنوع کرنے پر بھی اگر وید کو پڑھا کرے تو وہبھی تپ ہی ہے۔

١٦٨- جو براہمن وید کا پڑھنا چھوڑ کر شاستروں کے پڑھنے مین محنت کرتا ہے وہ بحالت زندگی اپنے ونش سمیت شودر بھاؤ کو حاصل کرتا ہے۔

١٦٩- ویدمین براہمن کے تین جنم لکھے ہین پہلا جنم ماتا سے دوسرا جنیو ہونے سے تیسرا یگیہ کرنے سے۔

١٧٠- تسمین جنیو ہونے سے جو جنم ہوتا ہے اوسمین گائتری ماتا ہے آچارج پتا ہے۔

١٧١- وید کے پڑھانے سے آچارج پتا کہلاتا ہے جب تک جنیو نہین ہوتا تب تک آدمی کا ادھکار کسی کام مین نہین ہوتا۔

यस्यवाङ्मनसीशुद्धेसम्यग्गुप्तेचसर्वदा ॥ सवैसर्वमवाप्नोति-
वेदान्तोपगतंफलम् ॥ १६० ॥ नारुन्तुदःस्यादार्तोऽपिनपरद्रो
हकर्मधीः ॥ ययास्योद्विजतेवाचानालोक्यांतामुदीरयेत् ॥
१६१ ॥ सम्मानाद्ब्राह्मणोनित्यमुद्विजेतविषादिव ॥ अमृतस्ये-
वचाकांक्षेदवमानस्यसर्वदा ॥ १६२ ॥ सुखंह्यवमतःशेतेसुखं
चप्रतिबुध्यते ॥ सुखंचरतिलोकेऽस्मिन्नवमन्ताविनश्यति
॥ १६३ ॥ अनेनक्रमयोगेनसंस्कृतात्माद्विजःशनैः ॥ गुरौवसन्सं
चिनुयाद्ब्रह्माधिगमिकंतपः ॥ १६४ ॥ तपोविशेषैर्विविधैर्व्रतै-
श्चविधिचोदितैः ॥ वेदःकृत्स्नोऽधिगन्तव्यःसरहस्योद्विजन्मना
॥ १६५ ॥

١٦٠- جسکی بانی اور من شدھ ہے اور ہمیشہ مایا سے بچا ہوا، وہ ویدانت کے پھل کو پاتا ہے۔

١٦١- دکھی ہونے پر بھی ایسی بات نہ کہے کہ جس سے کسی کے دل پر گھاؤ لگے اور حسد نہ کرے۔

١٦٢- براہمن تعظیم و تکریم کو مثل زہر کے اور توہین اور تحقیر کو مثل آبحیات کے سمجھتا رہے۔

١٦٣- توہین پانے والا خوشی تمام سوتا اور جاگتا اور پھرتا ہے اور توہین کرنیوالا مرجاتا ہے۔

١٦٤- اسطرح سنسکار کو پاکر آہستہ آہستہ گرو کل میں باس کرتا برہم کو پراپت کرنیوالی تپ کو کرے۔

١٦٥- طرح طرح کے تپ اور برت کو کرکے وید کو مع علم پوشیدہ کے پڑھے۔

नहायनैर्नपलितैर्नवित्तेननबन्धुभिः॥ ऋषयश्चक्रिरेधर्मंयो
ऽनूचानःसनोमहान्॥१५४॥ विप्राणांज्ञानतोज्यैष्ठ्यंक्षत्रि-
याणान्तुवीर्यतः॥ वैश्यानांधान्यधनतश्शूद्राणामेवजन्मतः
॥१५५॥ नतेनवृद्धोभवतियेनास्यपलितंशिरः॥ योवैयुवाप्य
धीयानस्तंदेवाःस्थविरंविदुः॥१५६॥ यथाकाष्ठमयोहस्तीय-
थाचर्ममयोमृगः॥ यश्चविप्रोऽनधीयानस्त्रयस्तेनामबिभ्रति॥
१५७॥ यथाषण्ढोऽफलःस्त्रीषुयथागौर्गविचाफला॥ यथा-
चाज्ञेऽफलंदानंतथाविप्रोऽनृचोऽफलः॥१५८॥ अहिंसयैव
भूतानांकार्यंश्रेयोऽनुशासनम्॥ वाक्चैवमधुराश्लक्ष्णाप्रयो-
ज्याधर्ममिच्छता॥१५९॥

۱۵۴ - زیادہ عمر ہونے اور بالون کے پک جانے اور زیادہ دولت اور بہت رشتہ دارون سے
بڑا نہین کہلاتا بلکہ انگ سمیت وید کا پڑھنے والا بڑا ہے یہ رشیون کا قول ہے۔

۱۵۵ - براہمنون مین گیان سے بڑائی ہے کشتریون مین طاقت سے ویشیون مین
دولت سے شودرون مین جنم ہونے سے۔

۱۵۶ بالون کے پکنے سے بڑا نہین کہلاتا بلکہ جو کوئی جوان ہے اور پڑھے ہوئے ہے
اُسی کو دیوتاؤن نے بڑا کہا ہے۔

۱۵۷ - کاٹھ کا ہاتھی چمڑے کا ہرن مورکھ براہمن یہ تینون برائے نام ہین کچھ کام
نہین کر سکتے۔

۱۵۸ - جسطرح نامرد آدمی عورتون مین اور گئو گئو ہی مین نشپھل ہے اور جسطرح مورکھ برہمن
کو دان دینا نشپھل ہے اسی طرح بے پڑھا براہمن نشپھل ہے۔

۱۵۹ - ایسے کام کی اگیا دینا چاہئے جسمین کسی جاندار کو تکلیف نہو اور دھرماتما آدمی کو
میٹھی بانی بولنا چاہئے۔

आचार्यस्त्वस्ययांजातिंविधिवद्वेदपारगः॥उत्पादयतिसावि-
त्र्यासासत्यासाऽजराऽमरा॥१४८॥अल्पंवाबहुवायस्यश्रुतस्यो
पकरोतियः॥तमपीहगुरुंविद्याच्छ्रुतोपक्रिययातया॥१४९
॥ब्राह्मस्यजन्मनःकर्तास्वधर्म्मस्यचशासिता॥बालोऽपिवि
प्रोवृद्धस्यपिताभवतिधर्म्मतः॥१५०॥अध्यापयामासपितॄ
न्शिशुराङ्गिरसःकविः॥पुत्रकाइतिहोवाचज्ञानेनपरिगृह्य
तान्॥१५१॥तेतमर्थमपृच्छन्तदेवानागतमन्यवः॥देवाश्च
तान्समेत्योचुर्न्याय्यंवःशिशुरुक्तवान्॥१५२॥अज्ञोभवति
वैबालःपिताभवतिमन्त्रतः॥अज्ञंहिबालमित्याहुःपितेत्येव
तुमंत्रदम्॥१५३॥

۱۴۸- جو جنم گایتری کرکے آچارج کرتا ہے سو جنم سچا اور بے زوال ہے -

۱۴۹- تھوڑا یا بہت وید کے پڑھانے سے جو اپکار کرتا ہے اسکو بھی گرو سمجھنا چاہیے

۱۵۰- جو اپنی عمر سے چھوٹا ہے اور وید کو پڑھاتا اور دھرم کو سکھاتا ہے وہ بھی گرو کہلاتا ہے -

۱۵۱- انگرا کے بیٹے نے اپنے چچا کو پڑھایا اور بیٹا کہا اس وجہ سے کہ گیان میں بڑا تھا -

۱۵۲- تب وہ چچا خفا ہوکر دیوتاؤں سے پوچھنے گیا دیوتاؤں نے کہا کہ اس لڑکے نے اچھا کیا -

۱۵۳- کیونکہ جو کچھ نہیں جانتا وہ بالک کہلاتا ہے اور جو منتر دیتا ہے وہ باپ کہلاتا ہے -

निषेकादीनिकर्म्माणियःकरोतियथाविधि॥सम्भावयतिचा-
न्नेनसविप्रोगुरुरुच्यते॥१४२॥अग्न्याधेयंपाकयज्ञानग्निष्टो
मादिकान्मखान्॥यःकरोतिवृतोयस्यसतस्यर्त्विगिहोच्यते॥
१४३॥यआवृणोत्यवितथंब्राह्मणाःश्रवणावुभौ॥समाता-
सपिताज्ञेयस्तन्नद्रुह्येत्कदाचन॥१४४॥उपाध्यायान्दशाचा-
र्यआचार्य्याणांशतंपिता॥सहस्रन्तुपितॄन्मातागौरवेणाति
रिच्यते॥१४५॥उत्पादकब्रह्मदात्रोर्गरीयान्ब्रह्मदःपिता॥ब्र-
ह्मजन्महिविप्रस्यप्रेत्यचेहचशाश्वतम्॥१४६॥कामान्माता
पिताचैनंयदुत्पादयतोमिथः॥संभूतिंतस्यतांविद्याद्यद्योनाव
भिजायते॥१४७॥

۱۴۲ - گربھادھان وغیرہ کرم کو بدھ سے جو کراتا ہے وہ براہمن گورو کہلاتا ہے۔

۱۴۳ - جو شخص اگنی ہوتر کرم درشٹ کا شتر ادھ واگنشٹوم وگیرہ یگیہ ان سب کو کراتا ہے وہ رتوگ کہلاتا ہے۔

۱۴۴ - جو دونوں کانوں کو وید سے بھرتا ہے وہ بجائے ماں باپ کے ہے اس سے کبھی دشمنی نہ کرنا چاہیے۔

۱۴۵ - اپادھیائے سے دس حصہ آچارج بڑا ہے آچارج سے سو حصہ باپ بڑا ہے باپ سے ہزار حصہ ماں بڑی ہے۔

۱۴۶ - جنم دینے والا اور وید پڑھانے والا ان دونوں میں وید پڑھانے والا بڑا ہے وید پڑھنے سے جو جنم ہوتا ہے وہ لازوال ہے۔

۱۴۷ - ماتا پتا اپنے کام کے بس ہو کر لڑکے کو پیدا کرتے ہیں اسلیئے پیدائش کے مقام ہیں۔

वित्तम्बन्धुर्वयःकर्म्मविद्याभवतिपंचमी।।एतानिमान्यस्था-
नानिगरीयोयद्यदुत्तरम्।।१३६।।पंचानांत्रिषुवर्णेषुभूयांसि
गुणवन्तिच।।यत्रस्युःसोऽत्रमानार्हःशूद्रोऽपिदशमींगतः।।
१३७।।चक्रिणोदशमीस्थस्यरोगिणोभारिणःस्त्रियाः।।स्नात
कस्यचराज्ञश्चपन्थादेयोवरस्यच।।१३८।।तेषान्तुसमवेतानां
मान्यौस्नातकपार्थिवौ।।राजस्नातकयोश्चैवस्नातकोनृपमा
नभाक्।।१३९।।उपनीयतुयःशिष्यंवेदमध्यापयेद्द्विजः।।सक
ल्पंसरहस्यंचतमाचार्य्यंप्रचक्षते।।१४०।।एकदेशन्तुवेदस्यवे
दांगान्यपिवापुनः।।योऽध्यापयतिवृत्त्यर्थमुपाध्यायःसउ-
च्यते।।१४१।।

۱۳۶ - دولت رشتہ دار عمر عمل علم یہ پانچو واجب التعظیم ہین انمین پہلے سے دوسرا
دوسرے سے تیسرا وغیرہ افضل ہے۔
۱۳۷ - منجملہ براہمن کشتری ویشیہ کے جسکے پاس پانچ چیز مندرجہ بالا مین سے کوئی چیز
زیادہ ہووے قابل تعظیم ہے اور نوی برس سے زیادہ عمر کا شودر بھی قابل تعظیم ہے۔
۱۳۸ - رتھ سوار و نوے برس سے زیادہ عمر والا بیمار و بوجھ والا و عورت و برہم چاری
و راجا و نوشہ انمین سے کوئی ایک آتا ہو تو اسکو راستہ دے یعنے آپ
کنارے ہو جاوے۔
۱۳۹ - اور اشخاص متذکرہ صدر باہم راجہ کو راستہ دیوین اور راجا برہم چاری کو آتا
ہوا دیکھکر راستہ سے ہٹ جاوے۔
۱۴۰ - جنیو کرکے جو شخص وید کو مع علم پوشیدہ کے پڑھاتا ہے وہ آچارج کہلاتا ہے۔
۱۴۱ - وید کا ایک دیش اور وید کے چھ انگ ان سب کو جیوکا کے لیے جو پڑھاتا ہے
وہ اپادھیا کہلاتا ہے۔

मातृष्वसामातुलानीश्वश्रूरथपितृष्वसा।।संपूज्यागुरुपत्नीव
समास्तागुरुभार्यया।।१३१।।भ्रातुर्भार्योपसंग्राह्यासवर्णाहन्य
हन्यपि।। विप्रोष्यतूपसंग्राह्याज्ञातिसम्बन्धियोषितः।।१३२
पितुर्भगिन्यांमातुश्चज्यायस्यांचस्वसर्यपि।। मातृवद्वृत्तिमा-
तिष्ठेन्माताताभ्योगरीयसी।।१३३।। दशाब्दाख्यंपौरसख्यं-
चाब्दाख्यंकलाभृताम्।। त्र्यब्दपूर्वंश्रोत्रियाणांस्वल्पेनापि
स्वयोनिषु।।१३४।।ब्राह्मणंदशवर्षंतुशतवर्षंतुभूमिपम्।।
पितापुत्रौविजानीयाद्ब्राह्मणस्तुतयोःपिता।।१३५।।

۱۳۱- موسی مامین ساس پھوپھو یے سب گرو کی استری کے برابر ہین اسلیئے ان
سب کی پوجا گرو کی استری کی طرح کرنا چاہیے-

۱۳۲- بڑے بھائی کی عورت جو ہمقوم ہو اسکا پانون چھو کر ہمیشہ پرنام کرے اور ہمقوم
رشتہ دار عورت کا بھی پانون چھو کر پرنام کرے لیکن جبکہ سفر سے آکر اپنے دیش مین
قیام کرے تب پانون کو چھوے صرف پرنام کرے-

۱۳۳- پھوپھو موسی بڑی بہن ان سب کو مان (یعنی والدہ) کے برابر جانے مگر ان سب سے بڑی ہے

۱۳۴- ایک گانون یا ایک شہر کے رہنے والے کئی سے رہتے ہون اور دش برس
بڑے ہون تو انکے ساتھ دوستی کا بیوہار ہوتا ہے اور گنی ہو اور پانچ برس بڑا ہو تو
اُسکے ساتھ بھی دوستی-

کا برتاؤ ہوتا ہے اور وید پڑھا ہوا اور تین برس بڑا ہو تو بھی دوستی کا برتاؤ
ہوتا ہے اور رشتہ دار ہو تو تھوڑے ہی زمانہ مین دوستی ہوتی ہے اگر مندرجہ بالا سے
عمر مین زیادہ ہو تو وہ بزرگ ہے-

۱۳۵- دش برس کا براہمن اور سو برس کا کشتری دونون آپسمین باپ بیٹے کی طرح ہین
انمین براہمن بجاے باپ کے اور کشتری بجاے بیٹے کے رہے-

आयुष्मान्भवसौम्येतिवाच्योविप्रोऽभिवादने ॥ अकारश्चा-
स्यनाम्नोऽन्तेवाच्यःपूर्वाक्षरःप्लुतः ॥१२५॥ योनवेत्त्यभिवादस्य
विप्रःप्रत्यभिवादनम् ॥ नाभिवाद्यःसविदुषायथाशूद्रस्तथैवसः
॥१२६॥ ब्राह्मणंकुशलंपृच्छेत्क्षत्रबन्धुमनामयम् ॥ वैश्यंक्षेमं
समागम्यशूद्रमारोग्यमेवच ॥१२७॥ अवाच्योदीक्षितोनाम्ना-
यवीयानपियोभवेत् ॥ भोभवत्पूर्वकंत्वेनमभिभाषेतधर्मवि-
त् ॥१२८॥ परपत्नीतुयास्त्रीस्यादसंबन्धाचयोनितः ॥ तांब्रूया-
द्भवतीत्येवंसुभगेभगिनीतिच ॥१२९॥ मातुलांश्चपितृव्यांश्च
श्वसुरानृत्विजोगुरून् ॥ असावहमितिब्रूयात्प्रत्युत्थाययवी-
यसः ॥१३०॥

۱۲۵ – اشیرباد دینے مین آیش مان بھو سومیہ ایسا کہنا چاہیے نام کے اخیر مین اکار وغیرہ حرف کو پلت یعنی ترماترآتمک کہنا چاہیے۔

۱۲۶ – جو شخص اشیرباد دینے کے کلام کو نہین جانتا اُسکو پرنام کرنا نچاہیے وہ سودر کے مانند ہے۔

۱۲۷ – براہمن سے کشل کشتری سے انامے ویشیہ سے کیشم سودر سے آروگیہ پوچھنا چاہیے۔

۱۲۸ – جو آدمی اپنے سے چھوٹا ہے اور یگیہ کرتا ہے اُسکو یگیہ مین بھو بھوت لفظ سے بولنا چاہیے نام لینا مناسب نہین ہے۔

۱۲۹ – جس عورت سے کسی طرح کا رشتہ نہین ہے اُسکو سبھگے بھوتی بھگنی یعنی بہن کہکے پکارنا چاہیے۔

۱۳۰ – ماموں۔ چچا۔ سسر۔ یگیہ کرانے والا گرو یہ سب اپنی عمر سے چھوٹے بھی ہون تو بھی اُنکو یہ کہکر کہ مین فلانا ہون اٹھکر پرنام کرے۔

शय्यासनेऽध्याचरितेश्रेयसानसमाविशेत्।। शय्यासनस्थ-
श्चैवैनंप्रत्युत्थायाभिवादयेत्।। ११९ ।।ऊर्ध्वंप्राणाह्युत्क्रामंति
यूनःस्थविरआयति।। प्रत्युत्थानाभिवादाभ्यांपुनस्तान्प्रति
पद्यते।। १२० ।। अभिवादनशीलस्यनित्यंवृद्धोपसेविनः।।चत्वा
रितस्यवर्द्धन्तेआयुर्विद्यायशोबलम्।। १२१ ।। अभिवादात्परं
विप्रोज्यायांसमभिवादयन्।। असौनामाहमस्मीतिस्वंनाम-
परिकीर्त्तयेत्।। १२२ ।।नामधेयस्ययेकेचिदभिवादंनजानते।
तान्प्राज्ञोऽहमितिब्रूयात्स्त्रियःसर्वास्तथैवच।। १२३ ।।भोःश-
ब्दंकीर्त्तयेदन्तेस्वस्यनाम्नोऽभिवादने।।नाम्नांस्वरूपभावोहि
भोभावऋषिभिःस्मृतः।। १२४ ।।

۱۱۹ بڑے لوگ جس آسن یا سجیا پر بیٹھے ہوں اسپر آپ نہ بیٹھے اور اگر آپ سجیا یا آسن پر بیٹھا ہو تو اٹھکر پرنام کرے۔

۱۲۰ - بڑے لوگوں کے آنے سے چھوٹے لوگوں کا دل خوش ہوتا ہے اور چھوٹے لوگ جب اٹھکر پرنام کرتے ہیں تو اس پرنام کو پاتے ہیں

۱۲۱ - جو آدمی بڑے لوگوں کو ہمیشہ پرنام کرتا ہے اور خدمت کرتا ہے اسکی عمر و نیکنامی و علم و قوت چاروں بڑھتی ہیں۔

۱۲۲ - پرنام کرنے کے بعد بزرگوں سے یہ کہے کہ میں فلاں شخص ہوں۔

۱۲۳ - جو شخص پرنام کرنے کے کلام کو نہیں جانتا وہ صرف اپنے نام ہی کو کہے اور عورتیں بھی اسیطرح کہیں۔

۱۲۴ - پرنام کرنے کے وقت اپنے نام کے اخیر میں بھو لفظ کو کہنے بھو لفظ نام کا بتانے والا ہے یہ رشی لوگوں نے کہا ہے

विद्ययैवसमंकामंमर्तव्यंब्रह्मवादिना॥ आपद्यपिहिघोरायां
नत्वेनामिरिणेवपेत्॥११३॥ विद्याब्राह्मणमेत्याहशेवधिस्तेऽ
स्मिरक्षमाम्॥ असूयकायमांमादास्तथास्यांवीर्यवत्तमा॥११४
॥ यमेवतुशुचिंविद्यान्नियतब्रह्मचारिणम्॥ तस्मैमांब्रूहिवि-
प्रायनिधिपायाप्रमादिने॥११५॥ब्रह्मयस्त्वननुज्ञातमधीया-
नादवाप्नुयात्॥ सब्रह्मस्तेयसंयुक्तोनरकंप्रतिपद्यते॥११६॥लौ-
किकंवैदिकंवापितथाध्यात्मिकमेवच॥ आददीतयतोज्ञानंतं
पूर्वमभिवादयेत्॥ ११७ ॥सावित्रीमात्रसारोऽपिवरंविप्रः
सुयन्त्रितः॥ नायन्त्रितस्त्रिवेदोऽपिसर्वाशीसर्वविक्रयी॥
॥११८॥

۱۱۳- ودیا سمیت وید پڑھنے والا خواہش مین مرجاے مگر کیسی ہی مصیبت مین ودیا کو اوسر زمین مین نہ بووے۔

۱۱۴- ودیا براہمن کے پاس آکر کہتی ہے کہ مین تمھاری دولت ہون میری حفاظت کرو نندا کرنیوالے کو مجھے نہ دو تو مین بقدرت تمام تمھارے پاس رہونگی

۱۱۵- جس براہمن کو پوتر اور برہم چاری اور دولت کی حفاظت کرنیوالا اور ہوشیار جانو اوس براہمن کو مجھے دو۔

۱۱۶- گرو کی بلا اجازت جو کوئی وید کو پڑھتے پڑھاتے سنکر سیکھ لیتا ہے وہ وید کا چور ہے نرک مین جاتا ہے

۱۱۷- جس سے لوکک گیان یا ویدک گیان یا برہم گیان سیکھے اوسکو پہلے پرنام کرے۔

۱۱۸- جو شخص صرف گایتری جانتا ہو لیکن شاستر کے موافق نیم سے رہتا ہو وہ قابل تعظیم ہے۔ اور جو تینون وید کو پڑھا ہو لیکن سب چیز کا بیچنے والا و ناپاک چیز کا کھانے والا و خلاف شاستر عمل کرنیوالا ہو وہ قابل تعظیم نہین ہے۔

यः स्वाध्यायमधीतेऽब्दं विधिना नियतः शुचिः॥ तस्य नित्यं क्षर-
त्येष पयो दधि घृतं मधु॥ १०७॥ अग्नीन्धनं भैक्षचर्य्यामधः श-
य्यां गुरोर्हितम्॥ आसमावर्त्तनात्कुर्यात्कृतोपनयनो द्विजः॥
१०८॥ आचार्य्यपुत्रः शुश्रूषुर्ज्ञानदो धार्मिकः शुचिः॥ आप्तः
शक्तोऽर्थदः साधुः स्वोऽध्याप्या दश धर्मतः॥ १०९॥ नापृष्टः क-
स्यचिद्ब्रूयान्न चान्यायेन पृच्छतः॥ जानन्नपि हि मेधावी जडव-
ल्लोक आचरेत्॥ ११०॥ अधर्मेण च यः प्राह यश्चाधर्मेण पृच्छ-
ति॥ तयोरन्यतरः प्रैति विद्वेषं वाधिगच्छति॥ १११॥ धर्मार्थौ य-
त्र न स्यातां शुश्रूषा वापि तद्विधा॥ तत्र विद्या न वक्तव्या शुभं बी-
जमिवोषरे॥ ११२॥

۱۰۷- جو آدمی ایک سال تک پوتر ہو کر بدھ سے ہر روز وید کو پڑھتا ہے اسکو وہی وید رفتہ
دودھ - دہی گھی مٹھائی دیتا ہے۔
۱۰۸- جسکا جنیئو ہو گیا ہو وہ وید پڑھنے سے جبتک فارغ ہو جاوے تب تک ہون کرتا رہے
اور بھیکھ مانگے زمین پر سووے گرو کی بھلائی میں رہے۔
۱۰۹- آچارج کا بیٹا خدمت کرنیوالا دھرم کرنیوالا گیان دینے والا پوتر رہنے والا سگا
سمرتھ سادھو روپیہ دینے والا ہم قوم یہ دس پڑھانے کے لائق ہیں۔
۱۱۰- بغیر پوچھے کسی سے کوئی بات نہ کہے فریب سے پوچھے تو بھی نہ کہے عقلمند آدمی واقف
ہونے پر بھی دنیا میں مثل شئے غیر متحرک کے رہے۔
۱۱۱- جو آدمی ادھرم سے پوچھتا ہے اور جو ادھرم سے کہتا ہے دونوں میں سے ایک مر جاتا ہے
یا دشمنی پیدا ہو جاتی ہے۔
۱۱۲- جہاں دھرم ارتھ سیوا شاستر کے موافق نہیں ہے وہاں بدیا نہ سکھانا کیونکہ عمدہ
بیج اوسر زمین میں نہیں بویا جاتا ہے۔

पूर्वां सन्ध्यां जपंस्तिष्ठेत्सावित्रीमार्कदर्शनात्॥ पश्चिमान्तु समा-
सीनः सम्यगृक्षविभावनात्॥ १०१॥ पूर्वां सन्ध्यां जपंस्तिष्ठन्नै-
शमेनो व्यपोहति॥ पश्चिमान्तु समासीनो मलं हन्ति दिवाकृत-
म्॥ १०२॥ न तिष्ठति तु यः पूर्वां नोपास्ते यश्च पश्चिमाम्॥ स शू-
द्रवद्बहिष्कार्यः सर्वस्माद्द्विजकर्मणः॥ १०३॥ अपां समीपे नि-
यतो नैत्यकं विधिमास्थितः॥ सावित्रीमप्यधीयीत गत्वारण्यं
समाहितः॥ १०४॥ वेदोपकरणे चैव स्वाध्याये चैव नैत्यके॥ ना-
नुरोधोऽस्त्यनध्याये होममन्त्रेषु चैव हि॥ १०५॥ नैत्यके नास्त्यन-
ध्यायो ब्रह्मसत्रं हि तत्स्मृतम्॥ ब्रह्माहुतिहुतं पुण्यमनध्याय-
वषट्कृतम्॥ १०६॥

۱۰۱- پراتہ کال گایتری کا جپ کرتا رہے جبتک سورج کا درشن ہو اور اسیطرح سانیکال
مین جبتک تارے نہ دکھلائی دین-
۱۰۲- پراتہ کال کی سندھیا کرنے سے رات کا پاپ چھوٹ جاتا ہے اور سانیکال کی
سندھیا کرنے سے دن کا پاپ چھوٹ جاتا ہے-
۱۰۳- جو آدمی دونون وقت کی سندھیا نہین کرتا ہے وہ شودر کی طرح دوج کرم سے
باہر ہو جاتا ہے-
۱۰۴- جنگل مین جاکر پانی کے پاس ایکاگر چت ہو کر بدھ سے گایتری کا جپ کرے-
۱۰۵- وید کے جو چھ انگ* ہین انمین اور نتنیہ کرم اور ہومون کے منتران سب مین انادھیا
یعنے تعطیل کا بچار نہین ہے-
۱۰۶- نتنیہ کرم مین جو منتر پڑھے جاتے ہین وہ تعطیل کے دن بھی خالی از ثواب
نہین ہین-

* یعنے شکشا[۱]- کلپ[۲]- ویاکرن[۳]- نرکت[۴]- جوتش[۵]- چھند[۶]-

यश्चैतान्प्राप्नुयात्सर्वान्यश्चैतान्केवलांस्त्यजेत्॥ प्रापणात्सर्व
कामानांपरित्यागोविशिष्यते॥९५॥ नतथैतानिशक्यन्ते सं-
नियन्तुमसेवया॥ विषयेषुप्रजुष्टानियथाज्ञानेननित्यशः॥
९६॥वेदास्त्यागश्चयज्ञाश्चनियमाश्चतपांसिच॥नविप्रदुष्टभा
वस्यसिद्धिंगच्छन्तिकर्हिचित्॥९७॥ श्रुत्वास्पृष्ट्वाचदृष्ट्वाचभु-
क्त्वाघ्रात्वाचयोनरः॥ नहृष्यतिग्लायतीवासविज्ञेयोजितेन्द्रि
यः॥९८॥इन्द्रियाणांतुसर्वेषांयद्येकंक्षरतीन्द्रियम्॥ तेनास्य
क्षरतिप्रज्ञादृतेःपादादिवोदकम्॥९९॥वशेकृत्वेन्द्रियग्रामं
संयम्यचमनस्तथा॥ सर्वान्संसाधयेदर्थानक्षिण्वन्योगत-
स्तनुम्॥१००॥

۹۵ جس شخص کو سب چیزین خاطر خواہ میسر ہین اور جو شخص پائی ہوئی سب چیزون کو ترک کر دیتا ہے اِن دونون مین ترک کرنیوالا بڑا ہے۔

۹۶ - نفسون کا ترک بغیر اُنکے استعمال کے نہین ہوتا کیونکہ استعمال کرنے سے جب اُنکا عیب نظر آتا ہے تب اُنکے ترک کرنے کو دل چاہتا ہے۔

۹۷ - جسکا سبھاؤ دشٹ ہے اُسکو وید تیاگ نیم - تپ - یگیہ سے کچھ سدھ نہین ملتی۔

۹۸ - جو شخص سننے اور چھونے اور دیکھنے اور استعمال کرنے اور سونگھنے سے نہ خوش ہوتا ہے اور نہ بغیر اُنکے ناخوش ہوتا ہے وہ جتیندری کہلاتا ہے۔

۹۹ - سب اندریون مین سے ایک بھی اندری جہان اپنے بشے مین لگی بس بدھ جاتی رہی جیسے چلنی سے پانی نکل جاتا ہے۔

۱۰۰ - عمدہ تدبیرون سے سب اندریون کو اور دل کو اپنے قابو مین کر کے اسطرح پر کہ جسمین جسم کو تکلیف نہونے پاوے سب مرادون کو حاصل کرے۔

एकादशेन्द्रियाण्याहुर्यानिपूर्वेमनीषिणः॥ तानिसम्यक्प्रव-
क्ष्यामियथावदनुपूर्वशः॥ ८९॥ श्रोत्रंत्वक्चक्षुषीजिह्वानासि-
काचैवपंचमी॥ पायूपस्थंहस्तपादंवाक्चैवदशमीस्मृता॥ ९०
॥ बुद्धीन्द्रियाणिपंचैषांश्रोत्रादीन्यनुपूर्वशः॥ कर्मेन्द्रियाणि
पंचैषांपाय्वादीनिप्रचक्षते॥ ९१॥ एकादशंमनोज्ञेयंस्वगुणे
नोभयात्मकम्॥ यस्मिन्जितेजितावेतौभवतःपंचकौगणौ
॥ ९२॥ इन्द्रियाणांप्रसंगेनदोषमृच्छत्यसंशयम्॥ सन्नियम्य
तुतान्येवततःसिद्धिंनियच्छति॥ ९३॥ नजातुकामःकामाना-
मुपभोगेनशाम्यति॥ हविषाकृष्णवर्त्मेवभूयएवाभिवर्द्धते
॥ ९४॥

۸۹- اگلے پنڈتون نے جو گیارہ اندریان کہی ہین اُن سب کو ٹھیک ٹھیک کہتے ہین
سُنو یعنے - (یعنی حواس ۱۲)

۹۰- سامعہ[1] - باصرہ[2] - شامہ[3] - ذائقہ[4] - لامسہ[5] - ہاتھ[6] - پانوں[7] - زبان[8]
مقام[9] پاخانہ - مقام پیشاب[10] -

۹۱- اِن سب مین پہلے پانچ گیان اندری کہلاتی ہین اور دوسرے پانچ کرم اندری کہلاتی
ہین -

۹۲- گیارہوان[11] من ہے جو اپنی صفتون سے گیان اندری اور کرم اندری سے نامزد ہے
من کو جیتنے سے دسوں اندری جیتی جاتی ہین -

۹۳- اندریون کی سنگت مین پڑنے سے جیو دکھی ہوتا ہے اور اندریون سے ترک تعلق
کرنے سے جیو سِدّھو کو پاتا ہے -

۹۴- جس چیز کی خواہش من یعنے دل کو ہوتی ہے اُسکے ملجانے پر بھی آسودہ نہین ہوتا
بلکہ اور خواہش زیادہ ہوتی ہے جسطرح گھی پانے سے آگ تیز ہوتی ہے -

क्षरन्तिसर्वावैदिक्योजुहोतियजतिक्रियाः॥ अक्षरंदुष्करंज्ञेयं
ब्रह्मचैवप्रजापतिः॥ ८४॥ विधियज्ञाज्जपयज्ञोविशिष्टोदश-
भिर्गुणैः॥ उपांशुःस्याच्छतगुणःसाहस्रोमानसःस्मृतः॥ ८५
॥ येपाकयज्ञाश्चत्वारोविधियज्ञसमन्विताः॥ सर्वेतेजपयज्ञ-
स्यकलांनार्हतिषोडशीम्॥ ८६॥ जप्येनैवतुसंसिध्येद्ब्राह्मणो
नात्रसंशयः॥ कुर्यादन्यन्नवाकुर्यान्मैत्रोब्राह्मणउच्यते॥ ८७
॥ इन्द्रियाणांविचरतांविषयेष्वपहारिषु॥ संयमेयत्नमाति-
ष्ठेद्विद्वान्यन्तेववाजिनाम्॥ ८८॥

۸۴ – وید مین لکھی ہوئی سب کریا ناش ہونے والی ہے مگر اونکر جو برہم کا روپ ہے لازوال ہے۔

۸۵ – یگیہ سے اُپانس جپ دش گنا زیادہ ہے جسکو پاس کے رہنے والے بھی نہ سُنین سُن پڑنے والے جپ (چپکے چاپ) سے اُپانسو جپ سو گنا زیادہ ہے اور جو جپ دل مین چپ چاپ کیا جاوے اونٹھ نہ ہلین تو وہ جپ اُپانسو سے ہزار گنا زیادہ ہے

۸۶ – اور جو چار پاک یگیہ ہیں اور بدھی یگیہ یہ سب جپ یگیہ کے سولھوین حصہ کو بھی نہیں پہونچتے۔

۸۷ – براہمن سب جانداروں سے محبت رکھے اور صرف جپ ہی کو کرے تو سب سدھ ہوتی ہے۔

۸۸ – اپنے اپنے بشیون سے اندریون کو روکے اسطرح کہ جیسے رتھوان گھوڑے کو کھچال سے روکتا ہے۔

* یعنی آنکھ کو دیکھنے سے زبان کو ذائقہ سے ناک کو سونگھنے سے بدن کو چھونے سے کان کو سُننے سے روکے۔

एतदक्षरमेतांचजपन्व्याहृतिपूर्विकाम्॥ संध्ययोर्वेदविद्विप्रो
वेदपुण्येनयुज्यते॥ ७८॥ सहस्रकृत्वस्त्वभ्यस्यबहिरेतत्त्रि-
कंद्विजः॥ महतोऽप्येनसोमासात्त्वचेवाहिर्विमुच्यते॥ ७९॥
एतयर्चाविसंयुक्तःकालेचक्रिययास्वया॥ ब्रह्मक्षत्रियवि-
ड्योनिर्गर्हणांयातिसाधुषु॥ ८०॥ ॐकारपूर्विकास्तिस्रोम-
हाव्याहृतयोऽव्ययाः॥ त्रिपदाचैवसावित्रीविज्ञेयंब्रह्मणो-
मुखम्॥ ८१॥ योऽधीतेऽहन्यहन्येतांस्त्रीणिवर्षाण्यतन्द्रितः॥
सब्रह्मपरमभ्येतिवायुभूतःखमूर्त्तिमान्॥ ८२॥ एकाक्षरंपरं
ब्रह्मप्राणायामाःपरंतपः॥ सावित्र्यास्तुपरंनास्तिमौनात्स-
त्यंविशिष्यते॥ ८३॥

۷۸- اونگ بھوہ بھوہ سوہ اسکو اور گایتری کے تینون چرنون کو دونون سندھیا
مین وید پڑھنے والا براہمن جپ کرے تو سمپورن پن پراپت ہون
۷۹- انھین تینون کو باہر جاکر ہزار بار ایک مہینہ تک پڑھے تو بڑے پاپ سے چھوٹ
جاے جسطرح سانپ کیچلی سے چھوٹتا ہے
۸۰- جو براہمن کشتری ویشیہ ان تینون کو اپنے وقت پر نہین پڑھتا ہے اسکی سادھ
لوگ نندا کرتے ہین-
۸۱- یہی تینون یعنی اونگ بھوہ بھوہ سوہ گایتری وید کا مکھ ہے اور پرماتما کے ملنے
کا دروازہ ہے-
۸۲- جو شخص کاہلی چھوڑکر تین برس تک ہر روز انھین تینون کو پڑھے وہ شکل ہوا
ہوکر برہم پدوی کو حاصل کرے
۸۳- اونگ یہ پر برہم ہے پرانایام پرم تپ ہے گایتری سے بڑا کوئی نہین ہے،
چپ رہنے سے سچ بولنا اچھا ہے-

व्यत्यस्तपाणिनाकार्यमुपसंग्रहणंगुरोः।।सव्येनसव्यःस्प्र-
ष्टव्योदक्षिणेनचदक्षिणः।।७२।।अध्येष्यमाणंतुगुरुर्नित्य
कालमतन्द्रितः।।अधीष्वभोइतिब्रूयाद्विरामोऽस्त्विति चा
रमेत्।।७३।।ब्रह्मणःप्रणवंकुर्यादादावन्तेचसर्वदा।।स्रवत्य
नोंकृतंपूर्वंपुरस्ताच्चविशीर्यति।।७४।।प्राक्कूलान्पर्युपासी-
नःपवित्रैश्चैवपावितः।।प्राणायामैस्त्रिभिःपूतस्ततओंका
रमर्हति।।७५।।अकारंचाप्युकारंचमकारंचप्रजापतिः।।वे
दत्रयान्निरदुहद्भूर्भुवःस्वरितीतिच।।७६।।त्रिभ्यएवतुवेदेभ्यः
पादंपादमदूदुहत्।।तदित्यृचोऽस्याःसावित्र्याःपरमेष्ठीप्र-
जापतिः।।७७।।

٧٢۔ گرو کے سامنے ہوکر داہنے ہاتھ سے داہنے چرن کو اور بائیں ہاتھ سے بائیں چرن کو چھوئے۔

٧٣۔ گرو حکم دے تب چیلا پڑھے اور جب چپ رہنے کو کہے تب چپ رہے خلاصہ یہ کہ گرو کے حکم سے پڑھے اور چپ رہے۔

٧٤۔ سبق کے آغاز و اختتام پر پرنو (یعنی اونگ کار) کہے اگر نہ کہے تو پڑھا ہوا بھول جاتا ہے۔

٧٥۔ پورب منہ کش کے آسن پر بیٹھ کر پونتر منتر سے پونتر ہوکر تین بار پرانایام کرے تب اونکار کہنے کے لائق ہوتا ہے۔

٧٦۔ اکار اکار مکار ان تینوں اکشروں کو اور بھو بھوہ سوہ انکو بھی برہما جی نے تینوں وید سے نکالا۔

٧٧۔ انھیں تینوں وید سے ایک ایک پاد گائتری کا برہما جی نے نکالا۔

یعنی رگ یجر سام ١٢

अमन्त्रिकातुकार्येयंस्त्रीणामावृदशेषतः॥संस्कारार्थंशरीर-
स्ययथाकालंयथाक्रमम्॥ ६६॥वैवाहिकोविधिःस्त्रीणांसं-
स्कारोवैदिकःस्मृतः॥पतिसेवागुरौवासोगृहार्थोऽग्निपरिक्रि-
या॥६७॥एषप्रोक्तोद्विजातीनामौपनायनिकोविधिः॥उत्प-
त्तिव्यञ्जकःपुण्यःकर्मयोगंनिबोधत॥६८॥उपनीयगुरुःशि-
ष्यंशिक्षयेच्छौचमादितः॥आचारमग्निकार्यंचसन्ध्योपास-
नमेवच॥६९॥अध्येष्यमाणस्त्वाचान्तोयथाशास्त्रमुदङ्मु-
खः॥ब्रह्माञ्जलिकृतोऽध्याप्योलघुवासाजितेन्द्रियः॥७०॥न-
ह्मारम्भेऽवसानेचपादौग्राह्यौगुरोःसदा॥संहत्यहस्तावध्येयं-
सहिब्रह्माञ्जलिःस्मृतः॥७१॥

۶۶- یہ سب سنسکار عورتون کے بلا ذریعہ منتر کے کرنا چاہیئے مگر انکو جس وقت پر جس طرح سے کہا ہے اُسی طرح کرنا چاہیئے

۶۷- عورتون کا بیواہ بموجب شاستر کے ہونا ہی منتر کا سنسکار ہے پتی کی سیوا کرنا گرو کے گھر مین رہنا ہے اور گھر کا کام کاج ہی اگنی کی سیوا ہے-

۶۸- تینون ورن کا جنیئو کہا وہ نہایت ثواب ہے اِس سے دوسرا جنم ہوتا ہے اب اسکے بعد کرم یوگ کو کہتے ہین-

۶۹- گرو کو چاہیے کہ پہلے پوتر یا آچار اگنی کی سیوا تینون وقت کی سندھیا ان سب باتون کو چیلے کو پہلے سکھاوے-

۷۰- بموجب حکم شاستر کے پڑھتے وقت آچمن کرکے پورب رخ ہاتھ جوڑکر جتیندری ہوکر چھوٹا کپڑا پہنکر چیلا رہے-

۷۱- ہر روز سبق کے آغاز و اختتام پر دونون ہاتھ سے گرو کے چرنون کو چھوے-

त्रिराचामेदपः पूर्वंद्विः प्रम्रज्याचतोमुखम्॥ खानि चैवस्पृशेद-
द्भिरात्मानं शिरएवच॥६०॥ अनुष्णाभिरफेनाभिरद्भिस्तीर्थेनध-
र्मवित्॥ शौचेप्सुःसर्वदाचामेदेकान्ते प्रागुदङ्मुखः॥६१॥ हृ-
द्गाभिः पूयते विप्रः कण्ठगाभिस्तुभूमिपः॥ वैश्योऽद्भिः प्राशि
ताभिस्तु शूद्रः स्पृष्टाभिरन्ततः॥६२॥ उद्धृते दक्षिणेपाणावुपवी
त्युच्यते द्विजः॥ सव्ये प्राचीन आवीती निवीती कण्ठसज्जने॥
६३॥ मेखलामजिनंदण्डमुपवीतं कमण्डलुम्॥ अप्सुप्रा-
स्यविनष्टानि गृह्णीतान्यानि मंत्रवत्॥६४॥ केशांतषोडशे
वर्षे ब्राह्मणस्य विधीयते॥ राजन्यबन्धोर्द्वाविंशे वैश्यस्यद्व्य
धिकेततः॥६५॥

۶۰ - پہلے تین بار آچمن کرے پھر دو دفعہ منھ دہووے اور ناک کان آنکھ منھ
چھاتی شر کو پانی سے چھووے -
۶۱ - پورب منھ یا اُتر منھ ہو کر ٹھنڈھے پانی سے جسمین پھینا نہو تنہائی مین پائی و
صفائی سے آچمن کرے -
۶۲ - آچمن کرنے مین براہمن چھاتی تک کشتری گلے تک وبیشہ زبان تک شود-
اونٹھ تک پانی کو پہنچادین -
۶۳ - بائین کندھے پر جنیئو رہنے سے اُپبیتی یعنے سَبَتہ کہلاتا ہے اور داہنے کندھے
پر رہنے سے پراچین آبیتی یعنے اپسَبیہ کہلاتا ہے اور گلے مین رہنے سے نِبیتی کہلاتا ہے
۶۴ - میکھلا چمڑا ونڈ جنیئو کمنڈل یہ سب ٹوٹ جائین تو پانی مین ڈال دے اور نیا
منتر کرکے دھارن کرے -
۶۵ - براہمن کو کیشانت کرم گربھ سے سولھوین برش اور کشتری کو بائیس برش اور
ویشیہ کو چوبیسوین برش کرنا چاہیئے -

पूजयेदशनं नित्यमद्याच्चैतदकुत्सयन्॥ दृष्ट्वा हृष्येत्प्रसीदेच्च प्र-
तिनन्देच्च सर्वशः॥५४॥ पूजितं ह्यशनं नित्यं बलमूर्जं च यच्छ-
ति॥ अपूजितं तु तद्भुक्तमुभयं नाशयेदिदम्॥५५॥ नोच्छिष्टं क-
स्यचिद्दद्यान्नाद्याच्चैव तथान्तरा॥ न चैवात्यशनं कुर्यान्न चोच्छि-
ष्टः क्वचिद्व्रजेत्॥५६॥ अनारोग्यमनायुष्यमस्वर्ग्यं चातिभोजन-
म्॥ अपुण्यं लोकविद्विष्टं तस्मात्तत्परिवर्जयेत्॥५७॥ ब्राह्मेण
विप्रस्तीर्थेन नित्यकालमुपस्पृशेत्॥ कायत्रैदशिकाभ्यां वा न
पित्र्येण कदाचन॥५८॥ अङ्गुष्ठमूलस्य तले ब्राह्मं तीर्थं प्रचक्ष-
ते॥ कायमङ्गुलिमूलेऽग्रे दैवं पित्र्यं तयोरधः॥५९॥

۵۴- ہر روز ان کی پوجا کرے اور ان کی توہین نہ کرے اور ان کو دیکھکر خوش ہو کر یہ کہکر کہ ہمکو ہمیشہ ایسا ان ملے بھوجن کرے۔

۵۵- ان کی پوجا کرنے سے بیج اور اندری شکت دونوں بڑھتے ہیں اور پوجا کرنے سے انھیں دونوں کا ناش ہو جاتا ہے۔

۵۶- جوٹھا کسی کو نہ دے دن اور رات کے بیچ میں بھوجن نہ کرے بہت بھوجن نہ کرے جوٹھے منہ کہیں نہ جاوے۔

۵۷- بہت بھوجن کرنا عمر و تندرستی و بہشت و ثواب کیواسطے نہیں ہے اور دنیا میں باعث بدنامی ہے۔

۵۸- براہمن ہمیشہ برہم تیرتھ سے آچمن کرے دیو تیرتھ پتر تیرتھ پرجاپت تیرتھ سے آچمن نہ کرے۔

۵۹- انگوٹھا - ترجنی - کنشٹھا - ان تینوں کا مول سلسلہ سے یہ تینم تیرتھ ہے پرجاپت کہلاتا ہے۔

प्रतिगृह्येप्सितंदण्डमुपस्थायचभास्करम्॥ प्रदक्षिणंपरीत्या
ग्निंचरेद्भैक्षंयथाविधि॥४८॥भवत्पूर्वंचरेद्भैक्षमुपनीतोद्विजो
त्तमः॥भवन्मध्यंतुराजन्योवैश्यस्तुभवदुत्तरम्॥४९॥मातरं-
वास्वसारंवामातुर्वाभगिनींनिजाम्॥भिक्षेतभिक्षांप्रथमं-
याचैनंनावमानयेत्॥५०॥समाहृत्यतुतद्भैक्षंयावदर्थममाय
या॥ निवेद्यगुरवेऽश्नीयादाचम्यप्राङ्मुखःशुचिः॥५१॥
आयुष्यंप्राङ्मुखोभुङ्क्तेयशस्यंदक्षिणामुखः॥ श्रियंप्रत्य-
ङ्मुखोभुङ्क्तेऋतंभुङ्क्तेह्युदङ्मुखः॥५२॥उपस्पृश्यद्विजोनि
त्यमन्नमद्यात्समाहितः॥भुक्त्वाचोपस्पृशेत्सम्यगद्भिःखा-
निचसंस्पृशेत्॥५३॥

۴۸- ڈنڈ دھارن کرکے سورج کے سنمکھ ہوکر اگنی کی پردکشنا یعنے طواف کرکے طریق مندرجہ شاستر سے بھیکھ مانگے

۴۹- براہمن کشتری ویشیہ تینون ورن کے برہم چاری بھیکھ مانگنے کے الفاظ مین سلسلہ کے موافق اول و درمیان و آخر مین بھوت لفظ کو کہین گے

۵۰- پہلے ماں بہن موسی سے بھیکھ مانگے اور جو برہم چاری کا اپمان یعنے توہین نکرے اُس سے بھی مانگے-

۵۱- سنبھل ہوکر بھیکھ مانگ کر گورو کے پاس رکھے پھر آچمن کرکے پوتر ہوکر پورب مُنھ بیٹھکر بھوجن کرے-

۵۲- پورب- دکشن- پچھم- اُتر کی طرف مُنھ کرکے بھوجن کرنے سے سلسلہ کے موافق عمر نیکنامی دولت راستی کی ترقی ہوتی ہے-

۵۳- ہر روز دل کو یکسو کرکے بعد آچمن کرنے کے بھوجن کرے اور بھوجن کے بعد پھر آچمن کرے اور اندریون کو پانی سے چھوے -

मौञ्जी त्रिवृत्समा श्लक्ष्णा कार्या विप्रस्य मेखला ॥ क्षत्रिय-
स्य तु मौर्वी ज्या वैश्यस्य शणतान्तवी ॥ ४२ ॥ मुंजालाभे तु कर्त-
व्याः कुशाश्मन्तकवल्वजैः ॥ त्रिवृता ग्रन्थिनैकेन त्रिभिः पंच-
भिरेव वा ॥ ४३ ॥ कार्पासमुपवीतं स्याद्विप्रस्योर्ध्ववृतं त्रिवृत् ॥ श-
णसूत्रमयं राज्ञो वैश्यस्याविकसौत्रिकम् ॥ ४४ ॥ ब्राह्मणो बैल्व
पालाशौ क्षत्रियो वाटखादिरौ ॥ पैलवौदुम्बरौ वैश्यो दंडानर्ह-
न्ति धर्मतः ॥ ४५ ॥ केशान्तिको ब्राह्मणस्य दण्डः कार्यः प्रमा-
णतः ॥ ललाटसंमितो राज्ञः स्यात्तु नासान्तिको विशः ॥ ४६ ॥
ऋजवस्ते तु सर्वे स्युरव्रणाः सौम्यदर्शनाः ॥ अनुद्वेगकरा न्-
णां सत्वचो नाग्निदूषिताः ॥ ४७ ॥

۴۲ - براہمن کی مونج کی میکھلا تین لڑکی اور کشتری کو مورواکی ڈوری کی اور ویشیہ کی سن کی تین لڑی پہننا چاہئے -

۴۳ - اگر مونج اور وہ سن نہ ملیں تو کش بھیڑ اگھی کی تین لڑی کرنا چاہئے ایک یا تین یا پانچ گانٹھ کی کرنا چاہئے کل کی ریت کے موافق نہ یہ کہ براہمن یا کشتری وویشیہ تین گانٹھ کی کھینں

۴۴ - براہمن کو کپاس کا جنیو کشتری کو سن کا ویشیہ کو بھیڑ کے بالوں کا پہننا چاہئے سو کس طرح کی تگنا کرکے پھر تگنا کرنا -

۴۵ - براہمن بیل یا پلاس کا ڈنڈ دھارن کرے اور کشتری بڑ یا کھیر کا اور ویشیہ پیلو یا گولر کا -

۴۶ - سر کے بالوں تک براہمن اور پیشانی تک کشتری اور ناک تک ویشیہ ڈنڈ کو دھارن کریں -

۴۷ - سب ڈنڈ ملائم و صاف و بے سوراخ و خوبصورت ہوں بدصورت یا آگ سے داغدار نہ ہوں -

गर्भाष्टमेऽब्देकुर्वीतब्राह्मणस्योपनायनम् ॥ गर्भादेकादशे
राज्ञोगर्भात्तुद्वादशे विशः ॥ ३६ ॥ ब्रह्मवर्चसकामस्यकार्यंवि-
प्रस्यपंचमे ॥ राज्ञोबलार्थिनःषष्ठेवैश्यस्येहार्थिनोऽष्टमे ॥ ३७
॥ आषोडशाद्ब्राह्मणस्यसावित्रीनातिवर्त्तते ॥ आद्वाविंशा-
त्क्षत्रबन्धोराचतुर्विंशतेर्विशः ॥ ३८ ॥ अतऊर्ध्वंत्रयोऽप्ये-
तेयथाकालमसंस्कृताः ॥ सावित्रीपतिताव्रात्याभवन्त्यार्य
विगर्हिताः ॥ ३९ ॥ नैतैरपूतैर्विधिवदापद्यपिहिकर्हिचित्
॥ ब्राह्मान्यौनांश्चसम्बन्धान्नाचरेद्ब्राह्मणाःसह ॥ ४० ॥ का
र्ष्णरौरवबास्तानिचर्म्माणिब्रह्मचारिणः ॥ वसीरन्नानुपू-
र्व्येणशाणक्षौमाविकानिच ॥ ४१ ॥

۳۶- روز قیام حمل یا روز ولادت سے آٹھوین - گیارھوین - بارھوین برش بہ ترتیب سلسلہ براہمن - کشتری ویشیہ کا جنیو کرنا چاہیے -

۳۷- برہم تیج اور بل اور دھن کی اچھا ہو تو سلسلہ کے موافق براہمن کشتری ویشیہ پانچوین چھٹوین - آٹھوین برش جنیو کرین -

۳۸- سولہ - بائیس - چوبیس برش تک بہ ترتیب سلسلہ براہمن کشتری ویشیہ کی گایتری اُتن نہین ہوتی

۳۹- اسکے بعد تینون ورن اسکے ادھکاری نہین رہتے تب انکا نام براتیہ کہلاتا ہے اور آریا لوگ انکو برا کہتے ہین -

۴۰- جبتک ایسے براہمن پرائشچت یعنی کفارہ نہ کرین تب تک انکے ساتھ پڑھنے پڑھانے و داماد شادی وغیرہ کا بیوہار نکرے -

۴۱- اب ان تینون ورنون کے برہم چاریون کا چمڑا وغیرہ پہنا کہتے ہین - کہ کالا ہرن ہرن بکرا کا چمڑا براہمن کشتری ویشیہ سلسلہ کے موافق اپنے جسم مین اور سن سی کھیس ریشم کا کپڑا نیچے کے بدن مین دھارن کرین -

नामधेयंदशम्यान्तुद्वादश्यांवास्यकारयेत्॥पुण्येतिथौमुहू-
र्त्तेवानक्षत्रेवागुणान्विते॥ ३०॥ मंगल्यंब्राह्मणस्यस्यात्क्षत्रि
यस्यबलान्वितम्॥ वैश्यस्यधनसंयुक्तंशूद्रस्यतुजुगुप्सितम्॥
३१॥ शर्म्मवद्ब्राह्मणस्यस्याद्राज्ञोरक्षासमन्वितम्॥ वैश्यस्य
पुष्टिसंयुक्तंशूद्रस्यप्रेष्यसंयुतम्॥ ३२॥ स्त्रीणांसुखोद्यमक्रूरं
विस्पष्टार्थंमनोहरम्॥ मंगल्यंदीर्घवर्णान्तमाशीर्वादाभिधान-
वत्॥ ३३॥ चतुर्थेमासिकर्त्तव्यंशिशोर्निष्क्रमणंगृहात्॥ ष
ष्ठेऽन्नप्राशनंमासियद्वेष्टंमंगलंकुले॥ ३४॥ चूडाकर्म्मद्विजा
तीनांसर्व्वेषामेवधर्म्मतः॥ प्रथमेऽब्देतृतीयेवाकर्त्तव्यंश्रुति-
चोदनात्॥ ३५॥

۳۰ - پیدائش سے گیارھواں یا بارھواں دن نام کرن کرنا چاہئے اگر ان دونوں میں نہ ہوسکے تو اور کسی اچھی تتھ اور نکشتر اور دن میں کرنا چاہئے

۳۱ - براہمن کے نام میں لفظ منگل یعنی خوشی اور کشتری کے نام میں لفظ بل یعنی طاقت اور ویشیہ کے نام میں لفظ دھن یعنی دولت اور شودر کے نام میں لفظ نندا یعنی تحقیر شامل کرنا چاہئے

۳۲ - براہمن کشتری - ویشیہ شودر - انکے نام کے اخیر میں الفاظ شرم رکشا پشٹ اور پریشیہ حسب سلسلہ شامل کرنا چاہئے۔

۳۳ - عورت کا نام ایسا رکھنا چاہئے کہ جو فرحت انگیز ہو اور نرم اور سہل اور پیارا اور خوشی اور دعا کے معنے رکھتا ہو اور اخیر کا حرف اعراب کامل رکھتا ہو۔

۳۴ - چوتھے مہینہ لڑکے کو گھر سے باہر نکالنا چاہئے۔ اور چھٹے مہینہ یا جس مہینہ میں اپنا کُل کی ریت ہو ان پراشن کرنا چاہئے۔

۳۵ - براہمن کشتری ویشیہ ان سبکا چوڑا کرم یعنے مونڈن پہلے یا تیسرے برس کرنا چاہئے یہ وید کا حکم ہے۔

एतान्द्विजातयोदेशान्संश्रयेरन्प्रयत्नतः॥शूद्रस्तुयस्मिन्कस्मि
न्वानिवसेद्वृत्तिकर्शितः॥२४॥एषाधर्मस्यवोयोनिःसमासेनप्र
कीर्तिता॥संभवश्चास्यसर्वस्यवर्णधर्मान्निबोधत॥२५॥वै
दिकैःकर्मभिःपुण्यैर्निषेकादिर्द्विजन्मनाम्॥कार्यःशरीरसं
स्कारःपावनःप्रेत्यचेहच॥२६॥गार्भैर्होमैर्जातकर्मचौडमौंजी
निबन्धनैः॥बैजिकंगार्भिकंचैनोद्विजानामपमृज्यते॥२७॥स्वा
ध्यायेनव्रतैर्होमैस्त्रैविद्येनेज्ययासुतैः॥महायज्ञैश्चयज्ञैश्चब्रा
ह्मीयंक्रियतेतनुः॥२८॥प्राङ्नाभिवर्द्धनात्पुंसोजातकर्मवि
धीयते॥मंत्रवत्प्राशनंचास्यहिरण्यमधुसर्पिषाम्॥२९॥

۲۴ - براہمن کشتری ویشیہ تدبیر کے ساتھ اس ملک میں رہیں اور شودر بوجہ تکلیف معاش
چاہے جس ملک میں رہیں -

۲۵ - بھرگ جی کہتے ہیں کہ اے رشی لوگو آپسے سب کی پیدائش اور دھرم کو بیان
کیا اب ورنوں کا دھرم کہتے ہیں -

۲۶ - براہمن کشتری ویشیہ کو گربھادھان وغیرہ منتر یہ کا سنسکار لوک اور پرلوک میں پوتر کرنیوالا
ہے اسلیئے ان سنسکاروں کو کرنا چاہیئے -

۲۷ - گربھ سنسکار جات کرم مونڈن اپنین ان سنسکاروں سے براہمن کشتری ویشیہ کے بیج کا دوش
اور گربھ کا دوش چھوٹ جاتا ہے -

۲۸ - وید کا پڑھنا - برت - ہون - تریبد - نام برت - دیورش - پتروں کا
ترپن - پتر کی اتپت - مہایگیہ - یگیہ - ان سب کرموں سے یہ شریر موکش پانے کے
لائق ہوتا ہے -

۲۹ - نال چھیدن سے پہلے جات کرم ہوتا ہے اسمیں منتر پڑھکر ورق طلا و شہد
و گھی لڑکے کو کھلانا چاہیئے -

तस्मिन्देशेय आचारःपारंपर्यक्रमागतः॥ वर्णानांसान्तराला
नांससदाचारउच्यते॥१८॥कुरुक्षेत्रंचमत्स्याश्चपंचालाःशू-
रसेनकाः॥एषब्रह्मर्षिदेशोवैब्रह्मावर्त्तादनन्तरः॥१९॥एतद्दे-
शप्रसूतस्यसकाशादग्रजन्मनः॥स्वंस्वंचरित्रंशिक्षेरन्पृथिव्यां
सर्वमानवाः॥२०॥हिमवद्विन्ध्ययोर्मध्यंयत्प्राग्विनशनादपि
॥प्रत्यगेवप्रयागाच्चमध्यदेशःप्रकीर्त्तितः॥२१॥आसमुद्रात्तुवै
पूर्वादासमुद्रात्तुपश्चिमात॥तयोरेवान्तरंगिर्योरार्यावर्त्तंविदु-
र्बुधाः॥२२॥कृष्णसारस्तुचरतिमृगोयत्रस्वभावतः॥सज्ञेयो
यज्ञियोदेशोम्लेच्छदेशस्त्वतःपरः॥२३॥

۱۸- سب ورنون اور ورن سنکرون کا اس دیش مین جو آچار چلا آیا ہے وہ سداچار کہلاتا ہے

۱۹- برہماورت کے متصل کرکشیتر - متسیہ[1] پنچال[2] - شورسینک[3] یہ سب دیش برہم رشیون کے ہین

۲۰- تمام مردمان عالم پیدائیش اپنی اس ملک کے رہنے والے براہمون سے جانین

۲۱- ہماچل اور بندھیاچل کا بیچ ونسن[4] کے پورب اور پریاگ کے پچھم مدھیہ دیش کہلاتا ہے

۲۲- مشرقی سمندر سے لیکر مغربی سمندر تک اور ہماچل اور بندھیاچل کا درمیان آریاورت کہلاتا ہے-

۲۳- کالا ہرن اپنے سبھاؤ سے جس دیش مین رہے وہ دیش یگیہ کرنے کے لائق ہے اسکے آگے ملیچھ دیش ہے-

ف۱ - بھداور-
ف۲ تھانیسر کے اتر و پچھم ہمالیہ پہاڑ و چمبل دریا کے بیچ کا ملک-
ف۳ - دیپ متھرا-
ف۴ - حصار کے قریب

वेदःस्मृतिःसदाचारःस्वस्यचप्रियमात्मनः।।एतच्चतुर्विधंप्राहुः
साक्षाद्धर्मस्यलक्षणम्।।१२।।अर्थकामेष्वसक्तानांधर्मज्ञानंवि-
धीयते।।धर्मंजिज्ञासमानानांप्रमाणंपरमंश्रुतिः।।१३।।श्रुति-
द्वैधन्तुयत्रस्यात्तत्रधर्मावुभौस्मृतौ।।उभावपिहितौधर्मौसम्य-
गुक्तौमनीषिभिः।।१४।।उदितेऽनुदितेचैवसमयाध्युषितेतथा
।।सर्वथावर्त्ततेयज्ञइतीयंवैदिकीश्रुतिः।।१५।।निषेकादिश्मशा-
नान्तोमंत्रैर्यस्योदितोविधिः।।तस्यशास्त्रेऽधिकारोऽस्मिन्ज्ञे-
योनान्यस्यकस्यचित्।।१६।।सरस्वतीदृषद्वत्योर्देवनद्योर्यदन्तर-
म्।।तन्देवनिर्मितंदेशंब्रह्मावर्त्तंप्रचक्षते।।१७।।

۱۲- وید اور شاستر اور اچھے لوگون کا طریقہ جس سے اپنے دل کو سچا اطمینان ہو یہ چارون
دھرم کے لکشن ہین-
۱۳- ارتھ اور کام کی جسکو خواہش نہین ہے اوسکو دھرم اور گیان کا ادھکار ہے
اور جسکو دھرم جاننے کی خواہش ہے اوسکو صرف وید ہی پرمان ہے-
۱۴- جس کام کے کرنے مین شاستر دو طرح کے حکم لکھتا ہے اسمین دونون حسب تفصیل ذیل
ہین اسبات کو اچھے پرکار سے پنڈتون نے کہا ہے-
۱۵- سورج کے اوگنے مین اور سورج کے استنہ ہین اور سورج اور نکشتر کے
ہنو لے ہین یہ تینون وقت ہون کرنے کو وید مین کہے ہین اسمین جو اچھا معلوم ہو
کرے-
۱۶- جنم سے مرن تک جسکا سنسکار منتر سے ہوتا ہے دیعنی براہمن کشتری ویشیہ)
انھین تینون ورنون کا ادھکار اس شاستر مین جاننا اور کسیکا ادھکار نہ جاننا-
۱۷- دیوتاؤن کی ندی جو سرسوتی اور درکھدوتی ہے اُن دونون کے بیچ جو ملک ہے
اوسکو آریاورت کہتے ہین-

वेदोऽखिलोधर्ममूलंस्मृतिशीलेचतद्विदाम्॥ आचारश्चैवसाधू
नामात्मनस्तुष्टिरेवच॥ ६॥ यःकश्चित्कस्यचिद्धर्मोमनुनापरि-
कीर्त्तितः॥ ससर्वोऽभिहितोवेदेसर्वज्ञानमयोहिसः॥७॥ सर्वं
त्तुसमवेक्ष्येदं निखिलंज्ञानचक्षुषा॥ श्रुतिप्रामाण्यतोविद्वा-
न्स्वधर्मेनिविशेतवै॥ ८॥ श्रुतिस्मृत्युदितंधर्ममनुतिष्ठन्हिमा-
नवः॥ इहकीर्त्तिमवाप्नोतिप्रेत्यचानुत्तमंसुखम्॥ ९॥ श्रुति-
स्तुवेदोविज्ञेयोधर्म्मशास्त्रंतुवैस्मृतिः॥ तेसर्वार्थेष्वमीमांस्ये
ताभ्यांधर्मोहिनिर्बभौ॥ १०॥ योऽवमन्येततेमूलेहेतुशास्त्राश्र-
याद्द्विजः॥ ससाधुभिर्बहिष्कार्योनास्तिकोवेदनिन्दकः॥ ११॥

۶ - وید کا قول اور وید جاننے والون کا قول وفعل وساد ھو لوگون کا فعل اور وہ فعل جسکے کرنے سے اپنا دل مطمئن ہو یہ سب دھرم کے مول ہین -

۷ - سب باتون کے جاننے والے منُ جی نے جسکا جو دھرم اس شاستر مین کہا ہے وہ سب وید مین ہے -

۸ - ہر شخص کو بچشم عقل واعتقاد کے وید و شاستر پر نظر کرکے اپنے دھرم پر ثابت قدم رہنا چاہیے

۹ - جو شخص وید و شاستر مین کہے ہوئے دھرم پر چلتا ہے وہ دنیا مین نیکنامی اور عاقبت مین عیش جاودانی حاصل کرتا ہے -

۱۰ - وید اور شاستر پر بحث لا طائل کرکے اپنے معنی نہ لگانا چاہیے کیونکہ انھین دونون سے دھرم نکلا ہے -

۱۱ - جو شخص وید کے احکام کو بذریعہ علم منطق غلط سمجھکر وید اور شاستر کی توہین کرتا ہے وہ ناستک یعنے کافر ہے اوسکو سادھو لوگ اپنی منڈلی سے باہر کردین -

विद्वद्भिःसेवितःसद्भिर्नित्यमद्वेषरागिभिः॥हृदयेनाभ्यनुज्ञातोयो-
धर्मस्तन्निबोधत॥१॥कामात्मतानप्रशस्तानचैवेहास्त्यकाम-
ता॥काम्योहिवेदाधिगमःकर्म्मयोगश्चवैदिकः॥२॥संकल्प
मूलःकामोवैयज्ञाःसंकल्पसम्भवाः॥ब्रतानियमधर्म्माश्चसर्वे
संकल्पजाःस्मृताः॥३॥अकामस्यक्रियाकाचिद्दृश्यतेनेह
कर्हिचित्॥यद्यद्धिकुरुतेकिंचित्तत्तत्कामस्यचेष्टितम्॥४॥तेषु-
सम्यग्वर्त्तमानोगच्छत्यमरलोकताम्॥यथासंकल्पितांश्चेह-
सर्व्वान्कामान्समश्नुते॥५॥

١- دوستی و دشمنی سے علیحدہ اچھے پنڈت لوگون نے دھرم کی پیروی کی ہے اور وہ دھرم کلیان کرنے والا ہے اس دھرم کو ہمسے سنیئے۔

٢- کہ پھل کی اچھا سے کوئی کام کرنا اچھا نہین ہے (کیونکہ اُس پھل کے بھوگنے کیواسطے جنم لینا پڑتا ہے) اور جو نشکام کرم اور گیان ہے وہ معاون حصول معرفت ہوکر مکت دینے والا ہے مگر اس بیان سے عام خواہش کی ممانعت نہین ہے کیونکہ تمام بیان متعلق دھرم مندرجہ وید شاستر عین خواہش ہی سے ہے۔

٣- اچھا - یگیہ - برت - نیم - دھرم یہ سب سنکلپ (یعنے اس کام سے یہ پھل ہمکو ملے ایسی بدھ) سے پیدا ہوتے ہین۔

٤- بغیر اچھا کے کوئی کام نہین ہے جو کچھ ہوتا ہے سب اچھا ہی سے ہوتا ہے۔

٥- بغیر اچھا کے اگر کوئی کام کرے تو مکت حاصل ہو اور دنیا کی تمنا بھی برآوے۔

پد ١ شلوک سنسکار پرشن - گربھادان - پنسون - سیمنتونین - جات کرم - نام کرن - نشکرمن - انّ پراشن - چوڑا کرن
کرن بیدھ - اپنین - ویدارمبھ (یعنی وید پڑہنا) سماورتن - بواہ -

स्त्रीधर्मयोगं तापस्यं मोक्षं संन्यासमेव च।।राज्ञश्च धर्ममखिलं का-
र्याणां च विनिर्णयम्।।११४।।साक्षीप्रश्नविधानं च धर्म्मं स्त्रीपुंस-
योरपि।।विभागधर्मं द्यूतं च कण्टकानां च शोधनम्।।११५।।वैश्य-
शूद्रोपचारं च संकीर्णानां च सम्भवम्।। आपद्धर्मं च वर्णानां प्राय-
श्चित्तविधिं तथा।।११६।।संसारगमनं चैव त्रिविधं कर्मसंभवम्।।
निःश्रेयसं कर्मणां च गुणदोषपरीक्षणम्।।११७।।देशधर्माञ्जाति-
धर्मान्कुलधर्मांश्च शाश्वतान्।।पाषण्डगणधर्मांश्च शास्त्रेऽस्मि-
न्नुक्तवान्मनुः।।११८।।यथेदमुक्तवाञ्छास्त्रं पुरा पृष्टो मनुर्मया।।
तथेदं यूयमप्यद्य मत्सकाशान्निबोधत:।।११९।।

इति मानवे धर्मशास्त्रे भृगुप्रोक्तायां संहितायां

प्रथमोऽध्यायः १

۱۱۴۔ استری کا دھرم۔ تپسیا۔ موکش۔ سنیاس۔ راجاؤں کا دھرم۔ سب کاموں کا بچار

۱۱۵۔ طریق گواہی گواہان۔ مرد عورت کا دھرم۔ بھاگ دھرم۔ (یعنی حصہ بانٹ) جوا کھیلنے کی بابت مجرموں کی سزا۔

۱۱۶۔ ویشیہ اور شودروں کا دھرم۔ ورن سنکروں کی پیدائش۔ بپت سمے ورنوں کا دھرم۔ پاپ سے چھوٹنے کی ودھ

۱۱۷۔ شبھ اور اشبھ کرموں سے اتم مدھیم ادھم شریروں میں جنم پانا۔ آتم گیان (یعنی خود شناسی) نتیجہ اعمال نیک و بد۔

۱۱۸۔ دیش۔ جات۔ کل۔ پاکھنڈی ان سبھوں کا دھرم۔ اتنی باتیں منو جی نے اس شاستر میں کہی ہیں۔

۱۱۹۔ بھرگ جی کہتے ہیں کہ جس طرح ہم نے اس شاستر کو منو جی سے پوچھا اور انھوں نے کہا اسی طرح آپ لوگ بھی ہم سے سنیے

منو جی کا دھرم شاستر بھرگ جی کی سنگتا کا پہلا ادھیائے سماپت ہوا

आचारः परमो धर्म्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त्त एव च। तस्मादस्मिन्सदा यु-
क्तो नित्यं स्यादात्मवान्द्विजः॥१०८॥ आचाराद्विच्युतो विप्रो न वे-
दफलमश्नुते। आचारेण तु संयुक्तः सम्पूर्णफलभाग्भवेत् १०९
एवमाचारतो दृष्ट्वा धर्मस्य मुनयो गतिम्। सर्वस्य तपसो मूल
माचारं जगृहुः परम्॥११०॥ जगतश्च समुत्पत्तिं संस्कारविधिमे-
व च। व्रतचर्य्योपचारं च स्नानस्य च परं विधिम्॥१११॥ दाराधि-
गमनं चैव विवाहानां च लक्षणम्। महायज्ञविधानं च श्राद्ध-
कल्पं च शाश्वतः॥११२॥ वृत्तीनां लक्षणं चैव स्नातकस्य व्रतानि
च। भक्ष्याभक्ष्यं च शौचं च द्रव्याणां शुद्धिमेव च॥११३॥

۱۰۸- جو آچار ویداور شاستر مین کہی ہین وہ پرم دھرم ہین اسلیئے جو براہمن یا کشتری یا دیشیہ اپنا بھلا چاہے وہ اس شاستر پر عمل کرے-

۱۰۹- آچار رہت براہمن وید کے پھل کو نہین بھوگ کرسکتا ہے اور آچار سہت براہمن تمام وید کے پھل کو بھوگ کرسکتا ہے-

۱۱۰- جب منئون نے دیکھا کہ آچار ہی سے دھرم حاصل ہوتا ہے تب سب تپسیا کا مول جو آچار ہے اسی کو اختیار کیا-

۱۱۱- اتنی باتین اس شاستر مین کہی گئی ہین- جگت کی اُتپت سنسکار بدھ برت کا آچرن- اسنان بدھ-

۱۱۲- استری پرسنگ- بیواہون کا لکشن- مہایگیہ- شرادھ کی بدھ-

۱۱۳- جیوکا کا لکشن- برہم چاری کا برت- کھانے اور نہ کھانے والی چیزین صفائی چیزون کے پاک کرنے کا طریقہ-

तस्यकर्म्मविवेकार्थंशेषाणामनुपूर्व्वशः।।स्वायम्भुवोमनुर्धी-
मानिदंशास्त्रमकल्पयत।।१०२।।विदुषाब्राह्मणेनेदमध्येतव्यं
प्रयत्नतः।।शिष्येभ्यश्चप्रवक्तव्यंसम्यङ्नान्येनकेनचित्‌१०३
इदंशास्त्रमधीयानोब्राह्मणःशंसितव्रतः।।मनोवाग्देहजै-
र्नित्यंकर्म्मदोषैर्नलिप्यते।।१०४।।पुनातिपंक्तिंवंश्यांश्चसप्त
सप्तपरावरान्‌।।पृथिवीमपिचैवेमांकृत्स्नामेकोपिसोर्हति।।
१०५।।इदंस्वस्त्ययनंश्रेष्ठमिदंबुद्धिविवर्द्धनम्‌।।इदंयशस्यमायु-
ष्यमिदंनिश्श्रेयसंपरम्‌।।१०६।।अस्मिन्धर्म्मोऽखिलेनोक्तोगु-
णदोषौचकर्म्मणाम्‌।।चतुर्णामपिवर्णानामाचारश्चैवशा-
श्वतः।।१०७।।

۱۰۲- اس براہمن کے کرم اور کشتری وغیرہ کے کرم جاننے کے لیئے برہما جی کے بیٹے
من جی نے اس شاستر کو بنایا-

۱۰۳- جو براہمن پنڈت ہین وہ اس شاستر کو جتن سے پڑھین اور چیلون کو دینے
شاگردون کو بھی پڑھاوین اور کشتری وغیرہ پڑھین مگر پڑھاوین نہین-

۱۰۴- جو براہمن اس شاستر کو پڑھتا ہے اور برت کرتا ہے وہ دل و زبان و جسم سے
پیدا ہوئے اعمال مین ملوث نہین ہوتا-

۱۰۵- پاپیون کی پنگت کو براہمن پوتر کرتا ہے اور اپنی سات پشت اوپر کی اور سات
پشت نیچے کی پوتر کرتا ہے اور تمام پرتھوی کو اکیلا دھارن کر سکتا ہے-

۱۰۶- یہ شاستر کلیان اور بدھ اور یش اور عمر اور مکت کا دینے
والا ہے-

۱۰۷- اس شاستر مین تمام دھرم اور کرمون کے گن دوش اور آچار
لکھے ہین-

भूतानांप्राणिनःश्रेष्ठाःप्राणिनांबुद्धिजीविनः॥बुद्धिमत्सुनराःश्रे-
ष्ठाःनरेषुब्राह्मणाःस्मृताः॥९६॥ब्राह्मणेषुचविद्वांसोविद्वत्सु-
कृतबुद्धयः॥कृतबुद्धिषुकर्त्तारःकर्तृषुब्रह्मवेदिनः॥९७॥उत्पत्ति
रेवविप्रस्यमूर्त्तिर्धर्मस्यशाश्वती॥सहिधर्मार्थमुत्पन्नोब्रह्मभूया-
यकल्पते॥९८॥ब्राह्मणोजायमानोहिपृथिव्यामधिजायते॥
ईश्वरःसर्व्वभूतानांधर्म्मकोशस्यगुप्तये॥९९॥सर्व्वस्वंब्राह्मणा-
स्येदंयत्किंचिज्जगतीगतम्॥श्रैष्ठ्येनाभिजनेनेदंसर्व्वंवैब्राह्म-
णोऽर्हति॥१००॥स्वमेवब्राह्मणोभुंक्तेस्वंवस्तेस्वंददातिच॥
आनृशंस्याद्ब्राह्मणस्यभुंजतेहीतरेजनाः॥१०१॥

۹۶ - ساکن و متحرک جانداروں میں کیڑا افضل ہے اور اوس سے چارپایہ اور اس سے آدمی اور اُس سے براہمن افضل ہے -

۹۷ - براہمنوں میں وید و شاستر کے پڑھنے والے اور اُنسے وید شاستر کے موافق کام کرنیکی خواہش رکھنے والے اور اونسے وید شاستر کے موافق کام کرنے والے اور اُنسے برہم گیانی افضل ہیں -

۹۸ - براہمن دھرم کی صورت ہے اور دھرم کرنے کے لیئے پیدا کیا گیا ہے اسلیئے مکت پانے کے لائق ہوتا ہے -

۹۹ پرمیشور نے واسطے حفاظت خزانہ دھرم کے بصورت براہمن نزول فرمایا ہے

۱۰۰ - جو کچھ چیز دنیا میں ہے وہ سب گویا براہمنوں کی نج کی چیز ہے کیونکہ برہماجی کے مکھ سے پیدا اور سب سے افضل ہے اسلیئے سب چیزوں کا مالک براہمن ہو سکتا ہے (براہمن کی صرف تعریف ہے کیونکہ منجی براہمنوں کو بھی چوری کی سزا آگے کہیں گے -)

۱۰۱ - براہمن اپنی چیزوں کو کھاتا ہے اور پہنتا ہے اور دیتا ہے اُسکی مہربانی کشتری لوگ چین کرتے ہیں -

पशूनांरक्षणंदानमिज्याध्ययनमेवच।।वणिक्पथंकुसीदंचवै-
श्यस्यकृषिमेवच।।९०।।एकमेवतुशूद्रस्यप्रभुःकर्मसमादिश-
त्।।एतेषामेववर्णानांशुश्रूषामनसूयया।।९१।।ऊर्द्धनाभेर्मे-
ध्यतरःपुरुषःपरिकीर्तितः।।तस्मान्मेध्यतमन्त्वस्यमुखमुक्तंस्व-
यम्भुवा।।९२।।उत्तमांगोद्भवाज्ज्येष्ठ्याद्ब्रह्मणश्चैवधारणात्।।
सर्व्वस्यैवास्यसर्गस्यधर्म्मतोब्राह्मणःप्रभुः।।९३।।तंहिस्वयंभूः
स्वादास्यात्तपस्तप्त्वादितोऽसृजत्।।हव्यकव्याभिवाह्यायस-
र्व्वस्यास्यचगुप्तये।।९४।।यस्यास्येनसदाश्नन्तिहव्यानित्रि-
दिवौकसः।।कव्यानिचैवपितरःकिंभूतमधिकन्ततः।।९५।।

۹۰ - چار پایوں کی حفاظت کرنا دان دینا - یگیہ کرنا - وید پڑھنا - تجارت کرنا سود لینا - کھیتی کرنا - یہ سات کرم ویشوں کے لیے مقرر کیئے -

۹۱ - سودر کے لیئے ایک ہی کرم پربھو نے ٹھہرایا یعنے صدق دل سے ان تینوں ورنوں کی خدمت کرنا -

۹۲ - مرد کے تمام اعضا ناف کے اوپر تک کے پاک ہیں خصوصاً منھ اور بھی زیادہ تر پاک ہے برہما جی نے کہا ہے -

۹۳ - دنیا میں براہمن بوجہ دھرم کے سب سے افضل ہے اسلئے کہ نہایت پاک عضو (یعنی منھ) سے پیدا ہوا ہے اور وید کا استعمال رکھتا ہے -

۹۴ - برہما جی نے اپنی عبادت کے زور سے پہلے براہمن کو اپنے منھ سے پیدا کیا تاکہ تمام عالم کی حفاظت کرے اور منتر کے زور سے دیوتاؤں کو ہبیہ اور پتروں کو کبیہ پہنچا وے -

۹۵ - اس براہمن سے بڑھکر اور کون ہے کہ جسکے مکھ سے دیوتا لوگ ہبیہ اور پتر لوگ کبیہ کھاتے ہیں -

वेदोक्तमायुर्मर्त्यानामाशिषश्चैव कर्म्मणाम्॥ फलन्त्यनुयुगं-
लोके प्रभावश्च शरीरिणाम्॥ ८४॥ अन्ये कृतयुगे धर्मास्त्रेतायां
द्वापरेऽपरे॥ अन्ये कलियुगे नृणां युगह्रासानुरूपतः॥ ८५॥ त-
पः परं कृतयुगे त्रेतायां ज्ञानमुच्यते॥ द्वापरे यज्ञमेवाहुर्दानमेकं
कलौ युगे॥ ८६॥ सर्वस्यास्य तु सर्गस्य गुप्त्यर्थं स महाद्युतिः॥ मु-
खबाहूरुपज्जानां पृथक्कर्म्माण्यकल्पयत्॥ ८७॥ अध्यापनम-
ध्ययनं यजनं याजनं तथा॥ दानं प्रतिग्रहं चैव ब्राह्मणानामक-
ल्पयत्॥ ८८॥ प्रजानां रक्षणं दानमिज्याध्ययनमेव च॥ विष-
येष्वप्रसक्तिश्च क्षत्रियस्य समासतः॥ ८९॥

۸۴ - وید مین جو عمر آدمی کی کہی ہے اور حصول مقصد کے لیئے جو دعا اور بدعا
اور آدمیون کی خاصیت یہ سب باتین جگ کے موافق پھل دیتی ہین۔

۸۵ - جگ کے موافق آدمیون کا دھرم سب جگون مین علیحدہ علیحدہ ہوتا
یعنے ست جگ مین اور۔ ترتیا مین اور۔ دواپر مین اور۔ کلجگ مین۔ ا[illegible]
ہوتا ہے۔

۸۶ - ست جگ مین صرف عبادت اور ترتیا مین معرفت اور دواپر مین یگیہ اور کلجگ
مین دان مقدم رکھا گیا ہے۔

۸۷ - اس سمپورن جگت کی رچھیا کے لیئے اس مہاتیجسوی برہما نے منھ بانہہ۔ جانگھ
چرن سے پیدا ہوئے چارو ورنون کے کرم الگ الگ مقرر کیئے۔

۸۸ - وید پڑھنا۔ وید پڑھانا۔ یگیہ کرنا۔ یگیہ کرانا۔ دان دینا۔ دان لینا۔
یہ کرم براہمن کے لیئے بنائے۔

۸۹ - رعایا کی حفاظت کرنا۔ دان دینا۔ یگیہ کرنا۔ وید پڑھنا۔ دنیا کی نعمتون مین
دل نہ لگانا یہ پانچ کرم کشتری کے لیئے مقرر کیئے۔

ज्योतिषश्च विकुर्व्वाणादापोरसगुणाः स्मृताः॥ अद्भ्यो
गन्धगुणा भूमिरित्येषा सृष्टिरादितः॥७८॥ यत्प्राग्द्वादश
साहस्रमुदितं दैविकं युगम्॥ तदेकसप्ततिगुणं मन्वन्तरमिहोच्य
ते॥७९॥ मन्वन्तराण्यसंख्यानि सर्गः संहार एव च॥ क्रीडन्निवै
तत्कुरुते परमेष्ठी पुनः पुनः॥८०॥ चतुष्पात्सकलो धर्म्मः स
त्यं चैव कृते युगे॥ नाधर्म्मेणागमः कश्चिन्मनुष्यान्प्रतिवर्त्तते॥८१॥
इतरेष्वागमाद्धर्म्मः पादशस्त्ववरोपितः॥ चौरिकानृतमा
याभिर्धर्मश्चापैति पादशः॥८२॥ अरोगाः सर्व्वसिद्धार्थाश्च
तुर्वर्षशतायुषः॥ कृते त्रेतादिषु ह्येषामायुर्ह्रसति पादशः॥८३॥

٧٨ - جوت سے پانی پیدا ہوا جسکا گن رس ہے اور پانی سے زمین پیدا ہوئی جسکی صفت بو ہے قیامت کے بعد پیدایش عالم کی صورت یہی ہے۔

٧٩ - دیوتاؤن کا جو جگ بارہ ہزار برس کا ہوتا ہے اوسکا اکہتر گنا ایک منونتر ہوتا ہے یعنے ایک منُ کی سلطنت کی مدت ہے۔

٨٠ - بے انتہا منونتر اور پیدایش اور فناء عالم کھیل کے برابر بغیر محنت کے برہما جی بار بار کیا کرتے ہین۔

٨١ - ست جگ مین دھرم چارو چرن سے رہا اور اوس جگ کے آدمی سچ بولا کرتے تھے اور کوئی کام ادھرم کا نہین کرتے۔

٨٢ - ترتیا وغیرہ تینون جگون مین لوگ ادھرم یعنے چوری جھوٹھ فریب سے کام کرنے لگے اسلیئے دھرم ایک ایک چرن گھٹتا گیا۔ دیکھئے ترتیا مین ایک حصہ دواپر مین دو حصے اور کلجگ مین تین حصے کم ہو گیا۔

٨٣ - ست جگ مین کوئی بیمار نہوتا تھا اور جو چاہتے تھے وہی ہوتا تھا چار سو برس لوگ کی عمر ہوتی تھی ترتیا وغیرہ تینون جگون مین عمر آدمی کی ایک ایک چرن گھٹ گئی

दैविकानांयुगानान्तुसहस्रंपरिसंख्यया॥ ब्राह्ममेकमहर्ज्ञे-
यन्तावतींरात्रिमेव च॥७२॥ तद्वै युगसहस्रान्तं ब्राह्मं पुण्यम-
हर्विदुः॥ रात्रिंचतावतीमेवते ऽहोरात्रविदोजनाः॥७३॥ त-
स्य सो ऽहर्निशस्यान्ते प्रसुप्तः प्रतिबुध्यते॥ प्रतिबुद्धश्च सृजति
मनः सदसदात्मकम्॥७४॥ मनः सृष्टिं विकुरुते चोद्यमानं सिसृ-
क्षया॥ आकाशंजायते तस्मात्तस्य शब्दंगुणं विदुः॥७५॥
आकाशात्तु विकुर्वाणात्सर्व्वगन्धवहः शुचिः॥ बलवान्
जायते वायुः स वै स्पर्शगुणो मतः॥७६॥ वायोरपि विकु-
र्वाणाद्विरोचिष्णुतमोनुदम्॥ ज्योतिरुत्पद्यते भास्वत्तद्रूप-
गुणमुच्यते॥७७॥

۷۲ - اور دیوتاؤں کے ہزار جگ کے برابر برہما جی کا ایک دن ہوتا ہے اور اتنی ہی رات ہوتی ہے۔

۷۳ - برہما کے ہزار جگ کے برابر پرم کا ایک دن ہوتا ہے سو وہ دن بڑا پوتر ہے اور اتنی ہی رات بھی ہوتی ہے اس رات دن کے جاننے والے نے کہا ہے۔

۷۴ - وہ برہما اپنے دن میں کام کرتے ہیں اور رات میں سوتے ہیں جب جاگتے ہیں تب سنکلپ بکلپ روپ من کو سرشٹ رچنے کیواسطے آگیا دیتے ہیں۔

۷۵ - من نے برہما جی کی آگیا پاکر آپ سے آپ آکاش کو بنایا اسکی صفت آواز ہے۔

۷۶ - آکاش سے جملہ خوشبویات کی پہچاننے والی پاک قوی ہوا پیدا ہوئی اسکی [صفت] لمس ہے۔

۷۷ - ہوا سے تاریکی دور کرنے والی اور روشنی پھیلانے والی جوت پیدا ہوئی اسکا [صفت] روپ ہے۔

दैवेरात्र्यहनीवर्षंप्रविभागस्तयोःपुनः॥ अहस्तत्रोदगयनंरा-
त्रिःस्याद्दक्षिणायनम्॥६७॥ ब्राह्मस्यतुक्षपाह्नस्ययत्प्रमाणं
समासतः॥ एकैकशोयुगानान्तुक्रमशस्तन्निबोधत॥६८॥
चत्वार्याहुःसहस्राणिवर्षाणान्तुकृतंयुगम्॥ तस्यतावच्छ-
तीसन्ध्यासन्ध्यांशश्चतथाविधः॥६९॥ इतरेषुससन्ध्येषुसस-
न्ध्यांशेषुचत्रिषु॥ एकापायेनवर्त्तन्तेसहस्राणिशतानिच॥
७०॥ यदेतत्परिसंख्यातमादावेवचतुर्युगम्॥ एतद्द्वादशसा-
हस्रंदेवानांयुगमुच्यते॥७१॥

۶۷ - آدمیون کے ایک برش کے برابر دیوتاؤن کا ایک دن رات ہوتا ہے جبتک سورج اتراین* رہین تب تک دن ہے اور جب تک دکشائن رہین تب تک رات ہے۔

۶۸ - برہما کے رات دن کی مقدار اور ہر ایک جگون کی مقدار کا خلاصہ سلسلہ وار ان سے کہتے ہین سنو۔

۶۹ کہ دیوتاؤن کے چار ہزار برش کا ست جگ ہوتا ہے جگ کے پہلے دیوتائی زیادہ چار سو برس کی سندھیا کہلاتی ہے۔ اور جگ کے اخیر پر اتنا ہی سندھیانش کہلاتا

۷۰ - اور تینون جگون (یعنی تریتا- دواپر- کلجگ+) کی سندھیا اور سندھیانش کی مقدار ایک ایک ہزار اور ایک سو برش کے گھٹانے سے ہوتی ہے۔

۷۱ - یہ چار جگون کا اندازہ کہا اسکا بارہ ہزار گنا دیوتاؤن کا جگ ہوتا ہے۔

× مکر کی سنکرانت سے لیکر متھن کی سنکرانت تک اتراین کہلاتا ہے اور کرک کی سنکرانت سے لیکر دھن کی سنکرانت دکشاین کہلاتا ہے۔

+ یعنی ۳۰۰۰ ہزار برش کا تریتا جگ اور ۳۰۰ برش سندھیا اور ۳۰۰ برش سندھیانش اور ۲۰۰۰ ہزار برش کا دواپر اور ۲۰۰ برش سندھیا اور ۲۰۰ برش سندھیانش اور ۱۰۰۰ برش کا کلجگ اور ۱۰۰ برش سندھیا اور ۱۰۰ برش سندھیانش

स्वायम्भुवस्यास्यमनोः षड्वंश्यामनवोऽपरे॥ सृष्टवन्तः प्रजाः स्वा
स्वामहात्मानोमहौजसः॥६१॥ स्वारोचिषश्चोत्तमश्चतामसोरै-
वतस्तथा॥ चाक्षुषश्चमहातेजाविवस्वत्सुतएवच॥६२॥ स्वाय
म्भुवाद्याःसप्तैतेमनवोभूरितेजसः॥ स्वेस्वेऽन्तरेसर्व्वमिदमुत्पा-
द्यापुश्चराचरम्॥६३॥ निमेषादशचाष्टौचकाष्ठात्रिंशत्तुताःक
ला:॥ त्रिंशत्कलामुहूर्तःस्यादहोरात्रन्तुतावतः॥६४॥ अहोरा
त्रेविभजतेसूर्य्योमानुषदैविके॥ रात्रिःस्वप्नायभूतानांचेष्टा-
यैकर्म्मणामहः॥६५॥ पित्र्येरात्र्यहनीमासःप्रविभागस्तुप
क्षयोः॥ कर्म्मचेष्टास्वहःकृष्णःशुक्लःस्वप्नायशर्व्वरी॥६६॥

۶۱ - برہماجی سے جو مُن پیدا ہوئے اونکی نسل مین چھہ مُن اور بھی ہین ان مہاتیجسوی
[illegible] پرماتماؤن نے اپنے اپنے اختیار سے اپنی اپنی خلقت کو پیدا کیا -
۶۲ - انکے نام یہ ہین - سوارو چش - اوتم - تامس - ریوت - چاکش -
[illegible] ویوسوت -
۶۳ - سوایمبھو وغیرہ ساتون مُن جو بڑے تیجوان ہین وے اپنے اپنے اختیار سے تمام
مخلوقات ساکن و متحرک کو پیدا کرکے پالنے لگے -
۶۴ - ۱۸ پل کا ایک [illegible] کاشٹھا - ۳۰ کاشٹھا کی ایک کلا - ۳۰ کلا کا ایک مہورت ۳۰
[illegible] کا ایک دن رات ہوتا ہے -
۶۵ - آدمی اور دیوتا کے رات دن کی تمیز آفتاب کے باعث سے ہوتی ہے سب
[illegible] آرام کے لئے رات اور کاروبار کے لئے دن مقرر ہوا ہے -
۶۶ - آدمیون کے ایک مہینہ کے برابر پتّرون کا ایک رات دن ہوتا ہے اسمین
کرشن پکش کام کرنے کے لئے دن ہے اور شکل پکش سونے کے لئے رات
ہے -

तमोऽयं तु समाश्रित्य चिरं तिष्ठति सेन्द्रियः ॥ न च स्वं कुरुते कर्म
तदोत्क्रामति मूर्त्तितः ॥ ५५ ॥ यदाणुमात्रिको भूत्वा बीजं स्थास्नु
चरिष्णु च ॥ समाविशति संसृष्टस्तदा मूर्त्तिं विमुञ्चति ॥ ५६ ॥ ए-
वं स जाग्रत्स्वप्नाभ्यामिदं सर्वं चराचरम् ॥ संजीवयति चाजस्रं प्रमा
पयति चाव्ययः ॥ ५७ ॥ इदं शास्त्रं तु कृत्वासौ मामेव स्वयमादि-
तः ॥ विधिवद्ग्राहयामास मरीच्यादींस्त्वहं मुनीन् ॥ ५८ ॥ एतद्वोऽ
यं भृगुः शास्त्रं श्रावयिष्यत्यशेषतः ॥ एतद्धि मत्तोऽधिजगे सर्व
मेषोऽखिलं मुनिः ॥ ५९ ॥ ततस्तथा स तेनोक्तो महर्षिर्मनुना भृगुः
॥ तानब्रवीदृषीन्सर्वान्प्रीतात्मा श्रूयतामिति ॥ ६० ॥

۵۵ - اب مرگ کی حالت لکھتے ہیں کہ یہ جیو اندریوں کے ساتھ مدت دراز تک بکر حالت میں رہتا ہے اور انفاس ختم ہو جانے پر قالب اول سے دوسرے قالب میں جاتا ہے

۵۶ - اور جب وہ جیو عناصر و حواس و دل و عقل و خواہش و عمل و ہوا و نادانی - ان چیزوں کے ہمراہ تخم ساکن میں جاتا ہے تب درخت وغیرہ کا قالب پاتا ہے اور جب متحرک میں جاتا ہے تب آدمی وغیرہ کا قالب پاتا ہے -

۵۷ - اسی طرح برہما جی جاگنے اور سونے سے تمام جانداران ساکن و متحرک کو بار بار ... اور مارتے ہیں -

۵۸ - برہما نے اس شاستر کو بنا کر پہلے ہمکو بید کے موافق بتلایا پھر مریچ آدی منیوں کو سکھلایا -

۵۹ - اور اب اس سمپورن شاستر کو بھرگ رشی آپ لوگوں کو سنا دینگے ... سب اس شاستر کو پڑھا ہے -

۶۰ - جب اسطرح منو جی نے بھرگ رشی سے کہا تب بھرگ رشی نے پرسن ہو کر سب رشیوں سے کہا کہ سنیئے -

अराव्यो मात्राविनाशिन्योदशार्द्धानांतुयाः स्मृताः॥ ताभिः सार्द्ध-
मिदंसर्वंसम्भवत्यनुपूर्व्वशः॥२७॥ यन्तुकर्म्मणियस्मिन्सन्य-
युङ्क्तंप्रथमंप्रभुः॥ सतदेवस्वयंभेजेसृज्यमानःपुनःपुनः॥ य-
२८॥ हिंस्राहिंस्रेमृदुक्रूरेधर्म्माधर्म्मावृतानृते॥ यद्यस्यसोऽद-
स्सर्गेतत्तस्यस्वयमाविशत्॥२९॥ यथर्त्तुलिंगान्यृतवः स्वय-
मेवर्त्तुपर्य्यये॥ स्वानिस्वान्यभिपद्यन्तेतथाकर्म्माणिदेहिनः
॥३०॥ लोकानांतुविवृद्ध्यर्थंमुखबाहूरुपादतः॥ ब्राह्मणं
क्षत्रियंवैश्यंशूद्रंचनिरवर्त्तयत्॥३१॥

۲۷- پانچو مہابھوتون کی ناش ہونے والی سوکشم ماترا یعنے جواہر جنسے سب جگت
سے ہوتا ہے۔

۲۸- برہما جی نے جس جاندار کو ابتدا مین جس عمل و جس خاصیت مین لگایا وہ جاندار پھر
بوقت پیدائش اُسی عمل و خاصیت مین آپ سے آپ مصروف ہوا۔

۲۹- قتل و ترحم و نرمی و سختی و عذاب و ثواب و راست و دروغ وغیرہ جو خاصیت
ابتدا مین جسکو دی گئی وہی خاصیت اُسکو پھر بوقت پیدائش از خود حاصل
ہوئی۔

۳۰- جیسے فصل بسنت وغیرہ اپنے اپنے وقت پر اپنے اپنے خواص کو ظاہر کرتے ہین
ویسے ہی ان کا ایک عالم کے ترحم وغیرہ اعمال مین مصروف ہوتے ہین۔

۳۱- آدمی اور ان کا ایک عالم کے مکھ سے براہمن کو اور ہاتھ سے کشتری کو اور جانگھ سے ویش
اور پیر سے شودر کو پیدا کیا۔ (یعنی ہر ایک دھرم کو دیکھو مہابھارت)۔

र्वेषान्तु स नामानि कर्म्माणि च पृथक्पृथक्॥ वेदशब्देभ्य
ादौ पृथक्संस्थाश्च निर्म्ममे॥ २१॥ कर्म्मात्मनां च देवानां सोऽ
सृजत्प्राणिनां प्रभुः॥ साध्यानां च गणं सूक्ष्मं यज्ञं चैव सनातनं
॥ २२॥ अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम्॥ दुदोह यज्ञ
सिद्ध्यर्थमृग्यजुःसामलक्षणम्॥ २३॥ कालं कालविभक्तीः
नक्षत्राणि ग्रहांस्तथा॥ सरितः सागराञ्छैलान्समानि वि
षमाणि च॥ २४॥ तपो वाचं रतिं चैव कामं च क्रोधमेव च॥
सृष्टिं ससर्ज चैवेमां स्रष्टुमिच्छन्निमाः प्रजाः॥ २५॥ कर्मणां
विवेकार्थं धर्माधर्मौ व्यवेचयत्॥ द्वन्द्वैरयोजयच्चेमाः सु
खदुःखादिभिः प्रजाः॥ २६॥

۲۱- پھر پرماتما نے سب جیوون کا نام اور کرم علیحدہ علیحدہ جیسا جیسا پیدائش سے پہلے تھا
ویسا ہی وید شبد سے جانکر بنایا۔
۲۲- پھر پربھو یعنے برہما نے دیوتاؤن کو اور جڑ بیدار تھون کو اور سوکشم ہستیہ یگیہ کو پیدا کیا
۲۳- پھر یگیہ سدھ ہونے کے لئے اگن سے رگ وید اور بایو سے یجر وید اور سورج سے
سام وید کو نکالا۔
۲۴- پھر کال اور کال کے حصے یعنے برس مہینہ دن وغیرہ اور اشونی وغیرہ نکشتر اور
وغیرہ گرہ اور ندی سمندر پربت سم بکھم یعنے ٹیڑھے سیدھے مقامات کو بنایا۔
۲۵- انکے بنانے کے بعد تپ یعنے پراجاپت وغیرہ" اور بانی رت یعنے چت کا
اچھا کام کرودھ دیوتا وغیرہ پرجا ان سب کو بنایا۔
۲۶- کرموں کے ... کار جاننے کے لئے نیک وغیرہ دھرم اور ادھرم ہنسا وغیرہ او

यन्मूर्त्यवयवाः सूक्ष्मास्तस्येमान्याश्रयंति षट ॥ तस्माच्छ
रीरमित्याहुस्तस्य मूर्तिं मनीषिणः ॥ १७ ॥ तदाविशंति भूतानि म
हान्ति सह कर्मभिः ॥ मनश्चावयवैः सूक्ष्मैः सर्वभूतकृदव्य
यम् ॥ १८ ॥ तेषामिदन्तु सप्तानां पुरुषाणां महौजसाम् ॥
सूक्ष्माभ्यो मूर्तिमात्राभ्यः संभवत्यव्ययाद्व्ययम् ॥ १९ ॥ आद्या
द्यस्य गुणं त्वेषामवाप्नोति परः परः ॥ यो यो यावतिथश्चैषां स स
तावद्गुणः स्मृतः ॥ २० ॥

پرکرت سمیت برہم کے شریر کا چھ سوکشم اَبَیَو (یعنے تماترا اور اہنکار) اور اندریون کے (پانچ عناصر)
کرنیوالے ہین۔
پھر اُس ابناشی اور جگت رچنے والے برہم سے اپنے اپنے کامون کے ساتھ آکاش
خلقت اور سوکشم اَبَیَون کے ساتھ من یعنے دل پیدا ہوا۔
بعد اسکے ابناشی برہم نے ان سات بڑے پراکرم رکھنے والے مَہَت تتو اور اہنکار اور پانچ
[تنماترا]ون کے سوکشم بھاگ سے اس ناش ہونیوالے جگت کو بنایا۔
ان مہابھوتون مین اول اول کا خواص دوسرے دوسرے مین جاتا ہے جسکی جیسی حیثیت
ہے اسمین ویسا گن رہتا ہے۔

جسمین پانچ تماترا اور اہنکار ہوا وسکو شریر کہتے ہین اسیوجہ سے پنڈت لوگ برہم کے سبھاؤ کو شریر کہتے ہین۔
آکاش کا کام وسعت دینا۔ ہوا کا کام [illegible] آگ کا کام پاک کرنا پانی کا کام [illegible] پرتھوی کا کام دھارن کرنا من یعنی دل کا کام
[illegible] کی خواہش کرنا چاہیے۔
پہلی آکاش پیدا ہوا جسمین ایک ہی گن شبد کا ہے اور بایو دوسرا ہے جسمین ایک گن آکاش کا اور دوسرا گن اپنا [illegible]
سپرش اور اگن مین تین گن یعنے شبد و اسپرش دو گن آکاش اور بایو کے اور [illegible]
[illegible] مین تین گن اوپر والی چیزون کے اور [illegible]

स्मिन्नण्डे स भगवानुषित्वा परिवत्सरम् ॥ स्वयमेवात्मनो-
ध्यानात्तदण्डमकरोद्द्विधा ॥ १२ ॥ ताभ्यां स शकलाभ्यां च दिवं
भूमिं च निर्ममे ॥ मध्ये व्योम दिशश्चाष्टावपां स्थानं च शाश्वतम् ॥
१३ ॥ उद्बबर्हात्मनश्चैव मनः सदसदात्मकम् ॥ मनसश्चाप्यहंका-
रमभिमन्तारमीश्वरम् ॥ १४ ॥ महान्तमेव चात्मानं सर्वाणि त्रि-
गुणानि च ॥ विषयाणां ग्रहीतॄणि शनैः पञ्चेन्द्रियाणि च ॥ १५
तेषां त्ववयवान्सूक्ष्मान्षण्णामप्यमितौजसाम् ॥ सन्निवे-
श्यात्ममात्रासु सर्वभूतानि निर्ममे ॥ १६ ॥

۱۲- برہما نے اُس انڈے میں اپنے ایک برس تک رہکر اور پرماتما کا دھیان کر کے
انڈے کے دو ٹکڑے کیئے۔

۱۳- اُن دو ٹکڑوں سے برہما نے سُورگ اور پرتھوی کو بنایا پھر اُن دونوں کے بیچ میں
اور آٹھو دِشا اور اچل سَمُدر کو بنایا۔

۱۴- پھر برہما نے پرماتما سے سَنکلپ بِکلپ رُوپ مَن کو پیدا کیا اور مَن کے پیدا کرنے سے
سمرتھ اور ابھمان کرنیوالے اہنکار کو بنایا۔

۱۵- اور اہنکار سے پہلے آتما کا اُپکار کرنیوالا مہت تتو یعنے عقل کو پیدا کیا اور سب
بھوگ کرنے والی پانچ گیان اندری اور پانچ کرم اندری اور تنماترا کو
بنایا۔

[illegible] تنکت ماتون کے سُوکشم انشوں کو اپنے بکار میں ملا کر تمام مخلوق

ततःस्वयम्भूर्भगवानव्यक्तोव्यंजयंनिदम्॥ महाभूता
जाःप्रादुरासीत्तमोनुदः॥६॥ योऽसावतीन्द्रियग्राह्यः
व्यक्तःसनातनः॥ सर्वभूतमयोऽचिंत्यःसएवस्वयमुद्ब
सोऽभिध्यायशरीरात्स्वात्सिसृक्षुर्विविधाःप्रजाः॥ अप
र्जादौतासुबीजमवासृजत्॥८॥ तदण्डमभवद्धैमंसहस्
प्रभम्॥ तस्मिन्जज्ञेस्वयंब्रह्मासर्वलोकपितामहः॥
पोनाराइतिप्रोक्ताआपोवैनरसूनवः॥ तायदस्यायनं
नारायणःस्मृतः॥१०॥ यत्तत्कारणमव्यक्तंनित्यंसदस
कम्॥ तद्विसृष्टःसपुरुषोलोकेब्रह्मेतिकीर्त्यते॥११॥

جسکے پوشیدہ ولازوال قوت رکھنے والا اور اندھکار کا ناش کرنے والا پرمیشور پرماتما
...رہ کو ظاہر کرتا ہوا ظاہر ہوا۔

...ماتما اندریوں سے الگ باریک پوشیدہ وہمیشہ بے فکر و سب مخلوقات کی جان
...سے آپ ظاہر ہوا۔

...جسکے دل مین یہ خواہش ہوئی کہ اپنے بدن سے ایک قسم کی خلقت پیدا کرنا چاہئے تو اُسنے
...پانی کو پیدا کیا پھر اُس پانی مین بیج ڈالا

...وہ بیج مثل طلا و آفتاب کے تصورت بیضہ بن گیا پھر اُس بیضہ سے
...جی جو تمام مخلوقات کے پیدا کرنے والے ہین آپ سے آپ پیدا

...سنسکرت مین پانی کو نارا کہتے ہین اور وہ پہلے پرماتما کا گھر تھا اسوجہ سے پرماتما
...کہتے ہین۔

...ماتما سب کا باعث و پوشیدہ وہمیشہ قائم و فاعل مطلق ہے اسنے جس شخص کو دنیا مین
...کیا اُسی کو سب لوگ برہما کہتے ہین۔

श्रीगणेशायनमः

अथमनुस्मृतिलिख्यते

१॥ मनुमेकाग्रमासीनमभिगम्यमहर्षयः॥ प्रतिपूज्यय
थाभिमिदंवचनमब्रुवन्॥१॥ भगवन्सर्ववर्णानांयथावदनुपू
र्वशः॥ अन्तरप्रभवाणांचधर्मान्नोवक्तुमर्हसि॥२॥ त्वमेको
ह्यस्य सर्वस्य विधानस्यस्वयंभुवः॥ अचिन्त्यस्याप्रमेयस्यका-
र्यतत्त्वार्थवित्प्रभो॥३॥ सतैःपृष्टस्तथासम्यगमितौजामहात्म
भिः प्रत्युवाचार्च्यतान्सर्वान्महर्षीञ्छ्रूयतामिति॥४॥ आ
सीदिदं तमोभूतमप्रज्ञातमलक्षणम्॥ अप्रतर्क्यमविज्ञेयंप्र-
सुप्तमिवसर्वतः॥५॥

سری گنیش آئمہ

اتھ ٹیکا منو سمرتی

۱- منُ جی یکچت بیٹھے ہوئے تھے کہ اُنکے پاس بڑے بڑے رشی لوگ آئے اور پرت
۲- ہے بھگوان سب ورنون اور ورن سنکرون کا دھرم ٹھیک ٹھیک ہمسے کہیئے کیونکہ
۳- اے پرتھو اچنت اور اپنت اور قدیم ویدین بیان کئے ہوئے جو بہت طرح کے
اصل مطلب کے جاننے والے ایک آپ ہی ہین -
۴- جب اُن مہاتماؤن نے اسطرح سے اُن تیجسوی مہاتما سے پوچھا تب
اُن سب رشیون کی پوجا کرکے کہا کہ سنئیے کہ -
۵- یہ سب جگت پہلے پرکرت مین لین تھا اور اسکا کچھ علم و نشان نہ تھا اور نہ دلیل
ہو سکتا تھا خواب کی سی حالت مین تھا -

× یعنی جواب مین اس سے یہ پایا جاتا ہے کہ پہلے منُ جی نے اُن رشیون کی پوجا کی -

विद्युतोऽशनिमेघांश्च रोहितेन्द्रधनूंषि च ॥ उल्कानि
ज्योतींष्युच्चावचानि च ॥ ३८ ॥ किन्नरान्वानरान्म
विधांश्च विहंगमान् ॥ पशून्मृगान्मनुष्यांश्च व्यालांश्चो
दतः ॥ ३९ ॥ कृमिकीटपतंगांश्च यूकामक्षिकमत्कुणम् ।
च दंशमशकं स्थावरं च पृथग्विधम् ॥ ४० ॥ एवमेतैरिदं स
न्नियोगान्महात्मभिः ॥ यथाकर्म तपोयोगात्सृष्टं स्थावरजं
मम् ॥ ४१ ॥ येषां तु यादृशं कर्म भूतानामिह कीर्तितम् ॥ त
थावोऽभिधास्यामि क्रमयोगं च जन्मनि ॥ ४२ ॥ पशवश्च
श्चैव व्यालाश्चोभयतोदतः ॥ रक्षांसि च पिशाचाश्च मनुष्
जरायुजाः ॥ ४३ ॥

۱- اسکے بعد بجلی بادل رُوہت دھنش انکا (یعنے لک کا ٹوٹنا) ثوابت وسیارہ
شہاب و قطب وغیرہ کو بنایا۔
۲- پھر کنر و بندر و مچھلی و طرح طرح کے پرند و چار پایہ و ہرن و آدمی و دو دانت
والے سانپ کو بنایا
۳- پھر بڑے کیڑے و چھوٹے کیڑے و شاپد و جوں و مکھی و ڈانس و مچھر و مسا و طرح طرح
درخت ان سب کو بنایا۔
۴- منو جی کہتے ہیں کہ اسطرح سے بڑے بڑے رشیوں نے اپنی عبادت کے زور
سے ہمارا حکم پاکر جانداروں کو اعمال کے موافق ساکن و متحرک بنایا۔
۵- جن جیون کا جیسا کرم اس سنسار میں اگلے آچارجون نے کہا ہے اُن جیونکا ویسا
ہی کرم آپ لوگوں سے ہم کہیں گے
۶- یہ ہرن و دو رویہ دانت والے سانپ و راکشش و پشاچ و آدمی یہ سب جراےُج
(جیسا عمل کا چھپانیوالا جو چمڑا ہے اسمیں رہکر پھر اُس سے باہر نکلتے ہیں)۔

ण्डजाः पक्षिणः सर्प्पा नक्रा मत्स्याश्च कच्छपाः॥ यानि चैवं
प्रकाराणि स्थलजान्यौदकानि च॥४४॥ स्वेदजं दंशमशकं यूका
मक्षिकमत्कुणम्॥ ऊष्मणश्चोपजायन्ते यच्चान्यत्किंचिदीदृ-
शम्॥४५॥ उद्भिज्जाः स्थावराः सर्वे बीजकाण्डप्ररोहिणः॥ ओष
ध्यः फलपाकान्ता बहुपुष्पफलोपगाः॥४६॥ अपुष्पाः फल-
वन्तो येते वनस्पतयः स्मृताः॥ पुष्पिणः फलिनश्चैव वृक्षास्तू
भयतः स्मृताः॥४७॥ गुच्छगुल्मन्तु विविधं तथैव तृणजातयः
बीजकाण्डरुहाण्येव प्रताना वल्ल्य एव च॥४८॥

۴۴ - پرند و سانپ مچھلی و کچھوا یہ سب انڈج ہین (یعنے بیضہ سے پیدا ہوتے ہین) اور جو اسی طرح پانی یا زمین سے پیدا ہون وہ بھی انڈج کہلاتے ہین -

۴۵ - ڈنس و مساد جھیل و مکھی و اڈ لنس یہ سب پسینا سے پیدا ہوتا ہے اسلیئے سویج ہین اور جو ایسی گرمی سے ہوتے ہین وہ بھی سویج کہلاتے ہین -

۴۶ - جتنے تھاور ہین وہ سب اوبھج کہلاتے ہین کوئی تو بیج سے پیدا ہوتے ہین اور کوئی قلم لگانے سے اور پھل پھول والے جو پکنے پر ناش ہوتے ہین -

۴۷ - جن مین پھول نہین لگتا فقط پھل ہی لگتا ہے انکو بنس پت کہتے ہین اور جنمین پھل پھول دونون لگتے ہین انکو برکش کہتے ہین -

۴۸ - گچھ اور گلم بہت قسم کے ہوتے ہین اور ترن کوئی تو بیج سے اور کوئی شاخ لگانے سے ہوتے ہین جیسے پرتانا اور بلی وغیرہ -

* جو زمین توڑ کر نکلتے ہین -

* جنمین جڑ تنا سے نکلتی ہے اور بڑی شاخ نہین ہوتی -

* جنمین سوت ہوتا ہے لکی و کمڑ معا وغیرہ -

* جنمین جڑ ایک ہے اور ریشہ بہت نکلتے ہین -

ोकेवदंत्यग्निंमनुमन्येप्रजापतिम्॥ इन्द्रमेकेऽपरेप्रा
ब्रह्मशाश्वतम्॥१२३॥एषसर्वाणिभूतानिपंचभि
र्तिभिः॥जन्मवृद्धिक्षयैर्नित्यंसंसारयतिचक्रवत्॥१
यःसर्वभूतेषुपश्यत्यात्मानमात्मना॥ससर्वसमतामे
भ्येतिपरंपदम्॥१२५॥इत्येतन्मानवंशास्त्रंभृगुप्रो
:॥ भवत्याचारवान्नित्यंयथेष्टांप्राप्नुयाद्गतिम्॥१२

ते मानवे धर्मशास्त्रे भृगुप्रोक्तायां संहितायां
द्वादशोऽध्यायः १२

समाप्तोऽयंग्रन्थः॥

سمی- ... ۱۲۳- اُس پرش کو کوئی مَن کہتا اگنی کوئی پرجاپت کوئی ...
...ी और फ़ौ... ۱۲۴- یہ آتما سب جانداروں میں پنچ عناصر کی مورتیوں ...
قی بدن و فنا کرکے ہمیشہ چکر کے مانند گردش دیتا ہے۔
۱۲۵- جو آدمی اس طریق سے سب جانداروں میں آتما کے دیکھ کر
سمدرشی ہو کر برہم پدوی کو پاتا ہے۔
۱۲۶- اس بھرگ رشی کے کہے ہوئے مانوشاستر کو برہمن پڑھتا ... وشیہ
تا ہے اور خاطر خواہ گت کو پاتا ہے۔

منوسمرتی دھرم شاستر سماپت ہوا۔

...र्वमात्मनि संपश्येत्सच्चासच्च समाहितः॥ सर्वं ह्यात्मनि सं...
...पश्यन्नाधर्मे कुरुते मनः॥११८॥ आत्मैव देवताः सर्वाः सर्वमा...
...न्यवस्थितम्॥ आत्मा हि जनयत्येषां कर्मयोगं शरीरिणा...
...॥११९॥ खं संनिवेशयेत्खेषु चेष्टनस्पर्शनेऽनिलम्॥ पक्ति...
...ष्ट्योः परं तेजः स्नेहेऽपो गां च मूर्तिषु॥१२०॥ मनसीन्दुं दिशः...
...त्रे क्रान्ते विष्णुं बले हरम्॥ वाच्यग्निं मित्रमुत्सर्गे प्रजने च...
...जापतिम्॥१२१॥ प्रशासितारं सर्वेषामणीयांसमणोर...
...॥ रुक्माभं स्वप्नधीगम्यं विद्यात्तं पुरुषं परम्॥१२२॥

١١٨- بیفکر ہوکر آتما میں سب کو دیکھے اسکو دیکھتا ہوا ادھرم میں دل کو نہ لگاوے
١١٩- سب دیوتا آتما ہے آتما میں سب قائم ہے سب ارباب قالبوں کے کرم کو جوگ کو پیدا کرتا ہے سب اوپج کو
١٢٠- ہردے کے دل والے چھید کے اکاش کو محو کرے حرکت حواس لمس کا سبب ...
...ن کی ہوا میں باہر کی ہوا کو محو کرے اور پیٹ کی اگن میں باہر کی اگن کو اور بد...
...میں ...سا جل کو محو کرے اور پرتھوی کا حصہ جو بدن میں ہے اسمیں باہر کی پرتھوی کو محو...
١٢١- ...میں چندرمان کو شیر وتر اندری میں وشنا کو پاد اندری میں ایشن کو بل میں ...
...میں اگن کو پایو اندری میں متر دیوتا کو لنگ اندری میں پرجاپت کو محو کرے
١٢٢- ...پر حکمرانی کرنیوالا چھوٹے سے چھوٹا سونے کے برابر روشنی والا سپن میں بدھ...
...لرکے گرہن کرنے کے لائق جو پرش ہے اسکو سب سے بڑا جانو۔

अथ मनुस्मृतेः सूचीपत्रम्।

فہرست مطالب منوسمرت

मनुस्मृतिः

मानवे धर्मशास्त्रे भृगुप्रोक्तायां संहितायां

महाभारते

पुराणं मानवोधर्मः सांगोवेदश्चिकित्सितम् ।
आज्ञासिद्धानि चत्वारि न हन्तव्यानि हेतुभिः १

कानपुरनगरे

नवलकिशोरीय यंत्रे मुद्रिता
संवत १९६५ वै० ।

منوسمرتی

یعنی

مانو دھرم شاستر بھرگ سنگھتا

سنسکرت مع ترجمہ اردو مرتبہ لالہ سوامی دیال صاحب

بار دوم

مطبع منشی نول کشور مقام کانپور میں طبع ہوئی